पारसचन्द से आर्जवसागर











आचार्यश्री 108 आर्जवसागरजी महाराज का

जीवन परिचय



पूर्व नाम	-	पारसचंद जैन
पिता जी	-	श्री शिखरचंद जैन
माता जी	-	श्रीमती मायाबाई जैन
जन्मतिथि	-	11.9.1967, भाद्र शु. अष्टमी
जन्म स्थल	-	फुटेरा कलाँ, जिला- दमोह
बचपन बीता	-	पथरिया, जिला- दमोह (म.प्र.) में
शिक्षण	-	बी.ए. (प्रथम वर्ष) डिग्री कॉलेज, दमोह (म.प्र.)
ब्रह्मचर्य व्रत	-	19.12.1984, अतिशय क्षेत्र, पनागर (म.प्र.)
सातवीं प्रतिमा	-	1985, सिद्धक्षेत्र अहारजी (म.प्र.)
क्षुल्लक दीक्षा	-	8.11.85, सिद्धक्षेत्र अहारजी (म.प्र.)
ऐलक दीक्षा	-	10.7.1987, अतिशय क्षेत्र थूवोनजी
मुनि दीक्षा	-	31.3.1988, सिद्धक्षेत्र सोनागिरजी, महावीर जयन्ती।
दीक्षा गुरु	-	आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज
आचार्यपद	-	25.01.2015 (माघ शुक्ल षष्ठी) को (समाधि पूर्व आचार्यश्री सीमंधरसागर जी द्वारा इंदौर में)
कृतियाँ व रचनाएँ	-	धर्म-भावना शतक, जैनागम-संस्कार, तीर्थोदय-काव्य, परमार्थ-साधना, बचपन का संस्कार, सम्यक्-ध्यान शतक, आर्जव-वाणी, पर्यूषण-पीयूष, आर्जव-कविताएँ, जैन शासन का हृदय, आगम-अनुयोग, लोक-कल्याण (षोडसकारण) विधान, सदाचार सूक्ति-काव्य, अध्यात्म समयोदय, गुरु गुण-महिमा काव्य, आत्मोद्धार शतक, सन्मार्ग प्रभावना, श्री अंतादि शतक, विनयांजलि।
स्फुट रचनाएँ	-	जिनवर स्तुति, साम्य भावना, जम्बूस्वामी अष्टक, गोम्मटेश अष्टक, अहिंसा सूत्र गान, गिरनार स्तुति, विद्यासागर वंदनाष्टक, शांतिसागर विनयांजलि अष्टक, सम्मेदशिखर वंदन, जैन परंपरा गीत, मुनि मूरत के शिल्पी, विद्यागुरु विनयांजलि, गुरु विद्यासागर की छवि
पद्यानुवाद	-	गोमटेश थुदि, वारसाणुवेक्खा, इष्टोपदेश, समाधितन्त्र, द्रव्य-संग्रह, तत्त्वसार, प्रश्नोत्तर-रत्नमालिका, भक्तामर स्तोत्र।

पारसचन्द्र से आर्जवसागर



लेखिका
आर्यिकारत्नश्री 105 प्रतिभामति माताजी

कृति – पारसचन्द से आर्जवसागर

लेखिका – आर्यिकारत्नश्री 105 प्रतिभामति माताजी

पावन स्मृति – हाट पिपल्या चातुर्मास 2024

संस्करण – प्रथम

पुण्यार्जक – **1.** श्रीमती संगीता धर्मपत्नी डॉ. अश्विनी कुमार जैन, ''आर्जव'', एमआईजी-7, जयप्रकाश नारायण नगर, पी.के. स्कूल के पीछे, सिरमौर चौराहा, रीवा-486001
ई-9, कृषिनगर, आधारताल, जबलपुर
मो.: 9425846414
2. स्व.श्रीमती चमेलीबाई ध.प. नेमीचंद जैन की स्मृति में उनकी पुत्रवधु श्रीमती रेखा ध.प. विपिन जैन और प्रपौत्र उदित एवं चहक जैन, पशु आहार वाला परिवार, उदित एग्रो इण्डस्ट्रीज, ए-788, न्यू अशोका गार्डन, भोपाल, मो. 9301151142

प्रतियाँ – 1000

मुद्रक – पारस प्रिंटर्स, भोपाल
207/4, सांईबाबा काम्पलेक्स, जोन-1
एम.पी.नगर, भोपाल
फोन : 0755-4260034, 9826240876

प्रकाशक एवं प्राप्ति स्थान – आर्जव-तीर्थ एवं जीव संरक्षण-ट्रस्ट
4, लार्ड्स कैम्पस, लक्ष्मी परिसर, नहर के पास
बावड़ियाकलाँ, भोपाल-462039
मो. : 7049004653, 9425011357, 9425601161, 9425601832, 7222963457

मूल्य – (पुनः प्रकाशन हेतु सहयोग)

मनोभाव

वर्तमान के वर्धमान संत शिरोमणि आचार्य प्रवर श्री विद्यासागरजी महाराज से दीक्षित आचार्यश्री आर्जवसागरजी महाराज की प्रेरणा एवं आशीर्वाद से ''**भाव विज्ञान पत्रिका**'' का शुभारम्भ सन् २००७ में हुआ जिसमें ''पारसचंद से आर्जवसागर'' लेख का प्रकाशन निरंतर किया जा रहा है। इस लेख का मूल उद्देश्य एक भव्यात्मा का विवरण जनमानस के समक्ष प्रस्तुत करना है जिससे जन-जन में मानव जीवन की उत्कृष्ट जीवन शैली बनाने की प्रेरणा से रुचि जागे और संकल्प एवं उत्साह के साथ प्रत्येक व्यक्ति इस मार्ग पर चलकर अपने जीवन को सफल बना सके।

पारसचंद का जन्म फुटेराकलां जिला दमोह में एक धार्मिक, सुसंस्कृत और अणुव्रती दम्पति श्री शिखरचंद-मायादेवी के घर हुआ। श्री शिखरचंद म.प्र. शासन के शिक्षा विभाग में (उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में) शिक्षक थे और बाद में माध्यमिक विद्यालय के हेडमास्टर हो गये थे तथा उनका स्थानांतर पथरिया अंचल में होने से पारसचंद का बचपन यहीं बीता और शिक्षा प्राप्त हुई। स्वस्थ वातावरण, सुदृढ़ नींव और प्रशस्त संस्कारों के मिलने पर पारस संस्कारवान, गुणवान, चरित्रवान बनकर उनका मन मस्तिष्क वैराग्यपूर्ण भावना से युवावस्था के पूर्ण ही भर उठा। उन्होंने अपने वैराग्यपूर्ण बातों/संवादों से अपने माता-पिता के प्रबल मोह को शिथिल करते हुए समझाकर एवं स्वयं को वैराग्यपूर्ण जीवन पर चलने के लिए स्वीकृति प्राप्त करते हुए, बगैर किसी रुकावट के, सीधे परम पूज्य आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज संघ सन्निधि में समर्पित हो गये। आचार्यप्रवर श्री विद्यासागरजी महाराज की कुशल पारखी नजरों ने पारस में एक भावी और प्रभावी मुनि की पात्रता देखकर अपना लिया। यहाँ से उनकी संयम यात्रा शुरु हुई और उनको मुनिश्री १०८ आर्जवसागरजी महाराज बना दिया।

पारसचंद ने आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज से १९-१२-१९८४ को श्री अतिशय क्षेत्र पनागर में आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत लिया। सन् १९८५ में श्री

आहारजी सिद्ध क्षेत्र में सातवीं प्रतिमा धारण की और वहीं क्षुल्लक दीक्षा प्राप्त की। दिनांक १०-०७-१९८७ को श्री अतिशय क्षेत्र थुबोनजी में ऐलक हुए और दिनांक ३१-०३-१९८८ को श्री सोनागिरजी सिद्ध क्षेत्र पर मुनिदीक्षा प्राप्त कर श्री महावीर जयंती के शुभ दिन पर महावीर के लघु नंदन बन गए। आपने जन्म से भगवान पार्श्वनाथ के नाम 'पारस' की मुद्रा से अंकित उनकी तरह ही बाल ब्रह्मचारी रहकर मुनिदीक्षा धारण कर पारस नाम को पारसमणि सम बन सार्थकता प्रदान की। निश्चित ही यह एक भव का नहीं अपितु अनेक भवों की कठिन साधना के संस्कारों का फल है।

आपने-अपने गुरु आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज का आदेश और आशीर्वाद प्राप्त कर तेरह वर्ष (सन् १९९० से २००३) तक, श्रावकों के निवेदन पर, महाराष्ट्र, कर्नाटक, तमिलनाडु आदि दक्षिण प्रांतों में विहार किया और समतापूर्वक उपसर्गों को सहकर जैन संस्कृति का परचम लहराया। आपने तमिलनाडु में सात चातुर्मास किए जहाँ वैदिक, बौद्ध एवं जैन धर्मों में महान संघर्ष रहा। ''किसी समय जैन संस्कृति पर हुए हमलों में'' हमारी कल्पना से बाहर हमारे जैन साधुओं को तेल निकालने वाली घानी में पेला, जैन ग्रंथों की होली छः माह तक जलती रही, जैन श्रावकों को भी भालों पर कीलित कर मार डाला गया और अन्य क्रूरतम अत्याचार जैन संस्कृति को विलोपित करने के लिए किए गए। धर्म परिवर्तन के लिए मजबूर किया गया। दक्षिण भारत में लगभग सभी लिंगायत धर्मी पहले जैन थे, ऐसा प्रसिद्ध है। तमिलिनाडु में आज कितने ही हिंदू ऐसे हैं जिनके पूर्वज जैन थे। यहाँ अनेक भव्य कलात्मक, विशाल मंदिर, गुफाएं और अत्याधिक बिखरीं जैन पुरा संपदा पूर्व के स्वर्णकालीन वैभव की कल्पना को साकार करती है। पहले यहाँ जैन आबादी बहुत थी पर अब अल्प है।

जहाँ एक ओर उत्तर भारत तीर्थंकरों की जन्म स्थली है वहीं दूसरी ओर दक्षिण भारत तीर्थंकरों की देशना प्रचार-प्रसार करने वाले श्रुतकेवली भद्रबाहु, कुंदकुंदाचार्य, आचार्य संमंतभद्र, आचार्य विद्यानंद, आचार्य पूज्यपाद आदि

महान संतों की साधना एवं कार्यस्थली है। उन्हीं की अगुआई करते हुए मुनिश्री १०८ आर्जवसागरजी महाराज ने कन्नलम और पौन्नूरमलै शैल गुफाओं में बैठकर तपस्या की, और ग्रन्थों की रचना की जैसे ''तीर्थोदय काव्य'' श्रेष्ठ महाकाव्य गुफाओं की देन है, ''जैनागम संस्कार'' भी दक्षिण भारत विहार की देन है। महाराजजी ने अनेक मंदिरों का जीर्णोद्धार, नवीन मंदिरों का निर्माण तथा पाठशालाओं की स्थापना के लिए प्रोत्साहित किया। नैनार (जो पूर्व में जैन थे) जाति के लोगों को अपनेपन के साथ मूलधारा में जुड़ने के लिए उत्साहित किया। आपकी निरतिचार चर्या से प्रभावित होकर अनेक मुमुक्षुओं ने दिगम्बर जैन धर्म में दृढ़ होकर ब्रह्मचर्य व्रत, प्रतिमाएं, क्षुल्लक, ऐलक और मुनिदीक्षा धारण की। अनेक साधक आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज संघस्थ मुनि/आर्यिका के रूप में साधना कर रहे हैं।

दक्षिण भारत से लौटकर मुनिश्री आर्जवसागरजी का सन् २००४ में प्रथम चातुर्मास भोपाल, टीटी नगर जिनालय में हुआ और उनके प्रवचन से प्रभावित होकर तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री बाबूलाल गौर ने शासन की ओर से स्कूलीय शिक्षा में होने वाली जन्तु चीर-फाड़ (भौतिकी प्रेक्टिकल्स) बंद करवा दी। सन् २००८ में ग्वालियर में हुए चातुर्मास के दौरान गोपाचल के जिनबिंबों पर बहने वाली सिंधिया स्कूल के सीवर की गंदगी से होने वाली अविनय को रोकने के लिए मुनिश्री आर्जवसागरजी ने विरोध की आवाज श्री ज्योतिरादित्य सिंधिया तक पहुँचाई और सिंधियाजी ने आशीर्वाद प्राप्त कर इस अविनय को रोकने का आश्वासन दिया।

आपकी निरतिचार चर्या व श्रेष्ठतम साहित्यिक रचनाओं आदि से प्रभावित होकर चारित्र चक्रवर्ती आचार्यश्री शांतिसागरजी महाराज की परम्परा के सल्लेखनारत आचार्यश्री सीमंधरसागरजी महाराज ने मुनिश्री आर्जवसागरजी को सन् २०१५ में समाधि पूर्व आचार्य पद सौंपा।

हम सभी भक्तजनों पर परम पूज्य वात्सल्यमयी गुरुवर आचार्यश्री १०८ आर्जवसागरजी महाराज का यह परम उपकार एवं करुणामय आशीर्वाद

है कि हम सभी के कल्याण हेतु ''पारसचंद से आर्जवसागर'' नामक अनूठा ग्रंथ तैयार हो गया है। हम सभी उनके कृतज्ञ हैं और चिरकाल तक ऋणि बने रहेंगे।

इस कृति के प्रकाशन में अपने द्रव्य का सदुपयोग करने वाले पुण्यार्जक श्रीमती संगीता धर्मपत्नी अश्विनी कुमार जैन, जबलपुर एवं श्रीमती रेखा धर्मपत्नी विपिन जैन, उदित एग्रो इण्ड., भोपाल (म.प्र.) वालों के लिए धन्यवाद ज्ञापित करते हैं। साथ ही, प्रिंटिंग के कार्य को करके सौंपने वाले पवन जैन, पारस प्रिंटर्स भी धन्यवाद के पात्र हैं।

परम पूज्य आचार्यश्री आर्जवसागरजी महाराज के पावन चरणों में कोटि-कोटि नमोस्तु, नमोस्तु, नमोस्तु एवं कृतज्ञता भरा आभार।

इत्यलं।

नवम्बर, 2021

डॉ. अजित कुमार जैन
संपादक, भाव-विज्ञान पत्रिका, भोपाल

भावाभिव्यक्ति

गुरुवः पांतु नो नित्यं, ज्ञान दर्शन नायकाः।
चारित्रार्णव गम्भीरा मोक्षमार्गोपदेशका॥

कवि तुलसीदासजी ने भी मानव जीवन की सार्थकता के लिए बहुत ही सरल तरीके से कहा है कि:-

तुलसी नरभव खेत है, मन-वच-काय किसान।
पाप-पुण्य दो बीज हैं, जो बोना है जान॥

फुटेराकलाँ (दमोह म.प्र.) में काव्य निष्णात्, श्रावक पिता हेड मास्टर श्री शिखरचंदजी जैन एवं धार्मिक क्रियाओं में पारंगत माँ श्रीमती मायादेवी की कोख से 11 सितंबर 1967 को जन्में ज्येष्ठ पुत्र पारसचंद को बाल्यकाल से लालन-पालन के दौरान धार्मिक वातावरण एवं संस्कार मिले। यौवनावस्था के प्रारम्भ से ही धर्म के प्रति आस्था एवं रुचि बढ़ती गई तथा संसार के प्रति वैराग्यता में वृद्धि होती गई। तीर्थक्षेत्र कुण्डलपुर सिद्धक्षेत्र के बड़े बाबा के निकट होने से मोक्षमार्ग में बढ़ने की दृढ़ता आती गई।

पारसचंद को आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज के प्रथम दर्शन करने का सौभाग्य लगभग सन् 1978 में पथरिया (जिला दमोह) में मिला और गृह त्याग करने का मन में अंकुरण हो गया। धीरे-धीरे आचार्यश्री के बार-बार दर्शनों की अभिलाषा एवं सत्संग की इच्छा ने अंततः पनागर (जिला-जबलपुर) में 19 दिसंबर 1984 को (17-18 वर्ष की अल्पायु में) आचार्यश्री से पारसचंद ने आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत अंगीकार किया और अल्पावधि में ही सातवीं प्रतिमा के व्रत भी ग्रहण कर लिए। माता-पिता एवं संबंधियों की पारसचंद को घर वापिस ले जाने हेतु बार-बार समझाइश भी कार्यकारी नहीं हो सकी तथा आचार्यश्री के संबोधन करने पर (पारसचंद के पूर्व भव के संस्कार हैं) ही उन्होंने (माता-पिता ने) पारसचंद को संघ में रुकने की अनुमति दे दी। कुछ समय पश्चात् आहारजी सिद्धक्षेत्र में आचार्यश्री ने ब्र. पारसचंद को 8 नवम्बर 1985 को दीक्षा देकर क्षुल्लकश्री आर्जवसागर

बनाया। अल्पावधि में ही थुबोनजी अतिशयक्षेत्र में 10 जुलाई 1987 को ऐलक दीक्षा प्रदान की गई। शीघ्र ही सिद्धक्षेत्र सोनागिरजी में 31 मार्च 1988 (महावीर जयंती) को आचार्यश्री ने ऐलक आर्जवसागरजी को मुनि दीक्षा देकर मुनिश्री आर्जवसागर बनाया।

इस प्रकार 21 वर्ष की अल्पायु में ही मोक्षमार्ग की तपस्या में मुनिश्री आर्जवसागरजी अग्रसर हो गए। सन् 84 से 90 तक लगभग 6-7 वर्षों तक आचार्यश्री ससंघ के सान्निध्य में रहकर आपने जैन सिद्धान्त संबंधी अनेक ग्रन्थों का स्वाध्याय, उत्कृष्ट ध्यान सामायिक और एक वर्ष के मौनव्रत की साधना की जिससे इनको संघ में भगवान नाम से पुकारा जाने लगा। मुक्तागिरी चातुर्मास पूर्णता के पश्चात् आँखों की दृष्टि कमजोर होने के कारण उपचार निमित्त आचार्यश्री से अनुमति प्राप्त कर/लेकर कुछ दिन अमरावती नगर में ठहरकर फिर दक्षिण भारत की यात्रा के निमित्त महाराष्ट्र की ओर विहार किया। महाराष्ट्र, कर्नाटक के विभिन्न शहरों-नगरों में जैन धर्म की महती प्रभावना करते हुए दक्षिण भारत के महाराष्ट्र, कर्नाटक, तमिलनाडु और पांडीचेरी प्रदेशों में लगभग 13 वर्ष तक विहार एवं प्रवास किया और शुद्ध आम्नाय पूर्वक सम्यग्दर्शन, षोडसकारण व्रत, पंचकल्याणक आदि के माध्यम से श्रावकों को उनकी प्रांतीय भाषाओं का अभ्यासकर उसके माध्यम से कई भव्यों को मुनि, ऐलक, क्षुल्लक, ब्रह्मचारी, प्रतिमाधारी आदि बनाकर अनूठी प्रभावना की।

दक्षिण यात्रा के पूर्ण होने के पश्चात् सन् 2004 में म.प्र. भोपाल में गुरुवर का अभूतपूर्व चातुर्मास हुआ। गुरुवर के सान्निध्य में तत्कालीन मुख्यमंत्री बाबूलाल गौर द्वारा सभी स्कूलों में बायलॉजी के माध्यम होने वाले जन्तुओं के डिसेक्शन को समाप्त करवाकर कम्प्यूटर के माध्यम से प्रयोगशाला पाठ्यक्रम में परिवर्तित करवाया। इसके अलावा पाठशालाएं, विद्वत् संगोष्ठी, पंचकल्याणक, बाल एवं श्रावक कवि सम्मेलन आदि कार्यक्रम मुनिश्री के सान्निध्य में सफलतापूर्वक आयोजित हुए। इसके उपरांत

गुरुवर का विहार एवं प्रवास भारत के पूर्व, पश्चिम एवं उत्तर दिशा (बिहार, झारखंड, उ.प्र., म.प्र., राजस्थान, हरियाणा, दिल्ली गुजरात) के विभिन्न नगरों, क्षेत्रों में अनूठी जैन धर्म की महती प्रभावना के साथ सम्पन्न हुआ।

कवि हृदय प्रकृति के फलस्वरूप गुरुवर ने चारों अनुयोगों के विभिन्न ग्रंथों के हिन्दी पद्यानुवाद, तीर्थक्षेत्र के पद्यात्मक वर्णन, सरल, सुलभ एवं रोचक भाषा में प्रस्तुतीकरण किया जिसका श्रावकों ने व्रत, नियम पूर्वक पठन-पाठन में भरपूर उपयोग किया एवं जैन धर्म का ज्ञान अंगीकार किया। इसके अलावा विभिन्न प्रांतीय भाषाओं (तमिल, मराठी, कन्नड़, गुजराती आदि) में श्रावकों के लिए उपयोगी साहित्य एवं कविताओं का सृजन किया एवं पाठशालाओं की विभिन्न पुस्तकों के माध्यम से बाल संस्कार का भी अनूठा कार्य किया है।

मुनिश्री आर्जवसागरजी महाराज के द्वारा की गई साहित्य सृजन एवं शुद्ध आगमिकचर्या से हुई जैनधर्म की महती प्रभावना से प्रभावित होकर आचार्य सीमंधरसागरजी महाराज ने समाधि पूर्व 25 जनवरी 2015 को मुनिश्री को अपना आचार्यपद सौंपा।

आचार्यश्री आर्जवसागरजी महाराज पर आर्यिकारत्न श्री 105 प्रतिभामति माताजी द्वारा संकलित **'पारसचंद से आर्जवसागर'** जीवन यात्रा संबंधित कृति सभी धर्म प्रेमी बन्धुओं के जीवन में मोक्षमार्ग में अग्रसर होने की पावन प्रेरणा देगी। इत्यलं।

आचार्यश्री के ससंघ चरणों में सविनय कोटि-कोटि वंदन।

नवंबर, 2021

श्रीमती सुषमा जैन

भाव विज्ञान पत्रिका प्रकाशक

अनुक्रमणिका

विषय	पृष्ठ क्र.	विषय	पृष्ठ क्र.
महापुरुष का अवतरण	1	अन्तरायसागर पड़ा नाम	36
माँ की शिक्षा	2	गुरु-सेवा में रत शिष्य	38
ननिहाल का दृश्य	4	चौथे काल सम घटना	40
गिरनार की प्रथम वंदना	5	परोपकारी मुनिराज	41
विद्यासागर जी का प्रथम दर्शन	6	दक्षिण यात्रा की ओर	42
मित्रगण व रुचियाँ	7	दिगम्बरत्व का प्रभाव	43
वैराग्य की ओर बढ़ते कदम	8	भक्ति की शक्ति	45
आत्म-चिंतन	15	कुंथलगिरि क्षेत्र, करमाला दर्शन	47
गृह से अंतिम विदाई	20	दहीगाँव, कुंभोज बाहुबली दर्शन	48
गुरु-संघ में प्रवेश	21	सांगली चातुर्मास	49
मोक्षमार्ग की साधना	23	कोन्नूर गुफा का दर्शन	51
प्रथम केशलोंच ईशुरवारा	25	श्रवणबेलगोला वर्षायोग व	
ब्रह्मचर्य व्रत व क्षुल्लक दीक्षा	26	महामस्तकाभिषेक	52
गुरु आज्ञा का पालन	27	धर्मस्थल, मूड़विद्रि, कारकल दर्शन	55
सेवा से मिलती मेवा	28	तमिलनाडु का जागा भाग्य	56
द्रोणगिरि यात्रा व परीक्षा	29	भूगर्भ से प्राप्त प्रतिमा	58
मूकमाटी का ताजा स्वाद	29	उपसर्ग बना उपहार	59
गुरु वैय्यावृत्ति हेतु उपवास	30	मंत्र में शक्ति	59
केसली पंचकल्याणक	31	पाण्डिचेरी में धर्म-प्रभावना	60
सानोदा में प्रथम प्रवचन	32	पोन्नूरमलै वर्षायोग	61
ऐलक दीक्षा	33	तमिल का इतिहास	62
उत्कृष्ट साधना क संकल्प	34	पोन्नूरमलै की महिमा	62
भव्य मुनि दीक्षा	34	नैनार क्यों?	64
गुरु सौभाग्य का अवसर	35	सीखी तमिल भाषा	65

विषय	पृष्ठ क्र.	विषय	पृष्ठ क्र.
गाँव-गाँव में धर्म प्रभावना	65	एलोरा, चूलगिरि, सिद्धवरकूट दर्शन	103
तमिलनाडु में अनेकानेक कार्यक्रम	66	इंदौर गोम्मटगिरि दर्शन	104
सेवादल महिला मण्डल का गठन	67	टी.टी. नगर भोपाल चातुर्मास	106
तमिलनाडु में संगोष्ठी	67	भोपाल में विद्वत् संगोष्ठी	107
श्रुतकेवली पत्रिका प्रारंभ	68	ऐशबाग में पंचकल्याणक	108
विशाखाचार्य तपोनिलय स्थापना	69	चौकमंदिर भोपाल महावीर जयंती	109
एरम्बूर में पंचकल्याणक	70	अशोका गार्डन पंचकल्याणक	110
पूण्डी क्षेत्र दर्शन	71	सम्मेदशिखर यात्रा प्रारंभ	115
आचार्य विद्यासागर गुरुकुल स्थापना	72	अनियत विहारी-परिषह-	
कन्नलम् चातुर्मास	72	-विजयी गुरुदेव	116
तीर्थोदय काव्य का शुभारंभ	73	सम्मेदशिखर वंदना	
विशाखाचार्य तपोनिलय उद्घाटन	74	और पंचकल्याणक	124
ध्यान-मण्डप शिलान्यास	74	राँची वर्षायोग विद्वत् संगोष्ठी,	126
तपोनिलय में औषधालय प्रारंभ	75	अहिंसा शाकाहार सम्मेलन	128
दिगंबर मुद्रा प्रभावकारी	80	बंगाल की ओर विहार	132
तिरुवन्नामलै में अहिंसा रैली	81	भागलपुर, चम्पापुर, राजगृही दर्शन	133
तपोनिलय में सारस्वत् सम्मेलन	83	गुरु की अद्भुत करूणा	136
पुदुकामूर में वर्षायोग	88	दमोह, कुण्डलपुर मंगल प्रवेश	138
बेलूर में पंचकल्याणक	91	दमोह चातुर्मास और	
तमिलनाडु मे 7 वर्ष की प्रभावना	93	पंचकल्याणक निवेदन	139
बैंग्लोर में धर्म प्रभावना	96	इन्द्रध्वज महामण्डल विधान	141
सदलगा में पंचकल्याणक	98	पथरिया में प्रथम बार आगमन	144
गजपंथा, मांगीतुंगी दर्शन	100	दमोह पंचकल्याणक प्रारंभ	146
कोपरगाँव चातुर्मास	101	जन्मभूमि फुटेराकलां में आगमन	150

विषय	पृष्ठ क्र.	विषय	पृष्ठ क्र.
नैनागिरि, द्रोणगिरि दर्शन	153	माउण्टआबू दर्शन	219
बंधाजी में वार्षिक मेला	155	गिरनार जी वंदना व श्रुतपंचमी पर्व	221
टीकमगढ़ में महावीर जयंती	156	शत्रुंजय, भावनगर क्षेत्र दर्शन	224
ग्वालियर चातुर्मास	158	सूरत चातुर्मास	227
केन्द्रीय मंत्री ज्योतिरादित्य		महुआ क्षेत्र, पावागढ़ दर्शन	232
का आगमन	163	इंदौर में चातुर्मास व प्रभावना	234
ग्वालियर में संगोष्ठी आयोजित	165	डाक टिकिट का लोकार्पण	250
आगरा, महावीर जी मंदिर दर्शन	167	गोयल नगर, नसियाजी में कार्यक्रम	252
जयपुर चातुर्मास में प्रभावना	168	बाबनगजा पावागिरि,	
पंचकल्याणक जयपुर	172	सिद्धवरकूट यात्रा	257
केन्द्रीय मंत्री सचिन पायलट		खरगोन में अक्षय तृतीया	261
का आगमन	177	खातेगाँव चातुर्मास	263
तिजारा में महावीर जयंती	185	संदलपुर, नेमावर दर्शन	271
रेवाड़ी जैन स्कूल में प्रवचन	186	गुरु-शिष्य मिलन	272
हस्तिनापुर में श्रुत पंचमी पर्व	188	ऐसे मिला आचार्य पद	275
गुड़गाँव में दीक्षा दीवस	191	सीमंधरसागर जी की सेवा	278
जयपुर चातुर्मास	195	आचार्य पद से अलंकृत	280
कीर्तिनगर जयपुर में संगोष्ठी	197	सीमंधरसागर जी की समाधि	285
दाँता-रामगढ़ में पंचकल्याणक	203	बीड़ नगर में महावीर जयंती	290
लाँडनू में धर्म-प्रभावना	208	संयम के सजग प्रहरी गुरुदेव	293
आ.ज्ञानसागर समाधि दिवस	211	सद्गुणों की प्रतिमूर्ति गुरुदेव	294
रामगंजमण्डी भव्य चातुर्मास	213	स्वाध्याय; शब्द एक अर्थ अनेक	295
चाँदखेड़ी में धर्म प्रभावना	218	तारंगा में जैनेश्वरी दीक्षाएँ	301
चित्तौड़गढ़ किला,		बाँसवाड़ा में धर्म प्रभावना	318

विषय	पृष्ठ क्र.	विषय	पृष्ठ क्र.
उज्जैन, मक्सी, सोनकक्ष मंदिर	320	साधु संघ मिलन	397
पुनः भोपाल आगमन	323	गुरुसंघ में वाचना	399
अशोकागार्डन, चौकमंदिर में विधान	328	अनेक शिविर	400
भोपाल चातुर्मास	328	विद्वत् संगोष्ठियाँ	401
भोजपुर दर्शन	336	वेदी प्रतिठाएँ	401
दमोह पंचकल्याणक	341	पंचकल्याणक कलशारोहण महोत्सव	402
एक सप्ताह की महावीर जयंती	345	बृहद् मण्डल विधान	403
दमोह में जैनेश्वरी दीक्षा	347	डाक्टर्स/कवि सम्मेलन	404
जबलपुर चातुर्मास	351	अहिंसा शाकाहार सम्मेलन	405
पुरवा जबलपुर में दीक्षा	355	धार्मिक पाठशाला शुभारंभ	406
सागर, बहोरीबंद, बिलहरी दर्शन	358	श्रावक साधना संस्कार शिविर	406
कुण्डलपुर, फुटेरा, पथरिया आगमन	361	32 दिनों का वृहद अनुष्ठान	406
शाहपुर में महावीर जयंती	364	कण्ठपाठ प्रतियोगिता	407
आर्यिका दीक्षा कार्यक्रम	365	सिद्धक्षेत्र-अतिशय क्षेत्र दर्शन	408
बण्डा चातुर्मास	370	देखें विशेष व्यक्ति	410
पजनारी में वार्षिक मेला	374	विद्वान व वैज्ञानिक पधारे	410
गाँव-गाँव में मंगल विहार	375	गुरु दर्शनार्थ पधारे मंत्रीगण	411
कटनी में आचार्य पदारोहण दिवस	381	आहार विहार में सहयोगी	416
सागर में वेदी प्रतिष्ठा	386	चेतन-अचेतन कृतियाँ	418
अशोकागार्डन भोपाल चातुर्मास	389	साहित्य कृतियाँ (रचनायें)	419
गुरु करकमलों से		पूर्वावस्था परिचय चार्ट	420
पंच मुनिराजों की दीक्षा	393		
गुरु संघ में साधुगण	396		
गुरु समक्ष समाधियाँ	397		

पारसचन्द से आर्जवसागर

-आर्यिकारत्नश्री 105 प्रतिभामति माताजी

(बचपन से आज तक की जीवन गाथा)

महापुरुष का अवतरण:-

तीर्थंकरों की जन्मभूमि, धर्म का आधार, अहिंसा प्रधान इस भारतदेश के हृदय मध्यप्रदेश के दमोह जिले में फुटेराकलाँ एक सुन्दर ग्राम है। जो सुन्दर-सुन्दर फलादिक वृक्षों व धान्यों की हरियाली से परिपूर्ण दर्शित होता है। ग्राम के प्रमुख स्थान पर कुछ धनिक जैन परिवारों के बीच भगवान चन्द्रप्रभु का सुन्दर जिनालय है। ऐसे भव्य जिनालय के निर्माणकर्ता परवार समाज के श्रीमान कालूराम 'व्या' जैन के पूर्वज थे और जिन कालूराम 'व्या' के सुन्दर नाम वाले पुत्र हुकुमचंद, भागचंद, कोमलचंद, शिखरचन्द, प्रकाशचन्द जैन थे। इन पुत्रों में से चौथे नम्बर के सुपुत्र श्री शिखरचन्द जी (हाईस्कूल के शिक्षक) के गृह में उनकी धर्मपत्नी श्रीमती मायाबाई की कूख से भाद्रपद शुक्लाष्टमी 11.9 सन् 1967 सितम्बर को प्रातः 4 बजे ब्रह्ममुहूर्त्त की प्रत्यूष वेला में फुटेराकलाँ की धरती पर एक सुन्दर पूर्णमासी के चन्द्रमा-सम पुत्र का उदय हुआ। वास्तव में चन्द्रमा जैसा खूबसूरत ऐसा पुत्र माया माता को न मिले तो किसको मिले? क्योंकि माया माता ने जब शास्त्र के पट (चित्र) में भ. नेमिनाथ के भाई और यशोदा के दुलारे श्री कृष्ण को देखा तो गर्भ के समय ऐसा ही दोहला हुआ कि हमें भी श्रीकृष्ण जैसा सुन्दर खूबसूरत पुत्र होना चाहिए। तो ऐसा ही हुआ। पुत्र जन्मोत्सव में गृह-आंगन में मंगलवाद्य बज रहे थे, सौभाग्यवती महिलाएँ गीत गा रही थीं फिर भी माया-माता विचार मग्न थीं कि यह तो प्रायः सर्व गृहों में होता है लेकिन मेरे जैसे शुभ लक्षण वाला पुत्र सभी को नहीं मिल सकता। जो अज्ञानी रूपी लोहे को सोने जैसे कर देने वाले गुणों को भी लेकर आया था इसलिए तो माता-पिता ने उसका शुभ नाम

'पारसचन्द' जैन रखा। अथवा शिखरजी पर जैसे मोक्ष पाने पारसनाथ अवतरित हुए थे ऐसे ही शिखरचन्द जी के यहाँ मोक्षमार्ग का संस्कार पाने 'पारसचन्द' अवतरित हुए हों मानो और गृह में उसी राशि से 'पप्पू' कहकर भी लाड़-प्यार में पुकारते थे उसे।

बचपन का काल (शैशव काल):-

भगवान चन्द्रप्रभु का दर्शन करता हुआ पारसचन्द माता-पिता का प्रथम लाड़ला पुत्र परिवार के स्नेह से और अपनी शारीरिक सूर्य के समान कांति और सुन्दरता के कारण लोगों के हाथों हाथ जाता, सभी की गोद में सोता, फुटेरा की धूली में लोटता, गिरता। कभी सुन्दर झूले में झूलता तो माँ मायाबाई प्रभु के भजन सुनाती, स्तुति गाती और फिर कभी झूले में ही मचलता, रोता तो माँ लोरी भी सुनाती उसे, क्या सुनाती व क्या भावना भाती देखो-

माँ की शिक्षा:-

तू तो सो जा बारे वीर, तू तो सो जा बारे वीर,
इस झूले में तू क्यों रोवे, कौन भई तकलीफ ॥टेक॥
तू तो सो जा बारे वीर, तू तो सो जा बारे वीर,
आदिनाथ तीर्थंकर झूले, वर्धमान महावीर
इस झूले में झूल चुके हैं कैसे-कैसे वीर।
तू तो सो जा बारे वीर, तू तो सो जा बारे वीर,
योनि लाख चौरासी झूलों तो न रोयो वीर,
अबकी जतन करो तुम ऐसी, मिटे जगत की पीर।
तू तो सो जा बारे वीर, तू तो सो जा बारे वीर,
माता तेरी समझावे सुन मन धर के धीर,
अब का यतन करो तुम ऐसो पियो न माँ का क्षीर।
इस झूले में तू क्यों रोवें, कौन भई तकलीफ,
तू तो सो जा बारे वीर, तू तो सो जा बारे वीर ।।

धन्य है ऐसी माया माँ जिनने कि कितने सुन्दर भाव संजोये पारस के लिए, वे सम्बोधन देती हैं कि अब की बार ऐसा जतन (पुरुषार्थ) कर ले कि 'मिटे जगत् की पीर' 'पियो न माँ का क्षीर' अर्थात् तुझे पुनः जन्म लेकर इस संसार में न आना पड़े और मोक्षमार्ग पर चलकर तू भगवान बन जा। देखिए बचपन में ही अपने लाड़ले पुत्र के लिए मुनि बनने का संस्कार दे रही हैं धन्य हैं ऐसी माँ जो 'मंदालसा' माँ जैसी अपने पुत्र को संस्कार दे रही हैं। तो चलिए आगे जब पारस थोड़ा चलने-फिरने लगा तो कभी तीर्थंकरों की कथा सुनाती तो कभी पहले वृषभनाथ जी बैल का चिन्ह, दूसरे अजितनाथ जी हाथी का चिन्ह इत्यादि चौबीस तीर्थंकरों के नाम और चिन्ह वे मायादेवी पारस को सिखाती और जब जिनालय ले जाती थीं तब- कहाँ निस्सही और कब अस्सही बोलना? कैसे बैठकर नमोस्तु करना? कैसे गंधोदक लेना ? कैसे द्रव्य प्रभु को अर्पित करना? ये सब सिखाती थीं अपने बेटे पारस के लिए। इतना ही नहीं जैसे-जैसे बड़ा होता चला वैसे-वैसे 'णमोकार मंत्र'; चत्तारि मंगल; आदि के साथ-साथ 'प्रभु पतित पावन मैं अपावन' आदि दर्शन स्तुतियाँ भी संस्कार दात्री माँ माया ने अपने लाड़ले पारस को सिखाईं। थोड़े दिनों के बाद फिर तो प्रातः होते ही स्वयं ही पारस डब्बी में चावल लेकर मंदिर जाने की रट लगाने लग गया। मन्दिर जाये बिना चैन कहाँ उसे, मानो मंदिर जाना शौक-सा बन गया था उसे, मन्दिर जाये बिना कुछ खाना-पीना पसंद नहीं करता था वह पारसचन्द, मतलब कि धार्मिक संस्कार का बीजारोपण उस पर हो ही गया था। फिर स्वयमेव पारस के मन में प्रश्न भी आने लगे कि प्रभु की तीन प्रदिक्षिणायें क्यों लगाना चाहिए माँ? तब माँ कहतीं कि रत्नत्रय पाने के लिए व तीन लोक के नाथ बनने के लिए तीन परिक्रमा लगाई जाती हैं बेटा। ऐसे ही प्रश्नों से ज्ञातव्य है कि बचपन से ही ऐसा होता है धर्म का संस्कार। पारस गेंदादि खिलोनों से भी खेलता हुआ अपने देवों जैसे मित्र सुरेन्द्र, वीरेन्द्र, राजेश आदि के साथ शुक्ल पक्ष की चन्दकलाओं सदृश बड़ा हो चला, कभी मित्रों के साथ

नदी स्नान को जाता, कभी परिवार के आम्रवन (बगीचे) में जा मीठे-मीठे आम खाता तो कभी बटयागढ़ की बावड़ी देखने और बाजार घूमने चला जाता था सो ठीक ही है क्योंकि तीर्थंकर भी देवों के साथ ऐसी ही कुछ क्रीड़ायें करते-करते बड़े हो जाया करते थे।

ननिहाल जबेरा का दृश्य:-

पिताश्री शिखरचन्द जी को परिवार को लेकर बी.एड. हेतु जबलपुर और सरकारी नौकरी के कारण कभी तारादेही, बाँसाकलाँ, पथरिया आदि स्थानों में रहना पड़ा। अन्त में पथरिया में धर्मायातन व शिक्षण आदि की सुविधा को देखकर फुटेराकलाँ में निजी गृह व जमीन होते हुए भी पथरिया में ही पारसचन्द के पिता श्री उन शिखरचन्द जी ने एक सुन्दर गृह निर्माण कर वहीं निवास बना लिया। क्योंकि जहाँ लोगों से घुल-मिल जाते हैं वहाँ बहुत दिनों के प्रवास से आत्मीयता स्वयमेव हो जाती है और वहीं लोग व्यवहारिकता से हंसी-खुशी रहने लग जाते हैं। लेकिन पारस का ननिहाल तो जबेरा में था। जहां पारसनाथ का मन्दिर था। पारसचन्द के नाना का नाम श्रीमान् कोमलचन्द खूबचंद सिंघई जैन था और नानी का नाम देशरानी सिंघई जैन था। पारसचन्द के शुभ नाम वाले सगे चार मामा थे नवीनकुमार, देवकुमार, मिट्ठूलाल और पवनकुमार जैन एवं एक अर्चना नामक मौसी भी थीं इन सब का स्नेह अपनी बड़ी बहिन मायाबाई पर खूब था। इसलिए जब भी ग्रीष्मकालीन, शीतकालीन छुट्टियों का समय आता तो पारसचन्द के नाना और मामा लोग अपनी बहिन के परिवार को जबेरा ले आते थे और एक-एक, दो-दो महिनों तक पारसचन्द को अपने स्व परिवार से भी अधिक स्नेह देते थे। अपने मामा-मामी, नाना-नानी के परिवार के स्नेह से भी फलता-फूलता रहा वह पारस; व बबलू, लालू, मुकेश, अन्नू, लखन आदि मित्रों के साथ खेलते हुए कभी पिकनिक के लिए खेत-खलयान जाता कभी नदी-नहर पर जाता कभी आम्रवन में जाता तो कभी बंदरकोलाबांध (डेम) पर जाता इत्यादि रूप

में मनोरंजन करता था। प्रातः नाना जी के साथ हाथ पकड़कर अभिषेक देखने व पूजन सीखने जिनालय भी जाया करता था मन्दिर से माथे पर चंदन भी लगाकर आता था। इस प्रकार धार्मिक संस्कारों से भी जीवन आगे जुड़ता ही गया सो ठीक ही है क्योंकि अच्छी होनहार वाले पुत्र खेल-खेल में ही बड़े होते हैं और धर्म भी सीख जाते हैं। वहाँ ही पारस का जीवन जिनमंदिर में चलने वाली धार्मिक पाठशाला से भी जुड़ा और जिससे तत्त्व ज्ञान से भी सुसंस्कारित होने लग गया था। ऐसी जबेरा की धरती भी पारस के जीवन को मोक्षमार्ग के जीवन को उपयोगी बनी।

शिक्षाकालः-

4-5 वर्ष की उम्र में जब जबेरा में धार्मिक पाठशाला में तीर्थंकरों व महापुरुषों के जीवन परिचय में रुचि लगी तभी उस छोटी-सी उम्र में जबेरा नगर में आयी नाटक मंडली के श्रीपाल जैसे नाम वाले व्यक्ति ने पारसचन्द का हाथ देखकर बताया था कि तुम साधु बनोगे, जो कथन पारस की स्मृति पटल पर अंकित हो गया था। 5-6 वर्ष की उम्र में माँ ने जब भक्तामर व छहढ़ाला पढ़ाया तथा तत्त्वार्थसूत्र आदि को सुनाया तब उन माँ से पारस ने पूछा कि आपको यह धर्म-पाठ किसने सिखाया था? तब उन्होंने कहा कि मुझे शादी के पहले जबेरा मंदिर में पधारे क्षु. चिदानंदसागर महाराजजी ने पढ़ाया था। वे बड़े प्रौढ़ व ज्ञानी थे। हमारी जैसी कई कन्यायें व महिलायें, पुरुष उनसे धार्मिक ग्रन्थ सीखते थे; और जब चौका लगाते थे तो आधा पोन कि.मी. दूर से कुएँ (झिरिया) का मीठा पानी सिर पर गागर रखकर लाते थे क्योंकि गाँव के भीतर का पानी थोड़ा खारा था।

प्रथम सिद्ध क्षेत्र वंदना; गिरनार कीः-

6-7 वर्ष के उम्र में ही पारस ने अपने माता-पिता और नाना आदि ननिहाल परिजनों के साथ रेल तथा मोटर गाड़ियों द्वारा गिरनार, पालिताना, इन्दौर, बावनगजा, सिद्धवरकूट आदि क्षेत्रों की यात्रा की थी और गिरनार की

ग्यारह हजार सीढ़ियाँ बिना किसी सहारे हँसी-खुशी में पैदल चढ़ ली थीं। इस यात्रा में पारस के स्मृति पटल पर जो कुछ अविस्मरणीय बातें बनी रहीं वे ये थीं कि पहाड़ पर पाँचवीं टोंक पर नेमिनाथ के चरण पूर्ण दर्शित होते थे। वहाँ पर कोई सरागी मूर्ति नहीं थी और न लालची पण्डों का प्रभाव था। रास्ते में पहाड़ पर यादव वंशी लोग मिट्टी के सकारों में दही बेचा करते थे। पारस के मन में भी लालसा जगी कि मैं भी श्रीकृष्ण के सदृश एक सकोरे में दही खाऊँ। पारस के माता-पिता ने दही खरीद भी दिया लेकिन पारस ने पूरा तो न खाया थोड़ा खाकर वही छोड़ दिया। पालिताना (शत्रुञ्जय) में पूर्ण वन्दना के उपरान्त एक भोजनालय में रसगुल्ले आदि के साथ रुचिकर भोजन भी किया था। सोनगढ़ में भगवान महावीर का 2500 वें निर्वाण महोत्सव के उपलक्ष्य में मेला देखा था व हेलिकॉप्टर से पुष्पवृष्टि भी देखी थी। इसी तरह भावनगर में समुद्र के किनारे पारस ने एक बड़ा पानी का जहाज व किनारे पर नमक बनते हुए देखा था। इन्दौर में श्री हुकुमचन्द जी सेठ का काँच मन्दिर, इन्द्र भवनादि मंदिरों का दर्शन किया था। और इसी तरह विशाल बगीचे में पारस ने 15 पैसे टिकिट वाली बच्चों की रेल में भी सवारी की थी। बावनगजा (बड़वानी) के आदिनाथ भगवान के दर्शन करके ओंकारेश्वर से नाव में बैठकर नदियों का संगम पारकर के सिद्धवरकूट की मंगलमय वन्दना भी की थी। ऐसे करीब दो महिने की सुखद यात्रा कर पथरिया वापिस लौटे थे। ये पावन स्मृतियाँ सिद्धक्षेत्र गिरनार की यात्रा को याद करने में यादगार-संस्मरण बन गयीं।

गुरुदेव के प्रथम दर्शनः-

11-12 वर्ष की उम्र में पारसचन्द ने आचार्य श्री विद्यासागर जी के प्रथम दर्शन पथरिया नगर के बांझल सदन में किये थे। तब संघ में 4-5 के लगभग पिच्छि धारी थे और बीच के मंदिर के सामने रोड पर लगे स्टेज पर विराजित आचार्य संघ का दर्शन पूर्वक प्रवचन भी सुना था। 13-14 वर्ष की उम्र में पारस ने पुनः दमोह के नन्हें मन्दिर में विराजित आचार्य श्री विद्यासागर

जी ससंघ के दर्शन किये थे। तब संघ कुछ बड़ा देखने में आया था। कुछ मुनि और ऐलक भी थे। धर्म-चर्चा कर रहे थे और अपनी आवश्यक क्रियाओं में पिच्छिकाएँ घुमा रहे थे बड़ा वैराग्यवर्धक दृश्य लग रहा था। आचार्य श्री के दर्शन पारस ने माँ के साथ जब एक बड़ी खिड़की से भी किये और जोर से नमोस्तु किया तो तिरछी आँखों से जो उन गुरुवर की दृष्टि पड़ी थी वह भी हमेशा को यादगार बन गयी थी क्योंकि आचार्य श्री की श्रावकों को देखने में ज्यादा उत्सुकता नहीं थी। उसी दिन एक चौके में उनका आहार देखा था वे पीली-सी कोई वस्तु ले रहे थे। यह अवसर पारस के मन में मोक्षमार्ग की रुचि बढ़ाने वाला था। मुनिमार्ग में आने की उत्सुकता पैदा करने वाला था।

पारसचंद के शिक्षक, मित्रगण व रुचियाँ:-

पारसचन्द की मिडिल स्कूल की पढ़ाई पथरिया में, हाई स्कूल की पढ़ाई निकटस्थ बांसाकलाँ में सम्पन्न हुई। बांसाकलाँ में वे उसी क्लास में पढ़ते थे जहाँ कि उनके पिता श्री अंग्रेजी और हिन्दी का विषय पढ़ाते थे। इसी वजह से अपने पिताश्री के मुखारबिन्द से शिक्षा पाने का एक सुअवसर मिला। बचपन से पारसचन्द के लौकिक शिक्षा प्रदाता पुराण जी मास्टर साहब (ब्राह्मण शिक्षक), मनोहर सोनी, शिखरचन्द जी बांसा वाले, राजोरिया मास्टर साहब आदि थे। पारसचन्द को पढ़ाई में भूगोल, सामाजिक शास्त्र, और चित्रांकन में बड़ी रुचि थी। राजेश (रज्जन) जैन, सुभाष, संजय, विजय, अनिल, पद्म, रवीन्द्र, कमल आदि उनके मित्र थे। पारस खेल में गेंद, गिल्ली-डण्डा, फुटबाल, काँच की गोलियाँ (चिरंगे), कैरम, दौड़ लगाना,ऊपर से कूदना आदि रूप से खेल में रुचि लेकर खेला करते थे। ये खेल मात्र मनोरंजन नहीं थे बल्कि वे एक दिन भव्यात्मा पारस के लिए वैराग्य के कारण बन गये क्योंकि जो जैसी दृष्टि रखता है वैसे सृष्टि को पा लेता है। पारस को रात्रि भोजन, जमीकन्द, सप्त व्यसन, धूम्रपान, फालतू घूमना, धोखा देना, बातें बनाना, अनावश्यक वार्तालाप, गन्दी फिल्म देखना आदि ये बातें ना पसंद थीं।

पाँच वर्ष की उम्र से ही पारस चंद को धार्मिक पाठशाला में जाना, स्कूल समय के पूर्व पहुँचना, व्यर्थ झगड़ा नहीं करना, बिना पूछे किसी की वस्तु नहीं लेना, शिक्षकों की आज्ञा का परिपूर्ण ध्यान देना, पिकनिक में आपस में मदद करना, दु:खी, दरिद्री लोगों या गरीब मित्रों की सहायता करना बहुत पसंद था और मात्र सोलह वर्ष की उम्र में ही संगीत पार्टी में मंजीरा आदि के साथ आरती प्रतियोगिता में भाग लेने में बहुत दिल पसंद रुचि थी। पारसचन्द पंच कल्याणक आदि का मेला, मुनि संघ दर्शन, क्षेत्र दर्शन, धार्मिक नाटक, राम-लीला, तीर्थंकर की आरती प्रतियोगिता आदि में भी भारी रुचि लेते थे, चाहे कुण्डलपुर का पञ्च कल्याणक हो, चाहे शाहपुर या सिविल वार्ड दमोह का इनमें भी रुचि ली थी, पारस को बचपन से ही बड़े बाबा कुण्डलपुर के साक्षात् दर्शन होते रहे और आचार्य श्री विद्यासागरजी का प्रथम दर्शन जो पथरिया (दमोह) नगर के बांझल सदन में किया था ये दोनों उनके लिए अविस्मरणीय बातें बन गयीं।

वैराग्य प्रवेश:-

16-17 वर्ष की उम्र में ग्यारहवीं बोर्ड परीक्षा पास करने के बाद जो बचपन से जिनालय व पाठशाला जाने का संस्कार था और विनती, स्तुतियाँ, छहढ़ाला, वर्णी जीवन गाथा, कुछ पुराण सुनने वा चारित्र चक्रवर्ती ग्रन्थ पढ़ने का जो संस्कार था उसने आचार्य श्री विद्यासागर जी के संघ में प्रवेश पाने को आकृष्ट किया और अंदाज व अनुमान से गृह में पूछे बिना ही सम्मेद-शिखरजी की ओर रेल से अकेले यात्रा प्रारम्भ कर दी। कटनी में रेल बदली और पारसनाथ स्टेशन फिर मधुबन तक यात्रा चली लेकिन आचार्य श्री तो कलकत्ता या उदयगिरि-खण्डगिरि की ओर थे तब सही पता नहीं लगने से वापिस गृह आना पड़ा। गृह में उथल-पुथल मची थी। किसी ज्योतिषी ने बता दिया था कि हजार किलोमीटर के आस-पास है तुम्हारा बेटा अब आने की ओर है। कुछ लोगों ने आहार भी छोड़ रखा था। घर आने पर सबको खुशी हुयी

और पारस के वैराग्य की सराहना के साथ घर-घर निमंत्रण होने लगे।

गुरुचरण की लगनः-

सन् 1984 में मढ़ियाजी जबलपुर में जब आचार्य श्री विद्यासागर जी अपने विशाल संघ सह वर्षायोग हेतु विराजमान हुए तब फिर बिना बोले गृह से निकलकर और गुरु के चरणों में बीस दिन तक रहकर सब भावनाएँ व निवेदन सुनाने का अवसर मिला पारस को। गुरुवर ने माता-पिता की आज्ञा प्राप्त करने की बात कही, लेकिन गृह के लोगों ने पकड़कर ले जाने की ठानी। आचार्य श्री के समक्ष बैठे हुए पारस को माँ ने हाथ पकड़कर खींचा और रोई तो आचार्य श्री को सहन नहीं हुआ, दुःख या मोह देखा नहीं गया माँ का; अतः उठकर वे बाहर चले गये। आखिर माता-पिता के इस आग्रह पर आचार्य श्री ने कह दिया कि कुछ दिन और गृह पर साधना पर लो तब माता-पिता के इस वादे पर कि फिर हम आचार्यश्री के पास भेज देंगे, गृह जाना पड़ा पारस को। गृह जाकर बी.ए. प्रथम वर्ष की परीक्षा दमोह के डिग्री कॉलेज से पास की और नमक त्याग की साधना व पर्व दिनों में व्रत एकासन व उपवास की साधना बढ़ाई। करीब 17 वर्ष की उम्र में मित्र युवाओं ने; शायद इसलिए कि ये मित्र ना जाये नगर छोड़कर; अतः श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन बड़े मन्दिर के सेवादल का अध्यक्ष बना दिया और कार्यालय सौंप दिया तब उसी कार्यालय और मन्दिर में पद्म जैन (मलैया) को साथ लेकर, पारसचंद ने स्वाध्याय के साथ सामायिक करने का अभ्यास प्रारम्भ कर दिया था। ऐसे पारसचन्द तो अब अध्यात्मिक कविता लिखने में भी रुचि लेने लगे थे। उनकी जीवन की पहली कविताः-

दृष्टि बदली, सृष्टि बदली,
बदल गया सारा जीवन मेरा,
हे महावीर ! करुणा के नायक
एक भव्य कहता है मुझ से

धन्य-धन्य भाग्य है तेरा
कब बदलेगा जीवन मेरा
तेरे मन में यही शल्य थी
कब मेरा मन वैरागी होगा
कब जगेगा आतम ज्ञान
जिससे होगा आत्म श्रद्धान

दृष्टि बदली सृष्टि बदली
बदल गया सारा जीवन तेरा

बचपन तेरा सुखमय बीता
स्वप्न सजे उमंगमय बीता
तेरे स्वप्न में था भगवन
जिसका किया तूने गुणगान
स्वप्न साकार हुये तेरे
यही भावना थी जो तेरी
स्वप्न साकारों का जीवन तेरा
सुख मय बीता सुखमय बीता

दृष्टि बदली सृष्टि बदली
बदल गया सारा जीवन तेरा

जिस घर में तेरा जन्म हुआ था
जिस माता ने जन्म दिया था
उस माता का स्वप्न था ऐसा
मेरा बेटा जिनमन्दिर जाये
जिनमन्दिर से वैराग्य को पाये
वैरागी होकर मोक्ष को जाये
धन्य-धन्य भाग्य है तेरा
माता के स्वप्न से दृष्टि बदली

दृष्टि बदली सृष्टि बदली
बदल गया सारा जीवन तेरा

ऐसे पिता ने बड़ा किया था
जिनको जीवन की चाह थी ऐसी
मेरा बेटा-वैरागी होगा
वैरागी होगा-आत्म-ध्यानी होगा
आत्म-ध्यान से मोक्ष पधारे
जिन पिता का स्वप्न था ऐसा
जिनको जीवन की चाह थी ऐसी
उन मात-पिता को वंदन सबका
जिनके स्वप्न से दृष्टि बदली

दृष्टि बदली सृष्टि बदली
बदल गया सारा जीवन मेरा

हे महावीर करुणा के नायक।
धन्य-धन्य भाग्य है मेरा।

पारसचन्द जैन, 2-8-84, गुरुवार

पारसचन्द ने आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज पर भी कविता लिखी थी। वह इस प्रकार है कि

विद्यासागर जग के तारे

विद्यासागर जग के तारे
जग में रहते जग से न्यारे
सबके नयनों के दुलारे
कठोर तप की दृढ़ता वाले
जग को राह दिखाने वाले
धर्म का पथ बतलाने वाले

अमृतवाणी गंगा को तुम
जग में नित्य बहाने वाले

विद्यासागर जग के तारे
जग में रहते जग से न्यारे

विद्यासागर की बचपन की
कहानी इस संसार में है निराली
हुआ जब वैराग्य विद्यासागर को
तब त्याग दिया घर के मोह को
वे उन्नीस बरस की उम्र में ही
घर छोड़ बढ़े साधना पथ पर
विषय भोगों से परे, निराले
आतम ज्ञान को जगाने वाले

विद्यासागर जग के तारे
जग में रहते जग से न्यारे

विद्यासागर का वह ध्यान
इस सारे जगत् में निराला था
उनका ध्यान लगा जब धर्म में
मात- पिता की आज्ञा लेकर
ब्रह्मचर्य व्रत दृढ़तम पाला था
पिच्छि कमण्डल धारण करके
सीधे मुनि हुये थे विरागी
मुनि पद की दृढ़ता रखने वाले

विद्यासागर जग के तारे
जग में रहते जग से न्यारे

विद्यासागर हैं ज्ञान के सागर
जिन्होंने गुरु के संग में रहकर

ज्ञान का अर्जन किया अपार
तब गुरु की पदवी मिली फिर गुरु से
विद्यासागर में खूब जागा ज्ञान
तब करने लगे खूब व्याख्यान
व्याख्यानों की बोछारों से
अपने मार्ग पर बढ़ने वाले

विद्यासागर जग के तारे
जग में रहते जग से न्यारे

विद्यासागर की ज्ञान किरण का
उजियाला फैला सारे जग में
ज्ञान के उस उजियाले से
उपजा अब भविकों को ज्ञान
ली दीक्षा विद्या के सागर से
संघ बना एक बड़ा मुनि का
देकर ज्ञान किरण सभी को
जगा रहे हैं जग को सारे

विद्यासागर जग के तारे
जग में रहते जग से न्यारे

विद्यासागर हैं तप के धारक
जिसकी है महिमा अपार
जिस तप का पालन करते हैं
वह तप है काँटों की राह
विद्यासागर सारे भारत में
करते हैं धर्म का विस्तार
वन्दना करते सारे तीर्थों की
संयम तप का कर निस्तार

अपने चारित्र की दृढ़ता वाले
विद्यासागर जग के तारे
जग में रहते जग से न्यारे।
(4-8-84)

और भी कुछ कवितायें इतनी अल्प उम्र में रचने लगे थे। एक बार भगवान पार्श्वनाथ के बड़े मंदिर के प्रांगण में धार्मिक कवि सम्मेलन रखा गया था। जिसकी अध्यक्षता पारसचन्द जी के पिताजी श्रीमान् शिखरचन्द जी कर रहे थे। उसी सम्मेलन में पारस ने अपनी कवितायें पढ़ी तो जनता भाव विभोर हो गयी और डॉ. भागचन्द जी जैन ने पारसचन्द को कविताओं की विशेषता पर एक पुरस्कार भी घोषित किया था। तदुपरान्त अन्त में कार्यक्रम की अध्यक्षता के नाते आभार व्यक्त करते हुए श्रीमान् शिखरचन्द जी ने भी अपनी कुछ कविताएँ भजन रूप में गायी थी। जो पारस के लिए भी अति पसन्द थी और वैराग्य में भी निमित्त बनी वे निम्न प्रकार है - ये आतम कहाँ-कहाँ भटक फिरी....., समय गुजर गया.....आदि। नवम्बर 1984 में पथरिया में ही (जब वैराग्य की अवस्था में आचार्य श्री के पास जाने की ठान रखी थी तभी) क्षु. मणिभद्रसागरजी (वर्तमान में मुनि श्री ब्रह्मानंदसागर जी) का पदार्पण हुआ उन क्षुल्लक जी ने कौमदी व्याकरण व रत्नकरण्डक श्रावकाचार भी पढ़ाना शुरू किया था और पारसचंद से कहा कि तुम जैसा मुझे एक युवा चाहिए तब पारसचंद ने कहा कि मैंने आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के चरणों में समर्पित होने का निश्चय कर लिया है मैं मौंका देख रहा हूँ कि पिंजड़े की खिड़की कब खुली मिले और उड़ जाऊँ ' फिर वापिस न आऊँ। पारस की ऐसी भावना को सुनके क्षुल्लक जी ने कुछ अनुभव देकर बहुत प्रशंसा की। ऐसे जीवन का एक शुभ मोड़ जो शुरू हुआ था जिस वजह से वैराग्य के पथ पर चलने वाले पारस अब सब अन्य कार्यों से रुचि हटाकर अपने जीवन का

अनुभव वा वैराग्य के चिंतवन वा लेखन में लीन रहने लगे थे। पारसचंद ने जो अपने चिंतन का जिन लेखों में अपनी अन्तर भावनाओं को व्यक्त किया है वे यहाँ प्रस्तुत किये जा रहे हैं -

1. अपना भविष्य

मैं अपने भविष्य के बारे में सोचकर बड़ा चिंतित सा होता हूँ कि जगत् की क्या इन सुख सुविधाओं में रहकर भी शान्ति का अनुभव होता है? तो नहीं। ना जाने मेरे भविष्य के बारे में पहले से कुछ लिखा-सा मालूम पड़ता है। कभी मेरे पिताजी इतनी खुशी के साथ इतने ऊँचे विचार धार्मिक भजनों में मुझे सुनाने लगते हैं तो कभी बोलने लगते हैं कि पप्पू तुम कोई अच्छा सा फेन्सी या रेडीमेड स्टोर डाल लो या कभी वो बोलते हैं कि तुम जो चाहो अच्छी पढ़ाई कर कोई अपने विचार अनुसार अच्छी सी नौकरी पकड़ लेना मगर क्या करूँ मेरा मन ही कुछ ऐसा है, मैं सोचता हूँ कि जहाँ तक बने जब तक इन सारे जंजालों से दूर रहकर धर्म की ओर मन लगाऊँ। अगर मैं कोई धर्म की पुस्तक उठाता हूँ तो पढ़ने के पश्चात् कुछ शान्ति का अनुभव होता है तो भी ठीक ही तो है। शान्ति तो हर एक मनुष्य के लिए जरूरी है। मेरे लिए अगर धर्म से शान्ति मिलती है; तो किसी को बिजनिस से, नौकरी करने से या घूमने से इसलिए मैं सोचता हूँ कि इस धर्म रूपी शान्ति और सुख से अच्छा और क्या है? इसलिए मैं यहाँ-वहाँ दोस्तों, रिश्तेदारों और बाजार आदि में घूमने ज्यादा ना जाकर और उससे रुचि हटाकर यहीं घर पर रहकर कुछ लेख, कवितायें लिखने की सोचता हूँ और दुःखमयी संसार को देखकर आत्म-सुख अर्थात् स्वान्तः सुखाय अपने विचारों को कुछ शब्दों, पेराग्राफों और पेजों में एकत्रित करने की सोचता हूँ जिससे मुझे सफलता मिले और जीवन में कोई अच्छा सा लाभ हो।

मैंने अपने जैन परिवार जीवन में जन्म से लेकर अभी तक अपने घर पर रहकर ना कोई जैन पाठशाला से विशेष अध्ययन और न कोई पण्डित से

शिक्षा ली मगर इन पुस्तकों को जिनको मैंने पढ़ा है कितनी शक्ति है इनमें? कि इनमें से यदि ''कण भर समान धर्म जीवन में आ गया तो मन भर ग्रन्थों से ज्यादा है।'' इसलिए मुझे उस कण भर धर्म के लालच में इन सारे शास्त्रों की अपेक्षा कुछ सुने हुये, पढ़े हुये विचारों को ध्यान में रखकर अपने भविष्य के बारे में सोचना होगा जिससे भविष्य उज्ज्वल बने और उन्नति का अवसर प्राप्त हो सके।

2. आत्म चिंतन

मैंने अपने घर में अपने माता-पिता व भाईयों के साथ बचपन से अभी तक इतना सुखमय जीवन व्यतीत किया और बड़ी शान्ति के साथ मेरा बचपन व्यतीत हुआ और अभी होता जा रहा है। मेरे घर में मेरे माता-पिता में इतना ज्ञान है कि हर समय मुझे उनसे धर्म की बातें सुनने को मिलती रहती हैं। मेरा कैसा पुण्य का उदय होगा जो मुझे इतने ज्ञानी माता-पिता मिले।

मैं जब छोटा था तब मेरी आदत ही कुछ ऐसी थी कि जब घर में कोई धर्म की बातें होती तो मैं उन्हें दुहरा कर पूछता इसलिए मुझे कोई भी बात अच्छे से समझ में आ जाती थी। मैंने अपने घर में रखी हुई बहुत सी धर्म पुस्तकों की मरम्मत करके उनको पढ़ने और समझने की कोशिश की मगर मुझे उनको पढ़कर गहराई से चिन्तवन करने में भारी रुचि लगी। और उन पुस्तकों में से मुझे अल्प ज्ञान के कारण कुछ तो समझ में आया जिससे मेरी रुचि अधिक बढ़ती गयी। लेकिन मेरे दिमाग में बहुत दिन पहले से कुछ अटपटे से प्रश्न उठते रहते थे और मेरा मन कुछ इस संसार को देखकर निराश सा होने लगा। मैं सोचता हूँ कि मेरा मन इस संसार में तथा मेरे कुटुम्बी, रिश्तेदारों और इस संसार के कुछ विचित्र रीतिरिवाजों, परम्पराओं, भावनाओं में कुछ बदलता हुआ और हटता हुआ सा मालूम पड़ता है। क्योंकि आज का हर एक मानव स्वार्थी और बड़ा लालची महसूस होता है। वह सिर्फ धन वैभव व भोगों के लालच में अपने जीवन को भूलकर और अपने माता-पिता, भाई, बहिन,

रिश्तेदारों आदि की भलाई को भूलता जा रहा है और अपने जीवन का सुख इस धन पैसा और शरीर में मानकर आत्मा को भूल गया है।

इस सांसारिक जीवन में जब दो रास्ते हैं एक है मुक्ति का और एक संसार भ्रमण का तो जो रास्ता मानव के आत्म कल्याण में हितकारी है वह सबसे उत्तम है। एक मानव अपने माता-पिता और भाई-बहिन घर कुटुम्ब और इस दुःखमयी संसार को छोड़कर उन सुखों को छोड़कर जिनमें शान्ति प्राप्त नहीं होती तथा बाद में दुःख ही भोगना पड़ता है ऐसे रास्ते को छोड़कर अपने मुक्ति के रास्ते को अपना कर इस संसार भव भ्रमण से छूट जाता है और दूसरा मानव जो धन, पैसे एवं सुख के लालच में अपने माता-पिता, भाई-बहिन को भूलकर उनको दुःखी करके और विभिन्न प्रकार के सुख व विलासताकारी जीवन में अपने सच्चे रास्ते को भूलकर और अपने जीवन को बर्बाद करके संसार भ्रमण का रास्ता अपनाता हुआ अनन्तकाल तक दुःखी होता रहता है।

उदाहरण के रूप में :-

एक गाँव में एक गरीब परिवार के माता-पिता का अपने तीन बालकों के प्रति-अगाध प्रेम और स्नेह था और वे अपने बालकों को बड़े प्यार से तथा गरीबी में बड़ा करते हैं।

उन माता-पिता के दुलारे तीन बालकों में से एक बालक जो सबसे बड़ा होता है वह जब घर में रहकर पढ़ता है तब उसके माता-पिता उसकी रुचि देखकर उसको सुख सुविधा देकर उसको कॉलेज में भरती कर देते हैं और उस बालक के प्रति माता-पिता की कुछ आशायें होती हैं कि मेरा बेटा जब बड़ा होगा और कॉलेज से निकलकर घर की गरीबी को दूर करेगा, सर्विस करेगा, पैसा कमायेगा तब जिससे मैं छोटे बालकों को पढ़ा सकूँगा।

जब वह युवा होकर कॉलेज से निकलकर सर्विस करने में लग जाता है तब उसके माता-पिता सोचते हैं कि हमारे स्वप्न पूरे हो गये हम लोगों को

आशा थी कि तुम घर को सम्हालोगे। वह युवा, वह सर्विस करने वाला आफीसर, माता-पिता की बातों को सुनकर और अपनी योग्यता को देखकर माता-पिता से बोलता है कि आप लोगों ने मेरे साथ किया ही क्या है और वह अपने माता-पिता के सारे उपकार को भूल जाता है और सालों तक घर नहीं आता और माता-पिता और भाई-बहिन के सारे स्नेह व रिश्तों को भूल जाता है। माता-पिता को सारी जिन्दगी के लिए अकेला छोड़ देता है। और पैसा बढ़ने से सभी प्रकार के बुरे कार्य करने लगता है और भावों को अशुभ बनाकर धर्म को भूलकर संसार भ्रमण का रास्ता अपनाता है।

उन्हीं माता-पिता का दूसरा बालक जब बड़ा होता है तब वह अपने माता-पिता, भाई-बहिन की गरीबी हालत और घर को देखकर वह बड़ा चिंतित होता है और गरीबी होने से पढ़ नहीं सकता है। इसलिए वह परिस्थिति का दास बनकर एक जैन मंदिर में कुछ पैसा कमाने के उद्देश्य से नौकरी करने लगता है उसका हृदय करुणामयी होता है धार्मिक रुचि होने से वह पूजा भी करने लगता है और उसके भाव पवित्र होते हैं वह अपने वेतन के पैसों से घर की गरीबी को दूर करता है और अपने दु:खी माता-पिता की सेवा आदि में अपना समय व्यतीत करता है।

बहुत दिन पश्चात् जब उसका छोटा भाई बड़ा होता है तो वह इस सारे मतलबी संसार को देखकर और ऐसे स्वार्थी मनुष्यों को देखकर तथा अपने घर की गरीबी हालत, बड़े भाई के द्वारा किया गया अन्याय और संसार के झूठे सुखों को याद करता है तो उसको इस संसार में ऐसा आभास होता है कि यह सांसारिक जीवन दीपक की लौ के समान बुझ जाने वाला और उसी समय उसको संसार से विरक्ति हो जाती है और उसको वैराग्य होते ही माता-पिता की आज्ञा से मोक्षमार्ग प्राप्त कर मुनिराज का सत्संग करके अपने भावों को शुद्ध बनाकर मुक्ति के रास्ता को अपनाता है।

इसलिए प्रत्येक आदमी को सोचना चाहिए कि मैं संसार में अकेला

हूँ। मेरा कोई नहीं है; मैं भी किसी का नहीं हूँ। इसी प्रकार प्रत्येक प्राणी को अपने आत्म कल्याण की बात सोचनी चाहिए और अपना दृढ़ संकल्प बनाकर इस सांसारिक दुखों के जाल से छूट जाना चाहिए। क्योंकि इस संसार में आत्म-कल्याण ना करने से बार-बार जन्म-मरण करने का अपार दुख होता है सच्चे सुख की प्राप्ति नहीं होती ऐसा मेरा विचार है।

अनादिकाल से हमने पर को अपनाने की कोशिश की है इसी से अपने आप (आत्मा के स्वरूप) को भूलकर उसकी पहचान नहीं की है संसार का हर एक प्राणी धन प्राप्त करने में लगा है तब भी सच्चा सुख प्राप्त ना होने से आकुलित होकर वह दुःखी हो रहा है।

इसलिए प्रत्येक प्राणी को इस सांसारिक जीवन के घर, कुटुम्ब, धन, पैसा में शान्ति न मानकर तथा पर को अपना ना मानकर अपनी आत्मा की पहचान करना चाहिए। आज प्रत्येक प्राणी को भ्रम है कि सभी सांसारिक प्राणी हमारे साथी है ऐसा मानकर भ्रमित हो रहा है मगर उन सभी का साथ टूट जाता है तथा संसार सागर में दुःख भोगना पड़ता है। इसलिए प्रत्येक मानव को इन जालों से दूर रहकर सच्चे मार्ग पर चलना चाहिए जिससे सांसारिक चक्कर छूटे और सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्र की प्राप्ति कर केवलज्ञानादि से मोक्ष प्राप्त हो सके। जो ऐसे मार्ग पर नहीं चलता उसको लेशमात्र भी शान्ति का अनुभव नहीं होता जैसा कि कहा ही है -

काम भोग की बन्ध कथा में उलझे रहते जीव अनन्त
आलस और मनोरंजन में कर देते जीवन का अन्त।
खाना, पीना मौज उड़ाना जिनके जीवन का उद्देश्य
राग, द्वेष में झुलस रहे वे, कभी न पाते सुख शांति लेश ।।

इसलिए प्रत्येक प्राणी की एक क्षण की आयु करोड़ों अशर्फियों के बदले में भी नहीं मिल सकती इसलिए ऐसी आयु को बर्बाद अगर मानव ने कर दिया तो इससे बड़ी हानि मनुष्य को और क्या हो सकती है। अतः ऐसा मेरा

विचार है कि प्रत्येक आदमी को बड़े सोच-समझ कर अपने कार्य को करना चाहिए तथा उस मनुष्य को अपने प्रत्येक कार्य को अपने जीवन का अन्तिम कार्य समझना चाहिए। ना जाने कब मृत्यु आ जाये और वह नश्वर क्षणिक जीवन दीपक की लौ के समान बुझ जाये और फिर चौरासी लाख योनियों (पर्यायों) में भटकना पड़े और फिर कभी मुश्किल से यह योनी (मनुष्य पर्याय) में ऐसा उच्च जैन कुल और ऐसा पवित्र हृदय प्राप्त हो। इसलिए मानव के लिए अशुभमय भावों को त्यागकर अपने शुद्ध भावों को बनाकर आत्म कल्याण कर सच्चा सुख प्राप्त करना चाहिए।

ऐसे मार्मिक चिंतन बहुत पढ़े-लिखें बड़े लोग भी नहीं कर पाते न लिख पाते लेकिन सोलह-सत्रह वर्ष की उम्र में इतनी गहराई के चिंतन आना बड़े पुण्य की बात है। तो देखिए उस पुण्य ने अब क्या काम किया।

गृह से अन्तिम विदाई :-

दिसम्बर 1984 में किसी की सल्लेखना देखने के बहाने पारस ने जबलपुर प्रस्थान करने की तैयारी की। दैनिक चर्या से सबको शक था कि अब वापिस लाना मुश्किल होगा और अति-आग्रह से मौन स्वीकृति दी लेकिन सभी की आँखों में आँसू थे। पिता श्री शिक्षक होने के नाते विद्यालय गये हुए थे। उन्हें पारस के जाने का भाव मालूम नहीं था। अन्यथा वे पारस को जाने से रोक देते। पारस के प्रस्थान के समय माया माता और 9-10 वर्ष की उम्र वाली संध्या बहिन दरवाजे पे खड़ी पारस का प्रस्थान का दृश्य देख रही थी। आँखें आँसू से डब-डबा रही थी। माँ के मन में संदेह था कि पारस (पप्पू) लौटकर पुनः वापिस गृह आयेगा कि नहीं । पारस ने माँ के चरण स्पर्श किये और क्षमावाणी के साथ संजय, सन्ध्या, अरविन्द से बोला कि हमने मम्मी की बहुत सेवा की आप लोग भी सेवा करना ऐसा कहते हुए चल पड़े। अब संध्या बहिन पूछ रही थी माँ से कि (पप्पू भैय्या) पारस भैय्या जल्दी आ जायेंगे न मम्मी! ऐसा पूछ रही थी। लेकिन अरविन्द जो छोटा था 8-9 वर्ष का था वह

तो खेल-खिलौना खेल में ही लीन था। पारस के जाने-आने की कोई फिकर नहीं थी उसे (चिंता नहीं थी) क्योंकि वह नादान था। पारस आगे रास्ता पर जाते रहे और माँ बहिन आदि डब, डबाती आँखों के साथ जल्दी आना; यूँ कहती रह गई और पारस का 12-13 वर्ष का छोटे भाई संजय स्टेशन तक अटेची साथ लेकर गया। वहाँ जब पारस भैय्या स्टेशन से ट्रेन में सवार हुये तो संजय की आँखों से भी आँसू गिरे और जल्दी आना भैय्या नहीं तो माँ बहुत दु:खित होगी। तब पारस ने यही कहा कि सभी के लिए हमारी शुभ कामनाएँ और क्षमा याचना; पर किसको मालूम था कि पारस की अपने परिवार और ग्राम से यह अंतिम विदाई है।

गुरुवर की शरण (गुरु संघ में प्रवेश):-

1984 दिसम्बर में जबलपुर के निकट पनागर शीतकालीन प्रवास का समय था वहीं गुरुदेव का दर्शन हुआ और यही भावना कि अब कोई शक्ति मुझे यहाँ से वापिस न ले जा सके और एक बड़ा पत्र लिख दिया घर वालों को जो वैराग्य से भरा था तथा जिसमें यह भी लिखा था कि संसार के तो अनन्त माता-पिता हो गये हैं जो स्वार्थ वश संसार में फँसाते हैं। लेकिन सच्चे माता-पिता तो वे हैं जो मोक्षमार्ग पर चलाकर मोक्ष दिलाते हैं। अत: आप अब मुझे वापिस लें जाने का प्रयास मत करें हम आप लोगों से क्षमा भावना पूर्वक अनुमति चाहते हैं कि हमें आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के चरणों में रहकर मोक्षमार्ग की साधना का अवसर प्रदान करें। यह सब आप लोगों द्वारा दिये गये धार्मिक संस्कारों का ही प्रभाव है जो मुझे यह दुर्लभ अवसर प्राप्त हुआ ऐसा उस पत्र में लिखकर घर भेज दिया, बस दो-चार दिनों में ही पूरा परिवार आ गया। माता-पिता बात करने को पास में आते और वैरागी पारस दूसरे दरबाजे से निकल जाते अर्थात् जब तक पिच्छिका न मिले तब तक परिवार वालों से मौन ले लिया तो जब पारिवारिक सम्बन्ध समाचार नहीं हुआ तब अंत में गुरुदेव से परिवार मिला और उनके चरणों में अश्रुपात कर अनुमति दे ही दी। गुरुदेव के सामने

वैरागी पारस भी बैठा था। पिताश्री शिखरचन्दजी ने आचार्य श्री से कहा कि महाराजजी मैंने तो गृह में रोके रहने के बहुत प्रयास कर लिये लेकिन अब मेरे वश की बात नहीं रही। आप ही बताइये कि हम क्या करें तब आचार्यश्री ने कहा कि ''पारस को इतनी छोटी उम्र में वैराग्य हो गया है तो इसी से समझो कि पूर्व जन्म का कोई त्याग वैराग्य का संस्कार है'' अब रोकना ठीक नहीं। बस; तब स्वीकृति मिल गई पारस को और पिताश्री ने कहा कि मुझे इनकी क्या व्यवस्था करनी है हमारे योग्य जो आवश्यक हो बता दीजिये। तब गुरुदेव ने कहा समाज सब कर लेगी आप चिंता छोड़िये। यही शुभ दिन 17 दिसम्बर 1984 का था जिस दिन ड्रेस-एड्रेस सब बदल गया धवल वस्त्र धारण किये बालों को छोटा कर चोटी रह गई मात्र और पीतल का एक डब्बा आ गया हाथ में। 19 दिसम्बर को आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत और आजीवन नमक का भी त्याग कर दिया। गुरुदेव ने आशीर्वाद दिया पीठ पर वरदहस्त रखा और पूछा कि नमक का त्याग आजीवन क्या? तो पारस ने कहा हाँ! आजीवन त्याग करता हूँ गुरुदेव! आप ही हमें मोक्षसुख दिलायें यही भावना है। दो-चार दिन बाद में जब परिवार वाले जाने लगे तब पिताश्री शिखरचन्द जी ने एक पुस्तक में ''जाते हो लाल जाओ'' रूप कविता लिखकर पारस को दी। जिसमें यह भाव व्यक्त किया कि जिस पथ पर कदम रखा आगे बढ़ते जाना। वैसे ही शिखरचन्द जी हिन्दी; अंग्रेजी भाषा में भजन व कविता लिखने वाले अच्छे कवि थे। जो धार्मिक प्रवचनों, आलेखों के साथ मन को भाव विभोर और वैराग्य की ओर ले जाने वाली कवितायें भी लिखा करते थे। जिन कविताओं, प्रवचनों का प्रभाव पारस पर खूब पड़ा था। धन्य हैं ऐसे पिताश्री शिखरचंद जी जिन्होंने पुत्र को वैराग्य का संस्कार दिया और मोक्षमार्ग में बढ़ते रहने का आशीर्वाद दिया।

पुत्र के प्रति पिताजी का चिंतनः-

ग्यारह सितम्बर सन् सड़सठ का,
दिन कितना सुन्दर कितना प्यारा।

पर्यूषण पर्व की अष्टमी को,
जब जन्मा राज दुलारा॥
कालूराम व्या के लड़के,
शिखरचन्द्र कहलाये हैं।
शिखर के लड़के बनकर,
पारस घर में आये हैं॥
धन्य कूख माँ, 'माया' की,
जन्मा ऐसा अनमोल मणी।
लोहे को स्वर्ण बना देगा,
कुछ कहती थी भविष्य वाणी॥
पुत्र रत्न को पाकर के,
हृदय हिलोरें लेता माँ का।
कितना सुन्दर, कितना प्यारा,
यह नन्हा राज दुलारा॥
गोरे वर्ण, तन हष्ठ पुष्ठ,
चौड़ा ललाट लमछारा।
हुई भविष्य वाणी कुछ ऐसी
होगा मेधावी सुद्गुण वाला॥
पारस, सचमुच पारस निकले,
दीक्षा ले घर से मुख मोड़ चले।
लख असारता इस जग की,
(तुम) वे मुक्ति पथ ओर बढ़े॥

20/11/1985, श्री शिखरचंदजी जैन
शिक्षक, पथरिया, दमोह (म.प्र.)

मोक्षमार्ग की साधना

(गुरु की डाँट बना जीवन उद्योतः-)

पारसचन्द की सन् 1984 से मोक्षमार्ग की यात्रा प्रारम्भ हुई। आचार्यश्री विद्यासागर महाराज के संघ के साथ रहते हुए सन् 1985 में

जबलपुर से शाहपुरा गये वहाँ पर 22 से 27 जनवरी तक पंचकल्याणक सम्पन्न होने के उपरान्त गंजबासौदा पंचकल्याणक के निमित्त विहार हुआ और गंजबासौदा के एक पूर्व गाँव में ब्र. पारस का पुस्तक और वस्त्रों का थैला पैदल विहार में पीछे छूट गया। फिर गंजबासौदा पहुँचे तब तीन दिनों तक एक ही जोड़ी वस्त्रों को (धोती, दुपट्टा और लंगोट का) मात्र परिमार्जन वाले एक छोटे से छन्ने जैसे वस्त्र को पहनकर एकान्त में धोकर धूप में सुखाकर पहनते रहे और कड़ी ठण्डी में सहनशीलता रखी अन्य वस्त्र नहीं मंगाये। गुरुदेव को जब मालूम पड़ा तो ब्र. पारस को बुलवाकर डाँट लगाई और कहा कि ब्रह्मचारी को पैदल चलते समय थैला भी मिल्ट्री के जवान के सदृश अपनी पीठ या कंधे पर लेकर चलना चाहिए और अपना काम स्वयं ही करना चाहिए? वहाँ पर 8 से 14 फरवरी तक पंचकल्याणक एवं त्रि-गजरथ महोत्सव सम्पन्न हुए। तब से ब्र. पारस विहार काल में अपने थैले को पूर्ण ध्यान पूर्वक अपने कंधे पर टांगकर चलने लगे और गुरुदेव ने जब देखा तो चेहरे पर मुस्कराहट ही मुस्कराहट।

सन् 1985 में बीना शहर में जब गुरुदेव ने सभी को कातन्त्र रूपमाला व्याकरण से संस्कृत पढ़ाना प्रारम्भ किया तब कुछ पुस्तकें आयीं थीं और सभी में वितरित हो गयीं। ब्र. पारस शेष रह गये। तब किसी संघ के एक क्षुल्लक उसी मन्दिर में आये थे उन्होंने ब्र. पारस को अपनी पुस्तक दे दी। इसे देखकर किसी ने आचार्यश्री से शिकायत कर दी तब आचार्यश्री ने पारस को बुलवाया और डाँट लगाते हुए कहा कि इतनी जल्दी क्यों हुई? क्या पुस्तकें और नहीं आयेंगी क्या? मतलब अन्य संघ के क्षुल्लक जिनका समर्पण नहीं उनसे पुस्तक लेना ठीक नहीं है। आगे भी ऐसा किया तो अधिक दण्ड मिलेगा। तब ब्र. पारस ने क्षमा याचना कर प्रायश्चित माँगा और पश्चात्ताप किया। और जब पुस्तक आयीं तो आचार्यश्री ने सबसे पहले ब्र. पारस को पुस्तक दी पारस के आनन्द का पार न रहा धन्य है गुरु की कृपा ।

स्वहस्त से किया पहला केशलोंचः-

सन्1985 में ग्रीष्मकाल के अवसर पर खुरई में षट्खण्डागम धवला पुस्तक 15 का शेषांश षट्खण्डागम धवला पुस्तक-16 तथा कषाय पाहुड़ जय धवला पुस्तक 1 एवं 13 पुस्तक की वाचना हुई। फिर खुरई के पास स्थित अतिशय क्षेत्र ईसुरवारा (ईशुरवारा) पहाड़ी पर जब आचार्य संघ का वास्तव्य था तब एक दिन ब्र. पारस के तीन, चार महीने से बड़े हो रहे काले-काले बालों को देखकर आचार्यश्री ने पारस से बोला, बाल तो बड़े-बड़े हो गये केशलोंच करोगे? पारस ने तुरन्त कहा; हाँ महाराज जी जरूर करेंगे यही भाव मेरे अंदर था आपने जान ही लिया। मैं तो मिट्टी हूँ और समर्पित भी आप जो भी आकार देंगे स्वीकार है। गुरुदेव ने कहा पहले साधना कर लो परीक्षा की घड़ियां हैं। फिर पिच्छिका मिलने में देर नहीं लगेगी। गुरुदेव के आशीर्वाद से प्रातः 5 बजे केशलोंच शुरू किया और 6 बजे सम्पूर्ण हो गया ये भी एक अतिशय-सा हुआ। वैराग्य की दृढ़ता का सफल परिणाम कि स्वहस्त से इतने घने काले-काले सिर और दाढ़ी के बालों को गुरुदेव के नयनों के समक्ष बैठकर एक घण्टे में केशलोंच सम्पूर्ण कर लिया। गुरुदेव का स्वयंभू स्तोत्र का पाठ हुआ और गुरु भक्ति (आचार्य वंदना) के पूर्व ब्र. पारस विद्याष्टक पढ़ने गुरुदेव के चरणों में पहुँच गये। गुरुदेव (आचार्यश्री) मंद-मंद मुस्कराये और कहने लगे कि इतनी जल्दी वह भी स्वहस्तों से केशलोंच हो गया बहुत अच्छा है। ऐसे ही साधना बढ़ाते जाओ। ऐसा कहते हुए अपने दोनों हाथों को पारस के सिर पर रखकर आशीर्वाद दिया।

सप्तम प्रतिमा ग्रहणः-

सन् 1985 का वर्षायोग अहारजी सिद्धक्षेत्र पर हुआ था। और वर्षायोग के पूर्व से मुनिश्री वैराग्यसागर जी की सल्लेखना में वैय्यावृत्ति का सुअवसर भी प्राप्त हुआ था। वहीं एक बार आचार्यश्री के पास आश्रम के बहुत सारे व्रतीजन कुछ मार्ग दर्शन के लिये और महाराजजी अपने कक्ष से

बाहर पधारे क्योंकि अन्दर जगह कम पड़ती होगी तभी ब्र. पारस की दृष्टि गुरुदेव पर पड़ी और अपने पद्मपुराण के स्वाध्याय से उठकर तुरंत गुरुदेव के सामने गये और अपने बैठने का आसन (चटाई) को गुरुदेव को दिया। चर्चा के उपरान्त गुरुवर का ब्र. पारस की ओर ही संकेत मिला कि तुम अपने साथ कुछ इन-इन नाम वाले संघस्थ ब्रह्मचारियों को बुला लाओ। ब्र. पारस को गुरुदेव की आज्ञा सुनते ही अतीव आनन्द हुआ और अल्पसमय में ही सांकेतिक ब्रह्मचारियों को बुला लाये तभी गुरुदेव से ब्र. पारस के साथ सभी ब्रह्मचारियों को कुछ साधना संकेतों सह सप्तम प्रतिमा के व्रत प्राप्त हो गये। इस क्षेत्र पर आचार्य श्री ने प्रातः कातन्त्र रूपमाला एवं मध्याह्न में स्वामिकार्तिकेयानुप्रेक्षा शास्त्र का स्वाध्याय करवाया था।

क्षुल्लक दीक्षा:-

सिद्ध क्षेत्र अहारजी सन् 1985 के वर्षायोग में पर्यूषण पर्व में भरी सभा के बीच ब्र. पारस को गुरु आज्ञा से गुरु संघ के सामने कण्ठस्थ तत्त्वार्थसूत्र सुनाने का अवसर मिला। थोड़े दिन जाते ही एक दिन जब ब्र. पारस मूलनायक 1008 शान्तिनाथ भगवान की विशाल प्रतिमा के चरणों में खड़े होकर अष्ट द्रव्य से जिनेन्द्र पूजन करने में लीन थे। तभी एक ब्रह्मचारी ने आचार्यश्री द्वारा बुलाये जाने का संकेत किया तब पूजा कर आता हूँ बोलकर अत्यंत हर्ष से पूजा सम्पूर्ण कर गुरुदेव के चरणों में नमोस्तु सह उपस्थित हो गये। गुरुदेव ने पूछा, स्वास्थ अनुकूल है न? हाँ महाराज जी! अनुकूल है। ठीक है तो चलो आज आहार अच्छे से करके आना फिर आगे बतायेंगे। ऐसा सुनकर जैसी आज्ञा आचार्यश्री! इतना कहकर चल दिये, इसी तरह साथ वाले सुयोग्य ब्रह्मचारियों को भी बुलाया था। अन्य महाराजों को जब यह बात बतलाई तब सबने सराहना की और कहा कि अब साधना में परख लिया है गुरुदेव ने, कल दीक्षा मिलेगी इसलिए गुरुदेव ने बुलवाकर स्वास्थ व आहार के विषय में संकेत दिया है। कल उपवास पूर्वक यह महोत्सव सम्पन्न होगा।

सायंकाल तक देखा तो 9, 10 पिच्छियाँ तैयार होने लगीं फिर तो खुशी का पार न रहा। अगले दिन शुभ मुहूर्त में दिक्षार्थियों की प्रातः बिनोली निकाली गयी और दोपहर में ब्र. पारस के साथ अन्य ब्र. की भी क्षुल्लक दीक्षायें सम्पन्न हुईं। ब्र. पारस का नाम क्षु. आर्जवसागरजी हुआ।

क्षु. आर्जवसागरजी का प्रथम विहार व परीक्षा :-

सि.क्षे. आहार जी से सन् 1985 में जब वर्षायोग के उपरान्त विहार होना था। तब उसी दिन क्षु. आर्जवसागरजी के लिए आहार की शुरूआत में ही अन्तराय आ गया, तब मध्याह्न सामायिक के काल में एक मुनिराज ने परीक्षा की दृष्टि से कहा कि सामायिक के बाद विहार होने वाला है अतः अभी थोड़ा लेटकर विश्राम करलो तब क्षु. आर्जवसागर जी ने कहा कि-नहीं! आज मेरी परीक्षा है और मुझे खुशी भी है कि पिच्छिका धारी बनकर मेरा प्रथम विहार हो रहा है और वह भी अन्तराय में यह बड़ी निर्जरा का अवसर है जो हमें कर्म का क्षयोपशम करवाकर मुनि पद दिलवायेगा, और यही हुआ कि मध्याह्न में विहार हो गया, 20-25 कि.मी. चलकर गुरु संघ सह क्षु. आर्जवसागर जी अ.क्षे. पपौरा जी पहुँचे।

पपौरा जी ग्रीष्मकाल की उपलब्धिः-

अ.क्षे. पपोरा जी में ग्रीष्मकाल में षट्खण्डागम धवला पुस्तक 5 एवं कषाय पाहुड़, जय धवला पुस्तक 12 सिद्धांत शास्त्रों पर वाचना हुई तथा क्षु. आर्जवसागर जी ने हरिवंशपुराण का स्वाध्याय भी अलग से सम्पन्न किया उस के उपरान्त सन् 1986 में पपोराजी अतिशय क्षेत्र पर चातुर्मास भी हुआ था। यहाँ पर मूलनायक प्रतिमा श्री 1008 आदिनाथ भगवान हैं। इसी क्षेत्र पर वर्षायोग भी सम्पन्न हुआ जिसमें प्रातः कातन्त्र रूपमाला एवं मध्याह में सर्वार्थसिद्धि शास्त्र का स्वाध्याय का लाभ गुरु मुख से मिला करता था।

गुरु आज्ञा पालक शिष्यः-

पपोराजी में एक बार क्षु. आर्जवसागरजी को बुखार आ गया। आहार

लेने की इच्छा नहीं थी तो क्षुल्लक जी ने अपने गुरुदेव आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज के पास जाकर नमोस्तु करके उपवास का नियम माँगा था। आचार्यश्री ने पूछा क्यों करना है उपवास? तो उत्तर दिया कि तेज बुखार है और आहार की इच्छा भी नहीं है तो आचार्यश्री ने कहा कि- उपवास नहीं करना। जाओ! आहार में जल मात्र ग्रहण करके आना। गुरु आज्ञा ना टालते हुए जी, गुरुदेव! आहार चर्या के लिए चले गये। और उस दिन संयोग वश कटनी के पं.श्री पन्नालाल जी शास्त्री सागर के चौके में पड़िगाहन हो गया। श्रावक गणों ने जब थाली दिखायी तब महाराज जी ने कुछ भी नहीं उठवाया। तो श्रावक गण बहुत प्रसन्न थे आज महाराजजी सब कुछ लेंगे; कुछ भी नहीं उठवाया है। आहार जब प्रारंभ हुआ तो जल ही जल लेते चले गये। दो-तीन लोटा जल लिया और बस अंजुली छोड़ दी। श्रावक गण देखते रह गये ये क्या हो गया। हम सोच रहे थे कि सब कुछ लेंगे लेकिन महाराजजी ने कुछ भी नहीं लिया। आहार के बाद जब पूछा तो कहा कि आज गुरुवर की आज्ञा थी आहार में जल मात्र लेकर आना है। मैंने उपवास मांगा लेकिन नहीं दिया। क्योंकि जल लेकर आयेंगे तो अन्दर का विकार निकल जायेगा और बुखार ठीक हो जायेगा, इस उद्देश्य से जल लेने को कहा था। उपवास करेंगे तो विकार नहीं निकल पाता और स्वस्थ भी ठीक ना हो पाता। धन्य है! गुरुदेव की करुणा और धन्य है! गुरु आज्ञा पालक!

सेवा से मिलती है मेवा:-

यहीं पर एक बार की बात है आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज ने सभी शिष्यों को बुलाया। सभी शिष्यगण पहुँचे। आचार्यश्री जिनकी सल्लेखना अहारजी में हुई थी ऐसे मुनि श्री वैराग्यसागरजी महाराज का कमण्डल को हाथ में लिये हुए थे। सभी शिष्यगण समझ गये यह कमण्डल किसी को मिलने वाला है। सभी कहने लगे आचार्यश्री हमें दीजिये- हमें दीजिये सब में होड़ लगी थी। लेकिन क्षु.आर्जवसागरजी सबसे पीछे खड़े हो

गये कुछ बोले ही नहीं। उन्होंने सोचा हम तो छोटे हैं। बड़े महाराजों को ही मिलेगा। लेकिन भाग्य की बात है कि आचार्यश्री ने नाम लेकर पुकारा आर्जव यहाँ आओ। आर्जव सागरजी का मन बहुत आनन्दित हो गया और आचार्यश्री के पास गये। आचार्यश्री ने अपने कर कमलों से कमण्डल क्षु.आर्जवसागरजी को दिया। धन्य हैं ऐसे शिष्य! जिन पर गुरु कृपा हमेशा बनी रहती थी।

पपौरा जी से सि. क्षे. द्रोणगिरी यात्रा और ठण्डी में परीक्षा –

पपौरा जी से जब द्रोणगिरी की ओर कड़क ठण्डी में विहार चला तब इतनी ठण्डी थी कि हाथ जकड़ जाते थे कमण्डल का उपयोग करते समय उँगलियां काम नहीं करती थी उँगलियों से पानी नीचे गिर जाता था, द्रोणगिरि के प्रथम बार दर्शन कर फिर नैनागिरि पहुँचे, और दर्शन कर भ. पारसनाथ पर कविता बनाई। बहुत कड़क ठण्डी में गुरुदेव ने कहा कि चटाई ओढ़ने का त्याग करना है और दुपट्टा भी नहीं ओढ़ना है तब गुरु आशीष से क्षु. आर्जवसागर जी अपने साथियों के साथ पाँच वर्ष के लिए चटाई ओढ़ने का त्याग कर दिया और दुपट्टा भी नहीं ओढ़ा, गुरु के बाजू में ही शयन करते थे, गुरुवर तो पूर्व से चटाई नहीं ले रहे थे। शिष्यों के लिए भी गुरुवर ने ऐसी उत्तम साधना करवा कर मुनि बनने की शिक्षा दे दी।

शिष्य पर अतीव करुणा : सि. क्षे. नैनागिरि में 1986 के शीतकालीन प्रवास के समय अपने ही संघस्थ किसी साधु महाराज ने वैय्यावृत्ति के निमित्त क्षु. आर्जवसागरजीके लिए अपने ठहरने हेतु याद किया तब यह बात गुरुवर को मालूम पड़ी, और क्षु. आर्जवसागर जी को बुलाकर गुरुवर ने कहा कि अपनी साधना को सुरक्षित रखना हो तो कहीं अन्यत्र नहीं जाना अर्थात् गुरुवर अपने निकट नजरों के सामने रखकर करुणा पूर्वक मुनि बनने की साधना करवाया करते थे।

मूक माटी काव्य का ताजा स्वाद : गुरुवर आचार्य श्री विद्यासागरजी ने सन् 1984 में मढ़िया जबलपुर से मूक माटी कृति को लिखना प्रारम्भ किया था और

1987 में नैनागिरि शीतकाल में काव्य की सम्पूर्णता हुई थी इसके बीच जहाँ भी गुरुदेव का प्रवास रहा वे अपनी मूक माटी कृति की कविताओं का प्रायः रोज की सायंकाल वैयावृत्ति के समय सुना दिया करते थे, उनकी मुस्कान के साथ सुनाई जाने वाली कविताओं का ताजा स्वाद क्षु. आर्जवसागर जी ने गुरु की वैयावृत्ति के समय खूब लिया और अनन्दित हुए।

हमारे शिष्य ढूढ़ते हैं शांति :-

सि. क्षे. नैनागिरि में 1985 की बात है, एक बार संघ की सभा (मीटिंग में) जब क्षु. आर्जवसागरजी दरवाजे पर बैठकर यह कर्त्तव्य निभा रहे थे कि कोई संघ की बातों को बाहर वाला न सुन ले और अप्रभावना न हो, तब परोक्ष में गुरुवर उदाहणार्थ कह रहे थे और क्षु. आर्जवसागरजी के लिए भी सुनाई दे रहा था कि देखो मुनि स्वभाव सागर और क्षु. आर्जवसागर दिन में शांत और मौन रहकर किसी मंदिर में कितनी साधना करते हैं उनकी इस साधना से शिक्षा लेनी चाहिए। उस काल में दोनों महाराज पहाड़ के अन्तिम मंदिर भ. अभिनन्दन स्वामी वाले मंदिर में बैठा करते थे तथा क्षु. आर्जवसागरजी तीनों सामायिक और रात्रि विश्राम गुरुवर आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के समक्ष किया करते थे। एक दिन गुरुवर सायं में प्रभु दर्शनार्थ भ.अभिनन्दन स्वामी के मंदिर में आ पधारे दोनों महाराज एक दम उठकर के खड़े हुए और नमोस्तु कर कहा आइये पधारिये आचार्य श्री और गुरुवर के साथ प्रभु की वंदना कर साथ में चल दिये। तब ऐसा लगा मानो आज हमारी परीक्षा हो गई कि हम बातें करते बैठते हैं या स्वाध्याय। गुरु की प्रसन्नता ने आनंद भर दिया।

वैयावृत्ति हेतु उपवास लिया :-

नैनागिरि में इन्हीं दिनों की बात है कि गुरुवर के उपवास के दिन जब संघस्थ साधु गण आहार चर्या को जा रहे थे तब आर्जवसागरजी एवं प्रमाण सागरजी ने एक साथ विचार विमर्श कर अचनाक गुरुवर से उपवास करने हेतु

निवेदन किया तब गुरुवर ने कहा कि उपवास का नियम तो पहले ही लेना था! अचानक क्यों? तब दोनों ने कहा कि गुरुदेव आज आपके उपवास के दिन एकान्त में आपकी वैयावृत्ति के भाव हुए हैं हमें ऐसा सौभाग्य कब-कब मिलता है अतः कृपा कीजिये उपवास का नियम अवश्य दे दीजिये। गुरुदेव ने मुस्कराते हुए आशीर्वाद दे दिया और सभी साधुओं के आहार चर्या को जाने बाद आर्जवसागर जी एवं प्रमाण सागरजी ने औषधोपचार रूप वैयावृत्ति का परम सौभाग्य पाते हुए अपने आहार को भी भुला दिया।

केसली पञ्चकल्याणक की शान :- सन् 1985 में नैनागिरी शीतकालीन प्रवास के बाद सागर होते हुये आचार्य श्री विद्यासागर जी ससंघ केसली पहुँचे वहाँ पंचकल्याणक में कहानपंथी विद्वानों की टीम भी इसी कार्यक्रम में अपनी भूमिका निभाने उपस्थित हुई थी। ऐसे मौके पर पं. हुकुम चंद भारिल्ल के वक्तव्य के बाद दिन में दो बार आचार्य श्री विद्यासागर जी गुरुदेव के प्रवचन होते थे। जिन प्रवचनों में गुरुदेव पण्डितों की भ्रान्तियों का समाधान दिया करते थे। गुरुवर आचार्य श्री विद्यासागर की वाणी अनकेान्तमय इस तरह खिरती थी मानो साक्षात् कुन्द-कुन्द देव ही बोल रहे हों संघस्थ क्षु. आर्जवसागरजी के लिए तो ऐसे विशेष प्रवचन बहुत ही मन भाये जो 'प्रवचन-प्रमेय' पुस्तक के रूप में प्रकाशित भी हुये हैं।

शाहपुर में विधान एवं प्रवचन की मानसिकता -

गनेशगंज शाहपुर में सन् 1986 के फाल्गुन की अष्टाह्निका में सिद्धचक्र मण्डल विधान हेतु पाण्डाल बाजार में बना था प्रतिदिन गुरुवर के आदेश से एक-एक महाराज प्रवचन करने पाण्डल में जाया करते थे। क्षु. आर्जवसागरजी महाराज के साथी महाराजों के प्रवचन भी चले उन्हें यह प्रथम अवसर प्रवचन शैली सीखने का था लेकिन गुरुदेव की भावना होते हुये भी आहार में अन्तरायों के कारण क्षु. आर्जवसागर जी के प्रवचन शाहपुर में नहीं हो पाये, लेकिन उनके मन में प्रवचन की मानसिकता तैयार अवश्य हुई और

शाहपुर से विहार सानोदा ग्राम की ओर हो गया।

सानोदा ग्राम में क्षु. आर्जवसागर जी के प्रथम प्रवचन –

सानोदा ग्राम में आचार्यश्री विद्यासागरजी का संघ स्कूल परिसर में ठहरा था क्षु. आर्जवसागर जी के लिए उस दिन भी आहार में अन्तराय आ गया था, लेकिन क्या मालूम था कि आचार्य महाराज के मन में यह बात पहले से ही थी कि आर्जवसागर महाराज का प्रवचन करवाना है, अतः सामायिक में बैठने के पूर्व ही आर्जवसागरजी को बुलाकर गुरुवर ने आज्ञा दी कि सामायिक के बाद प्रवचन करने जाना है। ऐसा सुनते ही आर्जवसागर जी ने आचार्यश्री के समक्ष पिच्छिका उठाकर प्रसन्नता व्यक्त की और गुरु की मुस्कान व आशीष ने उनके संयमी जीवन के प्रथम प्रवचन रूप मंगलाचरण में चार चाँद लगा दिये। सामायिक के उपरान्त समाज के जन जब आचार्य श्री के लिए प्रवचन हेतु निवेदन करने आये तब गुरुवर ने आर्जवसागरजी को ले जाने की बात कही, इसे सुनते लोग चकित से रह गये, मानो सोच में पड़ गये हों कि संघ में बड़े मुनिराज समयसागरजी, सुधासागरजी भी विराजे हैं तो भी क्षु. आर्जवसागरजी को ही प्रवचन हेतु भेजा रहा है, यह गुरु की शिष्य पर एक दूर दृष्टि है ऐसा लगता है। गुरु आज्ञा से मंदिर के सामने बने बड़े पाण्डाल में पहुँचे और मंच पर विराजमान होकर सभी जनों के बीच आर्जवसागरजी ने अपने प्रथम प्रवचनों में मंगल स्वरूप भगवान कुलभूषण एवं देशभूषण के वैराग्य परक कथानक को सुनाकर समस्त समाज जनों को अनुग्रहीत किया। बाहर से पधारे व जैनाजैनों ने भी पाण्डल में बैठकर आर्जवसागरजी के प्रवचन सुने। कुछ भव्यों के जीवन परिवर्तन में यह दृष्टान्त कारण बना होगा। प्रवचन अन्त होते ही गुरुवर संघ सहित पाण्डाल की ओर आ गये और विहार हेतु आगे चल दिये। विहार में साथ चलते हुए जब आर्जवसागरजी ने गुरुवर को अपने प्रवचन का विषय सुनाया तो गुरुवर की मुस्कान ने शिष्य के हृदय को खुशियों से भर दिया।

कर्रापुर होते हुये पजनारी क्षेत्र का दर्शन कर गुरुवर का विहार

टीकमगढ़ होते हुए पपौराजी क्षेत्र के लिए हुआ और वहीं ग्रीष्म कालीन वाचना एवं चातुर्मास भी सम्पन्न हुआ। पपौरा जी के वर्षायोग रविवारीय प्रवचनों में ऐलक निःशंकसागरजी के साथ द्वितीय प्रवचन हुआ था; जिसका विषय सम्यग्दर्शन था।

नैनागिरि में द्वितीय शीतकाल द्वितीय प्रवचन नैनागिरी में सिद्धचक्र विधान के समय हुआ जिसमें समाधि के विषय लेकर सुकुमाल स्वामी की कहानी सुनाई थी। सन् 1987 में नैनागिरि में 8 से 12 फरवरी तक पंचकल्याणक सम्पन्न हुआ। जिस पञ्चकल्याणक में प्रथम बार आर्यिकाओं की दीक्षाएं सम्पन्न हुई जिसमें आर्यिका गुरुमति, दृढ़मति आदि 11आर्यिकाएँ एवं पवित्रसागर, उत्तमसागर आदि कुछ क्षुल्लक दीक्षित हुए थे। इन दीक्षाओं के पूर्व क्षु. आर्जवसागरजी ने अपने साथी क्षु. प्रमाणसागर आदि के साथ आचार्यश्री को नवदीक्षार्थियों के साथ एक ग्रास का आहार भी देने का सौभाग्य प्राप्त किया था। फिर ग्रीष्मकालीन प्रवास हेतु बण्डा पहुँचे वहाँ त्रिलोक तिलक महामण्डल विधान सम्पन्न हुआ और आचार्य श्री ससंघ पिडरूआ होते हुए ललितपुर पहँचे वहाँ अभिनन्दनतीर्थ (क्षेत्रपाल) परिसर में षट्खण्डागम धवला पुस्तक 11, 12 एवं पंचास्तिकाय की वाचना सम्पन्न हुई।

ऐलक दीक्षाः-

सन् 1987 में अतिशय क्षेत्र थूबोन जी में सम्पन्न होने वाले वर्षायोग के प्रारम्भ दिन पर आचार्यश्री ने दुपट्टा भी छोड़ने की आज्ञा दी और भक्ति संस्कार पूर्वक क्षु.आर्जवसागरजी को ऐलक दीक्षा दे दी। जिसमें प्रमाणसागरजी, मार्दवसागरजी आदि भी साथ-साथ ऐलक बन गये। थुबोनजी वर्षायोग में गुरुमुख से समयसार और मूलाचार का स्वाध्याय करने का सौभाग्य मिला और वहाँ से चंदेरी में कुछ और ललितपुर कुछ प्रवास रहा। तथा वहाँ मूलाचार (प्र.) के साथ कर्मकाण्ड का भी गुरुमुख से स्वाध्याय चला तथा फिर देवगढ़ पहुँचे।

उत्कृष्ट साधना का संकल्पः-

सन् 1988 के समय जब अतिशय क्षेत्र देवगढ़ में आचार्य-संघ का प्रवास था तब ऐलक आर्जवसागरजी को कुछ और ऐलक, क्षुल्लक दीक्षार्थियों के साथ गुरुदेव ने मुनि दीक्षा के संकेत देते हुए केवल मूलाचार, अष्टपाहुड के विशेष प्रकरण और समयसार को पढ़ने का संकल्प एवं सवा लाख जाप (तीर्थंकर पर आधारित मंत्र का जाप) करने का संकल्प दिया तथा एक वर्ष तक मौन कौन-कौन पालन करेंगे यह पूछा तो ऐलक आर्जवसागरजी के साथ और भी कुछ लोगों ने विचार बनाया, लेकिन ऐ. आर्जवसागरजी तभी से दृढ़ संकल्पित से हो गये कि यह महत्वपूर्ण साधना गुरुदेव के आशीर्वाद से जरूर करेंगे और गुरुवर को हाँ भी कह दिया तथा गुरु कथित साधना में जुट गये।

दिगम्बर मुनि दीक्षा हर्षोल्लास के साथः-

करीब एक माह में देवगढ़ से सोनागिरी तक संघ का वास्तव्य व विहार चलता रहा और 31 मार्च 1988 का दिन और महावीर जयन्ती पर्व की शुभ बेला में उत्तम मुहूर्त्त पर गुरुदेव ने सोनागिरि जैसे सिद्ध क्षेत्र पर जहाँ चतुर्थ काल में भ. चन्द्रप्रभु का समवसरण आया था और जहाँ से नंगानंग कुमार आदि साढ़े पाँच करोड़ मुनि मोक्ष सिधारे और आठवें तीर्थंकर चन्द्रप्रभु भगवान जिस क्षेत्र के मूलनायक भगवान हैं वहाँ गुरुदेव ने आठ मुनि दीक्षायें देने का उत्तम भाव बनाया। सभी (मुनिपद हेतु) संकल्पित दीक्षार्थी उपवास पूर्वक दीक्षा-विधि केशलुञ्चन कर पहाड़ी पर स्थित चन्द्रप्रभु भगवान का दर्शन कर क्षेत्र परिसर के मैदान के विशाल पंडाल में हजारों जन समुदाय के बीच उपस्थित हुए दीक्षार्थी अपने-अपने मनो-भाव समाज के बीच वक्तव्य के रूप में रख रहे थे। गुरुदेव आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराजजी के समक्ष दीक्षा देखने हेतु आचार्य सुमतिसागरजी एवं आचार्य पार्श्वसागरजी भी संघ सहित पधार गये। ऐलक आर्जवसागरजी ने अपने वक्तव्य में वैराग्य परक

प्रसंगों पर बतलाते हुए गुरु के असीम कृपा से मिली मोक्षमार्ग की साधना का वर्णन किया तथा क्षमा याचना कर प्रवचनसार व मूलाचार के संदर्भों सह दीक्षा की याचना सह विनय प्रकट की। गुरुदेव ने आठ दीक्षाओं के क्रम में द्वितीय स्थान पर आर्जवसागरजी को मंगल संस्कारों सह मंत्रोच्चार पूर्वक मूलगुण और षोडस संस्कारों से संस्कारित किया और ऐलक आर्जवसागरजी से मुनि आर्जवसागरजी बन आपकी सरलता क्षुल्लक अवस्था से लेकर ऐलक और मुनिपद तक आगे बढ़ती गयी और आर्जवसागर इस नाम के परिवर्तन बिना मुनि दीक्षा तक पद वृद्धि होती चली गयी। ऐलक प्रमाणसागरजी, ऐलक आर्जवसागरजी, ऐलक मार्दवसागरजी ये तीन ऐलक अवस्था से; क्षु. पवित्रसागरजी, क्षु. उत्तमसागरजी ये दो क्षुल्लक अवस्था से और (चिन्मयसागरजी, पावनसागरजी और सुखसागरजी), ये तीन गृहस्थ अवस्था से मुनि रूप से दीक्षित हुए थे। अल्पवय वाले मुनियों की दीक्षा देखकर जनता से भरा पूरा पण्डाल हर्षोल्लास के साथ दिगम्बर मुद्रा की जय जयकार से गूंज उठा।

गुरु सौभाग्य का अवसरः-

बात सोनागिर क्षेत्र की है, एक बार आ. विद्यासागरजी के पास ज्ञानपीठ से मूकमाटी के विषय पर चर्चा करने आये हुए थे। तो गुरु महाराज ने उनको मूकमाटी पकड़ाई और कहा कि चलो वहाँ चलते हैं यहाँ तो भीड़-भाड़ है शान्त स्थान पर चलते हैं ऐसा कहकर सीधे जहाँ पर गुरुवर आर्जवसागरजी बैठे थे उस कमरे में गये। अध्ययनरत महाराज गुरुवर को अपने कमरे में आते देखकर तुरन्त खड़े हुये और अपना आसन गुरुदेव को देकर स्वयं नीचे बैठ गये। गुरु महाराज स्वयं मूकमाटी का वाचन करते हुए बुन्देली शब्दों का अर्थ बताते हुए त्रुटियों का सुधार किया। 3-4 दिन में पूरी मूकमाटी का संशोधन सम्पन्न हुआ। गुरुमुख से महाकाव्य मूकमाटी सुनने का सौभाग्य और किसी को नहीं मात्र पूज्य गुरुवर आर्जवसागरजी महाराज को ही

मिला। धन्य हैं ऐसे शिष्य जिनको गुरु भी चाहते हैं।

अन्तरायसागर नाम पड़ा:-

सन् 1988 में महावीर जयन्ती पर दीक्षोपरान्त मुनिश्री आर्जवसागरजी का आचार्य संघ के साथ विहार चल रहा था आहार में अन्तरायों की श्रृंखला में वृद्धि हुई। सोनागिरि से ललितपुर की ओर ये विहार करते हुए गर्मी का मौसम और अन्तराय के दिन ही विहार करते हुए दतिया पहुँचे। खाँसी चल रही थी। कच्चे रोड पर मिट्टी उड़ने के कारण अन्तराय में गला सूखने के कारण खांसी और बढ़ी अतः दतिया के पहले एक फारेस्ट के गेस्ट हाऊस के प्रांगण में रात्रि का काल अच्छे रूप से व्यतीत किया। साथ में वैयावृत्ति के निमित्त मुनिश्री उत्तमसागरजी साथ रहे। प्रातः दतिया की ओर विहार किया। वहाँ गेस्ट हाऊस के पास मुनिश्री समाधिसागरजी रुके थे अस्वस्थ होने से धीरे-धीरे चल रहे थे। साथ में थे क्षु.धैर्यसागरजी, वहीं लगे चौकों में आहार हेतु चर्या की तो मुनिश्री आर्जवसागरजी को आहार में पुनः अन्तराय आ गया। क्षु. धैर्यसागरजी एवं व्रती श्रावक, श्राविकाओं की आँखों में अश्रु छलके क्योंकि अन्तरायों पर अन्तराय और आगे आचार्यश्री का संघ ग्रासलेण्ड पर आहार लेकर आगे झाँसी की ओर बढ़ जायेगा उतनी दूर कैसे विहार करेंगे ये महाराज! आचार्यश्री भी क्या कहेंगे कि शोधन में क्या कमी रखी? उसी दिन सायं 3 बजे विहार भी कर दिया। क्षु. धैर्यसागरजी अपने शरीर की व पिच्छिका की छाया मुनिश्री आर्जवसागरजी की ओर करके चल रहे थे और खाली पेट होने के कारण कुछ कि.मी. चलने के उपरान्त लू लग गयी पैर लड़खड़ाने लगे। तब कुछ दूर जाने पर रोड के बाजू में एक खाली स्थान मिला जहाँ रात्रि होने के पूर्व ब्र. रवीन्द्र आदि श्रावकों ने गरम कैरी (कच्चे आम) शरीर पर लगाकर लू को उतारा फिर सामायिक की और रात्रि व्यतीत होते ही पुनः सुबह विहार किया। आहार चर्या 15 कि.मी. पर ग्रासलेण्ड पर होना थी। आहार के अन्तरायों में मुनिश्री वर्ष भर के मौन के

साथ चल रहे थे और बीच में गुरु आज्ञा आ गयी कि चलकर झाँसी ही आना है। तब बड़ा कार्य हो गया लेकिन गुरु आज्ञा ने शक्ति ला दी और भीषण गर्मी में करीब 20-25 कि.मी. चलकर साढ़े नौ बजे झाँसी पहुँचकर आचार्यश्री का दर्शन किया। गुरु भक्ति करते वक्त गुरु महाराज ने कहा कि बस हो गया जल्दी उठो कई महाराज प्रतीक्षा कर रहे हैं वैय्यावृत्ति के लिए, थोड़े शरीर की गर्मी कम होते ही आहार को उठ जाओ ऐसा गुरु महाराज ने कहा। संघस्थ साधुओं ने कुछ शीतोपचार या गर्म पानी से शरीर की गर्मी उतारी और आचार्य महाराज के संकेतानुसार पूरे संघ के पहले ही आहार चर्या करने को बोला। तब गुरु दर्शन कर, ना मन चाहते हुए भी गुरु की करुणा और वात्सल्य से गुरु के पूर्व ही आहार को उठना पड़ा और मंदिर में पहुँचते ही पीछे से ऐलक अभयसागरजी आये और गुरु संकेत सुनाया कि अधिक दूर आहार को ना जाकर पास में ही व्रतियों के चौके में आहार को जाना है। व्रतियों के भाग्य से साधु संघ के ठहरने के स्थान के नीचे ही धर्मशाला में चौके थे वहीं पड़िगाहन हुआ और कुछ संग साथी साधु आहार देखने व निर्देशन देने आ गये। बाद में आहार होते-होते आचार्यश्री के आहार को जाने के बाद कुछ साधु भी इसी चौके में पड़िगाये गये। सभी का आहार हुआ कि सामायिक के उपरान्त भरी गर्मी में डेढ़ बजे विहार हो गया। करीब 20-30 कि.मी. चले और शाम हो गयी रुकने का सुयोग्य स्थान नहीं आ पाया तो रोड के बाजू में एक खाली बायपास रोड पर ही खुले में ही रुक कर रात्रि धर्म ध्यान में परिषह सहन पूर्वक व्यतीत की और प्रातः काल होते ही विहार हो गया। इस विहार में सोनागिरि से ललितपुर तक करीब 8 दिन लगे जिसमें मुनिश्री आर्जवसागरजी के झाँसी और बबीना मात्र आहार निरन्तराय हुआ बाकी दिन अन्तराय हुए फिर भी आपने प्रतिदिन 30-40 कि.मी. चलते हुए दैनिक क्रियाओं में कोई अन्तर नहीं किया। गर्मी की ये परिषह कोई महा वैरागी ही सह पाते हैं।

स्वाध्याय व विशिष्ट साधनाएँ:-

सन् 1988 में ग्रीष्मकालीन वाचना षट्खण्डागम धवला पुस्तक 6

एवं बृहद् द्रव्यसंग्रह की ललितपुर में सम्पन्न हुई।

गुरु सेवारत शिष्यः-

सन् 1988 का ग्रीष्मकाल प्रवास ललितपुर (क्षेत्रपाल) मन्दिर में हुआ। एक दिन की बात है, भीषण गर्मी में आ. विद्यासागरजी महाराज ने केशलोंच किया और उपवास भी था। महाराजजी पारसनाथ मन्दिर के नीचे तलघर में बैठे थे। दिन भर की गर्मी से गुरु महाराज को लू लग गयी। रात में बिल्कुल हवा नहीं चल रही थी तो तब गुरु की छाया बनकर रहने वाले शिष्य गुरुश्री आर्जवसागरजी महाराज जी गुरु के पास में गये और घी लेकर पैर के तलुवाँ में लगाया, पूरे शरीर में लगाया, केरी का पना भी लगाया तो थोड़ी गर्मी शान्त हुई पर हवा नहीं होने के कारण गुरुवर की आँखें मिच नहीं रहीं थी तो आर्जवसागरजी महाराज ने एक नेपकीन से हवा करना शुरू कर दिया। थोड़ी देर के बाद गुरुवर को नींद लगी। लेकिन आर्जवसागरजी ने उस दिन शयन नहीं किया। पूरी रात भर गुरु के पास बैठकर हवा करते रहे थोड़ी देर तक भी शयन करने का भाव नहीं किया धन्य हैं! ऐसे ऋषिराज जिन्होंने गुरु को सुख पहुँचाने के लिये अपना सुख त्याग दिया।

तदुपरान्त संघ का विहार होकर खुरई नगर होते हुए सागर आये और मंगलगिरि का नामकरण हुआ। फिर वहाँ से जबलपुर पहुँचे और 1988 का वर्षायोग मढ़ियाजी में स्थापित हुआ। वर्ष भर का मौन मुनिश्री आर्जवसागरजी के मुनि जीवन का अपूर्व शृंगार सा बना और जब प्रवचन कक्षा ध्यान आदि के समय आपकी जो आसन सह नासाग्रदृष्टि मुद्रा रहती थी वह मन भावन भगवान की तरह रहती थी। अतः सारे व्रती, श्रावक आदि आपको भगवान कहकर पुकारा करते थे। आपने आचार्यश्री के समक्ष गुरु कक्ष में ही दिन में 12 बजे से 3 बजे तक 3 घण्टे खड़े रहकर उत्कृष्ट सामायिक करने की उत्तम साधना की तथा उपवास के दिनों में करीब सात घंटे तक (सुबह 7:30 से मध्याह्न 2:30 तक) आसनपूर्वक ध्यान करने की साधना भी हुई। इसी

वर्षायोग में प्रातः धवला पुस्तक प्रथम एवं मध्याह्न में समयसार ग्रन्थ का स्वाध्याय गुरु मुख से तथा स्वतंत्र रूप से उत्तरपुराण का स्वाध्याय किया जो सोने में सुहागा के समान रहा। मौन के साथ आप बड़े प्रवचन हॉल के कोने में दीवाल तरफ मुख करके बैठा करते थे। यह साधना उनके जीवन में अविस्मरणीय प्रेरणादायक बन गई। आपको जनसम्पर्क में कोई रुचि नहीं थी। यहाँ तक कि अधिक महिलाएं जहाँ हों वहाँ आपका आहार आदिक के लिए जाने का भी मन न करता था। सतत् गुरु चरणों में साथ रहकर, सामायिक करना, शौच क्रिया को जाना, रात्रि विश्राम और विहार इत्यादि गुरु की छाया गुरु के साथ ही किया करते थे। सायं गुरु भक्ति के बाद इनकी (मुनिश्री आर्जवसागरजी की) अलग से कोई गंधकुटी सी नहीं लगती थी। बल्कि ये गुरु से अनुभव पाने गुरु के समवसरण में बैठ जाया करते थे।

नित्य गुरु सेवा (वैय्यावृत्ति) का अवसर, गुरु की पुस्तकें, उपकरण व्यवस्थित करने के अवसर का लाभ लेने से नहीं चूकते थे। जितने भी वर्षों तक गुरु सेवा से ज्ञानादि का लाभ मिला वह अन्य लोगों की अपेक्षा चौगुना मिला क्योंकि वे रात-दिन गुरु के चरणों से विलग नहीं होते थे। वर्षायोग के उपरान्त पनागर में शीतकालीन वाचना हुई। शीतकाल में कुछ समय कोनी जी सि .क्षे. पर गुरु संघ का वास्तव्य रहा फिर महावीर जयन्ती महोत्सव के साथ प्रवचनसार आदिक की ग्रीष्मकालीन वाचना मढ़ियाजी में हुई थी। पाटन में मुनिश्री आर्जवसागरजी ने णमोकार मंत्र का कोटी जप का नियम लिया।

चौथे काल के मुनिराज की याद दिलाती घटना:

जब सन् 1989 में गुरुदेव के साथ कटंगी, जबेरा, नोहटा, डूमर, घाट-पिपरिया होते हुए एक पर्वत के पीछे से चढ़ते हुए कुण्डलपुर सिद्धक्षेत्र वर्षायोग के लिए जाते समय कुण्डलपुर के पर्वत को पूर्व तरफ से चढ़ रहे थे तब बीच में ही घोर वर्षा प्रारंभ हुई, और ऊपर चढ़ने के बाद क्षेत्र तक पहुँचने का रास्ता दिखना बंद हो गया, अंधकार-सा छा गया। संघ विभिन्न मार्गों में बँट

गया, साथ ही, थोड़ी ही देर में जंगल के नाले भरपूर बहने लगे ऐसे अवसर पर मुनिश्री आर्जवसागर जी महाराज के साथ एक मुनि पवित्रसागरजी, ऐलक उदारसागरजी तथा क्षु.धैर्यसागरजी व क्षु. नयसागरजी साथ में थे, और संघ के साथ कमण्डलु पकड़कर साथ चलने वाले पाँच-छह युवा लोग चल रहे थे। उन सभी साधुओं ने मुनिश्री आर्जवसागरजी महाराज से पूछा कि महाराजजी आप ही बताएँ कि ऐसी परिस्थिति में क्या करना है? आपका निर्णय ही सर्वोपरि होगा। तब मुनिश्री आर्जवसागरजी ने कहा कि पहले तो सब यहीं ठहरें और कुछ युवाओं को आगे भेजकर रास्ता ज्ञात करें, कोई ठिकाना ज्ञात होने पर ही विहार किया जाए। तब थोड़ी देर में ज्ञात हुआ कि तीव्र वर्षा के कारण अब रास्ता नहीं मालूम पड़ता। तब मुनिश्री आर्जवसागरजी ने कहा कि हम लोग अब यहीं एक वृक्ष के नीचे ठहरकर रात्रि बितायेंगे अन्यथा लोग कहेंगे कि मुनि संघ ने रात्रि में क्यों विहार किया है? अतः एक रात परिषह सहना हमारा कर्त्तव्य है और पाँचों जन एक पेड़ के नीचे वर्षा के जल की ठण्डी-ठण्डी बूंदें सहते हुए लग-भग पूरी रात खड़े रहे और अपने आवश्यक पूर्ण कर सुबह कुण्डलपुर पहुँचे। तब मालूम पड़ा कि आचार्यश्री पूर्व दिन भी रात होते-होते कुण्डलपुर पहुँच गये थे। जंगल में ध्यानस्थ आप लोगों के लिए खोजने हेतु लोगों को भेजा था। ज्यों ही कुण्डलपुर सिद्ध क्षेत्र पर पहुँचे और सुना कि आचार्यश्री बड़े बाबा के दर्शनार्थ गये हैं तो मुनिश्री भी (सभी पाँचों मिलकर) बड़े बाबा के दर्शनार्थ चल दिये और पर्वत चढ़ते ही बड़े बाबा द्वार पर देखा तो आचार्यश्री दर्शनकर बाहर आ रहे थे और उन्होंने जब अपने शिष्यों को अर्थात् मुनिश्री आर्जवसागरजी आदि को देखा तो एकदम खुश हो जोर से बोल पड़े कि अरे! आ गये क्या। कोई परेशानी तो नहीं हुई और मुनिश्री ने कहा गुरुदेव! आपके आशीर्वाद से रात्रि पेड़ के नीचे मंगलमय बीती और पानी की बूँदों ने असंख्यात कर्मों की निर्जरा का सौभाग्य दिलाया ऐसी कृपा ही हमारा जीवन धन्य करें और बड़े बाबा का दर्शन कर भारी तृप्ति का अनुभव

हुआ। फिर सन् 1989 का चातुर्मास बड़े बाबा की छाया में कुण्डलपुर में ही हुआ। गुरुदेव ने दस भक्तियों को अर्थ सहित पाठन कराया था और दोपहर में ज्ञानार्णव ग्रन्थ का स्वाध्याय चला था। फिर संघ सहित दमोह गये थे। गढ़ाकोटा होते हुए गोटेगाँव पंचकल्याणक हेतु गये। तदुपरान्त नरसिंहपुर पंचकल्याणक सम्पन्न हुआ। संघस्थ ग्रीष्मकालीन वाचना कुण्डलपुर में पूर्ण हुई, प्रातः न्याय दीपिका तथा मध्याह्न में सर्वार्थसिद्धि का स्वाध्याय चला था।

परोपकारी मुनिराजः-

सन् 1989 की बात है। एक दिन एक ब्रह्मचारीजी पिंडरई के थे नाम पारस था। आकरके पूज्य आर्जवसागरजी महाराज से कहा कि हमें आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज से हमें व्रत लेकर, मोक्षमार्ग में आगे बढ़ने का भाव है लेकिन मेरे शरीर में एक ही किडनी है। इसलिए आप आचार्यश्री से बात करवा दीजिए। आर्जवसागरजी आचार्यश्री पास गये। फिर उन ब्रह्मचारी को अन्दर बुलाया और सब पूछने के बाद उनको ब्रह्मचर्य व्रत दे दिया और कुछ दिन आश्रम में रहने को कहा। फिर आये फिर वहीं पर रहने को कहा। दीक्षा नहीं मिली। फिर उन्होंने आ. पुष्पदन्त के पास जाकर मुनि दीक्षा ली। वर्तमान में वे पुलकसागरजी के नाम से जाने जाते हैं। उन्होंने भक्तों के बीच मुनि दीक्षा के समय को याद करते हुए गुरुवर आर्जवसागरजी का नाम लेकर कहा था कि वे ही हमको आचार्यश्री विद्यासागरजी से व्रत दिलाने में सहायक बने। ऐसे परोपकारी मुनिराज धन्य हों।

सि. क्षे. कुण्डलपुर से विहार कर सिरोंज पञ्चकल्याणक के उपरान्त खुरई, पाटन और वहाँ से मढ़िया जी में थोड़े रुकते हुए सीधे मुक्तागिरि सिद्ध क्षेत्र पहुँच गये। सन् 1990 का चातुर्मास यहीं पर हुआ। मुनिश्री आर्जवसागरजी ने चातुर्मास में 4 महीने मौनव्रत धारण किया था। गुरुदेव के मुख से प्रातः प्रमेयरत्नमाला और दोपहर में सर्वार्थसिद्धि का स्वाध्याय सामूहिक रूप से कराया जाता था। और यहीं पर गुरुआज्ञा से उपवास के साथ

26 घंटों तक बैठे-बैठे शिखर में ध्यान किया एवं एक बार लगातार चार उपवासों की साधना भी की थी।

स्वास्थ लाभ व क्षेत्र दर्शन हेतु की दक्षिण यात्रा:-

वर्षायोगोपरान्त परतवाड़ा में स्वास्थ्य के निमित्त आँखों की दृष्टि जो कमजोर पड़ गई थी उसको दूर करने हेतु आचार्यश्री से कुछ दिन एक जगह स्वास्थ लाभ का आशीर्वाद लिया था। कुछ दिन भातकुली अतिशय क्षेत्र में स्वास्थ्य का लाभ लिया फिर अमरावती पहुँचे। आँखों में नम्बर आने के कारण चश्मा लग गया। अमरावती शीतकालीन वाचना में श्रावकों के लिए रत्नकरण्डक श्रावकाचार एवं छहढाला शास्त्र पढ़ाया था। रविवार को विशेष प्रवचन चले। यहाँ पर बहुत वर्षों के बाद मुनि महाराजजी का आगमन एवं ठहरना हुआ इसलिए श्रावक लोगों के अन्दर बहुत भक्ति एवं उत्साह था।

सम्यग्दर्शन के सच्चे उपदेशी:-

अमरावती में एक बार एक युवा आया और नमोस्तु करके कहने लगा कि महाराज! आप हमारे चौका में आये नहीं। बहुत दिनों से लग रहा है। महाराज ने कहा- पुण्य बढ़ाओ। जी महाराज! महाराज घर में बहुत बड़ी समस्या है क्या कहूँ जो भी पैसा कमाकर घर में रखते हैं सब गायब हो जाता है। एक पैसा भी घर भी नहीं ठहरता। सब्जी भी लाना है तो बाजू घर वालों के पास रखें पैसा लेकर जाना पड़ता है, शरीर पर पहने हुए गहने वगैरह गायब नहीं होते लेकिन पैसा घर में लाते ही गायब हो जाता है पता नहीं क्या होता है? मैं दुनियाँ के सभी देवी देवताओं को पूज चुका हूँ, बहुत गुनियाँओं से मिल चुका हूँ फिर भी ठीक नहीं हुआ। अन्त में एक गुनिया ने बताया कि तुम कौन हो पूछा? मैंने कहा; मैं जैन हूँ। तुम जैन होकर के दुनिया में यहाँ-वहाँ क्यों भटक रहे हो। तुम्हारे साधु मुनिराज के अन्दर इतनी शक्ति रहती है अगर उनके चरण तुम्हारे घर में पड़ जायँ तो तुम्हारे पीछे जो लगा है वह भाग जायेगा। बस! महाराजजी! इसलिए तो हमने चौका लगाया और आप आये

नहीं। गुरु महाराजजी ने कहा- अब तो और नहीं आयेंगे चौका करो बन्द। महाराज! फिर हमारा क्या होगा? किसी देवी-देवता को हटाने के लिए मुनिराज कभी किसी के घर नहीं जाते हम जो कहेंगे वो करने के लिए तुम तैयार हो। तो मैं बताऊँ। जी महाराजजी। बिलकुल आप जो बतायेंगे वो करेंगे पूर्ण श्रद्धा समर्पण भाव प्रकट किया। उनको महाराजजी ने सम्यग्दर्शन का उपदेश दिया। मिथ्यात्व का त्याग दिलाया। घर में जितनी भी देवी देवताओं की फोटो आदि थीं सबको हटवा दिया। सच्चे सम्यग्दृष्टि बन गये वे। महाराजजी ने कहा; अभी भी पैसा गायब हो सकता है लेकिन तुम सम्यग्दर्शन मत छोड़ना। जी महाराजजी! अब तो मेरे प्राण भी जाये तो भी मैं सम्यग्दर्शन नहीं छोडूँगा। फिर महाराजजी का विहार हो गया। फिर एक महीने तक पैसा गायब होता रहा पर एक महीने के बाद जो बन्द हुआ उसके बाद पुण्य वृद्धि से आज तक उनको कुछ नहीं हुआ। अब अच्छा सम्पन्न परिवार हो गया। वह युवा सी. आई. डी. लाइन में है आज भी वे लोग दर्शन करने आते हैं, उन गुरुवर का उपकार नहीं भूलाया; जिन्होंने भवसागर से तिरने का मार्ग बताया। धन्य हैं ऐसे वात्सल्यमूर्ति पूज्य गुरुवर!

निर्दोष चर्या व दिगम्बरत्व का प्रभावः-

अमरावती में एक श्वेताम्बर साधु नाम उदयराज महाराज था। वे गुरुवर आर्जवसागरजी से प्रभावित होकर गुरुवर से चर्चा करने रोज आते थे। अपनी पिच्छी के बारे में, आहार चर्या व नियमित चर्या के बारे में चर्चा करते थे। गुरुवर भी दिगम्बर धर्म का सम्यक् विश्लेषण कर उनके जिज्ञासाओं का समाधान करते थे। एक महीने तक आते रहे, चर्चा करते रहे और बताया था कि हमारे जिनकल्पी साधु आप जैसे ही रहते थे। उन्होंने भी दिगम्बरत्व धर्म का पहला अस्तित्व माना। एक दिन गुरु महाराज आर्जवसागरजी की आहारचर्या देखने भी आये थे। अन्त में उनका भाव ऐसा बदला गुरुवर की चर्या देख करके कि उन्होंने आजीवन एकाशन करने का नियम लिया। गुरुवर

उनको समझाया कि कैसे आहार लेना चाहिए इत्यादि।

देखिये! गुरुवर को चर्या से मात्र श्रावक ही नहीं, अपितु श्वेताम्बर साधु का जीवन भी परिवर्तित हुआ। धन्य हैं! ऐसे निर्दोषचर्या के पालक गुरुवर!

गुरु आशीष से फिर विहार करते हुए कारंजा में अष्टाह्निक पर्व में लोगों को द्रव्य संग्रह ग्रन्थ पढ़ाया था। यहीं सिद्धचक्र महामण्डल विधान भी हुआ था। फिर विहार करते हुए वढ़ोना, अकोला, सिरपुर दर्शनार्थ पहुँचे और अतिशय क्षेत्र अंतरिक्ष पार्श्वनाथ का भी दर्शन किया।

फिर रिसोड नगर में भ. महावीर के जीवन वृत्तान्त व संदेश से प्रारम्भ कर इष्टोपदेश की नेमिगिरि कक्षा चलायी थी। इसके उपरान्त हराड़ होते हुए अतिशय क्षेत्र जिन्तूर गये वहाँ नेमिगिरि पर रहकर क्षेत्र से सम्बन्धित कविताएँ भी बनायीं थीं। और जिन्तूर नगर में कुन्दकुन्द का कुन्दन पर प्रवचन दिये। फिर जालना की ओर विहार किया था। ग्रीष्मकालीन प्रवास भी यहीं हुआ, सामूहिक इष्टोपदेश आदि पढ़ाया था। फिर कचनेर, पैठन क्षेत्र के दर्शनार्थ गमन किया और औरंगाबाद पहुँचने पर वहाँ प्रवचन मालाएँ चलीं।

भक्ति से भक्त के वश भगवान:-

एलोरा की गुफाओं आदि का दर्शन कर कन्नड़ नगर पहुँचे फिर नांदगाँव होते हुए कोपरगाँव में प्रवेश हुआ। वहाँ पर 20-25 साल से कोई मुनि महाराज का आगमन न होने के कारण धर्म से व साधु की चर्या से अनभिज्ञ लोग थे। जब गुरु महाराजजी पहुँचे दूसरे दिन जब जंगल जाना था देखा तो कमण्डल पकड़ने वा रास्ता बताने वाला कोई नहीं था। फिर थोड़ी देर के बाद एक युवा आया और उसने गुरुवर के साथ कमण्डल लेकर रास्ता बताया। गुरुवर को यह स्थिति देखकर के मन में बहुत करुणा आयी। दूसरे दिन प्रभावक प्रवचन दिये जिसे सुनकर सबकी आँखें खुल गयीं। दो दिन में ऐसी भीड़ लगने लगी। जंगल के समय देखा तो कमण्डल के दस टुकड़े हो

जाये। हम पकड़ेंगे, हम पकड़ेंगे करके आपस में लड़ रहे थे। प्रवचन और आहारचर्या आदि में सबकी रुची बढ़ गयी। गुरुवर ने सम्यग्दर्शन का उपदेश दिया। देवी वेदी की खिड़की बंद हो गयी। अन्य अभिषेक बन्द हो गया। शुद्ध परम्परा से लोगों को जोड़ा। सब लोग सच्चे सम्यग्दृष्टि बने। बच्चों की पाठशाला खुलवाई, युवा मण्डल, कन्या मण्डल बना उन को धार्मिक संस्कार दिया, और महिला मण्डल व पुरुषों को स्वाध्याय की रुची जगाई। पश्चात् पूरी समाज ने श्री सिद्धचक्र महामण्डल विधान हेतु गुरुवर के चरणों में निवेदन किया। गुरुवर ने कहा; हम विधान करने के लिए आशीर्वाद देते हैं लेकिन हम अन्त तक रहेंगे यह नहीं कह सकते हैं। गुरुवर के शब्दों को सुनकर लोगों को दुःख-सा हुआ और गुरुवर को बांधने के लिए सबने श्रीफल चढ़ाकर चातुर्मास हेतु नम्र निवेदन भी किया। गुरुवर ने देखेंगे, पुण्य बढ़ाओ कहकर आशीर्वाद दिया। विधान शुरु हुआ और इसीके बीच में ही गुरुवर का विहार श्रीरामपुर की ओर हो गया। किसी को मालूम ही नहीं था। महाराज थोड़े दूर तक चले गये तब सब को मालूम पड़ा तो सब लोग काम छोड़ कर दौड़े-दौड़े पीछे-पीछे चले आये। दो-तीन किलोमीटर में तो पूरा कोपरगाँव ही पहुँच गया समझो। बीच में एक जगह रात्रिकालीन विश्राम हुआ।

शाम की गुरुभक्ति के उपरान्त सब ने अश्रुपात करते हुए निवेदन किया कि महाराज जी! इतने वर्षों के बाद हमें गुरु मिले हैं इस मौका को हम हाथ से जाने नहीं देंगे। आप जो कहेंगे वो करने के लिए हम लोग तैयार हैं कृपा करके पुनः आप लौट चलिए इस बार का चातुर्मास हम लोगों को चाहिए। दूसरे दिन वहीं पर दोनों का (श्रीरामपुर व कोपरगाँव वालों का) चौका लगा। गुरुवर का पड़गाहन कोपरगाँव वालों को मिला निरंतराय आहार हुआ। पश्चात् सबने श्रीफल का पहाड़ बनाते हुए कोपरगाँव में चातुर्मास हेतु अत्यधिक भक्ति भाव से निवेदन किया। गुरु महाराज ने कहा कि तुम्हारे यहाँ कुएँ का पानी ठीक नहीं है खारा है तो तुरन्त युवा वर्ग ने कहा कि गुरु महाराज

हम एक कि.मी. दूर से शुगर फैक्टरी में एक कुआँ देख करके आये हैं बहुत मीठा पानी है हम लोग नियम लेते हैं कि शुद्ध वस्त्रों के साथ सब चौकों में हम लोग कुएँ का पानी पहुँचायेंगे। गुरु महाराज ने आशीर्वाद दिया। पश्चात् सामायिक तक इंतजार की घड़ियाँ चल रही थी। और ज्यों ही गुरु महाराज सामायिक के बाद पुनः कोपरगाँव की ओर विहार किया तो श्रावकों के अन्दर खुशियाँ छा गईं, आनन्द का पार न रहा। भक्ति से भक्त के वश में भगवान भी हो जाते हैं यह चरितार्थ हुआ। बड़े धूम-धाम से कोपरगाँव नगर में मंगलप्रवेश हुआ, और सन् 1991 का चातुर्मास कलशों की स्थापना पिपल्स बैंक के प्रांगण से सम्पन्न हुई।

सभी लोगों के लिए प्रातः कार्तिकेयानुप्रेक्षा, छहढाला तथा मध्याह्न में रत्नकरण्डक श्रावकाचार प्रवचन के रूप में कक्षायें चलीं। रविवार के विशेष प्रवचन के लिए व्यापारी धर्मशाला जाते थे और हर सप्ताह समाजवालों की 60 धार्मिक प्रश्नों से परीक्षा लेते थे। अगले रविवार को प्रवचन के पूर्व पुरस्कार दिये जाते थे। शाकाहार फैडरेशन बनाकर शाकाहार सम्मेलन, अहिंसा रैली सम्पन्न हुई थी, बहुत से अन्य जाति लोगों ने अहिंसा, शाकाहार के संकल्प पत्र भरे थे। शाकाहार व अहिंसा विषय पर 25 डॉक्टर्स की संगोष्ठी सम्पन्न हुई थी जिसमें; दगड़ा अजमेरा, गंगवाल आदि जैन के अलावा अजैन डाक्टर्स भी उपस्थित हुए थे। जिस कार्यक्रम में सांसद श्री शंकरराव काले ने गुरु आशीष प्राप्त किया। और आचार्यश्री से रचित चौबीस तीर्थंकरों की स्तुति पुस्तक का प्रकाशन करवाया गया।

कोपरगाँव में 20-25 साल के बाद यह वर्षायोग मिला। वह भी बहुत पुरुषार्थ भक्ति के बाद मिला। लोगों में भी भक्ति और उत्साह बहुत था। मुनिश्री की प्रेरणा से एकबार सब मिलाकर दो बड़ी गाड़ियों में भरकर आचार्यश्री के पास गये और वर्षायोग के प्रभावना की महिमा गायी और मुनिश्री आर्जवसागरजी का बिना चश्मा का फोटो दिखाया तो आचार्यश्री ने

पूछा क्यों आँखों की ज्योति (कमजोरी) ठीक हो गयी क्या? तो लोगों ने कहा ये गुरु भक्ति के समय जाप करते हुए का फोटो है। फिर आचार्यश्री ने कहा नई पिच्छी के लिए पंख ले जाओ; तो लोगों ने कहा बाहर से भी पंख मंगवा लिये हैं तब आचार्यश्री ने कहा कोई बात नहीं काम में आ जायेंगे ले जाओ; लेकर आये, पंख अधिक हो गये थे अत: मुनिश्री आर्जवसागरजी स्वयं ने एक नई पिच्छिका बनाकर के आचार्यश्री के पास भिजवाई तो आचार्यश्री ने कहा रख दो- काम में ले लेंगे।

कोपरगाँव सन् 1991 के चातुर्मास के फलस्वरूप लोगों ने सामूहिक पूजन व अखण्ड स्वाध्याय का नियम लिया। इसी का परिणाम यह हुआ कि आज वहाँ पर अनेक विद्वान तैयार हुये और विदेश तक प्रवचन करने जाने लगे। जो माईक पकड़कर बोलना नहीं जानते थे वे आज दशलक्षण आदि पर्व पर विद्वान बनकर प्रवचन करते हैं। वहाँ की महिलायें गोम्मटसार जैसे बड़े-बड़े शास्त्र पढ़ने लगीं और वर्ष में तीन बार धार्मिक शिविर भी लगते हैं। ये सब मुनिश्री आर्जवसागरजी महाराज के ससंघ चातुर्मास की ही देन है।

श्रीरामपुर की ओर विहार : फिर मुनिश्री वहाँ से विहार कर शिर्डी पहुँचे और वहाँ की समाज को दि. जैन मंदिर बनाने की प्रेरणा दी। फिर गणेश नगर होते हुए श्रीरामपुर में पदार्पण हुआ। वहाँ पर इष्टोपदेश शास्त्र पर प्रवचन हुए व शाकाहार फेडरेशन बनाया। यहीं पर शीतकालीन प्रवास रहा। फिर अहमदनगर गये थे वहाँ पर भी शाकाहार फेडरेशन स्थापित किया और सारगर्भित धार्मिक प्रवचनों द्वारा धर्म की प्रभावना की।

कुन्थलगिरि सिद्ध क्षेत्र दर्शन : वहाँ से विहार करते हुए मुनिश्री ने सिद्धक्षेत्र कुन्थलगिरि की वंदना की। यहाँ से कुलभूषण, देशभूषण केवली मोक्ष गये थे और चारित्र चक्रवर्ती आचार्यश्री शान्तिसागरजी महाराजजी को यहाँ पर सल्लेखना-समाधिमरण प्राप्त करने का सुअवसर प्राप्त हुआ था।

करमाला की ओर विहार : ऐसे सिद्धक्षेत्र का आनन्द लेने के बाद

मुनिश्री ने वहाँ से करमाला की ओर विहार किया। करमाला में भ. महावीर के संदेशों के साथ अहिंसा सम्मेलन शाकाहार फेडरेशन द्वारा विशाल धर्म सभा का आयोजन किया गया जिसमें पूना के डॉ. के एम. गंगवाल भी अपना वक्तव्य करमाला में देने उपस्थित हुए थे। 'कुन्दकुन्द का कुन्दन' पर तथा इष्टोपदेश पर प्रवचन दिये और करमाला में मुनिश्री नियमसागरजी के पास से दो ब्रह्मचारी पत्र द्वारा संदेश लाये कि कर्नाटक चलने हेतु मुनिश्री नियमसागरजी महाराजजी ने यह पत्र आपके लिए दिया है।

दहीगाँव क्षेत्र दर्शन : मुनिश्री आर्जवसागरजी ऐलक वात्सल्यसागर ने ऊजनी बाँध होते हुए लासूर्णा मंदिर का दर्शन किया फिर बालचन्द नगर, अतिशय क्षेत्र दहीगाँव, नातेपुते होते हुए कुण्डल पहाड़ पर स्थित जिनबिम्बों के दर्शन किये।

कुम्भोज बाहुबली दर्शन : फिर मुनिश्री ने दूधगाँव से विहार करते हुए कुम्भोज बाहुबली के दर्शन किये और कुम्भोज गाँव से बाहर एक किलोमीटर पहले ही मुनिश्री नियमसागरजी ससंघ आगवानी के लिए आये, और मुनिश्री आर्जवसागरजी के साथ ससंघ दोनों संघों का मिलन हुआ।

इचलकरंजी से सदलगा : कुछ दिन साथ रहकर मुनिश्री आर्जवसागरजी इचलकरंजी से सदलगा गये और गुरु जन्मभूमि पर गुरुवर आचार्यश्री विद्यासागरजी के पूर्व भ्राता महावीर जी के गृह चौका लगा तथा दो बार उन्हें मुनिश्री आर्जवसागरजी को पड़िगाहन करने का सौभाग्य मिला। मुनिश्री का केशलोंच भी हुआ तथा सात दिन के प्रवास के बाद फिर विहार करके भोजगाँव, शांतिगिरि, जुगुल, सिरगुप्पी होते हुए, मिरज से विहार करते हुए ससंघ सांगली नगर में मंगल प्रवेश हुआ।

एषणा समिति के सच्चे पालक:-

कर्नाटक में एक बार एक गाँव में आहारचर्या के लिए गुरु महाराज आर्जवसागरजी निकले। विधि मिलने पर एक घर में पड़गाहन हुआ। दक्षिण

प्रदेश में वैसे भी आचार्यश्री के संघ के मुनिराजों का विहार कम होता था। इसलिए कई लोगों को आहारचर्या के बारे अनभिज्ञता रहती थी। गुरु महाराज को उच्चासन, पादप्रक्षालन और पूजन के पश्चात् कहा कि हे स्वामिन्! 'अन्ना, नीरु शुद्ध इदे' अन्ना मतलब भात और नीरू मतलब पानी शुद्ध है आहार ग्रहण कीजिए। गुरु महाराज ने कुछ नहीं कहा। हाथ धोकर आहार लेने खड़े हो गये। श्रावकों ने जल चलाया और दूध भी था वो चलाया फिर भात ले आये। गुरु महाराज ने सोचा जो श्रावक देवें वो ले लो, भात लिया और ऊपर से दाल वाली चम्मच से घी चलाने लगे तो महाराज ने अञ्जली बन्द कर ली। महाराज ने सोचा इतना घी लेंगे तो क्या होगा बीमार पड़ेंगे सोच करके उन्होंने मना कर दिया। तो लोगों ने सोचा कि महाराज का घी का त्याग है उन्होंने कहा 'तुप्पा बेड़ा' घी मना हो गया। घी को एक तरफ रख दिया और मूंग की दाल चलायी, दाल-भात लेते-लेते बहुत देर हो गयी। महाराजजी ने सोचा दूसरी चीज ले आयेंगे तो हम भात के लिए अञ्जुली बन्द करें। श्रावक सोचते थे कि महाराजजी अञ्जुली बंद करें तो हम और चीज निकालें। ऐसे में गुरु महाराजजी ने जब पानी लेने के लिए अञ्जुली बंद की तो श्रावकों ने भाकरी (ज्वार की रोटी) निकाली। गुरु महाराज ने भी सोचा कि भात के ऊपर पानी लेंगे तो सर्दी हो जायेगी इसलिए उन्होंने ज्वार की रोटी ले ली। तुप्पा बेड़ा (घी का मना) तो पहले ही हो गया था अब बिना घी की रोटी कैसे ली जाय। थोड़ा लिया और अञ्जुली बंद करके पानी ले लिया और हाथ धोके अपने स्थान पर आ गये। गुरु महाराज ने श्रावकों से एक शब्द भी नहीं कहा और ना किसी से इशारा करवाया। ऐसा आहार करते-करते एक सप्ताह में शरीर भी कुछ कमजोर हो गया तो भी शरीर पर ध्यान न देते हुए अपनी आत्मा को पुष्ट करने के लिए मूलाचार की एषणा समिति का पूर्ण रूप से पालन किया और करते हैं। धन्य हैं! ऐसे निस्पृही साधु की चर्या।

सांगली चातुर्मास :- सांगली शहर के नेमिनाथ नगर धामनी रोड

के लोगों ने मुनिश्री आर्जवसागरजी को वर्षायोग हेतु निवेदन किया। वहाँ पर फिर से मुनिश्री नियमसागरजी एक साथ वर्षायोग करने की भावना से मिलने आये। वर्षायोग में मुनिश्री आर्जवसागर ने रत्नकरण्डक श्रावकाचार पढ़ाया और सर्वार्थसिद्धि ग्रंथ चला। इसमें धामनी से प्रायः प्रतिदिन जिनभूषण मुनि महाराज सर्वार्थसिद्धि सुनने के लिये आते थे और ब्र. संजय (महाराष्ट्र) ब्र. कुमार (समडोली) (वर्तमान में सुपार्श्वसागरजी) ब्र. कुलभूषण (वर्तमान में विनीतसागरजी) स्वाध्याय में साथ रहते थे। साथ में ब्र. कुलभूषण के लिए मुनिश्री ने कातन्त्र रूपमाला के सौ सूत्र भी पढ़ाये थे। और अच्छी धर्म-प्रभावना के साथ चातुर्मास सम्पन्न हुआ। वी.के. पाटिल के निवेदन से मुनिश्री महाबलसागरजी महाराज के लिए मुनिश्री आर्जवसागरजी ने पिच्छिका बनाकर प्रदान की थी।

हलंगड़ी की गुफाओं का दर्शन : वर्षायोग के बाद मिरज, जुगल, सिरगुप्पी उगार होते हुए ऐनापुर, गुण्डवाड़ गये। फिर हलगा वस्वाड़, तेरदाल हलंगड़ी की 720 खण्डहर गुफाओं का अवलोकन किया था। फिर यलट्टी गये, यलट्टी में नये मंदिर भी गये। गाँव के अन्त में एक इंजीनियर परिवार ने छोटा सा मन्दिर बनवाया था। उनकी माँ मुनिश्री आर्जवसागरजी को एक चांदी की माला देने लगी तो मुनिश्री ने इंकार कर दिया। और कहा कि साधु लोग कोई चिंतित करने वाली चीजें नहीं रखते। उनके परिवार में खेती होती थी तो मुनिश्री ने पूछा कि कीटनाशक दवाई डालते हैं क्या? तो अम्मा ने कहा नहीं महाराजजी बच्चों को हमने पहले ही रत्नकरण्डक श्रावकाचार पढ़ाकर अहिंसा सिखाई थी। इसलिए हमारा बेटा कीटनाशक दवाई नहीं डालता और देशी खाद डालकर खेती करता है। जिसमें अन्य लोगों की अपेक्षा ज्यादा, बहुत अच्छी फसल आती है। हमारे परिवार ने इसी अपने घर के चैत्यालय में एक मुनि महाराजी का वर्षायोग भी करवाया था। आप भी बहुत दिन तक यहाँ रहें तो हमारा सौभाग्य रहेगा।

बीजापुर पार्श्वनाथ दर्शन : फिर जमखण्डी होते हुए बीजापुर में सहस्रफणी पार्श्वनाथ भगवान का दर्शन किया।

दुधनी से आलंद नगर प्रवेश : बीजापुर से विहार करके इण्डी, दुधनी से आलंद नगर में पहुँचे। वहाँ ग्रीष्म काल में सम्यग्दर्शन आदि विषयों पर प्रवचन द्वारा धर्म प्रभावना की, तत्त्वार्थ सूत्र भी पढ़ाया और रामलीला मैदान पर भगवान महावीर और अपने दीक्षा गुरु को स्मरण कराते हुए अहिंसा और राम पर प्रवचन हुए जिसमें मादन हिप्परगा- और जिडगा हिन्दु मठों से हिन्दु मठाधिपतियों ने आकर दिगम्बर मुनि की प्रशंसा की। वे मयूर रत्न ले गया वाली कथा में कह रहे थे कि धन्य हैं ऐसे साधु जो जीव रक्षा के लिए अपने प्राणों की भी परवाह नहीं करते हैं और सामने वाला कितने भी क्रोध के आवेश में कुछ अपशब्द भी कहें या शरीर पर कुछ बाधा पहुँचाये तो भी ये दिगम्बर मुनि तो समता रूपी अमृत का पान करते हैं धन्य हैं ऐसे मुनि।

सोलापुर नगर प्रवेश : फिर वहाँ से विहार करके सोलापुर गये। वहाँ पर गोम्मटेश यात्रा पर साथ चलने का संदेश भिजवाने वाले अपने ही आचार्यश्री के संघस्थ मुनिश्री स्वभावसागरजी एवं मुनिश्री सुखसागरजी से मुनिश्री आर्जवसागरजी का मिलन हुआ। और श्रवणबेलगोला में बारह वर्ष के बाद सन् 1993 में होने वाले महोत्सव में (पंचकल्याणक में) पहुँचने का विचार बना।

कोन्नूर गुफा दर्शन : फिर वहाँ से पण्डरपुर होते हुए भोसे के मार्ग से आरग, वेरग, घटप्रभा होते हुए कोन्नूर की गुफाएँ देखीं। जहाँ चारित्र चक्रवर्ती आचार्यश्री शांतिसागर जी महाराज के ऊपर ध्यान के समय सर्प आता था तथा जहाँ 720 गुफाओं में दो हजार वर्ष पहले श्रुतकेवली भद्रबाहुस्वामी के 12,000 मुनियों का संघ ठहरा था। मुनिश्री आर्जवसागरजी ने भी उसी गुफा में बैठकर ध्यान किया और तपस्वियों के वर्गणाओं से पवित्र गुफा का आनन्द लिया। फिर विहार करके अंकलगी, हरवरट्टी,

नेकलमरडी, अमटूर, धारवाड़, हुबली होते हुए हाबेरी, दावणगेरे से आर्सीकेरी, चन्नरायपट्टन से श्रवणबेलगोला पहुँचे। मुनिश्री योगसागरजी आदि मुनिवर आगवानी को आये। दावणगेरे के पद्मराज जैन और वज्रप्पा जैन ने विहार कराने का पुण्य लाभ प्राप्त किया था।

श्रवणवेलगोला में वर्षायोग : श्रवणबेलगोला क्षेत्र भट्टारक व डी.आर. शाह एवं श्री गुण्डप्पा कान्ते आदि ने मुनिश्री आर्जवागरजी के चरणों में वर्षायोग हेतु श्रीफल चढ़ाया। सन् 1993 में श्रवणबेलगोला में प.पू. आचार्यश्री विद्यासागरजी संघ के परम शिष्य मुनिश्री योगसागरजी, मुनिश्री स्वभावसागरजी और मुनिश्री आर्जवसागरजी, मुनिश्री पवित्रसागरजी और मुनिश्री सुखसागरजी ने एक साथ मिल करके वर्षायोग किया। जिस अवसर पर आचार्यश्री वर्धमानसागरजी, मुनिश्री रयणसागरजी, मुनिश्री हितसागरजी एवं मुनिश्री पुण्यसागरजी आदि लगभग सौ पिच्छिधारी विराजमान थे। इन सभी लोगों के साथ सवात्सल्य मिलन व चर्या के पालन के साथ वर्षायोग सम्पन्न हुआ। मुनिश्री योगसागरजी आदि पाँचों मुनियों को अन्य संघ के आचार्य, मुनि पंचपाण्डव कहकर पुकारते थे। वर्षायोग में प्रायः प्रतिदिन मुनिश्री के लिए बाहुबली भगवान के दर्शन कई उपवासों में चन्द्रगिरि पर स्थित श्रुतकेवली भद्रबाहुस्वामी की गुफा में ध्यान करने का सुअवसर मिला। सामूहिक रूप से स्वाध्याय एवं प्रवचन करने का भी सुअवसर प्राप्त हुआ।

सम्यक् आगमवेत्ता पूज्य गुरुवर:-

सन् 1993 के चातुर्मास में जब भी भीड़ आती है तो भट्टारकजी और किसी को न बुलाते हुए पूज्य गुरुवर आर्जवसागरजी महाराज को ही प्रवचन देने हेतु निवेदन करते थे। क्योंकि इनकी प्रवचनशैली बहुत ही प्रभावकारी है जो सभा में बैठे हुये लोगों के मन को आनन्दित कर देता है। चातुर्मास में प्रतिदिन सामूहिक स्वाध्याय चलता था। जिसमें एक-एक साधुओं को पढ़ने का अवसर आता था। एक दिन गुरुवर मुनिश्री

आर्जवसागरजी का भी नम्बर आया। स्वाध्याय में आ. वर्द्धमानसागरजी का संघ, अन्य संघ के व अपने ही संघ के सभी साधु बैठे हुये थे। उन सब के बीच समयसार कलश का स्वाध्याय करना था। गुरुवर ने शुरु किया स्वाध्याय के बीच में एक प्रकरण आया कि जैसे मेघों का गमन स्वभाव से होता है और जैसे स्त्रियों में मायाचार स्वभाव है वैसे ही तीर्थंकरों का विहार भी स्वभाव से होता है। इस पर भट्टारक बोलने लगे कि नहीं महाराज! स्त्रियों में मायाचार नहीं स्त्रियों में मातृत्वपन स्वभाव होता है ऐसा अर्थ करना चाहिए। गुरु महाराजजी ने इन्कार करते हुए कहा कि नहीं। यहाँ पर प्राकृत में ही कहा है 'मायाचारोव्व इत्थीणं' इसलिए मायाचार ही लेना चाहिए। इस प्रसंग का समाधान आ.वर्द्धमानसागरजी के संघस्थ विदुषी आर्यिका जिनमति माताजी ने मुनि आर्जवसागरजी के अर्थ का समर्थन करते हुए कहा कि जो महाराजजी ने कहा है वही सही है। स्त्रियों में मायाचार स्वभाव से होता है। यही सही है, यह सुनकर सब लोग चुप रह गये।

श्रवणवेलगोला में गुरुवाणी –

सन् 1993 में श्रवणवेलगोला के वर्षायोग में भद्रबाहु मण्डप नामक पाण्डाल में आषाढ़ मास के अष्टाह्निका पर्व महोत्सव में मुनि श्री आर्जवसागर जी ने सर्व मुनि संघों व भट्टारक चारुकीर्ति सह सर्व जनसमूह के बीच जब मैना सुन्दरी व श्रीपाल के निर्विचिक्तिसा अंग वात्सल्य की महिमा एवं पूजा का अतिशय एक अद्भुत शैली में सुनाया तब सभी लोगों में एक चर्चा का विषय बन गया था। इसी तरह सोलह कारण पर्व में सभी के बीच संवेग भावना पर तथा दशलक्षण पर्व में उत्तम सत्य धर्म पर जब अपने गुरु की शैली में प्रवचन दिये तो एक अपूर्व धर्म प्रभावना हुई एवं गुरु की गरिमा भी खूब बढ़ी थी।

इसी वर्षायोग में भण्डारवसदि मंदिर (चौबीसी) में मुनिश्री आर्जवसागर जी के प्रवचन जो सम्यग्दर्शन विषय पर दिये गये ये वे भी प्रशंसित रहे तथा सर्व संघ व भट्टारक चारुकीर्ति एवं पं. नीरज जैन सतना आदि

विद्वानों तथा जनता के बीच जो समयसार कलश पर कक्षा चल रही थी और प्रतिदिन एक-एक मुनिराज को वाचना करने, समझाने का अवसर मिल रहा था उसी क्रम में मुनि श्री आर्जवसागर जी का जब नम्बर आया तब उन्होंने अपना परम सौभाग्य मानते हुए नय-परक तत्त्व का विवेचन किया इसी बीच किसी ने जैन दर्शन में सम्यक् लिंग (भेष) सम्बन्धी प्रश्न भी लाया कि भट्टारक का भेष आगम में कहाँ वर्णित है और वह कब से आया? इसके समाधान में मुनि श्री आर्जवसागर जी ने आचार्यश्री कुन्द-कुन्द देव के ग्रन्थ से ''एगं जिणस्य रूवं'' इत्यादि गाथा का प्रमाण देकर समझाते हुए अर्थ किया कि प्रथम लिंग (भेष) जिनेन्द्र देव सदृश नग्न दिगम्बर मुनिराज का, द्वितीय भेष पुरुष श्रावक की अपेक्षा ग्यारह प्रतिमा धारी श्रावक ऐलक और क्षुल्लकों का तथा तृतीय भेष महिलाओं की अपेक्षा आर्यिकाओं और क्षुल्लिकाओं का है, इनके अतिरिक्त चतुर्थ कोई भी भेष जिन दर्शन (जिनागम)में नहीं कहा गया है।

वर्तमान में वस्त्र युक्त भट्टारकों का भेष आगम से बाह्य है, क्योंकि उन्हें आरम्भ सारम्भ का सर्मथन करना पड़ता है, धन, पैसा, गाड़ी-मोटर, चाबी आदि रखना पड़ते हैं और एक ही जगह रहकर स्वयं के निमित्त बना भोजन ग्रहण करना पड़ता है, इस तरह वर्तमान के भट्टारकों के द्वारा की जाने वाली देवी-देवताओं की उपासना, खड़ाऊ, लुंगी, टोपी और मठ इत्यादिक सम्यक् लिंग में बाधक हैं। जब देश में धर्म पर आई आपत्ति के समय मुनियों को दूर विहार करना मुश्किल था तब अकबर बादशाह के समय यह परिग्रही भट्टारक भेष आया था, जिस तरह परिस्थिति वश जैसे कीचक को मारने हेतु भीम ने साड़ी पहनी थी और मारने के बाद साड़ी उतार दी थी वैसे ही आज जब मुनियों का विहार सुख पूर्वक हो रहा तब ऐसी अनुकूलता रूप परिस्थितियों में भट्टारक भेष छोड़ देना चाहिए। ऐसा कहते ही सामने ही बैठे चारुकीर्ति भट्टारक बोल पड़े कि मुझे याद है कि यही बात आपके गुरु आचार्य श्री

विद्यासागर जी ने सन् 1988 में मढ़िया जी जबलपुर में आपके ही सामने कही थी। इस प्रकार आगम के सम्यक् अर्थ को बतलाने वाले पूज्य गुरुवर के चरणों में शत्-शत् नमन्!

श्रवणबेलगोला में हुआ महामस्तिकाभिषेक : वर्षायोग के उपरान्त पंचकल्याणक एवं 12 वर्ष के बाद होने वाला महामस्तिकाभिषेक भी सम्पन्न हुआ। जिसमें कई और भी आर्यिकायें और मुनि महाराजजी उपस्थित थे। कार्यक्रम में राष्ट्रपति शंकरदयाल शर्मा, प्रधानमंत्री नरसिंहराव, कर्नाटक के मुख्यमंत्री वीरप्पन मोयली, लालकृष्ण आडवानी आदि मंत्रीगण भी उपस्थित थे। जैन अशोक कुमार साहू, निर्मल कुमार सेठी, गुण्डप्पा कान्ते आदि प्रतिष्ठित व श्रेष्ठीगण एवं प्रा. नरेन्द्रप्रकाश जी, पं. निर्मलजी, नीरजजी आदि विद्वत्गणों की भी कार्यक्रम में सक्रिय भूमिका रही। इन सबके बीच रहने से विभिन्न परम्पराओं के अनुभव का अपूर्व लाभ हुआ। मुनिश्री को श्रवणबेलगोला में आहार में बहुत अन्तराय आने से बहुत लोग इन्हें अन्तरायसागर करके भी पुकारते थे।

श्रवणबेलगोला से शालिग्राम : शीतकाल में मुनिश्री आर्जवसागरजी ने ससंघ श्रवणबेलगोला से विहार किया क्षु. ध्यानभूषण भी साथ थे तब आचार्य वर्धमानसागरजी के संघस्थ मुनि थोड़े दूर तक भेजने के लिए आये। मुनिश्री आर्जवसागरजी एवं मुनिश्री सुखसागरजी शालिग्राम, हासन, अडगूर में प्रभावनारत रहे अडगूर ग्राम में महावीर जयन्ती के शुभ अवसर पर मुनि श्री का 7वाँ मुनि दीक्षा दिवस बड़े उल्लास के साथ मनाया गया और इन स्थानों पर अपने प्रवचनों द्वारा सम्यक्त्व धर्म की प्रभावना की फिर हालिवीडू गये यहाँ शान्तला द्वारा रक्षित किये गये दिगम्बरों के तीन जैन मंदिर हैं उनका दर्शन किया।

धर्मस्थल दर्शन: फिर विहार करते हुए मुनिराज धर्मस्थल पहुँचे जहाँ चार दिनों में बाहुबली भगवान, चन्द्रनाथ मन्दिर व म्यूजियम देखा।

वीरेन्द्र हेगड़े की माँ एवं धर्मपत्नी ने भी नवधा भक्तिपूर्वक आहार दान दिया।

मूड़बिद्री व कार्कल दर्शन : वेणूर के बाहुबली भगवान, मूड़बिद्री की रत्न प्रतिमाओं एवं प्राचीन मन्दिरों के दर्शन किये। कार्कल के बाहुबली व जिन मन्दिर देखे। वरांग में प्राचीन मंदिर व हुमचा में पार्श्वनाथ भगवान के प्राचीन मन्दिर का दर्शन किया।

सागर तालुका प्रवेश : फिर शिमोग्गा जिला की सागर तालुका में जोग फाल्स, फिर इडवानी, बिदरूर, कोनूर कोटे, गेरसुप्पा, संगीतपुर आदि के प्राचीन मन्दिरों के दर्शन और भटकल शहर से मूडेश्वरा पर समुद्र का किनारा देखा व थोड़ा वहाँ पर बैठकर ध्यान भी किया। फिर मंकी से इडवानी सागर वापिस आये।

दावणगेरे प्रवेश व वर्षायोग : फिर शिराडकुप्पा से हाबेरी होते हुए दावणगेरे के भक्त लोगों के निवेदन पर दावणगेरे के बी.टी. टेम्पल पहुँचे। यहीं पर वर्षायोग सन् 1994 का पुण्य लाभ श्रावकों को मिला। यहीं पर बा. ब्र. नरेश को क्षु. अतुलसागर बनाया तथा पायप्पा ब्र. बने और वर्षायोग में अनेक विधान-पूजायें सम्पन्न हुईं एवं सम्यग्ज्ञान शिविर भी सम्पन्न हुआ। वर्षायोग में रत्नकरण्डक श्रावकाचार पर प्रवचन दिये।

शिमोग्गा से तुमकूर विहार : वर्षायोग के बाद विहार करके वीरापुर, हानगल होते हुए शिमोग्गा पहुँचे और बोर्डिंग जैन मंदिर में कुछ दिन प्रवचन देकर नये मन्दिर बनाने की प्रेरणा दी और यहीं पर सेलम के श्रेष्ठी श्री ताराचन्द जैन परिवार ने तमिलनाडु आने का निवेदन किया। फिर होसदुर्ग होते हुए तुमकूर पहुँचकर धर्मप्रभावना की।

तमिलनाडु का भाग्य जागा : तमिलनाडु के मारवाड़ी समाज के द्वारा किये गये निवेदन पर बेंगलौर के चिक्पेट मन्दिर पहुँचे तथा दोड्डपेट मन्दिर में शुभोपयोग की क्रियाओं से निर्जरा एवं शुद्धोपयोग का गुणस्थान आदि विषयों पर प्रवचन हुए फिर विमानपुर में दस दिन प्रवचन हुए और

बेंगलोर में ब्र. राकेश शास्त्री ने मुनिश्री के पोन्नूरमलै यात्रा के भावों का उत्साह वर्द्धन करते हुए बतलाया कि तमिलनाडु के मद्रास, पाण्डिचेरी में जैन मारवाड़ी के अलावा कई ग्रामों में प्राचीन काल से रह रहे जैन परिवार बड़े सदाचारी मुनि भक्त हैं आपको उनके बीच बहुत अच्छा लगेगा। विमानपुर से विजय नगर होते हुए तमिलनाडु की ओर विहार किया।

बैंगलोर से पोन्नूरमलै यात्रा : बैंगलोर से मुनिश्री का ससंघ होसूर कृष्णगिरि की ओर विहार चल रहा था। बैंगलूर के लोग साथ में थे। फिर भी सेलम से भी श्रावकगण आ गये और डी.जी.पी. श्रीपालन जैन ने पूरे विहार में पुलिस की व्यवस्था की थी। कर्नाटक के अन्त और तमिलनाडु प्रवेश के गेट पर जब मुनिश्री ने ससंघ प्रवेश किया था तब एक व्यक्ति 8, 10 संतरा फल ले करके आया और महाराजजी को देने लगा। तभी मंगल हुआ था ब्रह्मचारी जी ने लेकर उसे धन्यवाद दिया था। यह दृश्य तमिलनाडु प्रवेश में एक शुभ शकुन रहा। फिर मुनिश्री कृष्णगिरि आदि होते हुये चेंगम से त्रिरुवन्नामलै पहुँचे। यहाँ से तमिलनाडु की जैन समाज प्रारम्भ हो गई और पाण्डिचेरी से भी बहुत से मारवाड़ी जैन श्रावक आकर विहार में साथ हो गये थे। फिर सोमासपाडी गये। यहाँ से तमिलनाडु की जैन समाज ने काफी भक्ति दिखाई।

वलदुरामकुण्डरम् क्षेत्र दर्शन : मलपाम्बाड़ी से आगे बलदुरामकुण्डरम् पर्वत पर चट्टान में बनी जैन गुफाएँ एवं प्रतिमाएँ देखीं और वहीं सामायिक की।

पोन्नूरमलै दर्शन एवं अष्टाह्निका पर्व : पश्चात् एईल, चेतपेट से पोन्नूरमलै क्षेत्र पर प्रवेश हुआ। यहाँ एलाचार्य (कुन्दकुन्द) के चरणों का दर्शन किया। फाल्गुन अष्टाह्निका पर्व आ गया था तब वहीं ठहरकर धर्मध्यान किया। पाण्डिचेरी, मद्रास आदि से बहुत संख्या में लोग अपने शहर में आमंत्रित करने आये। पाण्डिचेरी वाले गुरु सेवा में तत्पर रहते थे। अष्टाह्निका पर्व के बाद अनेक नगरों, ग्रामों में स्थित जैन मन्दिरों के दर्शनार्थ विहार किया।

तरकोविल क्षेत्र दर्शन : पश्चात् मुनिश्री का ससंघ विहार हुआ और पोन्नूरगाँव के मंदिर का दर्शन कर तरकोविल क्षेत्र का दर्शन किया। यहाँ पर पहाड़ी पर स्थित जिन मन्दिरों के जिन प्रतिमाओं का दर्शन किया।

सीयमंगलम् दर्शन : फिर वहाँ से विहार करते हुए देसूर, सीयमंगलम्, अरगाऊर और तच्चाम्बाड़ी गाँव में स्थित जिन मन्दिरों का दर्शन किया।

भूगर्भ से प्राप्त भगवान महावीर की प्रतिमा : तिरुमलै क्षेत्र के लिए जाते समय एक अतिशय सा हुआ एक रास्ते को बदल कर अचानक दूसरे रास्ते पर जाने का भाव हुआ और नदी के किनारे वाले गाँव में मकान की नींव खोदते समय एक जिन प्रतिमा अष्टप्रतिहार्य युक्त हरे पाषाण की किसी अजैन व्यक्ति को प्राप्त हुई और भाग्य से उसी समय मुनिश्री आर्जवसागरजी महाराज ससंघ पधारे तो उस मकान मालिक ने प्रतिमा के दर्शन हेतु निवेदन किया तो सभी लोगों ने इस योग को बड़ा अतिशय माना कि प्रतिमा भूगर्भ से प्राप्त होते ही मुनि संघ का आना एक महाशुभ योग है। मुनिश्री ने उस प्रतिमा के दर्शन करके कहा कि यह प्रतिमा मुझे दे दो किसी क्षेत्र पर रखवायेंगे। इतना कहते ही उस व्यक्ति ने सहर्ष स्वीकार कर लिया। और कुछ दिनों के बाद प्रतिमा मंगवाकर पोन्नूरमलै पर स्थित एलाचार्य के चरणों के ऊपर रखने का मन बना लिया।

तिरुमलै क्षेत्र दर्शन : फिर तिरुमलै क्षेत्र पर मुनिश्री का आगमन हुआ। वहाँ पर्वत पर स्थित पाण्डवों के द्वारा बनायी गई नेमिनाथ की खड्गासन मुद्रा में विशाल नेमीनाथ तीर्थंकर की प्रतिमा का दर्शन किया और तलहटी में भी पाषाण से निर्मित मन्दिरों का दर्शन किया और गुफाओं का अवलोकन भी किया और शान्ति के स्थान रूप उन गुफाओं में ध्यान, सामायिक करके आनन्द का अनुभव किया।

पूण्डी दर्शन : फिर तिरुमलै से तच्चूर, आरनी होते हुए पूण्डी के प्राचीन मन्दिरों का दर्शन किया।

करैंदै यात्रा : पश्चात् चेय्यार से करैंदै गये। जहाँ पर अकलंक देव ने शास्त्रार्थ किया था वहाँ के प्राचीन एवं विशाल मन्दिर का दर्शन किया।

तिरुपत्तीकुण्डरम् दर्शन : फिर तिरुपणमूर, वेम्पाक्कम्, कांचीपुरम् गाँवों के मन्दिरों के दर्शन हुए कांचीपुरम् में तिरुपत्तिकुण्डरम् क्षेत्र का दर्शन किया। जहाँ के विशाल मन्दिर में समन्तभद्राचार्य ने दीक्षा धारण की थी और वामनाचार्य द्वारा मेरुमंदर पुराण भी यहीं पर लिखा गया था ऐसी उत्तम जगह का भी मुनिश्री ने दर्शन किया।

चेन्नै यात्रा (उपसर्ग बना उपहार): फिर मद्रास समाज के निवेदन पर तिरुवल्लूर नगर से होते हुए मुनिश्री का ससंघ विहार मद्रास नगर की ओर हुआ। बीच रास्ते में कोई गुण्डे लोग खुली तलवार लेकर उपसर्ग करने आये लेकिन महाराजजी के पुण्य उदय से पुलिस अचानक मानो देवों ने पुलिस का रूप लेकर ने सुरक्षा कर दी। मद्रास में खण्डेलवाल भवन के दिगम्बर जैन मन्दिर में रुके थे और प्रतिदिन चन्द्रप्रभु मन्दिर दर्शन करने सुब्रामन्यम् स्ट्रीट जाते थे।

महावीर जयन्ती रथ उत्सव : मद्रास में महावीर जयन्ती का कार्यक्रम एवं मुनिश्री का 8वाँ दीक्षा दिवस अपार जन समूह के साथ श्री जी के रथ उत्सवपूर्वक मुनिश्री के ससंघ सान्निध्य में मनाया गया। सैकड़ों पुलिस भी सुरक्षा के लिए लगाई गयी थी। डी.जी.पी. श्री पालनजी परिवार सहित दर्शन को आये थे। करीब ग्यारह दिन के प्रवास में प्रतिदिन प्रवचन मालाओं के रूप में धर्म की महती प्रभावना हुई।

मंत्र का प्रभाव : मद्रास से पाण्डीचेरी की ओर विहार करते समय एक नगर में दिगम्बर अवस्था में विहार करने के लिए कुछ लोगों ने रुकावट लाई लेकिन स्थानकवासी धर्मशाला में मुनिश्री ने दो वीतराग मंत्रों की जाप दी इतने मात्र में पुण्य बढ़ा और विरोधी लोग शांत हो गये और आगे विहार हो गया।

चेन्नै से तिरुनरुमकुण्डरम् क्षेत्र दर्शन : फिर मुनिश्री पाण्डिचेरी

लोगों के अनेक बार किये गये निवेदन पर तिण्डीवनम्, विलुपुरम् होते हुए तिरुनरुमकुण्डरम् क्षेत्र गये। वहाँ गुफा के अन्दर चट्टान में ही उकेरी गयीं श्री पार्श्वनाथ भगवान की प्रतिमा का दर्शन किया फिर और भी वेदियों का दर्शन कर एवं गुफायें शिला, शय्यायें भी देखीं।

यण्णायरम् मलै दर्शन : फिर मुनिश्री ने यण्णायरम् पर्वत का दर्शन किया। जहाँ पर आठ हजार मुनियों ने तप किया था। उस पर्वत की गुफाएँ, शय्याएँ, व प्रतिमाओं के दर्शन कर एवं रात्रि में वहीं विश्राम करके प्रातः काल पेरनी गाँव स्थित मंदिर के दर्शन किये। फिर वहाँ से आलग्राम गये वहाँ जिन मन्दिर का दर्शन किया। यहाँ पर कुछ दिन का वास्तव्य रहा।

मेलचित्तामूर दर्शन : आलग्राम से विहार करके पेरमण्डूर गाँव के मन्दिर दर्शन करते हुए मेलचित्तामूर गये। वहाँ पर बड़े मन्दिर में स्थित पार्श्वनाथ भगवान का दर्शन किया। एक समय जब तमिलनाडु के पूर्वजों ने समुद्र का पानी ऊपर बढ़ने से समुद्र के किनारे स्थित मैलापुरम् नगर पानी में डूबने लगा तब वहाँ की प्रतिमा को ले आकर यहाँ पर स्थापित कर दिया था। ऐसी उस नेमिनाथ प्रभु की प्रतिमा का भी दर्शन कर पाण्डिचेरी की ओर विहार किया।

पाण्डिचेरी की धर्म प्रभावना : पाण्डिचेरी में प्रवेश कर वहाँ की विशेष भक्ति से वहाँ कुछ दिनों (करीब 17 दिन) ठहरकर प्रवचनों से प्रभावना की तथा आचार्य ज्ञानसागर दि. जैन पाठशाला खुलवाई थी। मुनिश्री के प्रवचनों की प्रभावना सुनकर कुछ अजैन (नास्तिक) विरोधी लोगों ने काली ध्वजा दिखाने की धमकी दी थी। मुनिश्री के साथ तो राज्य शासन की ओर से पुलिस व्यवस्था तगड़ी रखी गई थी। इसलिए उन विरोधियों के आने पर पुलिस उन्हें अरैस्ट कर गाड़ियों में ले गई, और मुनिश्री की चर्या यथावत् चलती रही। ऐसे समय पाण्डिचेरी में दि. श्रावकों के करीब सवा सौ घर थे। 2 मन्दिर 1 चैत्यालय था। पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर भारती स्ट्रीट से श्रावकों

के घर तक मुनिश्री की आहार चर्या होती रही। प्रतिदिन प्रातः समुद्र के किनारे आदि एकान्त स्थान को जाते थे । एक दिन राजभवन का अवलोकन करते हुए भी गुजरे थे।

वर्षायोग के लिए पोन्नूरमलै (सन् 1995) : पाण्डीचेरी के भक्तों ने वर्षायोग हेतु बहुत निवदेन किया फिर भी पाण्डिचेरी से विहार करके मुनिश्री ससंघ उप्युवेलूर, पेराऊर, तिण्डीवनम्, वेल्लिमेडपेटै, गूडलूर, बंधवासी, सातमंगलम् आदि गाँव से विहार करते हुए कुन्दकुन्दाचार्य की तपोस्थली पोन्नूरमलै की कमेटी के लोगों द्वारा वर्षायोग के निवेदन पर कुन्दकुन्दाचार्य की तपोस्थली पोन्नूरमलै क्षेत्र पर्वत के परिसर में सन् 1995 में वर्षायोग स्थापित किया। पाण्डिचेरी, सेलम के लोग मुनिश्री के चरणों में वहीं पर ठहरकर के आहारादि द्वारा वैय्यावृत्य करने लगे। वर्षायोग में सर्वार्थसिद्धि एवं इष्टोपदेश का स्वाध्याय हुआ।

वर्षायोग में कल्पद्रुम विधान हेतु पात्र चयन : कल्पद्रुम महामण्डल विधान के लिए श्रावकों ने निवेदन किया। जिसका पात्र चयन कार्यक्रम रक्षा-बन्धन पर्व के दिन रखा गया था और उसी दिन तिरुमलै के पास गाँव में भूगर्भ से प्राप्त भगवान महावीर प्रतिमा को डी.जी.पी के पिताजी स्वर्णभद्र नैनार कार में विराजमान कर सुरक्षित लेकर आये। उसी के अतिशय से बोलियाँ भी बहुत उत्तम रीति से सम्पन्न हुई। मुनिभक्त श्रीमान् सोहनलाल जी कोठारी सेलम वाले चक्रवर्ती बने। पूरे चातुर्मास में रविवार को पाण्डिचेरी, सेलम, मद्रास आदि जगह-जगह से भारी संख्या में जनता आती थी।

तमिल का इतिहास : तमिलनाडु के लोग भी, जिन्हें समण (नैनार) कहते हैं, प्रतिदिन ये दर्शन को आते थे। आज भी करीब 108 गाँव में नैनार जैन समण लोग निवास करते हैं। तमिल भाषा बोलते हैं, कोई-कोई इंग्लिश बोलते, कोई हिन्दी बोलने वाले भी मिल जाते हैं। उन सबके निवास स्थान पाषाण निर्मित मंदिर के समीप ही रहते हैं। आज भी प्रायः उनके ग्राम के

निकट स्थित पर्वतों में गुफायें, कंदरायें बनी हुयी हैं। गुफा में मुनियों के लिए लेटने की पाषाण में ही अनेक शय्याएँ एवं तकिया तथा कई जगह तो आचार्यों के बैठने हेतु आसन और ऊपर स्थान पर भगवान की प्रतिमायें भी पाषाण में ही उकेरी हुई हैं। जिसको कोई विलग नहीं कर सकते ये सभी धरोहर उसी समय की है जब 2000 वर्ष पहले उत्तरभारत में अकाल (दुर्भिक्ष) पड़ा था और आचार्य भद्रबाहु स्वामी का 24 हजार मुनियों का संघ था, उसमें से श्रुतकेवली, भद्रबाहु स्वामी के साथ विशाख मुनि आदि करीब 12 हजार मुनि दक्षिण भारत आये थे और श्रवणबेलगोला में भद्रबाहुस्वामी ने अपनी सल्लेखना का समय नजदीक जानकर अपने प्रमुख शिष्य जो ग्यारह अंग दश पूर्व के धारी थे ऐसे विशाख मुनि को आचार्य पद दिया था और चोल, पाण्ड, पल्लव जैन राजाओं के निवेदन से तमिलनाडु की ओर विहार करने हेतु विशाखाचार्य के साथ 12 हजार मुनियों को आज्ञा प्रदान की थी। (आज भी शिलालेख मिलता है कि विशाखाचार्य ने तिरुचि नगर से तमिलनाडु में ससंघ प्रवेश किया था) उन मुनियों ने राजाओं के द्वारा व्यवस्थित की गयीं उन गुफाओं में ध्यान किया था। उन मुनियों की तपस्या से पवित्र ये गुफाएँ तिरुवन्नामलै के पास वलदुराम्कुण्डरम्, सिञ्चीमलै (तिरुनादरकुण्डरम्), तिरुनरुम्कुण्डरम्, यण्णायिरम्मलै, मदुरै आदि के पास स्थित हैं ऐसे सैकड़ों पर्वत हैं जहाँ ये सब देखने को मिलती हैं। इससे मालूम पड़ता है कि बारह हजार मुनि यहाँ रहे होंगे तो जैन कितने रहे होंगे; कहते हैं उस काल में यहाँ 80 प्रतिशत जैन थे। बाद में अन्य मतवालम्बियों के द्वारा बाधित होने से अधिकतर जैन लोग लिंगायत आदि मतों में परिवर्तित हो गये। लेकिन अभी भी बहुत कुछ परिवार सच्चे श्रमण नैनार रूप से जैन धर्म का पालन करते हुए साधु संघों की सेवा कर अणुव्रत व प्रतिमा आदि के व्रत धारणकर के दीक्षा भी लेकर मोक्षमार्ग पर अग्रसर हो रहे हैं।

पोन्नूरमलै की महिमा : जहाँ पर कहते हैं कि आचार्य कुन्दकुन्द देव

ने समयसार आदि 84 पाहुड़ और तिरुकुरल की रचना की थी। आज भी एलाचार्य के नाम से चरण पादुकायें पहाड़ के ऊपर दर्शित हैं। उसके आस-पास दो-तीन गुफाएँ बनी हुई हैं। जहाँ पर साधुजन आज भी ध्यानादि कर सकते हैं। तलहटी में भी मंदिर हैं। ऐसा है पोन्नूरमलै। मुनिश्री आर्जवसागरजी महाराज ने ससंघ जहाँ पर तमिलनाडु यात्रा में सन् 1995 में प्रथमबार वर्षायोग किया था।

विशाल महोत्सव रूप में कल्पद्रुम विधान : कल्पद्रुम विधान में 250 फुट विशाल पण्डाल लगा था। 40 प्रतिमायें प्रतिष्ठित की गयी थीं। समवसरण की रचना हुई थी। यह मण्डल विधान जो 13 दिनों तक चलता रहा इसमें सभी तमिलनाडु और उत्तर भारत के श्रावकों ने मिल-जुल करके अधिक से अधिक उपस्थिति के साथ समवसरण के चारों तरफ बैठकर के समवसरण की पूजनकर एकता के साथ धर्म प्रभावना से सम्पन्न किया था। प्रतिष्ठाचार्य सिंहचन्द्रशास्त्री (मद्रास) थे और श्रेयांशकुमार शास्त्री ने कल्पद्रुम विधान में समवसरण के ऊपर स्तुति संस्कृत में बनायी थी। मुनिश्री ने भी कल्पद्रुम विधान पर कविता बनायी थी और मुनिश्री ने अपने प्रवचन में संकेत दिया कि इस विधान से जो बचत रूप लाभ होगा उससे यहीं पर एक विशाल समवसरण निर्मित होना चाहिए। तब श्रीमान् सोहनलालजी सेलम एवं श्रीमान बुधराजजी कासलीवाल पाण्डिचेरी ने गुरुवर के समक्ष संकल्प लिया था कि हम जरूर यहाँ पर समवसरण का निर्माण करेंगे। करीब एक वर्ष के अन्तर्गत समवसरण का निर्माण हो गया। प्रथम वर्षायोग के अन्त में पिच्छि परिवर्तन में गुरुवर मुनिश्री आर्जवसागरजी की पुरानी पिच्छी लेने का सौभाग्य श्री भानुकुमार दम्पत्ति बंधवासी को मिला।

नीलगिरि मलै (पोन्नूरमलै) पर महावीर बिम्ब स्थापना : वर्षायोग के बाद अष्टाह्निका की सम्पूर्णता पर भूगर्भ से प्राप्त हरे पाषाण वाली प्रतिमा प्रातिहार्य से युक्त महावीर का चिन्ह अंकित कर लघु पंचकल्याणक पूर्वक

ऊपर पहाड़ी पर स्थापना की गई। कार्यक्रम में डी.जी.पी. श्रीपालन भी आये थे। क्षुल्लक सोमकीर्ति (देशभूषण महाराज के शिष्य चित्तामूर के मठ से आकर) जिन्होंने मुनिश्री के ससंघ में रहने का निवेदन किया था उन्हें गुरुवर मुनिश्री आर्जवसागरजी ने स्थितिकरण करके अपने संघ परम्परा के अनुसार (धवल वस्त्र दिलाकर प्रायश्चित्त देकर) अपने संघ में ले लिया।

मुनिश्री से तमिल समाज का नम्र निवेदन : मुनिश्री आर्जवसागरजी का भाव कर्नाटक जाने का हुआ लेकिन स्वर्णभद्र नैनार (डी.जी.पी. श्रीपालन के पिताजी) ने और तमिल जैन समाज के भक्तगणों ने तथा पाण्डिचेरी के मारवाड़ी लोगों ने भी निवेदन किया कि तमिलनाडु देश में मुनियों का विहार बहुत कम होता है इसलिए महाराजजी आपका विहार छोटे-छोटे गाँव में भी हो। तमिलनाडु की उत्तरदिशा में नैनार श्रावकगण ज्यादा रहते हैं।

नैनार क्यों कहते हैं? : यहाँ के जैनों को, 'न' मतलब नहीं, 'ऐन' मतलब पाप अर्थात् जो पाप नहीं करते अतः उन्हें नैनार बोलते हैं। यहाँ के दिगम्बर जैन नैनार लोग बहुत आचार-विचार और सादगी से रहते हैं। प्रायः उनके घर में कुएँ का पानी उपलब्ध रहता है। सभी लोग छना पानी पीते हैं, रात में भोजन नहीं करते। रात्रि भोजन त्याग को यहाँ के लोग **इरवु उन्नामै** या **राजल त्याग** ऐसा बोलते हैं अर्थात् रात्रि में कुछ नहीं खाते या दूध फल की बात तो दूर है जल भी नहीं पीते इसी का नाम राजल त्याग है। यहाँ तो जन्में हुए बालक को मातायें रात्रि में दूध भी नहीं पिलाया करती थीं। क्योंकि रात्रि में दूध पिलाने से रात्रि भोजन का दोष लगेगा इसलिए शाम को ही पिला देती थीं। ऐसे देश में मुनिश्री आपका विहार अत्यंत आवश्यक है। कुछ सरागी पूजक मिथ्यादृष्टियों में से अगर कोई एक-दो लोग भी वीतराग भगवान के अनन्य भक्त बनकर सम्यग्दृष्टि बन जायेंगे तो उनसे एक-एक बढ़ते-बढ़ते हजारों लोग भी सम्यग्दृष्टि बन सकते हैं। उत्तर भारत में तो बहुत सारे मुनि महाराज का भ्रमण चल रहा है। लेकिन तमिलनाडु में आपके अलावा कोई नहीं है।

ऐसा निवेदन किये जाने पर मुनिश्री ने यहाँ विहार करने का मन बना लिया।

पोन्नूरमलै से तमिलग्रामों में भ्रमण का भाव : गाँव-गाँव में पूजा, विधान, धार्मिक पाठशालायें और सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान, सम्यक्-चारित्र आदि विषयों पर प्रवचन देने के उद्देश्य से ससंघ मंगल विहार किया।

मुनिश्री ने सीखी तमिल भाषा : तमिलभाषा पर अधिकार हासिल करने का प्रयास भी मुनिवर ने प्रारम्भ किया और प्रवचन तथा काव्य रचनाओं आदि में सफलता मिलने लगी।

गाँव-गाँव में मण्डल विधान व पाठशाला स्थापना : सरल भाषा में प्रवचन, पूजा-विधान का प्रारम्भ पोन्नूरमलै से 5 कि.मी. दूर स्थित उत्तर दिशा वाले एरम्बूर गाँव से हुआ। फिर आयलवाड़ी, चेय्यार, तेनसेन्दमंगलम्, बंधवासी, वेंगुणं, विरदूर, किलविल्लिवनम्, निलयांगुलम्, नल्लूर और मुदलूर आदि ग्रामों में मण्डल-विधान पूजायें श्रावकगण; मुनिसंघ के आशीर्वाद व प्रेरणा से स्वहस्त से उत्साहपूर्वक करने में अनुरक्त होने लगे और इसी बीच मुनिश्री ने एरमलूर गाँव से अनन्तमंगलम् क्षेत्र का भी दर्शन किया। इसके बाद मुदलूर गाँव से धार्मिक पाठशालाएँ महावीर आगम पाठशाला के नाम से प्रारम्भ की गई। जो किलसात मंगलम्, बंधवासी, पोन्नूर, एरम्बूर, आयलवाड़ी, कल्लपुलयूर, अरगाऊर, तेन्नात्तूर, गूणंवाडी, एयिल, ओदलवाड़ी, कुरकोट्टै, तच्चूर, आरनी (पुदुकामूर), सेवूर, नल्लवन् पालयम्, नल्लूर, किलविल्लिवनम्, निलयांगुलम्, सोमासपाड़ी, मलपाम्बाड़ी, तच्चाम्बाड़ी, कांचीपुरम्, कन्नलम्, वलत्ति, काट्टुमलैयनूर, मेलमलैयनूर, तायनूर आदि गाँव में भी पाठशालाएं प्रारम्भ हुईं। इसमें सम्यग्दर्शन अर्थात् वीतराग मात्र को पूजने की प्रतिज्ञा के साथ मुनिश्री द्वारा व्रत उपदेश, मंत्र उपदेश, धर्म उपदेश द्वारा धर्म संस्कार पूर्वक बच्चों और बड़ों को सच्चे जैन कहलाने का संस्कार प्राप्त होता था।

चैयार में पंचकल्याणक एवं पाठशाला : सन् 1996 का

ग्रीष्मकालीन में चैयार नगर में प्रवास रहा। वहाँ धार्मिक पाठशाला भी खोली। फिर नये मन्दिर हेतु पंचकल्याणक महोत्सव सम्यक्त्व रीति से 26.06.96 तारीख से 30.06.96 तारीख तक पांच दिन का कार्यक्रम सानन्द सम्पन्न हुआ। जिसमें तीन वेदियों की एवं मानस्तम्भ की प्रतिमायें मुनिश्री आर्जवसागरजी महाराज के कर कमलों से एवं प्रतिष्ठाचार्य सिंहचन्द्र शास्त्री के निर्देशन में प्रतिष्ठा करवाकर उनके ही मंगल सान्निध्य में वेदी प्रतिष्ठा रूप से प्रतिमायें स्थापित की गईं। विशाल पण्डाल में मुनिश्री की प्रवचनमालायें चलती थीं एवं पाठशाला के बच्चे रात्रि के समय सांस्कृतिक कार्यक्रम करते थे तमिलनाडु वालों को मुनिश्री के सान्निध्य के प्रथम रूप से इस पंचकल्याणक से उत्तम विधि-विधान का ज्ञान और पंचकल्याणक में मुनियों की आवश्यकता क्यों है? इस बात का भी ज्ञान हुआ। पहली बार मुनिमहाराज के सान्निध्य में पंचकल्याणक का दृश्य देखने को मिला। फिर इसी कार्यक्रम के उपरान्त वेल्लई गाँव में भी मुनिश्री के ही सान्निध्य में लघु पंचकल्याणक सम्पन्न हुआ जिसमें पं. भरत (सी.) शास्त्री भी उपस्थित थे। यहीं पर दूसरे जाति के एक वकील साहब सी. चिन्नेदुरै ने गुरुवर के सामने माँस इत्यादि त्याग किया। गुरु पर बहुत कवितायें भी इन्होंने लिखीं।

पोन्नूरमलै में वर्षायोग : सन् 1996 में पोन्नूरमलै के लोगों के निवेदन पर दूसरे वर्षायोग के लिए मुनिश्री आर्जवसागरजी ससंघ का पदार्पण पोन्नूरमलै में हुआ। भव्यों द्वारा कलश स्थापना व भक्तिपाठ आदि द्वारा वर्षायोग का प्रतिष्ठापन कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। वर्षायोग में मुनिश्री ने कुन्दकुन्दाचार्य रचित समयसार शास्त्र का स्वाध्याय किया। वर्षायोग में प्रति रविवार को व्यक्तिगत या एक गाँव की ओर से अलग-अलग विधान-पूजायें सम्पन्न करायी गयीं जिसमें पाठशालाओं के बच्चे भी आते थे। मुनिश्री के प्रवचन के पश्चात् जैनागम से 20 प्रश्न पूछे जाते थे, उत्तर देने वालों को समाज द्वारा पुरस्कारित भी किया जाता था। इससे अबाल वृद्ध मुनिश्री के प्रवचन को

ध्यान से सुनते थे और बच्चों का भी सम्यग्ज्ञान वृद्धिंगत होता था।

सेवादल व महिला मण्डल प्रारम्भ : इसी वर्षायोग में पुरुषों के लिए श्रुतकेवली भद्रबाहु सेवादल का निर्माण हुआ, सम्यग्दृष्टि लोग इसमें जुड़े। महिलाओं के लिए त्रिशलादेवी महिला मण्डल बनाया गया। नाम बहुत ही सार्थक रखा गया क्योंकि त्रिशलादेवी माँ जैसे बालक महावीर को संस्कार देती थीं वेसे ही ये मातायें भी अपने बच्चों को संस्कारित करें। इस पावन भावना से त्रिशलादेवी महिला मण्डल नाम दिया गया।

वर्षायोग में श्रावक साधना संस्कार शिविर प्रारम्भ : इसी सन् 1996 के वर्षायोग के दशलक्षण पर्व में श्रावक साधना संस्कार शिविर भी लगाया गया। जिसमें बहुत संख्या में श्रावक लोग पोन्नूरमलै में ही ठहरकर 10 दिनों तक नियम-संयम के साथ धर्म ध्यानस्थ रहते थे। जिसमें सुबह सुप्रभात स्तोत्र, सामायिक, जाप, अभिषेक, पूजन, दस धर्म पर मुनिश्री के प्रवचन होते थे। फिर मुनिश्री की चर्या के उपरान्त कुएँ के ही पानी से शुद्ध मर्यादा से बने हुये आहार को श्रावकगण ग्रहण करते थे फिर मध्यान्ह में सामायिक, जाप, तत्त्वार्थ सूत्र पर मुनिश्री के प्रवचन होते थे। सायं में प्रतिक्रमण, आरती, स्वाध्याय, जाप इत्यादि कार्यक्रमों के साथ यह शिविर का कार्यक्रम तमिलनाडु में पहली बार दशलक्षण व्रतों में सानन्द सम्पन्न हुआ।

दशलक्षण के अन्त में तीन दिवसीय धार्मिक सभा का कार्यक्रम : दशलक्षण पर्व के अन्त में 27, 28 और 29 सितंबर 1996 को तीन दिवसीय महोत्सव मनाया गया। जिसमें पहले दिन अभिषेक, पूजन आदि के पश्चात् वक्तव्यों में **'तमिलनाडु में जैन इतिहास एवं मुनियों की ध्यान साधना'** के सम्बन्ध में पण्डित धन्यकुमार पोन्नूर वालों ने और **'मुनियों से तमिलनाडु में अपूर्व लाभ'** के बारे में श्री देवदास जैन वंदवासी वालों ने एवं **'तमिलनाडु में दिगम्बर मुनियों की देन'** के बारे में श्री पोन्नादन जैन चेय्यार वालों ने अपने मन्तव्य रखे। फिर मुनिश्री का प्रवचन हुआ। दूसरे दिन के वक्तव्य में आचार्य

कुन्दकुन्द के साहित्य पर रखा गया था। जिसमें '**आचार्य कुन्दकुन्द के शास्त्र में निश्चय, व्यवहार**' के बारे में कुमारी विजयलक्ष्मी जैन चेय्यार ने '**आचार्य कुन्दकुन्द के शास्त्रों में अनेकान्त का विस्तार**' के बारे में श्री पार्श्वनादन् जैन चेय्यार वालों ने, '**आचार्य कुन्दकुन्द की साधना एवं उनके शास्त्रों का इतिहास**' के बारे में श्रीमती कांजना जैन कोरकोट्टै वालों ने '**आचार्य कुन्दकुन्द के साहित्य में तीन लिंग**' के बारे में कुमारी वाणी श्री जैन चेय्यार वालों ने वक्तव्य दिये। तीसरे दिन '**अहिंसा एवं शाकाहार सम्मेलन**' के दिन '**अहिंसा का माहात्म्य**' के बारे में श्री इन्द्रजीत (चिन्नदुरै) चेय्यार वालों ने, ये इन्द्रजीत नामक व्यक्ति जैन नहीं थे फिर भी मुनिश्री आर्जवसागर जी के उपदेश से इन्हें मांस आदि का त्याग के साथ जैन धर्म में रुचि जाग उठी थी और अहिंसा पर मार्मिक वक्तव्य दिया। फिर '**महावीर की अहिंसा**' के बारे में श्रीमती पद्मा महेन्द्रदास वंदवासी ने वक्तव्य दिया एवं धार्मिक पाठशालाओं के बच्चों ने अपना धार्मिक नाटक आदि कार्यक्रम दिखाया। अन्त में मुनिश्री का प्रवचन एवं श्रीजी का विमानोत्सव भी किया गया।

श्रुतकेवली पत्रिका प्रारंभ : मुनिश्री आर्जवसागरजी की प्रेरणा एवं आशीर्वाद से सन् 1996 नवम्बर माह से श्रुतकेवली मासिक पत्रिका प्रारम्भ हुई। इसका नाम भी सार्थक रखा गया। श्रुतकेवली भद्रबाहुस्वामी के शिष्य श्री विशाखाचार्य से ही तमिलनाडु में धर्म की प्रभावना हुई। अतः इसी उद्देश्य से इसका गुरु मुख से नाम श्रुतकेवली पत्रिका रखा गया। यह पत्रिका शादी-विवाह की चर्चा, मुनि निंदा, लौकिक प्रचार-प्रसार आदि चर्चाओं से दूर रखी गयी और सम्यक्त्व को पुष्ट करने वाली प्रथम पत्रिका मानी गयी।

वर्षायोग निष्ठापन : वर्षायोग के अन्त में दीपावली के दिन वर्षायोग निष्ठापन हुआ। फिर पिच्छी परिवर्तन के समय मुनिश्री आर्जवसागरजी की पुरानी पिच्छी लेने का सौभाग्य श्री धर्मराज जैन दम्पत्ति, वेलूर को प्राप्त हुआ।

विशाखाचार्य तपोनिलय एवं तपोगिरि की स्थापना : मुनिश्री आर्जवसागरजी ने आशीर्वाद एवं प्रेरणा दी कि सम्यग्दृष्टि लोगों के लिए एक स्थान ऐसा होना चाहिए जहाँ पर सब मिलकर धर्म कार्य कर सकें और ऐसा ही हुआ । पोन्नूरमलै से निकट ही एक बहुत बड़ा स्थान समाज ने खरीद लिया और छोटी सी पहाड़ी के निकट वाले उस स्थान का गुरुमुख से नाम प्राप्त कर श्री विशाखाचार्य तपोनिलय के नाम से आश्रम की स्थापना की गई जहाँ गुरुकुल, श्रुत भण्डार, ध्यान मण्डप, गौशाला और विद्यालय आदि बनाये गये और तपोनिलय के निकट स्थित छोटी पहाड़ी की गुफा में जहाँ मुनिश्री आर्जवसागरजी मध्याह्न की सामायिक हेतु विराजित होते थे वहाँ श्री श्रुतकेवली भद्रबाहु स्वामी व श्री विशाखाचार्य और श्री कुन्दकुन्दाचार्य के चरणों को पाषाण में अंकित कर इस पर्वत का ''श्री विशाखाचार्य तपोगिरि'' ऐसा नामकरण मुनिश्री आर्जवसागर गुरुवर से ही किया गया।

धार्मिक पाठशाला सेंटर : तपोनिलय में श्री महावीर आगम पाठशाला का सेंटर एवं श्रुतकेवली भद्रबाहु सेवादल और त्रिशलादेवी महिला मण्डल का भी सेंटर बनाया गया।

गाँव-गाँव में पाठशाला : फिर चातुर्मास के बाद मुनिश्री वहाँ से विहार करके सोलै-अरुगाऊर गये वहाँ पर पाठशाला प्रारम्भ की बच्चों को व्रत उपदेश दिया और सम्मेद शिखर, भक्तामर विधान हुआ। फिर वहाँ से विहार करके तेन्नात्तूर, कल्लपुलियूर, कुरकोट्टै गये वहाँ पर भी पाठशाला एवं विधान, प्रवचन आदि हुये और श्रुतकेवली भद्रबाहु सेवादल वालों के लिए 'सम्यग्दर्शन' इस विषय पर शिविर भी लगा।

सेञ्जी क्षेत्र दर्शन : मुनिश्री ने ससंघ वीरणामूर, अगलूर, पेरुमपोगै होते हुए सेञ्जी (तिरुनादर कुण्डरम्) दर्शन किया। यहाँ पहाड़ी पर एक विशाल चट्टान पर चौबीसी तीर्थकरों की प्रतिमायें अष्टप्रातिहार्य सहित उकेरी गयी हैं। महाराज जी यहाँ के दर्शन करके बहुत आनन्दित हुये। फिर वहाँ से

कन्नलम्, कल्लपुलियूर, चित्त-अरगाऊर, झंगमपूण्डी आदि गाँव से होते हुए धर्म प्रभावना करते हुए पोन्नूरमलै आये। वहाँ पर तपोनिलय में दि. 13.2.97 को नये जिनालय हेतु शिलान्यास व भूमि पूजा की गई।

एरम्बूर में पंचकल्याणक : मुनिश्री आर्जवसागरजी ससंघ ऐरम्बूर पधारे। बहुत बार निवेदन करने के बाद मुनिश्री से कुछ वर्षों से रखी हुई भ. आदिनाथ की मूर्ति को पंचकल्याणक करवाकर गर्भगृह में स्थापित करने हेतु प्रतिष्ठा के लिए अनुमति प्राप्त हुई। फिर 17.2.97 से 21.2.97 तक पाँच दिन के लिए पंचकल्याणक सम्यक्त्व रीति से बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। जिसमें क्षु. सुभद्रसागरजी की ऐलक दीक्षा भी हुई। पंचकल्याणक में रोज मुनिश्री का प्रवचन तमिलभाषा में हुआ करता था और रात्रि में पाठशाला के बच्चों का सांस्कृतिक कार्यक्रम एवं विद्वानों के वक्तव्य भी होते थे। पुनः मुनिश्री पोन्नूरमलै आये वहाँ पर सेवादल के लोगों के लिए कार्यक्रम रखा गया। उसी दिन बेंगलूर से बहुत लोग मुनिश्रीके दर्शनार्थ पधारे थे। मुनिश्री ने उनके लिए अलग से हिन्दी व कन्नड़ में प्रवचन दिया और उन लोगों ने बेंगलूर आने के लिए निवेदन किया। फिर मुनिश्री वहाँ से वलत्ती गये। पहाड़ी पर नल्ज्ञान कुण्डरम् में पार्श्वनाथ की मूर्ति (चट्टान में उकेरी हुई) प्रतिमा का दर्शन किया फिर 2.3.97 तारीख को पहाड़ी पर पार्श्वनाथ भगवान का अभिषेक किया गया। मुनिश्री का प्रवचन हुआ। दोपहर में सम्मेदशिखर विधान हुआ। फिर मुनिश्री द्वारा संयोजित भक्तामर व्रत विधान पुस्तक का विमोचन किया गया। समाज वालों ने सच्चे गुरु मिलते ही अपने बच्चों को धर्म संस्कार देने हेतु व्रत उपदेश के माध्यम से पाठशाला की शुरुआत करवाई। वलत्ती से कन्नलम गये। वहाँ पर भक्तामर विधान हुआ वहाँ से मेलमलयनूर गये, वहाँ पर भी कई विधान हुये। तायनूर गये, वहाँ पर भी धार्मिक पाठशाला की स्थापना की गयी। एयिल गये, वहाँ भी बच्चों को संस्कार के लिए पाठशाला का प्रारम्भ हुआ। वहाँ से द्वितीय बार तिरुमलै पर पदार्पण हुआ।

तिरूमलै में अष्टान्हिका पर्व : तिरुमलै क्षेत्र पर पहाड़ी के ऊपर पाण्डवों के द्वारा बनाई गई खड्गासन में विशाल नेमिनाथ भगवान की मूर्ति स्थापित है। पहाड़ी के थोड़े ऊपर कुछ चरण एवं प्रतिमायें भी हैं और नीचे के मन्दिरों में बहुत प्राचीन प्रतिमायें विराजित हैं। गुफाओं और कंदराओं आदि में जाकर सब जगह मुनिश्री ने दर्शन किया। फिर फाल्गुन अष्टाह्निका पर्व को दि. 15.3.97 से 24.3.97 तक यहीं पर ठहरकर मनाया गया। नन्दीश्वर विधान किया गया और मुनिश्री के मुखारबिन्द से छहढाला ग्रन्थ सबको तमिल भाषा में समझाया पढ़ाया गया। (जो छोटा समयसार कहलाता है) और विधान के अन्तिम दिन विमानोत्सव एवं नेमिनाथ का मस्तकाभिषेक किया गया। इस कार्यक्रम में अन्य गाँव के लोग और महावीर आगम पाठशाला के सभी बच्चे भी आये थे। फिर वहाँ से सदुप्पेरीपालयम् होते हुए तच्चूर आये। आगवानी करने पूरी समाज आयी थी। फिर कुछ दिन ठहरकर धर्मप्रभावना की और पाठशाला की स्थापना के साथ विधान पूजायें आदि हुयीं। प्रवचन के माध्यम से सबको सम्यग्दर्शन रूपी रत्न (वीतराग मात्र पर श्रद्धा का नियम) भी दिया गया।

सेवूरग्राम में महावीर जयन्ती : तच्चूर से सेवूर गाँव की ओर मुनिश्री ने ससंघ विहार किया। गाँव के लोगों ने बहुत उत्साह से मुनि श्री की आगवानी की। इस गाँव में भी मुनिश्री ने धार्मिक पाठशाला के माध्यम से बच्चों में धर्म संस्कार की नींव डाली। यहीं पर महावीर जयन्ती एवं मुनिश्री का 10वाँ दीक्षा जयन्ती महोत्सव बहुत भक्ति के साथ मनाया गया।

पूण्डी क्षेत्र दर्शन : मुनिवर ने विहार करके पूण्डी क्षेत्र का दर्शन किया। फिर पुदुकामूर, आरनीपालयम, तच्चूर होते हुए ओदलवाड़ी आये। वहाँ पर धार्मिक पाठशाला खोली। यहीं पर अक्षय तृतीया पर्व भी ता. 9.5.97 को मनाया गया। ता. 10 व 11.5.97 को भद्रबाहु सेवादल के सदस्यों के बीच सम्यग्ज्ञान शिविर सम्पन्न हुआ और भक्तामर, सम्मेदशिखर जी आदि विधान

हुये। फिर वहाँ से विहार करके कोलप्पलूर, पेरणमल्लूर होते हुए आयलवाड़ी आये। वहाँ पर मुनिश्री ने पाठशाला के बच्चों के लिए भक्तामर स्तोत्र सिखाया और प्रवचन आदि के माध्यम से धर्मप्रभावना की।

फिर वहाँ से विहार करके बंधवासी नगर आये। यहाँ पर प्रतिदिन प्रवचन होता था और शंका समाधान भी करते थे और मण्डल-पूजायें भी की गयीं। फिर सेवादल के लोगों ने श्रुतपञ्चमी पर्व पोन्नूरमलै में मनाने के लिए निवेदन किया और आचार्य श्री विद्यासागर गुरुकुल की भी स्थापना रूप तैयारी हेतु भी प्रेरणा व आशीर्वाद प्राप्त किया। ता. 31.5.97 को महावीर आगम पाठशाला के बच्चों ने अपने धार्मिक नाटक एवं वक्तव्य बंधवासी नगर में प्रस्तुत किये जिसे देखकर बड़े-बुजुर्ग लोग भी आश्चर्य चकित हो गये। कुछ बड़े लोग प्रशंसा करते हुए बोले कि हम लोगों ने इतने साल से इन बच्चों को कुछ भी नहीं सिखा पाया लेकिन मुनिश्री ने दो साल में ही इन बच्चों को कितना अच्छा ज्ञानवान बना दिया। जिस विषय को हम जैसे बड़ी उम्र वाले लोग नहीं जानते उस विषय को ये बच्चे अच्छी तरह से जानते हैं। इसलिए मुनिश्री को कई साल और तमिलनाडु में रहना चाहिए ताकि धर्म की प्रभावना में और वृद्धि होती चली जाए, ऐसी भावना प्रकट की।

फिर मुनिश्री विहार करके किल्सातमंगलम् गये वहाँ पर महाकवि आचार्य श्री ज्ञानसागरजी का समाधि दिवस मनाया गया और वहाँ से पोन्नूरमलै गये।

आचार्य श्री विद्यासागर गुरुकुल स्थापना : पोन्नूरमलै में ता. 10.6.97 को श्रुतपञ्चमी पर्व मनाया गया और उसी दिन आचार्य श्री विद्यासागर गुरुकुल की शुरुआत की गयी। कुछ विद्यार्थियों को धोती-दुपट्टे में रखकर धार्मिक शिक्षा के साथ स्कूली शिक्षा भी प्रारम्भ की गयी।

कन्नलम् में चातुर्मास : पोन्नूरमलै से विहार करके मुनिश्री ससंघ कन्नलम् गाँव आये। पूर्व में कई बार किये गये समाज के निवेदन से ता.

19.7.97 को चातुर्मास कलश स्थापना की गई। स्थापना पर पाण्डिचेरी, मद्रास और सेलम से भी श्रावक लोग आये थे। वर्षायोग में मुनिश्री ने अपने संघ में समयसार शास्त्र का स्वाध्याय किया तथा श्रावकों के लिए दश भक्तियों एवं स्तोत्रों का अर्थ समझाया था। इस गाँव के एक अकेले मात्र वृषभदास जैन परिवार ने पूरा वर्षायोग सम्हालने का साहस किया था और वर्षायोग में किसी भी प्रकार की बोलियाँ नहीं होने दी क्योंकि बड़ी दुर्लभता से साधु मिले हैं इसलिए सभी तरह का पुण्य लाभ हमको मिले, ऐसी भावना थी।

ज्ञानातिशय गुफा में तीर्थोदय का प्रारम्भ एवं षोडसकारण व्रत : इसी वर्षायोग में मुनिश्री आर्जवसागरजी ने षोडसकारण पर्व में पहली बार एक आहार एक उपवास के साथ तीर्थोदय काव्य की रचना प्रारम्भ की। जिस काव्य का प्रारम्भ इसी कन्नलम् गाँव के जिनालय के परिसर से लगे हुए पर्वत की (ज्ञानातिशय) गुफा में प्रारम्भ हुआ। उपवास के दिन जो आहार चर्या को न जाने से बचत रूप समय मिलता था उस समय का उपयोग करके कवितायें बनाई थीं। रोज ज्ञानोदय छन्द के 15-20 पद्य बन जाते थे और उस गाँव के श्रेष्ठी श्रीमान् वृषभदास नागलक्ष्मी नैनार जैन परिवार की तीव्र भावना के पुण्य से षोडसकारण पर्व में मुनिश्री की एक आहार एक उपवास की साधना सानन्द सम्पन्न हुई, दशलक्षण पर्व में पूर्व वर्ष के वर्षायोग की संख्या से ज्यादा लोगों ने (व्रत, संयम पूर्वक) श्रावक साधना संस्कार शिविर में भाग लिया। इसमें आचार्यश्री विद्यासागरजी के पूर्व अवस्था के बड़े भाई महावीर जी भी सदलगा गाँव से आये। उन्होंने दशलक्षण में मुनिश्री के सान्निध्य में रत्नत्रय व्रत भी किया था। फिर अन्त में षोडसकारण विधान सम्पन्न हुआ। वर्षायोग के बीच-बीच में अनेक मण्डल विधान-पूजायें भी की गयी और अन्त में भक्तामर स्तोत्र का अखण्ड पाठ, णमोकार मंत्र का अखण्ड पाठ आदि किया गया। दीपावली को वर्षायोग का निष्ठापन कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

चातुर्मास में पिच्छि परिवर्तन : चातुर्मास के अन्त में ता. 2.11.97 को

पिच्छि परिवर्तन कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। जिसमें श्री नागराजन् जैन दम्पति बंधवासी को मुनिश्री की पुरानी पिच्छी मिली और कई अन्य लोगों ने भी ब्रह्मचर्य व्रत के साथ हाथ लगाकर नई पिच्छिका मुनिश्री को प्रदान की। उसी दिन से तीन दिन के लिये समवसरण विधान भी प्रारम्भ हुआ और इसी दिन श्री वृषभदास कन्नलम् दम्पत्ति ने अपनी ओर से पोन्नूरमलै के विशाखाचार्य तपोनिलय में ध्यान मण्डप व संत निवास बनाने की घोषणा की थी तथा चार महीने चौके आदि के माध्यम से वर्षायोग कराने का विशिष्ट पुण्य अर्जन करने वानी श्रीमती नागलक्ष्मी अम्मा ने श्रावक की पहली प्रतिमा भी धारण की थी।

मंगल विहार : चातुर्मास के उपरान्त मुनिश्री ससंघ विहार करते हुए मेलमलैयनूर गये। वहाँ पर समाज ने सर्वदोष प्रायश्चित्त विधान आदि की पूजायें की गई। फिर वलत्ती, कल्लपुलीयूर, तेन्नात्तूर, एरम्बूर आदि गाँव होते हुए पोन्नूरमलै आये। वहाँ पर ता. 23.11.97 को आचार्यश्री का विद्यासागरजी 25वाँ आचार्य पदारोहण दिवस बड़े भक्ति भाव से मनाया गया। मुनिश्री के ससंघ यही कुछ दिनों के वास्तव्य रहा।

विशाखाचार्य तपोनिलय उद्घाटन एवं ध्यान मण्डप शिलान्यास: मुनिश्री 108 आर्जवसागरजी महाराज के पावन सान्निध्य में ता. 18.1.98 को विशाखाचार्य तपोनिलय का उद्घाटन एवं ध्यान मण्डप के लिए शिलान्यास का कार्यक्रम किया गया। उसी अवधि में णमोकार मंत्र बैंक भी खोला गया जो अहिंसा की रक्षा के लिए और अपना पुण्य बढ़ाने के उद्देश्य से बनाया गया और अहिंसा फेडरेशन भी बनाया गया।

एरम्बूर में मानस्तम्भ प्रतिष्ठा : मुनिश्री विहार करके एरम्बूर गाँव आये। वहाँ पर मुनिश्री के आशीर्वाद से ही बने मानस्तम्भ में बिम्ब प्रतिष्ठा का कार्यक्रम ता. 6, 7 व 8.2.98 को तीन दिन का मनाया गया और समवसरण विधान भी किया गया। मानस्तम्भ में चारों दिशाओं की ओर प्रतिमायें स्थापित की गईं।

पाठशाला के माध्यम से धार्मिक संस्कार : श्रावकों द्वारा अनेक बार निवेदन किये जाने पर फिर वहाँ से मुनिश्री गमन कर गुनंबाड़ी, गोरकोट्टै, तेल्लार, गुडलूर, नल्लूर, यरमलूर, मुदलूर आदि गाँव गये। वहाँ पर पाठशालाओं के माध्यम से बच्चों के हृदय में धर्म का संस्कार दिया। फिर ता. 9.4.98 को महावीर जयन्ती एवं मुनिश्री का 11वाँ दीक्षा दिवस विशाखाचार्य तपोनिलय में मनाया गया।

तपोनिलय में औषधालय प्रारम्भ : जिन्होंने अपने गाँव (कन्नलम्) में स्वाश्रित होकर जिन मन्दिर का पंच कल्याणक एवं मुनिश्री आर्जवसागर जी का मंगल चातुर्मास करवाया था ऐसे शुभ अवसर पर वे ही श्रीमान् वृषभदास धर्मपत्नि नागलक्ष्मी दम्पत्ति एवं तत् पुत्र डॉ. जिनदास जैन व पुत्री श्रीमती जयन्ती परिवार वाले विशिष्ट सहयोगी बनकर विशाखाचार्य तपोनिलय में जिनालय के मूलनायक अजितनाथ भगवान व ध्यान मण्डप और ध्यान मण्डप में विशाखाचार्य की मूर्ति एवं एलाचार्य (कुन्दकुन्द)औषधालय निर्माण में पुण्यार्जक बने। इस औषधालय में निःशुल्क इलाज किया जाता है और आयुर्वेदिक दवाईयाँ ही दी जाती हैं।

चैय्यार में ग्रीष्मकालीन प्रवास : मुनिश्री का पोन्नूरमलै से विहार कर एरम्बूर होते हुए चैय्यार नगर में मंगल प्रवेश हुआ। यहाँ पर मुनिश्री का ग्रीष्मकालीन प्रवास रहा। ता. 25 से 29.4.98 तक पाँच दिन सम्यग्ज्ञान शिविर भी लगा जिसमें द्रव्यसंग्रह शास्त्र पर अर्थ समझाया गया था। बहुत लोगों ने (बड़े व युवा वर्ग ने) इस शिविर में भाग लिया । फिर ता. 29.4.98 को यहीं पर अक्षय तृतीया पर्व भी मनाया गया। वहाँ से विहार करके मुनिश्री करैन्दै, तिरूपणमूर पधारे। वहाँ पर भी धार्मिक पाठशालाएँ खोली गयीं। मण्डल विधान आदि भी किये गये। वहाँ से गुरु महाराज वेम्पाक्कम् गये यहाँ भी आगम पाठशाला शुरु करवायी एवं मण्डल विधान भी हुये।

आरपाक्कम् क्षेत्र दर्शन : वहाँ से मुनिश्री का आरपाक्कम् क्षेत्र दर्शन हेतु विहार हुआ। यह क्षेत्र बहुत शान्ति को देने वाला था। तीन दिन ठहरकर

मुनिश्री ने प्राचीन आदिनाथ प्रभु के दर्शन पूर्वक आत्मसाधना का लाभ लिया। फिर वहाँ से विहार करके कांचीपुरम् गये। वहाँ पर भी धार्मिक पाठशाला की शुरुआत की। फिर वहीं पर श्रुतपञ्चमी पर्व भी बड़े रूप से उल्लास पूर्वक मनाया गया।

विशाखाचार्य तपोनिलय में सिद्धचक्र विधान व चातुर्मास : मुनिश्री कांचीपुरम् विहार करके श्री विशाखाचार्य तपोनिलय के भक्तों के निवेदन से वहां पर ता. 2.7.98 से 9.7.98 तक आठ दिन के लिए अष्टाह्निक पर्व के अवसर पर आयोजित होने वाले सिद्धचक्र महामण्डल विधान में पधारे और ता. 8.7.98 को चातुर्मास कलश स्थापना की गयी। चातुर्मास में दोपहर के समय नित्य प्रतिदिन पूज्यपाद आचार्य रचित दशभक्तियों का मुनिश्री उच्चारण करवाकर अर्थ समझाते थे। इसी वर्षायोग में ऐलक श्री सुभद्रसागर जी ने मुनिश्री से सल्लेखना की साधना हेतु निवेदन किया कि सल्लेखना मुनि दीक्षा पूर्वक हो इसलिए मुनि दीक्षा का अति आग्रह किया। लेकिन मुनिश्री ने कहा कि उत्तर भारत चलकर आचार्यश्री के कर कमलों से मुनि दीक्षा दिलवायेंगे। तब भी वे नहीं माने व उन्होंने समाज के वरिष्ठ लोगों से निवेदन करवाया जैसे श्रीमान् सोहनलालजी कोठारी (सेलम्), श्रीमान् बुधराज जी कासलीवाल (पाण्डिचेरी), श्री धन्यकुमार जैन (पोन्नूर), श्री जेन्नादन् जैन (गुणंबाडी), श्री देवदास जैन (बंधवासी), श्री सम्पत् जैन, श्री सी. कुमार जैन (बंधवासी), श्री धनकीर्ति जैन (एरम्बूर), श्री राजशेखर जैन (आरनी), आदि इन लोगों ने भी वयोवृद्ध ऐ. सुभद्रसागरजी को मुनि दीक्षा प्रदान हेतु गुरुवर आर्जवसागरजी महाराज से निवेदन किया। ऐ. सुभद्रसागरजी ने कहा कि आप कहते हैं आचार्य श्री से दीक्षा दिलवायेंगे लेकिन हमारी अवस्था वहाँ तक जाने योग्य नहीं है अतः आपको ही हम अपने आचार्य मानते हैं। ऐसी सभी की पावन भावनाओं को देखकर गुरुवर मुनिश्री आर्जवसागरजी महाराज द्वारा ऐ. सुभद्रसागरजी को शुभ तिथि पर ता. 18.10.98 को विशाखाचार्य तपोनिलय के आर्जवसागर प्रवचन मण्डप में विशाल जन समूह के बीच मुनि

दीक्षा प्रदान की गयी।

मुनिश्री आर्जवसागरजी इस चातुर्मास में मध्यान्ह के समय की सामायिक तपोनिलय के सामने वाली पहाड़ी (तपोगिरि) की गुफा में किया करते थे। इस वर्ष भी षोडसकारण पर्व के समय मुनिश्री आर्जवसागरजी महाराज ने दूसरी बार एक आहार एक उपवास के साथ षोडसकारण व्रत किया और मुनिश्री की प्रेरणा से ता. 8.8.98 अनेक श्रावक-श्राविकाओं ने भी षोडसकारण व्रत करना से प्रारम्भ कर दिया। कुछ लोग 32 दिनों तक एक आहार एक उपवास करते थे कुछ लोक एकासन से षोडसकारण पर्व मनाये थे। मुनिश्री द्वारा रचित तीर्थोदय काव्य भी इसी पर्व में पूर्ण हुआ। इस द्वितीय बार के षोडसकारण के 32 दिनों में मुनिश्री को पारणा के दिनों में आहार के प्रारम्भ में ही तीन बार अन्तराय आये मानो तीन-तीन उपवास जैसे हो गये तो भी मुनिश्री की दैनिक चर्या में कोई अन्तर नहीं आया प्रतिदिन की भाँति ही प्रवचन, स्वाध्याय, सामायिक आदि सभी क्रियायें यथावत् चलती रहीं। दशलक्षण पर्व में श्रावक साधना संस्कार शिविर भी सम्पन्न हुआ। जिसमें इससे पहले वर्ष से दुगुणी संख्या के साथ भव्यगण शुद्धाहार, ध्यान, स्वाध्याय आदि के साथ संलग्न रहे। इसी वर्ष सन् 1998 के वर्षायोग में मंगलकलश की स्थापना श्री सुशील कुमार गंगवाल परिवार, पाण्डिचेरी वालों ने की थी। उन्होंने ही श्री कुन्दकुन्द आचार्य की 13 फिट ऊँची प्रतिमा दान देने की घोषणा करने का सौभाग्य प्राप्त किया। इनकी भावना से दशलक्षण के बाद, उसी वेदी का, जहाँ कुन्दकुन्दाचार्य की प्रतिमा रखी जायेगी वहाँ पर शिलान्यास करने का सुअवसर प्राप्त हुआ था। वर्षायोग के अन्त में पिच्छि परिवर्तन कार्यक्रम में मुनिश्री आर्जवसागरजी महाराज की पुरानी पिच्छी लेने का सौभाग्य श्री देवकुमार जैन परिवार चेय्यार वालों को मिला। चातुर्मास के बाद देवकुमार जैन की पुत्री श्री वाणीश्री एवं एरम्बूर के श्री अनन्तराज जैन की पुत्री श्री क्षेमश्री इन दोनों ने मोक्षमार्ग की ओर बढ़ने का साहस किया और रंगीन वस्त्रों से सादे वस्त्रों में आ गयीं। इन्हीं बहिनों के साथ श्रीमती राजकुमारी बंधवासी एवं

मद्रास वाली पट्टम्मा जी ने भी अपने वस्त्रों को धवल रूप देते हुए दोनों बहिनों का साथ दिया। और इसी वर्षायोग के समय कर्नाटक से आये युवा राजकुमार भी पूर्ण ब्रह्मचर्य व्रत लेकर गुरु महाराज संघ के साथ हो गये। फिर ता. 28.10.98 से 4.11.98 तक फाल्गुन अष्टान्हिका पर्व भी यहीं पर मनाया गया। उसी समय में श्री विशाखाचार्य तपोनिलय में ब्रह्मी श्राविका आश्रम की शुरुआत (स्थापना) हुई।

तपोनिलय में पञ्चकल्याणक महामहोत्सवः-

श्री विशाखाचार्य तपोनिलय में बड़े विशाल रूप में ता. 21.02.99 से 26.02.99 तक श्री मज्जिनेन्द्र पंचकल्याणक महामहोत्सव गुरुवर मुनि श्री आर्जवसागरजी के ससंघ सान्निध्य में सानन्द सम्पन्न हुआ। जिसमें नवनिर्मित तपोनिलय के जिनालय के मूलनायक श्री अजितनाथ भगवान, ऊपर मंजिल के मूलनायक श्री अनन्तनाथ भगवान, द्वय समवसरण की प्रतिमाएँ, मानस्तम्भ की प्रतिमाएँ, पन्रुट्टी नगर की प्रतिमाएँ, ईरोड़ नगर की प्रतिमाएँ, गुणंबाड़ी के मानस्तम्भ की प्रतिमाएँ, विशाखाचार्य की मूर्ति आदि करीब शताधिक प्रतिमाओं की प्रतिष्ठा इस पंचकल्याणक में गुरुवर श्री आर्जवसागरजी के कर कमलों से सम्पन्न की गयी थी। इस पंचकल्याणक में प्रतिष्ठाचार्य ब्र. जिनेश जी व ब्र. महेश जी, ब्र. प्रदीप पीयूष आदि, जबलपुर (मढ़िया जी) गुरुकुल से आये थे। इनके निर्देशन में एवं श्री सिंहचन्द्र शास्त्री, मद्रास के सहयोग से सम्पन्न हुआ। इस भव्य महोत्सव में मुनिश्री से आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत लेकर ब्राह्मी, सुन्दरी बनने का भाग्य श्री वाणी श्री (चेय्यार) व क्षेमश्री (एरम्बूर) के लिए मिला। इसी शुभ अवसर पर युवा शांतकुमार (मद्रास) ने भी मुनिश्री से आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत धारण किया। पंचकल्याणक में सौधर्म इन्द्र बनने का सौभाग्य श्रीमान् सोहनलालजी कोठारी सेलम वालों के लिए मिला था। मुख्य व्यवस्थाओं को सम्हालने वाले श्रीमान् बुधराज कासलीवाल पाण्डिचेरी एवं तपोनिलय के ट्रस्टी गण थे। इस पंच कल्याणक में आरग (महाराष्ट्र) से सेवादल भी आया था। सेवादल के युवाओं ने अपने दिव्यघोष के साथ

कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई तथा मुनिश्री को पण्डाल तक लाना व ले जाना तथा पण्डाल की शुद्धि देखना आदि अनेक सेवायें दी थीं। इसी अवसर पर मुनिश्री आर्जवसागरजी के पूर्व अवस्था की माता श्रीमती मायादेवी, पिता श्री शिखरचन्दजी एवं छोटे भाई संजय जैन पहली बार उत्तर भारत से तमिलनाडु में मुनिश्री के दर्शनार्थ आये थे। इसी समय दयोदय गौशाला का शुभारम्भ मुहूर्त्त भी श्री बाबूलाल पहाड़िया, हैदराबाद वालों के करकमलों द्वारा विशेष सहयोग राशि देकर किया गया।

तपोनिलय में मूलनायक अजितनाथ भगवान की प्रतिमा कन्नलम् के श्रीमान् वृषभदास जैन धर्मपत्नि नागलक्ष्मी दम्पति के ओर से एवं ऊपर मंजिल के अनन्तनाथ भगवान की प्रतिमा पेरणमल्लूर अय्यास्वामी जैन की ओर से प्रदान की गयी। श्रीमान् सेलवराज जैन दम्पति कलवै (चेन्नै) वालों के ओर से मानस्तम्भ का निर्माण कराया था। सभी के सहयोग से तमिलनाडु में हुये पंचकल्याणकों में यह पंचकल्याणक अद्वितीय रूप से सम्पन्न हुआ। तेरह फुट ऊँचे कुन्दकुन्दाचार्य के बिम्ब को प्रदान कर ऊँचे आसन पर बिठाने का सौभाग्य श्री सुशीलकुमार गंगवाल पाण्डिचेरी, वालों को प्राप्त हुआ था।

तपोनिलय के पंचकल्याणक के बाद मुनिश्री आर्जवसागरजी का ससंघ विहार आयलवाड़ी, मेलपन्दल हुआ, फिर आरनी (पुदुकामूर) पधारे। वहाँ पर ता. 19.03.99 को महावीर जयन्ती एवं मुनिश्री का 12वाँ दीक्षा दिवस मनाया गया, फिर ता. 31.04.99 को पुदुकामूर में राजशेखर जैन के घर के ऊपर गृह चैत्यालय की स्थापना की गयी। मुनिश्री वहाँ से विहार करके आयलवाड़ी आये। वहाँ पर ता. 04.04.99 को मानस्तम्भ बनाने के लिए शिलान्यास किया गया। फिर वहाँ से विहार करके तपोनिलय आये। वहाँ ता. 18.04.99 को अक्षय तृतीया पर्व मनाया गया, और उसी दिन वंधवासी के प्रतिमाधारियों का भक्तामर व्रत पूर्ण होने के उपलक्ष्य में भक्तामर विधान एवं उद्यापन किया गया। ता. 02.05.99 से 09.05.99 तक ग्रीष्मकालीन शिविर

लगाया गया, जिसमें इष्टोपदेश, द्रव्यसंग्रह, तत्त्वार्थ सूत्र आदि शास्त्र पढ़ाये गये। फिर मुनिश्री का गमन कन्नलम् की ओर हुआ।

कन्नलम् में श्रुतपञ्चमी:-

कन्नलम् गाँव में श्रुतपञ्चमी पर्व बड़े रूप से मनाया गया। मुनि श्री आर्जवसागरजी का विशेष प्रवचन भी हुआ, जिसमें उन्होंने बताया कि धरसेनाचार्य से आचार्य पुष्पदन्त, भूतबली महाराज ने कैसे आगम का ज्ञान प्राप्त किया ? और कैसे सिद्धान्त शास्त्रों की रचना की ? आदि विषयों के माध्यम से श्रुतपञ्चमी पर्व का महत्त्व बताया, और श्रावकों ने शास्त्रों की विशेष पूजायें आदि की।

नल्लवन पालयम् वर्षायोग:-

मुनिश्री ससंघ कन्नलम् से विहार करके वलत्ती, मेलमलैयणूर, तायणूर होते हुए तिरुवन्नामलै पहुँचे। वहाँ से फिर नल्लवन पालयम् में प्रवेश हुआ। मुनिश्री का भाव कर्नाटक की ओर जाने का हुआ था लेकिन यहाँ के लोगों की भक्ति एवं पुण्य ने मुनिश्री को बांध-सा-लिया मानो; और सन् 1999 का चातुर्मास नल्लवन पालयम् में ही हुआ। ता. 27.07.99 को चातुर्मास कलश स्थापना की गयी। स्थापना पर सेलम पाण्डिचेरी से भक्तगण आये।

दिगम्बर मुद्रा प्रभावकारी:-

नल्लवनपालयम् चातुर्मास में गुरुपूर्णिमा के दिन प्रातःकालीन गुरु भक्ति चल रही थी। तभी बाजू में ही लगे हुए तिरुवन्नामलै शहर से हिन्दू मठ के बड़े ऊँचे शरीर वाले और बड़ी ख्याति जिनकी थी ऐसे साधु अपने शिष्यों के साथ गुरुवर के दर्शन हेतु आये। और आकर साष्टांग (लेटकर) नमस्कार किया। पश्चात् 1 घण्टे तक तमिल भाषा में गुरु स्तुति रूप में गुरु गुणों का बखान किया। फिर गुरुवर को नमस्कार करके कहने लगे कि हे गुरुवर! आज गुरु पूर्णिमा के दिन ऐसे दिगम्बर युवा संत का दर्शन करके मन बहुत आनन्दित हुआ। ऐसा अवसर आज तक हमें जीवन में कभी नहीं मिला। ऐसा कहकर पुनः नमोस्तु निवेदित किया। गुरुवर ने उनको बहुत वात्सल्य पूर्वक आशीर्वाद

प्रदान किया। धन्य हैं ऐसे सन्त! जो अपने दिगम्बर रूप मात्र से ही धर्म की प्रभावना में रत रहते हैं।

वर्षायोग में तत्त्वार्थ सूत्र और इष्टोपदेश शास्त्र का अर्थ सहित विस्तार से समझाते हुए स्वाध्याय हुआ, और धार्मिक पाठशाला खोली गयी। जिसमें बच्चे रोज शाम को आकर सम्यग्ज्ञान प्राप्त करते थे, और रविवार को सुबह पूजन करते थे। मुनिश्री की आहार-चर्या जैनों के घर-घर को पवित्र करती थी। यह अवसर इस गाँव वालों को प्रथम बार मिला और वर्षायोग में सोलहकारण पर्व में कई लोगों ने एक आहार एक उपवास से और कुछ लोगों ने एकाशन से यह पर्व मनाया। दशलक्षण में श्रावक साधना संस्कार शिविर में भी बहुत लोगों ने व्रत, नियम, संयम के साथ भाग लेकर इस अनादिकालीन पर्व के महत्त्व को जानकर बहुत आनन्द की अनुभूति प्राप्त की। जहाँ पर छोटा सा मन्दिर था वह गुरुवर की आशीर्वाद एवं प्रेरणा से विशाल रूप लेने लगा और वर्षायोग के अंत में पिच्छि परिवर्तन के कार्यक्रम में वंधवासी के श्री सी.कुमार जैन परिवार वालों ने तथा उनकी सुपुत्री श्री पद्ममालिनी ने भी आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत पूर्वक गुरुवर आर्जवसागरजी की पुरानी पिच्छि लेने का सौभाग्य प्राप्त किया।

काट्टुमलैयनूर में कलशारोहणः-

नल्लवन पालयम् से विहार करके काट्टुमलैयनूर गये। वहाँ पर श्रावकों के निवेदन से मन्दिर के शिखर पर कलशारोहण कार्यक्रम ता. 15.12.99 को मनाया गया। गुरुवर मुनिश्री आर्जवसागरजी के सान्निध्य में बहुत भव्य रूप से यह कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। मुनिश्री ने वहाँ पर कुछ दिन प्रवास करके प्रवचन के माध्यम से धर्म प्रभावना की। फिर वहाँ से विहार करके मलपाम्बाड़ी पधारे।

तिरुवन्नामलै में अहिंसा रैलीः-

तिरुवन्नामलै के भक्तों के निवेदन से मुनिश्री आर्जवसागरजी मलपाम्बाड़ी से विहार करके तिरूवन्नामलै आये। वहाँ पर स्थानकवासी श्वेताम्बरों के

महावीर भवन में ठहर करके कुछ दिनों तक प्रवचन के माध्यम से अहिंसा, व्रत आदि का संदेश दिया। फिर वहीं पर ता. 02.01.2000 को सैकड़ों लोगों के साथ अहिंसा रैली पूर्वक मीनाक्षी कल्याणमण्डप में शाकाहार सम्मेलन सम्पन्न हुआ। जिसमें डी.जी.पी. श्रीपालन जैन व स्थानीय एस.पी. विजय कुमार आदि ने आ करके धर्म लाभ लिया। कई विशेष लोगों ने अहिंसा पर वक्तव्य दिये और मुनिश्री का भी अहिंसा विषय पर पावन प्रवचन सम्पन्न हुआ। इससे वहाँ के अजैन लोगों में भी बहुत प्रभाव हुआ क्योंकि तमिलदेश में मुनियों का विहार बहुत ही कम होता है उसमें भी तमिल भाषा में अहिंसा धर्म पर उपदेश देने वाले मुनि; एक गुरुवर आर्जवसागरजी ही थे। इसलिए उनका उपदेश सुन करके अन्यमतावलम्बी बहुत लोग प्रभावित होकर शाकाहारी एवं अहिंसक बने यह बहुत बड़ा लाभ हुआ।

नल्लवन पालयम् में पंचकल्याणकः-

तिरूवन्नामलै से नल्लवन पालयम् में मुनिश्री आर्जवसागरजी के ससंघ का पदार्पण हुआ। वर्षायोग के आरम्भ से लेकर सात, आठ महीनों में बनकर तैयार हुए नये मन्दिर के पंचकल्याणक हेतु मुनिश्री का आगमन हुआ, और सन् 2000 जनवरी महिने में ता. 19 से 23 तक 5 दिनों में यह श्रीमज्जिनेन्द्र पंचकल्याणक महामहोत्सव सम्पन्न हुआ, जो पं. सिंहचन्द्र शास्त्री मद्रास वालों के निर्देशन में हुआ। हाऊसिंग बोर्ड मिनिस्टर एम.एल.ए. पिच्चाण्डी आदि अतिथिगण भी मुनिवर के दर्शन एवं उपदेश से लाभान्वित हुए और इस पंचकल्याणक में आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत के साथ ब्राह्मी बनने का सौभाग्य पद्ममालिनी जैन, वंधवासी को मिला और मोक्षमार्ग में बढ़ने की भावना से धवल वस्त्र धारण किये। मुनिश्री आर्जवसागरजी ने पंचकल्याणक के विषय पर मंगल प्रवचन दिये। गुरुवर के आशीर्वाद एवं सान्निध्य से यह पंचकल्याणक बड़ी भव्यता से सानन्द सम्पन्न हुआ। इसी अवसर पर ब्र.शिवादिनादन ने मुनिश्री आर्जवसागरजी महाराज से दस प्रतिमा के व्रत

धारण किये।

वलुदलाम्कुण्डरम् यात्राः-

मुनिश्री ससंघ नल्लवन पालयम् से विहार करके सोमासपाडी होते हुए वलदलाम्कुण्डरम् पहाड़ी पर गये। जहाँ पर चट्टान में उकेरी हुई प्राचीन प्रतिमाओं का दर्शन किया और गुफाओं एवं पत्थर में बनी शय्याओं का अवलोकन किया।

तपोनिलय में सारस्वत् सम्मिलनः-

मुनिश्री ससंघ गाँव-गाँव में विहार करते हुए श्री विशाखाचार्य तपोनिलय पधारे। तपोलिनय में 'आर्जवसागर मण्डप' में दिनांक 11 फरवरी 2000 से 13 फरवरी तक तीन दिवसीय सारस्वत् सम्मिलन हुआ। जिसमें विषय था ''आचार्य कुन्दकुन्द और उनका वाङ्मय''। इसमें उत्तर भारत से पधारे श्री डी. राकेश शास्त्री, सागर; पं. श्री शिवचरणलालजी, मैनपुरी; श्री ब्र. अशोकजी, श्री ब्र. अनिलजी, इन्दौर और तमिलदेश के श्री पार्श्वनाथन् जैन चेय्यार, श्री पं. धन्यकुमार जैन, पोन्नूर; श्री धनदेवन, वेलूर; श्री भूपालन जैन, मद्रास आदि विद्वान लोग पधारे थे। सभी ने अपने आलेख प्रस्तुत किये। पूज्य मुनिश्री 108 आर्जवसागरजी ने भी प्रतिदिन दोनों सत्रों में कुन्दकुन्द आचार्य के जीवन परिचय एवं साहित्य पर प्रवचन दिये और समीक्षा भी की। इस सम्मेलन से सब को अपूर्व ज्ञान मिला एवं स्वाध्याय में वृद्धि हुई। जिस भूमि पर आचार्य कुन्दकुन्द ने तपस्या की एवं 84 पाहुड़ ग्रन्थों की रचना की ऐसी धरा पर यह सम्मेलन पहली बार हुआ और सब को अनान्दित करने वाला रहा। इस विद्वत् सम्मेलन के लिए आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज ने श्री डी. राकेश को यह कहते हुए आशीर्वाद दिया कि आचार्य कुन्दकुन्द के 2000 वें द्विसहस्राब्दी दीक्षा वर्ष के उपलक्ष्य में यह सम्मेलन सम्पन्न होना चाहिए।

तदुपरान्त पोन्नूरमलै के तपोनिलयं में ता. 16.04.2000 को महावीर जयन्ती एवं मुनिश्री का 13वाँ दीक्षा दिवस मनाया गया। फिर ता. 01.05.2000

से 07.05.2000 तक 7 दिन के लिए ग्रीष्मकालीन शिविर लगा। पश्चात् ता. 04.05.2000 को अक्षयतृतीया पर्व मनाया गया। फिर मुनिश्री विहार करके किलविल्लिवनम् गये। वहाँ पर पाठशाला एवं प्रवचन के माध्यम से श्रावकों को धर्म का मार्ग बताया पश्चात् वहाँ से मुनिश्री का गमन वंधवासी की ओर हुआ। वंधवासी में कुछ दिन ठहर करके अपनी अमृतमय वाणी से लोगों को मिथ्यामार्ग से दूर हटने का उपदेश दिया। पश्चात् यहाँ एक और मन्दिर होना चाहिए ऐसा गुरुवर के कहे जाने पर संघस्थ मुनिश्री सुभद्रसागरजी के पूर्व अवस्था के पुत्र ने अपनी भूमि को मन्दिर बनाने के लिए दान रूप में समर्पित किया और जिनालय बनाने हेतु दृढ़ निश्चय करा कर एक सम्यग्दृष्टि लोगों की ट्रस्ट कमेटी बना दी गयी।

गुरुवर श्री 108 आर्जवसागर जी महाराज ने वंधवासी से ही ब्राह्मी श्राविका आश्रम की बहिनों को आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज के दर्शनार्थ भेजा था। फिर मुनिश्री का विहार एरम्बूर होते हुए आयलवाड़ी की ओर हुआ। वहाँ पर ता. 12.07.2000 को मानस्तम्भ की बिम्ब प्रतिष्ठा का महोत्सव रूप कार्यक्रम सानन्द सम्पन्न हुआ।

तपोनिलय में प्रवेश:-

श्री विशाखाचार्य तपोनिलय के ट्रस्टियों के विशेष निवेदन से मुनि श्री आर्जवसागरजी ने ससंघ आयलवाड़ी से विहार करके पोन्नूरमलै के तपोनिलय में वर्षायोग हेतु मंगल प्रवेश किया।

तपोनिलय में वर्षायोग:-

सन् 2000 का वर्षायोग तपोनिलय के भक्त गणों की भक्ति से मुनिश्री आर्जवसागरजी का ससंघ चातुर्मास कलश स्थापना ता. 15.07.2000 को हुई। चातुर्मास में मुनिश्री ने श्रावकों के लिए पदार्थसारम् (तमिल भाषा में) एवं चौबीस-ठाणा पढ़ाया था। मुनिश्री ने स्वयं चौबीस ठाणा शास्त्र का तमिल भाषा में अनुवाद किया था। षोडसकारण पर्व में व्रतियों की संख्या बढ़ती गयी। सबने उपवास व एकाशन आदि के माध्यम से तीर्थंकर पद को देने वाले इस

षोडसकारण पर्व को सोल्लास मनाया। दशलक्षण पर्व में श्रावक साधना संस्कार शिविर भी लगा। मुनिश्री ने दशलक्षण पर्व में आहारचर्या में पेयाहार मात्र लेकर अपूर्व साधना की। सुबह दशलक्षण के प्रत्येक धर्म पर तमिल में प्रवचन दिये और दोपहर में तत्त्वार्थ सूत्र के एक-एक अध्याय का अर्थ भी बतलाया। इस चातुर्मास में प्रति रविवार को तमिल समण (जैन) शास्त्रों की संगोष्ठी हुई। जिसमें तमिल शास्त्रों का जैसे यशोधर काव्यं, शिलपधिकारम्, वलयापति, चूडामणि, जीवकचिंतामणी, नीलकेशी, मेरुमंदर पुराणं, पिरुंकथै, त्रिरुनूट्टुअन्तादि, अरनेरिसारं, तिरुकलम्पकम्, श्रीपुराणं, नालडियार, अरूंगलचेप्पु, तिरुकुरल, एलादि, सिरुपंचमूलम्, पलमौली नानूरु, करतललोकाणी आदि शास्त्रों पर प्रत्येक रविवार को एक-एक विद्वानों ने शास्त्र के ऊपर आलेख पढ़कर वक्तव्य दिये। तत्पश्चात् मुनिश्री ने भी अपने प्रवचन में उस शास्त्र के महत्त्व को तमिल भाषा में बतलाया। चातुर्मास के अन्त समय पर इन संगोष्ठियों पर परीक्षा भी सम्पन्न हुई। बहुत लोगों ने परीक्षा में लाभ लिया। इस परीक्षा में उत्तीर्ण हुए लोगों को 'सम्यग्ज्ञान विभूषण' पद से विभूषित किया गया।

मुनिश्री आर्जवसागरजी के द्वारा धार्मिक पाठशालाओं में कोर्स रूप में जैसे प्रथम वर्ष जैन संस्कार व जैनागम संस्कार, दूसरे वर्ष धर्मसंस्कार भाग 1 व धर्मसंस्कार भाग 2, तीसरे वर्ष अरूंगलचेप्पु (रत्नकरण्डक श्रावकाचार) चौथे वर्ष तत्त्वार्थ सूत्र और पाँचवे वर्ष पदार्थसारं एवं चौबीस ठाणा रखे गये थे। इन पाँचों वर्ष के कोर्स में पाँचों वर्षों तक परीक्षा देकर उत्तीर्ण हुये लोगों के लिए ता. 05.11.2000 को 'सिद्धान्त भूषण' पद से विभूषित किया गया। और भी कई प्रभावनापूर्ण धार्मिक कार्यक्रम सम्पन्न हुये। वर्षायोग के अन्त में ता. 29.10.2000 को पिच्छि परिवर्तन के कार्यक्रम में गुरुवर की पुरानी पिच्छी लेने का सौभाग्य श्री देवदास दम्पति वंधवासी को मिला। पोन्नूरमलै में ता. 31.12.2000 से 02.01.2001 तक चारित्र शुद्धि विधान किया गया, और तपोनिलय में एलाचार्य (कुन्द-कुन्द) औषधालय का भी उद्घाटन हुआ।

विधानोपरान्त मुनिश्री आर्जवसागरजी का ससंघ विहार पोन्नूर ग्राम होते हुए वंधवासी के लिए हुआ। वहाँ पर ठहर करके सम्यग्दर्शन विषय पर विशेष प्रवचनों के माध्यम से धर्म की प्रभावना की। श्रावकों ने अपने-अपने घर पर चौका लगाकर आहारदान का लाभ लिया। फिर वेन्कुन्डरम्, ऐरम्बूर, आयलवाड़ी, पेरणमल्लूर, मोटूर होते हुए आरनी (पुदुकामूर) पहुँचे।

पुदुकामूर में नये जिनालय का शिलान्यासः-

आरनी में पुदुकामूर कॉलोनी में नये जिनालय हेतु शिलान्यास कार्यक्रम ता. 05.01.2001 को जहाँ पर मन्दिर बनना था वहीं पर पंडाल बनाकर मुनिश्री आर्जवसागरजी के ससंघ सान्निध्य में किया गया। जिसमें एक ही परिवार के तीनों भाईयों में से बड़े भाई ने मन्दिर बनाने के लिए भूमि दान में दी, और बीच के भाई ने मुनि संघ को ठहरने हेतु आवास दान हेतु मुनि निवास बनवाने एवं मूलनायक महावीर प्रतिमा दान में देने का संकल्प किया। सबसे छोटे भाई ने मन्दिर का शिखर बनाने का भाव प्रकट किया। ऐसे एक ही परिवार ने पूरा एक मन्दिर बनवाने का बड़े उत्साह पूर्वक साहस किया। मुनिश्री ने अपने मुखारविन्द से व्रतियों के लिए एवं श्रावकों के लिए स्वयंभू स्तोत्र का उच्चारण एवं अर्थ पढ़ाया। इसी संदर्भ में जुगुल ग्राम (कर्नाटक) से पधारी दो बहिनों ने अपने पिता महावीर कुलचे एवं माता श्री के साथ मुनिश्री का दर्शन किया। जब मुनिश्री आर्जवसागरजी महाराज जुगुल ग्राम गये थे तब उनके उपदेश से इन बहिनों ने मोक्षमार्ग में आगे बढ़ाने का भाव प्रगट किया था, फिर आचार्यश्री विद्यासागरजी से आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत ले लिया। जब मुनिश्री के दर्शन करने आयीं तब तमिलनाडु की धर्म प्रभावना देखकर बहुत हर्षित हुयीं। चौका भी लगाया और मुनिश्री आर्जवसागरजी को नवधा भक्ति पूर्वक अपने चौके में आहार दान देने का लाभ भी प्राप्त किया। पश्चात् मुनिश्री का मोटूर गाँव की ओर विहार हो गया। वहाँ पर भी ता. 29.02.2001 को जैन श्रावक शांतकुमार नैनार द्वारा दान दिये गये प्लाट पर श्री 1008 चन्द्रप्रभु नये जिनालय हेतु शिलान्यास हुआ।

अहिंसा रथ प्रारम्भः-

पश्चात् मुनिश्री का ससंघ विहार चेय्यार की ओर हुआ। वहाँ पर भगवान महावीर के 2600 वाँ जन्म जयन्ती के उपलक्ष्य में सुशील गंगवाल पाण्डिचेरी की लारी को एक अहिंसा रथ का रूप देने के लिए एक माह के लिए निःशुल्क दिया गया। जिसमें चरण सहित पावापुरी की संरचना सहित अहिंसामय चित्र एवं अहिंसा संदेश रूप महावीर भगवान का चित्र, भगवान के पाँच कल्याणकों का चित्र एवं आचार्यश्री विद्यासागरजी का चित्र और मुनिश्री आर्जवसागरजी का चित्र आदि से वह रथ सजा हुआ था। उस रथ ने ता. 09.03.2001 को पूरे तमिलनाडु की यात्रा हेतु चेय्यार नगर से प्रयाण किया।

तपोनिलय में 2600 वाँ महावीर जयन्तीः-

पश्चात् मुनिश्री का ससंघ विहार तपोनिलय की ओर हुआ। वहाँ ता. 06.04.2001 को श्री अमरचंद ठोलिया, पाण्डीचेरी वालों की ओर से कंकरीट सीमेंट से बनाये गये तीन लोक के स्वरूप की संरचना का उद्घाटन हुआ। पश्चात् ता.6, 7 एवं 8.04.2001 को तीन दिवसीय कार्यक्रम के रूप में भगवान महावीर का 2600 वाँ जन्म जयन्ती एवं मुनिश्री 108 आर्जवसागरजी महाराज का 14वाँ दीक्षा दिवस महोत्सव बहुत बड़े रूप से मनाया गया।

अहिंसा रथ भी पूरी यात्रा करके उस दिन तपोनिलय में आ गया, और श्रीपालन जैन D.G.P. आदि विद्वत्गण सबने अपने वक्तव्य दिये। फिर मुनिश्री ने भी अपनी अमृतमय वाणी से भगवान महावीर का जीवन परिचय बताया, और इसी कार्यक्रम में तमिल भाषा में नवीन प्रकाशित 'जैन धर्म और विज्ञान' पुस्तक एवं तत्त्वार्थ सूत्र सार्थ कृति का (मुनिश्री के प्रवचन सहित तमिल में) विमोचन किया गया।

ता. 8/4/2001 को मुनिसंघ के सान्निध्य में महावीर स्कूल का उद्घाटन किया गया, जिसमें हाउसिंग बोर्ड मिनिस्टर पिच्चाण्डी आये हुये थे। उन्होंने मुनिश्री के साथ त्रिलोक की रचना व दयोदय गोशाला का भी अवलोकन किया।



करीब 15 वर्ष की उम्र में पारसचंद जैन।



ब्र. पारसचंद शुद्धाहार करते हुए।



पारसचंद अपने छोटे भाई संजय, अरविन्द एवं बहिन सन्ध्या के साथ।



प्रदर्शिनी में पारसचंद साइकिल पर सवार।



मुनिश्री आर्जवसागर की आहार के समय आरती उतारते हुए भक्तगण।



सन् 1989, कुण्डलपुर में अपने गुरुवर आचार्य विद्यासागर जी संघ में भक्ति करते हुए मुनिश्री आर्जवसागर जी महाराज।



1989 पथरिया में आचार्यश्री विद्यासागरजी के लिए अपने गृह पर आहार देते हुए पिताश्री शिखरचंद जी।



मुनिश्री आर्जवसागर जी महाराज आहारोपरांत कायोत्सर्ग में लीन।



मुनिश्री आर्जवसागरजी कायोत्सर्ग मुद्रा में।



आहारचर्या को जाते हुए मुनिश्री आर्जवसागरजी।



पथरिया में पारसचंद एक झांकी में अपने मित्रों के साथ खड़े हैं (राजेश 'रज्जन' एवं शैलेश जैन)



ब्र. परसचंद जैन की क्षु.दीक्षा के पूर्व शृंगार मुद्रा।

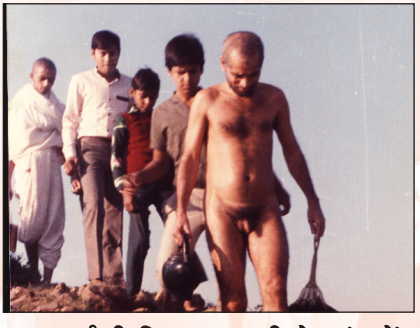

आचार्यश्री विद्यासागरजी के संघ में शौच क्रिया में ब्र. पारसचंद जैन साथ में।



गिरनारजी की चौथी टोंक पर ध्यानस्थ गुरुवर आर्जवसागरजी महाराज।



2017 जबलपुर में प्रवचन देते गुरुवर आचार्यश्री आर्जवसागरजी महाराज।



2011, चित्तौड़गढ़ किले पर जैन कीर्ति स्तम्भ के सामने आर्जवसागर मुनिराज।



मूलनायक भ.अजितनाथ विशाखाचार्य तपोनिलय तमिलनाडु (मुनिश्री आर्जवसागरजी प्रतिष्ठित)



भ. अजितनाथ जिनालय विशाखाचार्य तपोनिलय तमिलनाडु (मुनिश्री आर्जवसागरजी के मार्गदर्शन में निर्मित)



ध्यान मंडप श्री विशाखाचार्य तपोनिलय तमिलनाडु।



एलाचार्य कुन्दकुन्द औषधालय श्रेय मुनिश्री आर्जवसागरजी।



मुनिश्री आर्जवसागर जी के आशीष से निर्मित गौशाला श्री विशाखाचार्य तपोनिलय तमिलनाडु।



1999 मुनिश्री आर्जवसागर के दर्शन पधारे श्रीपाल (आई.पी.एस.) तपोनिलय तमिलनाडु।

मुनिश्री आर्जवसागरजी महाराजजी का पावन प्रेरणा से एक बस निकली थी, जिसमें सब गृहस्थ प्रतिमाधारी लोग भी गये थे। पुदुकामूर आरनी नगर के इस पावन वर्षायोग में प्रति रविवार श्रमण तमिल शास्त्रों की संगोष्ठी भी होती रही। चातुर्मास के बीच में मध्यप्रदेश स्थित दमोह जिले के नगर से मुनिश्री के पूर्व अवस्था के माता-पिता भाई एवं बड़े मामा, मामी मुनिश्री के दर्शनार्थ पधारे सब के लिए यह चातुर्मास का पहला अवसर था। जिसमें सभी कार्यक्रम मंगलमय हुये। प्रतिदिन के प्रवचन में वहाँ के श्वेताम्बर समाज के लोग भी आते थे। इस चातुर्मास से आजु-बाजु के ग्रामों में भी बहुत धर्म प्रभावना हुई। वर्षायोग के अन्त में ता. 17.11.2001 को कण्ठपाठ प्रतियोगिता की गयी। जिसमें बड़ों के लिए छहढाला, स्वयंभूस्तोत्र, तत्त्वार्थ सूत्र, रत्नकरण्डक-श्रावकाचार, भक्तामरस्तोत्र, इष्टोपदेश, द्रव्यसंग्रह, तिरूकुरल, त्रिरुनूद्रुअन्तादी, सुप्रभात स्तोत्र, महावीराष्टक आदि विषय रखे गये थे। उनको मुखाग्र सुनाकर बहुत लोगों ने लाभ लिया। ता. 18.11.2001 को पिच्छि परिवर्तन एवं कण्ठपाठ प्रतियोगिता का पुरस्कार वितरण का कार्यक्रम हुआ, जिसमें गुरुवर की पुरानी पिच्छी प्राप्त करने का सौभाग्य श्री राजशेखर दम्पति पुदुकामूर वालों को मिला। तथाहि जिन और भी लोगों ने ब्रह्मचर्य धारण किया था उन श्रावकों के द्वारा मुनिश्री को नयी पिच्छिका प्रदान की गई। चातुर्मास के उपरान्त मुनिसंघ वहाँ से विहार करके मोटूर, कलवै, तिरुपणमूर, वेम्पाक्कम्, कांचीपुरम, तिरुपत्तिकुण्डरम् आदि गाँवों में प्रभावना करते हुये पुनः लौटकर पुदुकामूर (आरनी) आये।

पुदुकामूर में पंचकल्याणकः-

मुनिश्री आर्जवसागरजी के ससंघ सान्निध्य में पुदुकामूर (आरनी) में द्विमंजिला अष्टकोण में बने नये मन्दिर का ता. 17.02.2002 से 22.02.2002 तक छह दिनों में श्रीमज्जिनेन्द्र पंचकल्याणक महामहोत्सव सम्पन्न हुआ। यह मन्दिर मात्र एक वर्ष में ही बनकर तैय्यार हो गया था। ये सब

तिरुवन्नामलै में नये मन्दिर शिलान्यासः-

पश्चात् मुनिश्री आर्जवसागरजी ससंघ पोन्नूर, गूणंबाडी आदि गाँवों से होते हुए वलदुराम कुण्डरम् क्षेत्र पर पहुँचे। वहीं पर आहारचर्या भी हुई। फिर बाद में विहार करके सोमासपाडी गाँव में रात रुक करके सुबह तिरूवन्नामलै नगर पहुँचे। वहाँ पर मुनिश्री के उपदेश प्रेरणा एवं आशीर्वाद से निर्मित होने वाले श्री श्रेयांसनाथ भगवान के नये मन्दिर हेतु ता. 29.04.2001 को शिलान्यास का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। इस जिनालय के निर्माण में विशेष सहयोगी एवं भूमि प्रदाता श्री अर्हदास (अरुगदास) (Retd. B.D.O.) तिरुवन्नामलै वाले थे। फिर नल्लवन पालयम में अक्षय तृतिया पर्व मनाया गया। फिर वहाँ मुनिश्री सोमसपाड़ी आये वहाँ पर ता. 27.05.2001 को श्रुतपञ्चमी पर्व मनाया गया। फिर वहाँ से विहार करके मुनिवर आर्जवसागरजी ससंघ तच्चाम्बाड़ी, देवीकापुरम्, ओदलवाडी, तच्चूर, मोटूर आदि गाँव से होते हुए एवं धर्म प्रभावना करते हुए आरनी पहुँचे।

(आरनी) पुदुकामूर में वर्षायोगः-

(आरनी) पुदुकामूर के श्रावकों के कई बार किये गये विशेष निवेदन से उन्हें चातुर्मास करवाने का परम सौभाग्य प्राप्त हुआ। ता. 04.07.2001 को वर्षायोग प्रतिष्ठापन का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। वर्षायोग में स्वयंभूस्तोत्र का अर्थ एवं छहढाला शास्त्र का स्वाध्याय सम्पन्न हुआ, और भव्यों को तीर्थंकर प्रकृति का संचय कराने वाला सोलहकारण पर्व भी मनाया गया। जिसमें करीब आठ-दस लोगों ने एक आहार एक उपवास तथा बहुत लोगों ने एकासन से बत्तीस दिनों तक पूरे सोलहकारण व्रत किये। इसी के बीच दशलक्षण पर्व में श्रावक साधना संस्कार शिविर भी लगाया गया, इसमें भी बहुत लोगों ने व्रत, नियम, संयम पूर्वक मुनिवर के प्रवचन सुनते हुए पर्यूषण पर्व मनाया। अन्तिम दिन विमानोत्सव एवं क्षमावाणी पर्व के दिन भी आपस में भक्तों ने बड़े उल्लास के साथ क्षमावाणी मनायी। फिर ता. 28.09.2001 को मध्यप्रदेश के क्षेत्रों के दर्शन हेतु यात्रा एवं आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराजजी के दर्शन के लिए

मुनिश्री 108 आर्जवसागरजी का आशीर्वाद का ही फल था। इस पंचकल्याणक में मन्दिर की दोनों मंजिल सम्बन्धी मूर्तियाँ एवं अन्य धातु की प्रतिमायें और मोटूर गाँव नवीन जिनालय की सभी प्रतिमायें भी मुनिश्री के कर कमलों से ही प्रतिष्ठित करवाई गई। पं. नन्हें भाई शास्त्री, सागर (म.प्र.) एवं पं. सिंहचन्द्रजी शास्त्री, मद्रास पंचकल्याणक के निर्देशक थे। कर्नाटक के कल्गोण्डा गाँव से सेवादल भी अपना दिव्यघोष लेकर आया था। उन जैन भव्य युवाओं ने दिव्यघोष के माध्यम से भव्य आयोजन की शोभा बढ़ाते हुए धर्म प्रभावना की, और रात्रि काल में महाआरती, पाठशाला के बच्चों के सांस्कृतिक कार्यक्रम एवं विद्वानों के प्रवचन आदि कार्यक्रम चलते रहे। प्रतिदिन दो बार मुनिश्री का तमिल में प्रवचन भी होते रहे। इस प्रकार यह पंचकल्याणक जितना सोच नहीं सकते थे उतना अच्छा हर्षोल्लास के साथ सानन्द सम्पन्न हुआ।

मोटूर गाँव में जिनालय एवं बिम्ब प्रतिष्ठा:-

पश्चात् (आरनी) पुदुकामूर से निकट में ही विहार कर मुनिश्री मोटूर गाँव पहुँचे। वहाँ पर मुनिश्री आर्जवसागरजी के ससंघ सान्निध्य में ता. 24.02.2002 को नये निर्मित मन्दिर में पुदुकामूर से प्रतिष्ठित करवा करके लायी गयीं प्रतिमाओं को वेदी में स्थापित (प्रतिष्ठित) किया गया। त्रिदिवसीय भव्य कार्यक्रम में मुनिश्री के प्रवचन भी हुये। पाठशाला के बच्चों के सांस्कृतिक कार्यक्रम भी सम्पन्न हुये। छोटी-सी समाज होने के बावजूद भी जिन मन्दिर बनाने का भाव एवं पूर्ण साहस किया यह अति प्रशंसनीय बात थी।

वेलूर नगर में मंगल प्रवेश:-

पश्चात् मुनिश्री ससंघ वहाँ से विहार करके अग्रापालयम, कुन्नत्तूर, कोकरम्पट्टु, कन्नमंगलम्, वल्लम्, कनियमबाड़ी, नेलवाय, सात्तुमट्टुरै, चित्तेरी, आदि गावों से होते हुए वेलूर पहुँचे। फिर तोरप्पाड़ी, आफिसर लैन,

रिंग रोड, आदि स्थानों से होते हुए सत्तुवाचेरी जिनालय में भव्य मंगल प्रवेश हुआ। जिनालय के दर्शन करने के बाद मुनिश्री ने मंगल आशीष वचन दिये और मन्दिर की कमेटी द्वारा किये गये नम्र निवेदन पर कुछ दिन प्रवास किया। प्रतिदिन मुनिश्री का मंगल प्रवचन होते रहे। इससे लोगों के अन्दर का मिथ्यात्व अन्धकार नष्ट हुआ, और धर्म के प्रति रुचि जागने लगी। प्रभु का दर्शन, उत्तमरीति से अभिषेक, पूजन, सम्यग्दर्शन पूर्वक स्वाध्याय आदि करने लगे।

वेलूर में भव्य पंचकल्याणक :-

सत्तुवाचेरी के श्रावकगणों ने नये निर्मित श्री वासुपूज्य भगवान के जिन मंन्दिर के पंचकल्याणक हेतु मुनि श्री से नम्र निवेदन किया। मुनि श्री ने कहा कि पंचकल्याणक उत्तम रीति के साथ आगम के विधि विधान से करना चाहिए तो श्रावकों ने सहर्ष स्वीकार करके आप जैसे कहेंगे वैसा ही हम करेंगे ऐसा वचन दिया। फिर पंचकल्याणक की तैयारियाँ शुरु हुईं। पश्चात् मुनिश्री आर्जवसागरजी के ससंघ सान्निध्य में छह दिन का 17.04.2002 तारीख से 22.4.2002 तारीख तक श्रीमज्जिनेन्द्र पंचकल्याणक महामहोत्सव सम्पन्न हुआ। जिसमें उत्तरभारत से पधारे प्रतिष्ठाचार्य श्री ब्र. जयकुमार निशान्त के निर्देशन में विधि-विधान का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ और सिंहचन्द्र शास्त्री (मद्रास) वाले साथ में थे। जब उत्तर भारत के प्रतिष्ठाचार्य ने यहाँ आकर देखा तो उन्होंने कहा महाराजजी यहाँ तो उत्तर भारत जैसा मन्दिर बनवा दिया है (वीतराग देव मात्र पूजना, अपने हाथ से पूजा करना व अभिषेक करना इत्यादि) ये सब मुनिश्री के आशीर्वाद का ही प्रताप था। पंचकल्याणक में मुनिश्री का प्रवचन दोनों समय चलता रहा और रात्रि के समय पंडित जी का प्रवचन होता था एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम भी होते रहे। गर्भ कल्याणक के समय माता के सोलह स्वप्न एवं उनका फल, और अष्टकुमारियों द्वारा सेवा, उनके द्वारा प्रश्न पूछा जाना इत्यादि दृश्य दर्शाया गया। पश्चात् जन्म

कल्याणक में भगवान का जन्म, सौधर्म इन्द्र का ताण्डव नृत्य, सुमेरु पर्वत पर जन्माभिषेक, पालना झुलाना, बालकों के साथ क्रीड़ा करना इत्यादि दृश्य, दीक्षाकल्याणक में बत्तीस मुकुटबद्ध राजाओं की भेंट, षट्कर्म जनता को सिखाना, पुत्रियों को अक्षर व अंक विद्या सिखाना, नीलाञ्जना का नृत्य, वैराग्य की उत्पत्ति, लौकान्तिक देवों की सराहना, दीक्षा पालकी उठाना दीक्षा संस्कार विधि इत्यादि दृश्य प्रदर्शित किये गये। ज्ञान कल्याणक के दिन तीर्थंकर की आहार चर्या मुनिश्री आर्जवसागरजी के कर कमलों से केवलज्ञान की विधि (अंकन्यास, सूर्यमंत्र आदि) फिर समवसरण की रचना, गणधर के रूप में गुरुवर आर्जवसागरजी का प्रवचन, फिर मोक्ष कल्याणक में भगवान कैलाश पर्वत से अघातियाँ कर्मों को क्षय करके सिद्ध बनना उनका शरीर कपूर की भांति बिखर जाना इत्यादि दृश्य दिखाया गया। इस तरह अनेक विधि-विधान से एक पत्थर की प्रतिमा भी भगवान का रूप लेकर पूजने योग्य बन गयी है। फिर प्रतिष्ठित प्रतिमाओं को वेदियों में विराजमान किया गया और शिखर पर कलशारोहण, ध्वजारोहण आदि कार्यक्रम किये गये। इस तरह यह पंचकल्याणक गुरुवर श्री आर्जवसागरजी के ससंघ सान्निध्य में उनके आशीर्वाद एवं प्रेरणा से बहुत बड़े रूप में हर्षोल्लास के साथ सानन्द सम्पन्न हुआ।

पश्चात् 25.04.2002 तारीख को भगवान महावीर के 2600 वाँ जन्म कल्याणक (जन्म जयन्ती) वर्ष की पूर्णता रूप दिवस का कार्यक्रम एवं गुरुवर आर्जवसागरजी महाराज का 15वाँ मुनिदीक्षा दिवस कार्यक्रम वेलूर नगरी में ही मनाया गया।

पुनः कर्नाटक यात्रा :-

अब गुरुदेवश्री आर्जवसागरजी का मन तमिलनाडु से प्रस्थान करने का हुआ। तमिल के लोगों ने बहुत रोका, आँसू बहाये लेकिन गुरुवर ने कहा कि मैं सम्मेद शिखरजी का दर्शन करना चाहता हूँ अतः दर्शन में बाधा नहीं

डालना चाहिए ऐसा कह करके सबको चुप कर दिया। फिर गुरुवर ससंघ विहार करके आरनी, रेन्डेरिपट्टु (पोलूर), पुदुप्पालयम्, चेंगम, हसूर, कृष्णगिरि होते हुए जून 2002 में कर्नाटक में प्रवेश कर बेंगलोर पधारे। इस विहार में तमिलनाडु के 40 लोग साथ में रहे। मुनिसंघ के विहार में पैदल भी चलकर आहारादि रूप वैय्यावृत्य करके विशेष पुण्य का संचय किया।

7 वर्ष की प्रभावना : बना इतिहास :-

परम पूज्य गुरुवरश्री आर्जवसागरजी महाराज ने ससंघ तमिलनाडु में जो सात साल रहकर के बहुत ही अद्भुत धर्म प्रभावना की है उसने इतिहास का रूप ले लिया। जहाँ की भाषा नहीं जानते हों, जहाँ के व्यक्ति से कोई पहचान नहीं हो, जहाँ का भोजन भी कुछ अलग है फिर ऐसे प्रदेश में सात साल रह करके इतनी बड़ी प्रभावना करना सरल बात नहीं है।

मुनिश्री 108 आर्जवसागरजी महाराज ने तमिल में रहते समय आहार में कभी एक महिने गेहूँ छोड़ दिया था क्योंकि तमिल के लोग चावल का भोजन अधिक करते हैं अतः साधना हेतु मुनिश्री ने गेहूँ छोड़ा था। फिर तमिल के लोगों ने कहा, नहीं महाराजजी, गेहूँ हम लोग भी खाते हैं ऐसा कहकर मुनिश्री को गेहूँ का आहार लेने का आग्रह किया। फिर कभी एक महिने तक घी का त्याग कर दिया था। लोगों के पूछे जाने पर मुनिश्री बोले कि सुना है कि यहाँ घी नहीं खाते। फिर लोगों ने कहा कि नहीं महाराजजी, घर-घर में गाय-भैसें भी हैं; तो घर में ही घी बनाकर उपयोग करते हैं ऐसा कहने पर मुनिश्री ने घी लेना प्रारम्भ किया। कभी दूध छोड़ कर रहे, कभी फल छोड़ के रहे, ऐसे मुनिश्री बहुत कठिन साधना के साथ ऐसी अपूर्व प्रभावना की। पहले तमिलनाडु में 10-15 वर्ष में एक महाराजजी आ जाते थे वो भी विरले ही होते थे। उनके साथ चौका लगाने वाले साथ रहते थे। तब तमिल के लोग उनके चौके में जो समान चाहिए देकर कभी आहार दे सके तो देकर आते थे। लेकिन चौका लगाने का काम अधिक नहीं पड़ा था। परन्तु जब मुनिश्री आर्जवसागरजी आये और उनके साथ में जो पाण्डिचेरी, सेलम वाले

तमिलनाडु लेकर आये थे वो लोग साथ थे। उनसे मुनिश्री ने कहा कि अब तुम लोग गाँव-गाँव साथ नहीं चलोगे जहाँ तक गाँव नहीं था वहाँ तक तो ठीक था। लेकिन जहाँ पर जैन लोग हैं वहाँ तुम लोग साथ नहीं रहोगे। तो मारवाड़ी लोग कहने लगे महाराजजी, तमिल के लोग चौका लगाना नहीं जानते (रोटी बनना नहीं जानते) इसलिए हम लोग साथ में रहेंगे। तब मुनिश्री ने कहा नहीं, जो तमिल के लोग चौका लगायेंगे वहीं जाऊँगा। भले ही वे हमारे लिए पानी पिलाये, या चावल खिलाये, उन्हीं के हाथ का लेऊँगा ऐसा नियम लेकर तमिलनाडु वालों के ऊपर करुणा करके उनको सौभाग्य दिया। मारवाड़ी लोगों को आँखों को सजल बनाकर जाना पड़ा। फिर धीरे-धीरे तमिल के लोग चौका लगाने में अभ्यस्त हो गये। कई बाधायें आने पर भी मुनिश्री सहते रहे कभी अपने मुख से यह नहीं कहा कि ऐसा आहार बनाना या वैसा बनाना। ऐसी मुनिश्री की पावन चर्या बहुत प्रंशसनीय रही। आज भी तमिलनाडु के लोग हर वर्ष आचार्यश्री के दर्शन करने जाते हैं और यथा अवसर मुनि संघ में चौका भी लगाते हैं। हर समय मुनिश्री आर्जवसागरजी का ही उपकार स्वप्न में भी नहीं भुलाते मुनिश्री की 7 वर्ष की प्रभावना सुन करके भारत के लोगों को यह मालूम पड़ा कि तमिलनाडु में भी इतनी संख्या में जैन हैं। अन्यथा तो लोग यह पूछते थे कि तमिलनाडु में जैन लोग हैं क्या? जब से मुनिश्री 108 आर्जवसागरजी महाराजजी तमिलनाडु आये तब से उनकी अपूर्व प्रभावना सुनकर विभिन्न संघस्थ साधुगण भी तमिलनाडु की ओर विहार करने लगे। अन्यथा तो पहले कोई विरले ही आये होंगे। मुनिश्री के सात साल के प्रवास में अनेक उपलब्धियाँ हुईं। हजारों लोग संसार भ्रमण के कारण रूप मिथ्यात्व से छूटकर सम्यग्दृष्टि बने। करीब 28 गाँवों में पाँच वर्ष के कोर्स वाली पाठशालायें प्रारम्भ हुईं। श्रुतकेवली भद्रबाहु स्वामी सेवादल बना। श्रुतकेवली मासिक पत्रिका प्रारम्भ हुईं। त्रिशालादेवी महिला मण्डल बना। धर्म सेवा संघ बना। विशाखाचार्य तपोनिलय का निर्माण हुआ। व्रत, संयम, षोडसकारण,

दशलक्षण आदि व्रत के साथ श्रावक साधना संस्कार शिविर में भाग लेने हेतु लोग उत्साहित हुये। अनेक ग्रन्थों का स्वाध्याय व प्रकाशन हुआ। बहुत जैन लोग अभिषेक, पूजा स्वहस्त से करने लगे। सात वर्ष में सात जिनालय तैयार होकर सात पंचकल्याणक हुये। सबसे बड़ी उपलब्धि तो यह रही कि वहाँ पर मुनिश्री आर्जवसागरजी की प्रेरणा एवं आशीर्वाद से लोगों में व्रत संयम भी लिये, 20 प्रतिमाधारी लोग बने। उनके नाम इस प्रकार हैं- 1. मुनिश्री सुभद्रसागरजी (ग्यारह प्रतिमा लेकर क्षुल्लक फिर ऐलक फिर मुनि बने) 2. श्री शिवादिनादन् जैन मद्रास-(सात और 10वीं प्रतिमा ली थीं और चारित्र शुद्धि व्रत की साधना की) 3. श्री जेन्नादन जैन गूनम्बाड़ी- (2 प्रतिमा) 4. श्री धन्यकुमार जैन पोन्नूर-(तीसरी प्रतिमा) 5. श्री पद्मराज जैन वंधवासी (पहली प्रतिमा चारित्रशुद्धि व्रत के साथ) 6. श्री ब्र. शांतकुमार जैन (2 प्रतिमा) 7. श्रीमति सुलोचना देवदास जैन वंधवासी (2 प्रतिमा) 8. श्रीमति राजकुमारी श्री सी. कुमार वंधवासी (1, 5, 7 प्रतिमा वर्तमान में आर्यिका राजितमति माताजी समाधिस्थ) 9. श्रीमति गुणा श्री जिनदास जैन वंधवासी (1 प्रतिमा) 10. ब्र. वाणी श्री जैन चेय्यार (1, 7 प्रतिमा) वर्तमान में आ. उपशममति माताजी) 11. श्रीमति पट्टाम्मा जैन मद्रास (1 प्रतिमा) 12. श्रीमति सूर्याम्मा जैन मद्रास (1, 7 प्रतिमा चारित्र शुद्धि व्रत के साथ वर्तमान में आ. संगतमति माताजी) 13. श्रीमति विजयलक्ष्मी श्री देवकुमार जैन चेय्यार (1 प्रतिमा) 14. ब्र. पद्ममालिनी जैन वंधवासी (1, 5, 7, 8 प्रतिमा) वर्तमान में संघस्थ आ. प्रतिभामति माताजी) 15. श्रीमति कांचना जैन श्री पार्श्वराज जैन कोरकोट्टै-(1 प्रतिमा) 16. श्रीमति नागलक्ष्मी अम्मा जैन कन्नलम् (1 प्रतिमा) 17. श्रीमति ज्वलामालिनी श्री राजशेखर जैन पुदुकामूर (1 प्रतिमा) 18. श्री धनदेवन् जैन वेलूर (1 प्रतिमा) 19. श्रीमति तारा जैन तिरुपणमूर (3 प्रतिमा) इस तरह ये सब व्रती तमिलनाडु से बने और तमिलनाडु में अन्य प्रदेश से ब्र. नरेश जैन, सागर ने अतुलसागर क्षु. ऐ. बने थे। ब्र. राजकुमार जैन

सिरगुप्पी कर्नाटक ने 7 प्रतिमा ली (मुनि श्री नमिसागर बने थे) और ब्र. पायप्पा जैन हडशशि कर्नाटक ने ब्रह्मचर्य व्रत व प्रतिमा ली थी (वर्तमान में मुनिश्री पायसागरजी)। इन सभी लोगों की साधना स्थली तमिलनाडु रही। इस तरह मुनिश्री आर्जवसागरजी ने जो सात वर्ष तक धर्म प्रभावना की है वह हमेशा के लिए इतिहास के रूप में बनी रहेगी। जैसे बचपन में हाथ पकड़ करके चलना सिखाते हैं वे माता पिता होते हैं। वैसे ही धर्म के मार्ग पर जो चलना सिखायें वे ही गुरु होते हैं। इसलिए तमिलनाडु वालों के लिए एक ही गुरु हैं। वे गुरुवर मुनिश्री आर्जवसागर जी महाराज। इस प्रकार गुरुवर ने जो लोगों पर करुणा व उपकार किया उसका ऋण कभी भी भवों भवों तक भी नहीं चुकाया जा सकता। तमिलनाडु के उद्धारक गुरुवर की धर्मप्रभावना हमेशा ऐसी चलती रहे ऐसी हम मंगल भावना भाते हैं।

बेंगलूर की धर्म प्रभावना:-

तमिलनाडु से ससंघ विहार करते हुए गुरुवर मुनिश्री आर्जवसागरजी ने बेंगलूर में जय-नगर, विजय नगर, H.A.L (विमानपुर) आदि मन्दिरों का दर्शन करते हुए प्रवचन माला के द्वारा धर्मप्रभावना की। बहुत साल के बाद मुनिश्री का दर्शन पाकर श्रावक गण बहुत हर्षित हुये और बेंगलूर में ही सन् 2002 का चातुर्मास करने का नम्र निवेदन किया।

तुमकुर व चन्द्रगिरि क्षेत्र दर्शन:-

मुनिवर ससंघ कर्नाटक की राजधानी बेंगलूर से विहार करके तुमकुर शहर में पधारे। वहाँ पर कुछ दिन ठहरकर प्रवचन दिया और पास में स्थित चन्द्रगिरि क्षेत्र का भी दर्शन किया।

बिदरे जिनालय दर्शन:-

मुनिद्वय तुमकुर से विहार करके बिदरे गाँव गये। वहाँ के मूलनायक भ. सुपार्श्वनाथ का दर्शन किया। कुछ दिन का प्रवास रहा। जिसमें सम्यग्दर्शन आदि विषयों पर प्रवचन दिये। जिससे वहाँ के श्रावकगण गुरुदेव से बहुत

प्रभावित हुये और चातुर्मास के लिए निवेदन किया और चातुर्मास के बाद सम्मेदशिखरजी तक यात्रा कराने के लिए तैयार हो गये। श्रावकों में बहुत भक्ति थी। लेकिन वर्षायोग के योग्य वातावरण (प्रासुक भूमि) न होने के कारण मुनिवर वहाँ से भी विहार कर गये।

शिमोग्गा प्रवेश :-

मुनिश्री 108 आर्जवसागरजी महाराज एवं मुनिश्री सुभद्र सागर जी महाराज बिदरे से भद्रावती आदि नगरों में अपने प्रवचन आदि द्वारा प्रभावना करते हुए उनका ससंघ वर्षायोग हेतु शिमोग्गा नगर के श्रावक गणों के नम्र निवेदन से गाजे-बाजे एवं श्रावकों के जयकार के साथ शिमोग्गा नगर में मंगल प्रवेश हुआ। यह विहार बिदरे के पच्चण्णा जैन परिवार ने बड़ी भक्ति पूर्वक करवाया था।

शिमोग्गा वर्षायोग प्रभावना:-

शिमोग्गा नगर के श्रावक गणों ने मुनिवर श्री 108 आर्जवसागरजी महाराज ससंघ से चातुर्मास हेतु नम्र निवेदन किया। फिर आषाढ़ शुक्ला चतुर्दशी के दिन मंगल कलश स्थापना पूर्वक चातुर्मास प्रतिष्ठापन का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। सुबह प्रवचन चलता था जिसमें श्वेताम्बर लोग भी प्रवचन सुनने आते थे। फिर दोपहर में रत्नकरण्डक श्रावकाचार पर उद्‌बोधन गुरु मुख से सुनने मिलता था। बच्चों के संस्कार हेतु धार्मिक पाठशाला भी प्रारम्भ हुई और इस जिनालय में यह पहला चातुर्मास था। पाण्डाल में सामूहिक षोडसकारण पर्व पूजाएँ चलीं तथा दशलक्षण पर्व में श्रावक साधना संस्कार शिविर भी लगाया गया जिसमें तमिलनाडु आदि बाहर गाँव से पधारे सैकड़ों लोगों ने भी शिविर में भाग लिया। बड़ी धर्मप्रभावना के साथ हर्षोल्लास के साथ यह पर्व प्रथम बार ही शिमोग्गा नगर में मनाया गया। फिर दीपावली में वर्षायोग का निष्ठापन हुआ। तत्पश्चात् पिच्छि परिवर्तन, कण्ठपाठ प्रतियोगिता आदि कार्यक्रम सानंद सम्पन्न हुआ।

यलवट्टी में धर्म प्रभावना:-

शिमोग्गा से वीरापुरा-हान्गल आदि गाँव से विहार करते हुए मुनिश्री ससंघ यलवट्टी गाँव पहुँचे। वहाँ पर पाठशाला के माध्यम से बच्चों को संस्कार दिया एवं प्रतिदिन कन्नड़ में प्रवचन दिये क्योंकि गाँव के लोग हिन्दी नहीं जानते थे इसलिए मुनिश्री आर्जवसागरजी ने कन्नड़ में ही उनको धर्म उपदेश दिये और यह गाँव आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज के शिष्य मुनिश्री पुण्यसागरजी महाराजजी के पूर्व अवस्था का गाँव था। फिर वहाँ से धारवाड़, करविन्कुप्पा पहुँचे जहाँ सदलगा पंच कल्याणक हेतु लोग निवेदन करने आये फिर बेलगाँव आदि गाँवों में विहार करते हुये मुनिवर ने धर्म की बड़ी प्रभावना की।

सदलगा पंचकल्याणक हेतु निवेदन:-

बेलगाँव से विहार करके मुनिश्री आर्जवसागरजी ससंघ चिक्कोडी नगर पहुँचे वहाँ पर मंगल प्रवचन हुआ और दोपहर में 40-50 ब्रह्मचारिणी बहनें एवं आ. विद्यासागरजी के पूर्व अवस्था के भ्राता एवं कमेटी के लोग चिक्कोड़ी आये। और आचार्यश्री विद्यासागरजी के जन्म भूमि पर बने श्री शान्तिनाथ जिनालय के पंचकल्याणक में अपना परम सान्निध्य देने के लिए नम्र निवेदन किया फिर मुनिश्री ने अपने गुरुवर आचार्यश्री विद्यागसारजी महाराज को आज्ञा पाने हेतु पत्र लिखकर उनके पास इन्दौर ब्रह्मचारीजी को भेजा था। फिर चिक्कोड़ी से विहार करके सदलगा में गाजे-बाजे के साथ मंगल प्रवेश हुआ एवं महाव्रती गण, आर्यिका गुरुमति आदि आगवानी के लिए आये आर्यिकायें एवं बहिनों ने बड़े आदर पूर्वक मुनिश्री की तीन-तीन परिक्रमा लगाकर अपनी भक्ति दिखाई इस प्रकार मंगलमय रूप से सदलगा में मुनिश्री आर्जवसागरजी का प्रवेश हुआ।

सदलगा पंचकल्याणक कार्यक्रम:-

सदलगा पंचकल्याणक में मुनिश्री का मंगल प्रवचन विशाल पाण्डाल में हजारों लाखों की संख्या में जनता के बीच हुआ था एवं आचार्यश्री पर स्वयं

लिखित कविता भी सुनाई थी और तमिल भाषा में भी प्रवचन किया था। मूलनायक श्री शान्तिनाथ भगवान की प्रतिमा पर दीक्षा विधि संस्कार एवं विधिनायक प्रतिमा पर अंकन्यास, सूर्यमंत्र आदि व केवलज्ञान की पूर्ण विधि संस्कार करने का सौभाग्य मुनिश्री आर्जवसागरजी को मिला था। इस पंचकल्याणक में आचार्यश्री के संघ के मुनिश्री नियमसागरजी, मुनिश्री आर्जवसागरजी, मुनिश्री उत्तमसागरजी, मुनिश्री पायसागरजी, मुनिश्री पुण्यसागरजी, मुनिश्री अपूर्वसागरजी, मुनिश्री अक्षयसागरजी, मुनिश्री सुपार्श्वसागरजी और आर्यिका गुरुमति आदि 80 आर्यिकायें थी। अन्य संघ के मुनिश्री जिनभूषण महाराज आदि मुनि लोग एवं आर्यिकायें, क्षुल्लक आदि भी पधारे थे, करीब 100 पिच्छियाँ थी। मुनिश्री आर्जवसागर महाराज कुछ दिनों तक अपने गुरु संघ के मुनियों के साथ मिलकर एक साथ रहे और पंचकल्याणक होने के बाद जिस दिन मुनिश्री विहार करने वाले थे उस दिन सब आर्यिकाओं ने आकर ''तीर्थोदय काव्य'' के कुछ पद्य सुने। फिर विहार करने के वक्त लोग थोड़े दिन और रुकने के लिए निवेदन कर रहे थे, लेकिन महाराजजी ने बोरगाँव के लिए विहार कर दिया। विहार में भेजने हेतु थोड़े दूर तक आर्यिकायें और बहिनें आयीं और उन्होंने भक्ति पूर्वक तीन-तीन परिक्रमायें लगाई थीं। बहुत भक्ति थी उनमें और वे पूर्व से ही मुनिश्री आर्जवसागरजी को भगवान करके पुकारती थीं। क्योंकि इनकी चर्या एवं मुद्रा ऐसे ही रही।

दहीगाँव यात्रा:-

मुनिश्री विहार करते हुए बोरगाँव आये। वहाँ आदिसागरजी की गुफा भी देखी थी। उनके बड़े आकार का कमण्डल रखा हुआ था। ये वे आदिसागरजी थे जिनको चा.च.आ. शान्तिसागरजी महाराज अपने कंधे पर बिठा करके दूधगंगा और वेदगंगा नदियों को पार कराते थे। फिर वहाँ से समडोली गाँव गये थे। यहीं पर चा.च.आ. शान्तिसागरजी को आचार्य पद

मिला था। पश्चात् वहाँ से इचलकरंजी गये। वहाँ पर कुछ दिन का प्रवास रहा। भव्यों को अमृतमयी वाणी से धर्मोपदेश दिया एवं पाठशाला भी खुलवायीं। फिर नाते-पुते गाँव में करीब 15 दिन के वास्तव्य में स्वाध्याय एवं प्रवचन से प्रभावना की तथा दहीगाँव क्षेत्र का दर्शन किया। यह विहार वर्धमान सुसाइटी (इचलकरंजी) के दीपचन्दजी और उनकी माँ तथा मास्टर सा. जो वर्तमान में आ. वर्धमान सागर जी (दक्षिण) हैं उन्होंने करवाया था।

करमाला में ग्रीष्मकालीन वाचना:-

दहीगाँव से गाँव-गाँव विहार करते हुए मुनिश्री आर्जवसागरजी करमाला आये। भक्तों ने ग्रीष्मकालीन प्रवास के लिए निवेदन किया। मुनिश्री के 16वें मुनि दीक्षा के भव्य कार्यक्रम के साथ करमाला नगर में सम्पन्न वाचना में कुन्दकुन्द के साहित्य पर प्रवचन चले। शाम को बच्चें को संस्कार देने वाली पाठशाला भी खुलवाई। वर्षायोग हेतु समाज का बहुत आग्रह होते हुए भी मुनिवर फिर वहाँ से विहार करके अहमदनगर आदि गाँव होते हुए नासिक पहुँचे। यह विहार परेश दोशी, रमनलालजी आदि करमाला वालों ने करवाया था।

गजपंथा सिद्धक्षेत्र दर्शन:-

नासिक से मुनि श्री गजपंथा सिद्धक्षेत्र की ओर विहार किया। गजपंथा पहुँचकर सिद्धक्षेत्र पहाड़ी पर वंदना की। जहाँ से गजकुमार स्वामी से लेकर 7 बलभद्र और 8 करोड़ मुनि मोक्ष गये हैं। ऐसे यह क्षेत्र का कण-कण पवित्र है, महान है। मुनिश्री ने पहली बार मुनि अवस्था में इस सिद्ध क्षेत्र का दर्शन किया।

सिद्धक्षेत्र मांगीतुंगी का दर्शन:-

मुनिश्री वहाँ से मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्र पर आये। तलहटी के मन्दिरों का दर्शनकर सुबह पर्वत की वंदना के लिए गये। सीढ़ियाँ चढ़कर जब मांगी पर्वत पर पहुँचे तो वहाँ की प्रतिमाएँ, गुफाएँ देखकर पूरी थकावट को भूल गये।

बहुत आनन्द से दर्शन किया। फिर तुंगी पर्वत की चोटी पर पहुँचने के पश्चात् ऐसा लगा कि वास्तव में सिद्धशिला पर ही आ गये हों। इस सिद्धक्षेत्र से राम, हनुमान, सुग्रीव, नील, महानील सहित 99 करोड़ मुनि मोक्ष गये हैं। शाश्वत सिद्ध क्षेत्र सम्मेदशिखरजी के पश्चात् इस क्षेत्र का ही नम्बर आता है जहाँ से अधिक मुनि लोग मोक्ष गये हों। ऐसे सिद्ध क्षेत्र अपने मन को बहुत ही पावन पुनीत बनाते हैं।

कोपरगाँव प्रवेश:-

इसी क्षेत्र कोपरगाँव के लोग वर्षायोग करवाने के भाव सँजोकर चौका लेकर आये थे और साथ में ही हो गये पश्चात् सिद्धक्षेत्र से विहार करके मुनिश्री आर्जवसागरजी चान्दबड़ पहुँचे। वहाँ पर पहाड़ी की गुफा में स्थित भगवान का दर्शन व ध्यान किया। फिर मनमाड़, थवला आदि गाँवों से होते हुए वर्षायोग हेतु कोपरगाँव नगर के लोगों के नम्र निवेदन से बारह साल के अन्तराल के पश्चात् पुनः बहुत भक्ति भावना के साथ गाजे-बाजे एवं हजारों जन समूह के जयघोष के साथ कोपरगाँव नगर में मंगल प्रवेश हुआ। मांगीतुंगी से लेकर यह पूरी यात्रा कोपरगाँव वालों ने करवायी।

कोपरगाँव में सन् 2003 का वर्षायोग:-

चातुर्मास के लिए कोपरगाँव की जैन समाज ने मुनिश्री से विनम्र निवेदन किया। फिर भक्ति पाठ के साथ कलश स्थापना करते हुए सन् 2003 का चातुर्मास प्रतिष्ठापन कोपरगाँव नगर में हुआ। सुबह प्रवचन मालायें चलीं। दोपहर में सर्वार्थसिद्धि का स्वध्याय किया। शाम को बच्चों की कक्षा पाठशाला चलाई। फिर मोक्ष सप्तमी पर्व पर मूलनायक पार्श्वनाथ भगवान के समक्ष निर्वाण कल्याणक हर्षोल्लास के साथ मनाया और छोटी-छोटी अनेक बच्चियों ने भी उस दिन उपवास किये। षोडसकारण पर्व पर मुनिश्री ने स्वयं तृतीय बार एक आहार एक उपवास करते हुए श्रावकों का भी उत्साह बढ़ाया (जिसमें एक महीने में तीन अन्तराय होने पर तीन-तीन उपवास जैसे तीन बार

होने पर भी अपनी क्रियाओं को दृढ़ संकल्प पूर्वक पालन करते हुए महातपस्वी हुए)। जो सोलहकारण पर्व करते हैं वे आगे तीर्थंकर भी बन सकते हैं इत्यादि उस पर्व की महिमा बताई। इससे षोडसकारण पर्व में 32 दिनों तक बहुत लोगों ने व्रत संयम के साथ यह पर्व मनाया। किसी ने एक आहार-एक उपवास के साथ यह व्रत किया। और भविष्य में भी यह व्रत करते रहेंगे ऐसा वहाँ के लोग सोलहकारण व्रत संकल्प लिया यह बहुत आनन्द की बात है। पर्यूषण पर्व में श्रावक साधना संस्कार शिविर चला था। दशलक्षण पर्व में करीब 35 लोगों ने दस-दस उपवास किये। जहाँ पर गुरु का हाथ या आशीर्वाद रहता है वहाँ पर श्रावकों की आत्म शक्ति जागृत हो जाती है। पर्व में तत्त्वार्थ सूत्र शास्त्र को अर्थ सहित पढ़ाया। सुबह दस धर्म पर प्रवचन हुये। फिर शाम को धर्म भावना शतक सुनायी गयी। यहीं पर यह शतक बनायी गयी थी पश्चात् अक्टूबर महिना में एक अहिंसा रैली निकलवायी थी। जिसमें हजारों लोगों ने भाग लिया। अहिंसा का प्रचार किया। अहिंसा विषय पर डाक्टर्स सम्मेलन का कार्यक्रम रखा गया था। जिसमें डॉ. के.एम.गंगवाल, पूना आदि 25 डाक्टर्स लोगों ने भाग लेकर इस कार्यक्रम में अपने वक्तव्य दिये, अहिंसा की महिमा बताई। कौन-सी वस्तु कैसी बनती है? किससे बनाते हैं? कौन-सी शुद्ध है, कौन-सी अशुद्ध है इत्यादि अनेक बातों पर प्रकाश डाला और भी विद्वत्गणों ने अपने वक्तव्य दिये और मुनिश्री आर्जवसागरजी ने भी अहिंसामय उद्बोधन दिया।

पश्चात् वारसाणुवेक्खा शास्त्र जो कुन्दकुन्दाचार्य से रचित है, उस पर प्रवचन दिया और सम्यग्दर्शन रूढ़िवाद पर भी विशेष प्रवचन दिया। जिससे श्रावकगण वीतरागता के सच्चे पुजारी बने। प्रत्येक रविवार को विशेष प्रवचन होता था। पश्चात् प्रश्नमंच भी रखा जाता था। शास्त्र संगोष्ठी भी रखी थी जिसमें प्रवचन के पूर्व वहीं के श्रावक लोग एक-एक विषय पर अपना भाव व्यक्त करते थे। इससे माईक पर बोलने का और अपने ज्ञान को भी वृद्धिंगत करने का मौका मिला। दीपावली के समय चातुर्मास निष्ठापन हुआ और

पिच्छि परिवर्तन का कार्यक्रम हुआ तथा कण्ठ पाठ प्रतियोगिता भी हुयी थी। प्रतियोगियों को पुरस्कारित भी किया गया था। चन्द्रप्रभु मंदिर में भी वास्तव्य रहा तथा जहाँ कलशारोहण एवं पाण्डाल बनाकर त्रिदिवसीय महामण्डल विधान भी रचाया गया जिसमें अपूर्व धर्म प्रभावना हुई इस प्रकार यह चातुर्मास एक ऐतिहासिक चातुर्मास रहा।

एलोरा क्षेत्र दर्शनः-

कोपरगांव के चातुर्मास के उपरान्त गुरुवर आर्जवसागर जी का विहार उत्तर दिशा की ओर हुआ। यवला गाँव होते हुए नाँदगाँव पहुँचे। वहाँ पर मंगल प्रवचन भी दिया और पाठशाला की भी शुरुआत करवाई। फिर वहाँ से एलोरा गये। वहाँ पर पहाड़ी की गुफाओं में स्थित अनेक जिन प्रतिमाओं का एवं मनोज्ञ कलायुक्त श्री पार्श्वनाथ भगवान का दर्शन किया। गाँव के गुरुकुल में स्थित मन्दिर में ठहरकर प्रवचन आदि के माध्यम से धर्मप्रभावना की।

पारोला में सिद्धचक्र विधानः-

पश्चात् मुनिश्री ने सेवूर, कन्नड़ आदि गाँव से विहार करते हुए पारोला नगर में प्रवेश किया। श्रावकों के नम्र निवेदन से यहाँ मुनिश्री के सान्निध्य में सिद्धचक्र महामण्डल विधान का आयोजन हुआ। अनेक इन्द्र-इन्द्राणियाँ वीतराग सिद्धप्रभु की अर्चना में सम्मिलित हुये। मुनिश्री ने विशेष प्रवचन दिये और एलोरा से संघ में सम्मिलित हुए एलोरा के व्रती श्री चुन्नीलाल कासलीवाल ने मुनिश्री से निवेदन किया कि हमें भी आप मोक्षमार्गी बनायें। फिर मुनिश्री ने उनको क्षुल्लक दीक्षा दी और क्षु. अर्पणसागरजी नाम रखा था। साथ ही, बाल संस्कार हेतु जैन पाठशाला भी स्थापित की।

बावनगजा चूलगिरि सिद्धक्षेत्र दर्शनः-

पारोला से अम्बलनेर आदि गाँव से विहार करते हुए मुनिश्री आर्जवसागरजी सिद्धक्षेत्र बावनगजा पर पहुँचे। जहाँ से साढ़े पाँच करोड़ मुनि एवं रावण के पुत्र इन्द्रजीत और कुम्भकर्ण मोक्ष गये हैं ऐसे चूलगिरि पर्वत का दर्शन किया और विशाल 84 फुट ऊँची श्री आदिनाथ प्रतिमा का दर्शन कर

आनन्दित हुये। पश्चात् तलहटी में स्थित 20 मन्दिरों में विराजित प्राचीन प्रतिमाओं का दर्शन किया।

बाकानेर में महावीर जयंती:-

पश्चात् बावनगजा से विहार करके मुनिश्री सिंघाना, मनावर आदि गाँव से होते हुए बाकानेर आये। वहाँ पर भगवान महावीर स्वामी की जन्म जयन्ती पर्व विमानोत्सव के साथ मनाया गया। पश्चात् मुनिश्री का प्रवचन हुआ तथा मुनिश्री की 17 वाँ दीक्षा जयन्ती दिवस भी मनाया गया।

सिद्धक्षेत्र सिद्धवर कूट दर्शन:-

तत्पश्चात् मुनिश्री का पूर्व दिशा की ओर विहार हुआ और धर्मपुरी, धामनोद, महेश्वर, मण्डलेश्वर, बड़वाह आदि गाँव में धर्मप्रभावना करते हुए सिद्धक्षेत्र सिद्धवरकूट में मंगल प्रवेश हुआ। वहाँ पर सभी मन्दिरों का दर्शन किया। नर्मदा नदी के किनारे स्थित यह सिद्धक्षेत्र बहुत ही मनोरम दृश्यपूर्ण लगता है। यहाँ से दो चक्री, दश कामकुमार आदि आठ करोड़ मुनिराज मोक्ष गये हैं। ऐसे इस पावन भूमि का कण-कण पवित्र है।

इन्दौर गोम्मटगिरि दर्शन:-

मुनिश्री का मंगल विहार सिद्धवरकूट से इन्दौर महानगर की ओर हुआ। पहले गोम्मटगिरि का दर्शन किया। त्रिकाल चौबीसी एवं बाहुबली भगवान दर्शन करके कालानी नगर, छत्रपति नगर गये। छत्रपति नगर में ऐ.निशंकसागरजी आगवानी के लिये आये। मन्दिर का दर्शन कर तत्त्वचर्चा आदि हुई। पश्चात् विजयनगर, पलासिया, कंचन बाग, समवशरण मन्दिर (श्राविका व उदासीन आश्रम), इन्द्रभवन, काँच मन्दिर, तिलक नगर आदि स्थानों पर प्रवचन आदि से धर्मप्रभावना करते हुए धार्मिक पाठशालाएँ भी खुलवाईं एवं समवसरण मंदिर में 8 दिनों का शिविर भी आयोजित किया गया जिसमें आवाल वृद्धों ने धार्मिक शिक्षा प्राप्त की और इस शिविर में पं. रतनलालजी एवं आश्रम के भैया व बहिनों का अच्छा सहायोग रहा।

पंचबालयति में शिलान्यास:- पंचबालयति मन्दिर में मन्दिर की वेदी हेतु मुनिश्री के सान्निध्य में शिलान्यास किया गया था।

पलासिया में कल्पद्रुम विधान:-

इन्दौर के पलासिया मन्दिर में मुनिश्री आर्जवसागरजी के सान्निध्य में कल्पद्रुम महामण्डल विधान हुआ था जिसमें बहुत लोगों ने इन्द्र-इन्द्राणी बनकर प्रभु की अर्चना की। विधान के बीच में मुनिश्री का प्रवचन होता रहा और समाज के सभी लोगों ने चातुर्मास के लिए निवेदन भी किया।

हाटपीपल्या विहार:-

विधान के उपरान्त मुनिश्री ने तिलकनगर होते हुए हाटपीपल्या की और विहार किया। हाटपीपल्या के श्रावक लोग व मुनि दीक्षा के भाव रखने वाले ब्रह्मचारी भी विहार में साथ चले। बाजे के साथ मुनिश्री का मंगल प्रवेश हाटपीपल्या नगर में हुआ। धार्मिक पाठशाला शुरू करवाई और कुछ दिन के प्रवास में प्रवचन आदि के माध्यम से धर्मप्रभावना की। समाज के सभी लोगों ने मुनिश्री के चरणों में चातुर्मास के लिए नम्र निवेदन करते हुए श्रीफल अर्पित किये।

आष्टा और सीहोर की ओर विहार:-

पश्चात् मुनिश्री का विहार सोनकच्छ तरफ हुआ। सोनकच्छ में प्रवचन आदि हुआ। पश्चात् वहाँ से आष्टा गये यहाँ भी समाज के लोगों ने वर्षायोग हेतु श्रीफल अर्पित किये। आष्टा में भी प्रवचन आदि से धर्मप्रभावना करते हुए सीहोर गये। वहाँ पर मुनिश्री वैराग्यसागरजी आगवानी के लिए आये। वहाँ मुनिश्री आर्जवसागरजी के ससंघ सान्निध्य में सिद्धचक्र महामण्डल विधान प्रारम्भ हुआ। भक्तों ने इस विधान में उत्साहपूर्वक लाभ लिया तथा मुनिश्री का युगल प्रवचन भी होता था। मुनिश्री के धर्म प्रभाव से प्रभावित होकर समाज के सब लोगों ने चातुर्मास के लिए नम्र निवेदन किया। लेकिन मुनिश्री का मंगल विहार भोपाल राजधानी की ओर हो गया।

बैरागढ़, जैन नगर मन्दिर दर्शनः-

मुनिश्री ने ससंघ प्रथम बार भोपाल में बैरागढ़ मन्दिर की भव्य मूर्तियों का दर्शन किया और जैन नगर में प्रवेश किया वहाँ भी मन्दिर का दर्शन किया। म.प्र. की राजधानी भोपाल नगर में मुनिश्री आर्जवसागरजी का यह मंगल प्रवेश बहुत ही भक्ति भाव से हर्षोल्लास के साथ श्रावकों ने आगवानी पूर्वक किया। टी.टी. नगर (भोपाल) का वाद्य ध्वनि के साथ बहुत ही मंगलमय भासित हो रहा था।

टी.टी. नगर में 2004 का वर्षायोगः-

टी.टी. नगर के भक्तों के कई बार किये गये निवेदन के पश्चात् मुनिश्री आर्जवसागर जी महाराज का ससंघ चातुर्मास टी.टी. नगर(टीन शेड मन्दिर) को मिला। शुभ तिथि शुभ मुहुर्त पर चातुर्मास कलश स्थापना का कार्यक्रम हुआ। चातुर्मास में मुनिश्री ने श्रावकों के लिए रत्नकरण्डक श्रावकाचार पढ़ाया एवं संघस्थ लोगों के लिए सर्वार्थसिद्धि और कातन्त्ररूपमाला (पंच संधि प्रकरण) पढ़ायी। फिर सोलहकारण, दशलक्षण आदि पर्व संगीतमय पूजन के साथ सामूहिक रूप से मनाया गया। जिसमें सर्विस करने वाले, कॉलेज में पढ़ने वाले व पढ़ाने वाले ऐसे बहुत से लोगों ने भी इस मंगल महापर्व सोलहकारण में भाग लिया।

सर्वोदय सम्यग्ज्ञान शिक्षण शिविर प्रारम्भः-

मुनिश्री के सान्निध्य में टी.टी. नगर में सर्वोदय सम्यग्ज्ञान शिक्षण शिविर का पहली बार प्रारम्भ हुआ, जिसमें आगरा के पं. रतनलालजी बैनाड़ा ने अपने शिक्षक समूह पण्डित वर्ग को प्रेषित किया। प्रतिदिन तीनों समय विभिन्न कक्षायें चली थीं।

2 अक्टूबर को मुख्यमंत्री का आगमनः-

वर्षायोग के अन्तर्गत 2 अक्टूबर को अहिंसा-शाकाहार व कवि सम्मेलन रखा गया था। जिसमें म.प्र. के तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री बाबूलाल

गौर ने भी पधारकर मुनिश्री आर्जवसागरजी का आशीर्वाद लिया। पश्चात् मुनिश्री का प्रवचन भी सुना। मुनिश्री द्वारा रचित अमूल्य कृति तीर्थोदय काव्य (सप्तशती) जिसका प्रथम प्रकाशन हुआ था उसका मुख्यमंत्रीजी के कर कमलों द्वारा विमोचन किया गया। मुनिश्री ने मुख्यमंत्री को अहिंसा परमो धर्म हेतु पशुधन बचाने, हिंसा रोकने व डिसेक्शन बन्द करने हेतु कहा। उन्होंने दूसरे दिन ही डिसेक्शन बन्द करने हेतु हस्ताक्षर कर दिये और अनेक न्यूज पेपरों में समाचार प्रकाशित हुआ। अब स्कूल आदि शिक्षण क्षेत्रों में डिसेक्शन बन्द इस समाचार को देखकर सभी लोग आनन्दित हो गये। मुख्यमंत्री के आगमन से बहुत बड़ा लाभ हुआ और कुछ दिनों में मेडीकल कॉलेज हेतु जमीन भी सरकार की ओर से प्राप्त हुयी। इस कवि सम्मेलन में तत्कालीन परिवाहन मंत्री श्री उमाशंकर गुप्ता, श्री हुकुमचन्दजी सांवला, कवि चन्द्रसेन व नरेन्द्र एवं उनके साथी आदि लोग भी मंच पर उपस्थित थे।

विद्वत् संगोष्ठी:-

परम सौभाग्य एवं हर्ष के मंगल अवसर पर श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, न्यूमार्केट टी.टी. नगर, भोपाल में द्वि दिवसीय विद्वत् संगोष्ठी का प्रभावक आयोजन दिनांक 6 एवं 7 नवम्बर 2004 को 'वर्तमान परिपेक्ष में षोडसकारण भावनाओं का व्यवहारिक रूप' विषय पर हुआ। जिसमें श्री निरंजनलाल बैनाड़ा आगरा, डॉ. श्री रतनचन्द्र जैन, भोपाल, डॉ. श्री जयकुमार जी जैन मुजफ्फरनगर, डॉ. श्री एल.सी. जैन जबलपुर, डॉ. श्री श्रेयांशकुमारजी बड़ौत, प्राचार्यश्री निहालचन्दजी बीना, प्राचार्य श्री लालचन्द्र राकेश गंजबासौदा, डॉ. डी.पी. सिंह, कुलपति वि.वि. सागर, श्री सुरेश जैन आई.ए.एस. भोपाल आदि करीब 25 विद्वान पधारे और उन विद्वत् लोगों अपने दिये गये विषयों पर अनुसंधनात्मक आलेखों का वाचन किया एवं शंका समाधान पाया। साथ ही प.पू. धर्मप्रभावक गुरुवर मुनिश्री आर्जवसागरजी महाराज के समीक्षात्मक उद्बोधन व प्रवचनों का शुभअवसर भी प्राप्त हुआ। जिसमें भारी संख्या में

श्रावकों ने ज्ञान की श्री वृद्धि कर पुण्य लाभ लिया।

पश्चात् वर्षायोग के निष्ठापन के अन्तिम चरण में पिच्छिका परिवर्तन का कार्यक्रम हुआ एवं कण्ठपाठ प्रतियोगिता कार्यक्रम भी हुआ एवं विजयी प्रतियोगिताओं को पुरस्कारित किया गया। इस प्रकार सन् 2004 का यह पावन वर्षायोग (4 महीने का योग) सानंद सम्पन्न हुआ।

एशबाग में पंच कल्याणक:-

धर्मप्रभावक अध्यात्म योगी मुनिश्री आर्जवसागरजी के ससंघ परम सान्निध्य में उमराव बाग दुल्हा के बड़े मैदान में श्रीमज्जिनेन्द्र पंचकल्याणक एवं त्रय गजरथ महोत्सव बहुत ही हर्षोल्लास के साथ सानंद सम्पन्न हुआ। जिसमें वहाँ के दो मंजिला जिनालय की मूर्तियाँ एवं अन्य जगह की मूतियाँ भी प्रतिष्ठित करायी गयी थी। यहाँ सूरत से आहुरानगर की मानस्तम्भ की प्रतिमायें भी आयी थीं। मुनिश्री सुधासागरजी के पास से समाचार लेकर वहाँ के लोग आये थे और इसी कार्यक्रम में भोपाल शंकराचार्य नगर के ब्र. जितेन्द्र भैया ने मुनिश्री से आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत ग्रहण किया था। मुनि आर्जवसागरजी से मिलने के लिए मुनिश्री विशुद्धसागरजी भी ससंघ गजरथ के दिन पधारे थे। साथ ही आर्यिका श्री मृदुमति के संघ की आर्यिकाएँ भी उपस्थित होती रहीं। इस कार्यक्रम में विधि-विधान के निर्देशक पं. अमरचंदजी शाहपुर वाले थे।

पश्चात् मुनिश्री ने वहाँ से ससंघ विहार करके नेहरु नगर, जवाहर चौक, शाहपुरा, नयापुरा, पद्मनाभ नगर, चौक मन्दिर, मंगलवारा और पास के ही क्षेत्र समसगढ़ का दर्शन किया। बहुत पुराने शान्ति, कुन्थु, अरहनाथ भगवान के जिन बिम्बों व जिनालय का दर्शन पाकर मन प्रफल्लित हो गया। पश्चात् भोजपुर क्षेत्र का भी दर्शन किया। वहाँ पर कुछ दिन ठहरकर शान्ति का आनन्द लिया और मंडीद्वीप इत्यादि स्थानों पर जिन दर्शन, प्रवचन, धार्मिक पाठशाला आदि के माध्यम से धर्म प्रभावना की।

पंचशील नगर में समवशरण विधान:-

मुनिश्री आर्जवसागरजी के ससंघ सान्निध्य में पंचशील नगर के मन्दिर में श्री समवशरण महामण्डल विधान का आयोजन किया गया। बहुत लोगों ने इन्द्र-इन्द्राणी बनकर जिनवर प्रभु की भक्ति की। मंच पर परिवाहन मंत्री उमाशंकर गुप्ता गुरुवर के दर्शनार्थ पधारे मुनिश्री ने भी प्रवचन आदि के माध्यम से भक्ति की महिमा बताई। पश्चात् मुनिश्री का विहार हबीबगंज की ओर हुआ। थोड़े समय ठहरकर फिर शंकराचार्य नगर के श्रावकगणों के निवेदन से वहाँ पधारे और वहाँ सिद्धचक्र महामण्डल विधान मुनिश्री के सान्निध्य में फाल्गुन अष्टान्हिका महापर्व पर सम्पन्न हुआ। जिसमें आनन्द के साथ समस्त नर-नारी बाल, युवा, वृद्ध सभी लोगों ने इस सिद्धचक्र महामण्डल विधान में भाग लिया।

चौक मंदिर में महावीर जयंती:-

भोपाल में श्री दि. जैन चौक मन्दिर की कमेटी के भव्यों द्वारा विशेष निवेदन किये जाने पर महावीर जयन्ती के विशाल जुलूस एवं सामूहिक आयोजन में मुनिश्री को आमंत्रित किया गया। इसमें मुनिश्री का पावन सान्निध्य रहा एवं सामूहिक सभा में विशेष प्रवचन दिये। इसी संदर्भ में मुनिश्री आर्जवसागरजी के 18 वें दीक्षा दिवस को भक्तिभाव पूर्वक मनाने का भोपाल वालों को सौभाग्य मिला।

अशोका गार्डन में पंचकल्याणक:-

भोपाल के अशोका गार्डन में त्रय गजरथ पंचकल्याणक महामहोत्सव सम्पन्न हुआ। इसमें जिनालय की द्वितीय, तृतीय मंजिल सम्बन्धी प्रतिमाओं की प्रतिष्ठा करायी गयी। यह पंचकल्याणक विशाल ग्राउण्ड में हुआ था। इसमें श्री उमाशंकर गुप्ता आदि नेतागण भी पधारे थे जिन्होंने मुनिश्री के समक्ष उद्बोधन में कहा कि अगर जैन न होते तो हम अहिंसा का संदेश कैसे सीख पाते? जैन श्रावक इतनी अहिंसा पालते हैं कि चींटी को भी बचाकर चलते हैं, रात्रि भोजन नहीं करते हैं, पानी छानकर पीते हैं और फिर दिगम्बर साधु की

चर्या कितनी महान होती होगी। यह पंचकल्याणक पं. गुलाब चन्द पुष्प और पं. जयकुमार निशान्त एवं ब्र. नितिन भैया के प्रतिष्ठाचार्यत्व में समाज के निवेदन से सानन्द सम्पन्न हुआ।

पश्चात् श्रुतपञ्चमी पर्व बड़े हर्षोल्लास के साथ दि. जैन मन्दिर अशोका गार्डन भोपाल में सामूहिक रूप से मनाया गया। इसमें मुनिश्री द्वारा खोली गयी पाठशालाओं की सम्हाल हेतु जिम्मेदारी समाज को सौंपी गयी। इस ग्रीष्मकालीन अवसर के दौरान पद्मनाभ नगर दि. जैन मन्दिर में धर्मप्रभावना के साथ थोड़े दिन प्रवास किया था। धार्मिक पाठशाला की शुरुआत की। इस प्रकार करीब 11 महीने तक भोपाल वासियों को मुनिश्री का सान्निध्य मिला। पश्चात् दि.जैन मन्दिर बैरागढ़, अशोका गार्डन, शंकराचार्य नगर के भक्तों के वर्षायोग कराने की भावना निवेदित किये जाने पर भी मुनिश्री का कुराना क्षेत्र दर्शन करते हुए बीनागंज की ओर विहार हो गया। भक्तों की आँखों से भक्ति की अश्रुधारा बहने लगी और मुनिश्री के विहार में बहुत दूर तक भक्तों का आने-जाने का तांता लगा रहा। अशोका गार्डन के श्री राजेन्द्र जैन चौधरी, सीमेंट वालों का परिवार और उनके साथी लोगों ने मुनिश्री का विहार बीनागंज, राधोगढ़, आरोन तक सम्पन्न करवाया। आरोन की समाज ने मुनि श्री के एक सप्ताह के वास्तव्य में ही वर्षायोग का भरपूर निवेदन किया। वैसे तो अशोकनगर समाज द्वारा पूर्व से ही वर्षायोग का निवेदन किया गया था। फिर वे लोग बीनागंज से ही विहार कराने बहुत लोग शामिल हो चुके थे। मुनिश्री बजरंगगढ़ अतिशय क्षेत्र का दर्शन करते हुए गुना शहर में पधारे। जहाँ मुनिश्री की आगवानी बहुत प्रभावना के साथ सम्पन्न करायी। बड़ी भावना के साथ तीन दिन प्रवचन चले और वर्षायोग हेतु मुनिश्री से निवेदन भी किया गया। फिर अशोकनगर भक्तों की विशेष भक्ति से मुनिश्री का ससंघ मंगल विहार साड़ोरा नगर होते हुए अशोक नगर की ओर हो गया।

अशोक नगर में 2005 का वर्षायोग:-

पश्चात् मंगल बेला में विशेष वाद्यों एवं जय-जयकारों और अपार जन समूह

के साथ अशोकनगर में मुनि श्री का ससंघ मंगल प्रवेश सम्पन्न हुआ। फिर स्थापना के पूर्व मुनिश्री आर्जवसागरजी के दर्शनार्थ आर्यिका अकंपमति का ससंघ का आगमन हुआ और उनका मुनिसंघ की सन्निधि में एक साथ प्रवचन हुआ एवं आहार चर्या तथा त्रिकाल चौबीसी के दर्शन के उपरान्त वे वर्षायोग हेतु गुना की ओर चली गयीं। मुनिश्री आर्जवसागरजी ससंघ का सन् 2005 का वर्षायोग अशोकनगर में सम्पन्न हुआ। चातुर्मास की मंगल स्थापना होने के बाद गंज मन्दिर के बड़े सभागार में ध्यान के विषय पर प्रवचन चले। पश्चात् समाज के विशेष आग्रह से गंज बाजार में बनाये गये बड़े पण्डाल में साढ़े तीन महिने तक प्रातः कालीन प्रवचन, रविवारीय मध्यान्ह विशेष प्रवचन और सोलहकारण, दशलक्षण पर्व का संगीतमय सामूहिक आयोजन एवं इन्द्रध्वज महामण्डल विधान, कण्ठपाठ प्रतियोगिता आदि कार्यक्रम सम्पन्न हुये। इस वर्षायोग में विभिन्न प्रदेशों के अतिथिगण दर्शनार्थ आते रहे। इसमें तमिलनाडु से श्री देवकुमार जैन आदि लोग तथा ब्र. वाणीश्री व ब्र. क्षेमश्री आदि के साथ आये और कुछ दिन चौका लगाकर मुनि संघ की नवधा भक्ति पूर्वक आहार चर्या भी करवायी और जिन्होंने मुनिश्री से चारित्र शुद्धि व्रत लिया था ऐसी तमिलनाडु की श्रीमती सूर्याम्मा ने भी इस वर्षायोग में आकर अपने 500 वें उपवास के दिन, मेरे बारह सौ चौंतीस उपवास पूर्ण हो जायें, ऐसी मंगल भावना से व संयम में आगे बढ़ने की भावना से आशीर्वाद लिया। मुनिश्री के चरणों में श्रीफल अर्पित किया। मुनिश्री ने सभी को गुरुवर आचार्यश्री विद्यासागरजी के पास आगे बढ़ने का आशीर्वाद दिया।

सि.क्षे. सम्मेदशिखर यात्रा हेतु निवेदनः-

पश्चात् पनागर से पधारी ब्र. व्रति महिला शीलरानी नायक (जो कि अपने बेटी के साथ दुर्ग में रहती हैं) अपने किन्ही परिजन के पास आयी थी और उन्होंने मुनिश्री के पास आकर अपनी आन्तरिक भावना प्रकट की कि हे महाराजजी! हमने सुना है कि आपकी सम्मेदशिखरजी की यात्रा शेष है यह

अच्छा योग मिला है कि मेरी यह मंगल भावना बहुत दिनों से चल रही थी कि मैं किसी मुनि संघ की सिद्ध क्षेत्र सम्मेदशिखरजी की यात्रा अपने द्रव्य से सम्पन्न कराऊँ। आप हमें सौभाग्य दीजिएगा हम आपकी यात्रा सानन्द सम्पन्न करवायेंगे। हमें अशोकनगर के लोगों का ऊपरी सहयोग (आपके साथ पैदल चलने का) मिल जायेगा ऐसा हमने ज्ञात कर लिया। हमारे पारिवारिक लोग पूर्ण यात्रा में सहयोग अवश्य करेंगे। ऐसा निवेदन सुनते ही मुनिश्री आर्जवसागरजी ने कहा कि मुझे सम्मेदशिखरजी यात्रा करने का पूर्ण मन है लेकिन अभी समय लगेगा क्योंकि ईशागढ़ में सिद्धचक्र विधान सम्पन्न कराना है थोबोनजी, चन्देरी, सेरोंनजी और पपोराजी, आहारजी, तथा खजुराहो आदि क्षेत्रों का दर्शन भी करना है। इसी बीच मुनि श्री निर्वेगसागरजी भी मिलने की इच्छा रखते हैं तथाहि रीवा तक समाज होते हुए अगर आप लोग गाड़ी मोटर में व्यवस्था लेकर चलेंगे तो हमारे संघ की परम्परा के अनुकूल नहीं होगा और शोभा भी नहीं देगा। अतः जहाँ से समाज न हो और जब वहाँ तक हम पहुँच जाये तो फिर व्यवस्था हेतु देख लेना ऐसा मुनिश्री ने कहा। मुनिश्री का उसी नगर के त्रिकाल चौबीसी आदि पाँच मन्दिरों में भी पदार्पण हुआ। जिसमें प्रवचन, आहारचर्या आदि से बड़ी प्रभावना हुयी। पश्चात् वर्षायोग निष्ठापन और पिच्छी परिवर्तन के उपरान्त ईशागढ़ समाज के विशेष निवेदन पर सिद्धचक्र महामण्डल विधान का आयोजन रखा गया।

ईशागढ़ में सिद्धचक्र महामण्डल विधानः-

उस ऐतिहासिक नगर ईशागढ़ की ओर मंगल विहार हुआ। ये वही स्थान था जहाँ पर कविश्री भागचन्द्र भागेन्दु द्वारा महावीराष्टक की रचना की गयी थी। ऐसे ऐतिहासिक स्थान पर मण्डल विधान सानन्द सम्पन्न होने के उपरान्त अतिशय क्षेत्र थोवोनजी की ओर विहार हुआ, वहाँ मुनिश्री आर्जवसागरजी के लिए अतिशय क्षेत्र पर मूलनायक श्री आदिनाथ भगवान के समक्ष वह दिन भी याद आया जब आचार्यश्री विद्यासागरजी के कर कमलों से

सन् 1987 में क्षुल्लक आर्जवसागरजी ने इसी क्षेत्र पर ऐलक दीक्षा धारण की थी। इस बात को सुनकर गुरुवर के संघस्थ क्षु. अर्पणसागरजी ने अपने गुरु आर्जवसागरजी से मूलनायक आदिनाथ भगवान के समक्ष ऐलक दीक्षा धारण की। तदुपरान्त मुनिश्री का पावन विहार चन्देरी नगर की ओर हो गया। चन्देरी की चौबीसी का दर्शन करके खंदारगिरि अतिशय क्षेत्र पर आदिनाथ भगवान का दर्शन किया। थोड़े दिन के प्रवास के उपरान्त मुनिश्री का विहार अतिशय क्षेत्र सेरोंनजी के दर्शनार्थ हो गया। उस अतिशय क्षेत्र सेरोंनजी की सैकड़ों वर्ष प्राचीन मनोज्ञ प्रतिमाओं का दर्शन करके मुनिवर ने ललितपुर की ओर ससंघ विहार किया।

ललितपुर नगर के भव्यों ने मुनिश्री की भव्य आगवानी की। जिस आगवानी में मुनिश्री सरलसागरजी के शिष्य श्री मंगलानन्दसागरजी नगर के बाहर पधारे फिर अभिनन्दनाथ भगवान के अतिशय क्षेत्र पर आगमज्ञ मुनिश्री सरलसागरजी से मिलन हुआ और क्षेत्र दर्शन के उपरान्त नगर के बड़े मन्दिर की ओर विहार किया। तब मुनिश्री प्रशांतसागरजी, मुनिश्री निर्वेगसागरजी और मुनिश्री समाधिसागरजी ने अध्यात्म योगी मुनिश्री आर्जवसागरजी की आगवानी के लिए थोड़े दूर लेने आये और सभी महाराज का आपस में वात्सल्य पूर्वक भव्य मिलन हुआ। जिसे देखकर जनता भाव विभोर हो गई और कुछ दिनों तक सभी मुनिश्री एक साथ एक जगह ठहरे और प्रवचन तथा धार्मिक पाठशालाओं की स्थापना के कार्यक्रम सम्पन्न हुये। अटामंदिर आदि में कुछ दिन की विशेष प्रभावना के उपरान्त मुनिश्री का ससंघ विहार टीकमगढ़ की ओर हो गया। मुनिश्री प्रशांतसागरजी आदि महाराज कुछ दूर तक भेजने आये। पश्चात् नमोस्तु कर अपने पूर्व स्थान पर चले गये।

टीकमगढ़ में मंगल प्रवेश:-

पश्चात् मुनिश्री आर्जवसागरजी का ससंघ विहार गणेशप्रसाद वार्णी चिरोंजा बाई के हसेरा गाँव से होते हुए टीकमगढ़ पहुँचे। नगर प्रवेश पर

मुनिश्री आर्जवसागरजी की आगवानी के लिए नगर के श्रावक गणों के साथ मुनिश्री पावनसागरजी पधारे और दोनों संघों का मिलन हुआ और सब मिलकर नगर के प्रधान मांझ मन्दिर पहुँचे। वहीं पर सामूहिक प्रवचन आदि प्रभावना के कार्यक्रम चल ही रहे थे कि बीच में आर्यिकारत्न आदर्शमति माताजी अपने विशाल संघ के साथ मुनिश्री आर्जवसागरजी के दर्शनार्थ दि. जैन मांझ मन्दिर में पधारीं। सदलगा के बाद करीब तीन वर्ष के उपरान्त उन्हें मुनिश्री आर्जवसागरजी का दर्शन मिला। एक साथ प्रवचन व आहार चर्या सम्पन्न हुई और उन्होंने बहुत आनन्द के साथ मुनिश्री के रत्नत्रय, स्वास्थ आदि के बारे में पूछा और मुनिश्री के समक्ष सम्मेदशिखर यात्रा की शुभकामना की। तदुपरान्त मुनिश्री आर्जवसागरजी की पावन प्रेरणा से उनके ही सान्निध्य में नया मन्दिर नन्दीश्वर कालानी आदि करीब 11 दि. जैन मन्दिरों में धार्मिक पाठशालाओं की स्थापना बड़े भव्य कार्यक्रम के साथ सम्पन्न की गयी।

तदुपरान्त मुनिश्री का ससंघ विहार अतिशय क्षेत्र पपोराजी तरफ हो गया। पपोराजी पहुँचकर वहाँ के करीब 108 जिनालयों का दर्शन एवं वन्दना की। मुनिश्री को सम्मेदशिखरजी विहार कराने हेतु पनागर की शीलरानी नायक और अशोकनगर की विहार की टीम एवं अपनी साथी महिलाओं के साथ मुनिश्री की यात्रा कराने उपस्थित हो गयी।

एक दिन शुभ तिथि पर दयोदय गौशाला के मैदान में विशाल पण्डाल बनाकर टीकमगढ़ की समाज की ओर से मुनिश्री आर्जवसागरजी, मुनिश्री पावनसागरजी का प्रवचन का कार्यक्रम रखा गया। जहाँ मुनिश्री द्वय संघ ने गौशाला का अवलोकन कर अपने पावन प्रवचन से जनता को जीव दया व अहिंसा का संदेश सुनाया, और समाज द्वारा मुनिश्री के ससंघ सम्मेदशिखरजी की यात्रा कराने के लिए पधारे यात्रा संघ का स्वागत सम्मान किया। गौशाला टीकमगढ़ के अध्यक्ष नायक जी एवं पं. गुलाबचन्द पुष्प आदि भी इस सभी में उपस्थित थे।

सम्मेदशिखरजी यात्रा प्रारम्भः-

तदुपरान्त मुनिश्री का पावन विहार यात्रा संघ के साथ अहारजी सिद्ध क्षेत्र की ओर हो गया। इस सिद्ध क्षेत्र पर श्री 1008 शान्ति, कुन्थु, अरनाथ भगवान का एवं त्रिकाल चौबीसी एवं मदन कामदेव के पंच पहाड़ी मोक्षस्थान का दर्शन किया। पश्चात् तीन दिन अपने वास्तव्य के दौरान पूर्व में 1985 में हुये आचार्यश्री के साथ चातुर्मास एवं क्षुल्लक दीक्षा का संदर्भ याद करते हुए दर्शन और ध्यान आदि से अपूर्व आनन्द को प्राप्त किया। फिर छतरपुर की ओर विहार किया। क्रम-क्रम से खरगापुर में पाठशाला की शुरुआत करवाकर गाँव-गाँव में धर्म की प्रभावना करते हुए छतरपुर शहर के अतिशय क्षेत्र डेरापहाड़ी क्षेत्र पर मंगल प्रवेश हुआ। फिर डेरा पहाड़ी पर स्थित जिनालयों का दर्शन करके नगर के जिनालयों में मंगल प्रवचन आदि द्वारा प्रभावना करते हुए (उपाध्याय ज्ञानसागरजी के सान्निध्य में सम्पन्न होने वाले) गुरुवर के प्रवचनों की प्रभावना से पंचकल्याणक का पात्र चयन कार्यक्रम भव्यता के साथ सम्पन्न हुआ। धर्मप्रभावक मुनिश्री आर्जवसागरजी के सान्निध्य में पंचकल्याणक सम्पन्न हो ऐसी भावना पूर्वक विशेष निवेदन करने के उपरान्त भी गुरुवर का विहार खजुराहो क्षेत्र की ओर हो गया। खजुराहो जब पहुँचे तब अद्‌भुत कलात्मक मन्दिरों को देखकर बड़ी प्रसन्नता हुई। तीन दिन के प्रवास में वहाँ के जैनियों के साथ अन्य देशवासियों की तुलना में खजुराहो के मन्दिरों की कला को देखने आये विदेशियों ने मुनिश्री के दर्शन, आहार चर्या आदि देखकर उनके निर्ग्रन्थ रूप को अपने कैमरे में अंकित करने का सौभाग्य प्राप्त किया।

पश्चात् मुनिश्री का ससंघ विहार हीरों की खदानों वाले पन्ना नगर की ओर हो गया। पन्ना नगर में अपने संस्कारों के प्रवचनों के द्वारा धार्मिक पाठशाला खोलने की प्रेरणा दी। तदुपरान्त देवेन्द्र नगर से होते हुए सतना नगरी पहुँचे। नगर के भव्यों द्वारा मुनि संघ की मंगल आगवानी की गई। मुनिश्री ने

विशाल मन्दिर में ठहरकर पाँच दिनों के वास्तव्य में अपने प्रवचनों के प्रभाव से धार्मिक पाठशाला का उद्घाटन करवाया। पश्चात् समाज के लोगों द्वारा ठहरने हेतु बहुत निवेदन करने के उपरान्त भी मुनिश्री ने रीवा नगर की ओर विहार कर दिया। रीवा में स्वल्प प्रभावना के उपरान्त अपने सम्मेदशिखर यात्रा संघ के साथ हनुमना पहुँचे और दि. जैन चैत्यालय परिवार वालों ने बाजार में सर्व मतावलम्बियों के बीच मुनिश्री के मंगल प्रवचन का आयोजन किया। फिर मिर्जापुर की विहार कर यहाँ अल्प प्रवास में धार्मिक पाठशाला खोली। यहाँ की समाज काफी उत्साहित थी। यहाँ से विहार करते हुए पीपापुल से गंगा को पार करते हुए क्रमशः बनारस पहुँचे।

अनियत विहारी-परिषह विजयी गुरु महाराजः-

जब बनारस की ओर जा रहे थे तब शीतकालीन वातवरण था। सुबह से मुनिराज ने विहार प्रारम्भ कर दिया था। करीब 10-15 कि.मी. जाने के बाद एक पुल आया। चौका लगाने वाले पुल के नीचे से निकल गये और एक स्थान पर चौका लगाया। लेकिन गुरु महाराज को स्थान नहीं मालूम होने के कारण वे पुल के ऊपर से निकल गये। थोड़े पीछे से आये ऐलकजी को श्रावकों ने बता दिया कि पुल के नीचे से जाना है तो सही स्थान पर पहुँच गये। लेकिन गुरु महाराज चलते-चलते करीब 30 कि.मी. चल दिये 11:30 बज गया था। तब भ.पार्श्वनाथ का जन्म स्थान भेलूपुरम स्थान पर पहुँचे। वहाँ के लोगों को मालूम नहीं होने के कारण कोई चौके की व्यवस्था भी नहीं थी। गुरु महाराज ने देखा पौने बारह बज गया है। हो सकता है श्रावक सामायिक के बाद कमण्डल में पानी भर दें इसलिए उन्होंने उपवास तो नहीं लिया। सामायिक में बैठ गये। जो साथ में चलकर आये थे व्रती (अशोक धुर्रा) गये एक लौकी खरीदी और चावल, दाल वगैरह खरीद लाये और कुएँ का पानी मन्दिर में ही था। वहाँ से पानी खींच कर गरम किया और लौकी की सब्जी और खिचड़ी बनायी और जाकर के कमण्डल में पानी भर दिया। पहले मोबाइल वगैरह का ज्यादा

प्रचलन नहीं था। इसलिए वे पता नहीं कर पा रहे थे कि अन्य लोग कहाँ रह गये? वहाँ पर गुरुवर का आगमन न होने पर सब लोग सोच में पड़ गये। और ऐलकजी को आहार कराके, स्वयं करके वहाँ से निकले। यहाँ पर गुरुवर सामायिक से उठे और कमण्डल में पानी भरा देख कर शुद्धि करके आहार के लिए निकले। उन्होंने गुरुवर को पड़गाया, विधिवत् शुद्धि बगैरह बोलकर निवेदन किया। गुरु महाराज आहार के लिए खड़े हुये। पानी लिया, उसके बाद खिचड़ी और उबली हुयी लौकी चलायी। इतने में वे संघ के साथ चलने वाले लोग भी आ गये। उन लोगों ने भी शुद्ध वस्त्र पहनकर आहार दिया। अब कुछ और बना तो नहीं सकते हैं जो था वो चलाया, और निरंतराय आहार हो गया। संघ; नगर के मंदिरों व कल्याणक स्थानों के दर्शनार्थ वहीं पर रुक गया। सब ने उन व्रती को धन्यवाद दिया। कम-से-कम गुरु को पानी और खिचड़ी तो चलायी उपवास नहीं होने दिया। 30 कि.मी. चलकर आयें और उपवास होता तो कितना दुःख होता। उस दिन से सब को सबक मिला कि गुरुवर के साथ सही स्थान मालूम होने वाले को चलना चाहिए। गुरुवर से सबने क्षमायाचना की। देखिए! कितनी कठिन परिषह विजय है। 30 कि.मी. पैदल चलकर आना ही महान् तपस्या है उसमें भी पूर्ण आहार नहीं मिलना, उसमें भी किंचित् भी किसी पर क्रोध नहीं करना, मुख मिलान नहीं करना इत्यादि बातों को समता पूर्वक सहना बहुत विरले ही मुनिराज कर पाते हैं। उन विरले मुनिराजों में से एक हैं गुरुवर आर्जवसागरजी महाराज; धन्य हैं।

वहाँ पार्श्वनाथ भगवान का जन्म स्थान भेलुपुरम् में स्थित भ. पार्श्वनाथ की विशाल प्रतिमा का दर्शन किया। पाँच दिनों के वास्तव्य के दौरान भदेनीघाट (जैन घाट) पर कल्याणक स्थानों का एवं संस्कृत विद्यालय और पं. भूरामल शास्त्री (महाकवि आचार्य ज्ञानसागरजी महाराज) के अध्ययन स्थान का अवलोकन कर मेदाग्नी के जिनालय सारनाथ के भ. श्रेयांसनाथ का जन्मकल्याणक स्थान को देखते हुए चन्द्रपुरी जाकर चन्द्रप्रभु भगवान का

जन्मकल्याणक के स्थान का मन्दिर भी देखा। फिर वहाँ से डेरीहोनसोन गये। वहाँ भी भव्यों को गुरु प्रवचन का लाभ मिला। श्री कन्हैयालालजी सेठी ने मुनिश्री की सम्मेदशिखरजी की मंगल यात्रा में अपनी भावना समाहित की।

गया में मंगल प्रवेश:-

रफीगंज की ओर विहार किया। रफीगंज में प्रवचन एवं पाठशाला के कार्यक्रम से प्रभावना करते हुए गया नगर की ओर विहार कर दिया। जब गया नगर पहुँचे तब वहाँ की सकल दिगम्बर जैन समाज ने भव्य आगवानी की। पाँच दिनों तक बड़े मन्दिर की बड़ी धर्मशाला में ठहरकर मुनिश्री के पावन प्रवचनों का सकल समाज ने अपूर्व आनन्द लिया एवं मुनिश्री से प्रभावित होकर के धार्मिक पाठशाला हेतु मंगल कलश की स्थापना की, जिसमें विमल सेठी का विशेष उत्साह और लगन देखने में आई और यहीं पर मुनिश्री की विहार में साथ रहने हेतु तमिलनाडु से व्रती बहिनों (सात प्रतिमाधारी) अपनी माँ और बहिन को लेकर श्रीदेवन (दास) का आना हुआ।

राजगृही का दर्शन:-

तदुपरान्त मुनिश्री का मंगल विहार राजगृही की ओर हो गया। राजगृही पहुँचने के बाद तीन दिनों तक राजगृही की वंदना की। इसके बाद नालन्दा होते हुए कुण्डलपुर गये। जहाँ पर भ. महावीर के जन्म स्थान पर बने जिनालयों का दर्शन किया। फिर वहाँ से भ. महावीर का निर्वाण स्थान पावापुरी गये। वहाँ भी बड़े मन्दिर में तीन दिवस ठहरकर जल मन्दिर परिसर आदि मन्दिरों का दर्शन किया। फिर गौतम गणधर के मोक्ष स्थान गुणावा का दर्शन किया। वहाँ भी जल मन्दिर आदि का दर्शन करके कोडरमा-झूमरी तलैया पहुँचकर वहाँ के जिनालयों का दर्शन किया। फिर सरिया की ओर गमन किया। इसी बीच करीब 50-60 कि.मी. दूर से सम्मेदशिखरजी का दूर से ही दर्शन होने लगा। फिर सरिया पहुँचे, वहाँ जिनालय का दर्शन किया। जहाँ महावीर सेठी ने अधिक लाभ उठाया। आहार और प्रवचन के पश्चात् महावीर सेठी आदि ने

शिखरजी में कुछ दिन ठहरकर आपका लाभ मिले ऐसा निवेदन किया।

सि.क्षे. सम्मेदशिखरजी में भव्य मंगलप्रवेश:-

तत्पश्चात् गुरुदेव आर्जवसागरजी महाराज के ससंघ का सुदूर से पर्वत माला पर स्थित जिनालयों की टोंकों को निहारते हुए फाल्गुन अष्टाह्निका पर्व की चतुर्दशी को प्रातः काल की मंगल बेला में मधुबन में मंगल प्रवेश पूर्वक पदार्पण हुआ। वहाँ पर समाज के लोगों ने भव्य आगवानी की और भव्यों के नम्र निवेदन से दोनों कोठियों के दर्शनकर तेरहपंथी कोठी में ठहरे। मध्यान्ह में चतुर्दशी पर्व के दिन पाक्षिक प्रतिक्रमण किया।

सि.क्षे. सम्मेदशिखरजी का प्रथम दर्शन एवं वंदना :-

दूसरे दिन फाल्गुन शुक्ला पूर्णिमा को प्रातःकाल 6:00 बजे मुनिवर ससंघ पर्वत की वन्दना के लिए निकले सभी लोग बीच में मिल रहे मन्दिरों के दर्शन करते जा रहे थे और साथ ही पर्वत पर प्रभु की जय-जयकार लगा रहे थे बीच-बीच में "ॐ ह्रीं अर्हं श्री अनन्तानन्त परम सिद्धभ्यो नमः" मंत्र को उच्च स्वरों में बोलते जा रहे थे। और पर्वत पर बनी टोकों को बार-बार निहारते नमन करते जा रहे थे। पश्चात् शीतल नाला, गंधर्व नाला आदि को पार करते हुए करीब 7:50 बजे चौपड़ा कुंड पर बने जिनालयों में पार्श्वनाथ भगवान का दर्शन कर गणधर टोंक पर पहुँच गये। सभी लोगों ने उच्च स्वर में चौबीस भगवानों की एवं अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी की जय-जयकार लगाई। मानो ऐसा प्रतीत हुआ कि मेरु पर्वत या स्वर्ग पर पहुँच गये हों। जहाँ से अनादिकाल से अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठियों ने मोक्ष पाया ऐसे पर्वत की रज को पाकर गुरुवर के साथ सभी को ऐसे अपूर्व आनन्द का अनुभव हुआ जो वचनों में नहीं कहा जा सकता। यह गुरुवर आर्जवसागरजी के जीवन में सम्मेदशिखरजी की वन्दना का प्रथम अवसर था। ऐसे शुभ दिन सर्व प्रथम प्रातः 8:00 बजे की बेला में पूर्व दिशा की मुख करके बने गणधर टोंक में बने 35 चरणों का बड़े भाव विभोर होकर दर्शन किया और प्रसन्न चित्त के साथ सर्व गणधरों के चरणों में त्रि बार नमोस्तु कर कायोत्सर्ग किया, सिद्ध भक्ति पढ़ी फिर साथ में

जो शुद्ध वस्त्र में श्रावक लोग आये उनके द्वारा प्रासुक जल से किये गये चरणों का अभिषेक का गंधोदक गुरुवर के साथ सभी लोगों ने माथे पर लगाया। फिर टोंक की तीन-तीन प्रदक्षिणायें सभी ने लगाईं और भक्ति सह गुण-गाते हुए पूर्व दिशा की ओर मुख करके बने हुए ज्ञानधर कूट पर स्थित काले रंग के चरण वाली कुन्थुनाथ टोंक पर पहुँचे। वहाँ पर भी पूर्व की भांति नमोस्तु आदि क्रियायें कर फिर आगे बढ़कर पूर्व दिशा की ओर मुख करके बने मित्रधर कूट पर काले रंग के चरण वाली नमिनाथ टोंक पर पहुँचे। वहाँ भी कायोत्सर्ग आदि क्रियायें कर फिर दक्षिण की ओर मुख करके बने नाटक कूट में काले रंग की चरण वाली अरहनाथ की टोंक पर पहुँचे। वहाँ भी भक्ति आदि क्रियायें कर फिर बाजू में ही दक्षिण दिशा की ओर मुख करके बने संबल कूट पर काले रंग के चरण वाली मल्लिनाथ टोंक पर गये। वहाँ भी नमोस्तु आदि क्रियायें सम्पन्न कर फिर दक्षिण दिशा की ओर मुख करके बने संकुल कूट पर काले रंग के चरण वाली श्रेयांसनाथ की टोंक पर पहुँचे। वहाँ भी नमोस्तु-परिक्रमा आदि क्रियायें कर फिर थोड़े ऊपर चढ़कर पूर्व दिशा की ओर मुख करके बने सुप्रभकूट पर सफेद रंग के चरण वाली पुष्पदन्त भगवान की टोंक पर पहुँचे। वहाँ भी कायोत्सर्ग आदि क्रियायें कर फिर थोड़ा उतरकर दक्षिण दिशा की ओर मुख करके बने मोहनकूट पर काले रंग के चरण वाली पद्मप्रभु भगवान की टोंक पर गये और वहाँ भी नमोस्तु आदि क्रिया कर फिर थोड़ा नीचे उतरकर दक्षिण दिशा की ओर मुख करके बने निर्जरकूट पर काले रंग के चरण वाली मुनिसुव्रतनाथ भगवान की टोंक पर पहुँचे और वहाँ भी स्तुति, भक्ति आदि सम्पन्न कर फिर नीचे उतरकर और फिर चढ़ाई चढ़कर पूर्व दिशा की ओर मुख करके बने ललितकूट पर काले रंग के चरण वाली चन्द्रप्रभु टोंक पर पहुँचे, बस; वहाँ की हवा मिलते ही सारी थकान दूर हो गयी वहाँ भी नमोस्तु, कायोत्सर्ग आदि किया तथा फिर पुनः उतरकर; फिर चढ़कर दक्षिण दिशा की ओर मुख करके बने सफेद रंग के सबसे बड़े चरण वाली आदिनाथ टोंक पर पधारे और वहाँ भी भक्ति आदि की तथा फिर थोड़ा और ऊपर चढ़कर पूर्व

दिशा की ओर मुख करके बने विद्युतप्रभ कूट पर काले रंग के चरण वाली शीतलनाथ टोंक पर पहुँचे वहाँ भी नमोस्तु आदि कर फिर बाजू में ही दक्षिण दिशा की ओर मुख करके बने स्वयंप्रभ कूट पर काले रंग के चरण वाली अनन्तनाथ टोंक पर पहुँचे वहाँ भी स्तुति भक्ति की और फिर पुनः शीतलनाथ टोंक का दर्शन किया। फिर थोड़ा नीचे उतरकर पूर्व दिशा की ओर मुख करके बने धवलकूट पर सफेद रंग के चरण वाली संभवनाथ टोंक पर पहुँचे। वहाँ भी नमोस्तु आदि सम्पन्न की फिर उतरते हुए जल मन्दिर के पास से दूसरे रास्ते से ऊपर चढ़कर पश्चिम दिशा की ओर मुख करके बने सफेद रंग के पाँच चरण युगलों वाली वासुपूज्य भगवान की टोंक पर पहुँचे। वहाँ भी स्तुति भक्ति आदि को कर फिर वहाँ से दक्षिण की ओर ऊपर चढ़ते हुए पूर्व दिशा की ओर मुख करके बने आनन्द कूट पर काले रंग के चरण वाली अभिनन्दननाथ टोंक पर पहुँचे। वहाँ भी नमोस्तु आदि करके पश्चात् पुनः लौटकर नीचे उतर आये और जल मंदिर से होते हुए ऊपर चढ़कर कुन्थुनाथ टोंक का पुनः दर्शन करके फिर गणधर टोंक के दर्शनकर बाजू में ही दक्षिण दिशा की ओर मुख करके बने सुदत्तवर कूट पर काले रंग के चरण वाली धर्मनाथ टोंक पर पहुँचे। वहाँ भी नमोस्तु, कायोत्सर्ग आदि क्रिया की। फिर बाजू में ही पूर्व दिशा की ओर मुख करके बने अविचलकूट पर काले रंग के चरण वाली सुमतिनाथ टोंक पर पहुँचे वहाँ भी भक्ति आदि की। यहीं पर अचानक एक ऊँचे पूरे व्यक्ति ने चरण छुए और बोला कि मेरा नाम कर्ण सिंह यादव जैन है, मैं दिल्ली से आया हूँ, जैन धर्म पालता हूँ, वैसे पुलिस लाइन में हवलदार की पोस्ट पर हूँ, मैं रात्रि भोजन व जमीकंद भी नहीं लेता, तथा मेरी सम्मेद शिखर जी की 108 वंदनाएँ करने का संकल्प हैं, अभी 85 वीं वंदना चल रही हैं, हे गुरुवर! आप इस कार्य को आशीर्वाद दें और दिल्ली अवश्य पधारें, वहाँ हम आपके साथ रहकर आपकी विहार की व्यवस्था सम्हालेंगें। मुनि श्री आर्जवसागर जी ने उसे और उसके साथियों को आशीष देते हुए कहा; बहुत अच्छा है; आगे बात नीचे धर्म शाला में करेंगें। फिर थोड़े चढ़कर पूर्व दिशा की ओर मुख करके बने कुन्दप्रभ कूट

पर काले रंग के चरण वाली शांतिनाथ टोंक पर पहुँचे, वहाँ पर भी नमोस्तु आदि क्रिया कर फिर पूर्व दिशा की ओर मुख करके बने सबसे छोटे और सफेद रंग वाले चरण वाली महावीर टोंक पर पहुँचे और वहाँ भी कायोत्सर्ग आदि किया। फिर थोड़े ऊपर चढ़कर पूर्व दिशा की ओर मुख करके बने सुवीरकूट पर काले रंग के चरण वाली विमलनाथ टोंक पर पहुँचे, वहाँ भी नमोस्तु आदि किया। पश्चात् बाजू में बने पूर्व दिशा की ओर मुख करके बने प्रभासकूट पर काले रंग के चरण वाली सुपार्श्वनाथ टोंक पर पहुँचे और वहाँ भी स्तुति, भक्ति आदि की। पुनः विमलनाथ टोंक का दर्शन करते हुए नीचे उतरकर फिर चढ़ाई चढ़कर उत्तर दिशा की ओर मुख करके बने सिद्धवरकूट पर सफेद रंग के चरण वाली अजितनाथ टोंक पर पहुँचे वहाँ पर भी नमोस्तु, कायोत्सर्ग आदि किया। फिर उत्तर दिशा की ओर मुख करके बने सफेद रंग के तीन चरण युगलों वाली नेमिनाथ टोंक पर पहुँचे, वहाँ भी नमोस्तु आदि किया। पश्चात् चढ़ाई चढ़कर सबसे ऊँचे उत्तर दिशा की ओर मुख करके बने देशी पाषाण में बने प्रभु पार्श्वनाथ के चरण एवं इसी स्वर्णभद्रकूट के जिनालय में काले रंग के चरण वाली पार्श्वनाथ टोंक पर पहुँचे, वहाँ पर नमोस्तु, सिद्धभक्ति और कायोत्सर्ग आदि कर प्रदक्षिणा करके श्रावकों द्वारा किये गये अभिषेक को देखकर गंधोदक ग्रहण किया। इस तरह प्रातः 10 बजे तक सम्पूर्ण वंदना सम्पन्न हुई फिर साढ़े 10 बजे तक स्वर्णभद्रकूट पर ही ठहरकर पार्श्वनाथ के दर्शन, भक्ति और निर्वाण काण्ड का पाठकर कायोत्सर्ग रूप में प्रशस्त ध्यान करते हुए पर्वत से उतरते हुए मधुबन की ओर गमन किया और करीब 12 बजे समवसरण मन्दिर में आ गये। श्रावक लोग तो चौकों की ओर प्रस्थान कर गये और महाराजों और व्रती लोगों ने समवसरण मन्दिर में ही सामायिक की। फिर करीब डेढ़ बजे आहारचर्या के लिए निकले। तेरहपंथी कोठी में आहारचर्या के उपरान्त वहीं पर ठहरे। दो दिनों में इसी तरह तीन

वंदनायें सम्पन्न कीं, और एक दिन प्रवचन के समय तेरहपंथी कोठी में मध्यप्रदेश से शिखरजी तक यात्रा में साथ आये लोगों का सम्मान यात्रा की पुण्यार्जक शीलरानी नायक ने स्मृति चिन्ह प्रदान कर किया और तेरहपंथी कोठी के जिनमन्दिर के लिए स्वर्णिम लघु छत्र भी दान में दिया। पश्चात् अगले दिन प्रवचन के पूर्व तेरहपंथी कोठी के कमेटी के लोगों ने भी खुशी पूर्वक तीर्थ यात्रा कराने वाली अम्माजी को लेकर यात्रा कराने वालों का भी सम्मान किया।

गिरडीह की ओर विहारः-

इसी तरह एक सप्ताह रुकने के उपरान्त महावीर जयन्ती के निमित्त पालगंज मन्दिर का दर्शन करते हुए गुरुदेव मुनिश्री आर्जवसागरजी ससंघ ऋजुकूला नदी को (जहाँ पर महावीर भगवान को केवलज्ञान हुआ था) पार करके गिरडीह नगर पहुँचे।

ग्रीष्मकाल सन् 2006 में गिरडीह नगर में भव्य मंगल प्रवेश होने के उपरान्त दि. जैन समाज की कमेटी के द्वारा विशेष रुकने का निवेदन होने पर प्रतिदिन गुरुवर के प्रवचनों द्वारा विशेष प्रभावना हुई। एक शुभ दिन धार्मिक पाठशाला का उद्घाटन भी किया गया और महावीर जयन्ती महोत्सव और श्रीजी का रथोत्सव और गुरुवर का 19वाँ दीक्षादिवस विशेष प्रवचन पूर्वक सम्पन्न हुआ। एक दिन सम्मेद शिखरजी की समाज के द्वारा सम्मेदशिखरजी पुनः पधारने हेतु निवेदन किया। एक दिन उत्तरप्रदेश प्रकाश भवन के कमेटी द्वारा नवीन जिनालय का पंचकल्याणक में पधारने हेतु विशेष निवेदन किया गया और साथ ही झारखण्ड की राजधानी राँची नगर के वरिष्ठ कमेटी के लोगों द्वारा अपने नगर में वर्षायोग हेतु पधारने के लिए श्रीफल अर्पित किये गये। गिरीडीह आये विश्वहिन्दू परिषद प्रमुख प्रवीण तोगड़िया ने मुनिश्री आर्जवसागरजी के दर्शन कर पावन प्रवचन भी सुने। फिर पुनः मुनिवर ससंघ सहित सि.क्षे. सम्मेदशिखरजी पधारे। तेरहपंथी कोठी में ठहर करके जैनियों के घर-घर में आहारचर्या होते हुए 11 वन्दनायें सम्पूर्ण कीं और पर्वत की एक

परिक्रमा भी सम्पन्न हुई और शुभ मुहूर्त में बड़े उत्साह पूर्वक अपार जनसमूह के बीच बड़ी प्रभावना पूर्वक यू.पी. प्रकाश भवन का भव्य पंचकल्याणक जून 2006 में महोत्सव सम्पन्न हुआ।

सि.क्षे. सम्मेदशिखर जी में पंचकल्याणक:-

यह पंचकल्याणक वरिष्ठ प्रतिष्ठाचार्य पं. गुलाबचन्द्र पुष्प एवं पं. ब्र. जयकुमार 'निशान्त' के निर्देशन में सम्पन्न हुआ। इस पंचकल्याणक में जीवंधर जैन, गाजियाबाद और विजयकुमार जैन, अहमदाबाद आदि ने भी अपनी सक्रिय भूमिका निभाई। इस पंचकल्याणक में अनेक धार्मिक कार्यक्रम हुये। जिसमें एक दिन '**सम्यग्दर्शन**' के विषय पर विद्वत् संगोष्ठी हुयी। जिसमें प्रा. नरेन्द्र प्रकाश जैन, फिरोजाबाद; पं. गुलाबचन्द पुष्प, ब्र. जयकुमार 'निशान्त' आदि ने अपने विषयों का प्रस्तुतिकरण किया। ईसरी आश्रम से आये ब्र. कमल और ब्र. पवन जी ने अपने संस्कृत भाषा के भाषण में देव-शास्त्र-गुरु की महिमा गाई और अन्त में गुरुवर आर्जवसागरजी से समीक्षात्मक उद्बोधन प्राप्त हुआ। इसी तरह एक दिन धार्मिक कवि सम्मेलन भी सम्पन्न हुआ। जिसमें प्रा. नरेन्द्रप्रकाश जी जैन, श्री शिखरचन्दजी जैन (मुनिश्री के पूर्व पिताजी), पथरिया दमोह आदि को लेकर अनेक कवियों ने अपनी कविताओं की प्रस्तुति दी। अन्त में महाराजश्री ने भी अपनी आध्यात्मिक कविताएँ सुनायीं। इसी पंचकल्याणक में तमिलनाडु के तिरुवन्नामलै नगर से पधारे श्री अरुगदास जैन, श्री सुकुमारन् आदि अनेक लोग अपने नगर में नव निर्मित जिनालय की प्रतिष्ठा हेतु सर्व प्रतिमाओं को लाकर कार्यक्रम में सम्मिलित हुये। गुरुवर आर्जवसागरजी के कर कमलों से उन जिनबिम्बों की भी प्रतिष्ठा सम्पन्न हुई। कार्यक्रम के अन्त में कलशारोहण बिम्ब स्थापना और रथ यात्रा भारत के कोने-कोने से आये भव्य लोगों के बीच बड़ी प्रभावना पूर्ण ढंग से सम्पन्न हुई। यहाँ तक कि सम्मेदशिखरजी के परिसर में रहने वाले आदिवासी पुरुष, महिलाओं ने भी भक्ति पूर्वक उत्साह दिखाते

हुए नृत्य-गान आदि रूप से सांस्कृतिक कार्यक्रमों का प्रस्तुतिकरण किया। इस पंचकल्याणक के उपरान्त मधुबन समाज के द्वारा वर्षायोग हेतु नम्र निवेदन किये जाने पर भी झारखण्ड की राजधानी राँची जैन समाज के द्वारा वर्षायोग हेतु किये गये पुनः पुनः निवेदन के उपरान्त गुरुवर मुनिश्री आर्जवसागरजी का ससंघ विहार राँची की ओर हो गया।

ईसरी, हजारीबाग की ओर विहार:-

सिद्ध क्षेत्र सम्मेदशिखरजी से राँची की ओर होने वाले इस विहार में सर्वप्रथम ईसरी वालों को महाराजश्री का अच्छा लाभ मिला। जिसमें तीन दिनों के प्रवचन के माध्यम से धार्मिक पाठशाला की स्थापना की गयी। तदुपरान्त हजारीबाग नगर की ओर विहार हुआ। मुनिश्री प्रमाण सागरजी महाराज के माता-पितादि गृहस्थाश्रम के भव्यों के लिए भी मुनिश्री आर्जवसागरजी की नवधा भक्ति पूर्वक आहार चर्या करने को सोभाग्य मिला। वहाँ पर भी कुछ ही समय के प्रवचन आदि की प्रभावना से धार्मिक पाठशाला की स्थापना की गयी और समाज के द्वारा वर्षायोग हेतु निवेदन भी किया गया। फिर भी गुरुवर ससंघ वहाँ से विहार कर रामगढ़ आदि होते हुए राँची नगर के पास पहुँचे।

राँची नगर में भव्य मंगल प्रवेश:-

पूज्य गुरुश्री के नगर प्रवेश की तैयारियाँ कई दिनों पूर्व से ही प्रारम्भ हो चुकी थीं। लोगों में गजब का उल्लास था। 8 जुलाई 2006 को पूज्य मुनिवर का रात्रि विश्राम बूटीमोड़ स्थित विद्यालय में था। 9 जुलाई को प्रातः 5 बजे से ही श्रद्धालुओं की भीड़ विद्यालय परिसर में उमड़ने लगी, प्रातः 6 बजे महाराजजी श्री मंदिरजी के लिये रवाना हुए। फिर जय-जयकार के साथ विहार प्रारम्भ हुआ और बरियातु रोड पर स्थित स्व. रायबहादुर हरकचंदजी पांडया के बंगले पर उनके परिजनों द्वारा पादप्रक्षालन एवं आरती की गई और भीड़ बढ़ती गई। बरियातु रोड में ही डॉ. घनश्यामदासजी ने सपरिवार अग्रवाल

नर्सिंग होम के बाहर पूज्य मुनि संघ की आगवानी कर पादप्रक्षालन एवं आरती की। वहीं से श्रद्धालुओं की भीड़ ने जुलुस का रूप ले लिया। केशरिया ध्वज, बैंड-बाजे आकर्षक संगीत लहरियों के बीच-बीच में गुरु संघ के जयकारे लोगों का ध्यान उत्कृष्ट कर रहे थे। रेडियम रोड में मुनिवर की आगवानी राँची के विधायक श्री सी.पी. सिंह एवं झारखण्ड प्रांत दिगम्बर जैन धार्मिक न्यास बोर्ड के अध्यक्ष श्री ताराचंदजी छाबड़ा, देवघर वालों ने की। नगर के मुख्य मार्गों से हेतु हुए जुलूस मंदिरजी पहुँचा। जहाँ पूज्य मुनिसंघ ने मन्दिर के मूलनायक और भी प्राचीन प्रतिमाओं का दर्शन कर के उपस्थित भक्तों को आशीर्वाद के रूप में मंगल उद्‌बोधन दिये।

सन् 2006 का वर्षायोग राँची में:-

एक दिन शुभ मुहूर्त्त में दिनांक 12 जुलाई 2006 को पूज्य मुनिसंघ के वर्षायोग कलश की स्थापना हुई। जैन मन्दिर में स्थित सभागार में सैकड़ों जैन-जैनेत्तर लोगों की उपस्थिति में पूज्य मुनिवर ने धार्मिक क्रियाओं को सम्पन्न कर वर्षायोग की स्थापना सम्पन्न की। वर्षायोग कलश स्थापना का सौभाग्य श्री महावीर प्रसाद संजयकुमार सोगानी को मिला। इसके पूर्व समारोह के मुख्य अतिथि राँची के विधायक श्री पी.सी. सिंह, जैन समाज के अध्यक्ष श्री धर्मचंद रारा, मंत्री श्री प्रदीप बाकलीवाल, वर्षायोग समिति के संयोजक श्री महावीर प्रसाद सोगानी एवं विभिन्न संगठनों के पदाधिकारियों ने पूज्य मुनिवर के चरणों में श्रीफल समर्पित कर चातुर्मास का निवेदन किया।

वर्षायोग के दौरान प्रतिदिन प्रातः आयोजित होने वाली प्रवचनों की शृंखला लोगों की स्मृतियों पर सदैव अंकित रहेगी। पूज्य मुनिवर के प्रवचन आगम के अनुरूप श्रोताओं को प्रभावित करने वाले होते हैं। रविवारीय विशेष प्रवचन लोगों के आकर्षण का विषय होते हैं। जिनागम संगोष्ठी के अन्तर्गत रविवारीय प्रवचनों के पूर्व में किसी एक वक्ता द्वारा किसी विषय विशेष पर दिया गया उद्‌बोधन अत्यन्त लाभदायक रहा। प्रवचन के बाद होने वाला

प्रश्नमंच कार्यक्रम को और भी रोचक बना देता था।

ता. 9 अगस्त 2006 को मोक्ष सप्तमी पार्श्वनाथ भगवान का मोक्ष कल्याणक बड़े ही उत्साह एवं श्रद्धापूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर सामूहिक लाडू चढ़ाया गया। तत् पश्चात् पूज्य मुनिवर के विशेष प्रवचन हुये। आज के दिन पूज्य मुनिसंघ की पावन प्रेरणा से एवं आशीर्वाद से ''आचार्य विद्यासागर सर्वोदय ज्ञान पाठशाला'' का शुभारम्भ किया गया। पाठशाला के मंगल कलश स्थापना का सौभाग्य श्री पुरणमलजी दीपककुमार जी सेठी को प्राप्त हुआ।

षोडसकारण व्रतः-

पूज्य मुनिवर की सतत् प्रेरणा से राँची नगर के इतिहास में पहली बार 32 दिनों तक के लिए षोडसकारण पर्व का आयोजन 8 अगस्त से 8 सितम्बर 2006 तक किया गया। पूज्य मुनिवर की प्रेरणा व आशीर्वाद के प्रताप से बहुत से पुरुषों एवं महिलाओं ने षोडसकारण व्रत कर अपने जीवन को धन्य कर लिया। सामूहिक पूजन, प्रवचन, शुद्धाहार ने लोगों की अपूर्व आनन्द की अनुभूति करा दी। बहुत से श्रावकों ने षोडसकारण व्रत 16 वर्षों तक करने का नियम ले लिया। षोडसकारण कलश स्थापना का सौभाग्य श्रीमती चन्द्रकला पाटनी को प्राप्त हुआ था।

पूज्यवरश्री के सान्निध्य में चारित्र चक्रवर्ती आचार्य शान्तिसागरजी महाराज का समाधि दिवस 25 अगस्त को मानने का अवसर प्राप्त हुआ। इस अवसर पर आचार्यश्री की पूजा की गई तथा पूज्य गुरुवर ने आ. शांन्तिसागरजी की जीवन गाथा के बारे में लोगों के बीच प्रवचन में महत्त्वपूर्ण प्रकाश डाला।

पर्यूषण पर्व के पावन अवसर पर 28 अगस्त से 6 सितम्बर तक श्रावक संस्कार शिविर का आयोजन राँची नगर में पहली बार पूज्य मुनिवर आर्जवसागरजी महाराज के सान्निध्य में किया गया। इस शिविर में समाज के पुरुष, महिलाओं, युवाओं एवं युवतियों ने बड़ी संख्या में भाग लिया। शिविर

में तमिलनाडु, महाराष्ट्र और मध्यप्रदेश आदि प्रांतों से भी लोगों ने आकर अपना जीवन धन्य कर लिया। शिविरार्थियों ने दस दिन पूर्ण रूप से घर का त्याग कर मंदिरजी में रहकर पूज्य मुनिवर के दिशा निर्देश में तप-त्याग, संयम एवं विरक्ति पूर्ण, सादगी मय जीवन जीने का अभ्यास किया। शिविर के अन्त में सभी शिविरार्थियों का जैन समाज द्वारा अभिनन्दन किया गया।

पर्यूषण में प्रातः सामूहिक पूजन, पूज्य मुनिवर द्वारा धर्म पर विशेष प्रवचन, दोपहर में तत्त्वार्थ सूत्र का वाचन एवं विवेचन, सामूहिक प्रतिक्रमण, तथा रात्रि में विद्वान द्वारा प्रवचन व भक्तिमय कार्यक्रम होता था। 6 सितम्बर को अनन्त चतुर्दशी के अवसर पर भव्य रथ यात्रा का आयोजन किया गया। 8 सितम्बर को पूज्य मुनिसंघ के सान्निध्य में सामूहिक क्षमावाणी पर्व मनाया गया। इस अवसर पर पूज्य मुनिवर का विशेष प्रवचन हुआ। सभी लोगों ने पूज्य मुनिवर से एवं अखिल भारतीय शिविरार्थियों आपस में एक दूसरे से क्षमावाणी मनायी।

विद्वत् संगोष्ठीः-

पूज्य मुनिसंघ के सान्निध्य में ता. 15 सितम्बर से 17 सितम्बर तक राँची नगर के लोगों को, देश के ख्याति लब्ध अग्रणी पंक्ति के विद्वानों के शोध परक आलेखों को सुनने का अवसर प्राप्त हुआ। ''षट्काल व्यवस्था एवं काल परिवर्तन में निमित्त ज्योतिष्क विमान'' विषय पर तीन दिवसीय अखिल भारतीय विद्वत् संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस संगोष्ठी में पं. शिवचरण लाल जैन-मैनपुरी, डॉ. जयकुमार जैन-मुजफ्फरनगर, डॉ. श्रेयांसकुमार जैन-बड़ौत, पं. विजयकुमार जैन-लखनऊ, पं. जयनिशान्त-टीकमगढ़, डॉ. देवकुमार जैन-दिल्ली, पं. निहालचन्द जैन-बीना, डॉ. सुधीर जैन-भोपाल, डॉ. अजित जैन-भोपाल, श्रीमति सुमनदेवी पाटनी-हजारीबाग, श्री ताराचन्द जैन-देवघर, श्री हनुमान प्रसाद सरावगी, श्री गौतम सुराणा-चेन्नै, पं. पंकजकुमार शास्त्री-राँची आदि विद्वानों को अपने आलेखों के वाचन का

सौभाग्य प्राप्त हुआ।

विद्वत् संगोष्ठी का उद्घाटन राज्य सभा सांसद श्री अजय मारू एवं झारखण्ड प्रान्त दिगम्बर जैन धार्मिक न्यास बोर्ड के अध्यक्ष श्री ताराचन्द देवघर ने किया। संगोष्ठी का आयोजन प्रातः और दोपहर दो सत्रों में हुआ और मुनिवर का समीक्षात्मक उद्बोधन भी होता था। संगोष्ठी के अंतिम सत्र में सभी विद्वानों का जैन समाज द्वारा सम्मान किया गया।

समवसरण महामण्डल विधानः-

परम पूज्य मुनिवर 108 आर्जवसागरजी महाराज ससंघ के सान्निध्य में तथा युवा प्रतिष्ठाचार्य बा.ब्र. श्री प्रदीप भैया, अशोक नगर (म.प्र.) के निर्देशन में श्री समवसरण महामण्डल विधान एवं विश्वशान्ति महायज्ञ मन्दिरजी के सामने स्थित बालकृष्ण उच्च विद्यालय के प्रांगण में निर्मित भव्य पांडाल में दिनांक 25 सितम्बर से 9 अक्टूबर 2006 तक मुनिवर के प्रवचनों एवं विभिन्न कार्यक्रमों साथ आयोजित किया गया। 30 फिट ऊँचे भव्य समवशरण की रचना की गई। संगीत ने भी कार्यक्रम को चार चांद लगा दिया। प्रतिदिन रात्रि में राजेन्द्र जैन 'उमरगा' की आकर्षक नाट्य प्रस्तुति बड़ी मनमोहक रही। दिनांक 25 सितम्बर को मंगल कलश घट यात्रा से प्रारम्भ हुआ कार्यक्रम 9 अक्टूबर को श्रीजी की भव्य शोभायात्रा के साथ सम्पन्न हुआ। विधान के प्रमुख पात्रों में श्री महावीर प्रसाद सोगानी-भरत चक्रवर्ती एवं श्री मूलचन्द छाबड़ा-सौधर्म इन्द्र थे। श्री पूरणमल सेठी ने ध्वजारोहण के साथ विधान का शुभारम्भ किया था।

अहिंसा, शाकाहार संगोष्ठीः-

श्री दिगम्बर जैन समाज, राँची एवं डी.ए.वी स्कूल, बरियातु राँची के संयुक्त तत्त्वाधान में दिनांक 9 अक्टूबर को दोपहर में डी.ए.वी. विद्यालय परिसर में अहिंसा एवं शाकाहार संगोष्ठी का आयोजन किया गया। जिसमें मुख्य वक्ता के रूप में देश के प्रसिद्ध चिंतक एवं शाकाहार आन्दोलन के प्रणेता डॉ. कल्याणमल (के.एम.) गंगवाल, पुणे उपस्थित थे। पूज्य मुनिवर एवं

गंगवाल ने संगोष्ठी में बड़ी संख्या में उपस्थित विद्यार्थियों को सम्बोधित करते हुए अहिंसा एवं शाकाहार के महत्त्व पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम में डी.ए.वी. ग्रुप के क्षेत्रीय निर्देशक श्री एल.आर.सैनी एवं विद्यालय की प्राचार्य श्रीमति दिव्या सिंह ने पूज्य मुनिवर का स्वागत किया। मुनिवर द्वारा उन्हें स्वरचित साहित्य प्रदान किया गया।

वर्षायोग निष्ठापन व पिच्छि परिवर्तन :

पश्चात् परम पूज्य मुनिवर के सान्निध्य में 22 अक्टूबर 2006 को भगवान महावीर निर्वाणोत्सव मनाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। भगवान महावीर की विशेष पूजा के बाद सामूहिक रूप से निर्वाण लाडू चढ़ाया गया। तत्पश्चात् निर्वाण दिवस पर मुनिवर का विशेष प्रवचन हुआ। इसी कार्यक्रम में पूज्य मुनिवर द्वारा वर्षायोग का निष्ठापन किया गया।

दिनांक 23 अक्टूबर से 28 अक्टूबर 2006 तक पूज्य मुनिवर की प्रेरणा से कंठपाठ प्रतियोगिता का सफल आयोजन किया गया। प्रतियोगिता तीन वर्गों में सम्पन्न हुई।

वर्षायोग के अन्तिम चरण में 29 अक्टूबर 2006 को सिद्धचक्र महामण्डल विधान के प्रथम दिन संयम का प्रतीक पिच्छिका परिवर्तन का प्रभावशाली कार्यक्रम हुआ। जिसमें बड़ी संख्या में श्रावक उपस्थित थे और इसी दिन कण्ठपाठ विजयी प्रतियोगियों को पुरस्कृत किया गया। अतिथि के रूप में पधारे डी.जी.पी. महापात्राजी द्वारा प्रतियोगियों को पुरस्कार वितरित किये।

श्री सिद्धचक्र महामण्डल विधान सम्पन्न :

कार्तिक माह की अष्टान्हिका पर्व के अवसर पर परम पूज्य मुनिवर के सान्निध्य में पाटनी परिवार (एम.आर. ग्रुप, राँची) द्वारा 29 अक्टूबर से 5 नवम्बर तक युवा प्रतिष्ठाचार्य बा.ब्र. जयकुमार निशान्त टीकमगढ़ के निर्देशन में श्री सिद्धचक्र महामण्डल विधान का भव्य एवं प्रभावशाली आयोजन मंदिर

परिसर में हुआ। जिसकी सम्पूर्ण व्यवस्था श्री दि. जैन पंचायत राँची द्वारा की गई। विधान के अंत में श्रीजी की भव्य शोभा यात्रा निकाली गई। विधान में समाज के महिलाओं एवं पुरुषों ने बड़ी संख्या में इन्द्र-इन्द्राणी बन पूजा कर अपने को धन्य किया। प्रतिदिन मुनिवर का आकर्षक प्रवचन भी चलता रहा। शाम को महाआरती एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम भी हुआ। सांस्कृतिक कार्यक्रम का प्रस्तुतिकरण मण्डलेश्वर (म.प्र.) और त्रिशलादेवी महिला मण्डल, राँची द्वारा किया गया।

आ. विद्यासागरजी का 34वाँ आचार्य पदारोहण दिवस सम्पन्न :

पूज्य मुनिवर आर्जवसागरजी महाराज के सान्निध्य में दिनांक 7 नवम्बर 2006 को आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज का चौतीसवाँ आचार्य पदारोहण दिवस मंदिरजी में स्थित सभागार में बड़े ही श्रद्धापूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर आचार्यश्री के चित्र अनावरण एवं दीप प्रज्ज्वलन किया गया। तत्पश्चात् आचार्यश्री की एवं मुनिवर की पूजा की गई। पूज्य मुनिवर ने अपने सारगर्भित प्रवचन में आचार्यश्री के जीवन के अनछुए पहलुओं पर प्रकाश डाला। उन्होंने कविताओं एवं संस्मरण के माध्यम से अपनी गुरुभक्ति प्रकट की। अंत में त्रिशलादेवी महिला मंडल की सदस्याओं ने सुन्दर सजाये गये 34 दीपकों से आचार्यश्री की आरती की।

स्कूल में गुरुवर के प्रवचन :-

दिनांक 17 नवम्बर को पूज्य मुनिवर द्वारा रतनलाल, सूरजमल, जैन मध्य विद्यालय के छोटे-छोटे बच्चों को संबोधित करना दिल को छू गया। छोटे-छोटे बच्चे बड़े ही कौतुहलपूर्वक पूज्य मुनिवर को सुनते रहे। वर्षायोग का प्रत्येक दिन त्यौहार का दिन प्रतीत होता था। वैसे तो राँची नगर को पूर्व में भी पूज्य मुनि-संघों को चातुर्मास कराने का सौभाग्य प्राप्त होता रहता है। किन्तु पूज्य मुनिवर आर्जवसागरजी महाराज का चातुर्मास जिस अपूर्व प्रभावना के साथ सम्पन्न हुआ, वह चिर स्मरणीय रहेगा।

बंगाल की ओर विहार:

दिसम्बर महिने में टाटा नगर, चाईबासा, आदि कुछ नगरों से विहार करते हुए मुनिवर आर्जवसागरजी ससंघ बंगाल प्रान्त की ओर पहुँचे। मुनिवर का ससंघ बंगाल प्रान्त के पुरूलिया नगर में भव्य मंगल प्रवेश हुआ। कुछ अल्प दिनों के प्रवास से मंगल प्रवचन के साथ धार्मिक पाठशाला का उद्घाटन भी किया गया। शीतकालीन हेतु समाज द्वारा नम्र निवेदन होने के उपरान्त भी गुरुवर आर्जवसागरजी महाराज का ससंघ पुनः सम्मेदशिखरजी दर्शन की भावना से और शेष रह गयी चम्पापुरी यात्रा पूर्ण करने के निमित्त काला पत्थर गाँव से होते हुए ईसरी की ओर आगे बढ़ते चले गये। मुनि संघ के साथ में राँची नगर के लोग बहुत संख्या में पद यात्रा कर रहे थे। प्रतिदिन बस और गाड़ियों से लोग आकर बड़ी प्रभावना करने में संलग्न थे। कुछ ही दिनों में ईसरी पहुँचने के बाद ईसरी में स्थित उदासीन आश्रम की कमेटी ने गुरुवर आर्जवसागरजी को शीतकालीन वाचना हेतु नम्र निवेदन किया। ईसरी आश्रम की सम्हाल राँची के लोग ही व्यवस्थित रूप से कर रहे थे। मुनिवर ने मुस्कराते हुए आश्वासन दे दिया। लेकिन अपने गुरु भाई मुनिश्री प्रमाणसागरजी का मधुबन प्रवास जानकर और उनका समाचार मिलते ही उनसे मिलने हेतु मधुबन में मंगल प्रवेश किया।

गुरु भाई से मिलन:-

इस भव्य मंगल प्रवेश पर मधुबन से एक किलोमीटर दूर ही मुनिवर आर्जवसागरजी, ऐ.अर्पणसागरजी के ससंघ आगवानी के निमित्त मुनिश्री प्रमाणसागरजी एवं आ. रत्नश्री पूर्णमतिजी ससंघ लेने आयीं और गुरु भाई दोनों मुनिराजों का आपस में वात्सल्यपूर्ण नमोस्तु पूर्वक हृदय मिलन हुआ। जिसे देखकर सारी जनता के अन्दर एक अपूर्व खुशी का नजारा देखने को मिला। खुशी से आँखें सजल हो रही थी मानो। आर्यिका रत्न पूर्णमतिजी ने ससंघ दोनों मुनिवर को नमोस्तु पूर्वक तीन प्रदक्षिणायें लगाईं और रत्नत्रय की

कुशलता पूछी। यू.पी. प्रकाश भवन के सामने कमेटी द्वारा मुनिवर का पाद प्रक्षालन किया गया। फिर ससंघ अपार जनसमूह के साथ सभी लोग तेरह पंथी कोठी पहुँचे।

वहाँ पर पादप्रक्षालन, आरती आदि के माध्यम से मुनि संघ का पावन अभिनन्दन हुआ। सभी लोगों ने सायंकाल एक साथ गुरुभक्ति आदि करते हुए सवात्सल्य करीब एक सप्ताह धार्मिक चर्चा, पर्वत की वंदनाएँ एक साथ सम्पन्न कीं। फिर मुनिवर आर्जवसागरजी को रुकने का आग्रह किये जाने पर भी ईसरी आश्रम के शीतकालीन निवेदन को ध्यान में रखते हुए मुनिवर आर्जवसागरजी ससंघ ईसरी पधारे।

ईसरी में शीतकाल प्रवासः-

ईसरी में मुनिवर के ससंघ शीतकालीन जनवरी माह के प्रवास दौरान तीर्थोदय काव्य पर वाचना चली। जिसमें ईसरी के ब्रह्मचारियों व्रती एवं श्रावकों ने धर्म चर्चा एवं जिज्ञासा समाधान द्वारा अच्छा लाभ लिया। तदुपरान्त फरवरी माह में मधुबन शिखरजी पहुँचकर कुछ वंदनायें करके सम्मेदशिखरजी की समाज द्वारा रुकने का आग्रह होते हुए भी मुनिवर ने ससंघ गिरिडीह होते हुए भागलपुर की ओर विहार किया।

भागलपुर, चम्पापुर व राजगृही का दर्शनः-

इस विहार के पुण्यार्जक राँची वाले श्रावकगण थे। सम्मेदशिखरजी से नवीन जैन तथा साथ में कोपरगाँव, एलोरा और मध्यप्रदेश आदि से लोग विहार हेतु साथ में चल रहे थे। बीच में देवघर नाम के नगर में महाकवि आचार्य ज्ञानसागर महाराज के पूर्व अवस्था के भतीजे और झारखण्ड धार्मिक न्यास बोर्ड के अध्यक्ष ताराचन्दजी जैन छाबड़ा ने अपने घर पर ही मुनिवर की नवधाभक्ति पूर्वक आहारदान देने का सौभाग्य प्राप्त किया। देवघर के सुन्दर जिनालय का दर्शन भी हुआ। फिर मुनिसंघ का विहार मंदारगिरी की ओर हो गया। मंदारगिरि का वासुपूज्य भगवान का दर्शन करके दो दिन ठहरकर

भागलपुर की ओर चल दिये।

भागलपुर पहुँचने के बाद चम्पापुर पहुँचे। वहाँ पर करीब तीन दिन ठहरकर वासुपूज्य भगवान के तीन कल्याणकों के स्थान का दर्शन कर अपूर्व आनन्द हुआ। फिर वहाँ से विहार करके नवादा, गुणावा की ओर विहार किया। वहाँ के दर्शन करके पावापुरी पहुँचे। पावापुरी की अच्छी तरह से वन्दना होने के उपरान्त राजगृही क्षेत्र का दर्शन दूसरी बार हुआ। मुनिश्री प्रमाणसागरजी से भी करीब दो महीने के अन्तराल में ही दूसरी बार पुनः मुनिवर का भव्य मिलन हुआ।

गया नगर में मंगल प्रवेशः-

फिर राजगृही के पाँचों पर्वत की वन्दनायें सम्पन्न करके होली पर गया नगर पहुँचे। वहाँ करीब पाँच दिन प्रवास किया। पहले वर्ष की भांति प्रवचन माला आदि और धार्मिक पाठशाला की कलशस्थापना का भव्य कार्यक्रम में श्री विमलसेठी ने बहुत उत्साह दिखाया। इस बार गया के मंगलप्रवेश और गमन पर मुनिवर आर्जवसागरजी ससंघ के लिए पूर्व से ठहरे मुनिश्री अनेकान्तसागरजी महाराज आगवानी और भेजने हेतु विनयपूर्वक तत्पर रहे।

बनारस में स्थित मन्दिरों का दर्शनः-

पश्चात् मुनिवर का विहार औरंगाबाद (बिहार), डेरीहोन्सोन मुगलसराय की ओर हुआ। तदुपरान्त बनारस पहुँचकर वहाँ मेदाग्नी जिनालय की धर्मशाला में पाँच दिन प्रवास किया। और भ. पार्श्वनाथ, भ. सुपार्श्वनाथ, भ. श्रेयांसनाथ आदि के कल्याणकों स्थानों का अवलोकन करते हुए इलाहाबाद की ओर विहार किया। पश्चात् मुनिवर आर्जवसागरजी महाराज ने ससंघ प्रयाग में नव निर्मित कैलाशगिरि का दर्शन करते हुए गंगा, यमुना, सरस्वती का संगम भी देखा। और जिस वट वृक्ष के नीचे भ.आदिनाथ को केवलज्ञान हुआ उस स्थान पर स्थित पुरानी प्रतिमा का भी दर्शन किया। और इलाहाबाद के जिनालय में प्रवचन कर वहीं से आहारचर्या सम्पन्न की।

तदुपरान्त रीवा नगर की ओर विहार किया। कुछ ही दिनों में महावीर जयन्ती के पूर्व गुरुवर आर्जवसागरजी महाराज का ससंघ बड़ी प्रभावना के साथ रीवा नगर में भव्य मंगलप्रवेश सम्पन्न हुआ।

रीवा नगर में महावीर जयन्ती सम्पन्नः-

रीवा नगर के जैन जन समूह द्वारा महावीर जयन्ती एवं मुनिवर का दीक्षा दिवस मनाने हेतु नम्र निवेदन करने के उपरान्त उन्हें आशीर्वाद मिला। सम्मेद शिखरजी, राँची आदि से साथ आये हुए लोगों को आगे भी विहार कराने का भाव होते हुए भी मुनिवर द्वारा अब जैन समाज की यहाँ बहुलता है और आप चिंता छोड़िए अब रुकते हुए विहार करना है ऐसा कहकर अपने प्रदेश लौटने के लिए कह दिया। उन सबका समाज के द्वारा सम्मान होने के उपरान्त विदाई कर दी गई।

महावीर जयन्ती के शुभ दिन भ.शान्तिनाथ जिनालय से श्रीजी की शोभा यात्रा विमानोत्सव पूर्वक प्रारम्भ की गयी। नगर भ्रमण में लोगों ने अपने गृह के सामने मुनिवर के पाद पक्षालन एवं आरती उतारी। तदुपरान्त मंगल प्रवचन हुआ और मध्यान्ह में मुनिवर का 20वां दीक्षा दिवस समारोह एवं पाठशाला के सांस्कृतिक कार्यक्रम सम्पन्न हुये। लोगों के द्वारा मुनि संघ को ठहरने हेतु विशेष आग्रह किये जाने पर करीब 25 दिनों तक मंगल प्रवचन मालायें सम्पन्न हुईं और धार्मिक पाठशाला का भी शुभारंभ किया गया। विजय अजमेरा, अतुल जैन और कमिश्नर शरद वेद साहब आदि परिवार जनों ने संघ की प्रभावना का अच्छा लाभ उठाया। तदुपरान्त समाज के निवेदन पूर्वक सतना नगरी की ओर विहार हो गया। बीच रास्ते में पं.मूलचन्द लुहाड़िया भी आये थे जिनके रीवा में प्रवास कर रहे उनके सुपुत्र ने सपरिवार रास्ते में चौका लगाकर नवधा भक्ति पूर्वक आहारदान देने का लाभ भी उठाया।

ग्रीष्मकालीन प्रवास सतना नगरी में:-

पश्चात् सतना नगरी में भव्य मंगल प्रवेश हुआ। सतना नगरी में मुनिवर

के प्रतिदिन के प्रवचनों से अपूर्व प्रभावना हुयी। मध्यान्ह में वारसाणुवेक्खा का स्वाध्याय एवं पद्यानुवाद भी सम्पन्न किया। ग्रीष्म कालीन प्रवास पर सर्वोदय सम्यग्ज्ञान शिक्षण शिविर भी लगा। इस शिविर में करीब 400 शिविरार्थियों ने भाग लिया। इस शिविर में आबाल-वृद्ध सभी लोगों ने प्रवेशिका, छहढाला, जैनागम संस्कार, द्रव्यसंग्रह, सम्यक्-ध्यान शतक, इष्टोपदेश आदि विषयों पर शिक्षण प्राप्त किया। मुनिवर के सम्यक्ध्यान शतक और इष्टोपदेश पर प्रवचन हुये और इष्टोपदेश का पद्यानुवाद भी प्रारम्भ किया। समीक्षात्मक उद्बोधन भी होते रहे और शिविर में शिक्षण देने वाले विद्वान पी.सी. पहाड़िया, राजस्थान, महेश शास्त्री, दयाचन्द जी शास्त्री, श्री सिद्धार्थ जैन, श्री निर्मल जैन आदि तीन सत्रों में शिक्षण देने हेतु उपस्थित रहे। शिविर के उपरान्त सभी विद्वानों को मुनिसंघ के सान्निध्य में सम्मानित किया गया। शिविरार्थियों के लिए भी पुरस्कार वितरण किये गये।

गुरु की करुणा का संस्मरणः-

इसी नगर में एक बार मुनिवर आर्जवसागर की करुणा का संस्मरण तैयार हुआ कि आहार से आते वक्त मुनिवर ने रास्ते में तोते बेचने आये किसी शिकारी के पिंजड़े में कैद तड़फते पाँच तोतों को देखा और करुणा झलक आयी। मन्दिर आते ही साथ आये चौके वाले पुरुषों को कहा कि उन तोतों को बंधन से छुड़वा दो, यह बड़ा अविस्मरणीय उपकार होगा। बस, कहते ही श्रावक भी करुणा के साथ गये और कुछ पैसों का ठहरावकर तोतों के साथ निर्दयी व्यक्ति को भी साथ लाये। मुनिवर ने उसे इसका परिणाम समझाया, बंधन में न बांधने और हिंसा को छोड़ने का उपदेश दिया। और छत पर जाकर के अपनी आँखों के सामने (आचार्यश्री की तोता क्यों रोता वाली कविता को याद करते हुए) उन तोतों को पिंजड़े से मुक्त करवा दिया।

गाँव-गाँव किया विहारः-

पश्चात् सतना नगरी से विहार करते हुए अमरपाटन पहुँचे। वहाँ पर

मंगलप्रवेश के पश्चात् श्रुतपञ्चमी पर्व गुरु सान्निध्य में मनाया और मुनिवर आर्जवसागरजी ने इष्टोपदेश का पद्यानुवाद भी पूर्ण किया एवं अमरपाटन नगर के भाग्य से धार्मिक पाठशाला की भी शुरुआत हो गई। तदुपरान्त समाज के लोगों द्वारा वर्षायोग के बहुत आग्रह करने पर भी मैहर नगर की ओर विहार किया। स्वल्प दिनों में यहाँ भी धार्मिक पाठशाला प्रारम्भ की। यहीं पर दमोह के लोग वर्षायोग हेतु निवेदन लेकर आने लगे। फिर जंगल के रास्ते से होते हुए श्रेयांसगिरि पहुँचे और गुफाओं का भव्य दर्शन कर आहारचर्या सम्पन्न हुई। पश्चात् सलेहा नगर पहुँचे। तीन दिन रुक करके धर्म की प्रभावना की। यहीं पर आहारचर्या के समय चौके में एक दिन लाईट जली देखने पर दूसरे चौके में पड़िगाहन के लिए तैयार रहते हुए भी मुनिवर ने अपने वृत्तिपरिसंख्यान के निमित्त अलाभ मान लिया। यहीं पर दमोह नगर के शाकाहार उपासना परिसंघ एवं सिविलवार्ड के चन्द्रकुमार आदि ने बहुत से लोगों के साथ आकर मुनिवर आर्जवसागरजी के ससंघ चरणों में श्रीफल चढ़ाकर दमोह नगर की नन्हें मन्दिर की विशाल धर्मशाला में वर्षायोग हेतु नम्र निवेदन किया।

सलेहा नगर के लोगों द्वारा वर्षायोग हेतु विशेष आग्रह होने पर भी मुनिवर ससंघ पवई होते हुए मोहनगढ़ में जिनबिम्बों का दर्शन करते हुए हटा नगर पहुँचे।

सि.क्षे. कुण्डलपुर दर्शनः-

कुण्डलपुर की कमेटी के निवेदन पर सिद्धक्षेत्र कुण्डलपुर में भव्य मंगल प्रवेश हुआ। स्वल्प दिनों में ही कुण्डल गिरि की वंदनायें और बड़े बाबा के दर्शन सम्पन्न किये और तभी पूर्व में गुरुदेव के साथ सम्पन्न हुये वर्षायोग आदि की स्मृतियाँ ताजी हो गयीं। नव निर्मित निर्माणाधीन पाषाण के कलात्मक नवीन जिनालय का कमेटी के अध्यक्ष संतोष सिंघई के आग्रह से ऊपर चढ़कर अवलोकन किया। विद्याभवन में रविवारीय प्रवचन भी सम्पन्न हुये। वर्षायोग हेतु कमेटी द्वारा निवेदन भी किया गया। लेकिन दमोह नगर से

आये भक्तों के विशेष आग्रह और पुण्य से मुनिवर का ससंघ विहार पटेरा, हिंडोरिया होते हुए दमोह की ओर हो गया।

दमोह नगर में भव्य मंगल प्रवेश:-

दमोह नगर की ओर विहार करते समय लोगों का जन सैलाव बढ़ता गया। एक दिन प्रात: काल की मंगल बेला में जय-जय ध्वनि एवं वाद्य यंत्रों के मंगल शब्दों के साथ दमोह नगरी में मंगल प्रवेश हुआ। प्रत्येक जैन घर के सामने मुनिवर का पादप्रक्षालन एवं आरती उतारी गयी। दमोह नगर का प्रसिद्ध जिनालय जो विशाल होते हुये भी नन्हें मन्दिर के नाम से प्रसिद्ध है ऐसे जिनालय में प्रवेश करते समय कमेटी के लोगों ने मुनिवर का पादप्रक्षालन किया। सभी श्रावक-श्राविकाओं ने मंगल आरती उतारी पश्चात् जिनालय का दर्शन करके इसी जिनालय की विशाल धर्मशाला के सभागार में महाराजजी का मंगल प्रवचन हुआ। महाराजश्री के प्रवचन सुनकर अपार जनसमूह के हृदय में अपूर्व संतोष का अनुभव हुआ।

बहुत लोग यही चाह कर रहे थे कि दमोह जिले के फुटेराकलाँ गाँव में जन्मी जिनकी काया और पथरिया में बीता जिनका बचपन और जबेरा रहा जिनका ननिहाल और दमोह में पूर्व से ही बसे जिनके पूर्व परिजन ऐसे आचार्यश्री विद्यासागरजी के प्रियतम शिष्य गुरुवर श्री आर्जवसागरजी महाराज ससंघ सबकी वर्षों की भावना से चातुर्मास हेतु दमोह नगरी में पधारे। भारत के कोने-कोने में हुआ जिनका विहार और अनेक भाषाओं का जिन्होंने अर्जन किया ज्ञान, अनेक देशों की जानी है परम्परा जिन्होंने ऐसे अनेक कृतियों के सृजक गुरुवर आर्जवसागरजी के प्रवचन सुनकर लोगों ने अपने आप को भाग्यशाली माना।

दमोह नगर के कुछ लोगों ने राँची नगर के वर्षायोग में दमोह नगर में आपका वर्षायोग सम्पन्न हो ऐसा मंगल निवेदन मुनिश्री आर्जवसागरजी के ससंघ चरणों में किया था। ऐसे श्री चन्द्रकुमार जी जैन, धनीरामजी जैन, जिनेश

जैन, दीक्षा किराना वाले नन्ना जी आदि लोगों ने बड़े उत्साह से जिनकी वर्षायोग की ही मात्र नहीं बल्कि सिविल वार्ड में तीसरे खण्ड पर बनी नव निर्मित वेदी की विशाल प्रतिमा हेतु पंचकल्याणक प्रतिष्ठा भी सम्पन्न हों ऐसी मंगल भावना भी साथ थी। जिस कार्यक्रम हेतु संजीव जैन (शाकाहारी), सुनील जैन (वेजिटेरियन) आदि भी बड़े उत्साहित हुये। वर्षायोग की तैयारी में जुटे राजेश जैन (हिनोती वाले) अध्यक्ष (शाकाहार उपासना परिसंघ) नवीन निराला आदि ने वर्षायोग की स्थापना कर काफी उत्साह दिखाया। साथ में मन्दिर के अध्यक्ष गिरीश नायक जी और पदम लहरी आदि ने भी प्रभावना में अच्छा योगदान दिया।

सन् 2007 का चातुर्मास दमोह में:-

तदुपरान्त चातुर्मास की कलश स्थापना हुई। जिसमें राजेश जैन फुटेरा, रज्जन जैन, चन्द्रकुमार जैन, आदि लोग काफी उत्साहित थे। कलश स्थापना के दिन फुटेरा, जबेरा, पथरिया, गढ़ाकोटा, नोहटा, अभाना, शाहपुरा, भोपाल, जबलपुर आदि स्थानों से भी लोगों ने आकर कार्यक्रम के अतिथि बन गुरुवर को श्रीफल अर्पित कर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। प्रवचन सुनकर काफी हर्ष विभोर हुये और अपने-अपने नगर में भी गुरुवर का विहार हो ऐसा निवेदन किया। चातुर्मास में प्रतिदिन गुरुवर के प्रातः 8:30 बजे से विशाल सभागृह में प्रवचन अनवरत चलते रहे। मध्यान्ह काल में आगम की कक्षायें चलीं और सायंकाल में धार्मिक संस्कार की कक्षा चली। तदुपरान्त दिन-प्रतिदिन प्रवचनों की शृंखला चलते हुए भक्तों की भीड़ बढ़ती चली गयी। गाँव-गाँव से लोग मुनिवर की प्रवचन शैली से प्रभावित होकर दौड़े-दौड़े आते थे। रविवारीय मध्यान्ह काल में होने वाले प्रवचन भी विशाल पण्डाल में चलते रहे। जिसमें आलेख पूर्वक भाषण प्रतियोगिता प्रश्नमंच का कार्यक्रम भी साथ में चलता रहा। रविवारीय प्रवचन में तो दमोह नगर में बाजार का दिन होते हुए भी संख्या में कोई कमी नहीं दिखती थी बल्कि ट्रेन की सुविधा होने से आजू-बाजू के नगरों से इतने लोग आते थे कि विशाल धर्मशाला में बने पण्डाल में

जगह कम पड़ जाती थी।

वर्षायोग का सबसे विशिष्ट आकर्षण षोडसकारण महापर्व का अभूतपूर्व आयोजन रहा। दमोह में पूज्य मुनिश्री की पावन प्रेरणा से पुराने रिकार्ड ध्वस्त करते हुए करीब 400 से भी अधिक भक्तों ने बहुत ही श्रद्धा भाव के साथ षोडसकारण व्रत पर्व किये। इसमें युवा, युवती एवं वृद्ध सभी लोगों ने अपनी पूरी शक्ति और भक्ति भाव को प्रकट करते हुए कुएँ के पानी का उपयोग करते हुए शील संयम के साथ एकाशन आदि रूप व्रत साधना की। दशलक्षण पर्व में श्रावकसाधना संस्कार शिविर लगाया गया। जिसमें संगीतमय पूजन, नियमित जाप, प्रवचन, प्रतिक्रमण एवं रात्रिकालीन धार्मिक सांस्कृतिक कार्यक्रम आदि सम्पन्न हुये। सम्पूर्ण नगर में धर्ममय वातावरण बना जिसकी सभी ने मुक्तकण्ठ से तारीफ की। अन्य प्रदेश तमिलनाडु और महाराष्ट्र से भी आये श्रद्धालु भक्तगणों ने सर्वाधिक धर्मलाभ अर्जित किया।

वर्षायोग के दौरान म.प्र. शासन के उद्योग, आवास और पर्यावरण मंत्री श्री जयंत मलैया, पूर्व शिक्षा मंत्री मुकेश नायक, म.प्र. हस्तशिल्प एवं हथकरघा विकास निगम के अध्यक्ष श्री कपूरचंद घुवारा आदि ने भी समय-समय पर आकर गुरुवर आर्जवसागरजी की चरण वंदना का सौभाग्य प्राप्त किया।

इन्द्रध्वज महामण्डल विधान सम्पन्नः-

वर्षायोग के दौरान एक और भी सबसे अधिक आकर्षण का केन्द्र श्री 1008 इन्द्रध्वज महामण्डल विधान का अभूतपूर्व आयोजन रहा। नगर के मध्य स्थित विंदन तिराहे के मैदान में मुनिवर के आशीर्वाद एवं प्रेरणा से आयोजित इस ऐतिहासिक आयोजन का निर्देशन ब्र. जयकुमार जी निशान्त (ख्याति प्राप्त प्रतिष्ठाचार्यश्री गुलाबचन्द पुष्प, टीकमगढ़ के सुपुत्र) ने किया। प्रतिदिन विधान में अभिषेक पूजन आदि के अलावा मुनिश्री द्वारा जैन मांगलिक प्रवचन हुये तथा दोपहर में मुनिश्री के मुखारबिन्द से जैन रामायण

पर प्रवचन हुये। रात्रि में महाआरती का आयोजन हुआ जिससे महती धर्मप्रभावना हुई। जैन मिलन एवं परिसंघ द्वारा प्रतिदिन महाआरती के पात्रों को ससम्मान 5 बग्गियों पर मुकुट आदि वस्त्र आभूषणों से सजाकर बैंड बाजों और नृत्यगान करते हुए कार्यक्रम स्थल पर लाया जाता था। रात्रि में प्रवचनों के पूर्व राजुल-नेमि, रानी चेलना, भाग्य का खजाना आदि अनेक अन्य धार्मिक नाटक जैसे सोशल ग्रुप मंडलेश्वर, त्रिशलादेवी महिला मण्डल अशोक नगर, धर्म संस्कार बालक-बालिका मण्डल दमोह आदि के द्वारा सम्पन्न हुए। जिन्हें दर्शकों की विशेष सराहना प्राप्त हुई। विशिष्ट प्रवचनकारों में डॉ. सुशील जी मैनपुरी, पं. गुलाबचन्द्र पुष्प, डॉ. भागचन्द भागेन्दु प्रमुख रहे। इन्द्रध्वज महामण्डल विधान का भव्य समापन विशाल नगर गजरथ फेरी से हुआ। दिनांक 3 नवम्बर 2007 को निकाले गये इस 2 कि.मी. लम्बे विशाल नगर गजरथ फेरी के जुलूस में पूज्य मुनि संघ के अलावा इन्द्र-इन्द्राणी और बड़ी संख्या में भक्तगणों ने कतार-बद्धता के साथ सम्मिलित होकर अभूतपूर्व धर्मप्रभावना का परिचय दिया। विधान के दौरान आमंत्रित अन्तर्राष्ट्रीय शाकाहार विशेषज्ञ डॉ. के.एम. गंगवाल, पूना एवं श्री श्रीपाल जैन 'दिवा', भोपाल को शाकाहार उपासना परिसंघ द्वारा अहिंसा महावीर चक्र से सम्मानित किया गया। वर्षायोग के बीच अहिंसा संगोष्ठी भी हुई और वर्षायोग का निष्ठापन दीपावली के दिन हुआ। भ.महावीर की पूजन एवं निर्वाण लाडु पूर्वक महावीर भगवान का मोक्षकल्याणक एवं गौतम गणधर का केवलज्ञान ज्योति रूप दीपावली पर्व मनाया गया। वर्षायोग के समापन पर कंठपाठ प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें अनेक युवा प्रतियोगियों ने बढ़चढ़ कर हिस्सा लिया। वर्षायोग की स्थापना से समापन तक शाकाहार उपासना परिसंघ के अध्यक्ष राजेश जैन (हिनोति वाले), संजीव शााकाहारी, रतनचन्द प्राचार्य, सुनील वेजीटेरियन, महेश बड़कुल, नवीन निराला, ताराचन्द, सुनील बजाज, सौरभ लहरी, जैन पंचायत अध्यक्ष विमल लहरी,

नरेन्द्र चौधरी, श्रेयांस लहरी, मोती गोयल, अशोक कामर्शियल, गिरीश अहिंसा आदि का सक्रिय योगदान व सहयोग रहा।

पिच्छि परिवर्तन सम्पन्न:-

दिनांक 25 नवम्बर 2007 को दमोह नगर में स्थित एम.एल. स्कूल के मैदान में पिच्छि परिवर्तन समारोह आयोजित किया गया जिसमें गुरुवर आर्जवसागरजी के संघ की पुरानी पिच्छिकाएँ प्राप्त करने का सौभाग्य श्री नरेन्द्र जैन (हीराशॉप) तथा भरतकुमार सपत्नीक ने प्राप्त किया। नई पिच्छका देने का सौभाग्य चन्द्रकुमार, संजय, एस.के. जैन, पवन बमोरिया, संजीव शाकाहरी, सुनील वेजीटेरियन, नवीन निराला, महेश बड़कुल, चन्द्रेश सर्राफ, मिश्रीलाल तथा तमिलनाडु से आये भक्तों ने प्राप्त किया। इस अवसर पर दावणगेरे से पधारे श्री पदमराजजी का गौशाला के संचालन और धर्मसाधन के अनेक मन्दिर आदि के निर्माण के लिए दान देने वाले होने के नाते उनको शाकाहार उपासना परिसंघ की ओर से ''अहिंसा रत्न अवार्ड'' से सम्मानित किया। कन्नड़ भाषा में प्रकाशित जैनागम संस्कार का विमोचन श्री पदमराजजी के पुण्यार्जकत्व में वीरेन्द्र इटोरिया, विमल लहरी जी के द्वारा किया गया। चातुर्मास के दौरान आयोजित कंठपाठ प्रतियोगिता में विजेताओं को स्वर्ण पदक तथा रजत पदक से सम्मानित किया गया। भगवान महावीर आचरण संस्था समिति भोपाल के अध्यक्ष डॉ. सुधीर जैन तथा सचिव डॉ. अजित जैन ने समिति की संरक्षक सदस्यता ग्रहण करने वालों को सम्मानित किया। समारोह को देखने के लिए पथरिया, बांसा, फुटेरा, जबेरा, आदि से भी बहुत संख्या में श्रद्धालु आये थे। कार्यक्रम के बीच मुनिवर का मंगल प्रवचन हुआ। इस प्रकार यह पिच्छि परिवर्तन समारोह अपार जनसमूह के बीच सानन्द सम्पन्न हुआ।

सिविल वार्ड की ओर हुआ गमन :-

कार्तिक अष्टान्हिका पर्व में नन्हें मन्दिर में मुनिसंघ के सान्निध्य में

सिद्धचक्र महामण्डल विधान सानन्द सम्पन्न होने के समय दमोह में स्थित सिविल वार्ड श्री शान्तिनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर के कमेटी द्वारा मुनिवर आर्जवसागरजी के ससंघ चरणों में तीसरे मंजिल पर नव निर्मित वेदी पर पंचकल्याणक प्रतिष्ठा हेतु एवं सिविल वार्ड में पधारने का भक्ति भाव से नम्र निवेदन किया गया। पूर्व से ही विदित धर्म प्रभावना को सुनते हुए मुनिवर ने मंगल आशीर्वाद दिया और बड़ी प्रभावना के साथ सिविल वार्ड दि. जैन मन्दिर की ओर विहार किया। सभी को कुछ और आशा थी मुनिवर का थोड़े दिनों और लाभ मिलेगा पर नहीं मिलने पर उन श्रावकों की आंखें अश्रु जल से भर आयीं। लेकिन यह आशा रखते हुए कि चलो यहीं नगर में ही तो विहार हो रहा है हम कार्यक्रम सम्पन्न होते ही पुनः मुनिवर को वापिस लौटा ले आयेंगे और सभी लोग जय-जयकार मंगल गीत भजन के साथ सिविल वार्ड मन्दिर तक मुनिवर के साथ-साथ आये और सिविल वार्ड की मंगल आगवानी में भी सम्मिलित हो गये। मुनिवर का पादप्रक्षालन, दीप-आरती के साथ भव्य आगवानी हुई और प्रवास पर प्रतिदिनों के मंगल प्रवचनों और मार्गदर्शन आदि से समाज का उत्साह बढ़ा। कुछ ही दिनों में छोटे काम ने ही बड़ा रूप ले लिया कि नीचे की मंजिल के छोटे शान्तिनाथ बिम्ब आदि को कमल सहित तीसरे मंजिल पर विराजमान करने का, ऊपर की छत बड़ी करने का एवं नीचे मंजिल की नयी वेदी के साथ मूलनायक शान्तिनाथ भगवान की करीब पैंतीस इन्च की और आजू-बाजू आदिनाथ और चन्द्रप्रभु की प्रतिमायें इक्कीस-इक्कीस इन्च की पीतल या अष्ट धातु की प्रतिमा बनाने का निश्चय हुआ और भक्तों ने अपना पूर्ण सहयोग देकर अविलम्ब कार्य को सम्पन्न करने का संकल्प लिया।

पंचकल्याणक ने हेतु पात्र चयनः-

मुनिवर श्री आर्जवसागरजी के मुखारबिन्द से पंचकल्याणक की तिथि प्राप्त होते ही मुनिवर की प्रेरणा से लोग इस पंचकल्याणक गजरथ महामहोत्सव के कार्यक्रम हेतु आचार्यश्री विद्यासागरजी के आशीर्वाद लेने

रहली (पाटन) के पास पहुँचे और वहाँ गुरुवर को ससंघ इस भव्य आयोजन में पधारने का नम्र निवेदन भी किया। आचार्यश्री का प्रसन्नतापूर्ण आशीर्वाद पाकर लोगों का उत्साह दिन दुगना, रात चौगुणा बढ़ता चला गया और एक पंडाल बनाकर शुभ मुहुर्त्त में पंचकल्याणक हेतु पात्र चयन का कार्यक्रम रखा गया और सिविल वार्ड के निकट इस कार्यक्रम के प्रतिष्ठाचार्यत्व हेतु पं.गुलाबचन्द पुष्प जी एवं पं. जय निशान्त को आमंत्रित किया गया। इस भव्य आयोजन में माता-पिता, सौधर्म इन्द्र-इन्द्राणी, ईशान इन्द्र-इन्द्राणी आदि पात्रों की भूमिका निभाने का सौभाग्य श्री जिनेश जैन सपत्नीक, श्री रूपचन्दजी जैन सपत्नीक, श्री चन्द्रकुमार जैन सपत्नीक को प्राप्त हुआ तथा और अनेक पात्रों के चयन में लोगों ने भाग लेकर अपना अमूल्य सहयोग अर्पित किया।

पात्र चयन के आगे-पीछे प्रभावना एवं जन जुड़ाव हेतु मुनिवर का ससंघ विहार मील मन्दिर, काँच मन्दिर, नसियाँ मन्दिर, वसुन्धरा कॉलोनी, नेमिनगर, राजीव नगर, जबलपुर नाका आदि में हुआ। जहाँ प्रवचन व आहार चर्या के द्वारा बड़ी प्रभावना हुई। इसी के साथ पूर्व में किये गये लोगों का निवेदन ध्यान में रखते हुए दमोह के निकटस्थ सदगुँवा जिनालय दर्शन करते हुए वहाँ एक रात रुककर मुनिवर का जहाँ बचपन बीता ऐसे गाँव पथरिया नगर की ओर विहार किया।

पथरिया में 24 साल बाद मुनि बन प्रथम आगमनः-

जिसके पूर्व में पथरिया दि.जैन समाज कमेटी के कमलेश चौधरी, राजेश सेठ आदि ने मुनिवर के चरणों में श्रीफल भेंटकर नगर पधारने का नम्र निवेदन किया था। नगर की सारी जैन समाज ने मुनिवर की भव्य आगवानी की, वाद्य एवं जय-जयकारों से मानों आकाश ही गूंज उठा हो ऐसा लगा और नगर प्रवेश पर जगह-जगह गृह-गृह के सामने गुरुवर का पाद प्रक्षालन एवं आरती कर श्रावकों ने अपनी विशेष भक्ति प्रकट की। पश्चात् जिन मन्दिर का दर्शन कर पाण्डाल में मुनिवर का मंगल प्रवचन हुआ फिर सभी लोगों ने

मुनिवर के लिए शीतकालीन प्रवास एवं प्रतिदिन प्रवचन हेतु श्रीफल भी अर्पित किये। स्टेशन रोड पर स्थित विशाल धर्मशाला में मुनिवर का वास्तव्य रहा। प्रतिदिन पाण्डाल में प्रातःकालीन प्रवचन चले और अपार जन समूह ने अपूर्व लाभ लिया जिसमें मुनिवर के पूर्व (अवस्था के) बचपन के मित्रगण संजय, विजय, पदम, रवीन्द्र आदि उपस्थित रहते थे और जिन्होंने मुनिवर को (बचपन अवस्था में) स्कूली शिक्षा का ज्ञान दिया था ऐसे कई विभिन्न जाति के शिक्षकगण भी मुनिवर के धारावाहिक प्रवचन को सुनकर आनन्दित होते थे। सभी के हृदय में बड़ा संतोष हुआ कि पारसचन्द की अवस्था से गृह छोड़ने के बाद मुनिवर अब प्रथम बार नगर पधारे हैं। वह भी मुनि आर्जवसागरजी बन संयम लेकर के मानो नगर को ही पावन पुनीत और धन्य करने आये हैं। मुनिवर के करीब 15 दिनों के प्रवास में सर्व जिनालय के दर्शनों के साथ आहार चर्या हेतु नवाधाभक्ति करने वाले कई प्रमुख घरों में भी चरण पड़े। श्री 1008 पार्श्वनाथ दि. जैन बड़ा मन्दिर जिसके प्रांगण में पारसचन्द बचपन में क्रीड़ा किया करते थे उसकी विशाल धर्मशाला व स्कूल परिसर में मुनिवर के चरण पड़े एवं कुछ दिनों के प्रवास में विशिष्ट पुण्यवानों के गृहों में आहार चर्या आदि के साथ सभागृह में प्रतिदिन मंगल प्रवचन सम्पन्न हुये। यहाँ तक कि पूर्वावस्था के गृहस्थाश्रम की व्रती माता श्रीमति मायादेवी जैन, तत्पुत्र श्री संजय जैन, श्री अरविन्द जैन के गृह निवास पर भी आहार चर्या हेतु मुनिसंघ के चरण पड़े। साथ ही, अन्त में एक विशेष प्रवचन नव निर्मित आदिनाथ दि. जैन मन्दिर के परिसर स्थित प्रांगण में पंडाल बनाकर रखा गया जिसमें सम्पूर्ण नगर के लोगों ने आकर के मुनिवर का विशेष प्रवचन सुनकर बड़े ही पुण्य का लाभ लिया। तदुपरान्त ऐसी विशेष प्रभावना को करते हुए दमोह नगर से पंचकल्याणक व गजरथ महोत्सव हेतु पुनःपुनः दौड़े-दौड़े आने वाले दमोह के लोगों के नम्र निवेदन से मुनि संघ का विहार दमोह नगर की ओर हो गया। बीच के नोरु गाँव में आहार चर्या सम्पन्न हुई और सायंकाल में बड़े ठाट-बाट के

साथ गुरु संघ का दमोह नगर के मील के मन्दिर होते हुए सिविल वार्ड में मंगल प्रवेश सम्पन्न हुआ।

अब पंचकल्याणक गजरथ महोत्सव की पूर्ण तैयारी हो चुकी थी। मुनिवर की आगवानी के साथ महोत्सव की शुरुआत हेतु प्रतीक्षा की घड़ियाँ समाप्त होने वाली थीं।

दमोह में पंचकल्याणक प्रारम्भः-

दिनांक 27 जनवरी से 1 फरवरी 2008 तक श्रीमज्जिनेन्द्र त्रय गजरथ पंचकल्याणक महामहोत्सव कार्यक्रम दमोह नगर के तहसील ग्राउण्ड के विशाल पंडाल में ध्वजारोहण के साथ प्रारम्भ हुआ। सभी इन्द्र-इन्द्राणी मुनिवर आर्जवसागरजी ससंघ के पीछे जिनबिम्ब सह जुलूस के साथ आते हुए ऐसे प्रतीत हो रहे थे कि मानो स्वर्ग से सारे देवता बड़े वैभव विभूति के साथ पधार रहे हैं। मंगल ध्वजारोहण के साथ पण्डाल एवं मण्डप की शुद्धि इन्द्राणियों से की गयी एवं पं.गुलाबचन्द पुष्प व ब्र. पं.जयनिशान्त आदि के द्वारा सकलीकरण क्रिया, पात्र शुद्धि पूर्वक सम्पन्न की गयीं।

पत्थर को भगवान बनाने की प्रक्रिया :-

पंचकल्याणक में पहले दिन गर्भ कल्याणक के पूर्व रूप में देव आज्ञा, गुरु आज्ञा, घट यात्रा, पण्डाल शुद्धि, वेदी शुद्धि, ध्वजारोहण, अभिषेक, नित्य पूजन, यागमण्डल विधान प्रारम्भ हुआ तथा रात में माता के सोलह स्वप्न व अष्टकुमारियों की सेवा आदि के दृश्य दर्शाये गये। दूसरे दिन गर्भकल्याणक के उत्तर रूप में प्रातः नित्य क्रियाओं के साथ माता की गोद भराई, और रात के सोलह स्वप्नों का फल दर्शन आदि कार्यक्रम हुये। तीसरे दिन जन्म कल्याणक में प्रातः शुभ मुहूर्त्त में जिन बालक का जन्म होना, सौधर्म इन्द्रादि देव-गण भूतल पर अवतरण और शचि इन्द्राणी द्वारा जिनबालक को प्रसूति गृह से बाहर लाना, सौधर्म इन्द्र का ताण्डव नृत्य और जिन बालक को लेकर सौधर्म इन्द्र द्वारा ऐरावत हाथी पर सवार होकर सुमेरु पर्वत पर ले जाना, वहाँ क्षीरोदधि के

जल से जिन बालक का जन्माभिषेक करना इत्यादि दृश्य दिखाये गये। और रात में पालना झुलाना, बाल क्रीड़ा आदि कार्यक्रम सम्पन्न हुये। चौथे दिन दीक्षा कल्याणक के समय आदिनाथ प्रभु का राजदरबार, 32 हजार मुकुटबद्ध राजाओं की भेंट, सम्मान, पश्चात् आदिकुमार द्वारा जनता के लिए षट्कर्म सिखाया जाना, पुत्रियों को अक्षर विद्या, अंक विद्या सिखाना, व आदिकुमार का वैराग्य के कारण रूप में नीलाञ्जना का नृत्य व उसकी अचानक मृत्यु होना। प्रभु का वैराग्य चिन्तवन व लौकान्तिक देवों द्वारा वैराग्य की सराहना का दृश्य और पालकी पर आरूढ़ होकर तीर्थंकर आदिकुमार का वन की ओर गमन होना एवं वहाँ वट वृक्ष के नीचे दीक्षा धारण करना। गुरुवर आर्जवसागरजी द्वारा दीक्षा विधि सम्पन्न हुयी। रात को सांस्कृतिक कार्यक्रम हुआ। पांचवे दिन केवलज्ञान कल्याणक में प्रातः आदि मुनिराज की आहार चर्या का दृश्य दिखाया गया। पश्चात् दोपहर में अनेक प्रतिमाओं के ऊपर गुरुवर के द्वारा सूर्यमंत्र, अंकन्यास आदि क्रियाओं के माध्यम से केवलज्ञान का संस्कार हुआ। समवसरण की रचना एवं गणधर के रूप में गुरुवर आर्जवसागरजी द्वारा दिव्यध्वनि रूप उपदेश हुआ। अन्तिम दिन प्रातः भगवान का मोक्ष कल्याणक का दृश्य दिखाया गया और त्रय गजरथ फेरी तथा मन्दिर की वेदी में जिन बिम्ब स्थापना आदि कार्यक्रम सानंद सम्पन्न हुये।

पंचकल्याणक ने इतिहास का रूप लिया :-

गुरुवर आर्जवसागरजी के पाँचों दिन के प्रातः एवं मध्यान्ह के प्रवचनों में पाँचों कल्याणक के विषय, त्याग, वैराग्य, सम्यग्दर्शन, निमित्त-उपादान, नियत-अनियत, भाग्य-पुरुषार्थ, शुद्धोपयोग-स्वरूपाचरण और ध्यान आदि के विषय पर मुख्यता से प्रकाश डाला गया। पंचकल्याणक के विशाल पंडाल में देश के विभिन्न प्रान्तों एवं नगर-उपनगरों से भव्य लोगों ने आकर अपूर्व लाभ लिया। प्रतिदिन मुनिवर के दर्शनार्थ एवं आशीष पाने विधायक, मंत्री आदि अनेक नेता गण भी उपस्थित होते रहे। पंचकल्याणक की व्यवस्था में

एस.के. जैन, डी.आर. जैन, चन्द्रकुमार जैन, संजीव जैन, राजेन्द्र सिंघई, और रतनचन्द्र जैन आदि ने भी सक्रिय भूमिका निभाई। अंतिम दिन गजरथ महोत्सव के दिन दूर-सुदूर से एकत्रित जनता का ऐसा विशेष जन सैलाब ऐसा प्रतीत हुआ मानो पूरे देश की जनता ही उमड़ पड़ी हो, पैर रखने के लिए भी जगह मुश्किल हो गई। पूरे मैदान में विशेष त्रय गजरथ की फेरी हेतु पण्डाल के चारों ओर परिक्रमा पथ बनाया गया था। जिसमें सबसे पहले ध्वजदण्ड फिर अनेक तरह के वाद्य और गजरथ के आगे मुनिवर आर्जवसागरजी ससंघ चल रहे थे। साथ में समाज के विशिष्ट श्रीमन्त श्रेष्ठीगण तथा जयंत मलैया, भार्गवजी आदि चल रहे थे। पुलिस की विशिष्ट व्यवस्था चारों तरफ की गयी थी और परिक्रमा के बाहर से एवं पण्डाल में सभी लोग जय-जयकार लगा रहे थे। महिलायें मंगल गीत गा रहीं थीं और रथ में बैठ जिनेन्द्र प्रभु को आसमान में लिए इन्द्रादिगण विशिष्ट शोभा पा रहे थे। सातों परिक्रमायें होते ही प्रतीक्षा थी गुरुवर के आशीर्वाद की, और गुरुवर आर्जवसागरजी को पण्डाल तक पहुँचाने में बड़ा मुश्किल-सा हो रहा था क्योंकि लोग चरण छूने के लिए आतुर हो रहे थे। जब सेवक संघ द्वारा रास्ता बनाया गया तब मुनिवर पण्डाल में आसन पर विराजमान हुये और त्रय गजरथ महोत्सव की खुशीयों से भरी जनता नाच-नाच कर झूम उठी। पश्चात् प्रवचन के पूर्व आभार प्रदर्शन, स्वागत सम्मान समारोह एवं मंगलाचार हुआ। पश्चात् मुनिवर का आचरण प्रधान प्रवचन हुआ। जिसमें इस विषय को मुख्यता से बतलाते हुये मुनिवर ने कहा कि- जितने आचार-विचार सह भावों की शुद्धि होती है, जितनी शुद्धि रीती से मंत्रों का उच्चारण होता है उतना ही अनुष्ठान सातिशय मंगलमय सम्पन्न होता है और शास्त्र में कथित दृढ़ संकल्पी ऊर्विला रानी के जिनरथ की विद्याधरों ने आकाश मार्ग से प्रभावना की थी और जिनधर्म की विजय पताका कैसे लहरायी थी? इसका विवेचन करते हुए जनता को अपने जीवन में व्यसन मुक्ति पूर्वक सदाचार, जिन धर्माचार पूर्वक जिनधर्म की प्रभावना निरन्तर करते

हुए धर्म की रक्षा करने का आशीर्वाद दिया।

समारोह सानन्द सम्पन्न होने के उपरान्त पण्डाल में स्थित जिनबिम्बों को गाजे-बाजे के जुलूस के साथ सिविलवार्ड जिनमंदिर तक लाया गया। जुलूस में मुनिवर भी साथ चल रहे थे। इन्द्र-इन्द्राणियाँ भी अष्टमंगल ध्वजादि पात्र लेकर चल रहे थे और अपार जन समूह के जय-जयकारों के साथ युवागण खुशी भरा नृत्य कर रहे थे और जिनालय पहुँचते ही शुभ मुहूर्त्त में जिन-बिम्ब स्थापना का कार्यक्रम हुआ। शिखर पर स्वर्णमयी कलशारोहण किया गया एवं पीतल के ध्वजदण्ड की स्थापना की गयी। ऐसे अभूतपूर्व सानन्द सम्पन्न हुये कार्यक्रम की चर्चा सर्वत्र चलती रही। एक दिन रविवार को पात्रों के सम्मान का कार्यक्रम के अन्त में मुनिवर के पावन प्रवचन हुये। पश्चात् कुछ दिन ठहरकर वसुन्धरा कालोनी आदि में कलशारोहण आदि का महोत्सव सम्पन्न कराने के उपरान्त पूर्व से ही जिनका निवेदन लगा हुआ था कि हमारे नगर में मानस्तम्भ की प्रतिष्ठा हो ऐसे नगर छतरपुर की ओर मुनिवर का ससंघ मंगल विहार होने की संभावना लोगों को मालूम पड़ी और इसी बीच नैनागिरि, द्रोणागिरि के दर्शन के भी भाव उमड़ पड़े।

मंगल विहार की बेला:-

जब एक दिन मध्यान्ह सामायिक के उपरान्त शुभ मुहुर्त में बिना संकेत के ही मुनिवर का विहार नरसिंहगढ़ की ओर हो गया। विहार की खबर पवन की भाँति नगर के घर-घर तक पहुँच गई। सभी लोग अपने जैसे के तैसे काम-काज छोड़कर मुनिवर के दर्शनार्थ दौड़ पड़े और थोड़े ही दूर में मानो पूरा नगर ही मुनिसंघ के दर्शन को आतुर हो गया हो, कोई चरण छू रहे थे, कोई बार-बार नमोस्तु बोल रहे थे, किन्हीं की आँखों से अश्रु-धारा बह रही थी कि अब कब मुनिवर का सान्निध्य मिलेगा। इतना अपूर्व लाभ हमको मिला है इसको हम भुला नहीं सकते हैं और सभी लोग जय-जयकारों के साथ मुनिवर के साथ आगे बढ़ते चले गये और बीच में कहते चले गये कि अभी थोड़े दिनों और

लाभ मिला होता तो कितना अच्छा होता। मुनिवर भी समझा रहे थे कि करीब 7 महिनों के सान्निध्य से क्या तृप्ति नहीं हुई? हाँ; ठीक है ऐसी भावना भी आगे बनी रहना चाहिए तभी तो आगे मुनिसंघ जल्दी मिलेंगे और बीच-बीच में कई बार संकेत भी करते जा रहे थे कि अब बहुत दूर हो गया तुम लोग अपने गृह की ओर वापिस लौट जाओ। लेकिन लोगों का अंतरंग लौटने का नहीं कर रहा था। आखिर रात्रि विश्राम के स्थान तक काफी संख्या में लोग आये। दूसरे दिन भी नरसिंहगढ़ जिनालय तक काफी लोग दर्शनार्थ आते ही रहे और साथ में छतरपुर के लोग भी चल रहे थे और आहारचर्या के उपरान्त बहुत दिनों से प्रतीक्षारत फुटेरा ग्राम के लोग भी अपने नगर में पधारने का निवेदन करने आ ही गये। सभी ने श्रीफल अर्पित कर नम्र निवेदन किया है कि हे मुनिवर! आपकी जिस काया ने 'पारसचन्द' के रूप में फुटेरा कलाँ के जिस परिवार में जन्म लिया था उस परिवार की शाखायें और बढ़ चुकी हैं उनको भी दर्शन का लाभ दीजिए और आपके बचपन के मित्र आपको हमेशा स्मरण में लाते हैं उन्हें भी धर्म उपदेश दीजिए। कुछ भी हो अगर आपको ये सब नहीं चाहिए हो तो कम-से-कम परिवार के द्वारा संस्थापित (निर्मित) चन्द्रप्रभु जिनालय का दर्शन तो जरूर कीजिए। इसके निमित्त सारे गाँव के लोग आपके मोक्षमार्ग में जाने के 24 साल बाद प्रथम पदार्पण से आपकी ज्ञान की प्रतिभा से बड़े लाभान्वित होंगे। यह सब सुनते हुए मुनिवर नम्र दृष्टि पूर्वक मुस्कराते हुए केवल मौन से आशीर्वाद दे रहे थे।

फुटेराकलाँ में प्रथम मंगलप्रवेश:-

मध्यान्ह सामायिक के उपरान्त मुनिवर आर्जवसागरजी का ससंघ विहार फुटेराकलाँ की ओर हो गया। फुटेरा ग्राम में सुभाष, राजेश, सुरेन्द्र, वीरेन्द्र, अमित, दीपक आदि और दमोह आदि नगरों के लोग भी साथ चल रहे थे। रास्ते के मध्य ग्राम में रात्रि विश्राम करके प्रातःकाल फुटेरा ग्राम की ओर विहार चला। संघस्थ अर्पणसागरजी भी गुरुवर के पूर्व अवस्था के जन्म गाँव

को देखने के लिए उत्साहित हुए चल रहे थे और पूर्व अवस्था के लोग मुनिवर के पूर्व अवस्था से सम्बन्धित संस्मरण भी सुनाते जा रहे थे। ज्यों-ज्यों नगर के निकट पहुँच गये त्यों-त्यों जैन श्रावक श्राविकाओं के साथ अपने नगर में जन्में मुनिवर आर्जवसागरजी के दर्शन करने हेतु जैनेतर समाज के लोग भी आकर अपनी भक्ति प्रदर्शित करने लगे। नगर के नजदीक पहुँचते ही समाज के विशिष्ट एवं श्रेष्ठीगण मंगल वाद्यों के साथ मुनिवर की आगवानी के लिए आये और चरणों में नमन करके जयकारों के साथ नगर की ओर बढ़ने लगे। नगर प्रवेश पर देखा तो जगह-जगह तोरण द्वार बांधे गये थे। गृहों के सामने रंगोली से चौक पूरे गये थे और मंगल कलश रखकर आरतियाँ भी सजाई गयी थीं। नगर को दुल्हन जैसा सजा हुआ देखकर ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो कोई महापर्व का दिन ही मनाया जा रहा हो। लोग मुनिवर के चरण छूने के लिए आतुर हो रहे थे। घर-घर के सामने पाद प्रक्षालन और भक्तगण मुनिवर की आरती उतार रहे थे। क्रमशः आगे बढ़ते हुए मुनिसंघ का पदार्पण जिनालय में हुआ। जिनालय में जिन बिम्बों का दर्शन कर सभी को अपूर्व संतोष हुआ। मुनिवर ने देखा पूर्व में तो एक छोटा (चैत्यालय के सदृश्य) जिन मन्दिर था लेकिन अब कितना विस्तृत तीन मंजिल में मन्दिर बनके खड़ा हुआ है। लोगों ने मुनिवर को बतलाया कि समाज की वृद्धि होने से आपके पूर्व जन्म स्थान को भी मिलाकर जिनालय का विस्तार कर दिया गया है। वह पवित्र जन्मस्थान भी मन्दिर की पवित्रता में सम्मिलित हो गया है। अब बहुत सारे लोग एक साथ बैठकर पूजन-विधान सरलता से कर सकते हैं। तदुपरान्त मुनिवर का रोड के किनारे बनाये पण्डाल में प्रवचन सम्पन्न हुआ। प्रवचन के पूर्व बाहर से पधारे एवं समाज के प्रमुख वर्ग ने मुनिसंघ के चरणों में शीतकालीन प्रवास हेतु श्रीफल अर्पित किये। अतिथि सत्कार भी किया गया, मंगलाचरण सम्पन्न हुआ। तदुपरान्त मुनिश्री का मंगल प्रवचन हुआ। तदुपरान्त आहारचर्या हेतु मुनिसंघ आहार को निकला। आहारचर्या करवाने एवं देखने के लिए जनता

भक्तिपूर्वक उमड़ पड़ी। आहार होते ही मंगल गीत गाये गये एवं दिव्य वाद्य घोष हुये और अतिथि निवास में मुनि संघ की सामायिक पूर्ण होने के तुरन्त बाद ही मुनिवर का विहार बटियागढ़, खड़ेरी से नैनागिरि की ओर हो गया। लोग आश्चर्यचकित होते हुए कोई अश्रुपात करते हुए ऐसे निर्मोही मुनिवर के पीछे-पीछे दौड़ने लगे और पैर पकड़कर कहने लगे कि हम लोगों ने तो शीतकालीन प्रवास की आशा लगायी थी लेकिन आप तो एक ही दिन में निकल पड़े कम से कम कुछ दिन रहकर हमारे गृहों में चरण पड़ते हमारी कुटिया पवित्र हो जाती। मुनिवर ने कहा कि छतरपुर नगर में मानस्तम्भ प्रतिष्ठा का कार्यक्रम है। वहाँ के लोग भी साथ चल रहे हैं। बीच में कई ग्राम आयेंगे और सिद्धक्षेत्र नैनागिरि, द्रोणागिरि का भी दर्शन करना है इसलिए अभी समय का अभाव है। फिर कभी देखेंगे।

नैनागिरि-द्रोणगिरि दर्शनः-

बटियागढ़ पहुँचे वहाँ से केरबना होते हुए सिद्धक्षेत्र नैनागिरि की ओर हो गया। जंगल और पहाड़ी से होते हुए जहाँ पर पार्श्वनाथ का समवशरण व वरदत्तादि पाँच मुनिराज निर्वाण को प्राप्त किया ऐसे सिद्धक्षेत्र नैनागिरि पहुँचे। नैनागिरि में पार्श्वनाथ समवशरण का दर्शन किया और पर्वत पर बने जिनालयों एवं चौबीसी युक्त पार्श्वनाथ भगवान का दर्शन करते हुए मुनिवर को अपनी पुरानी स्मृतियाँ ताजी हो गयी कि ऐसे ही क्षेत्र पर पहाड़ी पर बने जिनालयों के बीच प्रांगण में सन् 1985-86 में जब हम क्षुल्लक अवस्था में थे तब आचार्यश्री (विद्यासागरजी) हम सबको मूलाचार ग्रन्थ की वाचना सुनाया (पढ़ाया) करते थे और सभी साधु और आचार्यश्री के साथ हम इन्हीं मन्दिरों में सामायिक और रात्रि विश्राम आदि किया करते थे। सन् 1986 के शीतकालीन एवं पंचकल्याणक और गजरथ के दौरान इसी क्षेत्र पर समवशरण मन्दिर का पंचकल्याणक एवं प्रथम बार आर्यिका दीक्षायें और क्षुल्लक दीक्षायें सम्पन्न हुई थीं। स्वल्पकाल के वास्तव्य के उपरान्त दलपतपुर की ओर विहार

हो गया। मुनिश्री आर्जवसागरजी की आहारचर्या मुनिश्री सुमतिसागरजी के पूर्व गृहस्थाश्रम के घर पर नवधा भक्ति पूर्वक सम्पन्न हुईं एवं लोगों को मुनिश्री का प्रवचन भी सुनने का सौभाग्य मिला। मुनिवर को रुकने का बहुत निवेदन होते हुए भी मध्यान्ह में शाहगढ़ की ओर मुनिसंघ का विहार हो गया। यहाँ भी प्रवचन और आहारचर्या सम्पन्न हुयी और मध्यान्ह में सिद्धक्षेत्र द्रोणागिरि की ओर चल पड़े। जंगल के मार्ग से होते हुए गुरुदत्तादि मुनीन्द्र जहाँ से मोक्ष पधारे ऐसे सिद्धक्षेत्र द्रोणागिरि पहुँचे। द्रोणागिरि पर्वत पर बने सर्व जिनालयों की भाव सहित वंदना की और आहारचर्या सम्पन्न हुयी। तदुपरान्त छतरपुर नगर की ओर मंगल विहार किया। दमोह से ही छतरपुर वासी राजेन्द्र जैन आदि के साथ एक ट्रेक्स गाड़ी में चौके आदि की बड़ी व्यवस्थाओं को लेकर के श्री चन्द्रकुमार जैन (न्यू किरण रोडवेज) धनीराम (डी.आर) जैन और नन्ना (दीक्षा किराना) ये सभी लोग विहार का उत्तम लाभ लेते हुये मुनिवर के साथ छतरपुर तक पहुँचे।

छतरपुर नगर में भव्य मंगलप्रवेश:-

छतरपुर नगर प्रवेश पर अगवानी के लिए छतरपुर समाज के प्रमुख लोग सभी जैन श्रावक-श्राविकाओं के साथ वाद्य एवं जय-जयकारों के साथ मुनि संघ को लेने उपस्थित हुए। साथ ही में मुनिवर की अगवानी के लिए मुनिश्री मंगलानन्दसागरजी पधारे। सर्वप्रथम अतिशय क्षेत्र डेरा पहाड़ी पर मानस्तम्भ प्रतिष्ठा दिनांक 22-2-2008 से 24-2-2008 तक परम पूज्य मुनिश्री आर्जवसागरजी महाराज श्री ससंघ की पावन पवित्र पुनीत उपस्थिति के बीच पं. कमल कुमार कमलांकुर भोपाल के निर्देशन में त्रिदिवसीय मानस्तम्भ वेदी शुद्धि, बिम्ब स्थापना एवं कलशारोहण समारोह जो पंचकल्याणक कार्यक्रमों का एक अंश था सम्पूर्ण हुई। समाज के अबाल वृद्ध स्त्री पुरुषों के चेहरों पर खुशियाँ ही खुशियाँ परिलक्षित हो रहीं थीं। माननीय श्री कपूरचंद जैन (घुबारा), अध्यक्ष, म.प्र. हस्त शिल्प एवं हथकरघा निगम मर्या. भोपाल

(केबिनेट मंत्री) भोपाल की गरिमामयी उपस्थिति रही।

सकल दिगम्बर जैन समाज का तीव्र पुण्योदय अभी क्षय नहीं हुआ था इसलिए मुनिश्रीजी के चरणों वाचना का प्रस्ताव रखा गया तदुपरान्त महाराज के द्वारा रचित तीर्थोदय काव्य की वाचना क्षेत्र पर हुई। इसी बीच अष्टाह्निका महापर्व के मंगल अवसर पर छतरपुर जैन समाज ने अतिशय क्षेत्र डेरा पहाड़ी में नन्दीश्वर द्वीप महामण्डल विधान एवं विश्व शान्ति यज्ञ का मंगल आयोजन आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज के परम शिष्य अध्यात्मयोगी धर्म प्रभावक मुनिश्री आर्जवसागरजी महाराज के मंगल सान्निध्य में आयोजित किया गया। विधान ब्र. त्रिलोकजी के विधानाचार्यत्व में सम्पन्न हुआ। समाज की भारी उपस्थिति में क्षेत्र प्रबंधक श्री पद्मचंद वासल सौधर्म इन्द्र, श्री प्रेमचन्द जी ईशान इन्द्र, श्री सी.सी. जैन, श्री के.सी जैन, श्री नेमीचन्द्र जैन, श्री कमल जैन दादा, श्री ज्ञानचन्द्र जी आदि महानुभाव भी उपस्थित रहे व धर्मलाभ लिया। श्रीजी के जयकारों के साथ मुनिश्री आर्जवसागरजी महाराज के अमृत प्रवचनों का भरपूर लाभ मिलता रहा। मुनिश्री की अमृत वाणी से अमृत ऐसे झरा ''भक्ति के आकाश से ही आनन्द अमृत बरसता है। भक्त का हृदय क्रोध, मान, माया, लोभ के बादलों से स्वच्छ होकर जब भक्ति की डोलती पालकी में बैठकर परमात्मा की आराधना करता है तब जीवन की बगिया में धर्म ध्यान के महकते फूल खिलते हैं।'' इस प्रकार यह आयोजन जो अनेक सफलताओं एवं उपलब्धियों की सौगात जैन समाज को दे गया, समाज के बच्चों में, महिलाओं-पुरुषों में एक धर्ममय जागृति का वातावरण महाराजश्री के प्रवचन के दौरान सहज में देखा जा सकता था। म.प्र. के प्रमुख समाचार पत्रों में महाराजश्री के फोटो के साथ सारगर्भित, मार्मिक, हृदयग्राही जिनागम की देशना नियमित प्रकाशित होती रही, जिससे जैन-जैनेत्तर समाज में अपूर्व धर्म प्रभावना हुई। महाराज श्री के व्यक्तित्व एवं कर्त्तव्य के बारे में लिखना मानो सूरज को दीपक दिखाना है। महातपस्वी, महाज्ञानी, महादानी, महाध्यानी,

मुख कमल पर धीमी मुस्कान, शांत, सौम्य मुद्रा, सरल हृदय, ख्याति लाभ के अत्यंत दूर, चौथे काल के मुनि सदृश कठोर चर्या के धनी इस कठिन कलिकाल में बिरले ही मुनि होते हैं। यह डेरा पहाड़ी के अतिशय के साथ ही मुनिश्री का भी अतिशय था, जो श्रावकों के मानस में दान की महिमा पैदा हुई एवं उक्त सभी समारोहों में श्रावकों से कल्पना से अधिक विपुल दान राशि बड़ी उदारमना हो क्षेत्र को प्रदान की। पूज्य मुनिश्री के द्वारा रचित जैनागम संस्कार (प्रश्नोत्तर मालिका) जो शिक्षण शिविर एवं पाठशालाओं के लिए बहुत उपयोगी कृति है। जिसका पुनः प्रकाशन करवाया। सकल दिगम्बर समाज ने कहा कि हम मुनिश्री के जन्मों-जन्मों तक ऋणी रहेंगे एवं इस उपकार को कभी विस्मरण नहीं कर सकेंगे। पश्चात् बंधाजी अतिशय क्षेत्र की कमेटी ने छतरपुर में आ करके अतिशय क्षेत्र बंधाजी में सम्पन्न होने वाले अजितनाथ भगवान के निर्वाण महोत्सव एवं मेले में पधारने हेतु नम्र निवेदन किया। पश्चात् कुछ समय शहर के मंदिरों को देकर मुनि संघ का विहार बंधाजी क्षेत्र की ओर हो गया।

बंधाजी की ओर विहार व वार्षिक मेला सम्पन्न :-

छतरपुर से धुबेला गाँव पहुँचे। जहाँ के जैन श्रावकों को मुनि संघ की आहार चर्या का लाभ मिला। आहार चर्या के उपरान्त गुरुवर आर्जवसागरजी महाराज ने धुबेला के किले में स्थित म्यूजियम (संग्रहालय) का अवलोकन किया। वहीं सामायिक सम्पन्न कर मध्याह्न में संग्रालय में स्थित जिन प्रतिमाओं को एवं छत्रसाल राजा से संबन्धित ऐतिहासिक पुरातन सामग्रियों का भी अवलोकन किया। तदुपरान्त नौगाँव की ओर विहार किया और वहाँ पर भी जिनालय दर्शन कर प्रवचन और आहारचर्या सम्पन्न हुई। फिर वहाँ से विहार करते हुए जतारा में प्रवचन व आहार चर्या करते हुए बंधाजी पहुँचे। बंधाजी में क्षेत्र का दर्शन करके अपूर्व आनन्द हुआ। पश्चात् श्री अजितनाथ भगवान का निर्वाण महोत्सव एवं वार्षिक मेले का कार्यक्रम पूज्य गुरुवर के मंगल

सान्निध्य में बड़ी धर्म प्रभावना के साथ सानन्द सम्पन्न हुआ। मुनिवर ने इस अवसर पर अ.क्षे. बंधाजी पर कविता भी रची। पश्चात् कुछ दिनों तक वास्तव्य करके टीकमगढ़ पहुँचे।

टीकमगढ़ में मंगलप्रवेश-महावीर जयंती सम्पन्नः-

टीकमगढ़ में मुनिश्री की भव्य आगवानी बड़ी प्रभावना के साथ हुई ससंघ गुरुवर श्री दि. जैन मांझ मन्दिर पहुँचे वहाँ पर गुरुवर आर्जवसागरजी के सान्निध्य में महावीर जयंती एवं गुरुवर की इक्कीसवीं मुनि दीक्षा जयन्ती (दीक्षा दिवस) बड़े धूमधाम से मनाई गई। जिसमें विशाल शोभायात्रा नगर के मुख्य मार्गों पपौरा चौराहा, कोतवाली होते हुए पुनः मन्दिर पहुँची। शोभायात्रा में धार्मिक जैन भजन बैंड पर गूंज रहे थे तथा रथ पर श्रीजी की झांकी भी सुशोभित थी। सभी ने अपने घरों के सामने रंगोली सजाई तथा श्रीजी एवं मुनि महाराज की आरती उतारी शोभायात्रा का स्वागत किया। शोभायात्रा के समापन पर भारी संख्या में महिलाएँ पुरुष मौजूद थे। इस अवसर परम पूज्य गुरुवर आर्जवसागरजी के सान्निध्य में 2000, 2004 एवं 2006 में सम्पन्न हुई विद्वत् संगोष्ठियों की स्मारिका 'संगोष्ठी त्रय स्मारिका' तथा महाराज जी द्वारा रचित कृति 'जैनागम संस्कार' एवं महाराजजी की प्रेरणा एवं आशीर्वाद से प्रारम्भ की गई त्रैमासिक पत्रिका 'भाव विज्ञान' के तीसरे अंक का विमोचन जिला न्यायाधीश श्री ए.के. जैन द्वारा किया गया। अन्त में श्रीजी का कलशाभिषेक एवं गुरुवर का प्रवचन सम्पन्न हुआ।

तदुपरान्त एक शुभ तिथि पर श्री पं. गुलाबचंद पुष्प एवं ब्र. जय निशांत के प्रतिष्ठाचार्यत्व में नया मन्दिर का कलशारोहण कार्यक्रम गुरुवर के सान्निध्य में सम्पन्न किया गया। इसी बीच अतिशय क्षेत्र पपौराजी क्षेत्र की वंदनायें भी सम्पन्न हुयीं। नन्दीश्वर कॉलोनी में कुछ दिनों के ग्रीष्मकालीन वास्तव्य के दौरान धार्मिक पाठशालाओं का धार्मिक सांस्कृतिक कार्यक्रम एवं धार्मिक कक्षाओं को लेकर विशाल शिविर गुरुवर आर्जवसागर जी महाराज के

विशेष प्रवचनों के साथ आयोजित किया गया। तदुपरान्त मांझ मन्दिर में श्रुतपञ्चमी पर्व के भव्य आयोजन के दौरान समाज द्वारा गुरुवर के वर्षायोग हेतु नम्र निवेदन करते हुए श्रीफल अर्पित भी किये।

मंगल विहार:-

कुछ दिनों के वास्तव्य के उपरान्त गुरुवर का विहार अतिशय क्षेत्र बानपुर की ओर हो गया। ऐसे क्षेत्र की वंदना करते हुए गुरुवर ससंघ विहार करते हुए चिगलौआ, वार, बांसी होते हुए तालबेहट पहुँचे। वहाँ भव्यों ने भव्य आगवानी की और प्रवचन के दौरान वर्षायोग हेतु श्रीफल अर्पित किये। कुछ दिनों के वास्तव्य के उपरान्त गुरुवर का विहार सिद्धक्षेत्र पावागिरि की ओर हो गया। पावागिरि क्षेत्र दर्शन वंदनादि करके गुरुवर बबीना पहुँचे। बबीना में प्रवचनादि के माध्यम से धर्म प्रभावना करते हुए झांसी की ओर विहार कर दिया। झांसी नगर में भव्य मंगल प्रवेश हुआ। बी.एच.ई.एल. का मन्दिर व सदर बाजार का मन्दिर दर्शन कर वहाँ भी प्रवचन व आहार चर्या के उपरान्त अतिशय क्षेत्र करगुवांजी के दर्शनार्थ विहार कर दिया। करगुवांजी क्षेत्र पर प्रवचन के मंगल कार्यक्रम के समय इस क्षेत्र की समस्त ट्रस्ट कमेटी एवं पदाधिकारियों द्वारा गुरुवर के चरणों में वर्षायोग हेतु भक्ति-भाव से निवेदन किया गया। यहाँ भी अल्प समय रुककर गुरुवर का विहार दतिया नगर की ओर हो गया। दतिया नगर में आहार चर्या एवं प्रवचनादि का लाभ देते हुए सिद्ध क्षेत्र सोनागिरि की ओर मंगल विहार हो गया।

सोनागिरि दर्शन:-

सोनागिरि में पहुँचकर क्षेत्र के 77 मन्दिरों की वन्दनायें सम्पन्न की। वहाँ पर ग्वालियर के स्वर्ण मन्दिर व दाना ओली से में वर्षायोग हेतु निवेदन करने के लिए भक्तगण आये। अपनी मुनि दीक्षा की स्थली सोनागिरि को पाकर गुरुवर आर्जवसागरजी को अपूर्व आनन्द हुआ। यहीं से नंग अनंग कुमारादि साढ़े पाँच करोड़ मुनिराजों ने मोक्ष प्राप्त किया। जिसका कण-कण पवित्र है

ऐसे क्षेत्र की वंदना कर अपूर्व आनन्द की अनुभूति हुई। पश्चात् ग्वालियर वालों की वर्षायोग हेतु मंगल भावना देखकर डबरा गाँव से होते हुए ग्वालियर की ओर गुरुवर ने ससंघ विहार किया।

ग्वालियर नगर में मंगल प्रवेश:-

जैसे-जैसे ग्वालियर की ओर बढ़ते गये और नगर पास आता गया वैसे-वैसे ग्वालियर के भक्तों की भीड़ बढ़ती चली गयी। पश्चात् सारे भक्तों के साथ एक मंगल बेला में गुरुवर का मंगल भव्य प्रवेश ग्वालियर नगर में हुआ। गुरुवर आर्जवसागरजी का प्रथम प्रवेश नया बाजार में हुआ। फिर दानाओली आदि अनेक जिन मन्दिरों का दर्शन करते हुए स्वर्ण मन्दिर पहुँचे और स्वर्ण मन्दिर के परिसर में गुरुवर का वास्तव्य रहा। प्रतिदिन के प्रवचन बड़ी प्रभावना के साथ चलते रहे। दानाओली के दिगम्बर जैन मन्दिर के आस-पास में स्थित दिगम्बर जैन समाज एवं जैन मिलन के लोगों ने गुरुवर को वर्षायोग हेतु स्वर्ण मन्दिर में प्रवचन के दौरान निवेदन किया।

सन् 2008 की चातुर्मास स्थापना:-

परन्तु अपने संघ की साधना एवं प्रभावना का उपयुक्त स्थान श्री पार्श्वनाथ दि.जैन मन्दिर नया बाजार में जानकर वहाँ की समाज के वर्षायोग हेतु विशेष आग्रह को देखकर अपने वर्षायोग की स्थापना की। 17 जुलाई 2008 को स्थापना का कार्यक्रम निकट स्थित विशाल महावीर भवन कम्पू में सम्पन्न हुआ। संत शिरोमणि आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज के शिष्यगणों का यह प्रथम बार वर्षायोग ग्वालियर नगर में स्थापित हुआ। स्थापना के दिन सर्वप्रथम मंगलाचरण हुआ। इसके पश्चात् भगवान महावीर स्वामी एवं आचार्यश्री के चित्र का अनावरण व दीप प्रज्वलन वीरेन्द्र गंगवाल, लालमणि जैन आदि समाज गणमान्य लोगों द्वारा किया गया। चातुर्मास की स्थापना हेतु सकल जैन समाज ने श्रीफल भेंट कर निवेदन किया। तीन चातुर्मास कलशों को बोली के माध्यम से चयन किया गया। इसके पश्चात् मुनिश्री को शास्त्र भेंट

कर उनके पाद प्रक्षालन हुए। मुनि श्री ने चातुर्मास का महत्त्व इस विषय पर प्रकाश डाला। प्रत्येक रविवार को जिनागम संगोष्ठी का कार्यक्रम व प्रश्न मंच निश्चित हुए। अंत में पूज्य गुरुवर का मांगलिक प्रवचन हुआ जो नूतन रहता था धर्म के रहस्यों का जिस तरह सूक्ष्म विवेचना तत्त्व का चिंतन और भावों की निर्मलता, पवित्रता शुद्धि रूप जो प्रवचन गंगा का प्रवाह बहा, ऐसा जीवन में पहली बार लोगों ने सुना। अंत में हजारों नर-नारियों के साथ स्थापित कलशों के गुरुवर के सान्निध्य में भव्य शोभा यात्रा, धार्मिक गीतों के साथ बेंड बाजों के साथ नया बाजार जैन मन्दिर पहुँची जहाँ कलशों को स्थापित किया गया।

चातुर्मास के मांगलिक कार्यक्रमः-

दूसरे दिन गुरु पूर्णिमा के पावन अवसर पर गुरुवर की पूजा एवं आरती की गई। और गुरुवर ने अपने प्रवचन में गुरु शिष्य परम्परा पर प्रकाश डालते हुए कहा कि किस प्रकार इन्द्रभूति गौतम भगवान महावीर स्वामी से मिले तथा उन्हें प्रथम गणधर बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ इत्यादिक के बारे में बताया तथा दूसरे दिन वीरशासन जयन्ती पर गुरुवर ने समवशरण रचना के 66 दिन के बाद कैसे प्रभु की वाणी खिरी इत्यादि के बारे में बताया। नया बाजार जैन मन्दिर परिसर में गुरुवर के प्रातः 8:30 प्रवचन, तीर्थोदय काव्य का वाचन एवं अपरान्ह में इष्टोपदेश एवं वारसाणुवेक्खा पर अध्यात्म से ओत-प्रोत प्रवचन सम्पन्न हुए। श्री अनूप मिश्रा जल संसाधन मंत्री, म.प्र. शासन ने आकर मुनिवर से आशीर्वाद लिया।

दिनांक 8.8.08 मोक्षसप्तमी के दिन मुनिश्री ससंघ बहुत संख्या में भव्यजनों के साथ सुप्रतिष्ठित केवली की वसुन्धरा गोपाचल पर्वत पर पहुँचे वहाँ पर्वत पर स्थित भगवान पार्श्वनाथ की 42 फुट ऊँची पद्मासन प्रतिमा जो कि अतिशयकारी है उसका महामस्तकाभिषेक किया गया एवं पूजा के साथ लाडू चढ़ाया गया। इसके पूर्व कमिश्नर श्री.एन.त्रिपाठी ट्रान्सपोर्ट ने ध्वजारोहण किया। सिविल जज श्री ए.के. जैन, एडीशनल कलेक्टर आर.के.

जैन ने आशीर्वाद लिया। मुनिश्री आर्जवसागरजी महाराज ने अपने प्रवचन में भ.पार्श्वनाथ के जीवन दर्शन एवं कल्याणक के बारे में विस्तार से बताया। दिनांक 16.8.08 को रक्षाबन्धन पर्व बहुत ही हर्षोल्लास के साथ मनाया गया जिसमें महावीर भवन में मुनिश्री के सान्निध्य में विष्णुकुमार मुनि की एवं अकम्पनाचार्य आदि 700 मुनियों की पूजा की गई। गुरुवर ने अपने प्रवचन में यह रक्षाबन्धन पर्व कैसे बना और कैसे मनाना चाहिए इस सन्दर्भ में बतलाया। और षोडसकारण पर्व भी प्रारम्भ हुआ। शताधिक लोगों के व्रत और संयम के साथ सोलहकारण पर्व के कलश की स्थापना भी हुई। पश्चात् ता.4.9.08 से 14.9.08 तक दशलक्षण महापर्व में श्रावक साधना शिविर महावीर भवन में आयोजित किया गया। जिसमें सामूहिक पूजन एवं प्रवचन तथा शिविरार्थियों के लिये दिन में विशेष कक्षाएँ ध्यान, तत्त्वार्थसूत्र का वाचन और उस पर अर्थ सहित प्रवचन, प्रतिक्रमण, गुरुभक्ति के साथ सांस्कृतिक कार्यक्रम रात्रि में आरती एवं विद्वानों के प्रवचन आदि हुये। अन्तिम दिन सामूहिक क्षमावाणी अत्यन्त ही हर्षोल्लास के साथ मनाई गई और सब व्रतियों का सम्मान समारोह भी सम्पन्न हुआ।

सुप्रतिष्ठित केवली के मोक्ष स्थान का दर्शन समाज के हजारों लोगों के साथः-

दशलक्षण पर्व के बाद मुनिश्री आर्जवसागरजी महाराज ससंघ एवं अनेक हजारों श्रद्धालु भव्यगणों के साथ किले पर स्थित (सिन्धिया स्कूल परिसर में) आठवीं सदी के प्राचीन जैन मन्दिर को पाने के लिए एवं सुप्रतिष्ठित केवली का मोक्षस्थान सुरक्षित करने के लिए चल दिये। त्रिशलागिरि पर भ.महावीर के पाँच कल्याणकों पाषाण में उकेरे चित्रण आदि का दर्शन करते हुए उरवाही गेट पर स्थित जिन प्रतिमाओं का भी दर्शन करते हुए किले के ऊपर पहुँचे। वहाँ तैलांगना दि. जैन मन्दिर का दर्शन करते हुए सिंधिया स्कूल की ओर बढ़े। इस समाचार को सुनकर पहले से ही वहाँ पर

पुलिस तैनात कर दी गई थी। उनको बताया कि हमारे मन्दिर का दर्शन करने हम लोगों को अन्दर जाने दीजिये ऐसा कहने पर भी उन्होंने मना कर दिया। अन्दर जाने से रोक दिया तो युवा लोग दीवार तोड़ने के लिए तैयार हो गये थे। मुनिश्री ने उन सबको रोक दिया कहा हम ऐसे नहीं जायेंगे, स्वीकृति मिलने पर जायेंगे और बाहर से वर्द्धमान मन्दिर का दर्शन किया और सास-बहु दि.जैन मन्दिर इत्यादि देखते हुए पुनः नया बाजार मन्दिर में आ गये। अनेक न्यूज पेपरों में एवं पत्र-पत्रिकाओं में यह विषय फैल गया। जैन धर्म का खजाना सबको मालूम पड़ा।

धूम-धाम से सम्पन्न हुआ कल्पद्रुम विधानः-

पश्चात् दिनांक 1 अक्टूबर से 12 अक्टूबर 2008 तक जी.वाय.एम.सी के मैदान में सनातनधर्म मन्दिर रोड ग्वालियर में बने विशाल पाण्डाल में श्री 1008 कल्पद्रुम महामण्डल विधान महोत्सव पूज्य मुनिश्री आर्जवसागरजी के ससंघ सान्निध्य में एवं प्रतिष्ठाचार्य पं.गुलाबचन्द्र जी 'पुष्प' प्रतिष्ठाचार्य ब्र.श्री जयकुमार जी निशान्त, पं. मनीष जैन टीकमगढ़, पं. चन्द्रप्रकाश जी चन्दर ग्वालियर द्वारा सम्पन्न कराया गया। इस कल्पद्रुम महामण्डल विधान का महान उद्देश्य किले पर स्थित श्री वर्द्धमान जैन मन्दिर एवं प्राचीन जैन संस्कृति की रक्षा, जीर्णोद्धार करना है इससे जो आय होगी उसे इन्हीं गुफाओं में बनी प्रतिमाओं पर खर्च किया जावेगा यह निर्णय लिया गया।

दिनांक 21 सितम्बर को प्रातःकाल श्री दिगम्बर जैन मन्दिर नया बाजार से मुनिश्री आर्जवसागरजी महाराज ससंघ की हजारों श्रावकों के साथ भव्य शोभा यात्रा बैण्ड-बाजों के साथ चक्रवर्ती एवं प्रमुख पात्र हाथियों एवं बग्गियों में सवार होकर जी.वाय.एम.सी मैदान पहुँची। मुनिश्री के सान्निध्य में प्रतिष्ठाचार्य द्वारा समवशरण रचना हेतु भूमि पूजन करवाया गया। इसके बाद गुरुवर के मंगल प्रवचन हुये एवं प्रातः विधान हेतु पात्र चयन हुआ। सभी जिन भक्तों को भोजन कराने के पश्चात् दोपहर में विधान के शेष पात्रों का चयन

किया गया। जिसमें महायज्ञनायक सिंघई महेश गुरु-शैलजा जैन, चक्रवर्ती अजय-राधा जैन, सौधर्म इन्द्र बाबूलाल-बदामी बाई, ध्वजारोहण कर्त्ता बसन्त-मीना जैन, कुबेर विनोद-मीना जैन, ईशान इन्द्र सुभाष-शीला जैन, यज्ञनायक कपूरचन्द गोडावा, तथा महामण्डलेश्वर, मण्डलेश्वर, मुकुट बद्ध राजा आदि पात्र बने। सभी उपस्थित समुदाय ने भक्ति भावना से भगवान जिनेन्द्र देव की महा अर्चना की एवं मध्यान्ह में कोपरगांव महाराष्ट्र की महिलाओं द्वारा णमोकार मंत्र की महिमा एवं दीप नृत्य प्रस्तुत किया गया।

दिनांक 2 अक्टूबर को प्रातः मन्दिर जी में देव आज्ञा, गुरुआज्ञा, प्रतिष्ठाचार्य निमंत्रण एवं यज्ञ पूजा करने के पश्चात् बैण्ड बाजों एवं बग्गियों में पात्र सवार होकर मुनिवर के सन्निध्य में भव्य शोभा यात्रा के रूप में जी.वाय.एम.सी मैदान में बने पाण्डाल में पहुँची। जहाँ पर ध्वजारोहण कर्ता श्री बसन्त जैन द्वारा ध्वजारोहण किया गया। पं. जयकुमार जी निशान्त द्वारा वेदी शुद्धि, समवशरण शुद्धि, सकलीकरण किया तथा मुनिश्री जी के समवशरण में बैठकर मंगल प्रवचन हुए। समवशरण में सामूहिक कलशाभिषेक, शान्तिधारा, इन्द्र प्रतिष्ठा, जिनबिम्ब स्थापना एवं पूजन विधान हुए। दोपहर में 'अहिंसा रैली' निकाली गई। दोपहर 2 बजे मुनिश्री के विशेष प्रवचन, विश्व अहिंसा दिवस पर हुए एवं भारत के प्रतिष्ठा लब्ध कवि चन्द्रसेन जी, भोपाल के साथ करीब 12-13 कवियों द्वारा कवि सम्मेलन सम्पन्न हुआ।

सुप्रतिष्ठित केवली की मोक्षस्थली गोपगिरि एवं ऋषिगालव की तपोभूमि ग्वालियर में प्रथमबार इतिहास के रूप में श्री 1008 कल्पद्रुम महामण्डल विधान महोत्सव दिनांक 1 अक्टूबर से 12 अक्टूबर 2008 तक जी.वाय.एम.सी मैदान सनातन धर्म मन्दिर रोड ग्वालियर में बने विशाल पाण्डाल में परम पूज्य प्रखर वक्ता धर्म प्रभावक मुनिश्री आर्जवसागरजी के ससंघ सान्निध्य में आध्यात्मिक प्रवचनों आदि के साथ सानन्द सम्पन्न हुआ।

प्रातः शहर के अनेक जिनालयों से भव्यों द्वारा कई थालों में भर-भरकर अष्टद्रव्य लाई जाती थी और संगीतमय पूजन विधान का कार्यक्रम बड़ा ही भव्य मनोरम प्रतीत होता था। शाम को 6 बजे प्रतिदिन इन्द्र-इन्द्राणियों की हाथियों पर सवार होकर, बैण्डबाजों के साथ समवशरण में महाआरती हेतु जी.वाय.एम.सी प्रांगण पहुँचे। जहाँ संगीत के साथ मन भावन नृत्य के साथ जिनेन्द्र भगवान की आरती हुई। इसके पश्चात् पं. गुलाबचन्द्र जी 'पुष्प' के प्रवचन हुए। रात्रि 9 बजे से सांस्कृतिक कार्यक्रम जिनागम पाठशाला द्वारा एवं राजेन्द्र उमरगा एण्ड पार्टी द्वारा श्रेष्ठ प्रस्तुती दी गई। दिनांक 3 अक्टूबर को दोपहर 3 बजे अहिंसा की विचार यात्रा भ.ऋषभदेव से महावीर पर परिचर्चा हुई। इसके बाद मुनिवर के प्रवचन हुये। दिनांक 2 अक्टूबर से 11 अक्टूबर तक दोपहर संगोष्ठी एवं सम्मेलन तथा मुनिश्री के प्रवचन तथा रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रम टीकमगढ़, महाराष्ट्र, ग्वालियर, दिल्ली आदि के कलाकारों के माध्यम से हुआ। दोपहर के संगोष्ठी एवं सम्मेलन में प्रतिदिनश्रेष्ठ एवं प्रसिद्ध वक्ता श्री गोपीलाल जी अमर दिल्ली जी.डी.ए. अध्यक्ष श्री जगदीश शर्मा, साडा अध्यक्ष श्री जयसिंहजी कुशवाह, भाजपा अध्यक्ष श्री अजय चौधरी आदि पधारे।

गुरुदर्शन हेतु आये ज्योतिरादित्यः-

दिनांक 8 अक्टूबर को केन्द्रीयमंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया मुनिश्री 108 आर्जवसागरजी महाराज से आशीर्वाद लेने हुतु चेम्बर भवन पधारे। करीब एक घंटे चर्चा करने के पश्चात् श्री सिंधिया ने आश्वासन दिया कि पुनः शीघ्र ही जैन धर्म की आस्था का प्रतीक खेल मैदान के निकट वर्धमान जैन मंदिर पूजा अर्चना हेतु जैन समाज को दिये जाने के हित में निर्णय कराकर ही आपके दर्शन करने एवं आशीर्वाद लेने हेतु आऊँगा और मुनिश्री के उपदेश से उन्होंने सप्ताह में एक दिन मांस खाने का त्याग कर दिया। विधान में प्रतिदिन चक्रवर्ती परिवार से किमिच्छिक दान रूप में गरीब लोगों को अनाज, वस्त्रादिक बांटे

गये। अन्तिम दिन 12 अक्टूबर को प्रातः विधान पूजा सम्पूर्ण करने के पश्चात् विश्व शान्ति महायज्ञ हवन हुआ। इसके बाद मुनिश्री के मंगल प्रवचन हुए। दोपहर में 1 बजे श्री जी की विशाल भव्य शोभा यात्रा बैण्ड-बाजों के साथ मुनिश्री के सान्निध्य में तीन मंजिले विशाल रथ के साथ नगर गजरथ यात्रा प्रारम्भ हुई। जिसमें चक्रवर्ती एवं विशेष पात्र आदि गजरथ में एवं समस्त इन्द्र-इन्द्राणियाँ हाथियों एवं बग्गियों में सवार होकर ग्वालियर नगर में प्रमुख मार्गों व बाजार से होते हुए कार्यक्रम स्थल पहुँचे। जहाँ मुनिश्री ने कल्पद्रुम विधान की महिमा बताई एवं मंगल आशीष दिया। पश्चात् सभी पात्रों का सम्मान किया गया। महायज्ञनायक सिंघई महेशचन्द्र जैन 'गुरु' द्वारा वात्सल्य नगर भोज दिया गया। ग्वालियर नगर में प्रथम बार इतना भव्य एवं विशाल आयोजन हुआ जिसमें तमिलनाडु, देहली, भोपाल, रीवा, झांसी, टीकमगढ़, कोपरगाँव (महाराष्ट्र), दमोह, गुना, अशोक नगर, पथरिया, भिण्ड, मुरैना एवं अन्य जगहों से भारी संख्या में श्रद्धालु पधारे। दिनांक 25 एवं 26 अक्टूबर को अहिंसा शाकाहार विषय पर डाक्टरों की संगोष्ठी आयोजित की गयी थी। जिसमें देश के सुप्रसिद्ध डॉ. के.एम. गंगवाल पूना, डॉ.डी.सी. जैन दिल्ली आदि शताधिक डाक्टरों द्वारा शाकाहार पर सारगर्भित विचार रखे गये एवं मुनिश्री के सम्बोधन व अहिंसा के संकल्प के साथ डाक्टरों को अहिंसक साहित्य वितरित किया गया। पश्चात् कण्ठपाठ प्रतियोगिता प्रारम्भ हो गई।

चातुर्मास निष्ठापनः-

दीपावली के सुअवसर पर महावीर निर्वाण महोत्सव व निष्ठापन दिवस, ऊपर किले में स्थित वर्द्धमान मन्दिर के सामने पाण्डाल बनाकर हजारों जन समुदाय के बीच यह कार्यक्रम मनाया गया और भ.महावीर के निर्वाण महोत्सव के उपलक्ष्य में 72 किलों का लाडु चढ़ाया गया और भी बहुत संख्या में लाडु चढ़ाये गये थे। एक लाडु सांसद जयभान सिंह पवैया ने भी चढ़ाया और आहार चर्या भी किले पर ही सम्पन्न हुयी थी। बहुत ही भक्ति भाव के साथ

यह कार्यक्रम सानन्द सम्पन्न हुआ।

पिच्छिका परिवर्तन सम्पन्नः-

तत्पश्चात् उसी दिन किले पर ही 2.11.08 को पिच्छिका परिवर्तन का कार्यक्रम तीन पाण्डालों में एक जगह लाडु का कार्यक्रम, एक में वात्सल्य भोज, एवं एक पाण्डाल में पिच्छिका परिवर्तन भी किले के ऊपर ही सम्पन्न हुआ। जिसमें अपार जन समुदाय के बीच गुरुवर आर्जवसागरजी महाराज ससंघ का पिच्छि परिवर्तन समारोह के साथ कण्ठपाठ प्रतियोगिता के पुरस्कार वितरण का कार्यक्रम भी बड़े ही हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ। ग्वालियर किले के ऊपर करीब दस हजार लोगों की इतनी भीड़ को लोगों ने पहली बार देखा। इस कार्यक्रम में भी सांसद जय भान पवैया एवं भा.ज.पा. जिला अध्यक्ष विजय चौधरी उपस्थित रहे।

रइधू कवि पर संगोष्ठीः-

नया बाजार मन्दिर के सभागार में 23 नवम्बर को ग्वालियर के प्रसिद्ध महाकवि पण्डित रइधू साहित्य पर संगोष्ठी रखी गयी। जिसमें राजस्थान किशनगढ़ के प्रकांड विद्वान पंडित मूलचंदजी लुहाडिया व पं.श्री मदनलालजी बैनाडा आगरा आदि विद्वानों ने रइधू साहित्य पर प्रकाश डाला। गुरुवर आर्जवसागरजी ने भी रइधू कवि के साहित्य की विशेषता एवं गोपाचल पर्वत की विशेषता बतलाते हुए भक्तों को सारगर्भित प्रवचन दिये।

विनय नगर में सिद्धचक्र विधान सम्पन्नः-

पश्चात् गुरुवर आर्जवसागरजी का विहार विनय नगर की ओर हो गया। वहाँ के भक्तों ने अष्टाह्निका पर्व पर सिद्धचक्र महामण्डल करने के लिये गुरुवर का सान्निध्य एवं आशीर्वाद के लिए श्रीफल भेंट किये और गुरुवर ने मंगल आशीर्वाद दिया। पश्चात् कार्तिक शुक्ला अष्टमी से कार्तिक शुक्ला पूर्णिमा तक बहुत ही हर्षोल्लास के साथ बड़ी प्रभावना से यह सिद्धचक्र महामण्डल विधान रोड पर पाण्डाल बनाकर गुरु प्रवचनों के साथ सम्पन्न

हुआ। पश्चात् हरिशंकरपुरम् होते हुए आनन्द नगर पहुँचे। वहाँ पर गुरुवर आर्जवसागरजी के ससंघ सान्निध्य में वेदी प्रतिष्ठा महोत्सव सम्पन्न हुआ। पश्चात् मेहगांव लोगों के बहुत बार किये गये नम्र निवेदन पर गुरुवर ने संघ सहित दीनदयाल नगर, मालनपुर होते हुए मेहगाँव की ओर विहार कर दिया।

मेहगाँव में वेदी प्रतिष्ठा:-

मेहगाँव में भव्य मंगल प्रवेश हुआ। पश्चात् दिनांक 9 दिसम्बर से 12 दिसम्बर 2008 तक श्री 1008 भगवान चन्द्रप्रभु दिगम्बर जैन मन्दिर के परम पूज्य सन्त शिरोमाणि आचार्यश्री 108 विद्यासागरजी महाराज से दीक्षित परम प्रभावक अध्यात्म योगी परम पूज्य गुरुवर मुनिश्री आर्जवसागरजी महाराज के ससंघ परम मंगल सान्निध्य में श्री नवीन वेदी प्रतिष्ठा व मण्डल विधान एवं कलशारोहण महोत्सव और विश्वशान्ति महायज्ञ सम्पन्न हुआ। मन्दिर जी में श्री इन्द्रसेन सुभाषचन्द्र जैन द्वारा नवीन वेदी का निर्माण तथा श्री शान्तिलाल धर्मेन्द्र कुमार जैन द्वारा शिखर हेतु कलशों का निर्माण कराया गया था। प्रतिष्ठाचार्य पं. मनीष कुमार जैन शास्त्री टीकमगढ़ के निर्देशन में विधि-विधान पूर्वक यह महान अनुष्ठान भारी संख्या में गुरु प्रवचनों पूर्वक बड़ी धर्म प्रभावना के साथ सानन्द सम्पन्न हुआ। पश्चात् गुरुवर संघ सहित गांव में स्थित श्री दिगम्बर पार्श्वनाथ बड़ा मन्दिर पधारे। वहाँ भी प्रवचन एवं पाठशाला के उद्घाटन आदि के माध्यम से धर्म की अपूर्व प्रभावना हुई।

क्षेत्र दर्शन व आगरा, महावीरजी आदि में धर्म की प्रभावना:-

वहाँ से विहार करके गुरुवर संघ सहित बरासों क्षेत्र पर पधारे। नदी के किनारे स्थित इस क्षेत्र का बहुत ही मनोरम दृश्य लगता है। किवंदन्ती है कि यहाँ पर भ. महावीर का समवशरण आया था। वहाँ के मन्दिरों का दर्शन करके लावण गाँव होते हुए गुरुवर का ससंघ भिण्ड नगर में मंगल पदार्पण हुआ। कुछ समय तक श्री दिगम्बर चन्द्रप्रभु जिनालय (परेड मन्दिर) में वास्तव्य रहा और प्रवचन और धार्मिक कक्षाओं के माध्यम से धर्मप्रभावना हुई और

पाठशाला भी खुलवाई। जब पाठशाला लगती थी तब ऐसा लगता था मानो कोई विद्यालय हो करीब 300-350 बच्चे इस पाठशाला में पढ़ते थे और एज्यूकेटेड कन्यायें इन बच्चों को पढ़ाने का काम करती थीं। इससे बहुत अद्भुत प्रभावना हुई। पश्चात् चैत्यालय मन्दिर में भी कुछ समय तक ठहरना हुआ। यहाँ भी पाठशाला और प्रवचन आदि हुये। इस प्रकार करीब एक महीने का शीतकालीन प्रवास भिण्ड नगर में हुआ। पश्चात् फूप, बरही, जैतपुर, बाह आदि गाँव होते हुए गुरुवर का ससंघ बटेश्वर (शोर्यपुर) में मंगल प्रवेश हुआ। यह भगवान नेमिनाथ का गर्भ, जन्म स्थान है और यह एक सिद्धक्षेत्र भी है। यहाँ से श्री यम, धन्य, विमलाश्रुत मुनिश्वरों ने मोक्ष पाया है और सुप्रतिष्ठित मुनिश्वर को यहीं पर केवलज्ञान भी हुआ। ऐसी धरा पर गुरुवर का करीब एक सप्ताह वास्तव्य रहा। पश्चात् शिकोहाबाद होते हुए फिरोजाबाद में मंगल प्रवेश हुआ। स्फटिकमणि वाले पार्श्वनाथ भ. के मंदिर दर्शन व प्रवचन भी हुए प्रा. नरेन्द्र प्रकाश जी भी आये फिर सेठ छदामीलाल की नसिया का दर्शन भी किया और एक-दो दिन के प्रवास के दौरान वहाँ से टूण्डला विहार करते हुए आगरा पहुँचे वहाँ एम.डी. जैन कॉलेज मन्दिर में प्रवास रहा। पण्डित श्री रतनलाल बैनाडा परिवार ने भी विहार वैयावृत्य, आहार दान आदि का लाभ लिया। पं. रतनलाल बैनाडा ने जब नवधाभक्ति पूर्वक गुरुवर आर्जवसागरजी आहारचर्या अपने गृह पर पूर्ण करवाई तब बतलाया कि मेरे गृह पर एक बालक भी रात्रि में भोजन नहीं करता और जमीकन्द तो कभी गृह में आते नहीं तथा प्रतिदिन मेरे गृह में रात्रि में सामूहिक शास्त्र स्वाध्याय चलता है। आगरा में स्थित कई मन्दिरों के दर्शन किये साथ ही ताजमहल के सामने स्थित ताजगंज दि. जैन मन्दिर का भी दर्शन किया। तब वहाँ के लोगों द्वारा पं. बनारसीदासजी ने जो समयसार नाटक कृति उर्दू भाषा में लिखी थी वह हस्त लिखित कापी गुरुवर को दिखाई। पश्चात् कुछ दिन प्रवास के दौरान आगरा से विहार करके सिकंदरा आदि गाँव होते हुए गुरुवर मथुरा नगरी पहुँचे। वहाँ मेन रोड पर

स्थित श्री अजितनाथ जिनालय में आहारचर्या आदि सम्पन्न हुई। यहाँ से अन्तिम केवली जम्बूस्वामी ने मोक्ष पद पाया। पश्चात् विहार करके भरतपुर गाँव में मंगलप्रवेश हुआ। यहाँ से राजस्थान प्रान्त प्रारम्भ हो गया। वहाँ से बयाना, हिण्डौन सिटी होते हुए अतिशय क्षेत्र महावीरजी में 6 मार्च 2009 को मंगल आगमन हुआ। क्षेत्र के मैनेजर आदि सब लोगों ने पादप्रक्षालन एवं आरती उतारी। 12 मार्च को राजस्थान के मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत महावीरजी पधारे और एन. के सेठी आदि समाजजन साथ में थे। वहाँ उन्होंने भगवान महावीर स्वामी के दर्शन कर उन्होंने गुरुवर आर्जवसागरजी का भी दर्शन एवं आशीर्वाद लिया। गुरुवर ने कुछ साहित्य भी उनको प्रदान किया। कुछ दिनों ठहर कर पश्चात् वहाँ से विहार करके पिलोदा होते हुए गंगापुर नगर पहुँचे प्रवचन आदि हुआ। यहीं पर जयपुर के लोगों ने आकर जयपुर में गुरुवर का आगमन हो इस भावना से श्रीफल भेंट किये।

महानगर जयपुर की धर्मप्रभावना:-

पश्चात् पिपलाई होते हुए लालसोट नगर पहुँचे। वहाँ पर प्रवचन एवं आहारचर्या आदि सम्पन्न हुई। पश्चात् तुंगा होते हुए अतिशय क्षेत्र पद्मपुरा (बाड़ा) में मंगल प्रवेश हुआ। दर्शन और आहार आदि किया। तदुपरान्त विहार करते हुए जयपुर नगर के सांगानेर संघीजी नसियाँ, बाजे के साथ भारी संख्या में श्रावक लोगों ने जय-जयकार के साथ गुरुवर आर्जवसागरजी के संघ की मंगल भव्य आगवानी की। विशाल मन्दिर की प्राचीन जिन प्रतिमाओं का दर्शनकर मन प्रफुल्लित हो गया। कुछ दिनों के प्रवास में गुरुवर ने पाण्डाल में मार्मिक प्रवचनों को देकर एवं संस्कार को देने वाली पाठशाला की भी शुरुआत हुई। वीरोदय नगर में स्थित आचार्य ज्ञानसागर छात्रावास के भव्यों की मंगल भावना से वहाँ गुरुवर का मंगल पदार्पण हुआ एवं प्रवचनादि से विद्वानों ने धर्म लाभ प्राप्त किया। तथाहि राजस्थान महासभा एवं महावीर जयन्ती उत्सव कमेटी द्वारा जयपुर नगर के बीच सामूहिक रूप से मनाये जाने वाले

विशाल आयोजन में गुरुवर आर्जवसागरजी को संघ सहित पधारने का नम्र निवेदन किया गया।

महावीर जयन्ती सम्पन्नः-

पश्चात् मधुबन आदि मन्दिरों का दर्शन करते हुए गुरुवर का आगमन जौहरी बाजार में हुआ पुनः महावीर जयन्ती पर्व एवं गुरुवर के 22वें मुनि दीक्षा दिवस पर्व पर गुरुवर का मंगल सान्निध्य प्राप्त करने हेतु समाज द्वारा श्रीफल भेंटकर नम्र निवेदन किया गया। पश्चात् महावीर जयन्ती के दिन गोधान मन्दिर पर भगवान महावीर जयन्ती एवं गुरुवर आर्जवसागरजी का 23वाँ दीक्षा जयन्ती दिवस मध्याह्न में हर्षोल्लास के साथ मनाना सुनिश्चित हुआ। उसके पूर्व प्रातः महावीर जयन्ती के जुलूस उत्सव के उपरान्त इसी शुभ अवसर पर रामलीला मैदान में विशाल जन समुदाय के बीच गुरुवर आर्जवसागरजी के मंगल प्रवचन हुये। जौहरी बाजार में कुछ काल के प्रवास में प्रवचन पाठशाला प्रारम्भ आदि की प्रभावना के उपरान्त गुरुवर ने शहर के मन्दिरों का दर्शन करते हुए चूलगिरि की तलहटी में स्थित नसियाँ का दर्शन किया। वहाँ पर स्थित आ. सुपार्श्वमति माताजी ने ससंघ गुरुवर की आगवानी की और ससंघ में मार्मिक आगमिक चर्चायें भी हुयीं एवं माताजी ने मुनिवर की स्वास्थ कुशलता पूछते हुए कुछ शास्त्र भी प्रदान किये। पश्चात् मुनि संघ ने चूलगिरि पर ऊपर स्थित मन्दिरों के दर्शन करके नसियाँजी में श्रावकों के चौके में आहार चर्या करके पापलियान मन्दिर की कमेटी के निवेदन से पार्श्वनाथ भवन में पदार्पण किया। वहीं पर ग्रीष्मकालीन प्रवास रहा। प्रातः कालीन प्रवचन श्रृंखला में भव्यों ने अधिक लाभ लिया। पापलियान मन्दिर में बनी नयी वेदियों में प्रतिमाएँ स्थापन हेतु वहाँ की कमेटी ने गुरुवर आर्जवसागरजी से पंचकल्याणक के लिए सान्निध्य एवं आशीर्वाद हेतु श्रीफल भेंट किये।

पापलियान मन्दिर हेतु पंचकल्याणक महोत्सव सम्पन्नः-

यह श्रीमज्जिनेन्द्र पंचकल्याणक प्रतिष्ठा एवं गजरथ महोत्सव

दिनांक 14 मई से 21 मई 2009 तक गुरुवर आर्जवसागरजी के ससंघ सान्निध्य में एवं प्रतिष्ठाचार्य पं. प्रवर गुलाबचन्दजी 'पुष्प' टीकमगढ़ (म.प्र.) के निर्देशन में ब्र.पं. जयकुमारजी 'निशान्त' द्वारा सभी धार्मिक विधि विधान सभी क्रियायें आगम परम्पराओं पूर्वक सानन्द सम्पन्न हुईं।

जिसमें दिनांक 14 मई 2009 को देव आज्ञा, गुरु आज्ञा, प्रतिष्ठाचार्य निमंत्रण के पश्चात् घट यात्रा का एक विशाल जुलूस मंदिरजी से समारोह स्थल राजस्थान चेम्बर भवन के मैदान में हाथी, घोड़े, बग्गी और बेण्ड वाले सहित महिलाओं द्वारा अपने मस्तक पर मंगल कलश लिए हुए जैन धर्म की जयकारों के साथ पहुँची। पश्चात् ध्वजारोहण एवं मण्डप उद्घाटन, वेदी शुद्धि, नित्यपूजा, मण्डप प्रतिष्ठा का कार्य हुआ और दीप प्रज्वलन के साथ मुनिवर आर्जवसागरजी महाराज के मंगल प्रवचन हुये। सायंकाल में महाआरती, शास्त्र प्रवचन एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये गये। इस पंच कल्याणक में माता-पिता बनने का सौभाग्य श्रावक श्रेष्ठी सिंघई श्री भरतकुमार जैन, श्रीमती क्रान्ति जैन दमोह (म.प्र.) के निवासी को प्राप्त हुआ। इस पंचकल्याणक की पत्रिका का विमोचन राजस्थान के मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत ने किया।

पंचकल्याणक के विभिन्न कार्यक्रम :-

दिनांक 15 मई को गर्भकल्याणक पूर्व की क्रियाएँ पूरी की गईं एवं मुनिश्री का मंगल प्रवचन गर्भ कल्याणक के संदर्भ में हुआ। इसके पश्चात् याग-मण्डल विधान हुआ। सायंकाल में महाआरती एवं शास्त्र प्रवचन के पश्चात् इन्द्र दरबार लगा, सोलह स्वप्न, नृत्यगान एवं गर्भकल्याणक पूर्व की क्रियायें सजीव रूप से प्रस्तुत की गईं। 16 मई को गर्भ कल्याणक की क्रियायें सम्पन्न हुईं। मुनिवर आर्जवसागरजी का मंगल प्रवचन हुआ। जिसमें उन्होंने भ्रूणहत्या न करने की शपथ दिलाई एवं गर्भ में बच्चे के आने पर हमें अच्छे विचार मन में संजोने चाहिए एवं वर्तमान समय में टी.वी. दूरदर्शन के भयानक

अश्लील दृश्यों से विशेषकर गर्भवती माता को दूर रहना चाहिए। जिससे तीर्थंकर रूप जैसे बालक का जन्म हो सके। सायंकाल में महाआरती, शास्त्र प्रवचन के पश्चात् महाराज नाभिराय का दरबार, मरुदेवी की सेवा व छप्पन कुमारियों द्वारा भेंट आदि की सुन्दर सजीव प्रस्तुति दी गई। माता के सोलह स्वप्नों को चित्रों के रूप में सजीव नाटक देखकर सभी भाव-विभोर हो गये।

दिनांक 17 मई को जन्मकल्याणक में आदिकुमार का जन्म महोत्सव, इन्द्राणी द्वारा आदिकुमार को लाना व ऐरावत हाथी द्वारा पाण्डुकशिला की ओर विशाल जुलूस रवाना हुआ। जिसमें 1008 अभिषेक कलशों व बैण्ड बाजों के साथ भारी जन समुदाय उपस्थित था। भव्य जुलूस शहर के विभिन्न मार्गों से होता हुआ वापिस समारोह स्थल पर आया जहाँ स्थित पाण्डुकशिला पर भगवान का अभिषेक किया गया। तत्पश्चात् आदिकुमार को माता-पिता को सौंपा गया। मुनिवर का जन्मकल्याणक पर मंगल प्रवचन हुआ। सायंकाल में महाआरती एवं शास्त्र प्रवचन के उपरान्त आदिकुमार के पालना झुलाने का कार्यक्रम हुआ। सभी ने पालना झुलाने में सहभागिता निभाई। तत्पश्चात् आदिकुमार के साथ हुई बाल क्रीड़ा की मनोहारी प्रस्तुति प्रदान की गईं। 18 मई को तपकल्याणक से सम्बन्धित सभी क्रियायें सम्पन्न हुईं। सुबह में नित्यपूजा, विधान पूजन एवं मुनिवर का विशेष प्रवचन सम्पन्न हुआ। दोपहर को महाराज नाभिराय का दरबार व राज्याभिषेक हुआ एवं असि, मसि, कृषि, शिल्प, वाणिज्य और विद्या की महत्ता बतलाई गई व उसका कलाकारों द्वारा सजीव प्रदर्शन किया गया। नीलांजना का नृत्य व उसकी आकस्मिक मृत्यु से उत्पन्न वैराग्य की भावना आना एवं अपने सुपुत्रों भरत, बाहुबली को राज्य को सौंपने के दृश्य प्रस्तुत किये गये। भरत की भूमिका में श्री सुनील जैन एवं बाहुबली की भूमिका निभाने में श्री राजेश जैन (सिरमोर) को सौभाग्य प्राप्त हुआ। इसके पश्चात् लौकान्तिक देवों द्वारा वैराग्य स्तुति, पालकी पहले कौन उठाये? ऐसा वार्तालाप व वन प्रस्थान दीक्षा

आदि की भाव पूर्ण प्रस्तुति प्रदान की गई। सायंकाल में महाआरती एवं शास्त्र प्रवचन के उपरान्त मुनिवर आर्जवसागरजी महाराज द्वारा स्थापित पाठशालाओं के बच्चों ने भी नाटक प्रस्तुत किये एवं महिला मण्डल ने भी सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये।

दिनांक 19 मई मंगलवार को शुभ अवसर पर पूजन एवं मुनिवर के प्रवचन के पश्चात् मुनिराज आदिकुमार के प्रथम आहार का कार्यक्रम हुआ। दोपहर दो बजे मुनिवर आर्जवसागरजी महाराज द्वारा मंत्राराधना, प्राण प्रतिष्ठा, सूरिमंत्र, केवल-ज्ञानोत्पत्ति एवं समवशरण की रचना हुई। जिसमें गणधर के रूप में मुनिवर आर्जवसागरजी महाराज का मंगलमय उद्‌बोधन हुआ। जिसमें उन्होंने जिससे कर्म क्षय किया जाता है ऐसे ध्यान के प्रसंग पर सम्पूर्ण जानकारी प्रदान की। रात्रि में दिगम्बर जैन सांस्कृतिक मण्डल, मण्डलेश्वर (म.प्र.) द्वारा 'सत्यपथ की ओर अग्रसर सती अंजना' नाटक कलाकारों द्वारा प्रस्तुत किया गया। दिनांक 20 को मोक्षकल्याणक के अंतर्गत भगवान आदिनाथ का कैलाश पर्वत पर दर्शन, निर्वाण प्राप्ति, निर्वाण कल्याणक पूजन व हवन के कार्यक्रम समारोह स्थल पर सम्पन्न हुये। तत्‌पश्चात् विशाल जुलूस के रूप में श्रीजी की मूर्तियों को अपने मस्तक पर विराजमान किये श्रावक जन बैण्ड-बाजों के साथ श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, पापलियान पहुँचे व भारी उल्लास एवं विधि विधान के साथ जिन बिम्बों को नवीन वेदियों में हर्षध्वनि के साथ विराजमान किया। सभी कार्यक्रमों की सानंद समाप्ति पर समारोह के प्रमुख समन्वयक, राजस्थान जैन समाज के मंत्री एवं जयपुर संभाग महासभा के अध्यक्ष श्री कमल जैन ने महाराज व संघ के प्रति कृतज्ञता समाज की ओर से ज्ञापित की और सभी के प्रति आभार व्यक्त किया गया। पश्चात् मुनिवर का मंगल प्रवचन एवं आशीर्वाद प्रदान किया। समारोह में सांसद श्री महेश जोशी, विधायक श्री मोहनलाल गुप्ता, महापौर पंकज जोशी एवं अन्य समाज के गणमान्य महानुभावों एवं संस्थागत प्रतिनिधियों ने अपूर्व उल्लास के साथ

सहभागिता निभाई एवं मुनिवर का आशीष प्राप्त किया। इस समारोह में सारे भारत वर्ष के सुदूर प्रदेशों, कर्नाटक, तमिलनाडु, पाण्डिचेरी, इन्दौर, भोपाल, दमोह एवं मध्यप्रदेश के अन्य विभिन्न भागों से भी महाराजश्री के भक्तों ने समारोह में पधारकर महोत्सव की शोभा बढ़ाई। इस पंचकल्याणक में रत्न, स्वर्ण, रजत एवं पाषाण के करीब 60 से ज्यादा जिन बिम्बों की प्रतिष्ठा हुई थी। सुनील राजेश की ओर से महाराजश्री के आशीष व प्रेरणा से चार प्रतिष्ठित रत्नबिम्ब बड़े मन्दिर पथरिया दमोह में विराजमान हेतु वहाँ की कमेटी राजेश चौधरी आदि को प्रदान किये गये।

दिनांक 21 मई को गाजे-बाजे व हाथी-घोड़ों व पालकियों के साथ एक विशेष जुलूस शहर के बाजारों से गुजरता हुआ श्रीजी के पालकी के साथ-साथ एवं मुनिवर आर्जवसागरजी महाराज ससंघ के पावन सान्निध्य में श्री दि.जैन मन्दिर, पापलियान पहुँचा। पश्चात् प्रतिष्ठाचार्य एवं सहयोगी पण्डित वर्गों के प्रति सभी सौधर्म एवं इन्द्र इन्द्राणियों के प्रति और सभी पदाधिकारियों के प्रति आभार व्यक्त किया गया। अन्त में मुनिवर ने सभी को मंगल आशीर्वाद प्रदान करते हुए सभी के सुखमय मंगलमय जीवन की कामना की। इस प्रकार जयपुर महानगरी में यह पंचकल्याणक ऐतिहासिक कार्यक्रम के रूप में सानन्द मंगलमय सम्पन्न हुआ।

आमेर जिनमन्दिर दर्शन :-

तत्पश्चात् दीवान अमरचन्द की नसिया मन्दिरों का दर्शन करते हुए गुरुवर का ससंघ दर्शनार्थ आमेर किले की ओर विहार हुआ। वहाँ पहुँचकर आमेर में स्थित करीब 7 दि. जैन मन्दिरों का दर्शन किया। 2-3 दिन का प्रवास भी रहा। वहाँ पर एक दिन निहार हेतु आमेर से ढाई किलामीटर की दूरी पर जब पूज्य गुरुवर आर्जवसागरजी ससंघ जंगल पधारे तब सरकारी बन्धन में बंधे 50 शेरों के लिए गुरु दर्शन मिला। पश्चात् गुरुवर सोनियान मन्दिर, जवाहर नगर, मुलतान मन्दिर (जहाँ के मन्दिर में पाकिस्तान से लायी गयी

जिन प्रतिमायें विराजित हैं) दर्शन करते हुए गायत्री नगर के भव्यों के निवेदन पर वहाँ मंगल प्रवेश हुआ। परम पूज्य गुरुवर 108 आर्जवसागरजी के ससंघ सान्निध्य में दिनांक 30/05/2009 से 31/05/2009 तक वेदी शुद्धि, जिनबिम्ब विराजमान, यागमण्डल विधान तथा आदिनाथ भवन का लोकार्पण एवं जिनेन्द्र रथ यात्रा के कार्यक्रम सानन्द सम्पन्न हुए।

पश्चात् महावीर नगर होते हुए मीरामार्ग (मानसरोवर) पहुँचे। वहाँ के विशाल मन्दिर का दर्शन किया। गुरुवर के सान्निध्य में वहाँ पर श्री आदिनाथ भवन का भव्य शिलान्यास का कार्यक्रम हुआ। कुछ दिनों के प्रवास में प्रवचनों के माध्यम से अपूर्व धर्म प्रभावना हुई पं. शीतलचंदजी ने भी आहार एवं प्रवचन का अच्छा लाभ उठाया। पश्चात् हीरापथ के मन्दिर में संस्कार के प्रवचनों के माध्यम धार्मिक पाठशाला की स्थापना करवाई। तदुपरान्त वरुण पथ में भी प्रवचन आदि द्वारा प्रभावना एवं पाठशाला प्रारम्भ हुई और कीर्ति नगर के मन्दिर का भी दर्शन करते हुए अतिशय क्षेत्र मोजमाबाद में पदार्पण हुआ और वहाँ मौजूद विशाल-विशाल प्राचीन प्रतिमाओं का दर्शन हुआ।

किशनगढ़ में मंगलप्रवेश व क्षुल्लक दीक्षाः-

पश्चात् दूदू गाँव में जिनदर्शन व आहारचर्या के उपरान्त किशनगढ़ समाज के मंगल निवेदन पर गुरुवर का विहार किशनगढ़ की ओर हुआ। प. श्री मूलचन्दजी लुहाड़िया, श्री अशोकजी पाटनी (आर.के. मार्बल वाले) चौका लेकर रास्ते में ही आ गये। भरी समाज एवं बेण्ड-बाजों के साथ किशनगढ़ नगर में 24 जून 2009 को भव्य मंगल प्रवेश हुआ। वहाँ पर आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज का 42 वाँ दीक्षा जयन्ती दिवस बहुत ही भक्तिभाव के साथ हर्षोल्लास पूर्वक एवं अपार जनसमूह के बीच बड़ी धर्मप्रभावना के साथ सम्पन्न हुआ। इस कार्यक्रम में जयपुर से करीब 8-10 बसें भरकर भक्तगण किशनगढ़ आये थे। इसी तरह नसीराबाद, व्यावर, अजमेर आदि नगरों से भी भारी संख्या में भक्तगण आये थे। श्रीमती सुशीला पाटनी ने इस कार्यक्रम का

मंगलाचरण किया और प्रवचन के पूर्व प.मूलचंद जी लुहाड़िया ने अपने विचार व्यक्त किये। श्री अशोकजी पाटनी (आर.के. मार्बल्स)एवं परिवार ने मुनि श्री के कर कमलों में शास्त्र भेंट किया। पश्चात् मुनिश्री ने अपने प्रवचनों में आचार्यश्री की दीक्षा की महिमा बतलायी और ब्र. हरेशजी के लिए बहुत दिनों से किये गये निवेदन के उपरान्त प.पू. गुरुवर श्री आर्जवसागरजी महाराज ने अपने कर कमलों से उनको क्षुल्लक दीक्षा प्रदान की। दीक्षा के उपरान्त उनका क्षु.हर्षितसागरजी नाम रखा गया। किशनगढ़ वालों ने भी वर्षायोग हेतु श्रीफल भेंट कर निवेदन किया गया। लेकिन पहले से ही प.पू. मुनिश्री 108 आर्जवसागरजी महाराज ससंघ को अजमेर की ओर विहार एवं चातुर्मास करने हेतु श्री दिगम्बर जैन मुनि संघ सेवा समिति द्वारा चार-पाँच बार जयपुर, किशनगढ़ जाकर निवेदन कर श्रीफल चढ़ाये गये थे। इसके ही फलस्वरूप ही अजमेर वासियों के पुण्य उदय से दिनांक 7 जुलाई को मुनिश्री 108 आर्जवसागरजी महाराज का ससंघ मंगलप्रवेश अजमेर नगर में हुआ। इस मंगल प्रवेश का जुलूस जयपुर रोड, गांधी भवन, चूड़ी बाजार, नया बाजार, आगरा गेट होते हुए विश्व प्रसिद्ध सिद्धकूट चैत्यालय सोनीजी की नसियाँ पहुँचा। शहर के प्रमुख मार्ग गुरुवर के जयघोष से गुंजायमान हो रहे थे। श्रावकगण मंगल गीत गाते हुए गुरुवर के साथ चल रहे थे। पूरा नगर मुनिवर के मंगल प्रवेश से प्रफुल्लित हो गया। ज्ञातव्य रहे कि अजमेर सोनीजी की नसियाँ में मूलनायक आदिनाथ भगवान हैं। यहाँ पर जिन भव्यों का आजीवन रात्रि भोजन का त्याग है वे ही भगवान का अभिषेक कर सकते हैं और यहाँ लाल नसियाँ में भगवान के महान कल्याणकों की अनुपम स्वर्णिम रचना पं.सदा-सुखदास जी के निर्देशन में की गयी थी।

चातुर्मास स्थापना व मांगलिक कार्यक्रमः-

12 जुलाई 2009 का यह मंगल दिवस अजमेर के इतिहास में कभी न भुलाए जाने वाले संस्मरण के रूप में जुड़ गया। मुनिवर आर्जवसागरजी

महाराज के पावन वर्षायोग के मंगल कलश की स्थापना प्रातः 8:30 बजे सोनीजी की नसियाँ में हुई। कलश की स्थापना के आकर्षण का केन्द्र पाँच कलश थे जिनको रत्नत्रय कलश, प्रवचन कलश, धर्मप्रभावना कलश, अतिथि सत्कार कलश एवं पुरस्कार कलश के नाम से सुशोभित किया गया। मुख्य पाँच परिवारों ने कलश स्थापना का सौभाग्य प्राप्त किया।

कार्यक्रम की शुरुआत मंगलाचरण पूर्वक प्रारम्भ हुई। ध्वजारोहण, दीप प्रज्वलन किया गया। पश्चात् गुरुवर के पाद प्रक्षालन का सौभाग्य सूरत से पधारे श्रीमान् नरेश भाई (दिल्ली वालों) को मिला एवं पं. मूलचन्द लुहाड़िया भी पुण्यार्जक बने। पश्चात् भक्तों के द्वारा शास्त्र भेंट किया गया। चा.च. आचार्यश्री शान्तिसागरजी महाराज, महाकवि आ. ज्ञानसागरजी महाराज एवं सन्त शिरोमणि आ. विद्यासागरजी के चित्रों का अनावरण किया गया। गुरुवर के द्वारा प्रातः 8:00 बजे प्रतिदिन ध्यान पर आधारित प्रवचन शृंखला प्रारम्भ हुई जिसमें अजमेर नगरवासियों ने उत्साह से भाग लेकर पुण्य लाभ प्राप्त किया।

मुनिवर के आशीर्वाद व प्रेरणा से मोक्षसप्तमी पर्व पर सोनीजी की नसियाँ में श्री दिगम्बर ऋषभदेव जैनागम पाठशाला प्रारम्भ की गई। जिसकी 150 छात्र-छात्राएँ एवं 10 प्रशिक्षित अध्यापिकाओं द्वारा विधिवत् शुरुआत की गई। जिसमें तीन कक्षाओं में छात्र-छात्राओं को विभक्त किया गया। प्रथम आचार्य शान्तिसागरजी ग्रुप, द्वितीय आ.ज्ञानसागरजी ग्रुप, तृतीय आ.विद्यासागरजी ग्रुप का नाम दिया गया।

पूज्य मुनिवर श्री 108 आर्जवसागरजी महाराज के परम सान्निध्य में पर्वराज षोडसकारण व्रत विधान महोत्सव दिनांक 5 अगस्त 2009 को आयोजित किया गया। मंगल कलश की स्थापना भी की गई। श्री अशोक जैन शाह बजाज के द्वारा सामूहिक 32 दिवसीय पूजन हेतु पूजन द्रव्य का दान दिया गया। करीब 100 लोगों ने अजमेर नगर में प्रथम बार सामूहिक रूप से शील

संयम से कुएँ का जल एवं मर्यादित आहार लिया। एक आहार व एक उपवास अथवा एकाशन पूर्वक बत्तीस दिवसीय षोडशकरण व्रत अनुष्ठान महोत्सव संगीतमय पूजन एवं भक्ति के साथ मनाया। मुनिवर ने स्व रचित तीर्थोदय काव्य के माध्यम से एवं सोलह भावनाओं पर आधारित प्रवचन श्रृंखला से सभी श्रावक गणों का मन धर्म-मार्ग की ओर विशेष आकृष्ट कर दिया।

रक्षाबन्धन के दिन शुरु हुए इस पावन विधान महोत्सव में प्रातः अभिषेक व शान्तिधारा की गई। मुनिवर आर्जवसागरजी महाराज ने विष्णुकुमार मुनिराज की कथा के माध्यम से उपदेश दिया कि जिस तरह विष्णुकुमार मुनिराज ने अपने प्राणों की परवाह न करते हुए 700 मुनियों को उपसर्ग से बचाया। हमें भी देव-शास्त्र-गुरु के सम्मान व रक्षा के लिए सदैव तत्पर रहना चाहिए। विष्णुकुमार मुनिराज की विशेष पूजन करके 700 नारियल गोलों के साथ अर्घ समर्पित किये गये। जिसमें अजमेर समाज के सभी श्रावकों ने भाग लिया। सभी श्रावकों ने एक-दूसरे की कलाई पर धर्म रक्षा का संकल्प सूत्र बांधा।

केन्द्रीय मंत्री सचिन पायलट आये:-

दिनांक 13.08.09 को गुरुवर आर्जवसागरजी महाराज के दर्शनार्थ केन्द्रीय मंत्री श्री सचिन पायलट अजमेर सोनीजी की नसियाँ मन्दिर पधारे थे। मुनिवर ने उनको आशीर्वाद देते हुए ग्वालियर में स्थित वर्धमान मन्दिर प्राप्त करने हेतु उन्हें समाचार सुनाया और अपना कुछ साहित्य भी उनको आशीर्वाद पूर्वक प्रदान किया।

दशलक्षण पर्यूषण पर्व के सुअवसर पर संत शिरोमणी आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज की दीक्षा एवं तपस्थली ऐतिहासिक धर्म नगरी अजमेर की सोनीजी की नसियाँ में मुनिवर श्री आर्जवसागरजी के सान्निध्य में श्रावक साधना संस्कार शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में तमिलनाडु, महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश व राजस्थान के अजमेर, नसीराबाद, केकड़ी,

किशनगढ़, सांवर, सरवाड आदि स्थानों से पधारे सैकड़ों श्रावकों ने ज्ञानार्जन व धर्म लाभ प्राप्त किया। इस शिविर में भी मंगल कलश स्थापना हुई। पर्यूषण पर्व में प्रातःकाल 8:30 बजे गुरुवर के मुखारबिन्द से दस धर्मों पर विशेष प्रवचन का लाभ श्रद्धालुओं को प्राप्त हुआ। शिविरार्थियों को तीन संध्याकालों में ध्यान अभ्यास, प्रातः सुप्रभात स्तोत्र, द्वात्रिंशतिका (सामायिक पाठ) का अर्थ, प्रातः 6:30 बजे से संगीतमय सामूहिक पूजन तथा मध्याह्न में जैनागम संस्कार का स्वाध्याय, तत्त्वार्थसूत्र के दस अध्याय की वाचन एवं मुनिवर द्वारा प्रतिदिन एक-एक अध्याय पर प्रवचन हुए। शाम को प्रतिक्रमण, गुरु भक्ति एवं रात को विद्वानों के प्रवचन तथा विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम किये गये। शिविरार्थियों को कुँए के जल से मर्यादित शुद्ध आहार कराया गया एवं सायंकाल में केवल पेयाहार आदि की समुचित व्यवस्था की गई। दिनांक 4 सितम्बर 09 को पर्यूषण पर्व के समापन पर 13 महिलाओं एवं पुरुषों ने 13 एवं 11 उपवास कर धर्म साधना की। मुनिवर के सान्निध्य में षोडशकारण व्रत अनुष्ठान, श्रावक संस्कार साधना शिविर में बैठे शिविरार्थियों के साथ उपवास वालों को भी सम्मानित किया गया। सम्मान कार्यक्रम के पूर्व सोनीजी की नसियाँ स्थित रत्नों से निर्मित जिनेन्द्र प्रतिमाओं के अभिषेक हुए अभिषेक कर्त्ताओं में सेठ निर्मल सोनी प्रमुख रहे। सभी शिविरार्थियों एवं उपवास करने वाले पुण्यार्जकों को धर्म प्रभावना हेतु भव्य शोभा यात्रा की शोभा में ढोल, ऊँट, घोड़े, बग्गियाँ, बैण्ड-बाजे आदि शामिल थे। संगीतमय भजन पार्टी अपने संगीत की स्वर लहरियों से धर्म प्रभावना करते हुए इस अलौकिक श्रावक साधना संस्कार शिविर की महिमा वर्णित कर रहे थे। सैकड़ों शिविरार्थियों एवं श्रावकगण हाथों में केसरिया पताका लिए जैन धर्म की जय-जयकार कर रहे थे। नगर के सभी मार्गों को स्वागत द्वार से सजाया गया था। पाँच सितम्बर को षोडसकारण व्रत अनुष्ठान महोत्सव के समापन पर सोलहकारण महामण्डल विधान भी सम्पन्न हुआ। विधान की समाप्ति के पश्चात् दोपहर में क्षमावाणी

के अवसर पर जिनाभिषेक के पूर्व मुनिवर श्री के क्षमावाणी पर मंगल उद्‌बोधन भी हुए। इसके पश्चात् सामूहिक क्षमावाणी का आयोजन सम्पन्न हुआ। केसरगंज के कलशाभिषेक में भी मुनिवर का ससंघ सान्निध्य सम्पन्न हुआ था। अजमेर वर्षायोग के दौरान मुनिवर द्वारा समस्त श्रावकों को तीर्थोदय-काव्य, इष्टोपदेश, द्रव्यसंग्रह, तत्त्वार्थसूत्र, सम्यक् ध्यान शतक तथा वारसाणुवेक्खा का स्वाध्याय सुनने का सुअवसर प्राप्त हुआ।

दीक्षायतन नामकरण:-

सन्त शिरोमणि आ.श्री विद्यासागरजी महाराज के परम प्रभावक शिष्य मुनिवर श्री 108 आर्जवसागरजी महाराज ने अपने गुरुवर की दीक्षा स्थली को अपने अजमेर चातुर्मास प्रवास में निकट जाकर देखा और देखते ही अपने भावों की अभिव्यक्ति की एवं दिनांक 18.09.09 की धर्मसभा में अपने भावों को प्रकट करते हुए बड़े ही हृदय स्पर्शी उद्‌बोधन के माध्यम से उद्‌बोधित करते हुए समस्त दिगम्बर जैन समाज अजमेर को मार्गदर्शन देते हुए बताया कि अनमोल समय व्यर्थ में निकला जा रहा है, मोक्षमार्ग के प्रभावक गुरुवर सन्त शिरोमणि आ.श्री विद्यासागरजी के इस दीक्षा स्थान के माध्यम से जो अजमेर को ख्याति मिली है, उसका महत्त्व साधारण व्यक्ति की समझ से बाहर की बात है। दीक्षा स्थान के महत्त्व के बारे में मुनिवर ने बताते हुए कहा कि जब मैं प्रथम बार गुरुदेव के दीक्षा स्थल पर उन पवित्र वर्गणाओं को देखने के भाव करके गया तो ये पाया कि वह स्थान देखने लायक व आशानुरूप नहीं था। इससे मुनिवर का मन द्रवित हो उठा फलस्वरूप पूज्य मुनिवर आर्जवसागरजी तत्काल ही सोनी जी की नसियाँ, अजमेर चातुर्मास स्थल पर आयोजित धर्मसभा में भाव विभोर होकर गुरुदेव का स्मरण करते हुए उस पावन स्थान का समाज को महत्त्व बताया जिससे उपस्थित सभी जिनधर्मी एक साथ एक आवाज में महाराज के उद्‌बोधन से प्रतिज्ञारत हुए और सभी ने यह संकल्प लिया कि हम अजमेर के सभी जिनधर्मी आपके मार्ग-दर्शनानुसार

अतिशीघ्र आ.श्री विद्यासागरजी महाराज के मोक्षमार्ग की जननी जन्मभूमि को एक ऐतिहासिक रूप प्रदान करने का प्रण लेते हैं कि वर्तमान एवं आने वाली भावी पीढ़ी के लिए मोक्षमार्ग की प्रेरणा देने वाली इस पवित्र धर्म धरा को पूज्यनीय बनाने में कोई कसर नहीं रखेंगे। और इसका शुभ नाम दीक्षायतन रखना चाहिए जिससे भव्यों को दीक्षा लेने की प्रेरणा मिल सके। इसके फलस्वरूप आ.श्री. विद्यासागरजी महाराज की जन्म जयन्ती कार्तिक शुक्ल पूर्णिमा दिनांक 4.10.09 को अजमेर में आचार्यश्री महाराज के ससंघ सान्निध्य में दीक्षायतन का शिलान्यास समारोह रखा गया। इस कार्यक्रम का ध्वजारोहण श्री अशोक पाटनी आर.के.मार्बल्स वालों ने किया और वहाँ पर विद्याधर से विद्यासागर की प्रदर्शनी लगायी गयी। दिगम्बर जैन महासमिति महिला संभाग के द्वारा संयमी महिलाओं का विशेष सम्मान समारोह का कार्यक्रम किया गया। जिसमें अणुव्रत-प्रतिमा धारण, बारासौ चौंतीस (1234) व्रत उपवास, समवशरण व्रत उपवास करने वालों का एवं स्व द्रव्य से बड़े विधान तथा मन्दिर निर्माण करने वाले परिवार सम्मानित हुए। पश्चात् मुनिवर का मंगल प्रवचन भी सम्पन्न हुआ। दीक्षायतन पर आचार्यश्री ज्ञानसागरजी मुनिवर विद्यासागर को दीक्षा देते हुए दृश्य का लाइटिंग युक्त बोर्ड लगवा दिया गया। अब दीक्षा स्थान 'दीक्षायतन' इस सही नाम रूप में प्रकाशित होने लगा।

कवि संगोष्ठी:-

तारीख 2 व 3 अक्टूबर को प्रातः 8:15 बजे से स्थानीय कवियों द्वारा स्वरचित धार्मिक कवि संगोष्ठी भी आयोजित की गयी। जिसमें बहुत लोगों ने कविता रस पान का लाभ लिया और विशिष्ट कविताकारों को पुरस्कृत भी किया गया। दीपावली के एक सप्ताह पूर्व गुरुवर ससंघ पार्श्वनाथ कॉलोनि पहुँचे। वहाँ धार्मिक कंठपाठ प्रतियोगिताओं का भी आयोजन हुआ। दीपावली पर्व के दिन प्रातः 7:00 बजे निर्वाणलाडु एवं कलश निष्ठापन कार्यक्रम सम्पन्न

हुआ। अजमेर में स्थित वैशाली नगर में समर्पण ध्यान शिविर वालों को मुनिवर के दर्शनार्थ आमंत्रित किया गया। वहाँ पर उपस्थित ध्यान पिपासुओं को ध्यान का आधार प्रसन्नचित्त व शाकाहार पर मुनिवर के प्रवचन हुये। गुरुवर के ध्यान पर प्रवचन सुनकर सब लोग हर्ष विभोर होकर प्रसन्नचित्त हो गये। दिनांक 24 अक्टूबर को अनेक डाक्टर्स से लोगों के बीच चिकित्सा विज्ञान के आधार पर अहिंसा एवं शाकाहार संगोष्ठी हुई।

पिच्छिका परिवर्तनः-

पिच्छिका परिवर्तन का कार्यक्रम 25 अक्टूबर को दोपहर 2:00 बजे छतरी योजना पर बहुत हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ। इसी कार्यक्रम में कंठपाठ प्रतियोगिता के विजेता प्रतियोगियों को पुरस्कृत किया गया। पिच्छि परिवर्तन के दिन पाठशाला जयपुर के द्वारा मंगलाचरण किया गया। मंच संचालन डॉ. नरेन्द्र जैन भोपाल ने किया और बाहर से पधारे अतिथियों में गौशाला के अध्यक्ष दानवीर श्री पद्मराज जैन दावणगेरे (कर्नाटक), डॉ.के.एम.गंगवाल पूना, डॉ.सी.देवकुमार दिल्ली, डॉ. अभय दगड़ा कोपरगांव (महाराष्ट्र), डॉ. अल्पना मोदी, ग्वालियर, डॉ. संजय जैन पथरिया, डॉ. अजित जैन व श्रीपाल जैन 'दिवा', भोपाल, श्री करणसिंह यादव (जैन) हवलदार दिल्ली पुलिस, विद्वत् प्रवर पंडित श्री मूलचंदजी लुहाड़िया किशनगढ़, श्रीमती सुशीला पाटनी, किशनगढ़, श्री सुनील जौहरी, जयपुर, आदि लोगों को कमेटी के द्वारा सम्मानित किया गया। चातुर्मास कलश भी स्थापित करने वाले लोगों के लिए ससम्मान प्रदान किये गये। पश्चात् पिच्छि परिवर्तन कार्यक्रम में मुनिवर के लिए नई पिच्छिका प्रदान करने का सौभाग्य श्री सुनील जौहरी सहपरिवार जयपुर वालों को मिला। मुनिवर के कर कमलों में शास्त्र भेंट करने का सौभाग्य श्री राजेश जैन 'रज्जन' दमोह ने प्राप्त किया। मुनिवर से पुरानी पिच्छिका को प्राप्त करने का सौभाग्य श्री नरेश जैन श्रीमती रीता जैन अजमेर वालों को प्राप्त हुआ। अन्त में मुनिवर के मंगल प्रवचन हुए।

इस प्रकार यह पिच्छि परिवर्तन का कार्यक्रम मंगलमय सानन्द सम्पन्न हुआ। इस बार दिल्ली से हवलदार कर्णसिंह यादव एवं वैज्ञानिक डॉ. देवकुमार जी के साथ आये थे और देवकुमार जैन ने गुरुवर से कहा कि इस वर्ष के दस लक्षण पर्व में कर्णसिंह यादव जी ने ग्यारह उपवास किये थे और इस वर्ष इनकी सम्मेद शिखर जी की 108 वंदनाएँ भी पूर्ण हो चुकी हैं यह आपके आशीष का फल है। यह बात सुनकर गुरुवर आर्जवसागर जी के लिए बड़ी सन्तुष्टि हुई और उनके इस कार्य की उन्होंने अनुमोदनात्मक प्रशंसा भी की।

कुमाचनसिटी में मंगलप्रवेश व स्कूल में प्रवचनादि धर्म प्रभावना:-

पश्चात् कुचामन सिटी के भक्तों के निवेदन से गुरुवर का विहार उसी ओर हुआ। एक शुभ दिन मंगलमय वाद्य ध्वनि और अपार जन समूह के साथ एवं महिलाओं ने मंगलकलश लेकर गुरुवर की मंगल आगवानी की। कुछ दिन बड़े मन्दिर में प्रवास रहा। प्रतिदिन भक्तों ने गुरुवर की अमृतमयी वाणी का लाभ लिया। एक दिन वहाँ पर चल रहे जैन स्कूल में विद्यार्थियों एवं शिक्षकों के लिए प्रवचन हेतु बच्चे बाजे के साथ मुनिसंघ को ले गये। वहाँ पर हजारों बच्चों व लोगों के बीच गुरुवर का मंगल प्रवचन सम्पन्न हुआ। पश्चात् दि. जैन वर्धमान जिन चैत्यालय डीडवाना रोड में 22.11.09 को संत शिरामणि परम पूज्य आचार्य गुरुवर श्री 108 विद्यासागरजी महाराज के आचार्य पदारोहण दिवस के अवसर पर परम प्रभावक परम पूज्य मुनिवर 108 आर्जवसागरजी महाराज के सान्निध्य में श्री शान्तिविधान पूजन का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। तत्पश्चात मुनिवर के मंगल प्रवचन हुये। दोपहर में अत्यन्त उल्लास के साथ आचार्य पदारोहण दिवस को मनाने हेतु जुलूस के साथ मुनिवर ''श्री जिनेश्वर दास स्कूल'' परिसर पहुँचे। और वहाँ पर आचार्यश्री की पूजन, आरती की गयी। पश्चात् गुरुवर ने आचार्य गुरुवर का गुणगान किया। कुछ दिनों के उपरान्त गुरुवर का विहार हो गया। मीठड़ी गाँव होते हुए नाँवा पहुँचे। समाज के लोगों ने उत्साह पूर्वक गुरुवर की मंगल आगवानी की।

प्रातः कालीन प्रवचन शृंखला में भी भक्तों ने लाभ लिया। यहाँ पर कुँए का पानी खारा होने के कारण गुरुवर को बुखार की शिकायत हो गयी फिर भी गुरुवर ने दैनिक चर्याओं में कोई कमी न करते हुए प्रसन्न चित्त के साथ उसे सहन किया। वरना इस स्थिति में प्रवचन आदि रूप ऐसी प्रभावना कैसे कर पाते हैं। कुछ दिनों के ठहराव के बाद स्वस्थ होकर गुरुवर ससंघ विहार करके लूणवाँ अतिशय क्षेत्र पहुँचे। जिनमन्दिर में प्राचीन प्रतिमाओं का दर्शन किया। किशनगढ़ रेनवाल कमेटी के लोगों ने आकर अपने नगर पधारने हेतु नम्र निवेदन श्रीफल भेंट से किया। पश्चात् देहली, भीण्डा होते हुए गुरुवर का ससंघ किशनगढ़ रेनवाल में बाजे एवं अपार जनसमूह के जय-जयकारों के साथ मंगल प्रवेश हुआ। गुरुवर के मंगल प्रवचन के दौरान समाज के लोगों ने शीतकालीन प्रवास हेतु श्रीफल भेंट किये। गुरुवर के मंगल आशीर्वाद एवं प्रेरणा से श्री विद्यासागर सर्वोदय ज्ञान पाठशाला की शुरुआत हुई। करीब 60-70 बच्चे प्रतिदिन शाम को 7 बजे से पाठशाला आ जाते थे। बच्चों के साथ बड़े लोग भी शाम की इस कक्षा में उत्साह से भाग लेते थे। बीस-पच्चीस दिनों के प्रवास के उपरान्त गुरुवर का विहार जोबनेर की ओर हुआ। रेनवाल के भक्तों ने तो गुरुवर को जाने से बहुत रोका और अश्रुपात करते हुए गुरुवर के साथ चलते रहे। जोबनेर के भक्तों ने गुरुवर की मंगल आगवानी हेतु आतुर रहे और बाजे के साथ केसरिया ध्वज लहराते हुए बड़ी धर्मप्रभावना के साथ गुरुवर आर्जवसागरजी महाराज के ससंघ का मंगल प्रवेश जोबनेर में हुआ। प्रतिदिन प्रातः कालीन मंगल प्रवचन एवं दोहपर में स्वाध्याय व शाम को संस्कार कक्षा के माध्यम से धर्म प्रभावना हुई और यहाँ पर आ. विद्यासागर सर्वोदय ज्ञान पाठशाला स्थापित की गई। 15-20 कन्यायें एवं महिलाएँ इस पाठशाला में पढ़ाने एवं प्रति रविवार पूजन करवाने इत्यादि रूप से संचालित करने के लिए तैयार हुईं। कुछ दिनों के प्रवास के पश्चात् गुरुवर मंगल विहार करते हुए हिंगोनियाँ होते हुए चौमूं नगर पहुँचे। वहाँ के चार मन्दिरों के दर्शन करके दो-



सन् 2000 में भ. महावीर के जन्म कल्याण महोत्सव पर हुआ था महावीर जयन्ती अहिंसा रथ-प्रवर्तन तमिलनाडु (आशीष मुनिश्री आर्जवसागरजी महाराज)



मुनिश्री आर्जवसागरजी के आशीष से प्रारम्भ हुआ था श्री महावीर स्कूल तपोनिलय पोन्नूरमलै तमिलनाडु।



तमिल में भ. अजितनाथ की प्राण प्रतिष्ठा करते हुए मुनिश्री आर्जवसागरजी।



तपोनिलय तमिलनापडु में मुनिश्री आर्जवसागरजी के आशीष से आरम्भ हुआथा जैन गुरुकुल।



2002 शिमोग्ग कर्नाटक वर्षायोग में मुनिश्री आर्जवसागर के दर्शन व आशीर्वाद लेते हुए जिनालय कमेटी के लोग।



तपोनिलय में गुरुवर आर्जवसागरजी के आशीष से निर्मित श्राविका आश्रम की ब्र. बहिनें मंगलाचरण करते हुए।



1997, तमिलनाडु में मुनिश्री आर्जवसागर जी के केशलोंच करते हुए।



1995 पोन्नूरमलै वर्षायोग में मुनिश्री आर्जवसागरजी के पावन सान्निध्य में कल्पद्रुम महामण्डल विधान का दृश्य।



तपोनिलय में मुनिश्री आर्जवसागरजी एवं हाउसिंग बोर्ड मिनिस्टर पिचांडी।



मुनिश्री सुधासागर जी महाराज के गृहस्थ जीवन के पिता का सम्मान करते हुए कमेटी प्रमुख।



2004 टी.टी. नगर में कलेक्टर सुभाष जैन का सम्मान करते हुए मनोहर लाल टोंग्या।



2004 गुरुवर आर्जवसागरजी महाराज की कृति तीर्थोदयकाव्य का विमोचन करते हुए मुख्यमंत्री बाबूलाल गौर भोपाल।



डॉ. रतनचंद जी जैन का सम्मान करते हुए अध्यक्ष मनोहरलाल टोंग्या व अजित पाटनी।



2004 पावन वर्षायोग भोपाल में गुरुवर आर्जवसागरजी महाराज प्रवचन मुद्रा में।



2004 एस बाग पञ्चकल्याणक में मुनिश्री आर्जवसागरजी की चरणवंदना करते हुए मुनिश्री विशुद्धसागर जी।



2004 भोपाल पं. लालचंद जी 'राकेश' का सम्मान करते हुए अध्यक्ष मनोहरलाल टोंग्या।



2004 अजित पाटनी का सम्मान करते हुए अध्यक्ष मनोहर लाल टोंग्या भोपाल।



2004 सुरेश जैन आई.ए.एस. भोपाल का सम्मान करते हुए टीन शेड टी.टी. नगर कमेटी जन।



वर्षायोग 2004, टी.टी.नगर में आयोजित तीर्थोदयकाव्य की संगोष्ठी में विद्वत्गण।



वर्षायोग 2004 में टी.टी.नगर में आयोजित त्रिदिवसीय विद्वत् संगोष्ठी में विराजित विद्वत्गण।



2004 में गुरुवर आर्जवसागरजी महाराज की चरण सन्निधि में बैठे तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री बाबूलाल गौर, हुकुमचंद सावला व नितिन नांदगांवकर आदि।



नितिन जैन नांदगावकर का सम्मान करते हुए मनोहरलाल टोंग्या व अजित पाटनी।



2004, टी.टी. नगर भोपाल में आयोजित तीर्थोदयकाव्य की संगोष्ठी में डॉ.सुधीर जैन का सम्मान।



डॉ. जयकुमार जैन मुजफ्फर नगर का सम्मान करते मनोहरलाल टोंग्या भोपाल।

तीन दिनों में भी मुनिवर ने बड़ी प्रभावना करते हुए वहाँ से विहार विराट नगर में नसिया एवं नगर मंदिर में धर्म प्रभावना करते हुए अलवर नगर की ओर विहार किया।

अलवर में नन्दीश्वर महामण्डल विधानः-

अलवर नगर में अपार जनसमुदाय एवं वाद्य की मंगल ध्वनियों के साथ गुरुवर आर्जवसागर जी का ससंघ वस्ती के श्री दिगम्बर जैन पार्श्वनाथ मंदिर पहुँचे फिर दर्शन चर्या प्रवचन के उपरान्त पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर, जैन भवन परिसर स्कीम-10 पर मंगल आगवानी हुई। प्रतिदिन श्रद्धालुगण ने गुरुवर के वाचनामृत का पान किया। और 1.3.10 को आ. विद्यासागर सर्वोदय ज्ञान पाठशाला के मंगल कलश की स्थापना का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। जिस कार्यक्रम के संचालन हेतु सांगानेर के छत्रावास से ब्र. वीरेन्द्र भी आये फाल्गुन अष्टाह्निका पर्व में श्री नन्दीश्वर महामण्डल विधान का आयोजन प्रारम्भ हुआ। जिसमें बहुत लोगों ने इन्द्र-इन्द्राणी बनकर देव, शास्त्र, गुरु की भक्ति की। और अलवर में स्थित पंचायती बड़े मन्दिर का भी दर्शन किया। वहाँ पर की गई स्वर्णिम सूक्ष्म चित्रकला को देखकर गुरुवर ने उसकी प्रशंसा की। भारत के सभी मन्दिरों में ऐसे धार्मिक चित्र होना चाहिए ऐसे चित्र जीते जागते पुराण है। इसे देखकर बच्चे एवं बड़े लोगों को भी नैतिक शिक्षा एवं मोक्षमार्ग का ज्ञान प्राप्त होता है, ऐसा गुरुवर ने कहा। अलवर में स्थित और भी मन्दिरों का दर्शन गुरुवर ने किया। 20-25 दिनों के प्रवास के उपरान्त कमेटी के द्वारा और ठहरने हेतु नम्र निवेदन होते हुए भी गुरुवर का विहार अतिशय क्षेत्र तिजारा की ओर हो गया।

तिजारा में मंगलप्रवेशः-

दिनाँक 15.03.10 को गुरुवर आर्जवसागर जी महाराज ससंघ का देहरा तिजारा अतिशय क्षेत्र में वाद्य ध्वनि व जय-जयकारों के साथ पाद प्रक्षालन, आरती करते हुए भव्य मंगल प्रवेश हुआ। कुछ दिनों के प्रवास में ही

तिजारा जैन समाज गुरुवर से प्रभावित हो गई। और आ. विद्यासागर सर्वोदय ज्ञान पाठशाला के कलश स्थापना का कार्यक्रम हुआ। समाज की कमेटी ने महावीर जयन्ती एवं मुनिवर आर्जवसागरजी महाराज के दीक्षा दिवस कार्यक्रम मनाने हेतु श्रीफल भेंट कर नम्र निवेदन किया। गुरुवर का मंगल आशीर्वाद मिला।

महावीर जयंती व 23वाँ दीक्षा दिवसः-

दिनांक 28 मार्च 2010 को भगवान महावीर 2609 वीं जन्म जयन्ती व मुनि श्री आर्जवसागरजी महाराज के 23 वें दीक्षा दिवस के पावन अवसर पर अतिशय क्षेत्र देहरा तिजारा में अनेक कार्यक्रम आयोजित किए गये। इस मंगल कार्यक्रम की शुरुआत प्रातः 5:00 बजे प्रभात फेरी नगर परिभ्रमण के साथ की गई। प्रभात फेरी में सम्पूर्ण तिजारा नगरी महावीर भगवान के जय जयकारों से गूंज उठी। इसके बाद प्रातः 8:30 बजे परम पूज्य मुनिवर का मंगल उद्‌बोधन हुआ। मुनिवर ने भगवान महावीर के जन्म कल्याणक का इतना सजीव वर्णन किया कि सभी श्रोतागण भाव विभोर हो गए। प्रातः 10:30 बजे तिजारा के इतिहास में प्रथम बार महावीर जयन्ती के शुभावसर पर मुनिवर के सान्निध्य में स्वर्ण रथयात्रा निकाली गई, जिसमें विभिन्न नगरों के हजारों लोगों ने भाग लिया। रथयात्रा नगर के प्रमुख मार्गों से होती हुई वापिस देहरा क्षेत्र पर आई इसके पश्चात् श्री जी का अभिषेक मुनिवर के आशीर्वचन के साथ सम्पन्न हुआ। दोपहर 1 से 2:30 बजे तक विभिन्न स्थानों की धार्मिक पाठशालाओं का सम्मेलन धार्मिक प्रस्तुति के साथ मुनिवर के सान्निध्य में सम्पन्न हुआ। इस धार्मिक पाठशाला सम्मेलन के पारितोषिक में प्रथम स्थान सांगानेर ने, द्वितीय स्थान अलवर ने, एवं तृतीय स्थान तिजारा ने प्राप्त किया। सभी विद्यार्थियों को सांत्वना पुरस्कारों से पुरस्कृत किया गया। विभिन्न पाठशालाओं के संरक्षकों एवं शिक्षक-शिक्षिकाओं तथा समाज के गणमान्य अतिथिगणों को प्रतीक चिन्ह भेंट कर सम्मानित किया गया। अपराह्न 2:30 बजे मंचीय कार्यक्रम में

क्षेत्र के पदाधिकारियों तथा बाहर से पधारे अतिथिगणों के द्वारा देवाधिदेव महावीर भगवान एवं आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज के चित्र का अनावरण, दीप प्रज्वलन के साथ किया गया। मुनिवर के दीक्षा दिवस के पावन अवसर पर मुनिवर के पाद प्रक्षालन का सौभाग्य दिल्ली वालों ने तथा शास्त्र भेंट करने सौभाग्य तिजारा धार्मिक पाठशाला की शिक्षिकाओं ने प्राप्त किया। आमंत्रित विद्वानों द्वारा भगवान महावीर पर उद्‌बोधन दिया गया। अलवर जैन समाज के सभी सदस्यगण व अन्य लोगों द्वारा मुनिश्री के चरणों में नारियल भेंट कर चातुर्मास के लिए नम्र निवेदन किया गया।

इसके बाद परम पूज्य मुनिवर ने भगवान महावीर के उपदेशों की चर्चा अपने मंगल प्रवचन में की। सायं 6:30 बजे गुरु भक्ति, भजन संध्या तथा श्रीजी एवं मुनिवर की आरती का पालना झुलाया गया तथा धार्मिक सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये गये। इस कार्यक्रम में भोपाल, जयपुर, दमोह, अलवर एवं देहली इत्यादि अनेक स्थलों से करीब 500 लोगों ने पधारकर इस सम्मेलन में ज्ञानार्जन किया। इस तरह यह कार्यक्रम मंगलमय सानन्द सम्पन्न हुआ। कुछ दिनों के बाद गुरुवर का मंगल विहार हरियाणा प्रदेश के रेवाड़ी नगर की ओर हो गया।

रेवाड़ी जैन स्कूल में मंगल उपदेश:-

रेवाड़ी नगर में गुरुवर की मंगल आगवानी वाद्य ध्वनियों से हुई। वहाँ की कमेटी के लोगों ने ग्रीष्मकालीन वाचना हेतु नम्र निवेदन किया। ग्रीष्मकाल के कुछ दिन के प्रवास में प्रवचन एवं कक्षायें चलीं और मुनिवर को सबसे प्रिय धार्मिक संस्कार देने वाली धार्मिक पाठशाला का कलश स्थापना पूर्वक प्रारम्भ किया गया। रेवाड़ी नगर की 250 घर की समाज वहाँ पर 5 विद्यालय (जैन स्कूल) चलाती है जिसमें जैन व अजैनी के करीब 5000 बच्चे पढ़ते हैं। वहाँ पर उनको धार्मिक कक्षा के माध्यम से जैन धर्म भी सिखाया जाता है। गुरुवर को स्कूल में प्रवचन हेतु निवेदन किया गया। दिनांक 20 अप्रैल को रेवाड़ी के

जैन पब्लिक स्कूल में गुरुवर के आगमन पर स्कूल के विद्यार्थियों ने बैण्ड की धुन पर, प्रबंधन समिति के सदस्यों के साथ उनकी आगवानी की। प्रबंधन समिति के प्रधान डी.के. जैन व सचिव दीपक जैन, प्रबंधक राजीव जैन सलाहकार, रमेश जैन जयमाला जैन, मुख्याध्यापिका डॉ. इन्दु यादव, जैन समाज के प्रधान अजित प्रसाद जैन, सचिव राजकुमार जैन, जैन एजुकेशन बोर्ड के प्रधान सुभाष जैन, सचिव डॉ. एस.सी. जैन आदि ने मुनिश्री आर्जवसागर जी के चरणों में श्रीफल भेंट किये। समिति के सचिव दीपक जैन ने मुनिवर का स्वागत करते हुए उनका परिचय दिया। विद्यालय की बालिकाओं ने गुरुवंदना से मुनिश्री का अभिवादन किया। जैन स्कूल कमेटी के पदाधिकारीगण के द्वारा मुनिश्री को शास्त्र भेंट किया गया। पश्चात् गुरुवर ने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए उनको शाकाहारी बनने, तंबाकू व नशीले पदार्थों का सेवन न करने तथा चमड़े का प्रयोग न करने का संकल्प हाथ उठवाकर दिलवाया। और मुनिश्री ने बच्चों को आशीर्वाद देते हुए कहा कि किसी भी लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए अनुशासन का पालन करना आवश्यक है। उन्होंने कहा कि शिक्षा का उद्देश्य केवल आजीविका प्राप्त करना नहीं होना चाहिए। अपितु इसके माध्यम से आचरण सीखकर हम सर्वोच्च पदों पर पहुँचें और देश की सेवा करें यह उद्देश्य होना चाहिए। अजेश जैन के संचालन में चले कार्यक्रम में अंत में मुख्याध्यापिका ने आभार व्यक्त किया।

दिल्ली की ओर मंगल विहारः-

पश्चात् कुछ दिनों के बाद गुरुवर का मंगल विहार भारत की राजधानी दिल्ली की ओर हो गया। धारूहेड़ा, अष्टापद, सिद्धान्त तीर्थ गुड़गाँव आदि से होते हुए गुरुवर का मंगल प्रवेश दिल्ली महानगर में हुआ। महरोली (अहिंसा स्थल) स्थित महावीर भगवान का दर्शन कर आहारचर्या सम्पन्न हुई। और यहीं पर पूर्व से ही प्रभावित और दिल्ली की ओर पधारने का निवेदन करने वाले हवलदार कर्णसिंह यादव मुनि संघ का विहार करवाने आ गये।

दोपहर ग्रीनपार्क से पधारे कमेटी के लोगों ने अपनी कॉलोनी में पधारने हेतु नम्र निवेदन किया। गुरुवर का मंगल विहार ग्रीनपार्क की ओर हुआ। समाज के लोगों ने जय-जयकारों के साथ गुरुवर की मंगल आगवानी की। करीब एक सप्ताह के प्रवास में गुरुवर ने मंगल प्रवचनों के माध्यम से धर्म प्रभावना की। पश्चात् वहाँ से लाल मन्दिर की ओर विहार हुआ। बीच मार्ग से स्थित इण्डिया गेट का अवलोकन करते हुए दिल्ली लालकिला के सामने स्थित लाल मन्दिर का दर्शन किया। आहारचर्या हुई पश्चात् लोगों के निवेदन पूर्वक गुरुवर का विहार भोलनाथ नगर की ओर हुआ। भोलानाथ नगर में बाजों के साथ गुरुवर का मंगल प्रवेश हुआ और जिनदर्शन के पश्चात् मंगल प्रवचन हुआ।

मंगल प्रवचन के दौरान कमेटी के लोगों ने अक्षय तृतीया पर्व पर गुरुवर का मंगल सान्निध्य की प्राप्ति हेतु श्रीफल भेंट किये। पश्चात् अक्षय तृतीया पर्व हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। जिसमें मूलनायक आदिनाथ भगवान का जिनाभिषेक व विशेष पूजन की गई। पश्चात् गुरुवर का मंगल प्रवचन अक्षय तृतीया पर्व पर सम्पन्न हुआ। पश्चात् मुनिवर ने कृष्णा नगर, कैलाश नगर, कबूल नगर, बलरामनगर आदि मन्दिरों का भी दर्शन किया एवं प्रवचन आदि से धर्म की प्रभावना की।

पश्चात् शान्तिनगर निकेतन से होते हुए गुरुवर का मंगल प्रवेश बड़ागाँव में हुआ। अतिशयकारी श्री पार्श्वनाथ भगवान का दर्शन किया। एक-दो दिन के प्रवास के उपरान्त गुरुवर सराय, बिनोली, वरनाँवा, सरधना, दौहला, मवाना आदि गाँव व नगरों के मन्दिरों का दर्शन करते हुए एवं मंगल प्रवचन एवं आहारचर्या आदि श्रावकों को लाभ प्रदान करते हुए हस्तिनापुर नगर की ओर विहार हुआ।

हस्तिनापुर में भगवान शान्तिनाथ का मोक्षकल्याणक व श्रुतपंचमी पर्व महोत्सव सम्पन्नः-

हस्तिनापुर की पावन धरा पर जहाँ तीन-तीन तीर्थंकर के चार-चार

कल्याणक हुए, भगवान आदिनाथ का मुनि अवस्था में इक्षुरस का आहार हुआ और अक्षय तृतीया पर्व का प्रादुर्भाव हुआ एवं जहाँ मुनि विष्णुकुमार ने अकम्पनाचार्य आदि 700 मुनियों के उपसर्ग को दूर कर रक्षाबंधन जैसे पर्व का सूत्रपात किया। ऐसी पूज्यनीय धरा पर 10 जून 2010 को गुरुवरश्री आर्जवसागरजी महाराज का मंगल प्रवेश हुआ। मन्दिर एवं क्षेत्र का अवलोकन कर मुनिश्री ने अपने कुशल व्यवहार, शुद्ध आराधना एवं साधना से जनमानस को अपनी ओर आकर्षित किया। हस्तिनापुर कमेटी के लोगों ने शान्तिनाथ निर्वाण महोत्सव पर सम्पन्न होने वाले मेले में अपना सान्निध्य प्रदान करने हेतु श्रीफल भेंट कर निवेदन किया। पश्चात् श्री शान्तिनाथ निर्वाण महोत्सव पर श्री जी का मस्तकाभिषेक एवं शान्तिधारा के उपरान्त श्रीजी की स्वर्ण रथोत्सव गुरुवर आर्जवसागर जी के ससंघ मंगल सान्निध्य पूर्वक बहुत ही धर्म प्रभावना के साथ सम्पन्न हुई। इस कार्यक्रम में उपस्थित अपार जन समूह के बीच मुनिश्री ने मंगल प्रवचन करके उदाहरणों के माध्यम से धर्म की ज्ञान गंगा प्रवाहित करके जेठी के मेले पर श्री दिगम्बर जैन प्राचीन बड़ा मन्दिर में उपस्थित धर्मावलम्बियों को भाव-विभोर कर दिया।

दिनाँक 16 जून 2010 को हस्तिनापुर में गुरुवर श्री आर्जवसागरजी के मंगल सान्निध्य में श्री दिगम्बर जैन प्राचीन बड़ा मन्दिर जी में माँ जिनवाणी की आराधना कर जिनवाणी माता की पालकी यात्रा निकालकर श्रुत पंचमी का पर्व हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। जिसमें सर्वप्रथम मूलनायक भगवान शान्तिनाथ का मंत्रोच्चारण के साथ जलाभिषेक कर त्रिमूर्ति में पहुँचकर शान्तिधारा की गई। तत्पश्चात् बैंड बाजों के साथ मुनिश्री आर्जवसागरजी महाराज के ससंघ के साथ श्री कैलाश पर्वत से जैनागम षट्खण्डागम शास्त्र व माँ जिनवाणी को पालकी में विराजमान करके उनकी शोभायात्रा निकाली गई। पालकी यात्रा मुख्य मन्दिर से प्रारम्भ होकर मुख्यबाजार से होते हुए कैलाश पर्वत की परिक्रमा करा कर मुख्य वेदी के सामने समापन हुई। इस कार्यक्रम में

भोपाल, जोबनेर, अलवर, तिजारा आदि से भी लोग सम्मिलित हुये पश्चात् गुरुवर का मंगल प्रवचन हुआ। जिसमें उन्होंने श्रुतपंचमी के पावन दिन की महत्ता बतलाई। आगम ग्रन्थ लिपिबद्ध कैसे हुये, किससे इस पर्व का उद्भव हुआ इस पर प्रकाश डाला।

कमेटी द्वारा चातुर्मास हेतु निवेदनः-

इसी संदर्भ के दौरान तीर्थ क्षेत्र कमेटी के मंत्री श्री प्रद्युम्न कुमार जैन मेरठ, श्री देवेन्द्र कुमार जैन सराफ, श्री शिखरचन्द्र जैन मेरठ आदि ने श्रीफल भेंट चढ़ाकर महाराजश्री के सम्मुख अपना चातुर्मास इसी पावन धरा पर करने का निवेदन किया। और अलवर की कमेटी के और समाज के लोगों ने भी इस बार का चातुर्मास अपने नगर में संपन्न हो इस भावना से श्रीफल भेंट किये और तिजारा के लोगों ने, पूरी कमेटी के साथ चातुर्मास का अवसर प्राप्त हो इस मंगल भावना श्रीफल के माध्यम से नम्र निवेदन किया। हस्तिनापुर में स्थित जम्बूद्वीप कमेटी के लोग व बहनें कैलाश पर्वत के सामने ठहरे गुरुवर आर्जवसागरजी को जम्बूद्वीप दर्शनार्थ पधारने हेतु नम्र निवेदन लेकर आये। पश्चात् मुनिवर आर्जवसागरजी संघ सहित व भक्त लोगों के साथ जम्बूद्वीप आदि के मन्दिरों के दर्शन हेतु वहाँ पर पहुँचे। आ.रत्न ज्ञानमति माताजी ने अपने संघ सहित गुरुवर की मंगल आगवानी की। पश्चात् साथ रहकर सभी मन्दिरों का दर्शन करवाया और आ. ज्ञानमति माताजी ने गुरुवर से कुछ धार्मिक चर्चायें की तथा स्वरचित शास्त्रों को भी गुरुवर को भेंट किया। पश्चात् सब लोग भेजने भी आये। पश्चात् दूसरे दिन मुनिश्री ने संघ सहित हस्तिनापुर से मेरठ की ओर विहार कर दिया।

मेरठ, गाजियाबाद आदि से हुआ विहारः-

मवाना, गंगा नगर होते हुए मेरठ नगर पहुँचे। मंगल प्रवचन एवं आहारचर्या आदि के माध्यम से श्रावकों को धर्म लाभ मिला। पश्चात् मुनिश्री ज्ञानस्थली, मोदी नगर ऋषभांचल आदि से विहार करते हुए गुरुवर का ससंघ

गाजियाबाद के कवि नगर में भव्य मंगलप्रवेश हुआ। समाज के सभी लोग बाजे के साथ गुरुवर की मंगल आगवानी में सम्मिलित हुये। हस्तिनापुर से गाजियाबाद तक का विहार श्री इन्द्रप्रकाश जैन मवाना मेरठ वालों ने हर्षोल्लास पूर्वक सम्पन्न कराया। गाजियाबाद में दैनिक मंगल प्रवचनों के माध्यम से एवं शाम को संस्कार की कक्षा से श्रावकगण बहुत आकर्षित हुये एवं चातुर्मास के लिए नम्र निवेदन किया। फिर भी 15-20 दिन प्रवास के उपरान्त गुरुवर का मंगल विहार हुआ। दिल्ली में स्थित कबूल नगर की समाज भी चातुर्मास हेतु नम्र निवेदन सह आती रही। लेकिन गुरुवर का विहार दिल्ली से बाहर तरफ स्थित साहिबाबाद, दिलशाद गार्डन, राम नगर, चन्द्र लोक, बलवीर नगर, कबूल नगर, दरियागंज, महरोली आदि से होते हुए दिल्ली से जयपुर की ओर हो गया। गुरुवर का जब दिल्ली में प्रवेश हुआ तब और जब लौटकर आये तब भी भीषण गर्मी का समय रहते हुए भी गुरुवर ने अपनी चर्या में कोई अन्तर नहीं लाया। आहार चर्या में कुएँ का पानी, श्रावकों के घर पर ही आहार चर्या व नौकरों से या संस्था द्वारा स्थापित चौकाओं में आहार नहीं लेना, निहार के लिए बाहर प्रासुक भूमि नदी किनारे या बंद फैक्टरी आदि में जाना और पंखा, कूलर ए.सी. आदि का उपयोग नहीं करना आदि अपने आगमिक नियमों को कायम रखा। इन सभी चर्याओं को देखकर दिल्ली के श्रावकों ने आश्चर्य करते हुए कहा कि ऐसे सच्चे साधु का दर्शन एवं सेवा की मौका हम लोगों को पहली बार मिला है। ऐसा कहकर वे बहुत हर्षित हुये।

गुड़गाँव में 42 वाँ दीक्षा दिवस मनाया:-

अहिंसा स्थली से विहार कर मुनि श्री का ससंघ गुड़गाँव पधारे। वहाँ पर दिनांक 16/7/10 को आचार्यश्री 108 विद्यासागरजी महाराज का 42 वाँ दीक्षा दिवस समारोह हर्षोल्लास पूर्वक मनाया गया। जिसमें गुड़गाँव पाठशाला के विद्यार्थियों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत कर मंगलाचरण किया गया। गुरुवर द्वारा रचित साहित्य का विमोचन अध्यक्ष जैकबपुरा गुड़गाँव एवं डॉ.

अजित जैन भोपाल द्वारा किया गया। पश्चात् बाहर से पधारे अतिथियों का सम्मान किया। पश्चात् भावविज्ञान पत्रिका एवं मुनिवर के साहित्य का विमोचन श्री लोकेश जैन दिल्ली आदि ने किया। पश्चात् गुरुवर का मंगल प्रवचन सम्पन्न हुआ। जिसमें महाकवि आ.ज्ञानसागरजी महाराज से कैसे अपने गुरुवर की दीक्षा हुई इसके बारे में बहुत सुन्दर विवेचन किया। पश्चात् 12 नं. सेक्टर के मंदिर में ठहरकर सद्लगा में जिनमंदिर बनवाने वाले महावीर जैन (माचिस वालों) को नवधा भक्ति पूर्व के आहार दान का लाभ देते हुए मुनिश्री का विहार धारुहेड़ा, कोटकासीम से होते हुए कोटपुतली की ओर हुआ।

पूज्य गुरुदेव आर्जवसागरजी महाराज गुरुपूर्णिमा के दिन कोटपुतली पधारे। वहाँ कुचामन सिटी, तिजारा, रेनवाल, गुड़गाँव, दिल्ली, जयपुर और भी कई जगह से लोग मुनिश्री की पूजा करने और पावन चातुर्मास के लिए निवेदन करने आये। हर श्रावक धर्म लाभ प्राप्त करना चाहता था उसकी यही अभिलाषा थी कि मुनिश्री का चातुर्मास अपने नगर में हो परन्तु यह पुण्य प्राप्त हुआ जयपुर के श्रावकों को। जयपुर शहर गर्मी में झुलस रहा था वर्षा नहीं हो रही थी ऐसे माहौल में जब महाराजश्री जयपुर की तरफ विहार करने लगे तो एक आनन्द और श्रद्धा की लहर हर श्रावक के मन में उठने लगी गुरु के तप और त्याग के प्रभाव से प्रतिदिन वर्षा होने लगी, प्रकृति में शीतलता व शान्ति की हरियाली छा गई।

जयपुर महा नगर में चातुर्मास हेतु भव्य मंगल प्रवेश:-

दिनांक 29.7.10 को गुरुदेव शिवजी गोधा की जैन नसियाँ में प्रात: 9 बजे पहुँचे। उनके साथ अपार श्रावक समूह जय-जयकार के मंगल उद्घोष करते हुए आ रहे थे। जयपुर के गायत्री नगर, कीर्ति नगर व महावीर नगर के लोग अपनी अलग-अलग व्यवस्था लेकर चल रहे थे दोनों ही चाहते थे कि महाराज श्री अपने यहाँ चातुर्मास करें किन्तु यह पुण्यलाभ कीर्तिनगर वालों को

प्राप्त हुआ। लोग भक्ति भाव से गुरु दर्शन कर स्वयं का जीवन धन्य मान रहे थे।

जयपुर शहर के इतिहास में पहली बार वर्षायोग हेतु रत्नत्रयधारी गुरुवर आर्जवसागरजी लोगों की अज्ञानता दूर कर उनके अंदर ज्ञान की ज्योति जलाने आये हैं। शाम को 4 बजे मुनिश्री का विहार नसियाँ से हुआ। हजारों की संख्या में श्रावक-श्राविकाएँ मंगल गीत गाते हुए चल रहे थे। जौहरी बाजार से लेकर प्रमुख शहर के मनिहारों के रास्ते तक सम्पूर्ण रास्ता ही जाम हो गया लोग अपने-अपने घर के आगे पाद प्रक्षालन व आरती के लिए खड़े थे। ऐसा लग रहा था मानों चतुर्थकालीन किसी तीर्थंकर का समवशरण चल रहा हो।

दूसरे दिन 30.7.2010 को गुरुदेव प्रातः 6 बजे अपार श्रावक समूह के साथ कीर्ति नगर की तरफ विहार करने लगे। रास्ते में हर प्राणी उनके दर्शनकर व हाथी-घोड़ा, बैंड बाजे रहित विशाल जुलूस को देखकर जैन धर्म की महिमा गा रहे थे। अनेक श्रावक-श्राविकाएँ श्वेत या पीले वस्त्र पहने गुरु के पादप्रक्षालन व आरती कर रहे थे। कई लोग गुरु दर्शन के लिए बहुत दूर-दूर से आये थे। 9 बजे विशाल जुलूस कीर्तिनगर पहुँचकर धर्म सभा में परिवर्तित हो गया।

वर्षायोग कलश स्थापना व भव्य आयोजनः-

31 जुलाई को प्रातः 7:30 बजे पावन वर्षायोग के मंगलकलश की स्थापना का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। यह कार्यक्रम पं.ब्र. जयकुमार निशान्त के निर्देशन में किया गया जिसमें व्रती बहिनों ब्र. राजकुमारी दीदी एवं ब्र. पद्मालिनी दीदी द्वारा मंगलाचरण हुआ। राजस्थान महासभा के अध्यक्ष श्री गणेशजी राणा और कमेटी के लोगों ने आचार्यश्री के चित्र का अनावरण एवं दीप प्रज्वलन किया। पश्चात् कीर्तिनगर की कमेटी के द्वारा एवं जयपुर नगर के विशिष्ट जनों द्वारा वर्षायोग हेतु श्रीफल भेंटकर नम्र निवेदन किया गया। बाहर दिल्ली, अजमेर, दमोह, तमिलनाडु, ग्वालियर तिजारा आदि से पधारे

अतिथियों का सम्मान किया गया। तदुपरान्त वर्षायोग के पंच मंगल कलश स्थापना के कर्त्ताओं का चयन किया गया जिसमें प्रथम रत्नत्रय कलश श्रेष्ठी श्री गणेशजी राणा सपरिवार ने प्राप्त किया। दूसरा धर्मप्रभावना कलश श्री अरुण काला व पत्नि आशा (पार्षद) ने प्राप्त किया। तीसरा अतिथि सत्कार कलश श्री महावीर सुनील काला ने प्राप्त किया। चौथा वात्सल्य कलश श्री रतनचन्द्र जी सोगानी ने और पंचम सौभाग्य कलश श्री ताराचन्द जी परिवार ने स्थापना करने का सौभाग्य प्राप्त किया। इस कार्यक्रम में कीर्तिनगर का जैन मन्दिर प्रांगण पूरा का पूरा श्रावकों की भीड़ से भर गया कई श्रावक-श्राविकाएँ बाहर खड़े होकर धर्म लाभ प्राप्त कर रहे थे। कलश की स्थापना होते ही इन्द्र देवों ने भी प्रसन्न होकर ऐसी जल की वृष्टि की कि जैसे पूरा जयपुर नगर पानी से तृप्त हो रहा हो। थोड़े ही काल में शहर में पानी की कमी की पूर्ति हो गई। ये सब मुनिवर के तप और त्याग का प्रभाव था। पश्चात् गुरुवर का मंगल प्रवचन हुआ। जिसमें उन्होंने बताया कि जयपुर नगर के भव्यों का पुण्य हमें सैकड़ों किलोमीटर से खींच रहा था। मैं ही जान नहीं पाता हूँ कि हमारा चातुर्मास कहाँ होना है, श्रावकों का पुण्य ही खींचता है। यह लम्बा विहार बहुत ही कम समय में हुआ। और चातुर्मास क्यों किया जाता है और उसका महत्त्व बतलाते हुए अपना उद्‌बोधन दिया।

दैनिक कार्यक्रमों में प्रातः गुरुवर का मंगल प्रवचन व दोपहर में स्वाध्याय प्रारम्भ किया गया। शाम को संस्कार की कक्षा के निमित्त यहाँ पर श्री विद्यासागर सर्वोदय ज्ञान पाठशाला की स्थापना करवाई गयी जिसमें अनेक बच्चों धार्मिक शिक्षा प्राप्त करते थे। प्रवचन में अगर कोई यदि एक बार मुनिश्री के प्रवचन सुन लेता था तो वह प्रतिदिन उनके प्रवचन सुनने से वंचित नहीं रहता था इतने रोचक एवं मार्मिक प्रवचन हुये। रविवार के दिन दोपहर को भी मुनिश्री के विशेष प्रवचन हुये। जिसमें बहुत भारी संख्या में श्रावक गण धर्मामृत का पान करते थे।

रक्षाबंधन के दिन से षोडसकारण महापर्व शुरु हो गया। इसमें करीब 100-150 से अधिक श्रावकों ने भाग लिया और प्रतिदिन भवन की छत पर बने पाण्डाल में संगीतमय सामूहिक पूजा करते थे। इसके बाद गुरुवर का मंगल उद्‌बोधन होता था। जयपुर वासियों के लिए इस पावन वर्षायोग का आनंद कुछ और ही लगता था। महापर्व षोडसकारण पर्व, उसमें गुरु का समागम सोने में सुहागा जैसा मेल बड़ा अच्छा लगता था। षोडसकारण महापर्व मंगल कलश स्थापना का सौभाग्य श्री डी.आर. जैन परिवार मानसरोवर वालों ने प्राप्त किया। लोगों के जीवन में पहली बार त्याग और संयम की साधना महक रही थी। गुरुवर के द्वारा रची गई सम्यक्‌ध्यान शतक से ध्यान की साधना पर दिये गये प्रवचनों को भी सुनकर सुदूर कॉलोनियों से आकर भक्तगण बहुत ही अपूर्व आनन्द प्राप्त करते थे।

पश्चात् दशलक्षण पर्व में श्रावक साधना संस्कार शिविर कराया गया। इसमें भी बहुत लोगों ने भाग लिया। कई लोगों ने दस-ग्यारह उपवास किये। प्रातः काल नित्य एवं पर्व पूजन के उपरान्त मुनिवर का मंगल प्रवचन दस धर्मों पर हुये। और दोपहर में तत्त्वार्थ सूत्र का वाचन सहित सार्थ पढ़ाया गया। जिसको सुनकर भव्य लोग कहने लगे कि पहली बार इतनी सूक्ष्म बातों को समझाते हुए तत्त्वार्थ सूत्र सुनने को मिला। इस शिविर में तमिलनाडू, दमोह, महाराष्ट्र आदि से भी आकर भव्य लोगों ने भाग लिया। अन्त में क्षमावाणी पर्व हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। पश्चात् सबका सम्मान भी किया गया।

कवि सम्मेलनः-

अनन्तर 2 अक्टूबर 2010 को कीर्तिनगर के जैन भवन की छत पर बने पण्डाल में विद्यासागर प्रवचन मंच से बड़ा ही भव्य जैन कवि सम्मेलन सम्पन्न हुआ। प्रातःकाल स्थानीय बच्चों, महिलाओं व पुरुषों द्वारा कविताएँ प्रस्तुत की गईं। अन्त में एवं मध्यान्ह में दूर-दूर से पधारे कवियों की कविताएँ

प्रस्तुति के उपरान्त मुनिश्री ने अपनी स्व-रचित कविताएँ सुनाईं। इन शिक्षाप्रद कविताओं से सर्वजनों को अपार आनन्द हुआ। रात्रिकालीन कवि सम्मेलन में देहली, भोपाल, कोटा आदि से पधारे चन्द्रसेनादि कवियों ने राजनेताओं की उपस्थिति में जैन धर्म और देशोन्नति पर आधारित कविताओं को गाकर सब के हृदय को जीता। कार्यक्रम का संचालन डॉ. नरेन्द्र जैन भोपाल ने किया।

पाठशाला सम्मेलनः-

3 अक्टूर 2010 को मुनिश्री के आशीर्वाद व प्रेरणा से चल रही राजस्थान की धार्मिक पाठशालाओं एवं उनकी शिक्षक-शिक्षिकाओं का सम्मेलन सम्पन्न हुआ। तीन सत्रों में बच्चों के सांस्कृतिक कार्यक्रम, शिक्षक-शिक्षिकाओं को मार्ग-दर्शन एवं मुनिश्री का मंगल उद्‌बोधन हुआ। सभी पाठशालाओं में प्रथम पुरस्कार रेनवाल पाठशाला को, द्वितीय पुरुस्कार जोबनेर पाठशाला को, तृतीय पुरस्कार कुचामन सिटी को प्राप्त हुआ। सभी बच्चों व पढ़ाने वालों को पुरस्कारित कर सामाजिक लोगों को भी सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. अजित जैन भोपाल ने किया।

समवसरण महामण्डल विधान सम्पन्नः-

समवसरण विधान के निमित्त मुनिश्री ने ससंघ दिनांक 8 अक्टूबर 2010 को कीर्ति नगर जैन मन्दिर से दुर्गापुर जैन मन्दिर के लिये विहार किया तथा महावीर नगर, गायत्री नगर, घड़ी मार्केट, हीरापथ, वरुण पथ, होते हुये गुरुवर का दिनांक 16 अक्टूबर 2010 को एस.एफ.एस कॉलोनी एवं जैन मन्दिर में मंगल प्रवेश हुआ।

मुनिवर 108 आर्जवसागरजी महाराज के ससंघ सान्निध्य में मोहन वाटिका न्यू सांगानेर रोड़ जयपुर (एस.एफ.एस.) मानसरोवर जैन मन्दिर के निकट समवशरण महा-मण्डल विधान एवं विश्वशान्ति महायज्ञ का भव्य आयोजन दिनांक 17 से 24 अक्टूबर 2010 तक किया गया।

समवशरण महामण्डल विधान का ध्वजारोहण समाज सेवी श्री ओम्

कासलीवाल एवं उनके परिवार द्वारा किया गया। दीपप्रज्वलन, समाज सेवी श्रीकमल काला एवं उनके परिवार द्वारा किया गया तथा समवशरण का उद्घाटन समाजसेवी श्री श्रीपालजी कटारिया एवं उनके परिवार द्वारा किया गया। इस विधान में करीब 2000 इन्द्र-इन्द्राणियाँ बैठे थे। विधान में प्रतिदिन गुरुवर 108 आर्जवसागरजी महाराज के मंगल प्रवचन हुए। प्रतिदिन श्रावक श्रेष्ठी द्वारा मंगल प्रवचन के दौरान गुरुवर से प्रश्न; विधान में बैठे जन समूह के समक्ष पूछे गये। जिनका समाधान एवं जवाब मुनिश्री द्वारा दिया गया। श्रावक श्रेष्ठी एवं परिवार द्वारा शाम को गुरुवर की आरती की गयी। आरती के पश्चात् बैण्ड बाजों के साथ बग्गी में बैठकर श्रावक श्रेष्ठी समवशरण की महाआरती के लिये आये और संगीत द्वारा धूमधाम से प्रभु की महाआरती की जाती थी। पश्चात् विद्वानों का प्रवचन होता था। प्रतिदिन सायं को सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

जैन सिद्धान्त प्रवेशिका संशोधन संगोष्ठी:-

जैन सिद्धान्त प्रवेशिका पर संगोष्ठी एवं संशोधन दिनांक 18 से 21 अक्टूबर 2010 में श्रीमज्जिनेन्द्र समवशरण महामण्डल विधान के पावन अवसर पर श्री पार्श्वनाथ दि. जैन मन्दिर प्रबंधकारिणी समिति कीर्तिनगर जयपुर के द्वारा आयोजित किया गया।

संगोष्ठी में आमंत्रित विद्वान् श्री डॉ. श्रेयांसकुमार जैन बडौत, डॉ. शीतलचन्द जैन जयपुर, पं. शिवचरणलालजी जैन मैनपुरी, ब्र. जयकुमार जैन निशान्त टीकमगढ़, पं.महेश शास्त्री, डॉ. पुलक शास्त्री, ब्र. राजेन्द्र जैन सांगानेर, ब्र. जिनेश मलैया इन्दौर, पं. विनोद जैन रजवाँस, डॉ. सुधीर जैन भोपाल, डॉ. संजय जैन पथरिया को आमंत्रित किया गया।

दिनांक 24 अक्टूबर 2010 को समवशरण में बैठे इन्द्र-इन्द्राणियों को हाथियों, बग्गियों में बैठाकर मानसरोवर की विभिन्न कॉलोनियों में होते हुए रथ यात्रा अपूर्व धर्मप्रभावना के साथ वापिस मोहन वाटिका कार्यक्रम

स्थल पर पहुँची। तत्पश्चात् विधान में हुई बचत राशि से कीर्तिनगर जैन भवन की तीसरी मंजिल पर लगभग 110 फीट लम्बे 50 फीट चौड़े ''आर्जवसागर सभागार'' निर्माण हेतु शिलापट्ट का अनावरण किया गया। अन्त में मुनिश्री का मांगलिक प्रवचन सम्पन्न हुआ।

मुनिवर ने एस.एफ.एस जैन मन्दिर से दिनांक 26 अक्टूबर 2010 को कीर्तिनगर जैन मन्दिर के लिये विहार किया। उसी दिन मुनिश्री से आशीर्वाद लेकर करीब 60 श्रावक-श्राविकाएँ आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज ससंघ के दर्शन के लिये बीना बारह गये। वहाँ पहुँचकर आचार्यश्री की पूजन-अर्चना कर मुनिश्री की नमोस्तु निवेदित कर शास्त्र भेंट किया। जयपुर नगर में हो रही अभूतपूर्व धर्मप्रभावना की बातें बताई। आचार्यश्री ने प्रसन्न होकर सब को मंगल आशीर्वाद दिया। मुनिश्री आर्जवसागरजी महाराज के रविवारीय प्रवचनों के दौरान सामूहिक विशेष प्रवचन होते रहे और प्रवचन के समय ही एक दिन मुनिवर के दर्शनार्थ पधारे हुकुमचंद सावला इंदौर से अपने वक्तव्य में अहिंसा और शाकाहार की महिमा बतलाई।

चातुर्मास निष्ठापन व पिच्छि परिवर्तनः-

दिनांक 6 नवम्बर को मुनिश्री के सान्निध्य में भ.महावीर का निर्वाण महोत्सव मनाया गया और चातुर्मास निष्ठापन का कार्यक्रम भी सम्पन्न हुआ। गुरुवर के मंगल प्रवचन हुये। पश्चात् चातुर्मास हेतु बनायी गयी विभिन्न समितियों के संयोजकों-सदस्यों का सम्मान किया गया।

दिनांक 7 नवम्बर को पिच्छि परिवर्तन का कार्यक्रम बहुत हर्षोल्लास से सम्पन्न हुआ। जिसमें श्री त्रिशला देवी महिला मण्डल कीर्तिनगर द्वारा मंगलाचरण की प्रस्तुति दी। उसके पश्चात् बाहर से पधारे अतिथियों द्वारा चित्र अनावरण एवं दीप प्रज्वलन किया गया एवं अतिथियों का सम्मान भी किया गया। पश्चात् कंठपाठ प्रतियोगिता में प्रतिभागी बालक, बालिकाएँ, महिलाएँ एवं पुरुषों को सम्मानित किया गया। मुनिश्री को नवीन पिच्छिका प्रदान करने

का सौभाग्य श्री महावीर कासलीवाल, सुशील पहाड़िया, मनीष जैन, विमल गंगवाल आदि ने प्राप्त किया और पुरातन पिच्छिका का लेने का सौभाग्य श्री अरुण जैन एवं शैलबाला जैन मानसरोवर जयपुर वालों को प्राप्त हुआ। दूसरी पिच्छिका लेने का सौभाग्य श्री पारस अनिता सोगानी किशनपोल बाजार जयपुर को प्राप्त हुआ। पश्चात् गुरुवर ने अपने मंगलप्रवचन में पिच्छि का महत्त्व बताते हुए उपस्थित जनसमूह को अहिंसा का उद्‌बोधन दिया। गुरुवर ने 8 नवम्बर को मधुबन जैन मन्दिर के लिये विहार किया।

मालवीय नगर में सिद्धचक्र विधानः-

दिनांक 13 नवम्बर को प्रातःकाल की मंगल बेला में मालवीय नगर में गुरुवर आर्जवसागरजी महाराज का ससंघ भव्य जुलूस के साथ मंगल प्रवेश किया। यहाँ पर कुशल शिल्पियों के अथक प्रयास द्वारा लाल पाषाण से निर्मित जिनालय का निर्माण हुआ है जो आज वास्तुकला के बेजोड़ नमूने के रूप में सुविख्यात है। यहाँ देवाधिदेव 1008 श्री शान्तिनाथ भगवान की अति मनोज्ञ दर्शनीय मनोहर एवं अतिशयकारी सवा सात फुट ऊँची पद्मासन प्रतिमा विराजमान है। मूलवेदी के दोनों ओर अष्टधातु से निर्मित सवा पाँच फुट ऊँची 1008 श्री आदिनाथ, भरत, बाहुबली भगवान एवं पंचबालयति तीर्थंकरों की प्रतिमाएँ विराजमान हैं। इन जिन प्रतिमाओं के दर्शनोपरान्त प्रवचन सभा में सभी श्रावकों ने विनय पूर्वक गुरुवर के मंगल सान्निध्य में अष्टाह्निका महापर्व में सिद्धशिला पर विराजमान अनन्त सिद्धों की पूजा, अर्चना एंव आचार्यश्री 108 विद्यासागरजी महाराज का आचार्य पदारोहण समारोह मनाने के लिए करबद्ध प्रार्थना की। स्वीकृति प्राप्त होते ही सभी श्रावक, कार्यकर्ता, ट्रस्टीगण तुरन्त भाव सहित इस मंगल कार्य को सम्पन्न करने में जुट गए। श्री दिगम्बर जैन उदासीन आश्रम इन्दौर के अधिष्ठाता ब्रह्मचारी श्री अनिल भैया ने व विधानाचार्य ब्र.श्री विमल भैया ने सह विधानाचार्य का पदभार सम्हाला। 4 नवम्बर को प्रातः कालीन मंगल बेला में ध्वजारोहण के साथ श्री 1008

सिद्धचक्र-महामण्डल विधान महोत्सव प्रारम्भ हुआ। विधान मण्डल पर मंगलकलश स्थापित किये गये, मंगलदीप प्रज्वलित किया गया। आठ दिन के मंगल विधान में सौधर्म इन्द्र आदि पदों को धारण करके श्रावकगण हर्षोल्लास के साथ सिद्धप्रभु की भक्ति पूर्वक अर्चना की। गुरुवर से श्रावक-श्राविकाओं ने नित्य प्रतिदिन प्रातः कालीन प्रवचन में कल्याणकारी उपदेश सुना। दोपहर में अपनी शंकाओं का समाधान पाया। वहीं छोटे-छोटे बालकों ने पाठशाला संस्कार पाया। गुरुवर का बालकों पर अपार वात्सल्य रहा। जयपुर के बाहर महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश, आसाम, तमिलनाडू आदि कई प्रदेशों से भी श्रावकों को आने का क्रम निरन्तर बना रहा। प्रतिदिन सायंकालीन गुरुभक्ति, आरती के उपरान्त प्रथमानुयोग पर आधारित कहानियों पर नाटिकाओं का प्रदर्शन किया गया। वहीं इस अवसर पर भोपाल से पधारे भाव विज्ञान पत्रिका के सहसंपादक इंजी. श्री महेन्द्रकुमार जैन एवं स्थानीय ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री सी.एल. जैन एवं उपाध्यक्ष श्री महेन्द्र जैन ने पत्रिका के नवीन अंक का विमोचन किया।

39वाँ आचार्य पदारोहण दिवस मनायाः-

सोमवार 22 नवम्बर को प्रातः 8 बजे आचार्य श्री 108 विद्यासागरजी महाराज का 39वां आचार्य पदारोहण समारोह प्रारम्भ हुआ। इसमें जयपुर के श्रेष्ठीगण श्री गणेशराणा, श्री उत्तमकुमार सरावगी आदि श्रेष्ठीगण पधारे तथा आचार्यश्री का चित्र अनावरण किया और गणेशराणा जी को चातुर्मास प्रमुख कलश प्रदान किया गया। आचार्यश्री के व्यक्तित्व एवं कृतित्त्व पर पं.श्री मूलचन्द लुहाडिया किशनगढ़, डॉ. शीतलचंद जी जैन, पं.श्री चन्दनमल जैन अजमेरा, डॉ.पी.सी जैन आदि ने प्रकाश डाला। अन्त में मुनिराजश्री 108 आर्जवसागरजी महाराज के उद्बोधन ने सारे श्रोताओं को आचार्यश्री की साक्षात् उपस्थिति का आभास कराकर भाव विभोर कर दिया। गुरुदेव परम पूज्य मुनिश्री 108 आर्जवसागरजी महाराज ससंघ सान्निध्य में दिनांक 27 व

28 नवम्बर को सांगाकान् दि. जैन मन्दिर महावीर पार्क, चौकड़ी मोदी खाना, जयपुर में श्रीमज्जिनेन्द्र पंचकल्याणक महामण्डल आराधना वेदी प्रतिष्ठा एवं शिविर कलशारोहण समारोह हेतु वहाँ की कमेटी ने श्रीफल भेंटकर निवेदन किया।

सांगाकान् मन्दिर में कलशारोहण महोत्सवः-

दिनांक 25 नवम्बर को जब विगत तीन दिनों से लगातार वर्षा की झड़ी लगी हुई थी उस समय जैन समाज चिंता की स्थिति में था। समारोह कैसे सम्पन्न होगा? महाराजश्री ने जनसमुदाय को आशीर्वाद दिया कि सब वातावरण अनुकूल हो जायेगा। आश्चर्य की बात, महाराजश्री जैसे ही विहार के लिए मालवीय नगर सेक्टर 3 के लाल जैन मन्दिर से बाहर आये बारिश स्वतः रुक गई और जैसे ही महाराजश्री विहार कर थोड़ा आगे आये धूप की किरणें खिल-खिलाकर चमक पड़ी। जनता ऐसी धर्म प्रभावना देखकर भाव विभोर हो गई। जैन धर्म की जयकार लगाने लगी। सुबह 26 नवम्बर को जब महाराज श्री ने शहर चौकड़ी, मोदीखाना में विशाल जुलूस के साथ प्रवेश किया तब स्त्री, पुरुष बालक नाचते, गाते-झूमते, जयकारे लगाते हुए बैण्ड बाजे के साथ आगे बढ़ रहे थे। चौकड़ी के तमाम मन्दिरों, 25 जिनालयों एवं घरों के आगे महाराज श्री के पादप्रक्षालन किये गये, आरती उतारी गई।

दिनांक 27 नवम्बर को महावीर पार्क स्थित पाण्डाल में कार्यक्रम की शुरुआत ध्वजारोहण से हुई। पश्चात् दीपप्रज्वलन किया गया। घट यात्रा शहर के अनेक जगह पर प्रभावना करती हुई कार्यक्रम स्थल पर पहुँची। मण्डपशुद्धि, वेदी शुद्धि, पाण्डालशुद्धि, का कार्यक्रम हुआ। पश्चात् गुरुवर का मंगल प्रवचन सम्पन्न हुआ। दोपहर में सौधर्म इन्द्रादि 16 प्रमुख पात्रों चयन पूर्वक एवं समाज के सभी लोगों के सहयोग एवं भक्तिभाव पूर्वक पंचकल्याणक महामण्डल विधान सम्पन्न किया। इसी बीच मुनिश्री का मंगल उद्बोधन हुआ। रात्रि में प्रसिद्ध कवि चन्द्रसेनजी के निर्देशन में विशिष्ट

कवियों के साथ विशाल कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया।

दिनांक 28.11.2010 को सुबह गुरु महाराज के प्रवचन के दौरान महापौर श्रीमति ज्योति खण्डेलवाल ने अपने जीवन को अहिंसामयी बनाने का संकल्प किया। उनके साथ भाजपा प्रदेशाध्यक्ष श्रीमान् अरुण चतुर्वेदी व स्थानीय पार्षद आदि समारोह में उपस्थित रहे। पश्चात् हाथी, घोड़ा बैण्ड बग्गियों के साथ गुरुवर के ससंघ सान्निध्य में भव्य जुलूस श्रीजी की शोभा यात्रा के माध्यम से शहर भर में धूमधाम पूर्वक धर्मप्रभावना की गई। ब्र. जिनेश भैया जबलपुर, अधिष्ठाता वर्णी दि. जैन गुरुकुल के निर्देशन में 9 स्वर्णमयी मूर्तियों को नवनिर्मित वेदियों में सुरक्षात्मक तरीके से विराजमान किया गया एवं शिखर पर कलशारोहण और ध्वजस्थापना का कार्यक्रम भी सम्पन्न हुआ। अन्त में मुनिवर के मंगलप्रवचन के दौरान मन्दिर कमेटी व समाज द्वारा मुनिसंघ को शीतकालीन प्रवास के लिए निवेदन किया गया। इस प्रकार यह वेदी प्रतिष्ठा महोत्सव कार्यक्रम बहुत ही हर्षोल्लास पूर्वक सानन्द सम्पन्न हुआ।

पाठशाला की स्थापना:-

शीतकालीन प्रवास में मुनिश्री से सभी समाज के लोग प्रवचन एवं स्वाध्याय से धर्म लाभ ले रहे थे और गुरुवर के द्वारा आचार्यश्री विद्यासागर सर्वोदय ज्ञान पाठशाला भी प्रारम्भ हुई। जिसमें आस-पास के 25-30 मन्दिरों एवं चैत्यालयों के सारे जैन बच्चे पाठशाला में उपस्थित होकर जैन धर्म की शिक्षा हेतु जैनधर्म के रात्रिभोजन त्यागादि आठ नियमों को गुरुदेव से लेकर धन्य हो गये। सभी परिवारों में उत्साह एवं उमंग के वातावरण ने जगह-जगह से गुरुदेव के पधारने हेतु निवेदन आने पर भी गुरुदेव को जाने नहीं दिया। समाज के लोगों का कहना था कि 30 वर्ष के बाद इतनी उत्कृष्ट प्रभावना का अवसर मिला ऐसा सौभाग्य पुनः मिलना बहुत ही दुर्लभ है। जब भक्त के वश में भगवान हो जाते हैं तो गुरु भी क्यों न होंगे। इसी बीच दातारामगढ़ (सीकर)

की जैन समाज ने अपने नगर में पञ्चकल्याणक सम्पन्न करने हेतु गुरु सान्निध्य पाने हेतु नम्र निवेदन किया।

स्कूल बाल शिक्षा मन्दिर में मंगल उपदेश:-

शीतकालीन प्रवास के दौरान स्कूल बाल शिक्षा मन्दिर जयपुर में गुरुवर के मंगल प्रवचन सम्पन्न हुये। शीतकाल के प्रवास के पश्चात् मुनिवर का विहार 31 दिसम्बर को चूलगिरि की ओर हो गया। कुछ दिन के प्रवास के बाद खानिया जी नसियाँ, अम्बाबाड़ी, झोटवाड़ा, बैनाड़, खोरा, यादव खेड़ा, राधाकिशनपुरा, हिंगोनिया होते हुए रेनवाल (किशनगढ़) नगर में भव्य प्रवेश हुआ। वहाँ पर श्री विद्यासागर सर्वोदय ज्ञान पाठशाला द्वितीय वर्षीय कलश स्थापना का कार्यक्रम गुरुवर के सान्निध्य में सम्पन्न हुआ। पश्चात् गुरुवर का विहार श्रीमज्जिनेन्द्र पंचकल्याणक महोत्सव हेतु निवेदित दाँता वासियों के पुण्य के उदय से कुली ग्राम होते हुए दाँता नगर में बैंड-बाजों के साथ भव्य मंगल प्रवेश हुआ।

दाँता-रामगढ़ में मानस्तम्भ जिनबिम्ब पंच-कल्याणक महोत्सव:-

श्री 1008 चन्द्रप्रभु दिगम्बर जैन नसियाँजी दाँता तहसील दाँता-रामगढ़ जिला-सीकर (राज.) में अभूतपूर्व श्रीमज्जिनेन्द्र मानस्तम्भ जिनबिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा एवं भव्य जिनेन्द्र स्वर्णरथ शोभायात्रा महोत्सव, जिन धर्म प्रभावक अध्यात्म योगी गुरुवरश्री 108 आर्जवसागरजी महाराज के ससंघ पावन सान्निध्य में प्रतिष्ठाचार्य बा.ब्र. श्री जिनेश जी शास्त्री तथा सह-प्रतिष्ठाचार्य ब्र. नरेश भैया द्वारा दिनांक 20 फरवरी 2011 से 27 फरवरी 2011 तक मंत्रोच्चारण सहित सानन्द सम्पन्न हुआ। जिसमें 20 फरवरी को ध्वजारोहण के साथ पंचकल्याणक महोत्सव का शुभारम्भ हुआ। पश्चात् विशाल घट यात्रा नगर परिक्रमा कर पाण्डाल पहुँची। वहाँ वेदी शुद्धि, मण्डप शुद्धि आदि क्रियायें सम्पन्न हुयीं। दोपहर में सकलीकरण, इन्द्र प्रतिष्ठा, भक्तामर विधान आदि हुआ। 21 फरवरी को गर्भकल्याणक पूर्व रूप दिखाया

गया। 22 को गर्भ कल्याणक उत्तर रूप दर्शाया। 23 को प्रातः जन्मकल्याणक महोत्सव में तीर्थंकर के जन्म के पश्चात् उन्हें अपने परिवार देवों के साथ सौधर्म इन्द्र द्वारा ऐरावत हाथी पर सवार करके सुमेरु पर्वत पर ले जाया गया और वहाँ 1008 कलशों से जन्माभिषेक बड़े वैभव के साथ किया गया और दिल्ली से बुलवाये गये बड़े हेलीकाप्टर द्वारा आसमान से पुष्प वृष्टि श्री महावीर प्रसाद-राजकुमार काला कुबेर के द्वारा की गई और हेलीकाप्टर की नौ उड़ानों में हेलीकाप्टर में बैठकर अनेक लोगों ने पुष्पवृष्टि कर नगर परिक्रमा लगाई। यह जन्माभिषेक की शोभा यात्रा दाँता नगर वासियों के लिए चिर-स्मरणीय रहेगी। 24 तारीख को तपकल्याणक में गुरुवर द्वारा आदिकुमार की दीक्षा की क्रियायें सम्पन्न हुईं। 25 तारीख को केवलज्ञान कल्याणक पर सभी प्रतिमाओं पर सूर्यमंत्र द्वारा केवलज्ञान विधि गुरुवर आर्जवसागरजी महाराज के कर कमलों से सम्पन्न हुईं। पश्चात् समवशरण में गणधर के रूप में गुरुवर की मंगल वाणी खिरी। 26 तारीख को मोक्ष कल्याणक विधि सम्पन्न हुई। इस पंचकल्याणक में प्रतिदिन प्रातःकाल और दोपहर में गुरुवर की अमृतमयी देशना सबको मिलती रही और शाम को महाआरती व विद्वानों द्वारा प्रवचन और जयपुर, रेनवाल आदि पाठशालाओं के द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति आदि भी चलती रही। इस पंचकल्याणक में सौधर्म-इन्द्र के रूप में श्री निर्मलकुमार झांझरी डीमापुर वालों ने सशक्त भूमिका निभाई और भगवान के माता-पिता के रूप में कलकत्ता निवासी श्री कल्याणमलजी झांझरी एवं उनकी धर्मपत्नी को यह सौभाग्य प्राप्त हुआ।

26 तारीख को मध्याह्न में अहिंसा शाकाहार सम्मेलन रूप संगोष्ठी सम्पन्न हुयी। जिसमें तमिलनाडु की व्रती बहिनों ने मंगलाचरण किया। पश्चात् कवि चन्द्रसेन ने भी कुछ कविताओं के माध्यम से मंगल किया। पश्चात् इसमें पधारे विद्वत्गण जयपुर से डॉ.पी.सी जैन-मालवीय नगर, डॉ. शीतलचन्द्रजी

जैन-मानसरोवर, डॉ. बी.एल.बजाज-मालवीय नगर, डॉ. जगेशजी जैन-हिंगुनिया, डॉ. किरण गुप्ता-बापू नगर, डॉ. महेन्द्रजी जैन-जोबनेर, डॉ. नवीनजी जैन (योगाचार्य)-बरेली, डॉ. संजय जैन-पथरिया दमोह, डॉ.श्रीमती कला कासलीवाल, ब्र. जिनेशजी जैन जबलपुर, पं.महेशजी डीमापुर, श्री देवेन्द्रजी जैन कलकत्ता, पं. संजयजी जैन शास्त्री, छतरपुर, ब्र. नरेशजी जबलपुर से पधारे तथा डॉ. अजित जैन, डॉ. सुधीर जैन, इंजी. महेन्द्र जैन, डॉ. नरेन्द्र जैन भोपाल आदि सबने अपने आलेखों द्वारा अहिंसा एवं शाकाहार के गुणों के बारे में बताकर लोगों को प्रभावित किया। पश्चात् मुनिश्री ने भी शाकाहार के विभिन्न गुणों पर प्रकाश डालकर लोगों को लाभान्वित किया। जिसे सुनकर स्थानीय उपसरपंच श्री ओमेन्द्र सिंहजी (राजपूत) ने मांसाहार का त्याग कर दिया। डॉ. देवकुमारजी जैन, नई दिल्ली ने जैनागम संस्कार (तमिल भाषा में) का साहित्य विमोचन करवाया। भाव-विज्ञान (नया अंक) का विमोचन विद्वत्गणों के द्वारा किया गया। गोष्ठी में आये हुए अतिथियों का सत्कार श्री महावीर प्रसाद काला कलकत्ता वालों ने किया। इस प्रकार यह कार्यक्रम मंगलमय सम्पन्न हुआ।

27 फरवरी को पंचकल्याणक महोत्सव का अन्तिम दिन था, जिसमें श्रीजी की भव्य शोभायात्रा से सभी अन्यकार्यों को भूलकर भगवान के जय-जयकारों के नाद के साथ अपने आप को कृत-कृत्य अनुभव कर रहे थे। इससे दाँता नगर में एक अपूर्व धर्म प्रभावना हुई। पश्चात् मुनिश्री का मंगल प्रवचन हुआ। तदुपरान्त मानस्तम्भ में स्थित जिनबिम्बों का महामस्तकाभिषेक सम्पन्न हुआ। दिन में 2 बजे से मुनिश्री के सान्निध्य में तथा रात्रि 8 बजे से अनेक कवियों के बीच राष्ट्रीय कवि सम्मेलन का रोचक कार्यक्रम हुआ। कवि चन्द्रसेन आदि ने हम सभी के दृष्टिकोण को ध्यान में रखते हुये अपनी कविताओं को एक अनूठे ढंग से प्रस्तुत किया। इसी पंचकल्याणक के बीच मंदिर कमेटी के मंत्री श्री हरकचन्दजी के द्वारा पंचकल्याणक की बचत राशि

से आचार्य ज्ञानसागर व्रती आश्रम बनाने की घोषणा मुनिवर आर्जवसागरजी की मंगलप्रेरणा व आशीर्वाद से की। तथा इसका शिलान्यास का कार्यक्रम 7.3.2011 को गुरुवर के सान्निध्य में सम्पन्न हुआ। इस तरह पूज्य गुरुवरश्री आर्जवसागरजी के सान्निध्य में सम्पन्न हुआ यह पंचकल्याणक महोत्सव दाँता के इतिहास में कभी न भूलने वाला ऐतिहासिक महोत्सव बन गया।

गुरुवर ने दांता से विहार कर रामगढ़, कोछोर (जहाँ पर आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज की पूर्व अवस्था की माँ आर्यिका श्री समयमति माताजी की सल्लेखना हुई थी) से होते हुए जब 9 मार्च 2011 के राणोली नगर में पहुँचे तो वहाँ के जिनभक्तों द्वारा भक्ति से बाजों के साथ मंगल प्रवेश कराया गया और जिनदर्शन के उपरान्त गुरुवर का मंगल प्रवचन हुआ। जिसमें सभी ट्रस्टी गण व पूरी समाज ने गुरुवर के चरणों में श्रीफल चढ़ाकर अष्टाह्निका पर्व पर गुरुवर के चरणों में श्रीफल चढ़ाकर अष्टाह्निका पर्व पर गुरुवर के सान्निध्य प्राप्त हेतु नम्र निवेदन किया। यह वही राणोली नगर था जहाँ पर महाकवि आचार्यश्री ज्ञानसागरजी महाराज का भूरामल के रूप में जन्म हुआ था। उस जन्मगृह को एक स्मारक के रूप में बनाया गया है। उसका भी गुरुवर को अवलोकन कराया। मुनिवर के ग्राम प्रवेश के दिन से ही शाम को यहाँ ''आचार्य ज्ञानसागर सर्वोदय ज्ञान पाठशाला' का शुभारम्भ हुआ। जिसमें प्रथम दिन से ही लगभग चालीस बालक, बालिकाओं ने जैन धर्म के संस्कारों को अपने जीवन में उतारने का संकल्प लिया और इसके संचालन के लिए एक संकल्प कलश की स्थापना की गई। 12 मार्च को श्री दिगम्बर जैन चन्द्रप्रभु नसियाँजी में मुनिश्री के ससंघ सान्निध्य में भ.चन्द्रप्रभु का मोक्ष कल्याणक मनाया गया। इस अवसर पर श्री शान्तिनाथ विधान कर निर्वाण लाडू चढ़ाया गया।

12 से 19 मार्च तक बड़े मन्दिरजी में नन्दीश्वर द्वीप मण्डल विधान की पूजन संगीतमय प्रारम्भ हुई पूजा अर्चना स्थानीय पण्डित विनोदकुमारजी

जैन शास्त्री द्वारा कराई गई। अष्टाह्निका पर्व के इन आठ दिनों में प्रतिदिन मुनिश्री ने अपने मंगल उद्‌बोधन में जैनागम के गूढ़ रहस्यों पर सरल भाषा में प्रकाश डाला। 15 मार्च को गांव की एक प्रसिद्ध शिक्षण संस्था ''ग्रामीण बाल विकास उच्च माध्यमिक विद्यालय'' में मुनिश्री आर्जवसागरजी महाराज का मंगल उद्‌बोधन हुआ। जिसमें मुनिश्री ने विद्यार्थियों को जीवन की कल्याणकारी बातों से अवगत कराते हुए गुरु के प्रति विनयशीलता पालन तथा मांसाहार, शराब एवं तम्बाकू सेवन से होने वाली हानियों पर विस्तार से प्रकाश डाला एवं व्यसनों के त्याग करने का संकल्प कराया। 15 मार्च को ही समाज के प्रबंधकारिणी के सदस्यों ने मुनिश्री को अवगत कराया कि स्थानीय चन्द्रप्रभु नसियाँजी का यह शताब्दी वर्ष चल रहा है और इस उपलक्ष्य में उन्होंने विशेष कार्यक्रम आयोजित करने की आशा जताई; तो मुनिश्री ने ''पंचकल्याणक महामण्डल विधान एवं मानस्तम्भ का अभिषेक का कार्यक्रम आयोजित करने की सलाह देते हुए इसके लिए 20-21 मार्च का समय स्थानीय समाज को दिया। समाज के पदाधिकारियों ने इसे मुनिश्री के आशीर्वाद के रूप में लेते हुए आयोजन की तैयारियाँ प्रारम्भ कर दी और मात्र 4 दिन के अल्प समय में देश के कोने-कोने में कार्यक्रम की सूचना पहुँचा दी। इस अवसर पर 20 मार्च को जब पूरे गांववासी जैन समाज के लोग केसरिया वस्त्रों में सुसज्जित हो पंचकल्याणक मण्डल विधान की आराधना में लीन थे। टीकमगढ़ (म.प्र.) से पधारे विधानाचार्य पं. मनीषजी दिगम्बर ने शास्त्रोक्त विधि विधान से प्रातः ध्वजारोहण करवाया, ध्वज जब पूर्व दिशा की ओर लहराया तो मुनिश्री इसे अत्यन्त शुभ का सूचक बताते हुए सबके लिए मंगलकारी बताया। विधान में सौधर्म इन्द्र आदि प्रमुख पात्र बनकर सबने भगवान की भक्ति का लाभ लिया। कार्यक्रम के दूसरे दिन 21 मार्च को प्रातः काल विश्वशान्ति महायज्ञ के बाद मुनिश्री का ध्यान और योग पर मार्मिक उद्‌बोधन हुआ और इसके विभिन्न प्रकारों पर विस्तृत प्रकाश डालते हुए ध्यान एवं योगी क्रियाओं से होने वाले

लाभों को बताया। इस अवसर पर बाहर से पधारे विशिष्ट जनों में कीर्तिनगर जयपुर के जैन समाज के अध्यक्ष श्री महावीर प्रसादजी कासलीवाल, सूरत के उद्योगपति श्री नरेशकुमारजी ने मुनिवर को शास्त्र भेंट किया। महाराजश्री के गृहस्थ जीवन के लघु भ्राता डॉ. संजयजी जैन आदि पधारकर सम्मानित हुए। इस कार्यक्रम के तुरन्त बाद ही श्रीजी की भव्य रथयात्रा निकाली गई। जिसमें सैकड़ों लोगों ने भाग लेकर पूरे गाँव के वातावरण में भक्ति रस घोल दिया। गाँव के प्रमुख मार्गों से होती हुई रथ यात्रा वापिस नसियाँजी पहुँचने के पश्चात् नसियाँ जी में बने मानस्तम्भ के मनोज्ञ जिनबिम्बों के अभिषेक का कार्यक्रम आयोजित हुआ। पश्चात् गुरुवर ने मंगल उपदेश दिया। इस प्रकार यह कार्यक्रम मंगलमय सानन्द सम्पन्न हुआ। उसी दिन दोपहर में मुनिश्री ने ससंघ भव्योदय अतिशय क्षेत्र रेवासा की ओर मंगल विहार किया तो दिनभर से कार्यक्रम का आनन्द ले रहे समाज के प्रत्येक वर्ग की आँखों से अश्रुधारा बह निकली। नन्हें बालक एवं बालिकाओं जिन्हें मुनिश्री का सर्वाधिक वात्सल्य मिला था उनके आंसु तो रुकने का नाम ही नहीं ले रहे थे। सभी ने सजल नेत्रों के साथ मुनिश्री को रैवासा तक पहुँचाया।

गुरुवर का भ.सुमतिनाथ भगवान के इस अतिशय क्षेत्र का अवलोकन कर मन अत्यन्त प्रफुल्लित हुआ। दूसरे दिन आहारचर्या करके नगर सीकर की ओर विहार हो गया। सीकर में दीवानजी नसियाँ में दर्शन के उपरान्त गुरुवर का मंगल प्रवचन हुआ। जिससे समाज ने गुरुवर से प्रभावित हो करके मुनिवरश्री के चरणों में कुछ दिन ठहरने हेतु निवेदन भी किया। लेकिन मुनिश्री ने सुजानगढ़ और लाडनूँ की ओर विहार कर दिया।

लाडनूँ की धर्म प्रभावनाः-

सुजानगढ़ लाडँनू पहुँचने पर वहाँ की समाज ने बाजों एवं धर्म की जयघोष रूप प्रभावना के साथ गुरुवर का ससंघ अपने नगर में मंगल प्रवेश कराया। लाडनूँ में गुरुवर ने भूगर्भ से जिन मन्दिर सहित प्राप्त श्री अजितनाथ,

श्री शान्तिनाथ प्रतिमाओं का और भी प्राचीन प्रतिमाओं का दर्शनकर बड़े संतोष का अनुभव किया। इस तरफ विहार की सफलता प्राप्त हो गई। लोगों ने बतलाया कि यहाँ साधु बहुत कम आ पाते हैं। बीच में समाज का अभाव है और यहाँ से पाकिस्तान नजदीक पड़ता है यह रेगिस्तान है। गुरुवर का यह मंगल विहार कीर्तिनगर जयपुर वालों ने करवाया। समाज ने संत का समागम पाकर अब उनके चरणों को पकड़ लिया वे छोड़ने के लिए तैयार नहीं थे। प्रतिदिन के प्रवचन में पूरा मन्दिर भर जाता था। गुरुवर की अमृतमयी वाणी का लाभ उठाया और शाम को गुरुभक्ति एवं पाठशाला के प्रारम्भ माध्यम से धार्मिक संस्कार प्राप्त किये। एक दिन डॉ. जिनेन्द्र जैन ने लाडँनू में स्थित 'जैन विश्व भारती' का अवलोकन हेतु गुरुवर से निवेदन किया और वे सभी मुनिश्री आर्जवसागरजी महाराज को ससंघ वहाँ ले गये। वहाँ पहुँचकर प्रेक्षागृह का अवलोकन करते हुए हजारों शास्त्रों एवं प्राचीन प्रतिलिपियों को देखकर महाराज ने बहुत ही प्रशंसा की और वहीं पर स्थित स्थानकवासी श्वेताम्बर साधुओं ने गुरुवर का मंगल उपदेश बहुत ही उल्लासपूर्वक सुना। प्रमुख साध्वी ने तो गुरुवर को शास्त्र भेंट कर पुनः पधारने हेतु निवेदन भी किया। पुनः धर्मशाला में आकर गुरुवर ने समाज से कहा कि ऐसा श्वेताम्बरों जैसा स्थान, ऐसे संग्रहालय का कार्य दिगम्बर जैन समाज को भी अपनी सम्यक्त्व रीति से करना चाहिए ऐसा उपदेश दिया। लाडँनू बस स्टेण्ड पर स्थित श्री आदिनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर एवं सुखदेव आश्रम का दर्शन किया जो कि पूरा सफेद मार्बल से बना हुआ है। कुछ दिन प्रवास के उपरान्त गुरुवर का मंगल विहार डेह ग्राम से होते हुए एक दिन नागौर नगर में भव्य मंगल प्रवेश हुआ। इस विहार में लाडनूँ दि. जैन समाज ने अच्छा लाभ उठाया एवं वर्षा योग हेतु नम्र निवेदन भी किया। नागौर स्थित मन्दिरों का व ग्रंथालय का अवलोकन किया। यहाँ पर गुरुवर ने पहली बार साढ़े सोलह पंथी मन्दिर का दर्शन किया। जिसको बीसपंथी व तेरापंथी क्रिया वाले लोगों ने मिलकर बनाया। पश्चात् वहाँ से मूण्डवा, मेड़ता रोड, मेड़ता सिटी से होते हुए गुरुवर का भव्य मंगल

प्रवेश मुनि भक्तों की श्रेष्ठ भावना पूर्वक ब्यावर नगर में हुआ। यहाँ की सकल दि. जैन समाज ने गुरुवर का महावीर जयन्ती पर सान्निध्य प्राप्त हो इस हेतु श्रीफल भेंटकर नम्र निवेदन किया। ब्यावर नगर के कुछ दिनों के प्रवास में प्रवचनमाला एवं धार्मिक पाठशाला प्रारम्भकर धर्म की अपूर्व प्रभावना हुई।

ब्यावर नगर में महावीर जयंती सम्पन्नः-

महावीर जयन्ती के दिन प्रातःकाल श्रीजी की शोभा यात्रा बेण्ड बाजे एवं गुरुवर के ससंघ और अपार जनसमूह के साथ पूरे नगर में सभी मन्दिरों से होते हुए अपूर्व धर्मप्रभावना के साथ मेन बाजार पहुँची जहाँ पर रोड पर बने पाण्डाल में गुरुवर के मंगल प्रवचन हुए जिसमें लोगों को अहिंसा एवं जिनधर्म की रक्षा हेतु संकल्पित करवाया गया इस तरह यह प्रातः कालीन कार्यक्रम मंगलमय सम्पन्न हुआ। दोपहर में नसियाँ के प्रांगण में गुरुवर की 24वीं दीक्षा जयन्ती समारोह बहुत ही हर्षोल्लास पूर्वक मनाया गया जिसमें मंगलाचरण, चित्र अनावरण, दीपप्रज्वलन, पादप्रक्षालन, गुरुवर की पूजन, आरती एवं बाहर से पधारे अतिथियों का स्वागत सम्मान आदि कार्यक्रम सम्पन्न हुए। पश्चात् जिला परिषद् के पूर्व अध्यक्ष पुखराज पहाड़िया के विशेष निवेदन पर गुरुवर का मंगल विहार पीसांगन की ओर हो गया। जहाँ पर जैनियों के लिए 15 साल से कोई मुनि महाराजजी नहीं मिले थे ऐसे पीसांगन ग्राम में बाजों एवं बहुत जन सैलाव के साथ 22.4.11 तारीख को भव्य मंगल प्रवेश हुआ। प्रतिदिन के प्रवचन में जैन तो लाभ लेते ही थे लेकिन अन्य मतावलम्बियों ने भी गुरु प्रवचनों का बहुत लाभ लिया। शाम को पाठशाला भी चलती थी। पुखराज पहाड़िया ने अपने जीवन में घटित दो संस्मरणों में ये भी बतलाया कि कैसे मेरे द्वारा अपने छह माह के पोते को गोद में रख थोड़ी देर तक हाथों से पकड़े रहने के कारण जिसका शरीर नीला पड़ गया था तब डॉक्टर के द्वारा यह कहे जाने पर कि इसका कारण आपकी तम्बाखू सेवन है तब मैंने आजीवन तम्बाखू का त्याग कर दिया था। तथा एक बफर सिस्टम में केटरिंग के भोजन को परोसने वाले परिचित चमार को देखकर कैसे मैंने आजीवन बफर सिस्टम

और केटरिंग के भोजन का भी त्याग कर दिया था। फिर दो दिन प्रवास के पश्चात् गुरुवर का मंगल विहार सराधना, नारेली (ज्ञानोदय तीर्थ) तथा बीर होते हुए नसीराबाद की ओर हो गया। जहाँ पर महाकवि आचार्यश्री ज्ञानसागरजी महाराज को आचार्य पद मिला था और वहीं पर जिन्होंने आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज को आचार्य पद दिया और एवं वयोवृद्ध आ.ज्ञानसागरजी ने जहाँ समाधि (सल्लेखना) ली थी ऐसे नसीराबाद नगर में गुरुवर का मंगल प्रवेश 29.4.11 को बाजों एवं जय-जयकारों के साथ सम्पन्न हुआ।

नसीराबाद में अक्षय तृतीया:-

गुरुवर के मंगलप्रवचन के दौरान समाज के लोगों ने ग्रीष्मकालीन प्रवास हेतु श्रीफल भेंट कर नम्र निवेदन किया। जहाँ दिनांक 8.5.11 को अक्षयतृतीया पर्व गुरुवर के मंगल ससंघ सान्निध्य में हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। जिसमें भोपाल से पधारे गुरुभक्तों के समक्ष कुंथीलाल गदिया आदि परिवार वालों ने भाव विज्ञान सदस्यता प्राप्त करते हुए भाव विज्ञान पत्रिका के नवीन अंक का विमोचन किया। पश्चात् गुरुवर के मंगल प्रवचन आदिनाथ के जीवनवृत्त पर सम्पन्न हुये और प्रतिदिन प्रवचन की शृंखला, दोपहर में स्वाध्याय एवं शाम को धर्म संस्कार की कक्षायें चलीं। श्री विद्यासागर सर्वोदय ज्ञान पाठशाला की स्थापना भी करवाई। 31 मई 2011 को सेठजी नसियाँजी में विराजमान, मूलनायक श्री 1008 शान्तिनाथ भगवान के गर्भ, तप एवं मोक्ष कल्याणक का आयोजन मुनिश्री आर्जवसागरजी महाराज ससंघ के सान्निध्य में अत्यन्त हर्षोल्लास पूर्वक शान्तिनाथ विधान पूजन के साथ सम्पन्न हुआ।

आचार्य ज्ञानसागरजी का समाधि दिवस:-

1 जून 2011 को गुरु नाम गुरु महाकवि आचार्यश्री ज्ञानसागरजी महाराज का भव्य समाधि दिवस गुरुवर आर्जवसागरजी के ससंघ सान्निध्य में बड़े हर्षोल्लास पूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर प्रातः स्थानीय समाज के

साथ विभिन्न नगरों की जैन पाठशालाओं के विद्यार्थियों ने मुनिश्री के सान्निध्य में आचार्य ज्ञानसागर महाराज के समाधि स्थल से सल्लेखना स्थल तक प्रभातफेरी एक बड़े जुलूस के रूप में निकाली। देश के विभिन्न स्थानों से पधारे विद्वानों ने एवं वक्ताओं ने इस कार्यक्रम में महाकवि आचार्यश्री ज्ञानसागरजी महाराज के जीवन के तथा आचार्य विद्यासागरजी महाराज के साथ गुरु-शिष्य संबंधित अनेक रोचक संस्मरण प्रसंगों से श्रोताओं को सुनाकर भाव विभोर किया। इस अवसर पर मध्याह्न में पाठशाला सम्मेलन आयोजित किया गया। जिसमे रोड पर बने विशाल पाण्डाल में विभिन्न नगर जैसे-रेनवाल, जयपुर, जोबनेर, अलवर आदि 15-20 पाठशालाओं के बालक-बालिकाओं ने धार्मिक उत्कृष्ट मनमोहक कार्यक्रमों नाटक आदि का प्रस्तुतीकरण किया। पश्चात् गुरु महाराज ने अपने मंगल प्रवचनों में आचार्य ज्ञानसागरजी महाराज के मंगलमय जीवन वृत्त एवं संस्कार के महत्त्व के माध्यम से उपस्थित जनसमूह को सतत् धर्ममार्ग पर चलने की प्रेरणा दी। इस प्रकार यह समाधि दिवस समारोह कभी नहीं भूलने वाला एक ऐतिहासिक महोत्सव बन गया।

पश्चात् गुरुवर का मंगल विहार हो गया। देरांठू ग्राम पर गुरुवर का आगमन हुआ। बहुत दिनों से मुनियों का सान्निध्य प्राप्त न होने से समाज के लोगों में अपूर्व उत्साह था। 5-6 दिन के प्रवास के पश्चात् सानोद, मोराझड़ी, मण्डावरिया, लम्बा, झाड़ली, अनियारा खुर्द, कुवाड़ा बुजर्ग- (जहाँ पर 30 साल से महाराज नहीं आये थे) बुधारा (अतिशय क्षेत्र) से होते हुए 23.6.11 तारीख को टोडारायसिंह में बाजों एवं अपार जन समूह के साथ भव्य मंगलप्रवेश हुआ। पहाड़ पर दर्शन, प्रवचन आदि के माध्यम से धर्मप्रभावना की और समाज के लोगों ने चातुर्मास हेतु श्रीफल भेंटकर नम्र निवेदन किया ओर अल्प अवधि में धार्मिक पाठशाला भी खुलवाई। पश्चात् गुरुवर का मंगल विहार सांखना अतिशय क्षेत्र नगर फार्ट से होते नैनवाँ नगर में भव्य मंगल प्रवेश हुआ। यहाँ पर नौ मन्दिर हैं। गुरुवर का बड़े मन्दिर में प्रवास रहा और

यहाँ पर कोटा व रामगंजमंडी से समाज के लोगों ने गुरुवर के चरणों में अपने नगर में इस बार भव्य वर्षायोग सम्पन्न हो इस भावना से श्रीफल भेंटकर निवेदन किया। दो-तीन दिनों तक वहाँ पर धर्म प्रभावना के पश्चात वहाँ से विहार कर दिया। पश्चात् देई, पिप्लाई, खरकड़, मायाजा से होते हुए केशवराय पाटन अतिशय क्षेत्र पर मंगल प्रवेश हुआ। नदी के किनारे स्थित श्री मुनि सुव्रतनाथ भगवान के इस प्रसिद्ध क्षेत्र का दर्शन किया। आहार चर्या के पश्चात् दोपहर में विहार कर दिया।

कोटा नगर में भव्य मंगल प्रवेश:-

कोटा महानगर में भव्य मंगल प्रवेश हुआ। कोटा में स्थित रिद्धि-सिद्धि नगर, वल्लभ नगर, विज्ञान नगर का दर्शन करते हुए भारी जन समूह द्वारा दादाबाड़ी में बाजों के साथ गुरुवर के ससंघ मंगल प्रवेश कराया गया। जिन दर्शन पश्चात् गुरुवर श्री 108 आर्जवसागरजी का मंगल प्रवचन हुआ। जिसमें पूर्ण कमेटी के लोगों एवं सकल दि. जैन समाज कोटा द्वारा चातुर्मास हेतु श्रीफल भेंट किये गये लेकिन दो दिन रहकर प्रवचन, चर्या आदि से प्रभावना कर विहार हो गया।

रामगंजमंडी में भव्य चातुर्मास हेतु मंगलप्रवेश:-

महावीर नगर, आर.के.पुरम्, मोड़क होते हुए रामगंजमंडी में 18.7.11 तारीख को प्रातः 7:30 बजे बेंड बाजों के साथ मुनिवर आर्जवसागरजी का ससंघ भव्य मंगल प्रवेश हुआ। जिसमें जुलूस के रूप में महिलायें केसरिया वस्त्र पहने मंगल कलश लेकर चल रहीं थीं। पुरुष वर्ग श्वेत वेशभूषा में ध्वज लेकर चल रहे थे। जगह-जगह पर मुनिश्री का पादप्रक्षालन एवं आरती की गई। 51 स्वागत द्वार बनाये गये बड़े उल्लास और उमंग के साथ मुनिश्री के साथ यह विशाल जुलूस नगर की परिक्रमा करता हुआ प्रातः 8:30 बजे श्री शान्तिनाथ दिगम्बर जैन मन्दिरजी में पहुँचा। जिनदर्शन के उपरान्त गुरुवर ससंघ मंचासीन हुये। स्थानीय महिला मण्डल

द्वारा मंगलाचरण किया गया। चित्र-अनावरण, दीप प्रज्वलन के पश्चात् गुरुवर का मंगल उद्‌बोधन हुआ। कमेटी व समाज द्वारा चातुर्मास हेतु गुरुवर के चरणों में श्रीफल भेंट किये गये।

वर्षायोग स्थापना व कार्यक्रमः-

दिनांक 20.7.11 को प्रातः 6 बजे मुनिश्री का ससंघ बैंड बाजों के साथ 1 कि.मी. दूर पर स्थित श्री शान्तिनाथ दि. जैन नसियाँजी में भव्य मंगल पदार्पण हुआ। चातुर्मास कलश की स्थापना का कार्यक्रम यहीं पर सम्पन्न हुआ। जिसमें प्रमुख कलश की स्थापना का सौभाग्य श्री आचार्य विद्यासागर धर्म प्रभावना संघ जयपुर वालों ने प्राप्त किया। मुनिश्री के मंगल प्रवचन प्रतिदिन प्रातः 8:30 बजे होते थे। दोपहर में 3:30 बजे रत्नकरण्डक श्रावकाचार आदि की कक्षायें लगीं और सायंकाल में गुरु भक्ति एवं पाठशाला के बच्चों को स्तोत्र स्तुति, पाठ के द्वारा ज्ञानार्जन कराया जा रहा था। मोक्षसप्तमी निर्वाण लाडू चढ़ाकर भ. पार्श्वनाथ का मोक्षकल्याणक महोत्सव मनाया गया। दिनांक 13.8.11 से 13.9.11 तक 32 दिवसीय षोडसकारण महापर्व व्रत महोत्सव प्रारम्भ हुआ। जिसमें करीब 80-90 लोगों ने षोडसकारण व्रत करके तीर्थंकर प्रकृति का बंध कर सद्‌गति पाने के लिए उत्सुक रहे। षोडसकारण व्रत महोत्सव में मंगलकलश की स्थापना श्रीमान् स्व.अनन्तकुमारजी बागड़िया परिवार में श्री चक्रेशकुमार एवं आदित्यकुमार बागड़िया ने की। इसी परिवार ने पूर्व में श्री शान्तिनाथ दिगम्बर जैन नसियाँजी की तीनों वेदियाँ तथा उसमें श्रीजी विराजमान किये तथा एवं ध्वजारोहण भी इसी परिवार ने कराकर अपने चंचल लक्ष्मी का उपयोग किया था।

दिनांक 2.9.11 से 11.9.11 तक दशलक्षण पर्व में अनेक प्रदेशों से आये श्रावकों ने तथा स्थानीय श्रावकों ने श्रावक साधना संस्कार शिविर में भाग लेकर धर्मामृत का पान किया। दशलक्षण कलश की स्थापना का सौभाग्य श्री अमरकुमार जैन (प्रोफेसर) परिवार को मिला। बहुत ही सरल स्वभाव वाले

ऐसे गुरुवर को पाकर रामगंजमंडी वाले बहुत हर्षित होते थे। जैसा नाम आचार्यश्री ने रखा उसे गुरुवर ने सार्थक करके दिखा दिया।

समवसरण महामण्डल विधानः-

पूज्य गुरुश्री आर्जवसागरजी महाराज ससंघ के पावन सान्निध्य में नसियाँ में दिनांक 25 से 30 सितम्बर 2011 तक श्री समवशरण महामण्डल विधान का भव्य आयोजन किया गया। जिसमें स्थानीय श्रावकों के साथ भारत के अनेक प्रान्तों से तथा आस-पास के लगभग 30-40 नगरों से पधारे नर-नारियों ने इन्द्र-इन्द्राणि बनकर प्रभु की अर्चना करके सातिशय परम पुण्य का अर्जन किया। यह विधान श्रीमान् पुष्पेन्द्रकुमार शिखरचन्द, कैलाशचन्द्र टोंग्या परिवार रामगंजमंडी की ओर से कराया गया। इस विधान को अशोक नगर से पधारे ब्र. पंकज जी, पं. जयकुमारजी ललितपुर, पं. महावीरकुमारजी जैन भवानीमण्डी ने अपने निर्देशन में सम्पन्न कराया था। नित्य संगीतमय पूजन के साथ सैकड़ों भक्तजन भाव विभोर हो जाते थे। समवसरण की रचना मात्र दो दिन में की गई। देखकर ऐसा लगा कि वास्तव में साक्षात् जिनेन्द्र देव भगवान का समवसरण ही आ गया हो। विधान समापन के बाद मुनिश्री के सान्निध्य में विशाल भव्य रथयात्रा का आयोजन हुआ। जुलूस पूरे नगर में भ्रमण करते हुए श्री शान्तिनाथ दि. जैन मन्दिर में पहुँचा। मुनिश्री के आशीर्वचन के साथ विधान का समापन हुआ। मुनिश्री के चातुर्मास से नगर में चारों ओर अपूर्व धर्ममय वातावरण हो रहा था।

1 अक्टूबर 2011 को मुनिश्री के सान्निध्य में राजस्थान का चतुर्थ ''धार्मिक पाठशाला सम्मेलन'' का आयोजन किया गया जिसमें नसीराबाद, जयपुर, किशनगढ़, रेनवाल, रावतभाटा, बौरावद, रामगंजमंडी आदि की अनेक पाठशालाओं के बालक-बालिकाओं ने रंगारंग सांस्कृतिक, धार्मिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये। इन पाठशालाओं में प्रथम नसीराबाद की पाठशाला रामगंजमंडी द्वितीय तथा रावतभाटा तृतीय स्थान पर रहे। सभी पाठशालाओं

का समाज की ओर से सम्मान किया गया, मोमेन्टो वितरित किये गये एवं दिल्ली वालों की ओर से भी यात्रासंघ द्वारा सभी पाठशालाओं को पुरस्कार दिये गये।

2 अक्टूबर 2011 को मुनि श्री 108 आर्जवसागरजी महाराज के ससंघ सान्निध्य में 'धार्मिक कवि सम्मेलन'' आयोजित किया गया। जिसमें कई स्थानीय तथा बाहर से पधारे महिला पुरुषों ने स्वरचित काव्यों का पाठ किया गया। भोपाल से पधारे पं. लालचंद राकेश एवं श्रीपाल दिवा ने भी कविताएँ प्रस्तुत की और मुनिश्री ने भी अपनी कवितायें सुनाईं। सभी कवियों को समाज की ओर से सम्मानित किया गया।

16 अक्टूबर 2011 को ''अहिंसा सम्मेलन'' का कार्यक्रम किया गया जिसमें विश्व हिन्दु परिषद् के अंतराष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्रीमान् हुकमचंदजी सांवला इन्दौर ने अपने अहिंसा के सम्बंध में उद्‌गार प्रस्तुत कर सबके मन को आश्चर्य चकित कर दिया। भारतीय जनता पार्टी कोटा जिला उपाध्यक्ष श्री वीरेन्द्रकुमार जैन, जयपुर से पधारे श्री डी.आर. जैन, तमिलनाडु से पधारे पं. श्री धन्यकुमार जैन एवं विद्वान् अजितदास जैन चेन्नई ने भी अहिंसा विषय पर प्रकाश डाल अपने विचार प्रस्तुत किये। पश्चात् मुनिश्री ने भी अपने विचार प्रस्तुत करते हुये। प्रवचन में अहिंसा का महत्त्व बताया।

16 अक्टूबर से 25 अक्टूबर तक कण्ठ-पाठ प्रतियोगिता का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ जिसमें अनेक लोगों ने भाग लिया। 18 अक्टूबर को मुनिश्री 108 आर्जवसागरजी महाराज के सान्निध्य में भ.महावीर स्वामी का 2538 वाँ निर्वाण महोत्सव बड़े धूमधाम के साथ मनाया गया। प्रातःकाल जिनाभिषेक, पूजा, अर्चना श्रावकों के द्वारा की गई तथा अपार जनसमूह के बीच निर्वाण लाडू चढ़ाया गया। इसी दिन मुनिवर का चातुर्मास निष्ठापन का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। 30 अक्टूबर 2011 को पिच्छिका परिवर्तन समारोह अपार जनसमूह के बीच सम्पन्न हुआ जिसमें ग्वालियर, दमोह, जयपुर,

नसीराबाद, दांता रामगढ़, सिंगोली, संधारा, जोबनेर, तमिलनाडू, कोपरगाँव, भवानीमण्डी आदि स्थानों से कई श्रद्धालुओं ने भाग लिया। इसी दिन सिंगोली पाठशाला के बच्चों द्वारा मंगलाचरण किया गया उसके पश्चात् दीप प्रज्वलन एवं चित्र अनावरण अतिथियों द्वारा किया गया और कण्ठपाठ प्रतियोगिता में जिन्होंने प्रथम, द्वितीय, तृतीय स्थान पाने वालों को प्रतीक चिन्हों द्वारा पुरस्कारित किया गया। इसके उपरान्त रामगंजमंडी पाठशाला के बच्चों द्वारा धार्मिक प्रस्तुतियाँ दी गई एवं सकल दिगम्बर जैन समाज द्वारा मुनिश्री से क्षमायाचना की गई व समस्त दिगम्बर समाज द्वारा अष्टाह्निका पर्व, मुनिश्री के सान्निध्य में मनाने हेतु श्रीफल भेंट किये गये। पश्चात् पिच्छिका परिवर्तन में मुनिश्री आर्जवसागरजी महाराज ससंघ को श्री पुष्पेन्द्र टोंग्या, हुकुम सेठी, अमरकुमार, जीतमल आदि ने नवीन पिच्छिका प्रदान की और पुरानी पिच्छिका प्राप्त करने का सौभाग्य श्री निरंजन एवं अनिता डुंगरवाल रामगंजमंडी वालों को प्राप्त हुआ एवं अन्य लोगों ने भी संघस्थ पिच्छिका देने लेने सौभाग्य को प्राप्त किया।

पश्चात् मुनिवर का मंगल प्रवचन सम्पन्न हुआ और मंगलकलश स्थापना कर्त्ताओं को कलश प्रदान किया गया। इस प्रकार रामगंजमंडी में सन् 2011 को मंगल वर्षायोग सानन्द सम्पन्न हुआ।

चांदखेड़ी में 40 वाँ आचार्य पदारोहण दिवस मनाया:-

चातुर्मास के उपरान्त गुरुवर आर्जवसागरजी महाराज ससंघ का दिनांक 2 नवम्बर को रामगंजमंडी से विहार हो गया। झालावाड़ होते हुए 5 नवम्बर को गुरुवर का ससंघ चांदखेड़ी अतिशय क्षेत्र पर वाद्य ध्वनि के साथ मंगल प्रवेश हुआ। प्राचीन श्री आदिनाथ प्रभु का दर्शन कर मन गद्गद् हो गया। कमेटी के लोगों ने गुरुवर से शीतकालीन प्रवास हेतु निवेदन किया। संत शिरोमणि परम पूज्य आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज का 40वाँ आचार्य पदारोहण दिवस परम पूज्य आध्यात्मिक योगी मुनिश्री आर्जवसागरजी

महाराज के पावन सान्निध्य में मार्गशीर्ष कृष्ण 2 दिनांक 12.11.11 को श्री आदिनाथ दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र, चांदखेड़ी खानपुर में भव्य विशाल रूप में बड़े धूमधाम से मनाया गया। जिसमें कोटा, जयपुर, खानपुर, दिल्ली, पथरिया, उज्जैन, भोपाल, कराड़िया (भवानीमंडी) तथा धर्मप्रभावना संघ, रामगंजमंडी आदि कई स्थानों से पधारे हजारों भक्तजनों ने भाग लेकर पुण्य संचय किया। इस समारोह के मुख्य अतिथि खानपुर विधान सभा क्षेत्र के विधायक श्री अनिल जैन, अध्यक्षता श्री कैलाशचंद सर्राफ (कोटा) एवं विशिष्ट अतिथि उपखण्ड अधिकारी नारायणसिंह चारण थे। कार्यक्रम का शुभारम्भ मंगलाचरण से किया गया। पश्चात् खानपुर रामगंजमंडी आदि के पाठशालाओं के बच्चों ने धार्मिक प्रस्तुती दी। आचार्यश्री के जीवन चारित्र पर श्री अमरकुमार जैन प्रोफेसर रामगंजमंडी ने अपने उद्‌गार प्रस्तुत किये। पश्चात् पथरिया दिल्ली आदि बाहर से पधारे अतिथियों का सम्मान किया गया। अन्त में परम पूज्य मुनिवर श्री आर्जवसागरजी ने विशाल धर्मसभा को सम्बोधित करते हुए कहा है कि शिष्य बांस के समान होता है जब उसे गुरु का सान्निध्य मिल जाता है तो उसे वे बांसुरी बना देते हैं। जिस शिष्य पर गुरु की कृपा हो जाती है उसका मोक्षमार्ग प्रशस्त हो जाता है जीवन सफल हो जाता है। आज वर्तमान में मानव तो बढ़ रहे हैं लेकिन मानवता घटती जा रही है। मुनिश्री ने कहा कि 40 वर्ष पूर्व राजस्थान की वसुन्धरा नसीराबाद (अजमेर) में आचार्यश्री ज्ञानसागरजी ने मुनिश्री विद्यासागरजी को आचार्य पद से सुशोभित किया और स्वयं नीचे उतरकर सामान्य मुनि के समान उन्हें नमोस्तु करके निवेदन किया कि ''मैं सल्लेखना पूर्वक समाधिमरण धारण करना चाहता हूँ मुझे अनुग्रहीत करें''। यह पहली घटना जब किसी आचार्य ने समाधिमरण संकल्प लेने से पूर्व साक्षात् विनय पूर्वक अपने शिष्य को आचार्य पद दिया। उस समय ऐसे पावन दृश्य को देखकर सभी की आंखें आसुओं से भर गईं। आचार्यश्री ने अहिंसा का शंखनाद पूरे भारत में किया है। आज आचार्यश्री के

हजारों शिष्य-शिष्यायें भारत के कोने-कोने में जैन धर्म की प्रभावना करके जिओ और जीने दो का पावन संदेश दे रहे हैं। सभी ने गुरुवर का सम्यक्तव पूर्वक पावन उपदेश सुनकर प्रसन्न चित्त हो पुनः शीतकालीन प्रवास हेतु कमेटी के लोगों ने निवेदन किया। इस प्रकार यह 40 वां आचार्य पदारोहण दिवस समारोह सानंद सम्पन्न हुआ। पश्चात् कुछ दिन के प्रवास के बाद वहाँ से गुरुवर का विहार झालरापाटन की ओर हो गया। झालरापाटन में प्राचीन मंदिर का दर्शन किया। पश्चात् मंगल प्रवचन हुआ और आहारचर्या भी वहीं पर हुई। तदुपरान्त झालरावाड़ रोड और संधारा से होते हुए दिनांक 21.11.11 को गुरुवर अतिशय क्षेत्र कैथुली पर पहुँचे।

प्राचीन प्रतिमा श्री पार्श्वनाथ भगवान का दर्शन कर आहार चर्या वहीं पर सम्पन्न हुईं। पश्चात् चेचर, बड़ोदिया, रावतभाटा, श्रीपुरा, बोराव, सिंगोनियाँ आदि गाँव से होते हुए गुरुवर का ससंघ बिजोलियाँ क्षेत्र पर मंगल प्रवेश हुआ। कुछ दिन के प्रवास के उपरान्त गुरुवर ने सलावाटिया, आरोली, टुक्रैई, कोटोन्दा, पारसोली आदि से होते हुए चित्तौड़गढ़ में मंगल प्रवेश किया। यह विहार रामगंजमंडी वालों ने करवाया। चित्तौड़गढ़ में कुछ दिनों का प्रवास रहा।

कीर्तिस्तम्भ चित्तौड़गढ़ किला का दर्शनः-

प्रतिदिन मंगल प्रवचन के माध्यम से धर्म प्रभावना की और एक दिन शास्त्री नगर होते हुए चित्तौड़गढ़ में किला पर स्थित जिनालय दर्शन हेतु गुरुवर ससंघ एवं समाज के लोगों के साथ किले पर पहुँचे। विश्व प्रसिद्ध कीर्तिस्तम्भ का दर्शन किया। जिस पर दिगम्बर मुद्रा में श्री आदिनाथ भगवान एवं 1008 प्रतिमायें उकेरी हुई थीं। उसके पास ही बने श्री मल्लिनाथ भगवान दिगम्बर जैन मन्दिर जो कि बहुत प्राचीन कलाओं से निर्मित किला का दर्शन करके मन प्रसन्न हो गया। पश्चात् वहाँ की कमेटी के लोगों द्वारा शीतकालीन प्रवास हेतु नम्र निवेदन होते हुए भी गुरुवर का मंगल विहार भादसोड़ा, मंगलवाड़ा,

सालेड़ा (अतिशय क्षेत्र) होते हुए भीण्डर नगर में मंगल प्रवेश हुआ। वहाँ पर समाज के लोगों ने शीतकालीन प्रवास हेतु श्रीफल भेंटकर नम्र निवेदन किया। प्रतिदिन प्रातः काल सम्यक्ध्यान पर मंगल प्रवचन हुआ। दोपहर में स्वाध्याय एवं शाम को आचार्य भक्ति, आरती एवं पाठशाला के माध्यम से धर्म प्रभावना हुई। करीब एक महीने के वास्तव्य के उपरान्त गुरुवर का मंगल विहार उदयपुर की ओर हो गया।

उदयपुर में कलशारोहण सम्पन्नः-

उदयपुर अशोक नगर में गुरुवर मुनिश्री आर्जवसागरजी की मंगल आगवानी बाजों एवं अपार जन समूह के जय-जयकारों के साथ हुई। घर-घर के सामने गुरुवर के पादप्रक्षालन एवं आरती उतारी। जिनमन्दिर के दर्शन के पश्चात् मुनिश्री का मंगल उद्बोधन हुआ। पश्चात् समाज के लोगों ने मुनिश्री का वास्तव्य बहुत दिनों तक रहे इस भावना से श्रीफल भेंट किये। फरवरी 2012 को पंचकल्याणक विधान एवं नवीन शिखर पर कलशारोहण एवं ध्वज स्थापना का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। जिसमें महिलाओं ने घटयात्रा में अधिक संख्या में भाग लिया। ध्वजारोहण पूर्वक कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ। बहुत लोगों ने इस कार्यक्रम में सौधर्म इन्द्रादि पात्र बनकर प्रभु की भक्ति करके सातिशय पुण्यार्जन प्राप्त किया। मण्डल पर मंगल कलश स्थापना पूर्वक विधान प्रारम्भ हुआ। पश्चात् गुरुवर के मंगल प्रवचन हुये और अन्त में श्रीजी की शोभा यात्रा विशाल जुलूस के रूप में सम्पन्न हुई एवं नवीन शिखर पर कलश स्थापना श्री अनिल जी ठोलिया परिवार एवं ध्वज स्थापना श्री शान्तिलाल टाया परिवार ने की तथा ''सम्यग्ज्ञान शिक्षण शिविर'' भी सम्पन्न हुआ था। धार्मिक पाठशाला भी प्रारम्भ हुई प्राकृत भाषा की कक्षा भी चली जिसमें मुनिश्री आर्जवसागर जो ससंघ के साथ पं. उदयचन्द जी शास्त्री, ज्योतिबाबू शास्त्री और कुन्थुकुमार आदि ने भी भाग लिया। फिर गुरुवर का विहार नगर के सभी मंदिरों के लिए हुआ, मुक्ताकाश समवसरण के परिसर आहार चर्या भी सम्पन्न हुई।

माउण्ट आबू दर्शनः-

पश्चात् गुरुवर ने सर्वऋतु विलास आदि आजु-बाजू के कॉलोनी में विहार किया तत्पश्चात् गुरुवर विहार करते हुए सिरोही से होते हुए बीच में स्थित श्वेताम्बर के पावापुरी पहुँचे एवं वहाँ पर निर्मित गौशाला का अवलोकन किया। फिर भेरुतारक से सीढ़ियाँ चढ़कर माउण्ट आबू पहुँचे। यह वहाँ का सबसे ऊँचा स्थल माना जाता है। वहाँ पर स्थित दिगम्बर जैन काँच के मन्दिर में भ.आदिनाथ एवं भ.कुन्थुनाथ का मन्दिर आदि तीन दि.जैन मंदिरों का दर्शन किया। तीन दिनों के प्रवास के उपरान्त गुरुवर ने ससंघ मंगल विहार आबू रोड से विहार करते हुए गुजरात प्रान्त में मंगल प्रवेश किया।

गिरनार यात्राः-

दाँता गाँव पहुँचकर प्राचीन आदिनाथ की प्रतिमा का दर्शन किया। पश्चात् विहार करते हुए सिद्धक्षेत्र तारंगाजी पर मंगल प्रवेश हुआ। यहाँ से वरांग, वरदत्त सायरदत्तादि साढ़े तीन करोड़ मुनि मोक्ष गये हैं। तलहटी में स्थित मूलनायक श्री संभवनाथ भगवान् आदि 20 मन्दिरों का और सिद्ध शिला व कोटिशिला नामक दोनों पहाड़ियों का दर्शन किया और तीन-चार गुफाओं का भी अवलोकन किया ये गुफायें मुनियों के ध्यान से प्रसिद्ध हैं। इस यात्रा में उदयपुर वाले राहुल जैन (बाकलीवाल) आदि श्रावकगण साथ में थे। पश्चात् गुजरात वालों के नम्रनिवेदन से गुरुवर उमता, महेसाणा, राजकोट से होते हुए फिर सि.क्षे. गिरनार की ओर आगे बढ़े और जूनागढ़ में बड़ी धूमधाम के साथ मंगलप्रवेश हुआ।

पच्चीसवाँ दीक्षा (रजत जयन्ती) दिवस मनाया गया सिद्ध क्षेत्र गिरनार में:-

वहाँ महावीर जयन्ती के सुअवसर पर गुरुवर आर्जवसागरजी महाराज के पच्चीसवें दीक्षा (रजत जयन्ती) वर्ष के उपलक्ष्य में श्री 1008 नेमिनाथ भगवान के त्रय कल्याणक स्थली ऊर्जयन्तगिरि (गिरनार) परिसर

जूनागढ़ में मुनिसंघ के सान्निध्य में भव्य आयोजन के साथ भ. महावीर की जन्म-जयन्ती एवं गुरुवर की 25वीं दीक्षा जयन्ती का कार्यक्रम अप्रैल 4 और 5 को भव्यता के साथ रखा गया। जिसमें 5 तारीख को प्रातः गुरुवर का संघ के साथ जिनालय दर्शन पूर्वक वाद्य घोष के साथ मंच की ओर पदार्पण हुआ। पश्चात् भ. महावीर स्वामी एवं आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज के चित्र अनावरण एवं दीप प्रज्वलन किया गया। ब्र. बहिनों द्वारा मंगलाचरण किया गया। गुरुवर आर्जवसागरजी का पादप्रक्षालन श्रीमान् नरेश भाई एवं कनुभाई सूरत के साथ श्री भरत जैन एवं अरविन्द जैन दमोह वालों ने किया। पश्चात् भ.महावीर की एवं आचार्यश्री व गुरुवर की पूजन बड़ी भक्ति भाव से की गयी। 25 भव्यों के द्वारा मुनिवरश्री 108 आर्जवसागरजी के लिए शास्त्र दान दिये गये। पश्चात् बाहर से पधारे अतिथियों का सम्मान किया गया। विद्वत् उद्बोधन के रूप में मुनिश्री द्वारा हुई पच्चीस वर्ष की प्रभावना के संदर्भ डॉ. अजित जैन भोपाल ने अपने पवित्र भाव व्यक्त किये। पच्चीसवें दीक्षा-वर्ष (रजत जयन्ती वर्ष) पर पच्चीस धार्मिक कार्य के संकल्प करने वालों के सम्मान की बात कही। तदुपरान्त 25 दीपकों से पूज्य गुरुवर की आरती की गयी। इस महोत्सव में अनेक प्रदेश (गुजरात, राजस्थान, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, तमिलनाडु) के लोगों ने पुण्य लाभ लिया। गुरुवर से 25 वर्षों में हुए धर्म प्रभावना के विशेष कार्यों के सम्बन्ध में डॉ.अजित जैन ने मंच से जनता के सामने भाव विभोर करने वाले पावन प्रसंग रखे और लोगों ने करतल ध्वनि से इसकी सराहना की। तदुपरान्त मुनिभक्त लोगों ने 25वें रजत वर्ष के उपलक्ष्य में 25 शुभ कार्य करने के लिए मुनिश्री से अपना भाव व्यक्त कर आशीर्वाद लिया। श्री कमल काला जयपुर की ओर से मन्दिरों के लिए अष्ट प्रतिहार्य, अष्टमंगल वितरित किये गये। किसी ने पच्चीस तरह के नियम लिये और किसी ने पच्चीस शास्त्र या भक्ति स्तोत्रों का याद करने (कण्ठपाठ करने का) और किसी ने 25 तरह के विधान करने का नियम लिया। अन्त में गुरुवर के प्रवचन

हुये जिसमें नेमि, राजुल, प्रद्युम्नकुमार, उदधि कुमारी इनके वैराग्य के प्रसंग में और गुरु उपकार व सच्चा जन्म कब होता है? आदि के बारे में उपदेश दिया और सायंकाल में तलहटी में स्थित बन्डीलाल धर्मशाला की ओर विहार कर दिया।

गिरनार की पहली वंदना:-

गुरुवर ससंघ अप्रैल 6 तारीख को प्रात: 6 बजे तलहटी से निकलकर ऊर्जयन्तगिरि (गिरनार) 5 वीं टोंक तक की वंदना हेतु निकले। दूर-दूर से आये हुए भक्तों के साथ पर्वत की वंदना बहुत सानन्द रूप से सम्पन्न हुई। गुरुवर ने यहाँ पर करीब डेढ़-दो महीने का ग्रीष्मकालीन प्रवास किया। बीच में एक बार वंदना के लिये पुलिस के प्रबन्ध के साथ गये थे। जिसमें पांचों टोंक एवं सहस्राम्र वन में स्थित भ. नेमिनाथ के दीक्षा एवं केवल ज्ञान कल्याणक के चरणों दर्शन कर वहाँ से उतरे और जिसमें उदयपुर के राहुल जैन आदि के साथ सूरत-अहमदाबाद, उदयपुर आदि से आये कई लोग साथ में वंदना करते रहे। परम रमणीय पर्वत आरावलियों व घने जंगल से सुशोभित गिरिराज गिरनार व ऊर्जयन्तगिरि से भ. नेमिनाथ सहित अनिरुद्ध कुमार, शम्भुकुमार और प्रद्युम्नकुमार आदि बहत्तर करोड़ सात सौ मुनियों ने निर्वाण मोक्ष पद प्राप्त किया है एवं जिस पर्वत का स्पर्श मात्र महापुण्य का कारण है। इस पवित्र वर्णन को गुरुवर ने नवीन कविता बनाकर उसमें बड़ा सुन्दर चित्रण किया एवं साम्यभावना, सामायिक पाठ की रचना की।

श्रुत पंचमी पर्व मनाया गया:-

ऐसे गिरनार पर्वत की तलहटी में बने बंडीलाल जी दिगम्बर जैन मन्दिर एवं धर्मशाला के अन्तर्गत दिगम्बर जैन मन्दिर के परिसर में दिनांक 26 मई 2012 को पूरे देश से पधारे लगभग 150 धर्मानुरागी की उपस्थिति में तथा प.पू. गुरुवरश्री 108 आर्जवसागरजी महाराज के सान्निध्य में श्रुतपञ्चमी महापर्व पर 'श्रुतस्कन्ध' महामण्डल विधान का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। इस

कार्यक्रम में दिल्ली से श्री लोकेशकुमार जी, सुशील गंगवाल पाण्डिचेरी, अजमेर से श्री अजयजी दनगसिया, जयपुर से श्री सुशीलजी पहाड़िया एवं पारस कासलीवाल, सूरत से श्री नरेशकुमार जी आदि, उदयपुर से श्री सुरेशचंदजी, पथरिया से श्रीमती मायादेवी एवं डॉ. संजय जैन, फुटेराकलाँ से श्री मनोजकुमारजी श्री राजेश जी, भोपाल से डॉ. सुधीर जैन, जूनागढ़ से श्री प्रदीपजी एवं श्री बंडीलाल दिगम्बर जैन धर्मशाला के ट्रस्टी श्री धनपालजी एवं श्री तेजस तलाटी भी उपस्थित थे। सभी ने मुनिवर के चरणों में श्रीफल भेंटकर आशीर्वाद प्राप्त किया। श्रुतस्कन्ध विधान के पश्चात् कार्यक्रम के प्रारम्भ में आचार्यश्री विद्यासागरजी एवं गुरुवर श्री आर्जवसागरजी महाराज के चित्रों का अनावरण किया गया और ज्ञान दीप प्रज्वलन किया गया। इस अवसर पर श्री दिगम्बर जैन समाज सूरत के पदाधिकारियों ने प.पू. गुरुवर आर्जवसागरजी को श्रीफल भेंटकर चातुर्मास हेतु सूरत की तरफ गमन करने का निवेदन किया। साथ ही दिगम्बर जैन मन्दिर बन्डीलाल के ट्रस्टी श्री धर्मपाल जी एवं तेजस तलाटी ने मुनिश्री से चातुर्मास का निवेदन किया। धर्म सभा का प्रारम्भ संघस्थ व्रतियों के मंगलाचरण के द्वारा हुआ और श्रावकों द्वारा मुनिसंघ को शास्त्र भेंट किये गये। तत्पश्चात् गुरुवर का मंगल प्रवचन हुआ।

चंद्रगुफा का दर्शनः-

27 मई को मुनिश्री ने गिरनारजी की वंदना करते हुए प्रथम टोंक पर दर्शन किए तथा वहीं धर्मशाला पर ठहरकर 28 मई को पांचों टोंकों की वंदना कर वहीं पर आहारचर्या सम्पन्न हुयीं और मध्याह्न में चन्द्रगुफा का भी दर्शन के साथ हर्षोल्लास, उत्साह एवं भक्ति पूर्वक पूर्ण वंदना की। इस प्रकार गिरनार सिद्धक्षेत्र की तीन वंदनायें सम्पन्न करके गुरुवर का ससंघ वहाँ से 30 तारीख को शत्रुंजय (पालिताना), की ओर मंगल विहार हो गया।

शत्रुंजय, भाव नगर की ओर विहारः-

पालीताना में नीचे मंदिर जी में और शत्रुंजय की पहाड़ी पर श्री 1008

शांतिनाथ भगवान के मंदिरजी में दर्शन किये। दो दिन की यात्रा पूर्ण करके पूज्य गुरुवर अतिशय क्षेत्र घोघा और भावनगर की और आगे बढ़े। समुद्र के तट पर स्थित घोघा क्षेत्र पर सहस्रकूट आदि के दर्शन किये समुद्र के किनारे ध्यान किया जहाज आदि देखा और क्षेत्र पर ही आहार चर्या आदि हुई फिर पुनः भाव नगर पहुँचे। भावनगर में सूरत आहुरानगर से कनुभाई, रमेशभाई, प्रकाशभाई, अश्विनभाई, पंकजभाई आदि कई भक्तगण के रूप में सूरत आहुरानगर में चातुर्मास हेतु निवेदन करने हेतु पहुँचे और भावात्मक निवेदन करके एवं श्रीफल भेंट करके ऐतिहासिक चातुर्मास कराने के भाव पूज्य गुरुवर के चरणों में प्रदर्शित किये। उसी के एक सप्ताह ठीक बाद आहुरानगर से मुख्य पदाधिकारियों के साथ एक बस भरकर पूज्य मुनिवर श्री को ससंघ चातुर्मास हेतु निवेदन करने आये। जहाँ पूज्य गुरुवर ने आहुरानगर वासियों को प्रसन्नातापूर्वक आशीर्वाद दिया तब भक्तजनों में खुशी की लहर आ गई और जय-जयकार की आवाज गूंजने लगी।

सूरत आहुरा नगर में भव्य मंगल प्रवेशः-

वहाँ से बड़ोदा के किनारे से होते हुए अंकलेश्वर, सजोद, ओलपाड से विहार करते हुये 6 जुलाई सुबह की मंगल बेला में सूरत शहर के आहुरानगर में पूज्य गुरुवर ससंघ का प्रवेश हुआ। यह प्रवेश का नजारा कुछ अलग ही था। दिनांक 8 जुलाई रविवार के शुभ दिन पूज्य महाराज जी ससंघ का रजत वर्षायोग मंगल कलश स्थापना समारोह बहुत भव्य रहा पूरे सूरत के श्रेष्ठीजन एवं श्रावक-श्राविकाओं से यह समारोह स्थली (राम पावन भूमि) भीड़ से उभर गई सूरत के इतिहास में शायद ऐसा भव्य समारोह कभी नहीं हुआ हो। जिसमें रजत वर्षायोग मंगल कलश स्थापना का सौभाग्य प्रथम रत्नत्रय कलश नरेश जी जैन सूरत (दिल्ली वाले) द्वितीय धर्म प्रभावना कलश जैन श्रीमती मंगलाबेन कचरालाल जी महेता परिवार एवं तृतीय वात्सल्य कलश जैन फोजमल जी कोदरलाल जी परिवार को प्राप्त हुआ पूरे चातुर्मास

स्थापना के भव्य कार्यक्रम का मंच संचालन बा.ब्र. श्री अनिल भैया (भोपाल) एवं भरत कोठारी द्वारा सम्पन्न हुआ। पूज्य मुनिवर के चातुर्मास के भव्य कार्यक्रमों की रूपरेखा सुनते ही धर्म प्रभावना की लहर पूरे सूरत में चारों और फैल गई।

शुरू से ही पूज्य गुरुवर का प्रवचन प्रतिदिन सुबह 8.30 से होता रहा जिसकी प्रभावना जोरदार रही जिस कारण रजत चातुर्मास कमेटी ने दिनांक 25 जुलाई भगवान पार्श्वनाथ मोक्ष कल्याणक से पूरे वर्षायोग हेतु भव्य विशाल पांडाल का निर्माण करवाया जिसमें भगवान पार्श्वनाथ मोक्ष कल्याणक बड़ी धूमधाम से मनाया गया। पूज्य गुरुवर को जैन संस्कृति का संवर्धन करना था, महाराज जी की सोच बहुत ऊँची थी उसी के फलस्वरूप नन्ने-मुन्ने बच्चों में संस्कार डालने हेतु दिनांक 29 जुलाई 2012 से आचार्य विद्यासागर सर्वोदय ज्ञान पाठशाला का उद्घाटन हुआ। जिसमें पाठशाला में एक साल के लिये अधिष्ठाता के रूप में मंगल कलश स्थापना का सौभाग्य जैन डाह्यालाल चुन्नीलाल महेता परिवार को प्राप्त हुआ। इस प्रोग्राम में बहुत भव्यता पाई और पहले दिन से ही 125 से 150 बच्चे धार्मिक शिक्षा हेतु आने लगे। पूज्य महाराज जी के जादू से बच्चे होनहारता प्रतिलक्षित होने लगी और धार्मिक ज्ञान-संस्कार का सिंचन हुआ जो पर्यूषण पर्व के सांस्कृतिक कार्यक्रमों में नजर आता रहा।

ज्ञातव्य रहे कि सन् 1997 में जब आचार्य प्रवर श्री विद्यासागर जी महाराज ससंघ सूरत नगर में आये थे तब उनके ही कर कमलों से आहुरा नगर के पञ्चकल्याणक में जिनालय के जिन बिम्बों की प्राण प्रतिष्ठा सम्पन्न हुई थी तथा मानस्तम्भ के 8 जिन बिम्बों की प्राण प्रतिष्ठा 2004 में भोपाल पञ्चकल्याणक में धर्मप्रभावक मुनि श्री आर्जवसागर जी महाराज के कर कमलों से सम्पन्न हुई थी।

पूज्य गुरुवर का प्रभाव और धर्म प्रभावना चारों दिशाओं में फैल रही

है। जिसके फल स्वरूप सूरत में पहली बार षोडसकारण व्रत में 250 धर्म प्रेमियों ने सम्मिलित होकर शील-संयम के साथ शुद्ध आहार से एक उपवास-एक एकाशन एवं कई लोगों ने एकाशन करके व्रत अंगीकार करके धर्म प्रभावना की। ऐसी प्रभावना यहाँ से परम पूज्य आचार्य श्री तक लेकर हर जगह चर्चा का विषय बन गई। पर्यूषण पर्व के पूर्व में ही आहुरा नगर, सूरत से करीब 55 लोगों ने डोंगरगढ़ जाकर प.पू. आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज का आशीर्वाद इस वर्षायोग की धर्मप्रभावना के लिए लिया था जिसके ही प्रभाव से ऐसी प्रभावना में चार चाँद लगे। यहाँ नजारा से यह प्रतीत होता है कि आहुरा नगर समवशरण में परिवर्तित हो गया हो। पूज्य मुनिवर की देशना का यह प्रभाव है। सुबह 6.00 बजे से अभिषेक और संगीतमय पूजाओं में विधानाचार्य श्रीमान भरतभाई महेता एवं निशा बहिन गांधी ने भी चार चांद लगा दिये। विधि विधान में ग्वालियर से पधारें हुये विधानाचार्य पं. श्री चन्द्रप्रकाश चन्दर जी से सम्पन्न होता रहा। उसके पश्चात् पूज्य गुरुवर की देशना श्रावक-श्राविकाओं को बड़ी प्रभावित करती रही है, साथ में पर्यूषण महापर्व में श्रावक साधना संस्कार शिविर में बहुत से लोग सम्मिलित होकर लाभ लेकर धन्य हुये। महाराज जी के प्रवचन कक्षा आदि से पूरे दिन का धार्मिक कार्यक्रम का लाभ मिला तथा ज्ञानवर्धक धर्ममय उपदेशों से भक्तों में त्याग की भावना बढ़ी। इस चातुर्मास ने पूज्य मुनिवर के भव्य चातुर्मास की गणना में स्थान ले लिया है।

अभूतपूर्व चातुर्मासः-

चेतन में चिंतन बिखराया, फूल चेतना का विकसाया।
खुशबु मजहब की बिखराते, गुरु आर्जवसागर जी को शीश झुकाते ।।
जिनगुण की नित्य प्रशंसा, जिन वचनों में करें न शंका ।
सम्यक् दर्शन दृढ़ है जिनका, नमन सदा गुरु को हम सबका ।।

देवाधिदेव शांतिनाथ भगवान की असीम अनुकम्पा से मुनि श्री

आर्जवसागर जी महाराज के प्रेरणा एवं पावन सानिध्य में, प्रतिष्ठाचार्य बाल ब्रह्मचारी अनिल भैया भोपाल के निर्देशन में दिव्य समवशरण महामण्डल विधान का भव्य आयोजन किया इसमें विशाल एवं आकर्षित भव्य समवशरण की रचना की गयी।

समवशरण उद्घाटनकर्ता श्रीमान नरेश भाई जैन, दिल्ली वालों ने किया। ध्वजारोहणकर्ता समाज के अध्यक्ष श्रीमान हर्षदभाई जैन मेहता ने किया। सौधर्म इन्द्र का सौभाग्य प्राप्त किया श्रीमान नरेश भाई रमीला बेन सूरत, कुबेर बने श्रीमान टीकमचंद मंजु गोधा, भरत चक्रवर्ती श्रीमान बाबूलाल लीना बेन कोठारी, महायज्ञ नायक रसीक भाई रंजन बेन गांधी आदि आदि अनेक इन्द्र-इन्द्राणी बनने का सौभाग्य प्राप्त किया। रात्रि में रोज महाआरती विशेष आकर्षण का केन्द्र रही इसमें पुण्यार्जक के निवास स्थान से धर्मरथ पर सवार होकर गाजे-बाजे के साथ पाण्डाल तक आते रात्रि के सांस्कृतिक कार्यक्रम में राजस्थान के श्री सुभाष जी द्वारा और महाराष्ट्र से पधारे श्रीमान राजेन्द्र उमरगा ने अद्भुत नाटक पेश किये।

मुनिश्री के सानिध्य में 20 ता. अक्टूबर को विशाल कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया यू तो कवि सम्मेलन रात्रि में ही होते हैं पर मुनिश्री का प्रभाव ऐसा रहा कि दिन में भी कवि सम्मेलन हुआ मंच का संचालन किया कवि श्री चन्द्रसेन जी भोपाल द्वारा और डॉ. नरेन्द्र जैन भोपाल, डॉ. अजित जैन, डॉ. सुधीर जैन, श्री लालचन्द्र राकेश भोपाल, अजय अहिंसा जबलपुर, योगीराज जी छतरपुर आदि अनेक कविवर इस सम्मेलन में उपस्थित थे।

21 अक्टूबर को पाठशाला सम्मेलन हुआ। परम पूज्य मुनिश्री का जहाँ भी चातुर्मास होता है वहाँ एक नई पाठशाला का उद्घाटन होता है इसी शृंखला में जगह-जगह से पाठशालायें आयीं थी प्रोग्राम देने के लिए उन सभी ने सांस्कृतिक धार्मिक प्रोग्राम दिये जिसमें प्रथम स्थान पर जयपुर की पाठशाला यहाँ से करीब 70 बच्चे 10 शिक्षिकायें आयी थी। द्वितीय स्थान पर

आहुरानगर सूरत की पाठशाला को मिला और तृतीय स्थान पर रेनवाल (किशनगढ़) पाठशाला को मिला।

26 अक्टूबर से कण्ठपाठ प्रतियोगिता प्रारम्भ हुआ। जिसमें बच्चों के लिए 5 विषय, बड़ों के लिए छः विषय रखे गये थे। और इस कण्ठपाठ प्रतियोगिता में 4 वर्ष के बच्चों से लेकर 60, 70 वर्ष की उम्र वाले वृद्ध लोगों ने तक भाग लिया करीब सभी मिलाकर 116 लोगों ने भाग लिया था। यह कण्ठपाठ भी एक आम्नाय नाम का स्वाध्याय है।

13 नवम्बर को दीपावली के शुभ अवसर पर भगवान महावीर के मोक्ष कल्याणक पूजन, आरती करते हुए हर्षोल्लास के साथ लाडू चढ़ाने के साथ वर्षायोग का निष्ठापन का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ और शाम को लोगों ने अपने गृहों में गणधर की पूजन के साथ दीपक जलाकर शुभमय दीपावली मनायी। बच्चों को पटाखे न फोड़ने का संकल्प दिया गया।

25 नवम्बर को पिच्छी परिवर्तन (संयम दिवस) हुआ। संयम धारण किये बिना कर्मों का क्षय नहीं किया जा सकता है। वर्षायोग समाप्ति पर संयम का उपकरण पिच्छी परिवर्तन का भव्य कार्यक्रम महत्वपूर्ण रहता है। इसमें त्रिशलादेवी महिला मण्डल आहुरा नगर द्वारा भजनों के साथ सांस्कृतिक कार्यक्रम के रूप में तथा आचार्य श्री विद्यासागर सर्वोदय ज्ञान पाठशाला के विद्यार्थियों द्वारा मंगलाचरण पूर्वक पिच्छिका परिवर्तन का कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ। इसमें नई पिच्छी मुनिश्री को देने का सौभाग्य प्राप्त किया श्री डी.आर. जैन जयपुर, श्रीमान नरेशभाई दिल्ली वाले, टीकमचंद गोधा सूरत और भूपेन्द्र भाई महेता सूरत इन्होनें अपने जीवन में संयम धारणकर मुनिश्री को नई पिच्छी भेंट की। मुनिश्री की पुरानी पिच्छी लेने का सौभाग्य प्राप्त किया नरेन्द्र भाई-अरुणा बेन महेता ने इन्होंने मुनिश्री से अणुव्रत ग्रहण कर अपने जीवन में संयम धारण किया। दूसरी पिच्छिका देने का सौभाग्य शैलेश भाई महेता को एवं लेने का सौभाग्य रमेश भाई दोशी को प्राप्त हुआ। इसी दिन कण्ठपाठ प्रतियोगिता

के इनाम वितरण में स्वर्ण प्रतीक (गोल्ड मेडल) दिये गये।

28 नवम्बर को मानस्तम्भ महामस्तकाभिषेक हुआ। परम पूज्य मुनिश्री आर्जवसागर महाराज के सानिध्य में मानस्तम्भ में स्थित विशाल प्रतिमाओं का अभिषेक कराने का सौभाग्य आहुरा नगर समाज को मिला। इन प्रतिमाओं का सूरी मंत्र श्री 2004 में मुनिश्री आर्जवसागर जी महाराज ने ही भोपाल में दिया था पंचकल्याणक के अंतर्गत। महामस्तकाभिषेक बड़ी धूमधाम से सम्पन्न हुआ। फिर 8 विशेष मूर्तियों की अभिषेक के लिये बोली लगाई गयी। बाकी रू. 11 हजार, रू. 5 हजार, 1100 रू. के कलश अवतरित दिये गये अडाजन क्षेत्र का कोई भी घर बाकी नहीं रहा जहाँ कलश न लिया गया हो। सभी ने महामस्तकाभिषेक अपूर्व आनन्द की प्राप्ति की। बचत राशि से विशाल धर्मशाला बनने का निर्णय कमेटी द्वारा लिया गया।

30 नवम्बर को मुनिश्री आर्जवसागर जी महाराज के सान्निध्य में आचार्य विद्यासागरजी महाराज का 41 वाँ आचार्य पदारोहण मंदिर जी के प्रांगण के पाण्डाल में बड़े ही श्रद्धापूर्वक मनाया गया। इसी अवसर पर आचार्य श्री के चित्र का अनावरण एवं दीप प्रज्वलन किया गया तत्पश्चात् आचार्य श्री का पूजन की गई मुनिश्री ने अपने सार गर्भित प्रवचन में आचार्य श्री के अनछुये पहलुओं पर प्रकाश डाला समाज के व्यक्तियों ने भी आचार्यश्री के संस्मरण सुनाकर अपनी गुरु भक्ति प्रकट की। अंत में आचार्य श्री की आरती रत्नत्रय रूप तीन दीप जलाकर की गई।

अभूतपूर्व ऐतिहासिक चातुर्मास के बाद मुनिश्री का मंगल बिहार दिसम्बर एक तारीख को अपराह्न 4 बजे नानपुरा के लिये हो गया विहार के अवसर पर सभी भक्तजनों की आँखों में अश्रु थे पर मुनिश्री तो आचार्यश्री की तरह ही निर्लिप्त हो मंगल विहार कर गये। प्रवचन व आहारचर्या के साथ नानपुरा में एक दिन, भट्टार में 8 दिन एवं पार्ले पाइन्ट में 9 दिन और गोपीपुरा में 1 दिन देकर व नवापुरा में एक प्रवचन द्वारा तथा कतार गाँव आदि में अपने

प्रभावक प्रवचनों से एवं चर्या से मुनिश्री आर्जवसागर जी महाराज संघ से बड़ी प्रभावना हुई यहीं पर कतार गाँव में शीतकाल प्रवास हेतु रमेश भाई बकील आदि ने श्रीफल भेंट किया।

इसके अलावा भी कई कार्यक्रम समय-समय पर आयोजित किये गये। पाठशाला के 150-200 बच्चों को जो मुनिश्री ने संस्कार दिये हैं वह जरूर धर्म के प्रेरक बने रहेंगे प्रत्येक दिवस मुनिश्री के प्रवचन का लाभ मिला प्रत्येक दिन त्योहार सा प्रतीत होता था वर्षायोग का।

वर्षायोग के दौरान सम्पूर्ण देश से भक्तजन मुनिश्री के दर्शन को आते थे। राजस्थान, महाराष्ट्र, कर्नाटक, तमिलनाडू के भक्तों ने लोगों को प्रभावित किया।

वैसे तो सूरत शहर में अनेकों मुनिराजों के चातुर्मास कराने का सौभाग्य प्राप्त हुआ किन्तु पूज्य मुनिश्री आर्जवसागर जी महाराज का चातुर्मास अपूर्व प्रभावना के साथ सम्पन्न हुआ। वह चिर स्मरणीय रहेगा। चातुर्मास की सफलता में समाज के सभी लोगों का सहयोग रहा फिर भी वर्षायोग समिति के प्रमुख कार्यकर्ता हर्षदभाई महेता, अरविन्द भाई गांधी, कनुभाई महेता वर्षायोग समिति के विभिन्न कार्यकर्ता एवं महिला मंडल एवं समाज के प्रत्येक व्यक्ति बच्चे से बूढ़े तक सभी का सहयोग बना रहा।

नमन गुरुदेव को जिनने दीप अन्तस् का जलाया है ।
नमन गुरुदेव को जिनसे मिली सद्ज्ञान छाया है।।
नमन श्री आर्जवसागर को हमारे जो परमात्मा है।
नमन गुरुदेव को जिनसे धर्म का जीवन पाया है ।।

अन्त में पूज्य मुनिश्री के यह धर्मप्रभावना निर्बाध चलती रहे इसी भावना के साथ बारम्बार नमोस्तु, नमोस्तु, नमोस्तु।

''बहती जहँ नदियाँ सदा, बहे ज्ञानामृत सु-धार ।
तिथि जिनकी निश्चित नहीं, अनियत गुरो विहार ।।''

महुआ क्षेत्र दर्शनः-

सूरत नगर के चातुर्मास के बाद सूरत नगर के परिसर में भी धर्मप्रभावना करते हुए पर्वत पाटिया (मॉडल टाउन) में करीब एक सप्ताह को प्रभावना में धार्मिक पाठशाला भी प्रारम्भ कर वहाँ जनवरी 3 तारीख को महुआ की ओर विहार किया और 6 तारीख शाम को महुआ पहुँच कर अतिशयकारी पार्श्वनाथ भगवान का दर्शन किया व चर्या की और वहाँ पर मढ़ी गाँव के लोगों ने आचार्य श्री विद्यासागर संयम भवन का लोकार्पण के लिए पधारने हेतु मुनिवर श्री आर्जवसागर जी के श्री चरणों में निवेदन किया। फिर दो दिन के बाद मुनिवर का विहार उसी ओर हुआ और 10 तारीख को बड़े हर्षोल्लास के साथ गुरुवर का मढ़ी नगर में प्रवेश हुआ और 13 तारीख को श्री भक्तामर महामण्डल विधान हुआ, मुनिश्री आर्जवसागर जी के प्रवचन के उपरान्त सूरत आहुरा नगर एवं पर्वत पाटिया तथा भटार के पाठशाला के बच्चों ने धार्मिक प्रस्तुति दी। उसके पश्चात् आचार्य श्री विद्यासागर संयम भवन का लोकार्पण ब्र. सुमत भैया भोपाल के निर्देशन में हुआ। मढ़ी गाँव के मूलनायक प्रतिमा श्री 1008 शांतिनाथ भगवान भी आचार्य श्री विद्यासागर जी के कर कमलों से प्रतिष्ठित हैं। फिर 14 तारीख को दोपहर में विहार हो गया। 15 तारीख को माड़वी नगर पहुँचे। गुरुवर श्री आर्जवसागर जी का प्रवचन हुआ।

पावागढ़ क्षेत्र दर्शनः-

16 तारीख को सुबह पावागढ़ के लिए विहार हो गया। सूरत से करीब 300 या साढ़े तीन सौ कि.मी. चलकर गुरुवर आर्जवसागरजी ससंघ 23 तारीख शाम को पावागढ़ में प्रवेश हुआ। फिर 24 तारीख दोपहर में संघ सहित भक्तों के साथ पहाड़ की वन्दना के लिए निकले। ऊपर पहुँचकर सात दि. जैन मंदिरों का दर्शन करके ऊपर की धर्मशाला में ही ठहर गये। फिर दूसरे दिन सुबह पुनः दूसरी वंदना की और भूपेन्द्र भाई सूरत आदि ने पर्वत पर ही धर्म शाला में जो चौका लगाया था वही मुनि संघ की आहार चर्या सम्पन्न हुई तथा

मध्याह्न में तीसरी वन्दना करके नीचे आये। सूरत से बहुत लोग व बच्चे भी आये हुए थे। नीचे आते ही प्रवचन के लिए निवेदन किया तो गुरुवर ने इस पावागढ़ धरती से मोक्ष गये लवकुश की कथा सुनाई तथा हर्षदभाई, सुरेश गांधी, नरेश जैन, राहुल जैन ने डॉ. अजित जैन के साथ भाव विज्ञान के नये अंक का अनावरण किया।

मध्यप्रदेश की ओर विहार:-

गुरुवर आर्जवसागरजी महाराज ने वहाँ से मध्यप्रदेश की ओर विहार किया। दाहोद होते हुए मुनिवर का ससंघ मध्यप्रदेश में प्रवेश हुआ। झांबुआ के भक्तों के निवेदन से फरवरी 3 तारीख को झांबुआ में प्रवेश हुआ। सूरत से म.प्र. तक का विहार सूरत आहुरा नगर के गुजरात वाली जैन समाज ने बड़ी भक्ति और व्यवस्था के साथ करवाया। झाबुआ पहुँचने के बाद गुरुवर ने सूरत वालों से कहा अब तो समाज आ गयी है ना! तो सूरत वाले कहने लगे हम लोग आगे भी आयेंगे। गुरुवर ने कहा अभी देखेंगे। झाबुआ के लोग कहने लगे महाराज जी आप तो बहुत दूर करीब सूरत से 600 कि.मी. चलकर आये हैं अब तो हमारे यहाँ शीतकालीन प्रवास कीजिये। गुरुवर ने कहा देखेंगे। सूरत वाले अश्रुपात करते हुए और पुनः हमारे यहाँ चातुर्मास हो इसी भावना के साथ वहाँ से कष्ट के साथ विदा हो गये। फिर झाबुआ में प्रतिदिन प्रवचन हुए और फरवरी 9 तारीख को भगवान आदिनाथ का मोक्षकल्याणक बड़ी भक्ति भाव के साथ लाडू पूजा की और लाडू चढ़ाने का सौभाग्य कलेक्टर महोदया को मिला और भक्तामर महामण्डल विधान भी सम्पन्न हुआ। फिर वहाँ से मुनिवर ने धार की ओर विहार किया।

धार नगरी का अवलोकन:-

फरवरी 14 तारीख को धार में प्रवेश हुआ और पहले नगर में जाते-जाते बीच में जैन समाज की बड़ी संख्या के साथ भोज शाला भी ले गये जहाँ पर एक समय राजा भोज के समय मानतुंगाचार्य की भक्ति से भक्तामर स्तोत्र से

48 ताले टूटे थे और अतिशय हुआ था। मुनिश्री आर्जवसागर जी ने वहाँ जाकर उस स्थान को देखा वहीं पर भक्तामर के कुछ स्तोत्र पढ़े और आगे बढ़े तो मीडिया ने घेर लिया और मुनिश्री से पूछा कि बसन्त पञ्चमी तो कल है लेकिन आप आज आये। तो मुनिश्री ने कहा कि हम विहार करते हुए आ रहे हैं और लोगों ने बताया कि यहाँ पर ही भोज राजा के निवेदन पर मानतुंगाचार्य ने भक्तामर स्तोत्र से अतिशय दिखाया था इसलिए देखने आया हूँ। फिर धार नगर के अन्दर पहुँचकर नगर के मंदिर का दर्शन किया। और दोपहर में इन्दौर महानगर की ओर विहार किया।

इन्दौर महानगर में मंगलप्रवेशः-

वेटमा होते हुए फरवरी 18 तारीख को इन्दौर के सुदामा नगर के विशेष निवेदन पर सुदामा नगर में मुनिश्री का मंगल प्रवेश हुआ। सुदामा नगर में आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के शिष्यों में पहली बार मुनिश्री आर्जवसागर जी का संसघ सान्निध्य मिला और मार्मिक प्रवचनों एवं शाम की गुरु भक्ति में बहुत भीड़ रहती थी। आचार्य श्री विद्यासागर सर्वोदय ज्ञान पाठशाला की शुरुआत करवायी। मुनिश्री की प्रवचन शैली सभी भक्तों के मन को बड़ी भायी। आखिरी में 15 दिनों के प्रवास के बाद जब विहार होना था तब मन की बातें प्रकट की कि ''हम भक्तों की यही अभिलाषा, सुदामा नगर में हो चौमासा'' की आवाज गूंजने लगी। यहीं पर प्रदीप कासलीवाल अध्यक्ष इंदौर जैन सासंद आदि कमेटी ने गोम्मट गिरि के मस्तकाभिषेक हेतु नम्र निवेदन भी किया। मार्च 3 तारीख दोपहर को मुनिश्री ने ससंघ विहार करके नेमिनगर (जैन कालोनी) में प्रवेश किया। और यहाँ पर भी मुनिश्री का अनेकान्तमय सम्यक् वाणी का प्रवाह चलता रहा फलतः फाल्गुन अष्टाह्निका के नन्दीश्वर महापर्व में समवशरण महामण्डल विधान महोत्सव का आयोजन हुआ। इसमें भी बहुत श्रावक गणों ने प्रभु भक्ति एवं गुरुभक्ति का लाभ लिया। इस विधान में विधानाचार्य रहे डॉ. पं. श्री भरत कुमार जी जैन शास्त्री, इन्दौर और समवशरण महामण्डल महोत्सव के प्रमुख पात्रों में सौधर्म इन्द्र का सौभाग्य श्री सलिल

सोनल बड़जात्या आदि ने प्राप्त कर भगवान की पूजा, भक्ति करके अतिशय पुण्य का अर्जन किया। यहीं मुनिवर के दर्शनार्थ डॉ. डी.पी. सिंह कुलपति दे. अ. विश्वविद्यालय इंदौर एवं हुकुमचंद सावला इंदौर भी पधारे मुनिवर की पाद पूजन कर उनके कर कमलों से उनके द्वारा रचित साहित्य भी प्राप्त किया। समवशरण विधान में सुबह मुनिश्री आर्जवसागर जी गणधर के रूप में उनकी दिव्यध्वनी खिरती रही। श्रावक ऐसे लीन हो जाते थे कि मानो साक्षात् भगवान की ही वाणी सुन रहे हो, सचमुच यह तो भगवान की ही वाणी है।

''पारसमणि के स्पर्श से लोहा सोना बन जाता है ।
सूरज के उदय से, कमल दल खिल जाता है ।।
पारसचन्द से बने आर्जवसागर इनकी बात तो क्या कहें ।
जहाँ चरण इनके पड़ें वहाँ भक्त भगवान को पा जाता है ।।''

मुनिश्री आर्जवसागर जी महाराज का 26वां दीक्षा दिवसः-

भगवान महावीर स्वामी के जन्म जयन्ती महोत्सव पर परम पूज्य महाचार्य विद्यासागर जी महाराज के परम प्रभावक शिष्य मुनिश्री 108 आर्जवसागर जी महाराज का 26वां दीक्षा दिवस सकल दिगम्बर जैन समाज विजय नगर द्वारा बड़े ही हर्ष एवं उल्लास के साथ मनाया। पर्व की शोभा यात्रा जिसमें पांच घोड़े, पाँच रथ, श्री जी की पालकी, ध्वनि एवं बैण्ड बाजे के साथ विभिन्न मार्गों से होती हुई धर्म प्रभावना करती हुई मार्गों से गुजरी। मार्ग में मुनिश्री का पाद प्रक्षालन एवं श्रीजी की आरती की गयी। इस शोभा यात्रा में विभिन्न राज्य/नगर जैसे तमिलनाडु , दिल्ली, जयपुर, अजमेर, सूरत, भोपाल, दमोह आदि से लगभग 100 भक्तगणों द्वारा स्थानीय समाज के साथ शोभा यात्रा विजय नगर में कस्तुरी सभा गृह में पहुँची।

इस सभा के मुख्य अतिथि कुलपति डॉ. डी.पी. सिंह, विशिष्ट अतिथि के रूप में अन्तर्राष्ट्रीय उपाध्यक्ष सर्वश्री हुकुमचंद जी सांवला साथ ही स्थानीय वार्ड क्रमांक 2 के विधायक माननीय रमेश जी मेन्दोला उपस्थित थे।

मंच पर समाज के संरक्षक श्री गजेन्द्र कुमार जी संयोजक जिनेन्द्र कुमार जी, अध्यक्ष सुगन चंद जी, मंत्री प्रकाश चंद्र जी (प्रेस), कोषाध्यक्ष अजित जैन एवं कार्यकारिणी के सभी गणमान्य पदाधिकारी एवं समाज जनों के बीच मुनिश्री आर्जवसागर महाराज की अगवानी करते हुए मंगल प्रवेश हुआ एवं पूज्य मुनिश्री द्वारा आसन ग्रहण किया गया। सभा का संचालन समाज के अध्यक्ष सुगनचंद जी द्वारा किया गया।

सर्वप्रथम सभा की शुरूआत भगवान महावीर स्वामी एवं परम पूज्य आचार्य गुरुवर विद्यासागर जी महाराज के चित्र अनावरण से हुई जिसका सौभाग्य विभिन्न राज्यों एवं नगरों से पधारे समाजजनों को मिला, जिसमें माननीय कुलपति जी डी.पी. सिंह, हुकुमचंद जी सांवला, विधायक रमेश मेन्दोला ने सहयोग करते हुए चित्र के सामने दीप का प्रज्वलन किया। तदुपरांत मुनिश्री के पाद प्रक्षालन का सौभाग्य श्री हुकुमचंद जी सांवला जिनका चयन समाज जनों के बीच बोली द्वारा किया गया। उन्होंने मुनिश्री के पाद प्रक्षालन का शुभ अवसर प्राप्त कर मुनिश्री के चरण प्रक्षालन से अपने आपको धन्य किया।

मुनिश्री के द्वारा रचित विभिन्न ग्रन्थों पर संकलित ''साहित्य समीक्षा'' नामक पुस्तक का विमोचन एवं विजय नगर समाज द्वारा तैयार की गयी समाज की स्मारिका का भी विमोचन पधारे अतिथि एवं गणमान्य नागरिकों की उपस्थिति में हुआ। इसके उपरांत माननीय कुलपति महोदय ने अपने संक्षिप्त उद्‌बोधन में भगवान महावीर स्वामी एवं मुनिश्री के 26वें दीक्षा दिवस पर विचार प्रगट करते हुए भगवान महावीर के सिद्धान्त ''जियो और जीने दो'' पर विचार रखे साथ ही मुनिश्री की दीक्षा पर उन्होंने कहा कि दीक्षा धारण कर मोक्ष महल की सीढ़ी द्वारा संसार भव को पाकर जनम-मरण के इस चक्र को समाप्त किया जा सकता है। उक्त विचार के बाद मुनिश्री ने आशीर्वचन के रूप कहा कि में जैन धर्म के मूल सिद्धान्त अहिंसा से ही धर्म

एवं देश की रक्षा होगी और न्याय-नीति, त्याग, नियम, संयम से जीवन ही जन्म की सच्ची सार्थकता है, इस तरह मोक्षमार्ग को प्रतिपादित करते हुए उपस्थित समाज जनों को अपना उपदेश दिया।

श्री हुकुमचंद जी सांवला द्वारा भी महावीर के सिद्धान्त ''जिओ और जीने दो'' पर विचार रखते हुए विश्व के बड़े-बड़े योगियों और नेताओं द्वारा अहिंसा का जो सिद्धान्त अपनाया गया उससे ही विश्व का कल्याण एवं शांति संभव है ऐसा कहा गया। उक्त विचारों को सुनकर सभागार में उपस्थित बड़ी संख्या में समाज जनों द्वारा करतल ध्वनि से उनके विचारों की अनुमोदना की गई।

मुनिश्री की पूजन अष्ट द्रव्यों से भरे थालों से की गयी। पूजन उपरांत मुनिश्री का गुणगान 26 दीपों की आरती से किया गया। पश्चात् समाज के बच्चों को सम्यग्दर्शन, सम्यकग्ज्ञान और सम्यक् चारित्र के उपदेश द्वारा महाराज श्री की साक्षी में धर्मिक पाठशाला संचालित करने का आशीर्वाद प्रदान किया गया।

विभिन्न राज्यों से पधारे अतिथिगणों द्वारा मुनिश्री को 26 शास्त्र भेंट किये गये उपरांत साहित्य समीक्षा के बारे में भोपाल से पधारे डॉक्टर अजित जैन द्वारा विचार रखे गये। साथ ही भाव विज्ञान पत्रिका, जो महाराज श्री के आशीर्वाद से भोपाल से, प्रकाशित होती है उस पर विचार रखे एवं कई सदस्यों द्वारा सदस्यता ग्रहण की गयी। मुनिश्री द्वारा विभिन्न राज्यों से सूरत, राजस्थान, दिल्ली, तमिलनाडु आदि से पधारे अतिथियों को साहित्य प्रदान किया गया।

श्रीमज्जिनेन्द्र पंचकल्याणक विधान एवं कलशारोहण महामहोत्सव संपन्नः-

श्री महावीर दिगम्बर जैन मंदिर, संगम नगर में अतिकलात्मक लाल पाषाण के शिखर पर भव्य कलशारोहण एवं ध्वजारोहण प.पू. महाचार्य 108

श्री विद्यासागर जी महाराज के धर्म प्रभावक शिष्य मुनिश्री 108 आर्जवसागरजी महाराज के ससंघ सान्निध्य में संपन्न हुआ। 4 मई 2013 का वह अद्‌भुत क्षण जब मुनि श्री के द्वारा इस त्रिदिवसीय महामहोत्सव के लिए पात्रों का चयन कार्यक्रम भव्यता का कारण बना और दि. जैन समाज संगम नगर के इतिहास में ही नहीं वरन् इन्दौर के लिए एक मिसाल बन गया। मुनिश्री के बारे में यही कहेंगे :-

ये सागर से गहरे, हिमालय से ऊँचे, मुस्कान से जिनकी खिल जाए कलियाँ,
ये बहती हुई नदियाँ के हैं धारे, ये आर्जव गुरु हैं हमारे
ये कुन्द-कुन्द भूमि के कुंदन, लगते हैं जैसे हो देवकी नंदन,
जो सबके मन मंदिर में समाए, ऐसे आर्जव गुरु हैं हमारे।

पंचकल्याणक महामण्डल विधान एवं कलशारोहण महामहोत्सव कार्यक्रम बाल ब्रह्मचारी श्री अनिल भैयाजी के निर्देशन में प्रारंभ हुआ।

शुक्रवार 10 मई :- प्रातः 5:45 से जाप्य स्थापना एवं अभिषेक मुनिश्री के सान्निध्य में शांतिनाथ भगवान की पालकी के साथ घट यात्रा संपन्न, पांडाल शुद्धि एवं श्री जी विराजमान, मंडप उद्‌घाटन श्री अनिल जैन जैनको द्वारा एवं ध्वजारोहण श्री सुनील मीना जैन (अरिहंत केपिटल) द्वारा किया गया, इन्द्र प्रतिष्ठा, जिनेन्द्र अभिषेक, शांतिधारा, नित्य नियम पूजन के पश्चात्, आचार्य 108 श्री विद्यासागरजी महाराज के चित्र का अनावरण श्री राजेश अल्पना जैन (लारेल) द्वारा, एवं दीप प्रज्वलन श्री गुलाबचंदजी-आशा बाकलीवाल द्वारा किया गया। उपरोक्त अवसर पर महाआरती का आयोजन किया गया और इसके आयोजक बने श्री नवीन सुनीता सिंघई। संगम नगर समाज के प्रत्येक सदस्य वहाँ एकत्रित हुए और उन्हें बैंड बाजा एवं रथ के द्वारा पांडाल में लाया गया और महाआरती संपन्न हुई।

शनिवार 11 मई :- प्रातः 6 बजे से जाप प्रारंभ, अभिषेक, शांति धारा एवं नित्य नियम पूजन के पश्चात् याग मंडल विधान प्रारंभ हुआ इसमें

सौधर्म इन्द्र श्री कमलेश-सुजाता सिंघई आदि 13 विशेष इन्द्र इन्द्राणियों एवं अनेक इन्द्र इन्द्राणियों ने विधान का लाभ लिया। वह क्षण ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो स्वर्ग में इन्द्र इन्द्राणियों का दरबार लगा हो और इसी बीच मुनिश्री के प्रवचन मानो समवशरण की रचना संगम नगर में ही हो रहे हों। तत्पश्चात्- कलशारोहण शुद्धि एवं ध्वजारोहण शुद्धि संपन्न हुई। शाम को महाआरती का सौभाग्य प्राप्त हुआ श्री सचिन-प्रवीणा जैन भाईजी को। तत्पश्चात् शास्त्र प्रवचन एवं इन्द्र सभा संपन्न हुई।

रविवार 12 मई :- को प्रातः 6:15 पर जाप का समापन, अभिषेक शांतिधारा नित्य नियम पूजन के पश्चात् डॉ. अजित कुमार जैन भोपाल एवं श्री अशोक सेठी (हाईकोर्ट एडव्होकेट) ने दीप प्रज्वलन किया। तत्पश्चात् मुनिश्री का प्रवचन एवं विश्व शांति महायज्ञ का समापन हुआ प्रवचन के दौरान मुनिश्री के द्वारा बच्चों को संस्कारित करने के लिए पाठशाला प्रारंभ करने की प्रेरणा दी जिसकी घोषणा करते ही उसी समय श्री अजीत कुमार सिंह कासलीवाल ने बच्चों की पाठशाला हेतु 51 हजार रु. दान देकर पाठशाला का शुभ मुहूर्त किया। देखते ही देखते संगम नगर के रहवासियों ने भी पाठशाला हेतु दान देने की घोषणा की और प्रारंभ हुई **महाचार्य विद्यासागर सर्वोदय ज्ञान पाठशाला**।

भोपाल से पधारे डॉ. अजित जैन ने शास्त्र दान का कार्यक्रम संपन्न किया। बैंड बाजे के साथ दस बग्गियों एवं अश्वों के साथ 1008 शांतिनाथ भगवान के साथ सभी इन्द्र-इन्द्राणियों एवं समाज के सर्वगणमान्य लोगों के साथ बहुत विशाल शोभायात्रा अनेक रास्तों से होकर मंदिर जी पहुँची। तदुपरांत वह क्षण जिसे सब देखने को आतुर थे मंदिर जी के शिखर पर कलशारोहण श्री अशोक-नीरजा सेठी एवं उनके परिवार द्वारा एवं पीतल से बने ध्वजारोहण श्री पारस-आशा जैन एवं उनके परिवार द्वारा मुनिश्री आर्जवसागरजी महाराज के सान्निध्य में सानंद संपन्न हुआ। अंत में वात्सल्य

भोज हुआ। उपरोक्त अवसर पर क्षेत्रीय विधायक श्री सुदर्शन गुप्ता, पार्षद श्री अश्विन शुक्ला, दिगम्बर जैन समाज (सामाजिक संसद) के अध्यक्ष श्री प्रदीप कुमार सिंह जी कासलीवाल एवं महामंत्री श्री राजकुमार जी पाटोदी के साथ एवं विभिन्न मंदिरों से पधारे अध्यक्ष, मंत्री एवं शहर के कई गणमान्य नागरिक उपस्थित थे।

सांयकाल भगवान और गुरुवर की आरती, व्रती बहनों का शास्त्र प्रवचन, पुरस्कार वितरण कार्यकर्ताओं का सम्मान एवं आभार सचिव पारस जैन द्वारा किया गया और इस कार्यक्रम को भव्य एवं मंगलमय सानंद संपन्न होने में मुनिश्री आर्जवसागर जी महाराज का सान्निध्य एवं आशीर्वाद की सफलता का कारण बना संगम नगर के रहवासी अभिभूत हैं जिन्होंने अपने जीवन में ऐसा कार्यक्रम पहली बार देखा तो गुरुवर के बारे में यही कहेंगे कि :-

जब तक सूरज चंदा हैं, नभ में नक्षत्र चमकते रहें,
सरिताएँ बहें और गिरिवर झरने झरझर झरते रहें।
तब तक गुरु आर्जवसागर जी का हम सबके सिर पर हाथ रहे,
उनके पावन श्री चरणों में ये झुका हमारा माथ रहे।
हम भक्तों पर आपका सदा आशीर्वाद रहे।

इंदौर विहार और धर्म प्रभावना:-

मुनिश्री आर्जवसागरजी महाराज समवशरण मंदिर से विहार कर छावनी पंचायती दिगम्बर जैन मंदिर पहुँचे। जहाँ मुनिश्री की भव्य अगवानी, आरती, पाद प्रक्षालन और मुनिश्री को अर्घ्य चढ़ाकर सामूहिक पूजा की गई। मुनिश्री ने अपने प्रवचन में कहा जिसके जीवन में ज्ञान, विद्या, तप, शील और दान धर्म नहीं, उसका जीवन पशुओं के समान पृथ्वी के लिये भार स्वरूप होता है जो संसार की चक्की में पिसने से बचने के लिये धर्म रूप कील का सहारा लेता है तो संसार के दुखों में पिसने से बच जाता है। धर्म मानव को संसार से ऊपर उठाकर लोक की ऊँचाइयों तक पहुँचा देता है। आज धर्म और न्याय

नीति को भूलकर केवल राजनीति में लगे लोग नैतिक पतन से अपने देश की सदाचार की संस्कृति को भूलते जा रहे हैं। कोई कानून, संविधान को बदल रहा है और कोई पत्थर की नाव में बैठ रहा है। अगर धर्म के रास्ते से भटकोगे तो भगवान भी नहीं बचा सकता।

पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर, नन्दानगर, इन्दौर में सिद्धचक्र महामंडल विधान समापनः-

श्री पार्श्वनाथ दिगंबर जैन मंदिर, नंदानगर, इंदौर में सात दिवसीय सिद्धचक्र महामंडल विधान मुनिश्री आर्जवसागर महाराज संसघ के सान्निध्य में एवं ब्र. भावेश भैया के निर्देशन में प्रारम्भ हुआ। ऐसे मांगलिक कार्यक्रम के ध्वजारोहण का सौभाग्य श्रेष्ठी भरत मोदी इंदौर को प्राप्त हुआ। 1024 नारियल गोले के अर्घ चढ़ाकर सिद्ध परमेष्ठी की आराधना नृत्य गान के साथ संगीतमय प्रतिदिन प्रातः मुनिवर के प्रभावक प्रवचनों के साथ सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर प्रातः 8.30 बजे मुनिश्री ने अहिंसा धर्म पर प्रकाश डाला और कहा कि दया करुणा के साथ धर्म की प्रभावना करना चाहिए। गरीबों की सहायता तथा पशुओं को बूचड़खानों में जाने से बचाना चाहिए। गौशाला को दान देना चाहिए और जिस वजह से बूचड़खाने बढ़ रहे हैं ऐसी चमड़े की वस्तुओं का त्याग करना चाहिए तो हिंसक वस्तुओं की डिमांड कम होने से स्वतः हिंसक कार्य बंद हो जावेंगे और रोड पर बनाए पांडाल में हजारों लोगों के हाथ उठवाकर संकल्प दिलवाए तथा यह भी बताया कि प्रकृति भी उपकार करना सिखाती है। वृक्ष उपकार के लिए फल देते हैं। नदियां उपकार के लिए जल देती है, गाय उपकार के लिए दूध देती है। इसी तरह माँ अपने बच्चों को उपकार के लिए जन्म देती है लेकिन दूध न देनेवाली किन्हीं गायों को जो बूचड़खाने भेज देते हैं उनकी यह तुच्छ पैसों की लालच धर्म को भुला देती है। क्या ऐसे ही माँ-बाप जब कमाना छोड़ देंगे तो उन्हें भी घर के बाहर निकाल दोगे! नहीं, उनकी सुरक्षा करना हमारा धर्म है।

अगले दिन सुबह 9 बजे हवन-विश्व शान्ति महायज्ञ हुआ इसके बाद श्रीजी को पालकी में बैठाकर मंदिरजी से शोभायात्रा नंदानगर, अनूप टाकीज, जगजीवनराम नगर, पाटनीपुरा होते हुए भगवान के जयकारों, डीजे, बैंडबाजे एवं भजन एवं नृत्य करते हुए सैकड़ों की संख्या में इंद्र-इंद्राणी गण मुनिसंघ के साथ हजारों लोग पैदल चले। मंदिरजी के परिसर में बने पाण्डाल में आकर श्रीजी का अभिषेक कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम में मुख्य रूप से दिगंबर जैन सामाजिक संसद के मंत्री दिलीप पाटनी, प्रकाश मेंदोला, पार्षद शीला घुमकर, नंदानगर जैन समाज अध्यक्ष कैलाश चांदीवाल, भानुकुमार जैन, श्रीपाल जैन, भागचंद जैन, कासलीवाल, सूरज बज, पंकज जैन, नीरज जैन, गजेन्द्र जैन, पवन जैन आदि मौजूद रहे। कार्यक्रम के समापन के बाद समाजसेवियों को प्रतीक चिन्ह व शाल-श्रीफल देकर सम्मानित किया गया।

भक्ति में नियम-संयम जरूरी :-

मुनि श्री आर्जवसागरजी महाराज ने नंदानगर जैन मंदिर से विहार कर दिगंबर जैन मंदिर जावरा वाले, एबी रोड, इंदौर पहुँचे। मुनिश्री ने अपने प्रवचन में कहा कि चाहे भक्ति हो या साधना, उनमें जब तक नियम-संयम, श्रद्धा और समर्पण, आस्था व विश्वास नहीं है तब तक उनका कोई प्रतिफल मिलने वाला नहीं है। जब नियम-संयम के साथ प्रभु की भक्ति की जाती है तब निश्चित ही उससे शक्ति प्राप्त होती है। अपने गुरु के प्रति समर्पण और धर्म के प्रति पूरी निष्ठा के भाव जब जागृत होकर पवित्र व सुदृढ़ बनने लगते हैं तब जीवन सहजता से बदलने लगता है। कर्मों को ढीला व पतला करने के लिए तभी तो प्रभु की भक्ति की महत्वता को सभी धर्मों ने श्रेष्ठ बताया है। भक्ति में भी निष्काम अथवा मोक्ष की कामना से की जाने वाली भक्ति को सबसे सर्वोत्तम कहा गया है। भक्ति से मन खुशियों से भर उठता है और संसार की जगह जब भक्त प्रभु की शरण में होता है, तभी तो पुण्य संचय हो पाते हैं इसलिए जब भी प्रभु की भक्ति का अवसर प्राप्त हो, उससे वंचित न रहें। अपनी इंद्रियों पर संयम का यह भी एक मार्ग है। मन को पवित्र बनाने का भी

यह एक पावन तरीका है।

चातुर्मास हेतु निवेदनः-

इस अवसर पर मुनिश्री का दिगंबर जैन मंदिर जावरावाला के अध्यक्ष विमल अजमेरा एवं विमल गाँधी, श्रीपाल जैन, भागचंद कासलीवाल, पंकज जैन, शीतल जैन, कैलाश चांदीवाल, सूरज बज, भानुकुमार जैन, नीरज जैन ने मंगल आरती एवं भजन गाकर श्रीफल भेंटकर महाराजश्री की भव्य अगवानी की जिसमें समाज के सैकड़ों लोग उपस्थित थे। गोयल नगर दिगंबर जैन मंदिर के अध्यक्ष दिलीप पाटनी एवं मध्यप्रदेश शासन के स्वास्थ्य मंत्री महेन्द्र हार्डिया ने सैकड़ों महिलाओं-पुरुषों के साथ मुनिश्री 108 आर्जवसागरजी महाराज ससंघ को गोयल नगर में वर्षायोग चातुर्मास के लिए श्रीफल भेंट कर निवेदन किया और कहा कि आपके गोयल नगर चातुर्मास में हम भी आपके प्रवचन सुनकर अपना जीवन धन्य करेंगे। सारी गोयल नगर समाज नारियल चढ़ाकर ''हम सबकी है यही अभिलाषा, गोयल नगर में हो चौमासा'' के नारे लगाए। ऐसे अच्छे मौके पर संगम नगर, तिलक नगर, उदयनगर, समवसरण मंदिर, नेमीनगर मंदिर आदि के लोग भी अपने मंदिर में वर्षायोग हेतु श्रीफल चढ़ाकर निवेदन कर रहे थे। मुनिश्री ने अपने प्रवचन में कहा कि साधु वचन नहीं देते प्रवचन देते हैं, साधु तो अतिथि होते हैं, उनकी कोई तिथियाँ निश्चित नहीं होती कि वे कब और कहां जावेंगे, जहां जिस स्थान की जनता का पुण्य जोर मारेगा वही विहार और वर्षायोग होगा। सभी लोग यह भावना पाकर अपना पुण्य बढ़ाएँ कि हम संसार में कितना समय देकर साधु संघ के ज्ञान से लाभ उठायेंगे, साधु सेवा से मेवा अर्थात् सुख शांति जरूर मिलेगी। मुनिश्री ने स्वास्थ्य मंत्री महेन्द्र हार्डिया को यह भी प्रवचन में बतलाया कि जब हवा काम नहीं करती तब दवा काम आती है और जब दवा भी काम नहीं करती तब दुआ काम आती है ऐसे हमारे गुरु के वचन हैं। जब स्वास्थ्य मंत्री की दवा शरीर को स्वस्थ करती है तो साधु का सत्संग आत्मा को स्वस्थ करता है इसीलिए मंत्री

अब गुरु के पास आए हैं वास्तव में जिसके जीवन में गुरु नहीं उसका जीवन शुरू नहीं। मुनिश्री ने यह भी बतलाया कि गुरु एक कुंभकार के समान होते हैं, जैसे कुंभकार गीली मिट्टी को ठोंक-पीटकर घड़ा बनाता है, वैसे ही गुरु शिष्यों और भक्तों के अवगुणों का विसर्जन कराकर मोक्षमार्ग के योग्य बना देते हैं और गुरु कविता में मुनिश्री ने कहा कि :-

संत समागम की यही तो सार्थकता है कि संसार का अन्त दिखने लग जाता है। सामने वाला तुरन्त संत संयत बने या ना बने, लेकिन संतोषी अवश्य बन जाता है।

प्रवचन के पूर्व व्रती बहिनों ने एवं पाठशाला के बच्चों मंगलाचरण की मंच का संचालन विमल अजमेरा एवं दिलीप पाटनी ने किया। भोपाल से पधारे महेन्द्र इंजीनियर एवं पवन जैन ने शास्त्र विमोचन कर शास्त्र दान दिया। इस मौके पर समवसरण मंदिर कंचन वाग में वर्षायोग के निवेदन को पधारे सेठ अशोक कुमार सिंह कासलीवाल, पारस जैन, भानुकुमार जैन, संगीता धर्मेश जैन, सुमन जैन, डिम्पल जैन आदि मौजूद थे। इस अवसर पर मंगलाचरण संगीता दुर्गेश जैन ने किया। आभार प्रदर्शन विमल गाँधी ने माना।

आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज का 46 वाँ दीक्षा दिवस संपन्न:-

इंदौर में दि. 13 जुलाई, 2013 को राष्ट्रीय महासंत आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज का 46वाँ दीक्षा दिवस धर्मप्रभावक अध्यात्म योगी मुनिश्री 108 आर्जवसागरजी महाराज एवं क्षुल्लकश्री हर्षितसागरजी महाराज के सान्निध्य में दिगम्बर जैन मंदिर खातीवाला टैंक के प्रांगण में मनाया गया। कार्यक्रम की भूमिका रमेश कासलीवाल ने प्रस्तुत की। आचार्य श्री व मुनिश्री के जीवन दर्शन पर पं. जयसेन जैन ने अपना वक्तव्य दिया। मुनिश्री ने अपने प्रवचन में कहा कि आज से 46 वर्ष पूर्व आषाढ़ शुक्ल पंचमी के दिन अजमेर राजस्थान में महाकवि आचार्य श्री ज्ञानसागरजी महाराज से आचार्य विद्यासागरजी महाराज ने मुनिदीक्षा धारण की और करीब 100 मुनि दीक्षायें

एवं उससे अधिक आर्यिका दीक्षायें प्रदान की। साथ ही लगभग सैकड़ों ब्रह्मचारी एवं ब्रह्मचारिणी को व्रत देकर मोक्ष मार्ग का रास्ता खोला है। हजारों अणुव्रतियों को श्रावक पद प्रदान किया। सैकड़ों मंदिर व विद्यालय उनके भक्तों ने बनवाये हैं। मुनिश्री ने कहा कि जैसे कुंभकार मिट्टी को घड़े का रूप देता है और घड़ा गर्म पानी को भी विभाव अवस्था से ठण्डे शीतल स्वभाव में ला देता है उसी तरह एक शिष्य गुरु से दीक्षा धारण कर सारे जगत को भोग विलास, हिंसा, अन्याय, अनीति से दूर कर अपने उपदेशों से सन्मार्ग में लाने का पुरुषार्थ करता है। सच्चा गुरु वही है जो निस्वार्थ भोगाकांक्षा से रहित है। क्योंकि पत्थर की नहीं, बल्कि लकड़ी की नाव ही संसार समुद्र से पार लगाकर संसार के किनारे मोक्ष तक पहुँचा सकती है। शीघ्र ही अपने गुरु ऐसी प्रभावना करते हुये एक दिन तीर्थंकर बनकर मोक्ष सुख को प्राप्त करें ऐसी मंगल भावना हम सब करते हैं।

इस अवसर पर आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज के चित्र का अनावरण राजकुमार अशोककुमार जैन ने, आरती हुकुमचंद जैन ने की। मुनिश्री को शास्त्र भेंट गोटूलाल जैन ने किया। आरती कमलेश सिरेमल जैन ने की। श्रीफल राजेश जैन लॉरेल, संजय जैन मैक्स, भानुकुमार जैन, दिलीप पाटनी, भरतेश बड़कुल, कमलेश सिंघई, कमल अग्रवाल ने किया। संचालन समाज के अध्यक्ष गोटूलाल जैन ने किया। मंगलाचरण ब्र. सुनील भैया ने किया। आभार समाज के महामंत्री अनिल जैन ने माना।

गोयल नगर में भव्यमंगल प्रवेश:-

मुनिश्री आर्जवसागरजी महाराज एवं क्षु. हर्षितसागरजी महाराजजी का भव्य मंगल प्रवेश दिगम्बर जैन मंदिर गोयल नगर में बड़ी भव्यता के साथ हो गया। डी.जे. बैण्ड के साथ सैकड़ों नर नारी धवल व केशरिया वस्त्रों के साथ तथा धार्मिक पाठशाला के बच्चों को आगे रखते हुए पंचरंगी ध्वजाएं फहराते हुए मंगल गीत गाते हुए नृत्यगान करते हुए जुलूस में मुनिश्री ससंघ के साथ

युवा लोग नारे लगा रहे थे-नील गगन एक सितारा, मुनिश्री को नमन हमारा। महावीर भगवान का शुभ संदेश, जियो और जीने दो। गोयल नगर की सीमा पर स्वास्थ्य मंत्री मध्यप्रदेश शासन माननीय महेन्द्र हार्डिया ने मुनिश्री आर्जवसागरजी महाराज के ससंघ चरणों में श्रीफल अर्पित कर विधानसभा क्षेत्र क्रमांक 5 के गोयल नगर जैन मंदिर में चातुर्मास करने के लिये निवेदन किया। साथ में गोयल नगर जैन समाज के अध्यक्ष दिलीप पाटनी, विजय जैन, भानुकुमार जैन, नरेन्द्र रावका, ललित बंडी, मनमोहन पाटनी, अखिलेश जैन आदि के जैन घरों के सामने मुनिश्री के पाद प्रक्षालन एवं आरती की गई तथा मंदिर के विशाल हाल में मुनि संघ को वर्षायोग हेतु सैकड़ों नर-नारियों ने निवेदन किया गया। मुनिश्री ने प्रवचन में बताया कि साधु के वर्षायोग से आध्यात्मिक लाभ की अपेक्षा करना चाहिए। साधु संसार के त्यागी होते हैं ज्ञान की वर्षा करते हैं वह ज्ञान जो हमें आत्मिक शांति देता है। हम वर्षायोग में साधु का सत्संग पाकर ध्यान साधना करना सीखें, परिवार को धार्मिक संस्कार दिलवायें, बच्चों को धार्मिक पाठशाला भेजें। यह धर्म की वर्षा का सीजन है अपने आप को परखें कि हम कितना समय वर्षायोग में निकाल कर पूजन प्रवचन भक्ति आदि में देंगे जो अधिक से अधिक समय साधु सत्संग में देगा वहीं मेरा वर्षायोग होगा। अपना-अपना पुण्य बढ़ायें अभी कुछ दिन बाकी हैं और हमने निश्चित नहीं किया है चातुर्मास कहाँ करेंगे ? हमारे संघ की परम्परा भी यही है। धर्म इस लोक मात्र के लिये ही और धर्म इह परलोक दोनों लोकों के महान सुख देने वाला है। हम अपना जीवन धर्मकार्य, परोपकार, णमोकार मंत्र जाप, पंच धारणाओं के ध्यान व शास्त्र स्वाध्याय तथा चार दानों में लगायें तभी आत्म कल्याण सम्भव होगा।

चातुर्मास कलश स्थापनाः-

नहीं देखी ऐसी प्रभावना, हुआ गोयल नगर जैन मंदिर में पू. मुनिश्री आर्जवसागरजी का वर्षायोग कलश स्थापना।। इंदौर में 21 जुलाई को मुनि श्री

आर्जवसागरजी एवं क्षुल्लक श्री हर्षित सागरजी महाराज के गोयल नगर जैन मंदिर में स्थापित वर्षायोग कलश स्थापना के अवसर पर आयोजित धर्म सभा में व्यक्त किये कि साधु सदैव अपने नियम संयमों से बंधे होते हैं जिसके कारण वे समय के महत्व को समझते हैं। धर्म प्रभावना में श्रीफल की अपनी महत्वपूर्ण भूमिका होती है। श्रीफल किस भावना से चढ़ाये जाते हैं उसमें बहुत बड़ा रहस्य छिपा रहता है। आषाढ़-शुक्ल पक्ष चतुर्दशी का दिन अमृत सिद्धी का योग है अत: आज का दिन मंगल माना गया है। नदी नि:स्वार्थ जल प्रवाहित करती रहती है, वृक्ष बिना किसी भेदभाव के सभी को फल एवं छाया प्रदान करते हैं, गाय सभी को अपना मानकर अमृत समान दुग्ध देती है। ये सभी परोपकारी माने जाते हैं लेकिन मानव अपने हित-स्वार्थ के कारण इन सभी परोपकारियों को नष्ट करने में लगा रहता है। गाय को बूचड़खाने भेजकर, वृक्षों को विकास के नाम पर नष्ट करने एवं नदियों को प्रदूषित करने में लगा रहता है क्योंकि हम उनके नि:स्वार्थ परोपकार को नहीं समझते हैं। मुनिश्री ने आगे कहा कि- गुरु ऊपर से कठोर एवं भीतर से नरम होते हैं। जिस पर नारियल के ऊपर कठोर कवच होता है उसे हटाना मुश्किल होता है लेकिन इसके भीतर जो सफेद नारियल होता है वह एक दम नरम एवं श्वेत होता है। हमें इस चातुर्मास में इसी कठोर कवच और उसके ऊपर की जटाएँ हटानी हैं तभी हमें नरम एवं श्वेत नारियल सम अर्थात् परमपद की प्राप्ति होगी। इसलिए चातुर्मास में सभी श्रोता बनकर रहें, सरोंता या सोता होते हुऐ भाग नहीं लेना।

कलश स्थापना के पूर्व आचार्य श्री विद्यासागरजी के चित्र का अनावरण श्रीमती प्रेमलता-नवीन एवं विजय जैन द्वारा एवं दीप प्रज्वलन श्री आर.के. मैना जैन द्वारा किया गया। मंगल गीत कु. तान्या-सौम्या जैन एवं मंगलाचरण श्रीमति अर्चना-रश्मि एवं अनुभा जैन द्वारा प्रस्तुत किया गया।

इस अवसर पर सांसद श्रीमती सुमित्रा महाजन, स्वास्थ्य मंत्री म.प्र.

शासन श्री महेन्द्र हार्डिया, महापौर श्री कृष्ण मुरारी मोघे, क्षेत्रिय पार्षद श्री अजयसिंह नरूका, नंद किशोर पहाड़िया, विश्वहिन्दू परिषद् मालव प्रांत के प्रदीप गोयल, अनिल कासलीवाल, कुंद-कुंद ज्ञानपीठ के डॉ. अनुपम जैन, डॉ. महेन्द्र जैन 'मनुज' वीर निकलंक के सम्पादक श्री रमेश कासलीवाल, श्री कुशलराज जैन एवं अनेक गणमान्य व्यक्तियों द्वारा मुनिश्री को श्रीफल भेंट कर आशीर्वाद प्राप्त किया गया। इस अवसर पर मुनिश्री की गृहस्थ अवस्था की माँ श्रीमती मायादेवी एवं भाई श्री अरविन्द जैन द्वारा भी मुनिश्री को श्रीफल भेंट कर आशीर्वाद प्राप्त किया गया।

वर्षायोग प्रथम कलश स्थापित करने का सौभाग्य श्री सुन्दरलालजी, नरेन्द्र कुमार जी, आजाद जैन (बीड़ी वाले) परिवार को प्राप्त हुआ। द्वितीय कलश श्री प्रकाश जैन (स्टील वाले), तृतीय कलश श्रीविजित रामावत (इंदिरा सिक्यूरिटी), चतुर्थ कलश श्री प्रकाश जी भादावत एवं पांचवाँ कलश श्री सुरेश-सचिन जैन परिवार को प्राप्त हुआ।

मुनिश्री को शास्त्र भेंट श्री लक्ष्मीचंदनी डडूकिया एवं श्री राजेश जैन द्वारा एवं पाद प्रक्षालन करने का सौभाग्य श्री खुशालचंदजी को तथा आरती श्री परमेष्ठीलालजी सौगानी परिवार द्वारा की गई।

इस अवसर पर चैन्नई, जयपुर, कोपरगांव, दिल्ली, सूरत, भोपाल, ग्वालियर, टीकमगढ़, दमोह आदि अनेक स्थानों से भक्तगण पधारे एवं मुनिश्री से आशीर्वाद प्राप्त किया।

भगवान पार्श्वनाथ को निर्वाण लाडू चढ़ाये गयें :-

इन्दौर के गोयल नगर में चल रहे वर्षायोग के विशाल पांडाल में भगवान पार्श्वनाथ का मोक्ष सप्तमी पर निर्वाण महोत्सव बड़ी धूमधाम के साथ चंवर से नृत्य एवं भजन गाते हुए पार्श्वनाथ भगवान के जयकारे के साथ भव्य पैमाने पर मोक्ष कल्याणक मनाया गया। जिसमें सैकड़ों की संख्या में महिलाएँ पुरुष बच्चे उपस्थित थे। इस अवसर पर मुनिश्री आर्जवसागर महाराज के

सान्निध्य में लाडू चढ़ाये गये एवं महिलाएँ पुरुषों ने भी पाँच सौ लाडू चढ़ाये गये। इस अवसर पर महाराजश्री ने मोक्ष कल्याणक के बारे में विस्तार से समझाया कि जब भगवान पार्श्वनाथ का जन्म वाराणसी में हुआ उनकी आयु सौ वर्ष की थी उनकी माता वामादेवी के कोख से जन्में पार्श्वनाथ को जन्म के अवसर पर लाखों टनों रत्नों की वर्षा हुई इसके बाद भगवान को सुमेरु पर्वत पर अभिषेक हुआ। उस समय देवोपनीत अलंकारों से भगवान को अलंकारित किया गया था। उन्होंने घर छोड़ कर मुनि बने और समवशरण में बैठकर धर्म उपदेशना दिया। जिसमें उनको सुनने के लिये मानव के साथ-साथ शेर, हाथी, साँप, नेवले, बकरी, खरगोश, गाय ने अपना जन्म जात बैर भूलकर एक साथ की वाणी को सुनी। जैन तीर्थ पर्वतराज सम्मेदशिखर की आखरी टोंक स्वर्णभद्रकुट से वे मोक्ष गये। महाराजश्री ने आगे कहा कि भव्यों को प्रथम जिन दर्शन दिवस मनाना चाहिये ना कि बर्थडे। बर्थडे तो व्यर्थ डे है उसे मनाकर मिथ्यात्व का समर्थन मत करो। हाँ! तीर्थकर का जन्म कल्याणक मनाने में दोष नहीं क्योंकि वे सम्यक्त्व के साथ जन्म लेते हैं। इसीलिये सम्मेद शिखरजी जैनों का सबसे बड़ा तीर्थ बना जहाँ से भगवान पार्श्वनाथ मोक्ष को प्राप्त हुए। इसी उद्देश्य को लेकर के पार्श्वनाथ भगवान को मोक्ष सप्तमी पर प्रतिवर्षानुसार लाडू चढ़ाये जाते हैं एवं बालिकाएं निर्जला उपावस रख कर तप की साधना करती हैं। प्रथम लाडू चढ़ाने का सौभाग्य परमेष्ठीदास सोगानी को प्राप्त हुआ।

इन्दौर महा नगर में हुई धर्म की प्रभावना :-

धर्मप्रभावक मुनिश्री आर्जवसागरजी ने इन्दौर नगर के गोयल नगर में चातुर्मास के अंतर्गत श्री पार्श्वनाथ भगवान के निर्वाण लाडू के बाद 'सम्यक् ध्यान' इस पावन विषय पर मंगल प्रवचन दिये। उसके उपरान्त 20 अगस्त को रक्षाबंधन पर्व मनाया गया। सभी लोगों ने अपने हाथों में रक्षा सूत्र बांधे और विष्णुकुमार मुनि एवं अकम्पनाचार्य आदि 700 मुनियों की पूजा की गई।

मुनिश्री ने विष्णुकुमार मुनि की कथा सुनाकर रक्षाबन्धन पर्व की महिमा बतलायी और उसी दिन से **'सोलह कारण महापर्व'** भी प्रारम्भ हुआ। जिसमें करीब 200 लोगों ने एकासन अथवा एक एकासन एक उपवास का नियम संयम के साथ एक महीने का यह पर्व सामूहिक संगीतमय पूजन बहुत बड़े भक्ति भाव से मनाया और इसी संदर्भ में पर्यूषण पर्व के पूर्व तक सोलह दिनों तक सोलह कारण भावनाओं पर मुनिश्री ने प्रवचन दिये। जो जिनवाणी पारस चैनल पर भी प्रसारित किये गये। फिर 'दशलक्षण पर्व' में भी **'श्रावक साधना संस्कार शिविर'** सम्पन्न हुआ। जिसमें करीब 250 लोगों ने व्रत, उपवास किये और दस दिनों तक मुनिश्री आर्जवसागरजी के दसलक्षण धर्मों पर विशेष प्रवचन हुए और दोपहर में भी तत्त्वार्थ सूत्र पर प्रवचन मुनिश्री द्वारा सम्पन्न हुए अन्त में षोडसकारण विधान पूर्वक क्षमावाणी मनायी गयी।

29 सितम्बर को आचार्य ज्ञानसागरजी के डाक टिकिट का लोकार्पण समारोह सम्पन्न :-

आचार्य श्री ज्ञानसागरजी महाराजजी की स्मृति में डाक टिकिट का लोकार्पण समारोह 29 सितम्बर 2013 को श्री शान्तिनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर, गोयल नगर के विशाल प्रांगण पाण्डाल में किया गया। मुख्य अतिथि दे. अ. वि. वि. इन्दौर के कुलपति श्री डी.पी.सिंह थे। सामाजिक संसद के अध्यक्ष श्री प्रदीप कुमार सिंह कासलीवाल, डॉ. अनुपम जैन, सचिव, कुन्दकुन्द ज्ञानपीठ, सामाजिक कार्यकर्ता श्री निर्मलकुमार पाटोदी (जिनके प्रयासों से यह टिकिट जारी हुआ), प्रो. सरोजकुमार जैन, सामाजिक कार्यकर्ता श्री भानुकुमार जैन, श्री संतोष कुमार, सहायक अधीक्षक, डाकघर अन्वेषक, इन्दौर के सहयोग से यह लोकार्पण समारोह सम्पन्न हुआ। वीर निकलंक के संपादक श्री रमेश कासलीवाल, पं. भरत शास्त्री भी इस अवसर पर अतिथि के रूप में उपस्थित थे। मुनिश्री आर्जवसागरजी ने उनके जीवन परिचय को देते हुए बताया कि आचार्य श्री ज्ञानसागरजी का जन्म सन् 1891 में राजस्थान के राणोली गाँव में

हुआ था। आपकी शिक्षा किन्स कॉलेज, वाराणसी में हुई। वहाँ से उन्होंने शास्त्री की उपाधि प्राप्त की। शिक्षा के दौरान ही ब्रह्मचर्य व्रत धारण किया तथा संपूर्ण जीवन जैन धर्म के प्रचार के लिये समर्पित कर दिया और देश के प्रसिद्ध कवि साहित्यकार विद्वान के रूप में उभरे। 1959 में मुनि पद धारण किया। 1969 में आचार्य पद प्राप्त किया। संस्कृत में आपने नौ पुस्तकें लिखी और वीरोदय, जयोदय आदि महाकाव्य भी रचे जिनमें हजारों श्लोंकों में जैन धर्म की महिमा गायी है। भाग्योदय, कर्त्तव्य पथ प्रदर्शन, मानव धर्म, विवेकोदय काव्य आदि हिन्दी में लिखे गये। उनकी श्रेष्ठ और साहित्यिक कृतियाँ जो लोकप्रिय हिन्दी कविताओं में हुई वृषभावतार हैं जो आदिपुराण में दिए अनुसार प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव के जीवन से प्रेरित हैं। एक और चैतन्य कृति आचार्य विद्यासागर रूप इस जगत् को दी जिनके पावन सान्निध्य में एक जून 1973 को राजस्थान के नसीराबाद में उनकी समाधि हुई। किसी दिगम्बर जैन संत की स्मृति में देश में यह पहला टिकिट भारत सरकार ने देश में जारी किया है यह बहुत आनन्द की बात है।

30 सितम्बर और 1 अक्टूबर को 48 घण्टे का अखण्ड भक्तामर पाठ रखा गया था। जिसमें बाल, युवा, वृद्ध सभी लोगों ने उत्साहपूर्वक लाभ लिया। इसी संदर्भ में भक्ति, अतिथि सत्कार और मुनि संघ की सेवा में विशेष योगदान देने वाले पुरुषवर्ग का मुनिश्री द्वारा आचार्य विद्यासागर धर्म प्रभावना संघ एवं महिला वर्ग का माँ त्रिशला देवी महिला संघ रूप नामकरण किया गया।

धार्मिक पाठशाला सम्मेलन :-

2 अक्टूबर को मुनिश्री आर्जवसागरजी के सान्निध्य में 48 घण्टे के भक्तामर पाठ के समापन के साथ जैन धार्मिक पाठशाला सम्मेलन हुआ। संस्कार बचपन में दिए जाते हैं पचपन में नहीं। आज के युग में पाश्चात्य देश की परम्परा के प्रभाव में हमारी युवा पीढ़ी भटकने से बचे इसलिए धार्मिक संस्कारों की आवश्यकता है। उक्त विचार मुनिश्री ने दिगम्बर जैन मन्दिर,

गोयल नगर में जैन धार्मिक पाठशाला सम्मेलन में व्यक्त किये। मुनिश्री के सान्निध्य में बीस से अधिक जैन मन्दिरों में विद्यासागर सर्वोदय ज्ञान पाठशालाओं की शुरूआत हुई थी उन पाठशालाओं के सैकड़ों बच्चें उपस्थित थे। उन्होंने जो धार्मिक सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ दीं। उनमें प्रथम पुरस्कार माता ऐरादेवी जैन पाठशाला, जावरा वाला मन्दिर, पलासिया, इन्दौर, द्वितीय पुरस्कार आचार्य विद्यासागर सर्वोदय ज्ञान पाठशाला, किशनगढ़ रेनवाल, जयपुर तथा तृतीय पुरस्कार आचार्य विद्यासागर सर्वोदय ज्ञान पाठशाला, नन्दा नगर, इन्दौर को प्रदान किया गया। गोयल नगर, तिलक नगर, संगम नगर, स्मृति नगर, कालानी नगर, समवशरण मन्दिर, मल्हारगंज, परदेशीपुरा, क्लर्क कॉलोनी, छत्रपति नगर, नन्दा नगर, पलासिया, किशनगढ़ रेनवाल, कीर्ति नगर, जयपुर, सुदामा नगर आदि पाठशालाओं के बच्चों ने इस कार्यक्रम में उपस्थिति दी। इन्दौर नगर के लिए इस पाठशाला सम्मेलन का यह बड़ा ऐतिहासिक अद्‌भुत दृश्य रहा।

नसियाँ के मानस्तम्भ में स्थित जिनबिम्बों का अष्टम अभिषेक :-

जवरी नसियाँ के भक्तगणों के विशेष निवेदन पर मुनिश्री आर्जवसागरजी गोयल नगर से विहार करके जवरी नसियाँ पहुँचे। वहाँ पर 6.10.13 तारीख को सरसेठ हुकुमचन्दजी द्वारा निर्मित जवरी नसियाँ में स्थित मानस्तम्भ के जिनबिम्बों का अभिषेक आचार्य श्री विद्यासागरजी के धर्म प्रभावक शिष्य मुनिश्री आर्जवसागरजी के ससंघ सान्निध्य में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर क्षमावाणी उत्सव भी मनाया गया। मानस्तम्भ के निर्माण को 112 वर्ष हो चुके थे। इस अवसर पर मुनिश्री ने कहा कि जिन मन्दिर शान्ति और सुख प्रदान करता है। मानस्तम्भ को देखकर हमारा अभिमान गलित होता है। सम्यक्त्व की प्राप्ति होती है। यही रहस्यमय भावना इस मानस्तम्भ में छुपी है। तभी भगवान के दर्शन कर सम्यक्त्व की प्राप्ति होती है। क्षमावाणी का पर्व आपसी प्रेम भाईचारा आपसी बैर कटुता मिटाने का पर्व है। इससे सभी लोग

आपस में प्रेम भाव और मैत्री भाव से रहें एक दूसरे के प्रति वात्सल्य भाव होना चाहिए। जैन धर्म का सिद्धांत है ''जियो और जीने दो'' का संदेश भगवान महावीर स्वामी ने दिया था। भगवान के समवशरण में आकर शेर, गाय, हाथी, चीता, सर्प, नेवला आदि जीव उनसे दया भाव और करुणा की बात सीखकर अपना कल्याण करते हैं। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि गोविन्द मालू, उपाध्यक्ष, म.प्र. खनिज विकास निगम एवं अश्विन जोशी विधायक थे। धीरेन्द्र कुमार सिंह और कासलीवाल ने अध्यक्षता की। इस अवसर पर आचार्य विद्यासागर धर्म प्रभावना संघ एवं माता त्रिशला देवी महिला संघ, गोयल नगर, इन्दौर; सागर और सूरत से सैकड़ों की संख्या में श्रावक-श्राविकाओं ने भाग लिया। साथ ही मुन्नालाल जी गंगवाल, अशोक पाटनी, पं. जयसेन जैन, चंद्रकुमार सिंह कासलीवाल, कमल सेठी, डॉ. भरत शास्त्री, राजकुमार पाटोदी, भानुकुमार जैन, वीरकुमार जैन, रमेश कासलीवाल आदि ने मुनिश्री को श्रीफल भेंटकर आशीर्वाद प्राप्त किया। कार्यक्रम का संचालन प्रकाश चंद्र शास्त्री ने किया। महेन्द्र जैन नसिया ने आभार व्यक्त किया।

''अहिंसा धर्म और विज्ञान'' विषय पर राष्ट्रीय विद्वत् संगोष्ठी सम्पन्न :-

13.10.13 तारीख को श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर, जवरी नसियाँ में ''अहिंसा धर्म और विज्ञान'' विषय पर राष्ट्रीय विद्वत् संगोष्ठी सम्पन्न हुई। आचार्य श्री विद्यासागरजी के परम शिष्य अध्यात्म योगी मुनिश्री आर्जवसागरजी के सान्निध्य में प्रातः 8:30 बजे प्रथम सत्र की अध्यक्षता विश्व हिन्दु परिषद् के प्रमुख श्री हुकुमचंद सांवला ने की तथा दोपहर के सत्र में अध्यक्षता न्यायमूर्ति श्री एस.एल. जैन ने की। सभी विद्वानों ने अपने आलेख प्रस्तुत किये। मुनिश्री ने समीक्षात्मक वक्तव्य देते हुए कहा कि नींव के बिना महल नहीं, जड़ बिना वृक्ष नहीं वैसे ही अहिंसा और जीव रक्षा के बिना धर्म नहीं। सुमेरु पर्वत के बराबर स्वर्ण का दान दे दो, उससे भी अधिक महत्वपूर्ण है किसी जीव को प्राणदान देना। दान सत्पात्र को निःस्वार्थ भावना से दिया

जाता है। सिर्फ एक विज्ञान पर ही विश्वास मत करो। कई ऐसे विषय हैं जिनसे आज का विज्ञान अनभिज्ञ है। उड़नतश्तरी के बारे में नहीं जानता वह कहता है कि यह ऐसा विमान है जो किसी विकसित जगह पर रहने वाले लोगों का हो सकता है जिसे जानने और वहाँ तक पहुँचने में हमें कई वर्ष लग सकते हैं, अतः विज्ञान अधूरा है। जो धर्म कहता है उसे विज्ञान बहुत बाद में स्वीकार करता है। पृथ्वी, जल, वायु, वनस्पति में जीव हैं यह आप अब स्वीकार कर रहे हो पंचस्थावरों में अग्नि भी जीव है विज्ञान ने जो नहीं खोजा लेकिन धर्म ग्रन्थों में लिखा है अग्नि भी जीव है क्योंकि हर जीव प्राणों से जीता है। प्राणों में श्वासोच्छवास भी एक प्राण है। अगर अग्नि को प्राण वायु न मिले तो अग्नि बुझ जाती है। जैसे किसी बर्तन से अग्नि ढक दी जाय तो वह बुझ जाती है वह जीव नहीं है यह मानना अनुचित है इत्यादि बातों से मुनिश्री ने वैज्ञानिक तथ्यों पर प्रकाश डालते हुए नये-नये विषयों से अवगत करवाया। भोपाल, ग्वालियर, इन्दौर, टीकमगढ़ आदि स्थानों से पधारे विद्वान सर्व श्री पं. रतनलाल शास्त्री, पं. जयसेन जैन, डॉ. अनुपम जैन, श्री रमेश कासलीवाल, श्री हुकुमचन्द सांवला, श्री प्रदीप गोयल, श्री भरत शास्त्री, पं. लालचन्द जैन 'राकेश', पं. जयनिशांत, श्री डॉ. अजित जैन, इंजी. महेन्द्र जैन, पं. सुरेश जैन, श्रीमान अजित पाटनी, डॉ. रमेशकुमार जैन, श्री भानुकुमार जैन आदि विद्वानों ने इसमें सहभागिता निभाई। सभी का समाज की ओर से पं. प्रकाशचन्द शास्त्री तथा होस्टल में रहने वाले आचार्य ज्ञानसागर छात्रावास के विद्यार्थियों द्वारा श्रद्धापूर्वक सम्मान किया गया।

धार्मिक कवि सम्मेलन :-

जवरी नसियाँ में ही 20.10.13 को नेत्र शिविर एवं धार्मिक कवि सम्मेलन सम्पन्न हुआ। इसमें भोपाल से कवि चन्द्रसेन पधारे थे जिन्होंने अपनी कविताओं की प्रस्तुति के साथ मंच संचालन भी किया। और ज्ञानसागर छात्रावास के बच्चों ने भी अपनी-अपनी कविताएं पढ़ी और भी श्रावक-

श्राविकाओं ने भी अपनी-अपनी कविताओं प्रस्तुति दी। पश्चात् मुनिश्री आर्जवसागरजी ने भी रस भरी अपनी कविताओं का पाठ प्रस्तुत किया। उसके बाद गुरुवर ने नेत्र शिविर में आये हुये डॉक्टर्स के लिए अहिंसा का उद्‌बोधन दिया।

फिर वहाँ नसियाँ से विहार करके मुनिश्री आर्जवसागरजी नन्दा नगर के श्रावकों के विनय भरे निवेदन पर पधारे थे। वहाँ पर मुनिश्री आर्जवसागरजी की प्रेरणा एवं आशीर्वाद से खुली पाठशाला के बच्चों को पहले भाग की परीक्षा में उत्तीर्ण हुये बच्चों को पुरस्कारित किया गया। फिर उदयनगर के भक्तगणों के निवेदन पर कि अष्टाह्निका महापर्व में सिद्धचक्र महामण्डल विधान हेतु पात्र चयन के कार्यक्रम में पधारें, फिर नन्दा नगर से विहार करके मुनिश्री आर्जवसागरजी का ससंघ 26.10.13 तारीख को गोयल नगर होते हुए उदय नगर पहुँचे। और 27.10.13 तारीख को बड़े उत्साह से सिद्धचक्र महामण्डल विधान हेतु पात्र चयन का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

'दीपावली पर्व' पर चौबीसवें तीर्थंकर भगवान महावीर के निर्वाण महोत्सव के उपलक्ष्य में उदय नगर मन्दिर चौबीस किलो का निर्वाण लाडू बनाया गया और मुनिश्री आर्जवसागरजी के सान्निध्य में प्रातः सामूहिक अभिषेक, पूजन सम्पन्न होकर बड़े हर्षोल्लास के साथ निर्वाण लाडू चढ़ाया गया और चार सिद्ध क्षेत्रों के अलग चार लाडू चढ़ाये गये। आचार्य श्री विद्यासागरजी के नाम से धार्मिक पाठशाला की स्थापना हेतु संकल्प कलश भी स्थापित किया गया। इस दीपावली शुभ पर्व के उपलक्ष्य में बच्चों के लिए रंगोली प्रतियोगिता एवं आरती सजाओ प्रतियोगिता रखी गयी थी। जिसमें पुरस्कार भी वितरित किये गये। इस वर्ष पाठशाला के सभी बच्चों ने पटाखे जलाने का भी त्याग किया था। और वर्षायोग का निष्ठापन भी इसी दिन भक्तियों के पाठ पूर्वक मुनि संघ द्वारा किया गया। अब हमारा बन्धन टूट गया अब हम कहीं भी विहार कर सकते हैं ऐसा मुनिश्री ने प्रवचन में बतलाया।

मुनिश्री द्वारा निकट स्थित गोयल नगर मन्दिर के वर्षायोग संबंधित मंगल कलशों का भी भक्ति-पाठ पूर्वक निष्ठापन सम्पन्न हुआ।

25 वाँ पिच्छि परिवर्तन समारोह सम्पन्न :-

उदय नगर मन्दिर में 10.11.13 तारीख को अष्टाह्निका महापर्व प्रारम्भ हुआ और सिद्धचक्र महामण्डल विधान भी प्रारम्भ हुआ। सुबह प्रवचन के उपरान्त शोभा यात्रा के साथ मुनिश्री आर्जवसागरजी महाराज ससंघ तिलक नगर के मंदिर में पहुँचे और वहाँ आहार चर्या एवं सामायिक के उपरान्त तिलक नगर मन्दिर के सामने स्कूल के विशाल ग्राउण्ड में पिच्छि परिवर्तन समारोह प्रारम्भ हुआ। मंगलाचरण तिलक नगर के महिलामण्डल ने किया। और चित्र अनावरण एवं दीप प्रज्वलन मुख्य अतिथियों द्वारा किया गया। फिर इस पिच्छि परिवर्तन में भारत की चारों दिशाओं से आये अतिथिगणों का सम्मान हुआ। राजस्थान रामगंजमंडी से श्री चक्रेश जैन, श्री जोशी जी, जयपुर से श्री राजेश जी जौहरी। गुजरात,सूरत से अश्विन जैन सपरिवार, महाराष्ट्र पारोला से श्री जयन्तीलाल जैन, कोपरगांव से श्री पापड़ीवाल एवं साथीगण, तमिलनाडु चेन्नै से सी. कुमार जी एवं साथीगण, म.प्र. की राजधानी भोपाल से इंजी. महेन्द्र जैन, डॉ. नरेन्द्र जैन (कवि) दमोह से (कुण्डलपुर बड़े बाबा की छत्र छाया से) श्रीमान् राजेश जैन सपरिवार श्री सुरेन्द्र जैन सपरिवार एवं पथरिया से (मुनिश्री आर्जवसागरजी के गृहस्थ अवस्था की माँ) श्री मायादेवी आदि अतिथियों का सम्मान हुआ। तत्पश्चात् गोयल नगर के माँ त्रिशलादेवी महिला संघ के द्वारा बहुत ही सुन्दर तरीके से देवांगनाओं के परिवेश में मुनिश्री आर्जवसागरजी की पूजन सम्पन्न की गयी। पश्चात् मुनिश्री के पादप्रक्षालन श्रीमान् सुन्दरलाल बीड़ी वालों ने किया। पश्चात् 25 वें पिच्छि परिवर्तन समारोह के उपलक्ष्य में 25 शास्त्र 25 व्यक्तियों द्वारा मुनिश्री को भेंट किये गये तथा उदासीन आश्रम की व्रती बहिनों द्वारा भी मुनि संघ के लिए शास्त्र दान किया गया। तदुपरान्त माँ त्रिशलादेवी महिला संघ गोयल नगर द्वारा मुनिश्री की

आरती की गयी। इस पिच्छि परिवर्तन के विशाल पाण्डाल में लगभग 5000 लोगों ने यह पावन दृश्य देखा। फिर 24 अक्टूबर से 9 नवम्बर तक हुये कण्ठपाठ प्रतियोगिता के परिणाम घोषित किये गये। इसमें बच्चों के लिए पाँच विषय एवं बड़ों के लिये 6 विषय रखे गये थे। इस **'कण्ठपाठ प्रतियोगिता'** में करीब 150 लोगों ने लाभ लिया।

तदुपरान्त मुनिश्री आर्जवसागरजी का प्रवचन हुआ। प्रवचन भक्ति का अतिशय ज्वार के दाने मोती बने वाली बात महाराजजी ने बतायी व पिच्छि का महत्व भी बतलाया। इसके पश्चात् आकाश मार्ग से सौधर्म इन्द्र नृत्य करते हुए पिच्छि को लाये और पिच्छि परिवर्तन में पहली पिच्छि देने का सौभाग्य डॉ. नरेन्द्र जैन तलाटी सपत्नीक गोयल नगर, इन्दौर, श्री परमेष्ठी दास सोगानी,गोयल नगर, इन्दौर, श्री सनतकुमार झांझरी सपत्नीक गोयल नगर इन्दौर, श्री कूलभूषण सपत्नीक गोयल नगर इन्दौर, श्री अश्विन जैन सपत्नीक सूरत और अंजना जैन उदय नगर इन लोगों को मिला। पुरानी पहली पिच्छि लेने का सौभाग्य श्री सुनील कुमार जैन, श्रीमती उर्मिला जैन, उदयनगर के पास तोतला नगर इन्दौर वालों को मिला। दूसरी पिच्छि देने का सौभाग्य श्री पी.सी. जैन, श्रीमती निर्मला जैन, उदयनगर वालों को मिला। दूसरी पिच्छि लेने का सौभाग्य श्रीमती प्रभा देवी जैन विधानचन्द्र जी जैन उदयनगर इन्दौर वालों को मिला। इस प्रकार यह 25 वाँ पिच्छि परिवर्तन समारोह इन्दौर का एक इतिहास बन गया। अंत में संपूर्ण जैन समाज का सामूहिक वात्सल्य भोज बड़े हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ।

श्री सिद्धक्षेत्र बावनगजा यात्रा:-

सन्त शिरोमणी महाचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज के परम शिष्य वात्सल्यमूर्ति, धर्मप्रभावक, अध्यात्म योगी मुनिश्री आर्जवसागरजी महाराज जी उदय नगर इन्दौर से विहार करके खातीवाला टैंक होते हुए महु नगर पहुँचे। वहाँ के मन्दिरों का दर्शन करके महानपुर एवं गुजरी गाँव के जिनालय भी दर्शन

करके धामनोद नगर पहुँचे। यहाँ पर दो दिन प्रवचन का लाभ दिया। फिर धर्मपुरी में तीन दिन वास्तव्य रहा एवं प्रवचन हुये। इस विहार में साथ रहने वाले प्रवीण पंचोली, परमेष्ठी दास सोगानी, श्री कुमार जैन, सुनील जैन, कुलभूषण जैन, पदम काला, अजय जैन, महावीर जैन, सुमित जैन, भूपेन्द्र जैन आदि ने विहार का पुण्य लाभ उठाया। चक्रेश बागड़िया परिवार रामगंजमंडी वालों का भी विशेष योगदान रहा।

तदुपरान्त बाकानेर में दस दिन रुक करके प्रवचन हुये। फिर मनावर में आठ दिन प्रवचन मालायें चली फिर सिंघाना में चार दिन रहे। पश्चात् बड़वानी में 15 दिन ठहर करके विशेष प्रवचन द्वारा धर्मप्रभावना की। इसके मध्यकाल में सिद्ध क्षेत्र बावनगजा कमेटी से राजकुमार जैन मनावर आदि ने 27, 28, 29 तारीख को होने वाले श्री आदिनाथ भगवान का मोक्ष कल्याणक और महामस्तकाभिषेक एवं वार्षिक मेला में पधारने हेतु विनम्र निवेदन किया। भव्यों के पुण्य उदय से बावनगजा सिद्धक्षेत्र में मण्डल विधान, महामस्तकाभिषेक आदि कार्यक्रम मुनिसंघ के सान्निध्य में ब्र. नितिन भैया इन्दौर के निर्देशन में सम्पन्न हुआ। मुनिश्री के प्रवचनों से प्रभावित होकर क्षेत्र पर चौबीसी और प्रमुख मन्दिर तथा विशाल प्रतिमाएँ और प्रमुख सिंहद्वार हेतु विशेष दान की घोषणायें की गयीं। 15 दिन क्षेत्र पर रहकर कई बार चूलगिरि की वंदनायें कीं। एक वंदना में बड़वानी जिले के कलेक्टर श्री शोभित जैन अपनी माँ के साथ मुनिश्री का कमण्डल ले करके बिना चप्पल के साथ में चल रहे थे। मुनिश्री को क्षेत्र कमेटी द्वारा क्षेत्र पर रुकने के लिये निवेदन किये जाने पर भी मुनिश्री का विहार पूर्व दिशा की ओर हो गया।

श्री सिद्धक्षेत्र पावागिरि (ऊन) की पावन यात्रा :-

मुनिश्री बावनगजा से विहार करके बड़वानी होते हुए अंजड़ नगर पहुँचे। अंजड़ में सात दिन प्रवचन चले। श्री दिगम्बर जैन पार्श्वनाथ धार्मिक पाठशाला की स्थापना हुई। फिर वहाँ से विहार करके लोनारा गाँव आये। यहाँ

पर पाँच दिन प्रवचन मालायें चलीं। यहाँ दिगम्बर जैन मन्दिरों के पास 10-15 जैन परिवार निवास करते हैं। साथ ही इतर (गूजर आदि) जाति में जन्में कुछ परिवार भी जैन धर्म का पालन करते हैं। फिर लोनारा से पावागिरि (ऊन) सिद्धक्षेत्र पर 15 फरवरी 2014 को भव्य मंगल प्रवेश हुआ। इस विहार में मुन्नालाल जैन, धर्मेन्द्र जैन, आशीष जैन, मनीष और राजेश जैन आदि का सहयोग रहा।

पावागिरि (ऊन) का महोत्सव सम्पन्न :-

सन्त शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागरजी के परम शिष्य अध्यात्म योगी मुनिश्री आर्जवसागर जी महाराज के सान्निध्य में पावागिरी (ऊन) सिद्धक्षेत्र पर दिनांक 20.3.14 व 21.3.14 को मस्तिकाभिषेक एवं वार्षिक मेला सानन्द सम्पन्न हुआ। जिसमें 20.3.14 तारीख को सुबह मंगलाष्टक पूर्वक अभिषेक एवं शांतिधारा, पूजन हुई। पश्चात् ध्वजारोहण किया गया। फिर मुनिश्री का मंगल प्रवचन हुआ तथा दोपहर में पंच परमेष्ठी विधान एवं मुनिश्री का मंगल प्रवचन सम्पन्न हुआ। शाम को गुरु भक्ति, आरती, आदि कार्यक्रम हुये। 21.3.14 को प्रातः अभिषेक एवं शांतिधारा पूजन हुई। पश्चात् मुनिश्री का मंगल प्रवचन हुआ। दोपहर में महामस्तिकाभिषेक के लिए बोलियाँ लगाई गईं। पश्चात् सम्मान समारोह हुआ। फिर भोपाल से पधारे डॉ. सुधीर जैन एवं इंजी महेन्द्र जैन ने भाव विज्ञान पत्रिका के नवीन अंक का विमोचन क्षेत्र कमेटी के साथ सम्पन्न किया। इस समारोह में पूरे निमाड़ के लोग सम्मिलित हुये और इंदौर के उदय नगर आदि से दो-तीन बसें तथा अनेक वाहन आये थे। फिर अपने नगर में पधारने हेतु मंडलेश्वर, कसरावाद, खरगोन आदि नगरों के लोगों ने मुनिश्री को श्रीफल भेंट किये। ऐसे अपार जन समुदाय के बीच मुनिश्री ने नारियल में मोक्षमार्ग की शिक्षा के विषय पर धार्मिक प्रवचन दिया। पश्चात् महावीर मंदिर से भगवान की शोभा यात्रा निकली तथा जुलूस के साथ ऊपर पहाड़ी मंदिर पर पहुँचे । फिर वहाँ की विशाल प्रतिमा शान्तिनाथ, कुन्थुनाथ,

अरहनाथ भगवान का महामस्तिकाभिषेक हुआ। पश्चात् मुनिश्री का मंगल आशीर्वचन हुआ। इस प्रकार यह कार्यक्रम मंगलमय सानन्द सम्पन्न हुआ।

पश्चात् मुनिश्री आर्जवसागरजी महाराज ने खरगोन नगर वासियों के विनम्र निवेदन पर 23.3.14 तारीख की शाम को ऊन पावागिरि से विहार किया। फिर 24.3.14 तारीख को प्रातः खरगोन नगर में बैंड बाजों व जय-जयकारों के साथ मुनिश्री का मंगल प्रवेश हुआ। फिर खरगोन के लोगों ने महावीर जयन्ती पर्व यहीं पर मनाने के लिये निवेदन किया।

खरगोन नगर की अपूर्व प्रभावना :-

महावीर जयंती पर्व 13.4.14 तारीख को प्रातः महावीर चैत्यालय से पार्श्वनाथ मन्दिर तक श्रीजी की शोभा यात्रा निकली। जिसमें मुनिश्री आर्जवसागरजी महाराज भी साथ थे। फिर पार्श्वनाथ मन्दिर में अभिषेक, शान्तिधारा सम्पन्न हुई। फिर पुनः श्रीजी को महावीर चैत्यालय तक ले आये, वहाँ पर भी अभिषेक हुआ। फिर दोपहर में मुनिश्री आर्जवसागरजी महाराज के 27 वाँ दीक्षा जयन्ती दिवस मनाया गया। जिसमें भोपाल से पवन जैन परिवार, सूरत से हर्षद भाई, सुरेश गांधी आदि अनेक स्त्री पुरुष तथा अनेक जगह से भी लोग पधारे थे। स्थानीय महिला मण्डल एवं पाठशाला के बच्चों द्वारा मंगलाचरण से कार्यक्रम की शुरूआत हुई। फिर सूरत से पधारे श्री हर्षद भाई, सुरेश गाँधी आदि लोगों ने आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज का चित्र अनावरण किया। पश्चात् दीप प्रज्ज्वलन किया। फिर मुनिश्री का पाद प्रक्षालन सूरत वालों ने किया और मुनिश्री की पूजन की गई। जिसमें एक-एक परिवार ने आकर के सजी हुई द्रव्यों की थाली को भक्ति भाव से चढ़ाया। एवं 27 दीपों द्वारा मुनिश्री की आरती की गई। धरमचन्द्र अजमेरा खरगोन परिवार ने मुनिश्री को शास्त्र भेंट किया। फिर स्थानीय कविवर ने मुनिश्री के ऊपर कवितायें सुनायीं। खरगोन के समाज द्वारा मुनिश्री को ग्रीष्मकालीन वाचना हेतु श्रीफल चढ़ाये गये। अतिथियों का सम्मान हुआ। सम्पूर्ण कार्यक्रम का संचालन जैन

समाज खरगोन के अध्यक्ष श्री विनोद जैन ने किया। साथ ही, उच्च न्यायालय सिक्किम के चीफ जस्टिस एन.के. जैन सपत्निक एवं खरगोन न्यायालय में पदस्थ न्यायाधीश श्री संजय जैन ने मुनिश्री को श्रीफल भेंट किया। मुनिश्री का मंगल प्रवचन हुआ। रात में भी पाठशाला के बच्चों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम हुआ एवं बालक महावीर को पालना में झुलाया गया। इस प्रकार यह महावीर जयन्ती का कार्यक्रम सानन्द पूर्वक मनाया गया। पश्चात् मुनिश्री द्वारा रचित सम्यक् ध्यान शतक पर दैनिक प्रवचन प्रारम्भ हुये। प्रवचन सुनने श्वेताम्बर लोग भी आते रहे।

अक्षय तृतीया पर्व दिनांक 2.5.14 को खरगोन की ब्रिज विहार कॉलोनी में मुनिश्री आर्जवसागरजी महाराज के सान्निध्य में मनाया गया। और प्रतिदिन मुनिश्री ने सुप्रभात, अद्याष्टक आदि अनेक स्तोत्रों के अर्थ एवं प्रश्नोत्तर रत्नमालिका आदि विषयों पर प्रवचन दिये और दोपहर में ज्ञानार्णव शास्त्र पढ़ाया। श्रुत पंचमी पर्व 2.6.14 तारीख को श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर खरगोन में मनाया गया। जिसमें प्रातः अभिषेक, शांतिधारा के उपरान्त जिनवाणी की शोभा यात्रा निकली। पश्चात् श्रुतपंचमी पूजन की गई। भोपाल से पधारे डॉ. अजित जैन, श्री डॉ. सुधीर जैन ने तीर्थोदय काव्य के नये संस्करण का विमोचन कमेटी के साथ सम्पन्न किया। मुनिश्री का मंगल प्रवचन हुआ। इस प्रकार श्रुत पंचमी पर्व सानन्द सम्पन्न हुआ।

मुनिश्री आर्जवसागरजी की धर्म प्रभावनाः-

सन्त शिरोमणी आचार्य श्री 108 विद्यासागरजी महाराजजी के परम शिष्य अध्यात्म योगी वात्सल्य मूर्ति, धर्मप्रभावक मुनिश्री 108 आर्जवसागरजी महाराजजी का खरगोन में धर्मप्रभावना पूर्वक ग्रीष्मकालीन प्रवास के दौरान जैनागम की वाचना एवं सम्यक् ध्यान शतक पर प्रवचन हुए और पार्श्वनाथ दि. जैन मन्दिर की कमेटी द्वारा वर्षायोग हेतु निवेदन किया गया। पश्चात् दि. 15.6.14 को खरगौन से विहार करके लुहारी, ओझँरा होते हुए दि. 18.6.14

को कसरावद नगर प्रवेश हुआ। वहाँ पर दो दिन प्रवचन दिये। फिर वहाँ से विहार करके 19 जून की शाम को मण्डलेश्वर में प्रवेश हुआ। बैंड-बाजों के साथ नगर के सभी लोगों ने कलश लेकर और पाद प्रक्षालन करते हुए मुनिश्री की आगवानी की। यहाँ पर तीन दिन ठहरकर प्रवचन आदि के माध्यम से धर्म प्रभावना हुई। पश्चात् दि. 23 को सुबह विहार करके धरगाँव पहुँचे फिर पीपल्या, किठूत् होते हुए दि. 26 को बड़वाह नगर में कवँर कालोनी में बाजों और भक्तों के मंगलगान के साथ प्रवेश हुआ। दो दिन का प्रवास रहा प्रवचन भी दिये और वहाँ के लोगों ने चातुर्मास हेतु बड़ी भावना के साथ श्रीफल भेंट किये। पश्चात् दि. 28 जून को सिद्धक्षेत्र सिद्धवरकूट के लिए विहार हुआ और ता. 29 को सिद्धवरकूट सिद्धक्षेत्र में प्रवेश हुआ।

आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज का 47 वाँ दीक्षा दिवस और सि.क्षे. सिद्धवरकूट दर्शन :-

दो चक्री, दश कामकुमार जहाँ से मोक्ष गये ऐसे उस पावन श्री सिद्धक्षेत्र सिद्धवरकूट में दि. 2.7.14 को महाचार्य विद्यासागरजी महाराज का 47 वाँ दीक्षा दिवस मनाया गया। जिसमें आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराजजी का चित्र अनावरण श्री भूपेन्द्र भाई जैन, सूरत वालों ने किया। पश्चात् मंगलाचरण कुमारी सलोनी जैन सूरत ने किया। फिर मुनिश्री का पाद प्रक्षालन क्षेत्र की कमेटी वालों ने किया। पश्चात् मुनिश्री को शास्त्र भेंट श्री कैलाशचन्द जी जैन बस, बड़वाह वालों ने किया। तदुपरान्त श्री सतेन्द्र जैन, श्री भारती जैन, श्री अशोक जैन व राजेन्द्र जैन 'वास्तु' आदि ने आचार्य श्री के संबंध में अपने वक्तव्य दिये। पश्चात् मुनिश्री का मंगल प्रवचन हुआ। जिसमें आचार्य श्री के दीक्षा दिवस पर प्रकाश डालते हुए ध्यान व सम्यग्दर्शन पर उपदेश दिया। सिद्धवरकूट के पास खरगोन से वर्षायोग निवेदन हेतु कमेटी के पदाधिकारीगण आये और सिद्धवरकूट में ही खातेगाँव के समाज की कमेटी के लोगों ने बड़ी भक्ति भावना से आकर वर्षायोग हेतु निवेदन किया।

खातेगाँव में भव्य मंगलप्रवेश:-

तदुपरान्त दि. 4.7.14 को सिद्धवरकूट से विहार हो गया। थोड़े दूर तक करीब 40, 50 कि.मी. तक घोर जंगल का रास्ता रहा। कुन्डी, बडैल, किशनगढ़, गोदना, लोहारदा, सतवास, अजनास गाँवों से होते हुए दि. 10.7.14 शाम को खातेगाँव में अपार जन समूह और बैंड-बाजे के साथ मंगल प्रवेश हुआ। खातेगांव समाज के लोगों ने चातुर्मास के लिए विनम्र निवेदन करते हुए श्रीफल भेंट किया। दि. 12.7.14 को गुरु पूर्णिमा पर मुनिश्री का मंगल प्रवचन हुआ और दोपहर में पं. अभिषेक एवं पं. आशीष शास्त्री दमोह के निर्देशन में हुए सिद्धचक्र महामण्डल विधान के समापन पर श्रीजी की शोभा यात्रा निकली जिसमें मुनिश्री भी साथ में थे। लोगों ने घर-घर के सामने आरती एवं पाद प्रक्षालन किया। बहुत बड़ा जुलूस निकला जिसमें घोड़े, बैंड-बाजे एवं रथ में प्रमुख इन्द्रगण बैठे। धर्म का जय घोष करते हुए भारी जनता के साथ अपूर्व धर्म प्रभावना हुई।

चातुर्मास प्रतिष्ठापन एवं कलश स्थापना कार्यक्रम

धर्मनगरी खातेगाँव (जि. देवास) में अध्यात्म योगी धर्मप्रभावक मुनिश्री 108 आर्जवसागरजी महाराज का चातुर्मास प्रतिष्ठापन एवं कलश स्थापना का कार्यक्रम दिनांक 13.7.14 को वीरशासन जयन्ती के दिन रखा गया। जिसमें पहले ज्ञानोदय पाठशाला खातेगाँव की शिक्षिकाओं ने मंगलाचरण किया। पश्चात् कुण्डलपुर के बड़े बाबा के चित्र अनावरण खातेगाँव के अध्यक्ष श्री जम्बूकुमार सेठी एवं भोपाल से पधारे श्री इंजी. महेन्द्र जैन एवं दिल्ली से पधारे श्री लोकेश जैन आदि भक्तों ने किया और आचार्य श्री विद्यासागर जी का चित्र अनावरण खातेगाँव समाज के महामंत्री श्री जैन मुकेश काला एवं सी. कुमार जैन, तमिलनाडु आदि लोगों ने किया। पश्चात् बड़े बाबा के चित्र के सामने दीप प्रज्ज्वलन कोपरगाँव महाराष्ट्र वालों ने किया। बाहर से पधारे दिल्ली, कोपरगाँव, दमोह, पथरिया, सूरत, तमिलनाडु आदि जगह से पधारे अतिथियों का सम्मान किया गया। तदुपरान्त दि. जैन समाज, खातेगाँव

वालों ने मुनिश्री से चातुर्मास के लिए निवेदन करते हुए श्रीफल अर्पित किया। पश्चात् कलश स्थापना के लिए बोलियाँ हुई। जिसमें अतिथि सत्कार कलश का सौभाग्य श्री मनोज कुमार हुकुमचन्द जी पट्टा खातेगाँव को और धर्मप्रभावना कलश का सौभाग्य श्री कैलाशचन्दजी फूलचन्द जी (जैन बस) बड़वाह वालों को और ज्ञान वृद्धि कलश का सौभाग्य श्रीमती वैशाली अश्विन जैन, सूरत वालों को मिला और मुनिश्री का पाद प्रक्षालन का सौभाग्य श्री लोकेश जैन दिल्ली वालों को एवं मुनिश्री के कर कमलों में शास्त्र भेंट करने का सौभाग्य श्री नारी चेतन महिला मण्डल, खातेगाँव वालों को मिला। पश्चात् मुनिश्री का ''गुरु उपकार'' इस विषय पर मंगल प्रवचन हुआ। तदुपरान्त कलशों की स्थापना मंत्र उच्चारण के साथ किया एवं मुनिश्री ने अपनी भक्तियों के माध्यम से चातुर्मास प्रतिष्ठापन किया। चातुर्मास में सुबह के प्रवचन में एक महीने तक षट् कर्मों (कर्त्तव्यों) एवं सम्यक् ध्यान के विषय पर चले। फिर सोलहकारण भावनाओं के ऊपर प्रवचन चले थे। दोपहर में तत्त्वार्थ सूत्र की कक्षा एवं शाम को गुरु भक्ति, आरती एवं जीवन संस्कार के माध्यम से भक्ति, स्तुति पाठ चलता था।

भगवान पार्श्वनाथ का मोक्षकल्याणक

खातेगाँव में मुनिवर के सान्निध्य में दि. 3.8.14 को भ. पार्श्वनाथ का मोक्षकल्याणक दिवस मनाया गया। जिसमें नित्य नियम पूजन के साथ पार्श्वनाथ भगवान की पूजन की गयी और दोनों मन्दिरों में निर्वाण लाडू चढ़ाया गया। फिर मुनिश्री आर्जवसागरजी महाराज का प्रवचन हुआ। जिसमें उन्होंने पार्श्वनाथ भगवान के जीवन चरित्र पर उद्बोधन दिया। इन्दौर शहर के उदय नगर से काफी संख्या में (बस भरकर) लोग आये और उन्होंने भगवान पार्श्वनाथ के चरणारबिन्द में लाडू समर्पित किये तथा उदय नगर में पंचकल्याणक हेतु मुनिवर के चरणों में निवेदन किया। फिर सायंकाल में पार्श्वनाथ भगवान के जीवन दर्शन पर प्रश्नमंच किया गया।

महापर्व सोलहकारण:-

प्रतिवर्ष की तरह महापर्व षोडसकारण पर्व 9.8.14 तारीख को प्रारंभ हुआ। जिसमें खातेगाँव के बहुत संख्या में लोग व्रत संयम के साथ यह पर्व मना रहे थे। दिनांक 9 अगस्त को षोडसकारण कलश स्थापना का कार्यक्रम हुआ। कलश स्थापना का सौभाग्य पारसकुमार प्रकाश चन्द जी बाकलीवाल, नसीराबाद को मिला और प्रतिदिन प्रातः संगीतमय पूजन एवं मुनिश्री का प्रवचन एवं शाम को महाआरती और पंडितजी के प्रवचन का कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ। यह कार्यक्रम ग्वालियर से पधारे पं. चन्द्रप्रकाश चन्दर के निर्देश में हुआ। फिर 10.8.14 तारीख को रक्षाबन्धन पर्व मनाया गया और श्रेयांसनाथ भगवान का मोक्ष कल्याणक दिवस भी मनाया गया। मुनिश्री के परम सान्निध्य में दोनों मन्दिरों में श्रेयांसनाथ भगवान की पूजन के साथ निर्वाण लाडु चढ़ाया गया। मुनिश्री का मंगल प्रवचन हुआ जिसमें सात सौ मुनियों की रक्षा कैसे हुयी इस विषय पर विष्णु कुमार मुनि का दृष्टान्त सुनाया गया और हम भी धर्म की रक्षा कैसे करें, इस पर भी प्रकाश डाला गया। दिनांक 27.8.14 को चारित्र चक्रवर्ती आचार्य शान्तिसागर जी महाराज का समाधि दिवस मनाया। जिसमें मुनिश्री के सान्निध्य में आ. शांतिसागरजी महाराज का चित्र अनावरण एवं पूजन की गयी। पश्चात् मुनिश्री ने आचार्य शांतिसागरजी महाराज का जीवन परिचय से सम्बन्धित एवं लिखित अष्टक का पाठ कर तत्सम्बन्धी संस्मरण सुनाये। दि. 30.8.14 से 9.9.14 तक दशलक्षण पर्यूषण महापर्व में श्रावक साधना हेतु ग्वालियर, दमोह, जयपुर, महाराष्ट्र, भोपाल, तमिलनाडु आदि स्थानों से लोगों ने आकर धर्म लाभ लिया।

मुनिश्री की धर्मप्रभावना:-

सन्त शिरोमणी आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज के परम शिष्य अध्यात्म योगी वात्सल्य मूर्ति मुनिश्री आर्जवसागरजी महाराज के चातुर्मास के अन्तर्गत खातेगाँव में **पर्यूषण पर्व** सानन्द सम्पन्न हुआ। जिसमें दसलक्षण पर्व

के संकल्प कलश की स्थापना श्री दीपककुमार जैन, जयपुर वालों ने की थी। पर्व में श्रावकों ने रोज प्रभु की भक्ति पूजन के साथ मुनिश्री का दसधर्मों के ऊपर प्रवचन रूपी अमृत का पान किया। दोपहर में तत्त्वार्थसूत्र के दस अध्यायों का पाठ एवं मुनिश्री के मुखारबिन्द से एक अध्याय का अर्थ सहित वाचन/प्रवचन होता था। शाम को आरती, सांस्कृतिक कार्यक्रम आदि हुये। इस तरह यह पर्यूषण पर्व संयम, तप, ध्यान में व्यतीत हुआ। पर्व में भगवान पुष्पदंत एवं भगवान वासुपूज्य का निर्वाण कल्याणक भी मनाया गया। कुछ लोगों ने पर्व में दस उपवास और कुछ लोगों ने पाँच, तीन आदि उपवास किये। षोडसकारण मण्डल विधानोत्सव के उपरान्त ता. 9.9.14 को क्षमावाणी पर्व मनाया गया। विमानोत्सव के साथ तीनों मंदिरों के कलशाभिषेक के साथ बड़े मन्दिर के बाहर यह क्षमावाणी पर्व मनाया। सबने आपस में हार्दिक क्षमायाचना की। जिन्होंने सोलहकारण, दसलक्षण व्रत किये थे उनका और बाहर से पधारे अतिथियों को खातेगांव कमेटी की ओर से सम्मानित किया गया।

ता. 28.9.14 को खातेगाँव में **विद्याधाम कालोनी** के शुभारम्भ पर मुनिश्री का प्रवचन कालोनी के मैदान में रखा गया था। जिसमें नगर विधायक श्री आशीष शर्मा व मण्डी अध्यक्ष आदि मान्यगण लोग पधारे थे। उन्होंने मुनिश्री को श्रीफल भेंट कर दर्शन किया और प्रवचन भी सुना। मुनिश्री ने प्रवचन में अहिंसा, शाकाहार, संस्कार आदि का संदेश सुनाया और इन्दौर से भी बस आयी थी जिसमें जिनेश झांझरी, पदम काला, कमल सेठी आदि लोग भी इन्दौर से इस दिन पधारे थे।

पश्चात् ता. 8.10.14 को शरद पूर्णिमा के दिन श्री **विद्यासागर कॉलेज**, खातेगाँव में मुनिश्री का मंगल प्रवचन सम्पन्न हुआ था। जिसमें स्कूल के सभी बच्चे एवं शिक्षकगण और समाज के सभी श्रावकगण भी उपस्थित थे। मुनिश्री को बाजे के साथ स्कूल तक ले गये, स्कूल के द्वार पर पाद प्रक्षालन भी

किया। पश्चात् मंगलाचरण, दीप प्रज्ज्वलन, श्रीफल भेंट आदि कार्यक्रम हुये। पश्चात् मुनिश्री ने अहिंसा, एजुकेशन, संस्कार आदि विषयों पर प्रकाशन करते हुए बहुत ही मार्मिक प्रवचन दिये। सबको प्रवचन इतना रुचिकर लगा कि सब सुनते ही रह गये, डेढ़, दो घंटे होने के बाद भी निराकुलता के साथ सुनते रहे। यही तो मुनिश्री के प्रवचन की विशेषता है।

ता. 2.10.14 को प्रातः धार्मिक **कवि संगोष्ठी** की गयी। जिसमें इंदौर, भोपाल आदि से भी पधारे कवियों ने अपनी कविताएँ सुनाईं। करीब 20 लोगों ने इसमें भाग लिया। अन्त में मुनिश्री ने भी अपनी आध्यात्मिक कविताएँ सुनाईं। पश्चात् ता. 12.10.14 को धार्मिक पाठशाला सम्मेलन के तहत **संस्कार महोत्सव** का कार्यक्रम हुआ। जिसमें विभिन्न स्थानों से पाठशाला के बच्चे अपना धार्मिक कार्यक्रम दिखाने आये थे। जैसे आष्टा, भोपाल (पंचशील नगर), उदय नगर, नन्दा नगर (इंदौर), संदलपुर, हाट पीपल्या और खातेगाँव के बच्चों ने बहुत ही मार्मिक धार्मिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति दी। जिसमें पहला स्थान आष्टा पाठशाला, द्वितीय स्थान हाटपीपल्या पाठशाला और तृतीय स्थान नन्दा नगर (इंदौर) पाठशाला को मिला। इनको खातेगाँव कमेटी की ओर से पुरस्कारित किया गया। साथ ही, अजित कुमार, संजय कुमार गंगवाल आदि की ओर से सभी बच्चों को भी पुरस्कारित किया गया।

चातुर्मास में मुनिश्री सुबह सम्यक् ध्यान, सोलहकारण, दशलक्षण धर्म और पर्व के बाद इष्टोपदेश और वारसाणुवेक्खा शास्त्र पर प्रवचन दिये। दोपहर में तत्त्वार्थ सूत्र, द्रव्य संग्रह, समाधितन्त्र शास्त्र पढ़ाये तथाहि शाम को गुरुभक्ति के समय बच्चों को संस्कार देने वाली कविताओं के साथ स्तोत्र पाठ आदि का अर्थ बताया गया।

ता. 13.10.14 से **कण्ठ पाठ प्रतियोगिता** प्रारम्भ की गयी। जिसमें बच्चों के अलग और बड़ों के अलग विषय रखे गये थे। जैसे बच्चों के लिए गोम्मटेश स्तुति, पंचगुरु भक्ति, दर्शन पाठ, बारह भावना, मेरी भावना और

दर्शन स्तुति ये छह विषय रखे गये थे। और बड़े लोगों के लिए भक्तामर स्तोत्र, तत्त्वार्थ सूत्र, इष्टोपदेश, छहढाला, सामायिक पाठ (संस्कृत) ये पांच विषय रखे गये थे। यह कार्यक्रम 20.10.14 तक चला था। कण्ठपाठ सुनाने वालों की कुल संख्या करीब 60 थी। इसमें प्रथम, द्वितीय, तृतीय स्थान में उत्तीर्ण हुये प्रतियोगियों को पिच्छि परिवर्तन के दिन स्वर्णिम प्रतीक चिन्ह से पुरस्कारित किये जाना निश्चित किया गया था।

ता. 23.10.14 को **दीपावली पर्व** हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। सुबह सामूहिक अभिषेक, पूजन के साथ भगवान महावीर का निर्वाण लाडू चढ़ाया गया। पश्चात् मुनिश्री ने सुबह निर्वाण भक्ति आदि पढ़कर भगवान महावीर निर्वाण दिन मनाया था। 1008 चन्द्रप्रभु (छोटे) मंदिर में भी मुनिश्री आर्जवसागरजी महाराज के पावन सान्निध्य में निर्वाण लाडू चढ़ाया गया और शास्त्र भेंट के समय मुनिश्री ने पञ्चकल्याणक करने हेतु प्रेरणा दी तथा गुरुवर आचार्यश्री विद्यासागर के पास जाकर 15 दिनों के अन्दर आमन्त्रण के निवेदन करने का एवं जब तक न पधारें तब तक एक माला फेरने का नियम दिया। पश्चात् बड़े मंदिर के प्रवचन हॉल में वर्षायोग निष्ठापन की भक्तियाँ पढ़कर वर्षायोग का निष्ठापन किया गया। पश्चात् मुनिश्री ने भगवान महावीर के जीवन दर्शन पर प्रकाश डालते हुए प्रवचन दिये। तदुपरान्त चातुर्मास का निष्ठापन क्षमा भावना के साथ सम्पन्न किया गया। नगर वासियों ने एवं कमेटी के लोगों ने भी मुनिश्री से क्षमायाचना की। सायंकाल में श्रावकों द्वारा गौतम गणधर की पूजा की गयी और अपने-अपने द्वार पर सबने दीप जलाकर केवलज्ञान की खुशियाँ मनायीं और महावीराष्टक का पाठ किया। गुरु भक्ति के समय भगवान महावीर पर प्रश्नमंच भी सम्पन्न किया गया।

ता. 26.10.14 को **पिच्छि परिवर्तन** का कार्यक्रम हुआ। इसी दिन सुबह **श्री समवसरण महामण्डल विधान** महोत्सव प्रारम्भ हुआ। इस विधान को सम्पन्न कराने हेतु इंदौर से डॉ. भरतकुमार शास्त्री आये थे। सुबह

देव दर्शन, गुरु आज्ञा के पश्चात् प्रातः 7.00 बजे घट यात्रा से विधान का शुभारम्भ हुआ। पट्टा परिवार खातेगाँव वालों ने ध्वजारोहण किया। पश्चात् पात्र चयन हुआ। फिर सकलीकरण आदि का कार्यक्रम हुआ। पश्चात् मुनिश्री का मंगल आशीर्वाद रूप प्रवचन मिला। तदुपरान्त अभिषेक शान्तिधारा के साथ पूजन प्रारम्भ हुई। इस विधान में सौधर्म इन्द्र श्री जम्बुकुमार जैन सेठी दम्पत्ति बने और ईशान इन्द्र श्री रितेश जैन बाकलीवाल परिवार बने और कुबेर बनने का सौभाग्य श्री कपूरचन्द जी बाकलीवाल बसवालों ने प्राप्त किया। समवसरण की रचना श्री महेन्द्र जैन पट्टा परिवार की ओर से की गई तथा समवसरण मण्डप का उद्घाटन श्री भानुकुमार जी जैन (पत्रकार) इन्दौर वालों ने किया। यह समवसरण महामण्डल विधान खातेगाँव में पहली बार हुआ। पूरी समाज के लोगों ने इस विधान में हर्षोल्लास के साथ भाग लिया।

पिच्छी परिवर्तन का कार्यक्रमः-

दोपहर 2.00 बजे मुनिश्री आर्जवसागरजी महाराज का पिच्छि परिवर्तन का कार्यक्रम शुरू हुआ। मुनिश्री के संघ के साथ पाठशाला की शिक्षिकायें पिच्छि को सिर पर लेकर चलीं और कलश वाले चातुर्मास के तीनों कलशों को बैंड बाजों के साथ पंडाल तक लेकर आये। समाज के लोग भी साथ में चले थे। पश्चात् पंडाल में संघस्थ ब्र. बहिनों ने मंगलाचरण से शुभारम्भ किया। फिर अतिथियों द्वारा कुण्डलपुर के बड़े बाबा का चित्र अनावरण एवं संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज का चित्र अनावरण किया गया। पश्चात् दीप प्रज्ज्वलन किया गया। पश्चात् बाहर से पधारे अतिथियों का सम्मान किया गया जिसमें भोपाल, सूरत, दिल्ली, दमोह, खरगोन, रामगंजमंडी, जयपुर, तमिलनाडु, महाराष्ट्र, ऊन, संदलपुर, नेमावर आदि स्थानों से पधारे थे। नेमावर सिद्धोदय आश्रम के भव्यगणों, व्रतियों ने नेमावर क्षेत्र व आश्रम में पधारने का मुनिश्री से नम्र निवेदन करते हुए श्रीफल अर्पित किये। पश्चात् खातेगांव पाठशाला की शिक्षिकाओं ने एक धार्मिक प्रस्तुति दी।

तदुपरान्त कण्ठपाठ प्रतियोगिता में जिन्होंने प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान प्राप्त किया है उन लोगों को पुरस्कारित किया गया। इस प्रतियोगिता के पुरस्कार वितरण का सौभाग्य श्री अजित कुमार संजय कुमार गंगवाल खातेगाँव ने प्राप्त किया। फिर मुनिश्री का पाद प्रक्षालन एवं आरती का सौभाग्य श्री चक्रेश जैन परिवार रामगंजमंडी वालों को मिला और शास्त्र भेंट का प्रथम सौभाग्य श्री लोकेश जैन एवं उनके मित्र दिल्ली वालों को तथा द्वितीय सौभाग्य नारी चेतना महिला मण्डल, खातेगाँव को एवं तृतीय सौभाग्य श्री रमेशचन्द्र पाटनी परिवार को प्राप्त हुआ। तदुपरांत मुनिश्री का मंगल प्रवचन हुआ। जिसमें मुनिश्री आर्जवसागरजी ने संयम व ब्रह्मचर्य का महत्व, पिच्छि का महत्व बताते हुए विजय-विजया का दृष्टान्त सुनाया। पश्चात् आचार्यश्री विद्यासागरजी के पास से आकाश मार्ग से देवों द्वारा विमान से धीरे-धीरे आते हुए पिच्छि के आने का दृश्य दिखाया गया। पिच्छि देने का सौभाग्य श्री लोकेश जैन दिल्ली एवं श्री नरेन्द्र जैन पोरवाल दम्पत्ति खातेगाँव को प्राप्त हुआ। पश्चात् मुनिश्री की पुरानी पिच्छि लेने का सौभाग्य श्री भूपेन्द्र जैन दम्पत्ति सूरत वालों ने प्राप्त किया। पश्चात् चातुर्मास के कलश वितरण का कार्यक्रम हुआ। जिसमें अतिथि सत्कार कलश मनोज कुमार पट्टा, खातेगाँव वालों को और धर्मप्रभावना कलश श्री कैलाशचन्द्र जी बस वाले बड़वाह वालों को एवं ज्ञान वृद्धि कलश श्रीमती वैशाली अश्विन जैन, सूरत वालों को प्रदान किया गया। कार्यक्रम के अन्त में श्री चक्रेश जैन परिवार रामगंजमंडी (कोटा) द्वारा मुनिश्री की आरती की गयी। इस प्रकार यह पिच्छि परिवर्तन का कार्यक्रम मंगलमय सानन्द सम्पन्न हुआ।

शाम को समवसरण की महाआरती श्री नरेन्द्र जैन पोरवाल द्वारा की गयी और शास्त्र प्रवचन हुआ सांस्कृतिक कार्यक्रम हुये। 27.10.14 तारीख को सुबह समवसरण महामण्डल विधान में अभिषेक-पूजन प्रारम्भ हुई। जिसमें अखण्ड दीप स्थापित करने का सौभाग्य ब्र. श्री भूपेन्द्र जैन सूरत वालों को

प्राप्त हुआ। पश्चात् मुनिश्री का मंगल प्रवचन 8.30 बजे हुआ। शाम को आरती आदि कार्यक्रम हुये। ता. 28.10.14 को भी अभिषेक-पूजन एवं मुनिश्री का मंगल प्रवचन हुआ। शास्त्र भेंट का सौभाग्य तमिलनाडु से पधारे श्री कुमार देविकापुरम् आदि श्रावक श्राविकाओं ने किया। ता. 29.10.14 को हवन के उपरांत श्रीजी की शोभा यात्रा निकली। नगर उत्सव के साथ यह समवसरण महामण्डल विधान सानन्द सम्पन्न हुआ।

संदलपुर का दर्शन

ता. 30.10.14 को मुनिश्री आर्जवसागरजी का ससंघ खातेगाँव से संदलपुर की ओर विहार हो गया। पूरे गाँव के लोग ही मानो अश्रुपात करते हुये मुनिश्री के साथ विहार करने लगे। घर-घर के सामने पाद प्रक्षालन और आरती उतार रहे थे। मुनिश्री संदलपुर पहुँचे। वहाँ की मनोज्ञ मूरत श्री पार्श्वनाथ भगवान के दर्शन कर बहुत आनन्दित हुये।

नेमावर दर्शनः-

पश्चात् ता. 31.10.14 शाम को नेमावर की ओर विहार कर दिया। बाजे के साथ आश्रम के पूरे भैय्याजी लोगों ने नेमावर सिद्धोदय सिद्धक्षेत्र में मुनिश्री का मंगल प्रवेश करवाया। पश्चात् फाल्गुन अष्टाह्निका पर्व में सिद्धोदय सिद्धक्षेत्र पर रुकने के लिए निवेदन भी किया गया। मुनिश्री ने समाधितन्त्र का पद्यानुवाद प्रारम्भ कर दिया और पूरे अष्टाह्निका पर्व में सिद्धोदय सिद्धक्षेत्र पर रहकर आनन्द का अनुभव किया। सिद्धोदय क्षेत्र पर (नेमावर) पर समाधि तंत्र के साथ लिखी कविता को सब के समक्ष सुनाया। हरदा जैन समाज की कमेटी के लोगों ने आकर के हरदा नगर पधारने का निवेदन किया। पश्चात् मुनिश्री का 7.11.14 को नेमावर से विहार होकर 8.11.14 सुबह हरदा नगरी में मंगल प्रवेश हुआ। मुनिश्री ने श्री शान्तिनाथ भगवान का दर्शन कर बहुत ही शान्ति का अनुभव किया और प्रतिदिनों के प्रवचनों में मंदिर की विधि एवं सम्यक् ध्यान पर प्रवचन चले। नगर के सर्व

लोगों के लिए मुनिश्री के मंगल प्रवचन सरल और मार्मिक लगे। सकल दिगम्बर जैन समाज ने मुनि संघ के चरणों में शीतकालीन वाचना की भावना प्रकट की। दोपहर में समाधि तंत्र का स्वाध्याय पद्यानुवाद के पठन के साथ सम्पन्न हुआ, और शाम को बच्चों के संस्कार हेतु जीवन संस्कार की कवितायें और स्तोत्र पाठ पढ़ाये गये।

गुरु और शिष्य का मिलन

धर्मप्रभावक, अध्यात्म योगी मुनिश्री आर्जवसागरजी महाराज के ससंघ सन्निकट में हरदा नगरी के सकल दिगम्बर जैन समाज के विशेष निवेदन व श्रीफलों पूर्वक आग्रह से शीतकालीन प्रवास के दौरान विदिशा नगरी से नेमावर की ओर पधारते हुए आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज के मंगल विहार की जानकारी मिलते ही मुनिश्री ने ब्र. आनन्द जी और ब्रह्मचर्य व्रत धारकों के हाथ से अपना निवेदन लिखकर आचार्यश्री के पास प्रेषित किया था। जिसमें आचार्य श्री की रत्नत्रय एवं स्वास्थ कुशलता और अपने जाने-अनजाने की गल्तियों की क्षमा एवं आपकी आज्ञा सदा शिरोधार्य एवं आपके दर्शन की तीव्र अभिलाषा रूप भावना प्रकट की गयी थी। मुनिश्री ने सकल दिगम्बर जैन समाज को समाज की भावना को प्रबल बनाते हुए आचार्य संघ के चरणों में हरदा नगर पधारने के निवेदन करने की प्रेरणा दी। करीब 50 किलोमीटर दूर बानापुरा जाकर समाज ने आचार्यश्री के चरणों में श्रीफल अर्पित कर हरदा नगर पधारने का विनम्र निवेदन प्रस्तुत किया। आचार्यश्री की मधुर मुस्कान एवं 'देखो' शब्द सुनकर समाज का उल्लास बढ़ा और हरदा नगरी से चौका लेकर के भी लोग पूर्व से ही गुरुवर संघ के साथ चलने लगे। आचार्यश्री का चूंकि आठ माह पूर्व ही नेमावर ग्रीष्मकालीन प्रवास के पूर्व ही हरदा नगरी में पदार्पण हो चुका था। अतः आचार्यश्री मेन रोड़ छोड़कर नहर के कच्चे रास्ते से शॉर्टकट जानकर विहार करते हुए चल रहे थे। और हरदा नगरी के लोग हरदा नगर पधारने के लिए निवेदन पर निवेदन करते ही जा रहे थे। इसी के भाग्य

स्वरूप आचार्यश्री हरदा नगर के ही निकट छोटी हरदा (अबगाँव) संघ सहित पधारे। वह स्थान हरदा नगर से करीब पाँच किलोमीटर दूरी पर था। इस प्रकार ता. 26.11.14 बुधवार को हरदा से पाँच किलोमीटर दूरी पर स्थित अबगाँव में उनका वास्तव्य था। तब मुनिश्री आर्जवसागरजी महाराज हरदा में आहारचर्या के उपरांत गुरुवर के दर्शन हेतु तथा मुनियों से मिलन हेतु हरदा और खातेगाँव के भक्तगणों के साथ विहार करके पहुँचे। गुरु दर्शन की अभिलाषा से मुनिश्री तेज धूप में ही हवा के समान विहार करके अबगाँव पहुँचे। आचार्यश्री सामायिक में बैठे ही थे। मुनिश्री गुरुवर का दर्शन व गुरु भक्ति करके स्वयं भी आचार्यश्री के बाजू में ही सामायिक करने लगे। आचार्यश्री की सामायिक पूर्ण होने के बाद मुनिश्री ने सामायिक पूरी करके आचार्यश्री के चरणों में वंदना की, खुशी के आसुओं से आखें भर आयीं, बड़े पुण्य से आपके दर्शन हुए कहते हुये और रत्नत्रय की कुशलता एवं स्वास्थ की अनुकूलता के बारे में पूछा फिर चरणों की वैय्यावृत्ति की। आचार्यश्री ने प्रभावना के सम्बन्ध में पूछा। तब मुनिश्री ने अपनी धर्मप्रभावना एवं विहार के सम्बन्ध में आचार्यश्री को सुनाया। कहा कि हे गुरुवर! आपकी कृपा से समाधि तंत्र का पद्यानुवाद चल रहा है, आपके आशीर्वाद से वह शीघ्र पूर्ण हो जाय ऐसी भावना है और कहा कि सारे भारत में आपकी कृपा से ही इतनी प्रभावना हुयी, मेरा इसमें कुछ भी नहीं; फिर प्रायश्चित्त याचना, क्षमा भावना एवं आज्ञा की याचना की। पश्चात् दूसरी बारी (शिफ्ट) में आहार को उठने वाले मुनि लोग प्रत्याख्यान हेतु उपस्थित हो गये तो उन्हें प्रत्याख्यान देकर आचार्यश्री फिर प्रवचन के लिए बैठे वहाँ मंच पर ही मुनिश्री ने अपनी आन्तरिक भावना निवेदन करते हुए कहा कि हे गुरुवर! हम आपके चरणों में हमेशा वर्षायोग एवं विशेष कार्यक्रम के निमित्त जब-जब समाज के लोगों को प्रेषित करें तब-तब आप बहुत-बहुत आशीर्वाद देते रहना। एवं आपकी आज्ञा सदा शिरोधार्य रहेगी। आपकी कृपा दृष्टि सदा बनी रहे। फिर चरण छूकर नमन किया। आचार्यश्री ने मुनिश्री के लिए प्रभावना

के, विहार आदि के संकेत दिये और बहुत-बहुत आशीर्वाद दिया और मुनिश्री ने अपने संघस्थ लोगों का भी परिचय कराया एवं मोक्षमार्ग में आगे बढ़ने का आशीर्वाद दिलाया।

पश्चात् आचार्यश्री का मंगल प्रवचन हुआ। तदुपरान्त अन्य मुनिवरों ने भी मुनिश्री आर्जवसागरजी से वात्सल्यपूर्वक चर्चायें की। कहा कि आप भगवान जैसे निश्चल ध्यान करने वाले महाराज हैं और आपको बहुत अनुभव व ज्ञान प्राप्त हैं ऐसा हम सब सुनते आये हैं। आप जैसे साधु संघ में रहेंगे तो हम लोगों को भी बहुत लाभ होगा। इसलिए आप अब संघ में रहिये। एक मुनिराज बोले आपने वर्षभर मौन पालन किया था। दूसरे मुनिराज बोले आपने बहुत प्रदेशों में विहार किया है, कोई मुनिराज बोले आपका बहुत स्वाध्याय है, कोई मुनिराज बोले आपकी प्रवचन शैली बहुत अच्छी है, कोई मुनिराज बोले आप पुराने साधुओं में से हैं आप संघ में रहेंगे तो सारे पुराने मुनिराज भी संघ में आ जायेंगे इत्यादि रूप से अनेक मुनिराजों ने अपनी आन्तरिक भावना व्यक्त की। मुनिश्री ने भी प्रवचन के पश्चात् आचार्यश्री से पूछा कि हम भी आपके साथ चलना चाहते हैं। हमें आपकी वैय्यावृत्त का सौभाग्य मिले ऐसा कहा तब मुनिश्री के लिए आचार्यश्री ने कुछ महत्वपूर्ण प्रभावना हेतु संकेत दिये और विहार के लिए तैयार हो गये। पुनः मुनिश्री का अपने से बड़े मुनिराज एवं अपने से बाद दीक्षित हुये साधुओं से मिलन हुआ। पश्चात् मुनिश्री से बाद में दीक्षित साधुओं ने मुनिश्री आर्जवसागरजी महाराज के चरण छूकर नमोस्तु किया और सबने तीन परिक्रमायें लगाकर अपनी आन्तरिक भक्ति एवं वात्सल्य प्रकट किया। मुनिश्री आर्जवसागर जी ने नये मुनियों को अच्छा अध्ययन करने और गुरु सेवा करने की शुभकामनाएँ दीं। पश्चात् मुनिश्री आचार्यश्री के साथ एक-दो किलोमीटर तक विहार करते हुए कुछ संस्मरण सुनाते रहे कि - हे गुरुदेव! आपके ही आशीर्वाद से सदलगा का पंचकल्याणक बहुत ही विशाल रूप से सन् 2003 में सम्पन्न हुआ। जिसमें पूरे देश के लोग आये थे। हमें भी आपके

आशीर्वाद से प्रतिष्ठा कराने का सौभाग्य मिला और सम्मेदशिखरजी की यात्रा एवं 16 वन्दनायें और परिक्रमायें हुई थी और आपकी कृपा से वहाँ ही यू.पी. प्रकाश भवन के परिसर में निर्मित मंदिर का पंचकल्याणक भी बहुत विशाल रूप से सम्पन्न हुआ था तथाहि अजमेर की सोनीजी नसियाँ में जब चातुर्मास हुआ था तब आपकी दीक्षा स्थली को सुव्यवस्थित कराने का सौभाग्य मिला और वहाँ पर आचार्यश्री ज्ञानसागरजी द्वारा अपने गुरु के लिए दीक्षा देते हुए का फोटो भी लगवा दिया। हस्तिनापुर और गिरनार जी की यात्रा भी सानन्द सम्पन्न हुई। इत्यादि संदर्भ सुनाते रहे। तदुपरान्त मुनिश्री आचार्यश्री को नमोस्तु करके पुनः अपने प्रभावना स्थान की ओर आ गये। करीब 12 वर्ष के बाद यह गुरु और शिष्य का मिलन देखकर सब का मन बहुत ही आनन्दित हो गया। वास्तव में यह गुरु के प्रति श्रद्धा ही सबसे बड़ी महान गुणवत्ता होती है और यही भवसागर से तिराने वाली है।

ऐसे मिला था आचार्य पदः-

हरदा नगरी में गुरुवर आचार्य श्री विद्यासागरजी का दर्शन तो संघ सहित आर्जवसागरजी को हुआ ही था और उनके मंगल आशीर्वाद से एक-दो महीने के भीतर ही अनेक सुअवसर भी प्राप्त हुये। जैसे कि हरदा नगरी में रचाये बड़े पैमाने पर सम्पन्न हुये श्री अर्हच्चक्र विधान के उपरान्त देवास के पास सोनकच्छ नगर से गुरुवर आर्जवसागरजी के चरणों में अपने नगर में पधारने का निवेदन लेकर दिगम्बर जैन मन्दिर के कमेटी के लोग पधारे और निवेदन करते हुए कहा कि इस वर्ष के वर्षायोग का लाभ सोनकच्छ नगर को मिले। हम सभी लोग सन् 2004 से प्रतीक्षारत हैं। इन्हीं के साथ आये पीयूष जैन छाबड़ा ने चारित्र चक्रवर्ती आचार्य शांतिसागरजी परम्परा के करीब बानवें वर्ष के वयोवृद्ध आचार्य श्री सीमंधरसागरजी के स्वास्थ के अनुकूल न रहने का समाचार दिया और साथ में यह भी कहा है कि हे गुरुदेव! आपको हमने पूर्व में भी विदित कराया था कि उन्हें अपनी सल्लेखना की साधना में अपनी

ही परम्परा के किन्हीं साधु संघ की आवश्यकता है। क्योंकि दोनों महाराज का संपर्क कुछ वर्षों से नमोस्तु और साहित्य प्रदान के रूप में चल ही रहा था। आचार्यश्री सीमंधरसागरजी कहते हैं कि आर्जवसागर से पूछना कि वे चाहते क्या हैं? ऐसा सुनकर उनके घुटने में लगी चोट की जानकारी मिलते ही गुरुवर आर्जवसागरजी ने पीयूष छाबड़ा के हाथों में कुछ नवीन साहित्य और नमोस्तु प्रेषित कर सिद्धक्षेत्र सिद्धवरकूट की ओर विहार करने का विचार बनाया। फिर गमन किया खिड़किया, वीड़, सनावद आदि से विहार करते हुए लोगों के द्वारा ठहरने का अति आग्रह होते हुए भी आगे बढ़ते चले गये। क्योंकि सनावद के पास बीच में एक शुभ समाचार श्री भानुकुमार जैन इन्दौर द्वारा प्राप्त हुआ कि आचार्यश्री सीमंधरसागरजी महाराज पुनः पुनः यही बात कह रहे हैं कि आर्जवसागर महाराज दूर से नमोस्तु तो भेजते हैं लेकिन आते तो हैं नहीं। ऐसे आचार्य वयोवृद्ध श्री सीमंधरसागर जी महाराज के समाचार में विशेष भावना व्यक्त की गयी थी। जिसे साक्षात् शीघ्र जानने की उत्कण्ठा मुनिवर आर्जवसागरजी के मन में आयी। मिलने और सेवा के कार्य के साथ-साथ ज्ञात होता है कि उनकी इस विशेष भावना में एवं उनकी ही अन्तिम अवस्था में कुछ विशेष जिम्मेदारी सौंपने के साथ अपने जीवन की अन्तिम साधना की संपूर्णता का अवसर जान पड़ता है। बस; इस समाचार मिलने के तुरन्त बाद ही गुरुवर ने अपने विहार की गति को बढ़ा दिया और सि. सिद्धवरकूट में एक ही दिन में दर्शन करके बड़वाह नगर में मंगल प्रवेश किया। वहाँ पर दोनों मन्दिरों के अध्यक्षों के द्वारा रुकने का निवेदन किये जाने पर भी इन्दौर की ओर गमन करते चले गये। कुछ ही दिनों में इन्दौर-देवास रोड में विहार के समय दर्शनार्थ एवं चौके आदि की व्यवस्था देखने श्री जिनेश झांझरी, और सपत्नीक सनतकुमार झांझरी आदि लोग भी आये थे। इसी समय गुरुवर आर्जवसागरजी ने श्री जिनेश झांझरी आदि को संकेत दिया था कि आचार्य सीमंधरसागरजी के पास पहुँचने पर आप लोग अपने-अपने ग्रुप के साथ समूह रूप से जरूर आयें,

क्योंकि आ.सीमंधरसागरजी ने किसी विशेष कार्य के लिए हमें याद किया है। गुरुवर आर्जवसागरजी इन्दौर-देवास बायपास से होते हुए एम.एस.जे. फार्म हाऊस पहुँचे। विहार में साथ थे श्रीमति गुणवन्ती जैन, श्री सुरेश भाई गांधी धर्मपत्नी श्रीमति नीला जैन गांधी-सूरत, श्री अरविन्द जैन-सागर, श्री अशोक जैन-भोपाल, सी.कुमार-तमिलनाडु और संघ के साथ सात प्रतिमाधारी ब्र.भूपेन्द्र जैन और आठ प्रतिमाधारी व्रती ब्र. पद्ममालिनी जैन, सात प्रतिमाधारी ब्र. राजकुमारी जैन, सात प्रतिमाधारी ब्र. माया देवी जैन। इसके पूर्व हरदा से लेकर सनावद तक हरदा के कमेटी के लोगों का चौका साथ रहा। फिर भोपाल से आये चौके के साथ स्थानीय लोगों ने भी चौके लगाकर गुरुसेवा का लाभ उठाया था। पहुँचने के करीब चार दिन पूर्व गुरुवर आर्जवसागरजी ने फार्म हाऊस पर भानुकुमार जैन को भेजकर अपने पहुँचने की जानकारी देकर यह मालूम करवाया था कि वहाँ फार्म हाउस पर कुछ दिन ठहरने हेतु व्यवस्था बन जायेगी तभी वहाँ पर पहुँचे।

आ.सीमंधरसागरजी का दर्शन हेतु पहुँचे गुरुवरः-

ता. 24.1.15 को पहुँचते ही मन्दिर से थोड़ी दूर पहले वहाँ पर पूर्व से ही ठहरे आ. प्रसन्न ऋषि की आर्यिका, क्षुल्लक, क्षुल्लिका आगवानी के लिए आये। तदुपरान्त जब गुरुवर आर्जवसागरजी निर्माणधीन जिनालय में पहुँचे तब आगवानी के लिए आ. प्रसन्न ऋषि आये थे। ये आ. प्रसन्न ऋषि गुरुवर आर्जवसागरजी से बाद में दीक्षित थे और चा.च.आचार्य शान्तिसागरजी के परम्परा के नहीं थे, ये आ. कुशाग्रनन्दी की परम्परा के थे। जिनालय का दर्शन होते ही और आ. सीमन्धरसागरजी की आहार चर्या पूर्ण होते ही गुरुवर आर्जवसागरजी आ. सीमंधरसागरजी के दर्शन हेतु उनकी वसतिका में पहुँचे। भक्ति पूर्वक गुरु वन्दना की और वन्दना प्रतिवन्दना के उपरान्त रत्नत्रय एवं स्वास्थ की क्षेम-कुशलता पूछी। आ.सीमंधरसागरजी ने भी मुनिवर के विहार एवं स्वास्थ की कुशलता पूछी, तथा आ. विद्यासागरजी का भी क्षेम, कुशल

पूछा। इसके बाद आ. प्रसन्न ऋषि के साथ विहार आदि की चर्चायें हुयीं। तदुपरान्त आहार चर्या सम्पन्न हुई।

गुरुवर ने की वैयावृत्य व अमूल्य वार्तालाप:-

आहार चर्या सम्पन्न होने के बाद मुनिवर आर्जवसागरजी आ. सीमंधरसागरजी के पास पहुँचे और प्रत्याख्यान लेकर उनका तैलादि लगाकर औषधोपचार किया और कहा कि ऐसी सल्लेखना के समय सेवा बड़ी दुर्लभता से प्राप्त होती है। हम भी यही भावना भाते हैं कि जीवन के अन्त में हमें भी आप जैसी विधिवत् सल्लेखना प्राप्त हो। सुना है कि आप बारह वर्ष की सल्लेखना की साधना कर रहे हैं। इसी तरह से आपने वर्षों से नमक, शक्कर आजीवन त्याग कर रखा है, एक ही धान्य ले रहे हैं वह भी घृत के बिना; दो, तीन ग्रास ही आहार चलता है। फिर आप पेय ही ग्रहण करते हैं। आपने अपनी कषाय और काया को बहुत ही कृश कर लिया है। फिर भी आप बेसहारे आहार लेते हैं और इतनी बड़ी 90 वर्ष की उम्र में छप्पन वर्ष से मुनिपद पालन कर रहे हैं, आप बिना चश्मा के पढ़ रहे हैं, दाँत भी काम कर रहे हैं। आप बहुत पुण्यशाली हैं। बहुत दिनों की भावना के बाद आपका दर्शन हुआ। जो भावना (अपनी उत्तरदायित्व रूप आचार्य पद प्रदान करने की) आपने परोक्ष रूप में प्रेषित कर व्यक्त की थी आपकी उसी भावना के अनुरूप मैं आपके समक्ष आ चुका हूँ। लेकिन मैं बहुत छोटा हूँ, शर्मिन्दा हूँ क्योंकि मुझे मात्र मुनि दीक्षा लिये 27 वर्ष ही हुये हैं। तब आ. सीमंधरसागरजी बोले 27 वर्ष हुये तो क्या ये कम हैं? बस; मोक्षमार्ग का अनुभव जरूरी है कुछ लोगों को बहुत थोड़े ही वर्ष में हो जाता है। तुमने तो इतने वर्षों से अनेक प्रान्तों में भ्रमण किया, और दक्षिणी भाषायें भी सीखीं, और साहित्य का सृजन भी किया। मैंने भी पढ़ा है तुम्हारा साहित्य देखो ये सामने ही तीर्थोदय काव्य है। अतः अपनी चा.च.आ. शांतिसागरजी की परम्परा को सुरक्षित रखते हुए आगे बढ़ना है। हमारे इस पद के भार को स्वीकार करो। इस चर्चा के समय सामने उपस्थित थे भानुकुमार

जैन-इन्दौर, सुरेश भाई गांधी-सूरत जो कैमरे द्वारा फोटो भी ले रहे थे और श्री अरविन्द जैन आदि। फिर मुनिवर आर्जवसागरजी ने आ. सीमंधरसागरजी से कहा कि हम लोग पहले से ही सोचकर एक नवीन पिच्छिका उपकरण दान हेतु लाये हैं आपको मध्यान्ह में प्रदान करेंगे। तब आ.सीमंधरसागरजी ने कहा कि मध्यान्ह में नहीं; कल सुबह पिच्छिका का कार्यक्रम रखना। कल के दिन प्रातः फिर आपको जल्दी 8.00 बजे ही आहार चर्या को उठा देंगे। हाँ! और करीब 9 बजे यह कार्यक्रम रखना ऐसा तो आ. सीमंधरसागरजी ने कहा ठीक है। पुनः आचार्यश्री ने कहा कि कल जो हम संस्कार देंगे(आचार्य पद के) तब उसकी जिम्मेवारी के लिए कोई लोग भी तो चाहिए तब उस समय भानुकुमार इन्दौर आदि ने बोला हम इसके जिम्मेवार हैं। आप निश्चिन्तता से कार्यक्रम सम्पन्न करें जो भी आवश्यकतायें होंगी उसकी हम पूर्ति करेंगे। आ.सीमंधरसागरजी ने अपना उत्तरदायित्व सौंपते हुए मुनिश्री के सर पर हाथ रखा और आचार्य चा.च. शांतिसागर परम्परा की रक्षा करते रहना। मुनि गुरुकुल का निर्माण करना ऐसा कहते हुए मुनिवर आर्जवसागरजी के सर पर पिच्छिका रखकर विशेष आशीर्वाद प्रदान किया। इसके उपरान्त आ.सीमंधरसागरजी की इच्छा अनुसार उन्हें मुनिवर आर्जवसागरजी आदि धूप के स्थान में ले गये और बिठाकर उनकी तैलादि से वैयावृत्ति की। फिर उनको जपमाला देकर और पुस्तक सामने रखकर और मुनिवर आर्जवसागरजी ने यह कहकर कि अब मैं सामायिक के लिए जा रहा हूँ। अलग स्थान में सामायिक के लिए बैठ गये। फिर मध्यान्ह काल में पुनः मुनिवर आर्जवसागरजी आ. सीमंधरसागरजी के पास पहुँचे और अपनी विशेष विशुद्धि हेतु उनसे चौंसठ ऋद्धि के उपवासों के व्रत हेतु आशीर्वाद ग्रहण किया। और दूसरे दिन केशलोंच हेतु निवेदन किया। तब आ.सीमंधरसागरजी बोले अभी तो बाल बड़े दिखते नहीं हैं। मुनिवर आर्जवसागरजी ने कहा कि केशलोंच का समय आ गया है, तो कहा ठीक है। प्रतिक्रमण के उपरान्त

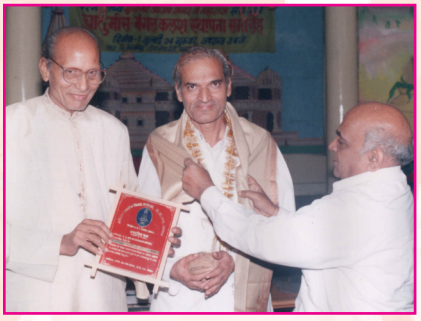

पं.निहालचंद जैन बीना का सम्मान करते हुए मनोहरलाल टोंग्या व श्रीपाल दिवा वर्षायोग 2004 टी.टी.नगर, भोपाल।



गुरुवर आर्जवसागरजी की कृति तीर्थोदयकाव्य के नवीन संस्करण का विमोचन करते हुए भक्तगण भोपाल में।



टी.टी. नगर भोपाल में श्री निरंजन लाल बैनाड़ा का सम्मान करते हुए अजित पाटनी भोपाल।



सनतकुमार जैन एक्सप्रेस न्यूज वालों का सम्मान करते हुए कमेटी जन।



डॉ. श्रेयांसकुमार बड़ौत का सम्मान करते हुए मनोहरलाल टोंग्या आदि।



प्रो.लक्ष्मीचंद जैन जबलपुर का सम्मान करते हुए मनोहरलाल टोंग्या भोपाल।



कवि डॉ. नरेन्द्र जैन व चन्द्रसेन जैन वर्षायोग 2004 भोपाल में सम्मान पाते हुए।



डॉ. देवकुमार जी साइंटिस्ट दिल्ली का सम्मान करते हुए अध्यक्ष मनोहरलाल टोंग्या भोपाल।



सन् 2006 सम्मेदशिखर जी में यू.पी. प्रकाश भवन स्थित जिनालय के पंच-कल्याणक में गुरुवर आर्जवसागरजी के गृहस्थ जीवन के पिताश्री शिखरचंद जी का सम्मान करते हुए महावीर सेठी सरिया वाले।



2006 राँची विद्वत् संगोष्ठी के समय गुरुवर आर्जवसागरजी के विद्वज्जन एवं राँची कमेटी के पदाधिकारीगण।



2006 राँची प्रवेश पर गुरुवर आर्जवसागरजी की आरती उतारते हुए झारखण्ड धार्मिक न्यास बोर्ड के अध्यक्ष ताराचंद जी देवघर वाले आदि।



पंचकल्याणक महोत्सव दमोह 2007



दीक्षा पालकी के साथ इन्द्र गण दमोह 2007



2007 दमोह पंचकल्याणक में आशीष लेते हुए कलाकार राजेन्द्र उमूरगा एवं कार्यकर्ता नवीन निराला दमोह।



2008 छतरपुर श्रीमान् कुपी वाले शास्त्र दान करते हुए।



2007 में दमोह पंचकल्याणक में गुरु आर्जवसागरजी की कृति तीर्थोदय काव्य का विमोचन करते हुए नरेश भाई जैन बाम्बे आदि।



2007 पञ्चकल्याणक महोत्सव दमोह में तीर्थंकर विधिनायक की दीक्षा विधि करते हुए गुरु आर्जवसागरजी एवं ब्र. जयकुमार निशांत।



2007 दमोह वर्षायोग में पुरानी पिच्छिका ग्रहण करते हुए नरेन्द्र जैन खजुरी वाले सपत्नीक।



2008 छतरपुर में गुरुवर आर्जवसागरजी के लिए शास्त्रदान देते हुए कपूरचंद जैन घुवारा।



2008, ग्वालियर स्वर्ण मंदिर में गुरुवर आर्जवसागरजी से वर्षायोग हेतु निवेदन करते हुए भक्तगण।



ग्वालियर किले पर गुरुवर आर्जवसागरजी के सान्निध्य में वर्धमान मंदिर के समक्ष निर्वाण लाडू के समय गोपगिरी के परिचय का फोल्डर-विमोचन करते हुए भक्तगण।

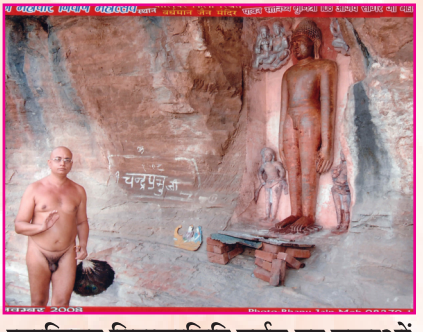

ग्वालियर त्रिशलागिरि पर्वत पर गुफाओं में स्थित विम्बो का दर्शन करते हुए गुरुवर आर्जवसागरजी महाराज।



2008, ग्वालियर में एस.के. जैन मुम्बई गुरुवर आर्जवसागरजी से आशीष पूर्वक साहित्य प्राप्त करते हुए।



गुरुवर आर्जवसागर जी जयभन पवैया को गोपगिरि स्थित वर्धमान मंदिर की विशेषता बताते हुए।

चतुर्विध संघ के साथ गुरु भक्ति सम्पन्न हुई तदुपरान्त आ. श्रीसीमंधरसागरजी ने समयसार शास्त्र के एक छोटे-से सन्दर्भ कि आत्मा ही सबकुछ है इससे बाहर अपना कुछ नहीं ऐसा आत्मा के सम्बन्ध में उपदेशित किया। सभी को उनकी अमृतवाणी सुनकर बड़ा आनन्द हुआ। और मुनिवर आर्जवसागरजी ने कहा कि बिना चश्मा के आप इतना अच्छा पढ़ते हैं और कुछ संस्मरण सुनाने का निवेदन किया। तब आ. सीमंधरसागरजी ने सि.क्षे. गिरनार के सम्बन्ध चर्चा करते हुए पूछा कि गिरनार का क्या हो रहा है? तब मुनिवर आर्जवसागरजी ने अपनी यात्रा में देखी गिरनार की दयनीय अवस्था का वर्णन किया। तब आ.सीमंधरसागरजी ने कहा कि पंचम काल में मिथ्यात्व बढ़ रहा है। जैन-धर्म मिथ्यात्व का खण्डन करता है। इसलिए मिथ्यावादी लोग इसको नष्ट करने में लगे हैं। फिर इसी के साथ आचार्यश्री सीमंधरसागरजी ने शाश्वत सि.क्षे. सम्मेदशिखरजी की जानकारी ली। तब मुनिवर आर्जवसागरजी अपनी सम्मेदशिखरजी की यात्रा के संदर्भ में वहाँ की सुरक्षा आदि रूप आवश्यकताओं के बारे में सुनाया। तब आ. सीमंधरसागरजी ने दो बार दोहराते हुए एक ही बात कही कि सम्मेदशिखरजी को तो कोलकता वाले अच्छे से सम्हाल सकते हैं क्योंकि वहाँ पर जैन समाज बहुत संख्या में है। इस प्रकार कुछ धार्मिक चर्चायें हुई। तदुपरान्त गुरुवर आर्जवसागरजी ने जो हृदय से और विनय से उनकी वैयावृत्ति की वह सेवा मानो दो या अनेक वर्षों की सेवा के समान प्रशंसनीय थी। पश्चात् सब लोग सामायिक यथास्थान करने लगे।

गुरुवर आचार्य पद के संस्कार से अलंकृतः-

दि. 25.1.15 को नित्य आवश्यक कार्यों के उपरान्त आचार्य भक्ति कर आचार्यश्री सीमंधरसागरजी के विशेष आशीर्वाद पूर्वक मुनिवर श्री आर्जवसागरजी ने अपने केशलोंच की क्रिया प्रारम्भ की। व्रतियों एवं सभी लोगों ने स्तोत्र, भक्ति पाठ वगैरह किया। इसी बीच आ. सीमंधरसागरजी की संक्षिप्त आहार चर्या हुई। और भी मुनि, आर्यिका, क्षुल्लक, क्षुल्लिका आहार

चर्या को जाते-आते रहे और मुनिवर का कार्यक्रम चलता रहा। आ. सीमंधरसागरजी ने मुनिवर श्री आर्जवसागरजी के सर पर भक्ति, पाठ एवं मंत्र पूर्वक आचार्य पद की क्रिया प्रारम्भ की। व्रतीगण द्वारा गणधर वलय के अर्घ समर्पित किये गये। पाद प्रक्षालन हुआ। केसर का संस्कार हुआ और आ. सीमंधरसागरजी ने अपने उत्कृष्ट भाव प्रकट करते हुए कहा कि ''चारित्र चक्रवर्ती आ. शान्तिसागरजी महाराज से आती हुयी एक धारा रूप परम्परा आ. सुपार्श्वसागरजी से मुझे प्राप्त हुई है। उसी तरह की एक धारा रूप परम्परा चा.च.आ. शान्तिसागरजी आ. वीरसागरजी, आ. शिवसागरजी, आ. ज्ञानसागरजी और आ. विद्यासागरजी को प्राप्त को प्राप्त हुई। अब मेरी वृद्धावस्था में इस नश्वर काया की उम्र अधिक होने के कारण शरीर को शिथिल देखते हुए समाधि-सल्लेखना के निमित्त मैं परम्परा को स्थिर निर्बाध रखने हेतु मुनियों के गुरुकुल बढ़ाने की भावना रखते हुए माघ शुक्ल षष्ठी तिथि वी.नि.सं. 2541 ईश्वी सन् 25.1.2015 के शुभ दिन अपने आचार्य पद को चा.च.आ.शान्तिसागरजी परम्परा के आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज के बहुभाषा विद्, चिर दीक्षित, साहित्य सृजक, धर्मप्रभावक शिष्य मुनिश्री आर्जवसागर महाराज को आचार्य पद प्रदान करता हूँ। आप सभी इस धर्मप्रभावना में अनुमोदन कर पुण्य भाजक बनें।'' तदुपरान्त नवीन आचार्य आर्जवसागरजी ने कहा कि आपकी सल्लेखना की साधना में जो त्याग की भावना है वह बड़ी पूज्यनीय है। आपसे यह भावना भाते हैं कि आप मेरे लायक सेवा अवश्य बतलाते रहें तथा हम आपकी जो चा.च.आ. शान्तिसागरजी महाराज से चली आ रही परम्परा की धारा को अनवरत बहाते रहेंगे। उसे नष्ट नहीं होने देंगे और आ. सीमंधरसागरजी ने मुनिवर आर्जवसागरजी पर पिच्छिका रखते हुए आचार्य पद से अलंकृत किया। फिर नवीन पिच्छिका प्रदान कार्यक्रम हुआ। इस कार्यक्रम में वहाँ सभी श्रावक-श्राविकायें, व्रती, ब्रह्मचारी, आर्यिका, क्षुल्लक और क्षुल्लिकायें उपस्थित रहे।

लोग कैमरे से फोटो ले रहे थे। कोई विडियो रिकार्डिंग कर रहे थे। आ. प्रसन्न ऋषि भी उपस्थित हुये। और युगपत् चतुर्विध संघ के बीच आचार्य पद की क्रिया की सम्पूर्णता और कुछ मार्ग दर्शन रूप धार्मिक चर्चायें बड़ी प्रसन्नता के साथ सम्पन्न हुईं।

ऐसे सार्वजनिक हुये कार्यक्रम में श्री जिनेश झांझरी, सनत झांझरी आदि के ग्रुप समूह को भी उपस्थित रहने के लिए विदित कराया गया था। कुछ लोग उपस्थित हुये और कुछ लोग वर्षात् और ठण्डी लहर के कारण अनुपस्थित भी रहे होंगे लेकिन इस कार्यक्रम के दृश्य को ब्र. भूपेन्द्र भैया के सामने रहते हुए श्री भानुकुमार जैन इन्दौर, श्री अरविन्द जैन सागर और अशोक जैन आदि लोगों ने अपने कैमरे में भरने का सफल प्रयास किया था। जो दृश्य भारत के या देश-विदेश के कोने-कोने तक पहुँचाने का पुरुषार्थ भी किया गया। आगम विधि विधान पूर्वक आचार्य पद के संस्कार होने के उपरान्त सब लोग अपनी मध्यान्ह की सामायिक में लीन हो गये और दूसरी तरफ श्रावक लोग अपने भोजनादि क्रिया में व्यस्त हुए।

फिर मध्यान्ह में सामायिक के उपरान्त व्रती गण और श्रावक गण आपस में नवीन बने आचार्यश्री आर्जवसागरजी के समक्ष नये उपकरण परिवर्तन आदि की कुछ क्रियायें करने में हर्ष मना रहे थे और जिनको भी यह कार्यक्रम का ज्ञात हुआ वे श्रावक गण इन्दौर, देवास, सोनकच्छ, हरदा आदि से आकर चतुर्विध संघ का दर्शन कर आ. आर्जवसागरजी से रत्नत्रय की कुशलता आदि पूछकर मंगल आशीर्वाद ले रहे थे और कह रहे थे कि हमको कुछ दिन पूर्व इस कार्यक्रम का शुभ समाचार ज्ञात हो जाता तो हम सबको साथ लाकर बड़ी संख्या में उपस्थित होते। तब आ. आर्जवसागरजी ने कहा कि जैसी व्यवस्था वैसी अवस्था को ध्यान रखना चाहिए। यहाँ पर स्थान की कमी थी, मौसम अनुकूल नहीं था और सल्लेखना लेने वाले क्षपक का भी ध्यान रखना पड़ता है। अधिक भीड़-भाड़ से उनको अशांति हो सकती है और

पंचमकाल में मात्सर्य भाव की अधिकता है। एक समूह को बुलायें तो दूसरा समूह नाराज होता है और बुलाने के लिए हमारे पास क्या है? यह मुनिसंघ का काम नहीं ये तो श्रावकों का काम है। उनकी जैसी व्यवस्था और भावना होती है वैसे ही भावना अनुरूप कार्यक्रम होता है। साधु लोग तो किसी से राग-द्वेष किये बिना ही अधिक से अधिक धर्म प्रभावना करने की भावना रखते हैं। इस प्रकार सुबह से रात होने तक आ. आर्जवसागरजी के दर्शनार्थ इंदौर शहर के महावीर नगर (पास गोयल नगर) से खुशालचन्द जैन, तत् पुत्र अजय जैन धर्म पत्नी अर्चना जैन आदि और विजय नगर से मनीष जैन आदि और हरदा से नीलेश जैन परिवार आदि सोनकच्छ से पीयूष जैन आदि तथा देवास आदि से और उदय नगर इन्दौर से भरत जैन, अमित जैन, आशीष जैन, तोतला नगर से सुनील जैन आदि भक्तों का आवागमन बना रहा, और सभी लोग नवीन बने आचार्यश्री आर्जवसागरजी को अर्घ समर्पित कर या जय-जयकार की ध्वनि के साथ अपनी शुभ कामनाएँ देते रहे।

दूसरे दिन प्रातःकाल जब गमन के समय स्थानीय लोगों को ज्ञात हुआ तो वे कहने लगे कि यहाँ ही रुकिये यहीं पर आहार चर्या सम्पन्न हो फिर विहार करना; तब आ. आर्जवसागरजी ने कहा कि यहाँ पर कुये के पानी की समस्या है बहुत दूर से श्रावकों को पानी लाना पड़ रहा है। आगे और भी कोई संघ आने वाला है। ऐसा कहा और फिर क्षपक आ. सीमंधरसागरजी के साथ सभी लोगों ने गुरु भक्ति की और स्वास्थ आदि की अनुकूलता पूछी। तब आ.सीमंधरसागरजी ने विहार आदि के बारे में पूछा और कहा कि कहाँ जायेंगे तो कहा कि बस पास में ही देवास रोड पर और उन्होंने कहा अपने साथ कौन-कौन है? तो बताया कि ये सब लोग साथ हैं कोई चिंता की बात नहीं। फिर पूछा कि अपना आगे वर्षायोग कहाँ होगा? तो बोला कि अभी निश्चित नहीं किया है। तो क्षपक मुनिराज आ. सीमंधरसागरजी ने कहा कि हाँ, जहाँ पुण्य होगा वहीं तो होगा। फिर अन्त में आचार्य श्री 108 आर्जवसागरजी ने कहा कि

आप संदेशा देते रहना हम भी आपका संदेश लेते रहेंगे और आपकी सेवा में तत्पर रहेंगे। सल्लेखना धारक क्षपक श्री आ. सीमंधरसागरजी की काया को स्पर्श करते हुए सभी को और आ. प्रसन्न ऋषि को क्षपक की सेवा का संकेत करते हुए नजदीक ही विहार कर लिया। दिशा थी देवास और हाटपीपल्या। नजदीक ही विहार हो नहीं पाया और भक्तों का आने-जाने का तांता शुरु हो गया। थोड़े दूर एक गाँव के निकट बंगले पर लगे चौके में आहार चर्या सम्पन्न हुई।

इसी दिन ता. 26.1.15 को भी बड़ी भावना पूर्वक भक्तों का आना-जाना आ. आर्जवसागरजी के दर्शनार्थ चलता रहा। सब लोग रत्नत्रय की कुशलता आदि पूछते रहे और कोई सेवा करने लगे और बहुत संख्या में आहार के लिए सोले के वस्त्र पहने विधिवत् आहार भी करवाया। जिन लोगों में इन्दौर उदय नगर से पी.सी. जैन सपत्नीक, सुनील जैन सपरिवार, नीरज जैन, आशीष जैन, नीलेश मोदी, प्रजेश जैन सपत्नीक आदि समवसरण मन्दिर के पास से सुनील जैन के परिवार के लोग देवास से भी कई लोग, हरदा से नीलेश अजमेरा के परिवार के लोग, एच.आई.जी. कॉलोनी, इन्दौर से भानुकुमार जैन, दिल्ली से लोकेश जैन व मित्र गण तथा भोपाल, सागर आदि से भी लोग आये थे। सभी लोग यह जानकर कि मुनिवर आर्जवसागरजी आचार्य बन गये हैं बड़ी खुशी व्यक्त कर रहे थे और आहार देकर और आहार देखकर आ. आर्जवसागरजी की जय-जयकार लगा रहे थे। देवास के पास भी संगम नगर इन्दौर से इस आचार्य पद का समाचार सुनकर अपनी शुभ कामनायें देने श्री पारस जैन भी सपत्नीक आये थे। तदुपरान्त हाटपीपल्या के समाज के बहुत संख्या में लोग तथा गोयल नगर इन्दौर से परमेष्ठी दास सोगानी (रतनलाल जी बैनाड़ा, आगरा के बहनोई सपत्नीक के साथ) आये और आचार्य पद की शुभ कामनाएँ देते हुए बड़ी खुशी व्यक्त की।

इसके बाद आगे मार्ग में आ. आर्जवसागरजी से किन्हीं ने पूछा कि-

हे गुरुदेव! आ. श्री सीमंधरसागरजी द्वारा आपको आचार्य पद दिये जाने पर आपने किन प्रशस्त भावों के साथ स्वीकार कर लिया?

तो कहा कि हमने उनकी आत्म शान्ति के लिए अपना कर्त्तव्य मानकर स्वीकार कर लिया। चूंकि हमारा सम्बन्ध उनसे नमोस्तु पूर्वक साहित्य प्रदान आदि के रूप में पूर्व से ही चल रहा था। हम उनके स्वास्थ आदि का ध्यान रखते हुए समाचार लेते रहते थे और उन्होंने अपने जीवन का अन्तिम समय निकट जानकर हमें याद कर संदेश भेजा। हम उनके पास शीघ्र ही पहुँचे, क्योंकि उनकी चर्चा से मालूम पड़ा कि पूर्व से ही उन्हें अपने ही चा.च.आ. शान्तिसागरजी की परम्परा के रूढ़ी, आडम्बर, मिथ्यात्व से दूर साधु की आवश्यकता थी। वे ऐसा ही विकल्प मन में धारण किये हुए थे और मुझे पाकर वे बड़ी शान्ति को प्राप्त हुये और थोड़े समय की सेवा ही उन्होंने मुझे मेवा के समान आचार्य पद को स्वस्थ और प्रसन्नचित्त के साथ प्रदान कर दिया अन्यथा उनके समाधि के काल को कौन जानता था? यह सब उनके अनुकूल ही तो हुआ, क्योंकि अन्य परम्परा वाले चा.च.आ. शान्तिसागरजी की जयकार आदिक से परम्परा निभाने में सक्षम कैसे हो सकते थे? जिसकी परम्परा की जो वस्तु है उसकी परम्परा के व्यक्ति द्वारा अपने पूर्वजों का ऋण चुकाते हुए उसके आगे उसी रूप में निभाने हेतु जो सक्षम होता है उसे ही वह वस्तु मिलना श्रेयस्कर है और उसी में खुशहाली है।

आचार्य श्री 108 आर्जवसागरजी द्वारा आचार्य पद सम्बन्धी अधिक प्रचार-प्रसार पर रोक लगाने का संकेत किये जाने पर भी लोगों ने भक्ति वश पूरी बात नहीं मानी और आचार्य पद से अलंकृत करने का संदेश एस.एम.एस., वाट्सअप् आदि द्वारा पूरे देश में फैला दिया। यहाँ तक कि भारत के अनेक और इन्दौर में भी अनेक समाचार पत्र जैसे कि दबंग दुनिया, राज एक्सप्रेस, लोक स्वामी, इन्दौर समाचार, स्वदेश, सांध्य दैनिक, नव-भारत, दस्तक, सिटी ब्लास्ट, शनिवार दर्पण, दिव्य महानगर, दिगम्बर जैन

ज्योति-जयपुर, और जैन मित्र-सूरत, आदि में आचार्य श्री आर्जवसागरजी का पदारोहण का समाचार प्रकाशित करवा दिया और लखनऊ, दिल्ली, कोलकत्ता, महाराष्ट्र, कर्नाटक और तमिलनाडु आदि जगह भी समाचार पत्रों में प्रकाशन हेतु प्रेषित कर दिया। साथ ही नजदीक समय में ही पारस-चैनल पर पट्टी द्वारा करीब दस दिनों तक आ. आर्जवसागरजी के आचार्य पदारोहण का प्रसार चलता रहा।

आ.सीमंधरसागरजी की समाधिः-

क्षपक आचार्य श्री सीमंधरसागरजी महा मुनिराज आहार में अन्न की वस्तु छोड़कर मात्र पेय वस्तु ग्रहण करने लगे। गर्म जल मात्र लेते हुए तदुपरान्त उनका शरीर इतना कृश और शक्तिहीन हो गया कि स्वतः खड़े होकर आहार ग्रहण करने की शक्ति नहीं रही। तब उन्होंने जल का भी त्यागकर अन्त में तीन दिन के उपवास के साथ अपनी सल्लेखना की अन्तिम आराधना अनवरत जागृति पूर्वक सुचारू रखी। आचार्य आर्जवसागरजी ने यह तो साक्षात् ही देखा था कि उन्हें वे क्षपक श्री आ. सीमंधरसागरजी लेटे नहीं दिखे। हमेशा तत्त्व चिंतन, धर्म वार्ता, और जाप आदि में बैठकर तल्लीन रहते थे। उनके सल्लेखना के पूर्व अन्तिम समय में मुनि तन्मयसागरजी भी पधारे थे और समाधि के समय मंत्र पाठ आदि सुनाकर उन्होंने भी सेवा का अवसर प्राप्त किया। तदुपरान्त ता. 6.2.15 को मध्यान्ह 12.40 पर क्षपक आ. श्री सीमंधरसागरजी का सल्लेखना पूर्वक समाधिमरण हो गया और उनके अन्तिम संस्कार की क्रिया हेतु मुनिराज विप्रणसागर आदि भी पहुँचे और विधिवत् संस्कार-विधि सायंकाल में सम्पन्न हुयी।

आ. सीमंधरसागरजी को श्रद्धांजलि कार्यक्रम एवं आचार्य आर्जवसागरजी प्रथम अभिनन्दन समारोह सम्पन्न-

प.पू. आचार्य श्री 108 आर्जवसागरजी देवास से विहार करते हुए हाटपीपल्या पधारे। और वहाँ ता. 8.2.15 को प्रातः काल 8 बजे दिगम्बर जैन

मन्दिर के परिसर में आ. सीमंधरसागरजी की श्रद्धांजलि समारोह एवं आ. आर्जवसागरजी का प्रथम अभिनन्दन समारोह दूर-दूर से आये भक्त गणों के समक्ष सामूहिक रूप से चित्र अनावरण दीप प्रज्ज्वलन और शास्त्र दान आदि के साथ सम्पन्न हुआ। जिसमें जिन्होंने आचार्य श्री 108 आर्जवसागरजी को श्री फल भेंट कर आशीर्वाद प्राप्त किया वे थे श्री अशोक जैन छाबड़ा, प्रदीप जैन पाटनी, भानुकुमार जैन इन्दौर, हेमन्त जैन टोंग्या, सुभाष जैन पाटनी, कैलाश चन्द जैन बांझल, पवन जैन चांदवाड़, देवकुमार जैन छाबड़ा, राजेन्द्र जैन टोंग्या, लोकेश जैन दिल्ली, निर्मल जैन दिल्ली, एवं श्रीमति रुचि टोंग्या व श्रीमति मनीषा जैन ने मंगलाचरण किया था।

यहीं पर दर्शनार्थ आचार्य श्री आर्जवसागरजी के निकट के भक्त लोग डॉ. अजित जैन, डॉ. सुधीर जैन सपत्नीक, इंजी. महेन्द्र जैन और बाद में पवन जैन आदि पधारे थे। उन्होंने भक्ति पूर्वक वंदना की और प्रवचन सुनकर आहार देने आदि का लाभ लिया और इसी दौरान आचार्य श्री आर्जवसागरजी से पूछा गया कि ये सब कुछ जो हुआ सो विधि और योग्यतानुसार हुआ और हम सब लोगों को खुशी का कारण है। लेकिन हम लोगों से कोई इस संदर्भ में पूछेंगे तो हम उन्हें इस संदर्भ को कैसे बतलायेंगे जिससे कि अपनी संघ परम्परा और इस परिस्थिति का सच्चा समाधान उन्हें मिल जाय। तब महाराज श्री ने कहा कि कहाँ तक बतलाऊँ! फिर भी कहता हूँ कि बहुत दिनों से जिन आ. सीमंधरसागरजी का समाचार ज्ञात होता रहता था। उनसे हम अपनी व्यवहारिकता निभाने हेतु उनके याद करने पर उनके पास पहुँचे थे सेवा करने; लेकिन थोड़ी-सी सेवा से ही मिल गया मेवा के समान आचार्य पद; हम नहीं जानते थे कि उनकी सल्लेखना का अन्तिम समय ही आ गया है उनके सामने जाते ही एक दिन की सेवा के बाद ही उन्होंने अपनी भावना व्यक्त कर दी कि मुझे अपना यह चा.च.आचार्य शान्तिसागरजी की परम्परा से प्राप्त आचार्य पद का भार तुम्हें सौंपना है; लेकिन हमें कोई पद की आशा न होते हुये भी हमने

उनकी परम्परा की रक्षार्थ और अन्तिम समय उनका भार हल्का होने के साथ उनकी आत्मिक शान्ति पूर्वक प्रसन्नता हेतु उनका पद परिस्थिति वश स्वीकार कर लिया और उनकी जो एक अन्तिम भावना थी कि शिष्यों को मोक्षमार्ग में आगे बढ़ाना और चा.च.आ. शान्तिसागरजी की जयकार हमारी परम्परा के आप लोग ही लगा सकते हैं अन्य परम्परा के लोग नहीं। यह भी एक दीक्षा देने वाले परोपकारी गुरुओं का ऋण है इसको अवश्य चुकाना चाहिए। ऐसे भावों को सुनकर मैंने उनकी त्याग और आस्था की भावना की सराहना की वास्तव में यह गुरुवर आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज के आशीर्वाद का फल मानता हूँ।

इस आचार्य पद का महत्त्व तो उनके लिए है जो मोक्षमार्ग पर आगे बढ़ने वाले हैं। दूसरे लोग माने या ना माने इससे कोई मतलब नहीं। जो योग्य भव्य दीक्षा प्रायश्चित्त आदि लेकर मोक्षमार्ग पर आगे बढ़ना चाहते हैं उनके लिए ही वे आचार्य हैं और उन्हें आशीर्वाद देकर उनका अनुग्रह करते हैं इस पद के लिए मात्र शास्त्र की विधि ही अनिवार्य होती है और किन्हीं आडम्बर औपचारिकताओं की आवश्यकता नहीं होती। यह प्रचार-प्रसार आदि तो श्रावकों की अपनी एक भक्ति है जो अपनी अनुकूलता के अनुरूप किया करते हैं। यह उनकी पुण्य वृद्धि का कारण हो सकता है।

गुरु लोग तो मात्र आशीर्वाद देकर इस कार्य में निमित्त मात्र हैं। जो जिस श्रद्धा से स्वीकार करेंगे उसे वैसे ही फल की प्राप्ति होगी। तो किसी ने पूछा कि- हे गुरुवर! प्रत्यक्ष रूप से आप श्री के लिए योग्यतानुसार सार्थक कार्य हो चुकने पर परोक्ष में अन्य किसी को अन्तिम यात्रा के समय पद प्रदान आदि ऐसा कार्य करना क्या संभव है? तो महाराजजी ने कहा जब तक शिव बनने का शक्ति रखने वाली आत्मा इस शरीर में होता है तब तक खुशी पूर्वक किये गये कुछ कार्य शोभा पाते हैं और शिव की शक्ति रखने वाली आत्मा जब इस स्थल से निकल जाता है तब यह शरीर शव हो जाता है और शव के सामने

केवल दु:ख का ही नजारा सामने रहता है। दुख के नजारे से किये गये खुशी के कार्य गंध रहित कागज के पुष्प की तरह काल्पनिक होते हैं और सार्थकता और वास्तविकता तो जिसकी वस्तु है उसके कर कमलों के द्वारा स्वस्थ चित्त पूर्वक साक्षात् प्रदान करने में है। पश्चात् आ. 108 श्री आर्जवसागरजी महाराज ने कुछ दिनों के बाद हाटपीपल्या से विहार करके चापड़ा, बागली, पुंजापुरा होते हुए उदय नगर की ओर विहार किया। महाराज श्री का जगह-जगह पर ग्रामीण क्षेत्रों में श्रावकों के चौकों में आहार हुए और प्रवचन हुए, जयकारों के नारों के साथ कई ग्रामीण क्षेत्रों के आदिवासी भी प्रभावित हुए एवं अन्य समाज के लोगों ने भी आरती, पाद प्रक्षालन कर पुण्यार्जन किया। जिसमें न्यायाधीश बागली के श्री आदेश जैन, अन्यत्र से भानुकुमार जैन, नरेन्द्र जैन, शांतिलाल जैन, राजेन्द्र जैन, अशोक जैन, अभय जैन, अरविन्द जैन के साथ ही ग्रामीण क्षेत्रों के पंच सरपंचों एवं महिला पुरुषों ने स्वागत किया और पू. आचार्यश्री के साथ चलकर विहार में सम्मिलित हुए। उदय नगर में कुछ दिन ठहरकर, पश्चात् वहाँ से पोटला वालों के नम्र निवेदन से वहाँ पर विहार किया। पश्चात् पोटला से जंगल के मार्ग से होते हुए सि.क्षे. सिद्धवरकूट पहुँचे।

जैन तीर्थ सिद्धक्षेत्र सिद्धवरकूट का त्रिदिवसीय वार्षिक मेले का समापन समारोह प.पू. आचार्यश्री 108 आर्जवसागरजी के सान्निध्य में सम्पन्न

श्री सिद्धक्षेत्र सिद्धवरकूट का त्रिदिवसीय वार्षिक मेले का समापन समारोह आचार्य 108 आर्जवसागरजी महाराज के सान्निध्य में सम्पन्न हुआ। मेले में इन्दौर से 10 बसों एवं आसपास के शहरों से सैकड़ों की संख्या में श्रावकगण आये थे। 6 मार्च को प्रात:काल आचार्यश्री आर्जवसागरजी ने श्रीमान् मोतीलाल जैन, दिल्ली द्वारा चल रहे 8 दिवसीय सिद्धचक्र मंडल विधान के समापन पर प्रवचन दिया। पश्चात् मेले के समवसरण महामण्डल विधान के समापन पर वहाँ पर भी प्रवचन के द्वारा धर्म प्रभावना की। पश्चात्

दोपहर 2 बजे से विमानोत्सव में श्रीजी को स्वर्ण के विमान में विराजमान कर आचार्यश्री आर्जवसागरजी के साथ बैंड बाजों एवं भजनों के साथ चँवर से नृत्य करते हुए नगर भ्रमण कराकर सभागार में आ. आर्जवसागर जी के प्रवचन हुए। पुनः वापसी पर भगवान बाहुबली स्वामी की प्रतिमा पर स्वर्ण रजत कलशों द्वारा अभिषेक वीतराग भगवान के गुणानुवाद पूर्वक साधु संघ द्वारा मंत्रोच्चारण से करवाया गया। इस अवसर पर आचार्यश्री आर्जवसागरजी को श्रीफल भेंट कर आशीर्वाद प्राप्त किया था। सिद्धक्षेत्र के अध्यक्ष प्रदीपकुमार सिंह कासलीवाल, नंदलाल टोंग्या, भानुकुमार जैन, बाबूलाल जैन बस सर्विस, विजय काला, संतोष मामा, आशीष चौधरी, कैलाश जैन, अरुण पहाड़िया, कैलाश मोटा घर, प्रदीप महल वाला, ज्ञानचंद जी, रतनलालजी कासलीवाल, भोखाखेड़ी, एन.एच.डी.सी. के महाप्रबंधक श्री जैन साहब आदि।

वीड़ नगर की ओर विहारः-

सिद्धक्षेत्र पर कुछ दिन ठहरकर पश्चात् वीड़ नगर की जैन समाज के निवेदन पर सिद्धवरकूट से विहार करके सनावद, देवला आदि से होते हुए ता. 20.3.15 को वीड़ नगर में बैंडबाजों एवं जय-जयकारों के साथ मंगल प्रवेश हुआ। दस वर्ष के पश्चात् इस नगर में मुनि संघ का आगमन हुआ था इसलिए लोगों में बहुत भक्ति थी, और पूरे कमेटी के लोग एवं समाज लोगों ने महावीर जयन्ती पर्व एवं आचार्यश्री आर्जवसागरजी का 28वाँ मुनि दीक्षा जयन्ती दिवस यहीं पर मनाया जावे ऐसा नम्र निवेदन किया।

महावीर जयन्ती एवं 28 वाँ मुनि दीक्षा समारोह सम्पन्नः-

परम पूज्य सन्त शिरोमणी आचार्यश्री विद्यासागरजी के परम शिष्य अध्यात्म योगी, धर्मप्रभावक आचार्यश्री आर्जवसागरजी महाराज के पावन सान्निध्य में खण्डवा जिले के वीड़ नगर में प्रथम बार ता. 2 अप्रैल 2015 गुरुवार को नूतन हाईस्कूल ग्राउण्ड पर महावीर जयन्ती महोत्सव एवं

आचार्यश्री आर्जवसागरजी का 28 वाँ मुनिदीक्षा दिवस समारोह आचार्य पद के गौरव रूप महोत्सव के साथ सानन्द सम्पन्न हुआ।

जिसमें प्रातः 6.00 बजे से नित्य जिनाभिषेक, पूजन के पश्चात् श्रीजी की विमानोत्सव शोभायात्रा बैंण्ड-बाजे के साथ अपार जन समूह की जय-जयकार की ध्वनि के साथ हर्षोल्लास पूर्वक हुई। तत्पश्चात् स्कूल के प्रांगण में त्रिशला देवी महिला मण्डल, वीड़ द्वारा मंगलाचरण किया गया। तदुपरान्त सन्त शिरोमणी आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज का चित्र अनावरण श्री शैलेन्द्र चाँदू लाल जैन ने किया और दीप प्रज्ज्वलन श्री मुकेश नेमिचन्द्र कुमार ने किया। पश्चात् धार्मिक पाठशाला के बच्चों द्वारा मंगलाचरण हुआ। पश्चात् आचार्यश्री आर्जवसागरजी महाराज का पाद प्रक्षालन करने का सौभाग्य श्री चक्रेश जैन, श्री आदित्य कुमार जैन परिवार रामगंजमंडी कोटा वालों को मिला। आचार्यश्री के लिए शास्त्र दान देने का सौभाग्य श्री हर्षद जैन मेहता, श्री अश्विन जैन धर्मपत्नी श्री वैशाली जैन परिवार एवं श्री गुणवन्ती जैन सूरत को प्राप्त हुआ। पश्चात् चन्दनबाला कन्या मण्डल द्वारा धार्मिक प्रस्तुति दी गई। तदुपरान्त नव निर्माणाधीन जिनालय के दान हेतु संचालन श्री चक्रेश जैन कोटा वालों ने किया जिसमें दो प्रतिमा प्रदाता, वेदी निर्माण दाता, पिलर, बीम दान दाता आदि सब मिला कर 20 लाख रु. की दान राशि वीड़ नव जिनालय हेतु प्राप्त हुई। पश्चात् आचार्य श्री आर्जवसागरजी महाराज की पूजन बड़े गौरव के साथ भक्ति पूर्वक की गई। तदुपरान्त 28 दीपों से आरती करने का सौभाग्य श्री सुनील कुमार, नेमीचन्द्र जैन, वीड़ को प्राप्त हुआ। इस कार्यक्रम का मंच संचालन श्री भानु कुमार जैन इन्दौर ने किया। उन्होंने आचार्य श्री आर्जवसागरजी महाराज का जीवन परिचय दिया।

तत्पश्चात् बाहर से पधारे अतिथियों का जैसे कि श्री चक्रेश जैन, श्री आदित्य जैन परिवार और श्री संजय जैन मित्तल सपरिवार आदि रामगंजमंडी कोटा, दिल्ली से पधारे श्री लोकेश जैन, श्री योगेश जैन आदि, भोपाल से

पधारे श्री डॉ. अजित जैन, सागर से पधारे श्री संजय जैन सपरिवार आदि, सूरत से पधारे श्री हर्षद भाई मेहता, श्रीमति वैशाली जैन अश्विन भाई सपरिवार, श्रीमति गुणवन्ती जैन और इन्दौर से पधारे श्री भानु कुमार जैन सपत्नीक, दमोह से पधारे श्री भरत जैन सपत्नीक, हरदा से पधारे श्री नीलेश सिंघई परिवार, बड़ौदा से पधारे श्री विवेक कुमार जैन, खातेगाँव से पधारे श्री संतोषजी पांडया, बड़वाह से संदीप कुमार जैन और ग्वालियर तथा आस-पास गाँव के पुनासा, खिड़किया, छनेरा, खण्डवा, आदि से पधारे अतिथियों का भी वीड़ कमेटी द्वारा सम्मान किया गया।

इस कार्यक्रम के अन्त में आचार्य श्री आर्जवसागरजी के द्वारा अपने प्रवचन में भगवान महावीर के जीवन दर्शन पर मंगल उद्‌बोधन देते हुए यह पावन संदेश दिया गया है कि आवश्यकता आविष्कार की जननी है। जब-जब इस धरती पर त्राहि-त्राहि का वातवरण निर्मित हुआ तब-तब निश्चित रूप से महान आत्माओं ने अवतार अवश्य लिया। ऐसे ही एक समय वह था इस भारत की पावन धरा पर अश्वों, बकरों और यहाँ तक नरों तक की हिंसा से यज्ञ करते हुए हिंसा का ताण्डव नृत्य चल रहा था। तब जनता के मुख से निकला कि वर्तमान में वर्धमान की आवश्यकता है। ऐसे ही विकट वातावरण में भगवान महावीर ने जनता के आत्म-कल्याण करने के लिए ''जिओ और जीने दो'' का संदेश के साथ अहिंसामय जगत बनाने के लिए इस भूमि पर स्वर्ग से आकर अवतार लिया। वैसे तो भारत के हरेक धर्म में अहिंसा का संदेश गाया गया है। बस उसे अपने जीवन में अमल में लाने की आवश्यकता है। आज भी महापुरुषों के धर्म सूत्र याद करें तो राम महावीर के राज्य पाने में देर नहीं। अहिंसा और त्याग में वह शक्ति है जो दानव से मानव क्या भक्त से भगवान ही बना देता है।

तत्‌पश्चात् श्रीजी का जिनाभिषेक हुआ और सामूहिक शुद्ध भोज का कार्यक्रम रखा गया। इस प्रकार इस कार्यक्रम का आयोजन श्री दि. जैन मन्दिर

निर्माण समिति एवं श्री आर्जव युवा मंच के आयोजकत्व में हर्षोलास के साथ सानन्द सम्पन्न हुआ। आचार्य गुरुवर पर लोगों ने जो व्यक्त किये विचार, वे हमारे कानों में गुंजायमान होते हैं उन विचारों के शब्द आपके सामने हैं।

संयम के सजग प्रहरी आचार्यश्री आर्जवसागरजी महाराजः-

गृहस्थ जीवन से संयम जीवन में आये आपको 28 वर्ष पूर्ण हो चुके हैं एवं 29 वाँ वर्ष प्रारम्भ हो रहा है। गुरुता का त्याग कर लघुता का आत्मसात कर, गुरुता और लघुता दोनों से परे अगुरुलघु बनने की आत्म साधना में संलग्न गुरु भगवान आचार्यश्री आर्जवसागरजी महाराज के चरण कमल में वन्दन, नमनः-

सूर्य चमकता है आकाश में। आप चमक रहे हो जिन शासन में ॥

आचार्य भगवन् आपको दीक्षा दिवस पर वंदन अभिनंदन, आपने संयमी जीवन के 28 बसंत निर्दोष निरतिचार रूप से पार कर लिये, संयम का एक दिन भी अद्भुत एवं सफल जीवन का सूचक होता है। 28 वर्ष की संयम साधना जीवन की अद्भुत विजया दशमी है। संयम का 29 वाँ वर्ष आत्मा की दीवाली है। जीवन की सर्वोच्च समुन्नति एवं अध्यात्म साधना की परम जागृति का नाम है दीक्षा जयन्ती।

आपकी संयम यात्रा आगे भी इसी तरह निर्वाध गति से चलती रहे। साथ ही आपके सान्निध्य में हम सभी दर्शन, ज्ञान, चारित्र और तप की आराधना में आगे बढ़ें। आपकी कृपा और सद्प्रेरणा से हमें यह रत्नत्रय रूप दुर्लभ संयम जीवन मिलाः-

मन की अंधियारी राहो पर करो किरण संचार,
जन-जन की पावन प्रज्ञा के खोलो आवृत द्वार।
उम्र हमारी सारी आपको आज समर्पित,
फलों के मृदुहास लिए तुम जियो वर्ष हजार॥

हे जिन शासन गौरव, हे अनेक गुणों के सागर, हे सन्मार्ग दाता आप शतायु हों, जीओ हजारों बरस, तन-मन से रहे सदा सरस, हे दिव्य पथ पर

गतिमान चरण; तुम्हें नमन।

शत कोटि वन्दन, छत्र छाया एवं वरदहस्त हमेशा हम पर बना रहे।

सद्गुणों की प्रतिमूर्ति हमारे गुरुदेवः-

वास्तव में आपकी वाणी में जादू भरा है,
क्योंकि जीवन आपका सेन्ट परसेन्ट खरा है।
तप-जप संयम से खूब निभाया है निज को, क्योंकि
आपके सिर पर गुरु विद्यासागरजी ने हाथ धरा है॥

परम पूज्य गुरुदेव आर्जवसागरजी महाराज के व्यक्तित्व में गजब का जुझारुपन है। स्वयं के आत्म कल्याण के साथ-साथ भव्य जीवों के कल्याण के लिये भी निरन्तर प्रयत्नशील रहते हैं। आगम की कसौटी पर तर्क के साथ डंके की चोट पर अपनी बात कहने में जरा भी नहीं झिझकते हैं। ऐसा नहीं कि गृहस्थों में ही लोभ होता है साधु भी शिष्य वृद्धि के लिए भक्तों के प्रभाव क्षेत्र बढ़ाने के प्रसिद्धि प्रशंसा के लिए तत्पर रहते हैं लेकिन आपको न शिष्यों का लोभ है ना प्रसिद्धि का। आपकी आस्था; प्रसिद्धि में नहीं आत्म सिद्धी में है। आपकी अभिरुचि जनरंजन में नहीं आत्मरंजन में है। आपकी अनुरक्ति प्रतिष्ठा में नहीं आत्म निष्ठा में है। आपका अनुगमन स्वयं के यशोगान में नहीं, गुरु गुणगान में है। आपकी श्रद्धा पर आसक्ति में नहीं स्व की प्रतीति में है। इसका प्रत्यक्ष उदाहरण हमें देखने को मिला मुनिश्री आर्जवसागर महाराज का हरदा (नेमावर) में गुरु शिष्य मिलना, गुरु का आशीर्वाद लेकर आप आगे बढ़े खातेगाँव, हरदा होते हुये देवास नाका पर मानो गुरुदेव का कोई इंतजार ही कर रहा हो; जी हाँ आचार्य सीमंधरसागरजी काफी अस्वस्थ व समाधि की ओर अग्रसर हो रहे थे। उन्होंने मुनिश्री को पहले भी कितनी बार बुलाया, पर अचानक योग बना मिलते ही उन्होंने अपने जीवन से आचार्य पद का त्याग कर मुनिश्री को दे दिया और स्वयं भार हीन होकर 8-10 दिन में ही समाधि को प्राप्त हो गये; ये होता है अपने लक्ष्य के प्रति सतत जागृत रहना। इस तरह के अनेकों उदाहरण आपके जीवन में मिलते हैं आप ज्ञान के खजाने हैं आपने

अपनी ज्ञान राशि को राजस्थान, मध्यप्रदेश, कर्नाटक, तमिलनाडु, गुजरात आदि प्रान्तों में घूम-घूम कर जन-जीवन में महामेघ बनकर पाठशालाओं के माध्यम से हजारों-हजारों बालकों में बरसाया। अधिक क्या कहूँ बस संक्षेप में कहा जाय तो इतना ही कहूँगी आपने अपने गुरु के आदर्शों को अपने जीवन में इस प्रकार उतारा कि लगता है कि आपने-अपने गुरु को अपने आप में समा लिया शायद आपकी अपने गुरु के प्रति यही भावना रही कि तुझमें मुझमें भेद ना पाऊँ। अंत में गुरु चरणों में आपकी प्रवचन शैली से प्रसूत ज्ञान रश्मियों के लिए या आगम चिन्तवन रूप स्वाध्याय के लिए शत् शत् बार नमोस्तु।

स्वाध्याय: शब्द एक, अर्थ अनेक

स्वाध्याय- स्व का अध्ययन। स्वाध्याय- स्व अनुशीलन। स्वाध्याय- स्व अनुशासन। स्वाध्याय- स्व चिंतन मनन। स्वाध्याय- आत्म विश्लेषण। स्वाध्याय- निर्ग्रन्थ प्रवचन। स्वाध्याय- सद्ज्ञान में लगन। स्वाध्याय- विनय का रमण। स्वाध्याय- विवेक का चलन। स्वाध्याय- जीवन का सृजन। स्वाध्याय- भाव परिवर्तन। स्वाध्याय- सद्भाव ग्रहण। स्वाध्याय- पाप कर्मों का शमन। स्वाध्याय- दुर्विचारों का दहन। स्वाध्याय- स्वचेतन में मगन। स्वाध्याय- कषायों का विसर्जन। स्वाध्याय- सुनियत जीवन पालन। स्वाध्याय- अथाह पुण्य सृजन। स्वाध्याय- अज्ञान मोह वर्जन। स्वाध्याय- कर्म बन्धन हनन। स्वाध्याय- सद्ज्ञान में विचरण।

गुरुवर 108 श्री आर्जवसागर जी का गुणानुवाद:-

भारत देश का परम सौभाग्य है कि श्रमण संस्कृति के परमराजहंस आचार्यश्री 108 विद्यासागरजी के परम प्रभावक दीक्षितशिष्य आचार्यश्री 108 आर्जवसागरजी महाराज! हम सभी साधर्मीजन अपनी संपूर्ण निष्ठा, आत्मीयता, शोभा-शालीनता सह आपकी वन्दना में नतमस्तक हैं आप अपने देश भारत में अहिंसा, परोपकार का और अखंड शांति का शंखनाद करने में लवलीन हैं।

हे गुरुवर आर्जवसागर मुनिराज श्री! आपकी करुणा/वात्सल्यता का कोई ओर-छोर नहीं है। आपकी तेजोमय चारित्र संबलित वाणी सहस्र-2 जनों को परितृप्त करती है। वास्तव में आप ''सत्वेषुमैत्रीं'' की परमज्योति की सर्वोपरी प्रस्तुति हैं। इसलिये प्राणी मात्र आप में आत्मकल्याण को साकार हुआ अनुभव करता है।

हे मुनिराज श्री! आपने अपने लोकमंगलकारी प्रवचनों के माध्यम से लोकमानस को परितृप्त किया है। आपकी प्रत्येक धर्मसभाएँ, जहाँ मौन को भी सुना जा सकता है, लगभग समवशरण रूप ही होती है। क्योंकि आपकी प्रखर अमृतवाणी में मयूरपंख की भांति मृदुता, सुकुमारता के साथ ही वात्सल्यता होने से जैन-जैनेतर सभी प्रभावित होकर सत्पथ के मार्ग पर चलने हेतु अभिभूत हुए हैं।

हे निर्ग्रंथ मुनिश्रेष्ठ! यह हम धर्मावलंबियों के हृदय का पुनीत नवनीत है कि आपने अपनी प्रखर-प्रांजल साधना अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी वाणी द्वारा मानवमात्र को एक नया विश्वास, नयी आशा, अभिनव आस्था और चिरस्मरणीय प्रेरणा दी है। आपका यह दिव्यावदान प्राणी मात्र को अहिंसा, मनुजता, सत्य-स्नेह तथा आत्मीयता की ओर उन्मुख करेगा।

हे मुनिराज श्री! आपका 27 वाँ अमृत वर्षायोग खातेगाँव नगर में हम श्रावकों के आत्मकल्याण हेतु प्रेरणास्रोत बनकर चिरस्मरणीय रहेगा। क्योंकि चातुर्मास बेला में यह प्रथम अवसर रहा है कि 32 दिवसीय षोडसकारण व्रत विधान और 4 दिवसीय समोवशरण विधान आपके पुनीत सान्निध्य में हुये हैं, जो विगत वर्षों में हुये चातुर्मासों में ऐसे विधान नहीं हुए। इसके अतिरिक्त श्री 1008 पार्श्वनाथजी, श्री108 श्रेयांसनाथजी, श्री 1008 पुष्पदंतजी, श्री 1008 वासूपूज्य स्वामी जी, श्री 1008 शीतलनाथ जी, श्री 1008 महावीर स्वामी जी का निर्वाणोत्सव, चा.च. आचार्य श्री 108 शांतिसागर जी का समाधि दिवस, आचार्य श्री विद्यासागरजी का 69वाँ अमृतोत्सव के साथ ही बाहर से पधारे

बच्चों सहित पाठशाला का भी मांगलिक कार्यक्रम मनाने का सौभाग्य आप ही के सान्निध्य में संपन्न हुआ।

समाज के साधर्मियों पुरुष, महिला, बच्चों को आध्यात्मिक बोध कराने की दृष्टि से विभिन्न विषयों की क्लास आप के द्वारा अत्यन्त सरल शैली में क्रियान्वित की गई। आचार्य कुन्द कुन्द देवश्री एवं आचार्य पूज्यपाद जी विरचित क्रमशः वारसाणुवेक्खा तथा इष्टोपदेश ग्रंथ जिसका सरल भाषा में पद्यानुवाद आपके द्वारा हुआ है, जो अनुकरणीय है।

हे मुनिराजश्री जी! आप ओजस्वी प्रतिभा के धनी तो हैं ही, भाषा पर आपका असाधारण अधिकार होकर शब्दों का विशाल भंडार आप में है, शब्दशक्तियों के आप ज्ञाता हैं, छंद रचना में परम प्रवीण हैं आप, अलंकार योजना में दक्ष हैं आप, तथा भाव सम्प्रेषण की शक्ति भी आप में अद्‌भुत है। हे तपस्वी मुनिश्री! वर्ष 2014 का भी यह अमृतवर्षायोग चिरस्मरणीय रहेगा, क्योंकि स्थानीय साधर्मी बंधुओं के अतिरिक्त आपकी अमृतवाणी का लाभार्जन एवं दर्शनलाभ भारतदेश के सुदूर स्थानों कर्नाटक, तमिलनाडु, गुजरात, राजस्थान, दिल्ली, महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश आदि के भी यात्रीगणों ने यहाँ पधारकर लिया है। अतः हम एक बार पुनः प्रत्यक्ष/परोक्ष रूप में उन्हें उनका अभिनंदन, स्वागत, अभिवादन समर्पित करते हैं।

हे मुनिराजश्री! Face is the index of heart इस अंग्रेजी वाक्यानुसार मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से व्यक्ति के भावों का अनुमान मुख मुद्रा देखकर ही लगा लेना आपका सहज स्वभाव है।

और हे मुनिराज! ''आपने यह भी सिद्ध किया है कि आत्मा का बल वैभव, शरीर के बल वैभव से बेहतर और बलवतर है।

ऐसी ही प्रबल भावना के साथ ही हे मुनिराजश्री! छोटी-सी उम्र में व्रत को लेकर, संयम को स्वीकारा है।

गुरुवर का आशीष मिला आपको, और चमका भाग्य सितारा है।

अब बने आचार्य जिनको शत्शत् नमन हमारा है। ऐसे आचार्यश्री 108 आर्जवसागरजी मुनिराजश्री को बारम्बार नमोस्तु, नमोस्तु, नमोस्तु।

क्षमा याचना–

हे तपस्वी निर्ग्रंथ मुनिराजश्री! आप करुणा के बीज हैं, प्रेम का वृक्ष आपकी संभावना है और क्षमा का फल तथा 'क्षमा वीरस्य भूषणम्' आप का सहज स्वभाव है।

ऐसे ही क्षमाफल की भावनाओं सहित हम सब क्षमा की प्रार्थना आपको समर्पित करते हुए। त्रयबार नमोस्तु, नमोस्तु, नमोस्तु! भी समर्पित करते हैं।

ग्रीष्म कालीन प्रवास व सि.क्षे. तारंगा की ओर विहार:-

परम पूज्य आचार्यश्री विद्यासागर जी महाराज से दीक्षित प.पू. आचार्यश्री आर्जवसागरजी महाराज के म.प्र. के बीड़ नगर में महावीर जयन्ती पर्व एवं गुरुवर का दीक्षा दिवस हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न होने के उपरान्त गुरुवर ने वहाँ से खण्डवा नगर की ओर विहार किया। खण्डवा नगर में आचार्य गुरुवर की भक्ति भाव से मंगल आगवानी की गयी। पश्चात् घासपुरा महावीर मंदिर में पाँच दिन के वास्तव्य द्वारा विशेष प्रवचन एवं पाठशाला के माध्यम से धर्म प्रभावना की तदुपरान्त वहाँ से 5 कि.मी. पर स्थित बोरगाँव अतिशय क्षेत्र गये। वहाँ पर भूगर्भ से प्राप्त भ. आदिनाथ के दर्शनों के बाद भक्तामर विधान, प्रवचन आदि हुए। पश्चात् भीकनगाँव की ओर विहार कर दिया।

भीकनगाँव में स्थित महावीर मन्दिर कमेटी के लोगों ने आचार्य गुरुवर की ग्रीष्म कालीन प्रवास हेतु एवं अक्षय तृतीया पर्व यहीं पर मनाने के लिए नम्र निवेदन किया और प्रतिदिन प्रवचन आदि के माध्यम से धर्मप्रभावना हुई। पश्चात् अक्षय तृतीया पर्व भी मनाया गया। धर्मात्मा कमल झांझरी की माता श्री मनोरमा झांझरी ने मई 2015 के प्रथम सप्ताह में आचार्यश्री

आर्जवसागरजी से अणुव्रत धारण किये। पश्चात् वहाँ से बहुत गर्मी में भी विहार करके आचार्यश्री का खरगोन की कमेटी द्वारा निवेदन किये जाने पर खरगोन नगर में प्रवेश हुआ। वहाँ टैगोर पार्क के नये मन्दिर में विराजित जिनबिम्बों का दर्शन किया। पश्चात् वहाँ पर कुछ दिन ठहरकर धर्म प्रभावना की। यहाँ पर सिद्धक्षेत्र तारंगा कमेटी के लोगों ने हाटपीपल्या के बाद दूसरी बार तारंगा में चातुर्मास हो इस भावना से आचार्यश्री के चरणों में नम्र निवेदन किया। पश्चात् 9 जून को विहार के लिए पूरी व्यवस्था सि.क्षे. तारंगा से आ गई सूरत से अरविन्द भाई गांधी एवं हर्षद भाई मेहता आदि सपरिवार विहार करवाने हेतु उपस्थित हो गये ब्र. भूपेन्द्र भाई सूरत वाले तो पूर्व से गुरुवर साथ थे ही और बड़ी प्रभावना के साथ आचार्यश्री 108 आर्जवसागरजी खरगोन से धामनोद की ओर विहार किया। साथ में सूरत वाले थे। भावन्दी आदि होते हुए खलघाट पहुँचे। बीच में धामनोद कमेटी के लोगों ने पुनः तारंगा वर्षायोग हेतु आकर आचार्यश्री के चरणों में श्रीफल अर्पित किये। पश्चात् धामनोद में मंगल प्रवेश हुआ।

वहाँ पर प्रवचन आदि के माध्यम से प्रभावना की। पश्चात् अतिशय क्षेत्र कागदीपुरा वालों के पूर्व निवेदन से आचार्यश्री ने कागदीपुरा क्षेत्र की ओर विहार किया। यहाँ पहुँच कर भूगर्भ से प्राप्त अतिशयकारी महावीर भगवान का दर्शन किया और प्रवचनादि हुआ। तदुपरान्त कमेटी द्वारा ठहरने का अति-आग्रह किये जाने पर भी वहाँ से विहार करके धार वालों के नम्र निवेदन से धार पहुँचे। शाम को नगर में प्रवेश हुआ नगर में स्थित मन्दिर का दर्शन करके सुबह मानतुंग गिरि गये। वहाँ आचार्यश्री की आगवानी के लिए वहाँ पूर्व से स्थित क्षुल्लिका चन्द्रमति माताजी आयी और क्षेत्र पर पहुँचकर वन्दनादि करने के उपरान्त प्रवचन आदि कार्यक्रम हुए। ठहरने हेतु अति आग्रह किये जाने पर भी दोपहर में आचार्यश्री का मंगल विहार झांबुआ की ओर हुआ। झांबुआ के समाज वालों ने आचार्यश्री के चरण कमल में श्रीफल अर्पित कर अपने नगर में

प्रवास करने हेतु नम्र निवेदन किया। तदुपरान्त झांबुआ में आचार्यश्री का मंगल प्रवेश हुआ और प्रवचनादि कार्यक्रम हुये।

गुजरात प्रदेश में मंगल पदार्पण:-

तदुपरान्त वहाँ से गुजरात की ओर मंगल विहार हुआ। गुजरात प्रदेश के प्रवेश गेट पर गुजरात के सूरत व दाहोद के लोगों ने मंगल कलश लेकर प्रदक्षिणा देकर पाद प्रक्षालन एवं आरती से अभिनंदन किया और श्रीफल आदि भेंटकर प्रथम मंगल किया। पश्चात् दाहोद समाज वालों ने आचार्यश्री को अपने नगर में पधारने हेतु नम्र निवेदन किया और दाहोद नगर में आचार्यश्री की मंगल भव्य आगवानी हुयी। दाहोद के भ. पद्मप्रभु आदि मन्दिरों का दर्शन कर धर्मशाला में प्रवचन दिये और शाम को गुरु भक्ति पूर्वक पाठशाला आरती आदि हुई तथा दूसरे दिन प्रातः प्रवचन हुआ और सभी कमेटी, समाज के लोगों ने मिलकर उत्साह पूर्वक आचार्यश्री को चातुर्मास हेतु नम्र निवेदन किया। दोपहर में भी प्रवचन हुये उसमें भावविज्ञान पत्रिका के नवीन अंक का विमोचन किया गया। सूरत से भी बहुत लोग आये हुये थे।

तदुपरान्त संतरामपुर की ओर विहार हो गया और फिर संतरामपुर पहुँचे। वहाँ पर भी प्रवचन आदि के माध्यम से धर्मप्रभावना हुई। वहाँ भी समाज के लोगों ने चातुर्मास के लिए निवेदन किया। पश्चात् वहाँ से विहार हो गया और बीच में जुलाई 11 तारीख को सभी तारंगा कमेटी के 40-50 लोगों ने चौथी बार आकर आचार्यश्री 108 आर्जवसागर जी के चरण कमल में श्रीफल अर्पित कर सि.क्षे. तारंगा में चातुर्मास के लिए एवं सिद्धचक्र विधान सम्पन्न हेतु नम्र निवेदन किया। पश्चात् वहाँ विहार करते हुए जादर, वलासणा, चाड़ा, हडोल आदि गाँव से होते हुए सि.क्षे. तारंगा के तलहटी में स्थित विद्यासागर तपोवन पहुँचे वहाँ आहार चर्या व प्रवचन के साथ एक दिन वास्तव्य किया।

सिद्धक्षेत्र तारंगा जी में मंगल प्रवेश वा सिद्धचक्र महामण्डल विधान:-

दिनांक 19 जुलाई 2015 को अरावली पर्वत मालाओं से आवेष्ठित सायरदत्त, वरदत्त वरांग केवली भगवंतों सहित साढ़े तीन करोड़ मुनिराजों की

निर्वाण भूमि सिद्धक्षेत्र तारंगा जी में संत शिरोमणी आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज से दीक्षित अध्यात्म योगी, वात्सल्य मूर्ति, धर्मप्रभावक आचार्यश्री 108 आर्जवसागरजी महाराज ससंघ चातुर्मास हेतु भव्य मंगल प्रवेश बैंड-बाजे, जयकारों और हर्षोल्लास के साथ कमेटी एवं समाज के लोगों ने बड़ी संख्या में उपस्थित होकर सम्पन्न करवाया। मन्दिरों का दर्शन कर हाल में प्रवचन हुआ और आषाढ़ अष्टान्हिका पर्व में 24/07/2015 से 01/08/2015 तक सिद्धसचक्र महामण्डल विधान पं. चन्द्रप्रकाश 'चन्दर' ग्वालियर वालों के निर्देशन में और आचार्यश्री आर्जवसागर जी के सान्निध्य एवं आशीर्वाद से सानन्द सम्पन्न हुआ। जिसमें 24 तारीख को घटयात्रा, सकलीकरण पूर्वक प्रतिदिन जिनाभिषेक, शान्तिधारा, नित्यपूजन पश्चात् आचार्यश्री का प्रवचन और मण्डल विधान की पूजन आदि कार्यक्रम हुये। बहुत लोगों ने इस विधान सौधर्म इन्द्रादि पात्र बनकर सिद्ध प्रभु की अर्चना कर के सातिशय पुण्य का अर्जन किया और ता. 31/07/2015 को गुरुपूर्णिमा मनाई तदुपरान्त ता. 01/08/2015 को वीर शासन जयन्ती एवं जिनाभिषेक, पूजन, हवन आदि के उपरान्त श्रीजी का विमानोत्सव, सम्मान, आचार्यश्री के प्रवचन आदि कार्यक्रम हुए तथा दोपहर में दीक्षार्थियों ब्र. महावीर भैया कर्नाटक एवं ब्र. भूपेन्द्र भैया सूरत का गोद भराई का कार्यक्रम हुआ और आचार्यश्री का प्रवचन भी हुये।

वर्षायोग स्थापना जैनेश्वरी दीक्षाएँ:-

तदुपरान्त ता. 02/08/2015 शनिवार को दीक्षा समारोह एवं वर्षायोग कलश स्थापना का कार्यक्रम अपार जन समूह के बीच सानन्द सम्पन्न हुआ जिसमें सुबह दीक्षार्थियों ने केशलोंच किया। तदुपरान्त देवदर्शन व भक्ति पूर्वक दीक्षार्थियों की भव्य शोभायात्रा निकली। पश्चात् आचार्यश्री आर्जवसागरजी महाराज का पण्डाल में आगमन हुआ। नये उपकरण(पिच्छि, कमण्डल) लाये गये। प्रथम दृश्य रूप से महेसाणा की बहिनों द्वारा संगीतमय मंगलाचरण से कार्यक्रम की शुरुआत हुई। इस कार्यक्रम का मंच संचालन पं.

अरविन्द जैन रायगढ़ वालों ने किया। पश्चात् दीक्षार्थियों ने आचार्यश्री से दीक्षा के लिए निवेदन किया और सबसे क्षमा माँगी। तदुपरान्त दीक्षा की क्रिया प्रारम्भ हुई। चतुर्गति निवारण हेतु स्वस्तिक चौक पुराया गया और चौकी पर दीक्षार्थियों को बिठाया गया। तदुपरान्त गुरुवर आचार्यश्री 108 आर्जवसागरजी महाराज ने इन दीक्षार्थियों पर मंत्र और भक्तियों आदि का उच्चारण करते हुए दीक्षा की क्रिया की। पश्चात् दीक्षार्थियों ने राग-युक्त वस्त्राभूषण त्याग दिये। ब्र. महावीर भैया, कर्नाटक वालों को ऐलक दीक्षा दी गई, ब्र. भूपेन्द्र भैय्या, सूरत वालों को क्षुल्लक दीक्षा दी गई और पिच्छि, कमण्डल, शास्त्र ये उपकरण उनको गुरुवर द्वारा प्रदान किये गये और ऐलक जी नाम 'महानसागर' रखा गया तथा क्षुल्लक जी नाम 'भाग्यसागर' रखा गया। सब लोग हर्ष विभोर हो गये। वैराग्य का दृश्य देखकर जयकार करते हुए खुशी के अश्रुपात करते हुए सब आनन्दित हो गये। दोनों नव दीक्षित महाराजों के निमित्त कमण्डल और शास्त्र आदि बोलियों द्वारा समाज द्वारा भेंट किये गये थे। पश्चात् दीक्षार्थियों का परिचय दिया गया।

तदुपरान्त द्वितीय दृश्य में सूरत की बहिन द्वारा मंगलाचरण हुआ। पश्चात् तारंगा कमेटी के लोगों द्वारा आचार्यश्री 108 विद्यासागरजी के चित्र आवरण किया गया। पश्चात् अतिथियों द्वारा दीप प्रज्ज्वलन किया गया। तदुपरान्त आचार्य गुरुदेव आर्जवसागरजी के पाद प्रक्षालन की एवं आरती का सौभाग्य श्री लोकेश जैन, दिल्ली परिवार को मिला। शास्त्र भेंट का सौभाग्य रमेश भाई जोईता लाल मेहता परिवार अहमदाबाद एवं गुणवन्तीबेन बी. मेहता परिवार सूरत को मिला। पश्चात् बाहर से पधारे तमिलनाडु, कर्नाटक, महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश, राजस्थान दिल्ली और सूरत मुंबई, ईडर, हिम्मत नगर, गांधी नगर, अहमदाबाद, महेसाणा, तलोद, कलोल और आजू-बाजू गाँव से बहुत से लोग इस कार्यक्रम में सम्मिलित हुए थे। इन सब का सम्मान तारंगा की कमेटी ने किया। पश्चात् बोलियों द्वारा पाँच कलश रखे गये। उसमें प्रथम

कलश 'रत्नत्रय कलश' का सौभाग्य श्री हर्षद भाई मेहता सूरत वालों को मिला और द्वितीय कलश 'अतिथि सत्कार' कलश का सौभाग्य श्री रमेश भाई जोइतालाल मेहता परिवार अहमदाबाद वालों को तथा तृतीय कलश 'धर्म प्रभावना कलश' का सौभाग्य श्री गुणवंती बेन बी. मेहता परिवार सूरत, वर्षा बेन आर. मेहता परिवार मस्कन वलासणा वालों को और चतुर्थ कलश 'पर्व कलश' का सौभाग्य श्री रमेशचंद कोदर लाल दोशी मुंबई परिवार वालों को और पंचम कलश 'वात्सल्य कलश' का सौभाग्य श्री गांधी नेमचंद स्वचंद परिवार सूरत (तालोद) वालों प्राप्त हुआ मोक्ष सप्तमी पर्व के पुण्यार्जक श्री विनोद भाई अमृतलाल वखारिया कलोल वाले तथा महापर्व सोलहकारण पर्व के पुण्यार्जक श्री नीलाबेन सुरेश भाई गांधी सूरत (दाँता वाले) और दशलक्षण पर्व के पुण्यार्जक श्री ज्योत्सना बेन महेन्द्र कुमार मेहता मुंबई वाले बने थे।

तदुपरान्त तृतीय दृश्य में ससंघ व्रती बहिनों द्वारा मंगलाचरण किया गया। पश्चात् कमेटी के लोगों ने आचार्यश्री के चरणों में चातुर्मास स्थापना के लिए नम्र निवेदन किया गया। पश्चात् ऐलकश्री महानसागरजी का उद्‌बोधन हुआ। तदुपरान्त अध्यात्म योगी धर्मप्रभावक आचार्यश्री आर्जवसागर जी का मंगल प्रवचन हुआ। जिसमें उन्होंने तारंगा क्षेत्र की महिमा पूर्वक वैराग्य की महिमा बतलाते हुए गुरु और शिष्य का महत्त्व मिट्टी और कुम्भकार के उदाहरण के माध्यम से दर्शाया। पश्चात् आचार्यश्री ने चातुर्मास प्रतिष्ठापन की पंक्तियाँ पढ़ी। पश्चात् मंत्र उच्चारण के साथ पाँचों कलश स्थापित किये गये। इस प्रकार ये सभी कार्यक्रम सिद्धक्षेत्र तारंगा की पावन धरा पर सानन्द सम्पन्न हुये।

भव्य दीक्षा समारोह सम्पन्नः-

सिद्ध क्षेत्र तारंगा रक्षाबंधन पर्व के दिन आचार्यश्री 108 आर्जवसागरजी महाराज एवं उनके शिष्य ऐलक श्री 105 महानसागरजी महाराज व क्षुल्लकश्री 105 भाग्यसागर जी महाराज के सान्निध्य में भिण्ड

निवासी कोल्हापुर प्रवासी (इंजीनियर) ब्रह्मचारी श्री नरेन्द्र जैन की ऐलक महाराज के पद की दीक्षा बड़ी प्रभावना के साथ सम्पन्न हुई। सबसे पहले प्रातःकाल में रक्षाबंधन पर्व पूजन निर्वाण लाडू के कार्यक्रम सम्पन्न होने के उपरान्त दीक्षार्थी की विनोली भव्य जलूस निकाला गया जिसमें दीक्षार्थी ब्र. नरेन्द्र जैन को चार घोड़ों से बनी बग्गी में राजसी वेशभूषा में बैंड बाजों के साथ जगह-जगह तिलक करते हुए बहुत संख्या में उपस्थित श्रावक-श्राविकाओं के साथ जयजयकार करते हुए क्षेत्र के मूलनायक भगवान श्री शंभवनाथ के दर्शन करवाये गये फिर पाण्डाल में उपस्थित होकर दीक्षार्थी ने आचार्यश्री आर्जवसागरजी महाराज का दर्शन कर उन्हें श्रीफल भेंट कर उनसे दीक्षा हेतु नम्र निवेदन किया। आचार्यश्री ने अपने प्रवचनों में दीक्षा का महत्त्व बतलाते हुए कहा कि जो संसार के मोह-जाल को छोड़कर मोक्ष प्राप्ति हेतु आध्यात्मिक साधना की जाती है और समता व आनन्द पूर्वक जो शरीर को तपस्या की आग में तपाया जाता है उसका नाम दीक्षा कहलाता है तथा गुरुमुख से रक्षाबंधन पर्व की कथा सुनाई। दीक्षार्थी द्वारा केशलोंच भी किये गये और दीक्षार्थी को प्रदान किये जाने वाले कमण्डल शास्त्र आदि प्रदान करने हेतु पात्रों का चयन किया गया। साथ ही बाहर से पधारे अतिथियों का सम्मान श्रीफल शाल एवं स्मृति चिन्ह प्रदान कर वर्षायोग कमेटी के अध्यक्ष अरविन्दभाई गांधी व प्रवीशभाई मेहता आदि द्वारा किया गया। दोपहर में सामायिक, ध्यान आदि के उपरान्त डेढ़ बजे से महिला वर्ग द्वारा मंगलाचरण से कार्यक्रम का मुख्य दृश्य देखने को मिला जिसमें आचार्यश्री आर्जवसागरजी द्वारा दीक्षा के संस्कार मंत्रादिक पाठ से प्रारम्भ हुए साथ ही दीक्षार्थी ने रागयुक्त राजसी वेशभूषा का त्याग कर दिया। उन्हें पीछी कमण्डल और शास्त्र प्रदान किये गये। आचार्यश्री की पादपूजन की गई, दीक्षार्थी के जीवन पर उनके परिचित लोगों द्वारा प्रकाश डाला गया। दीक्षार्थी ने क्षमावाणी पूर्वक संसार त्याग का महत्त्वपूर्ण उद्‌बोधन दिया। दीक्षा के व्रत-संकल्प ग्रहण करने के उपरान्त

दीक्षक का नाम ऐलक श्री 105 नमितसागरजी महाराज रखा गया।

कार्यक्रम में म.प्र. के भिण्ड, हरदानगरी, महाराष्ट्र के पूना कोल्हापुर एवं कर्नाटक, छत्तीसगढ़, महेसाणा, विसनगर आदि स्थानों से बहुत संख्या में लोग उपस्थित हुए थे। सभी ने श्रीफल भेंट अपने-अपने नगर में आचार्यश्री को ससंघ पधारने हेतु नम्र निवेदन किया। अंत में आचार्यश्री का मंगल प्रवचन हुआ। भव्य कार्यक्रम की पूर्णता पर क्षेत्र के मंत्री हसमुखभाई दोशी, स्नेहलभाई शाह, एवं हर्षदभाई मेहता ने आभार प्रस्तुत कर सभी को धन्यवाद अर्पित किया। कार्यक्रम सायं साढ़े पाँच बजे तक चला इस भव्य कार्यक्रम का संचालन पं. सुशील जैन वासवाड़ा ने किया।

सुमहती धर्म की प्रभावना :-

परम पूज्य आचार्यश्री आर्जवसागरजी महाराज के मंगल वर्षायोग 2015 के दौरान सिद्ध क्षेत्र तारंगाजी में पहली बार अपूर्व धर्म-प्रभावना हुई। वर्षायोग में स्वामी कार्तिकेयानुप्रेक्षा शास्त्र का स्वाध्याय चला और विशेष प्रवचन भी हुये। वर्षायोग का पहला कार्यक्रम, ता. 21 अगस्त को भगवान पार्श्वनाथ का मोक्ष कल्याणक तिथि मोक्ष सप्तमी का कार्यक्रम बहुत बड़े रूप से सम्पन्न हुआ। जिसमें बाहर बनाये गये पण्डाल में प्रातः मंगलाष्टक से प्रारम्भ करके श्री पार्श्वनाथ भगवान का जिनाभिषेक, शान्तिधारा के पश्चात् जिनपूजन संगीतमय सम्पन्न की गई। इसी बीच आचार्यश्री को शास्त्र भेंट एवं मंगल प्रवचन भगवान पार्श्वनाथ जीवन परिचय के साथ सम्पन्न हुआ। पश्चात् निर्वाण लाडु चढ़ाये गये। इस दिन के पुण्यार्जक श्री विनोद भाई अमृतलाल वखारिया कलोल वाले थे।

पश्चात् 28 अगस्त से महापर्व षोडसकारण पर्व महोत्सव प्रारम्भ हुआ। जिसमें करीब 50-60 लोगों ने यहीं पर ठहर करके एकाशन, एक उपवास एक एकाशन आदि के रूप में व्रत सम्पन्न किये। इसके पुण्यार्जक श्रीमती नीलाबेन, सुरेशकुमार गांधी सूरत वाले थे। और पहले दिन

षोडसकारण व्रत संकल्प कलश स्थापना कर्ता श्री डॉ. हर्षवर्धन मेहता परिवार विसनगर वाले थे। इसमें प्रतिदिन पांडाल में जिनाभिषेक, शान्तिधारा, संगीतमय षोडसकारण इत्यादि पूजन, आचार्यश्री के षोडसकारण भावना पर प्रवचन, जैनागम संस्कार कक्षा, प्रतिक्रमण, गुरुभक्ति, आरती, ध्यान इत्यादि कार्यक्रम सम्पन्न हुये। इसी दौरान 29 अगस्त को रक्षाबंधन पर्व मनाया गया। जिसमें विष्णुकुमार मुनि एवं अकम्पनाचार्यादि 700 मुनियों की पूजन की गयी। पश्चात् आचार्यश्री को शास्त्र भेंट, रक्षा-सूत्र इत्यादि के कार्यक्रम सम्पन्न हुये। पश्चात् आचार्यश्री का मंगल प्रवचन रक्षाबन्धन पर्व पर हुआ।

पश्चात् 15 सितम्बर को प.पू. चा.च. आचार्यश्री शान्तिसागरजी महाराज की पुण्य तिथि मनाई गई। जिसमें श्री शान्तिसागरजी महाराज की संगीतमय पूजन, आरती और आचार्यश्री आर्जवसागरजी का विशेष प्रवचन हुआ।

तदुपरान्त 18 सितम्बर से पर्यूषण पर्व या दशलक्षण पर्व प्रारम्भ हुआ जिसमें श्रावक संस्कार के रूप में 100-150 लोगों ने यहाँ ठहरकर व्रत किये। प्रतिदिन प्रातः ध्यान, विशेष जिनाभिषेक, शान्तिधारा, संगीतमय पूजन, एक-एक धर्म पर आचार्यश्री का विशेष प्रवचन, जिसको जिनवाणी चेनल वालों ने प्रसारण हेतु कवरेज किया। मध्यान्ह में ध्यान, जैनागम संस्कार कक्षा, तत्त्वार्थ सूत्र का वाचन और एक-एक अध्याय पर आचार्यश्री का प्रवचन, और शाम को प्रतिक्रमण आरती, ध्यान एवं रात को विद्वानों व व्रती बहिनों के प्रवचन इत्यादिक सांस्कृतिक कार्यक्रम होते थे। दशलक्षण पर्व के पुण्यार्जक श्री ज्योत्सना बेन महेन्द्रभाई मेहता, मुंबई वाले थे और दशलक्षण व्रत संकल्प कलश स्थापनाकर्ता कंचन बेन एवं मल्केशभाई शाह मुम्बई थे। इस पर्व में दो लोगों ने लगातार 16 उपवास किये और 12-13 लोगों ने दस-दस उपवास किये। 27 सितम्बर को दशलक्षण महामण्डल विधान हुआ और इसी दिन श्री

जी की शोभा यात्रा विमानोत्सव किया गया। 28 सितम्बर को षोडसकारण महामण्डल विधान हुआ और क्षमावाणी पर्व मनाया गया और व्रत करने वालों को तारंगा कमेटी एवं चातुर्मास कमेटी के ओर से सम्मानित किया गया।

3 अक्टूबर को भक्तामरजी का 24 घण्टे का अखण्डपाठ दिल्ली वालों के सहयोग से किया गया। 4 अक्टूबर को भक्तामर महामण्डल विधान हुआ, आचार्यश्री के प्रवचन हुये। पश्चात् शाम को श्री संभवनाथ जैन पाठशाला तारंगा के बच्चों ने सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये। इस प्रकार वर्षायोग में बहुत महती धर्मप्रभावना चली जिसे देखकर भक्तगणों ने अति हर्षित होकर अपूर्व आनन्द लिया।

श्री तारंगाजी सिद्धक्षेत्र में श्रीमज्जिनेन्द्र समवशरण महामण्डल विधान, क्षेत्र की वर्षगांठ, ध्वज स्थापना, मस्तकाभिषेक एवं पिच्छिका परिवर्तन महामण्डल विधान में हुई जैनेश्वरी दीक्षाएँ:-

परम पूज्य अध्यात्म योगी धर्म प्रभावक आचार्यश्री आर्जवसागरजी के ससंघ सान्निध्य में 15 नवम्बर को तारंगाजी सिद्ध क्षेत्र में श्रीमज्जिनेन्द्र समवशरण महामण्डल विधान के पात्र चयन का कार्यक्रम बोलियों के माध्यम से सम्पन्न हुआ। जिसमें चक्रवर्ती श्री सी.कुमार जैन तमिलनाडु वाले, सौधर्म इन्द्र श्री हर्षवर्धन परिवार बिसनगर वाले, महायज्ञनायक श्री हसमुखभाई दोशी विसनगर वाले, कुबेर इन्द्र श्री अरविन्द भाई गांधी, सूरत वाले, ईशान इन्द्र श्री हर्षदभाई मेहता सूरत वाले, बाहुबली श्री स्नेहिलभाई अहमदाबाद वाले, ध्वजारोहण कर्ता श्री सुधीरभाई सूरत वाले, सानतकुमार इन्द्र श्री गुणवन्ती बेन भूपेन्द्रभाई मेहता सूरत वालों के परिवार जन और माहेन्द्र-इन्द्र श्री रमेशभाई मुंबई वालों को सौभाग्य प्राप्त हुआ।

पश्चात् 16 तारीख को प्रातः जाप, स्थापना, देव-आज्ञा, गुरु-आज्ञा, प्रतिष्ठाचार्य निमंत्रण, घट-यात्रा, ध्वजारोहण, समवशरण उद्घाटन, जिनाभिषेक, शान्तिधारा, नित्य-पूजन एवं आचार्यश्री के मंगल प्रवचन हुये

तथा दोपहर में इन्द्र प्रतिष्ठा, समवशरण विधान पूजन प्रारम्भ हुई। पूजन के पश्चात् आचार्यश्री के प्रवचन हुए तथा शाम को गुरु भक्ति, आरती, रात को शास्त्र स्वाध्याय में इष्टोपदेश पर प्रवचन ब्र. पद्मालिनी दीदी द्वारा तथा सांस्कृति कार्यक्रम आदि भी सम्पन्न हुये। इसी तरह प्रतिदिन कार्यक्रम चलता रहा। इसी बीच 22 तारीख को दूसरे दिन दीक्षा लेने वाले कोल्हापुर निवासी श्रीभगवान विद्याधर बड़कावे ने गणधर वलय विधान किया तथा दोपहर में उनकी शोभा यात्रा निकाली गयी और रात्रि में गोद भराई का कार्यक्रम हुआ।

23 तारीख को प्रातः जिनाभिषेक शान्तिधारा के पश्चात् विशाल पाण्डाल में (आचार्य आर्जवसागर देशना मण्डप में) मंगलाचार से कार्यक्रम की शुरुआत हुई। बाहर से पधारे अतिथियों द्वारा चित्र अनावरण एवं दीप प्रज्ज्वलन किया गया। पश्चात् संघस्थ ऐलक जी द्वय एवं क्षुल्लक जी द्वारा आचार्यश्री आर्जवसागरजी से मुनि दीक्षा हेतु निवेदन किया गया। पश्चात् आचार्यश्री आर्जवसागरजी महाराज ने उन पर मुनि दीक्षा के संस्कार दिये और व्रतों का विवरण दिया। मुनि पद की दीक्षा धारण करते हुए तीन भव्यों ने सम्पूर्ण वस्त्र त्याग कर दिये और दिगम्बर मुनि बन गये। उनके नाम अब मुनि रूप हो गये अब वे मुनिश्री108 महानसागरजी, मुनिश्री 108 नमितसागरजी, मुनिश्री 108 भाग्यसागरजी महाराजजी कहलाये। कोल्हापुर के भगवान विद्याधर को आचार्यश्री आर्जवसागरजी ने क्षुल्लक दीक्षा के संस्कार दिये। उनका क्षु. भगवतसागर नाम रखा। सभी की नई पिच्छिकाएँ दी गई एवं शास्त्र भेंट किये गये। इस कार्यक्रम में तमिलनाडु, कर्नाटक, गुजरात, महाराष्ट्र, मध्यप्रेदश, राजस्थान, दिल्ली आदि स्थानों से भारी संख्या में लोग इस भव्य दीक्षा समारोह में पधारे थे। पश्चात् दोपहर में विधान का समापन एवं हवन का कार्यक्रम हुआ। यह समवशरण महामण्डल विधान प्रतिष्ठाचार्य ब्र. अजित भैया, सांगली के निर्देशन में सम्पन्न हुआ। 24 तारीख को भक्तामर महामण्डल विधान एवं मन्दिरों के ऊपर ध्वज स्थापना हेतु बोलियों का कार्यक्रम हुआ

पश्चात् आचार्यश्री के प्रवचन हुये।

25 तारीख को प्रातः मंगलाष्टक से कार्यक्रम का प्रारम्भ हुआ पश्चात् आदिनाथ भगवान एवं बाहुबली भगवान पर प्रथम, द्वितीय, तृतीय कलश की मस्तकाभिषेक हेतु बोलियाँ की गयी तदुपरान्त आचार्यश्री के मंगल प्रवचन हुये। पश्चात् मस्तकाभिषेक प्रारम्भ हुआ। जिसमें आदिनाथ भगवान पर प्रथम कलशाभिषेक करने का सौभाग्य श्री अरविन्द भाई गांधी सूरत वालों ने प्राप्त किया तथा बाहुबली भगवान के ऊपर प्रथम कलशाभिषेक श्री हर्षद भाई मेहता सूरत वालों ने प्राप्त किया। आचार्य संघ के आहारचर्या के पश्चात् श्री जी की शोभा यात्रा बड़ी प्रभावना के साथ सम्पन्न हुयी।

दोपहर में दो बजे से पिच्छि परिवर्तन का कार्यक्रम मंगलाचरण पूर्वक प्रारम्भ हुआ। आचार्य विद्यासागरजी का चित्र एवं दीप प्रज्ज्वलन का कार्यक्रम हुआ, तत्पश्चात् अतिथियों का सम्मान हुआ एवं धार्मिक कण्ठपाठ प्रतियोगिता में भाग लेकर उत्तीर्ण हुए लोगों को गोल्ड मोमेंटो द्वारा सम्मानित किया गया। जिन्होंने चार महीने से आने जाने वाले व्रतियों की सेवा की है ऐसे व्यक्तियों को कमेटी द्वारा सम्मानित किया गया। तदुपरान्त संघस्थ व्रती बहिनों द्वारा मंगलाचरण हुआ तथा उन बहिनों ने (ब्र. पद्मालिनी दीदी और ब्र. राजकुमारी दीदी ने) आचार्यश्री आर्जवसागरजी से आर्यिका दीक्षा प्राप्ति हेतु श्रीफल भेंट किये। पश्चात् तारंगाजी सिद्धक्षेत्र में निर्मित 'आचार्यश्री आर्जवसागरजी देशना मण्डप' के लिए दान देने वाले श्री नरेश जैन दिल्ली वाले एवं श्री हर्षद भाई सूरत वालों को सम्मानित किया गया। इसी मौके पर आचार्यश्री की पूर्व अवस्था की माँ मायादेवी ने अपने बेटे पारसचंद (वर्तमान में आचार्यश्री आर्जवसागर) की बचपन की स्वर्ण की अंगूठी सिद्धक्षेत्र तारंगाजी को दान में दी जिसकी क्षेत्र जीर्णोद्धार हेतु बोली लगाई गई। जिसे प्राप्त करने का सौभाग्य वैशाली बेन अश्विन भाई पारीख, सूरत को प्राप्त हुआ। तदुपरान्त जिन्होंने चातुर्मास कलशों की स्थापना की थी उन लोगों को

कलश प्रदान किये गये और सभी महाराजों को शास्त्र भेंट किये गये। पिच्छि परिवर्तन का कार्यक्रम हुआ जिसमें श्री टीकमचन्दजी मंजु बेन सूरत, श्री हर्षद भाई मेहता सपत्नीक सूरत, श्री शान्तिलालजी सपत्नीक सूरत, श्री वसंतलाल शाह बागीदोरा, श्री अरविन्द जैन कोल्हापुर, श्री भरत जैन कोथली (कर्नाटक) आदि को आचार्यश्री आर्जवसागरजी को नई पिच्छिका देने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। आचार्यश्री की पुरानी पिच्छिका लेने का सौभाग्य श्री अरविन्द भाई गांधी सपत्नीक सूरत को प्राप्त हुआ। अन्त में गुरुवर आचार्यश्री आर्जवसागरजी का मंगल प्रवचन सुकुमाल स्वामी के वैराग्य पर और सल्लेखना विषय पर अति रोचक रूप में तथा भव्यों को संयम मार्ग में बढ़कर कैसे मोक्ष पुरुषार्थ करें? इस विषय को लेकर सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम का संचालन ब्र. अजित भैया (आ. विद्यासागरजी के संघस्थ) द्वारा कुशल रीति से सम्पन्न हुआ।

तारंगा जी में आर्यिका दीक्षाएँ सम्पन्नः-

जहाँ से साढ़े तीन करोड़ मुनिराजजी मोक्ष गये हैं ऐसी पावन धरा पर सन् 2015 दिसम्बर 6 तारीख को 17, 18 वर्षों से प्रतिमाओं का पालन करने वाली ब्र. पद्ममालिनी एवं ब्र. राजकुमारी दीदीयों को आर्यिका दीक्षा प्राप्त हुई। जिसमें 5 तारीख को दीक्षार्थी की गोद भराई एवं भजन का कार्यक्रम हुआ। 6 तारीख को प्रातः 5 बजे दीक्षार्थियों ने केशलोंच प्रारम्भ किया। पश्चात् देव-दर्शन, गुरु-दर्शन के उपरान्त दीक्षार्थियों की बग्गी में बिठाकर भव्य शोभायात्रा हुई। आचार्यश्री आर्जवसागरजी महाराज के ससंघ सान्निध्य में ''आचार्यश्री आर्जवसागरजी देशना मण्डप'' का उद्घाटन श्री हर्षद भाई मेहता, सूरत एवं नरेश भाई (दिल्ली वाले), सूरत और उनके परिवार के लोगों ने किया।

तदुपरान्त मंगलाचरण से कार्यक्रम का शुभारम्भ श्री सलोनी जैन, सूरत से हुआ। पश्चात् तारंगा कमेटी द्वारा आचार्यश्री विद्यासागरजी का चित्र अनावरण किया गया। तमिलनाडु से पधारे अतिथियों द्वारा दीप-प्रज्ज्वलन

किया गया। कार्यक्रम में पधारे तिजारा वाले पंडितजी के द्वारा मंगलाष्टक पूर्वक दीक्षा विधि प्रारम्भ हुई। ब्र. पद्ममालिनी दीदी ने मंगलाचरण व अपनी भावना व्यक्त की कि-

''शान्ति छवि मूरत हैं गुरुवर वीर प्रभुवर-सम लगते।
स्वार्थ त्यागकर बने दिगम्बर, आत्म-ध्यान में रत रहते॥
भव्यों को सन्मार्ग दिखाकर धर्म-ध्यान में नित रहते।
हे! आर्जव गुरु तव-सम बनने, शत्शत् वन्दन हम करते॥'

आज तारंगाजी सिद्ध क्षेत्र पर जहाँ से वरदत्तादि साढ़े तीन करोड़ मुनि महाराजजी मोक्ष को गये हैं ऐसी पावन धरा पर जो मेरी बहुत वर्षों से भावना थी वह पूर्ण होने जा रही है इसके लिए मैं बहुत ही आनन्दित हूँ। सन् 1995 में जब आचार्य गुरुवर आर्जवसागरजी महाराज कुन्दकुन्द आचार्य की तपोभूमि के दर्शनार्थ तमिलनाडु में पोन्नूरमलै पधारे थे। तब मेरी उम्र 10-11 वर्ष की थी। एक दिन मैं और मेरी माँ दोनों ही अपने गाँव बंदवासी से पौन्नूरमलै गये थे। पहाड़ का दर्शन कर जब नीचे आये तब किसी ने बताया कि उत्तर भारत से मुनि महाराजजी पधारे हुये हैं। सुनकर बहुत हर्ष हुआ और तब इतना कुछ भी ज्ञान नहीं था कि कब दर्शन करना चाहिए तुरन्त ही गये और देखा तो गुरुवर सामायिक में विराजमान थे। तो खिड़कियों से दर्शन मिला, मेरे लिए यह प्रथम दर्शन था। उनकी शान्ति छवि प्रसन्न मुद्रा को देखकर ऐसा लगा कि साक्षात् भगवान ही बैठे हों। फिर कभी गये तो आहार वगैरह देने को मिला। माँ तो प्रायः रोज जाया करती थीं। लेकिन मैं पढ़ाई के कारण रोज नहीं जा पाती थी। धीरे-धीरे गुरुवर तमिल बोलने लगे और गाँव-गाँव में पाठशालायें खोलीं। उस पाठशाला के माध्यम से ही मुझे ज्ञान मिला, अन्यथा हम कुछ भी नहीं जानते थे। मन्दिर भी रोज नहीं जाते थे, इतना अज्ञान था। धीरे-धीरे ज्ञान बढ़ा सन् 1997 में गुरुवर आर्जवसागरजी महाराज के सान्निध्य में एरम्बूर गाँव के पंचकल्याणक में मैंने दो साल के लिए ब्रह्मचर्य व्रत लिया था। वह पूर्ण होने पर

सन् 1999 में गुरुवर के आशीर्वाद से निर्मित हुए विशाखाचार्य तपोनिलय में विशालरूप से जो पंचकल्याणक हुआ था। उसमें जो दो बहिनों ने आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत लेकर मोक्षमार्ग में बढ़ने की भावना व्यक्त की थी उसी समय मैंने पाँच वर्ष के लिए ब्रह्मचर्य व्रत लिया और उसी वर्ष पाठशाला में तत्त्वार्थ सूत्र का कोर्स प्रारम्भ हुआ था। गुरुवर अपने मुखार-बिन्द से तत्त्वार्थ सूत्र पढ़ा रहे थे। मुझे भी सीखना था तो 10वीं की परीक्षा होते ही माँ से पूछ करके छुट्टी में तपोनिलय के ब्रह्मी श्राविका आश्रम में चली गयी। तब तक तो एक अध्याय हो गया था। ज्ञान पाते-पाते गुरुवर के प्रवचन सुनते-सुनते ऐसा लगा अब घर नहीं जाना चाहिए। गुरुवर से अपनी भावना व्यक्त की तो गुरुवर कहने लगे अभी तो छोटी उम्र है अभी पढ़ाई और कर लो तो मैंने कहा आचार्य विद्यासागरजी ने भी तो 10वीं तक पढ़ाई की थी लेकिन धर्म का ज्ञान बढ़ गया तो आज वे विद्या के सागर बन गये। ऐसे ही मुझे भी अब संसार की पढ़ाई नहीं आपसे धर्म की पढ़ाई करनी है ऐसा कहकर घर जाने को इन्कार कर दिया। गुरुवर ने भी मौन स्वीकृति दी। फिर पिताजी आकर कहने लगे, चलो पढ़ाई कर लो, बाद में आ जाना तो भी मैंने मना कर दिया। माँ की सहमती ने मुझे आगे बढ़ाया और मैं व्रती बहिनों के साथ आश्रम से जुड़ गयी। गुरुवर का उस साल चातुर्मास नल्लवनपालयम् में हुआ था। चातुर्मास पूर्ण होने के बाद सन् 2000 में वहाँ के पंचकल्याणक में मुझे भ. आदिनाथ की पुत्री ब्राह्मी बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। उस समय मैंने गुरुवर आर्जवसागरजी से आजीवन के लिए ब्रह्मचर्य व्रत ले लिया और धवल वस्त्र धारण किये और उसी वर्ष से केशलोंच भी प्रारम्भ किया व दो प्रतिमा भी ले ली थी तथा चातुर्मास के दशलक्षण पर्व में मुझे गुरुवर के सामने और जनता के बीच मुखाग्र (बिना देखे) तत्त्वार्थ सूत्र सुनाने का सौभाग्य मिला।

मैं हमेशा चिंतवन करती रहती हूँ कि - यह संसार असार है इसमें कोई सुख नहीं है संसार का कोई जो भी काम हम सुख मान करके करते हैं लेकिन

वह दुःख का ही रूप लेता है। संसार में कोई धन दुःखी, कोई मन दुःखी, कोई तन दुःखी दिखते हैं। कोई भी सुखी नजर नहीं आता और यह संसार पाप का बीज है यहाँ सदा पाप का ही अर्जन होता है। पुण्य है तो धर्म में ही है, अपने लिए शरण भी वह धर्म ही है और कोई शरण नहीं। संसार में स्वार्थ के पीछे सब अपना-अपना कहते हैं वास्तव में कोई अपना नहीं है, अपनी आत्मा ही अपना है कुन्दकुन्द आचार्य ने वारसाणुवेक्खा ग्रन्थ में कहा है कि-

एक्को करेदि कम्मं एक्को हिंडदि य दीह संसारे।
एक्को जायदि मरदि य तस्स फलं भुंजदे एक्को॥

यह जीव अकेला ही कर्म करता है, अकेला ही दीर्घ संसार में भ्रमण करता है, अकेला ही जन्म लेता है तथा मरण करता है और अकेला ही कर्मों के फलों को भोगता है। कोई अपना साथी नहीं है। इसलिए अनादिकाल से किये पाप कर्मों को क्षय करने के लिए एक ही मार्ग है संयम रूप मार्ग-मोक्षमार्ग। आज हम तपस्या के माध्यम से ज्यादा पाप कर्मों को नष्ट कर लें, मल्लिनाथ भगवान जैसा अपने लिए भी जल्दी से केवलज्ञान प्राप्त हो जाय। उस संयम मार्ग को बताने वाले कौन होते हैं? गुरु। गुरु मिलना बहुत कठिन है और सच्चे सम्यग्दृष्टि निर्ग्रन्थ गुरु मिल जाय तो सौभाग्य की बात है। वह परम सौभाग्य मुझे प्राप्त हुआ है। मुझे ऐसे गुरु मिले जिनके पास गुणों का भण्डार है जिसका बखान हम इस मुख से नहीं कर सकते फिर भी कहती हूँ। इन गुरु ने मेरे जीवन को संसार परिभ्रमण के कारण मिथ्यात्व रूप अन्धकार में पड़े हुये मुझे सम्यग्दर्शन रूप रत्न-दीपक देकर प्रकाशित किया। संसार के माता-पिता से बढ़कर मुझे इनसे वात्सल्य मिला। संसार के माता-पिता ने तो मात्र इस शरीर का पालन-पोषण किया पैरों से चलना सिखाया लेकिन इन गुरुवर ने तो मेरी आत्मा का पालन-पोषण किया और धर्म-मार्ग में चलना सिखाया वास्तव में ये ही सच्चे माता-पिता हैं जिनसे अपनी आत्मा का उद्धार हुआ है। और इनके अन्दर करुणा तो इतनी है कि कभी किसी को दुःखी देखना ही नहीं चाहते

इनकी दृष्टि में सभी सुखी नजर आना चाहिए इतनी करुणा भरी है। चर्या व चारित्र में तो खरे उतरे हुये हैं। यह बात मात्र मैं ही नहीं जब ये अपने गुरु के साथ रहते थे तब सब लोग इनको क्या कहते थे मालूम है- ये सन्त नहीं ये तो भगवन्त हैं। मैं तो कहती हूँ जो होता इनके चरणों में, वह पाता दुःख का अन्त है। ये तो भगवन्त के समान हैं। चाहे आप आचार्यश्री विद्यासागरजी को देख लो, चाहे आप आचार्यश्री आर्जवसागरजी देख लो समान हैं, बिल्कुल ट्रू कापी से लगते हैं। चलने में, बोलने में, उठने में, बैठने में, हर जगह इनमें आगम की चर्या झलकती है। सरलता, गंभीरता, सहिष्णुता, समदृष्टिपना, आदि इनके अनेक गुण भविकों के मन को भाते हैं तो कहा है:-

जल में निर्मलता, चन्दन में शीतलता देखी है।
सागर में गंभीरता, पर्वत में अटलता देखी है।
हर एक में कोई खासियत देखी है; लेकिन
सारी विशेषताएं हमने सिर्फ आप में देखी हैं॥

गुरुवर ने जो हमारे ऊपर उपकार किया है संसार रूपी कीचड़ से इस मोहजाल से हमें उठाया और बांस से बांसुरी बना दिया, मिट्टी को घट का रूप दिया। इस उपकार को हम कभी भुला नहीं सकते हम इनके चरण कमलों की सेवा भवों-भवों तक भी करेंगे तो भी हम उस ऋण को चुका नहीं सकते। तो किसी ने अच्छा ही कहा है:-

संसार में गुरु कृपा सबसे बड़ी निराली है।
होली यही दशहरा यही, यही दिवाली है।
जो शिष्य है गुरु का वह सदैव ऋणी रहेगा।
उपकार क्या कोई कभी चुका सकेगा?

आप सभी को विदित हो कि भारत में एक ही आचार्य भगवन्त ऐसे हैं जो सोलहकारण व्रत करवाकर सभी को तीर्थंकर बनाना चाहते हैं। वे कौन हैं? तो आचार्यश्री आर्जवसागरजी महाराज। अच्छा आप लोग बताइए, जो स्वयं व्रत करके दूसरों को करवाते हैं वे क्या तीर्थंकर नहीं बनेंगे? वे तो अवश्य हम

से पहले ही तीर्थंकर बनेंगे। तो हम भावना भाते हैं कि हे गुरुवर! आप जब तीर्थंकर बनेंगे, तब हम (इस स्त्री पर्याय को छेद करके) आपके साक्षात् समवशरण में भी मुनि दीक्षा प्राप्त कर सकेंगे। अभी तो हम ''आचार्य आर्जवसागर देशना मण्डप'' में बैठकर आपकी देशना सुन रहे हैं आगे हमारे लिए आपके साक्षात् समवशरण मण्डप में आपकी दिव्य देशना सुनने का परम सौभाग्य हमें प्राप्त हो ऐसी मंगल भावना भाते हैं। हे गुरुवर मुझ पापी, अज्ञानी, दुरात्मन् से जो भी गल्तियाँ या भूलें हुयीं हों उसके लिए क्षमा का वरदान दीजिए और आप सभी को और लोक के सभी जीवों को मैं क्षमा करती हूँ और सभी जीवों से क्षमा याचना करती हूँ। अन्त में गुरुवर के चरणों में यही कामना करती हूँ कि हे गुरुवर! आप मुझे मोक्षमार्ग में आगे बढ़ाकर आर्यिका दीक्षा प्रदान करें और उस पथ पर मैं निरन्तर दृढ़ संकल्प से व्रतों को पालन करते हुए आपकी छत्र छाया में रहकर धर्म की प्रभावना करूँ यही कामना करते हैं नमोस्तु गुरुवर, नमोस्तु गुरुवर, नमोस्तु गुरुवर। अन्त में चार पंक्तियाँ–

तव चरणों की धूली गुरुवर, जिस प्राणी को मिल जाती।
अटल विश्वास हमारा है कि, उनकी किस्मत ही खुल जाती।
किस्मत खुली हमारी गुरुवर, बिन मांगे सब कुछ पाया है।
तुम्हारे आशीष से जीवन में, सच्चा आनन्द आया है।
सरलमूर्ति पूज्य गुरु को, अपना शीश झुकाते हैं।
जियें हजारों साल गुरुवर हम यही भावना भाते हैं॥

परम पूज्य आचार्यश्री आर्जवसागरजी महाराज की जय।

तदुपरान्त ब्र. राजकुमारी दीदी ने भी सबसे क्षमा याचना करते हुए और आचार्यश्री आर्जवसागरजी से आर्यिका दीक्षा हेतु नम्र निवेदन किया। दोनों दीदीयों ने आचार्यश्री आर्जवसागरजी महाराज के समक्ष श्रीफल भेंट करके दीक्षा प्राप्ति हेतु निवेदन किया। दीक्षार्थियों के माता पिता बनने का सौभाग्य श्री सुरेश भाई नीला बेन गांधी सूरत और रजनी भाई, चन्द्रिका बेन मेहता मुंबई वालों को प्राप्त हुआ। बाहर से पधारे अतिथियों का सम्मान का कार्यक्रम

हुआ। तदुपरान्त सौभाग्यवती महिलाओं से चौक पुरवाया गया। पश्चात् दीक्षार्थियों को उस पर बैठाया गया। और नई पिच्छिका व कमण्डल दीक्षार्थियों के परिवार के लोगों द्वारा पण्डाल में लाये गये।

तदुपरान्त आचार्यश्री आर्जवसागरजी ने आर्यिका पद की दीक्षा-विधि प्रारम्भ की। शास्त्रीय विधि विधान पूर्वक जाप दीक्षा मंत्र आदि क्रिया करते हुए दीक्षा दी गई। दीक्षार्थियों ने मुकुट, हार,शृंगार व घर, परिवार का त्याग करते हुए पाँच महाव्रतों को अंगीकार करते हुए पूर्ण संस्कार प्राप्त किये। तत्पश्चात् पूर्व परिवार वालों द्वारा पिच्छका आचार्यश्री को दी गयी। आचार्यश्री ने उन दीक्षित आर्यिकाओं का नाम आर्यिका श्री 105 प्रतिभामति, एवं आर्यिका श्री 105 राजितमति रखा। आचार्यश्री ने आर्यिकाओं को पिच्छि प्रदान की। तदुपरान्त श्री राहुल जैन परिवार, उदयपुर वालों ने आर्यिकाश्री प्रतिभामति माताजी को कमण्डल देने का सौभाग्य प्राप्त किया। इन्दिराबेन विपिनकुमार मेहता, मुंबई वालों ने आर्यिकाश्री राजितमति माताजी को कमण्डल देने का सौभाग्य प्राप्त किया। आचार्यश्री आर्जवसागरजी को शास्त्र भेंट श्री विपिनकुमार मणीलाल मेहता मुंबई वालों ने किया। श्रीमति मायादेवी जैन व तत्पुत्र श्री अरविन्द जैन, सागर वालों ने आर्यिकाश्री प्रतिभामति माताजी के लिए शास्त्र भेंट किया। तमिलनाडु वालों ने आर्यिकाश्री राजितमति माताजी को शास्त्र भेंट किया। मुनिश्री महानसागरजी के लिए श्री सुरेशभाई नीलाबेन गांधी सूरत, मुनिश्री नमितसागरजी के लिए रजनीभाई चांदुलाल जी मेहता मुंबई, मुनि श्री भाग्यसागरजी के लिए श्री हर्षदभाई मणीलाल मेहता, सूरत, और क्षु. भगवतसागरजी के लिए श्रीमति शोभाबेन हर्षदभाई मेहता सूरत वालों ने शास्त्र भेंट किये। मूलनायक संभवनाथ भगवान के लिए भामण्डल चढ़ाने का सौभाग्य श्री विपिनकुमार इन्दिराबेन मेहता, मुंबई वालों ने प्राप्त किया। इस कार्यक्रम में गुजरात, तमिलनाडु, पाण्डिचेरी, मध्यप्रदेश, राजस्थान, महाराष्ट्र आदि प्रान्तों से पधारे लोगों ने बहुत बड़े पुण्य लाभ को प्राप्त किया

और आचार्यश्री आर्जवसागरजी महाराज के संघ का गौरव बढ़ाया। इस प्रकार यह आर्यिका दीक्षा समारोह बहुत ही हर्षोल्लास के साथ सानन्द सम्पन्न हुआ। तदुपरान्त 9-12-2015 को आचार्यश्री आर्जवसागरजी महाराज का संघ सहित विहार ईडर, भीलोड़ा होते हुए राजस्थान की ओर हो गया।

पद-विहारः-

अध्यात्म-योगी, धर्मप्रभावक गुरुवर आचार्यश्री 108 आर्जवसागरजी महाराज का ससंघ विहार तारंगाजी से दिसम्बर 9 तारीख को प्रातः हडोल की ओर हुआ। पूरी कमेटी के लोगों की आँखों में आँसू छलक आये। पुनः मेरे गुरुवर कब पधारेंगे? ऐसे विचार से गुरुवर के साथ-साथ चल पड़े। पूरे तारंगा के लोग आचार्यश्री के साथ विहार कर रहे थे। आचार्यश्री विद्यासागर तपोवन वालों ने पादप्रक्षालन आरती और अर्घ आदि समर्पण किया। वहाँ प्रभु का दर्शन आचार्यश्री हडोल गाँव पहुँचे। वहाँ के मूलनायक भ. पार्श्वनाथ का दर्शन करने के पश्चात् आहारचर्या सम्पन्न हुयी तथा दोपहर में विहार कर दिया और बेराबर गाँव पहुँचे। वहाँ के मूलनायक श्री नेमिनाथ भगवान का दर्शन किया और आहारचर्या सम्पन्न हुयी। दोपहर में विहार हो गया और दूसरे दिन प्रातः ईडर की ओर विहार हुआ। गाँव के लोग बाजे के साथ गुरुवर की भक्ति करते हुए मन्दिर ले गये और आचार्यश्री आर्जवसागरजी महाराज का मंगल प्रवचन हुआ। दोपहर में नगर एवं पहाड़ी पर स्थित जिनालयों के प्रभु दर्शन करने के पश्चात् दूसरे दिन बड़ोली चिंतामणी पार्श्वनाथ, नागफणी पार्श्वनाथ, बिच्छीबाड़ा आदि गाँव के जिनालयों के दर्शन करते हुए डूंगरपुर की ओर विहार हुआ। डूंगरपुर की समाज के लोगों की जय-जयकार के साथ एवं बैंडबाजे के साथ नगर प्रवेश हुआ। वहाँ के एस.पी. श्री अनिल जैन साहब ने अपने बंगले (गृह) पर आचार्यश्री का भव्य स्वागत पूर्वक आगवानी की और प्रवचन कराया और विहार में साथ रहे सभी श्रावक गणों का सम्मान भी किया गया। पश्चात् बाजे के साथ महावीर नगर के मन्दिर में पहुँचे। वहाँ पर करीब

6-7 दिन रहकर प्रवचन आदि के द्वारा धर्मप्रभावना की। विहार में साथ रहे श्री अरविन्द भाई गांधी, सूरत और सूरत की महिलायें, तारंगाजी के कमेटी के लोग सब आचार्यश्री से क्षमायाचना करके वहाँ से विदा हुये। 7 दिन के पश्चात् आचार्यश्री आर्जवसागरजी महाराज का ससंघ विहार पूर्व दिशा की ओर हुआ। आँतरी, वरदा, नान्दोड़ आदि गाँव होते हुए सागवाड़ा नगर में बाजे एवं जय-जयकार के साथ प्रवेश हुआ तथा प्रवचन के बाद आहारचर्या हुईं। बहुत प्राचीन मन्दिरों के दर्शन किये। पश्चात् दोपहर में परतापुर नगर के कमेटी के लोगों ने आकर आचार्यश्री से शीतकालीन वाचना के लिए निवेदन किया। पश्चात् विहार भीलूड़ा, मोर होते हुए आदिनाथ कॉलोनी में प्रवचन व आहारचर्या कर मध्यान्ह में परतापुर नगर में बाजे के साथ एवं भारी संख्या में घर-घर के सामने पादप्रक्षालन, अर्घ, आरती आदि के साथ भ. नेमिनाथ मन्दिर में भव्य मंगल प्रवेश हुआ। इस विहार में अरविन्दभाई, हसमुखभाई, सुशील गंगवाल, स्नेहिलभाई आदि का विशेष सहयोग रहा।

परतापुर में करीब 10-12 दिन रहकर प्रवचन आदि के द्वारा धर्म प्रभावना की। तत्पश्चात् आचार्यश्री का ससंघ विहार तलवाड़ा की ओर हुआ। तलवाड़ा नगर में भव्य मंगल प्रवेश हुआ। प्रवचन के पश्चात् आहार चर्या हुई। अगले दिन सामायिक के पश्चात् बांसवाड़ा की ओर विहार हुआ।

आचार्य पदारोहण दिवस बांसवाड़ा में :-

परम पूज्य आचार्यश्री गुरुवर आर्जवसागरजी का ससंघ जनवरी 13 तारीख 2016 को बांसवाड़ा नगर के खान्दु कालानी में बाजे एवं जय-जयकार के साथ घर-घर के सामने पाद प्रक्षालन-आरती आदि करते हुए श्रावक गण की भारी संख्या के साथ भ. श्रेयांस नाथ मन्दिर में मंगल प्रवेश हुआ। प्रतिदिन प्रातः कालीन आचार्यश्री के प्रवचनों में बहुत संख्या में श्रद्धालुगण उपस्थित होते थे। दोपहर स्वाध्याय चलता था और शाम को पाठशाला में बच्चों के लिए शिक्षा दी जाती थी। गुरुवर के सरल भाषामय प्रवचनों से बहुत लोग आनन्दित

हुए। जनवरी 25 तारीख को गुरुवर का द्वितीय आचार्य पदारोहण दिवस मनाया गया जिसमें पं. अखिलेश शास्त्री के द्वारा दिये किये गये मंच संचालन में बांसवाड़ा की महिला मण्डल द्वारा मंगलाचरण पूर्वक कार्यक्रम की शुरुआत हुई। पश्चात् बाहर से पधारे अतिथियों द्वारा चित्र अनावरण एवं दीप प्रज्ज्वलन किया गया। पश्चात् क्षु. भगवतसागरजी ने अपना भाव व्यक्त किया। तत्पश्चात् आचार्य गुरुवर श्री आर्जवसागरजी के पादप्रक्षालन का सौभाग्य श्री अरविन्दभाई गांधी सूरत वालों को प्राप्त हुआ। शास्त्र भेंट का सौभाग्य श्री हर्षितभाई मेहता सूरत वालों ने प्राप्त किया और संघ में स्थित मुनिराजों एवं आर्यिकाओं को और क्षुल्लकजी को भी शास्त्र भेंट किये गये। तत्पश्चात् आचार्य गुरुवर आर्जवसागरजी की संगीत-मय पूजन अष्ट-द्रव्य से सजी हुई थालियों से भक्तिभाव पूर्वक सम्पन्न की गयी। तदुपरान्त आर्यिका प्रतिभामति माताजी ने आचार्य पद के सम्बन्ध में अपनी श्रद्धा व्यक्त की। मुनिश्री भाग्यसागरजी ने भी अपने लिए ये मुनिपद कैसे मिला इसके बारे अपना भाव प्रकट किया। मुनिश्री नमितसागरजी ने भी विशाल रूप से आचार्य पद की व्याख्या करते हुए गुरुवर की महिमा बताई। मुनिश्री महानसागरजी ने आ.गुरुवर को आचार्य पद की सुयोग्यता के सम्बन्ध में बताते हुए उनके गुणों का बखान किया। पश्चात् आचार्यश्री आर्जवसागरजी ने गुरु की महिमा बतलाते हुए अपना मंगलमय उद्बोधन दिया। श्रावकों द्वारा गुरुवर की भाव विभोर पूर्वक मंगलमय आरती की गयी। इस प्रकार यह आचार्य पदारोहण दिवस मंगलमय हर्षोल्लास पूर्वक सम्पन्न हुआ।

रतलाम में मंगल प्रेवश:-

तदुपरान्त कुछ दिन और ठहरने हेतु खान्दु कालानी समाज की ओर से बहुत निवेदन किये जाने पर भी 26 तारीख को आचार्यश्री का वहां से ससंघ विहार हो गया। छोटी सरवन आदि गाँव होते हुए 1 फरवरी को मध्यप्रदेश में स्थित रतलाम नगर में बेन्ड-बाजे के साथ एवं बहुत संख्या में श्रावकों के

जय-जयकार की ध्वनि गूंजते हुए नगर में मंगल प्रवेश हुआ। प्रातः प्रतिदिन गुरुवर का मंगल प्रवचन सम्यग्दर्शन के अष्ट अंग एवं जिनमन्दिर की विधि आदि विषयों पर हुआ। भक्तगण भी उत्साह पूर्वक प्रवचन का लाभ लेते थे। बांसवाड़ा से रतलाम तक के विहार में सूरत की महिलाओं एवं पुरुष वर्ग ने साथ में रहकर पुण्यार्जन किया। रतलाम नगर में करीब 15-16 दिन रहकर धर्मप्रभावना करके 17 फरवरी को आचार्यश्री का ससंघ विहार हो गया। बदनावर गाँव में कम संख्या में दिगम्बर जैन समाज होने के बाद भी बैण्ड-बाजे से गांव में आचार्यश्री का भव्य प्रवेश कराया और एक दिन ठहरकर फिर बड़नगर लोगों के मंगल निवेदन से वहीं की ओर विहार हुआ। फरवरी 21 तारीख को बड़नगर में बाजे के साथ, अपार जन समूह के साथ जयजयकार लगाते हुए नगर के अन्य मन्दिरों का भी दर्शन कराते हुए भ. चन्द्रप्रभु जिनालय में प्रवेश हुआ। प्रतिदिन प्रातः कालीन मंगल प्रवचन चले। जिनमें गुरुवर ने निश्चय-व्यवहार, अनेकान्त, स्वभाव-विभाव, सच्चा सुख शान्ति कहाँ? देव शास्त्र गुरु का स्वरूप, नयी मूढ़तायें कौन-सी हैं इत्यादि के विषयों पर प्रकाश डालते हुए भव्यों को सन्मार्ग दिखाया। पश्चात् वहाँ से विहार करके गौतमपुरा पधारे। दो दिन ठहरकर पश्चात् देपालपुर नगर में बाजे के साथ एवं श्रावकों के जय-जयकारों की ध्वनि के साथ नगर में प्रवेश हुआ। दोपहर में प्रवचन के माध्यम से धर्म प्रभावना की पश्चात् वहाँ से आचार्यश्री ससंघ बनेडिया अतिशय क्षेत्र पहुँचे। वहाँ के मूलनायक भ.अजितनाथ जी के साथ अन्य पाँच वेदियों का भी दर्शन किया और 9-10 दिन ठहरकर रविवार में किये गये विधान के बीच प्रवचन का लाभ दिया। अन्तिम रविवार के प्रवचन के पूर्व शास्त्र भेंट करने का सौभाग्य श्री संजय सीमा जैन सह-परिवार इंदौर वालों आदि ने प्राप्त किया।

उज्जैन महानगर में भव्यप्रवेशः-

पश्चात् वहाँ से विहार करके अजनोद हासमपुरा गाँव से होते हुए

आचार्यश्री का ससंघ उज्जैन नगर में पदार्पण हुआ। पहले जयसिंहपुरा के प्राचीन मन्दिर का दर्शन किया और वहाँ पर स्थित संग्रहालय का भी अवलोकन किया। तत्पश्चात् जैन बोर्डिंग वालों के निवेदन से आचार्यश्री शान्तिनाथ दि. जैन मन्दिर में पधारे। यहाँ पर प्रातः फाल्गुन अष्टान्हिका पर्व में श्री सिद्धचक्र महामण्डल विधान तथा प्रवचन आदि के माध्यम से धर्म प्रभावना सम्पन्न हुई।

मक्सी मेला सम्पन्नः-

परम पूज्य आचार्यश्री आर्जवसागरजी महाराज का ससंघ उज्जैन नगरी में अष्टाह्निका पर्व के प्रवास के दौरान वहाँ से 25 तारीख मार्च को विहार मक्सी जी की ओर हो गया। 26 ता. को बीच में आहार चर्या करके 27 ता. को प्रातःकाल अतिशय क्षेत्र मक्सीजी में मंगल प्रवेश हुआ। जिनालय दर्शन एवं आहारचर्या सम्पन्न हुई। पश्चात् 20 ता. को मक्सीजी में प्रातःकाल प्राचीन प्रतिमा का भी दर्शन किया। पश्चात् वार्षिक मेला का कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ। जिसमें प्रथम ध्वजारोहण क्षेत्र अध्यक्ष प्रदीप कासलीवाल एवं कमेटी के प्रमुख लोगों द्वारा किया गया। पश्चात् श्रीजी के रथोत्सव शोभा यात्रा आचार्यश्री के ससंघ में बहुत ही भव्यता के साथ में अपार जनसमूह के बीच सम्पन्न हुई। पश्चात्-आहार चर्या सम्पन्न हुई। तदुपरान्त आचार्यश्री आर्जवसागरजी मंचासीन हुये। आचार्यश्री का पादप्रक्षालन एवं शास्त्र भेंट श्रावकों द्वारा हुआ। तत्पश्चात् गुरुवर का मार्मिक प्रवचन हुआ। जिसको सुनकर सब लोग आनन्दित हो गये। भोपाल पंचशील नगर से पधारे हुए लोगों ने भोपाल पधारने के लिए श्रीफल भेंट किये। पश्चात् श्रीजी का जिनाभिषेक हुआ एवं गुरुवर के मुखारबिन्द से शान्तिधारा सम्पन्न हुयी। इस प्रकार यह कार्यक्रम मंगलमय सानन्द सम्पन्न हुआ।

सोनकच्छ की ओर विहारः-

आचार्यश्री ने ससंघ दोपहर में वहाँ से सोनकच्छ की ओर विहार किया।

टोंकखुर्द में सोनकच्छ की महिलायें एवं पुरुष वर्ग चौका लेकर आये थे। आहार चर्या के उपरान्त सबने आचार्यश्री के चरणों में सोनकच्छ पधारने हेतु श्रीफल भेंट कर निवेदन किया। पश्चात् विहार करते हुए 30 तारीख को गंधर्वपुरी पहुँचे। वहाँ पर स्थित प्राचीन संग्रहालय एवं जिनालय का दर्शन किया। आहारचर्या के उपरान्त वहाँ से विहार सोनकच्छ की ओर हो गया। शाम को सोनकच्छ में जन समुदाय के जय-जयकार के साथ मंगल प्रवेश हुआ। वहाँ पर चार-पाँच दिन ठहरकर मंगल प्रवचनों के माध्यम से एवं शाम को पाठशाला के माध्यम से धर्म की प्रभावना हुई। यहीं पर बागउमरावदुल्हा भोपाल वालों ने महावीर जयंती मनाने हेतु निवेदन किया। फिर आचार्य संघ का विहार मेतवाड़ा होते हुए आष्टा की ओर हो गया। आष्टा नगर प्रवेश पर बहुत संख्या में आकर अपने नगर में बेन्ड-बाजे के साथ बहुत जन समुदाय के साथ नगर के प्रमुख गलियों से होते हुये मंगल प्रवेश हुआ।

जिनालय दर्शन के पश्चात् गुरुवर का मंगल प्रवचन हुआ। आष्टा समाज वालों ने भी महावीर जयन्ती में गुरुवर का सान्निध्य प्राप्ति हेतु श्रीफल भेंट कर नम्र निवेदन किया। 5-6 दिन के प्रवास के पश्चात् आचार्य गुरुवर आर्जवसागरजी ससंघ ने सिहोर की ओर विहार कर दिया। कोठरी, अमलाह आदि गाँव होते हुए सिहोर नगर में भव्य मंगल प्रवेश हुआ। प्रभु-दर्शन के उपरान्त गुरुवर का मंगलमय उद्बोधन हुआ। प्रवचनोपरात्त सभी ने महावीर जयन्ती उत्सव आपके सान्निध्य मनाया जाये इस भावना पूर्वक श्रीफल भेंट कर निवेदन किया। पश्चात् शाम को वहाँ से विहार भोपाल की ओर हुआ। बीच-बीच में रुकते हुए विहार चल रहा था। सिहोर और भोपाल वाले विहार में साथ थे। भोपाल के कुछ दूर पहले भोपाल चौक मन्दिर की पूरी कमेटी के लोगों ने गुरुवर के चरणों में आकर सामूहिक महावीर जयंती में आपका सान्निध्य प्राप्त हो इस भावना से श्रीफल अर्पित कर नम्र निवेदन किया। अशोका गार्डन भोपाल की कमेटी ने भी आकर महावीर जयंती एवं चातुर्मास के लिए नम्र

निवेदन किया, और बाग उमराव दुल्हा वालों ने भी निवेदन किया।

भोपाल महानगर में भव्य मंगल प्रवेश:-

पश्चात् विहार करते हुए 17 तारीख को 12 साल के बाद भोपाल नगर में मंगल प्रवेश हुआ।

पहले बैरागढ़ मन्दिर का दर्शन किया, प्रवचन एवं आहार चर्या हुई। फिर शाम को विहार करके जैन नगर में प्रवेश हुआ। वहाँ पर स्थित विशाल नन्दीश्वर द्वीप का दर्शन किया। रात्रि विश्राम वहाँ करके प्रातःकाल वहाँ से विहार हो गया। बजरिया मन्दिर का दर्शन करते हुए बहुत दिनों से प्रतीक्षारत बाग उमराव दुल्हा में मंगल दिव्य घोष द्वारा अपार जन समूह के जय-जयकार एवं भक्ति के साथ 18 तारीख को भव्य मंगल प्रवेश हुआ। बारह साल पूर्व जहाँ पर पंचकल्याणक गुरुवर के सान्निध्य में सम्पन्न हुआ था उस तीन मंजिला जिनालय का दर्शन कर बहुत आनन्द हुआ पश्चात् विद्यासागर धर्मशाला में गुरुवर का मंगल प्रवचन हुआ। सबने महावीर जयन्ती में गुरुवर का सान्निध्य प्राप्त करने के लिए पुनः श्रीफल भेंट किये।

बागउमराव दुल्हा में महावीर जयन्ती:-

तत्पश्चात् 19 तारीख को भगवान महावीर का 2015 वाँ महावीर जयन्ती एवं गुरुवर आर्जवसागरजी का 29वाँ मुनि दीक्षा दिवस के उपलक्ष्य में बहुत ही मंगलमय कार्यक्रम हुआ। जिसमें प्रातःकाल मंगलाष्टक पूर्वक जिनाभिषेक प्रारम्भ हुआ, शान्तिधारा एवं पूजन हुई। पश्चात् बेन्ड-बाजे के साथ श्रीजी विमानोत्सव जुलूस आचार्यश्री के ससंघ सान्निध्य में नगर के प्रमुख रास्ताओं से निकलते हुए सबने अपने घरों के सामने पादप्रक्षालन एवं आरती आदि करते हुए अपार जन समूह के जय-जयकार एवं भक्ति, नृत्य के साथ धर्मप्रभावना करते हुए जुलूस मन्दिर तक वापिस पहुँचा। पश्चात् विद्यासागर धर्मशाला में मंगलाचरण पूर्वक कार्यक्रम शुरू हुआ और बोलियों के माध्यम से आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज का चित्र अनावरण एवं दीप प्रज्ज्वलन

का कार्यक्रम हुआ। श्रीजी का जिनाभिषेक हुआ। आचार्यश्री का पादप्रक्षालन किया गया। तदुपरान्त आचार्यश्री का 29वें मुनिदीक्षा दिवस के उपलक्ष्य में 29 लोगों ने शास्त्र भेंट किया, बाहर से पधारे जैसे दिल्ली, दमोह, कोल्हापुर, तमिलनाडु आदि प्रदेशों से पधारे अतिथियों का सम्मान किया गया। इस क्षेत्र के विधायक विश्वास सारंग ने अपने साथियों सह पधारकार आचार्यश्री के चरणों में श्रीफल भेंटकर आशीर्वाद प्राप्त किया, और उन्होंने अपनी भावना व्यक्त करते हुए सबको महावीर जयन्ती की एवं 29वें दीक्षा जयन्ती की बधाई दी। उनको कमेटी के लोगों ने सम्मानित किया। पश्चात् शास्त्र विमोचन हुआ जिसमें जैनागम संस्कार(नया संस्करण), समाधितंत्र, द्रव्यसंग्रह पद्यानुवाद ग्रंथ, भाव-विज्ञान (नवीन अंक) और आचार्यश्री की पूजन पुस्तक का विमोचन श्री अजित पाटनी, डॉ. श्री अजित जैन सपत्नीक, डॉ. सुधीर जैन सपत्नीक, श्री पवन जैन, श्री महेन्द्र जैन, श्री सुरेश जैन सपत्नीक एवं कमेटी के लोगों ने किया।

तत्पश्चात् आचार्यश्री आर्जवसागरजी महाराज की संगीतमय पूजन भक्ति भाव के साथ सम्पन्न हुई। पश्चात् 29 दीपों द्वारा आरती की गई। तदुपरान्त गुरुवर का मंगल प्रवचन हुआ। शाम को गुरुभक्ति एवं महावीर भगवान का जीवन चरित्र पर प्रश्न मंच एवं आरती हुई, और रात को पालना झुलाना व सांस्कृतिक कार्यक्रम बड़े ही हर्षोल्लास के साथ सानन्द सम्पन्न हुआ। आचार्यश्री आर्जवसागरजी महाराज के ससंघ ग्रीष्म कालीन प्रवास पर बाग उमराव दुल्हा में प्रातः सम्यक्ध्यान शतक पर प्रवचन और दोपहर में छहढाला की कक्षा एवं शाम को गुरु भक्ति आरती व जीवनसंस्कार की कक्षा चली। पहली बार यहाँ के भक्तों को बड़े संघ का दीर्घकालीन समागम मिला। सभी ने बड़े उत्साह के साथ सभी कार्यक्रमों में भाग लिया। 24.4.16 ता. को शंकराचार्य नगर एवं पंचशील नगर के पाठशाला के बच्चे एवं शिक्षिकाओं ने अष्ट द्रव्यों का थाल सजाकर संगीतमय भक्ति-भाव के साथ आचार्यश्री

आर्जवसागरजी महाराज की पूजन बाग उमरावदुल्हा में की एवं प्रवचन भी सुना। 5.5.16 तारीख को बाग उमराव दुल्हा में आचार्यश्री आर्जवसागरजी ससंघ सान्निध्य में श्री नमिनाथ भगवान के मोक्ष कल्याणक के उपलक्षय में सम्मेदशिखर विधान व लाडु पूजन रखी गयी थी। जिसमें सौधर्म इन्द्रादि प्रमुख पात्रों का चयन द्वारा बहुत ही मंगलमय सानन्द सम्पन्न हुआ। प्रातःकाल जिनाभिषेक नित्यपूजन, सम्मेदशिखर विधान, एवं श्री नमिनाथ भगवान का निर्वाण लाडु चढ़ाया गया। पश्चात् आचार्यश्री का मंगल प्रवचन श्री नमिनाथ भगवान का जीवन चरित्र दर्शाते हुए सम्यग्दर्शन विषय पर दिया। बहुत संख्या में श्रद्धालुगणों ने इस कार्यक्रम का लाभ लिया। पश्चात् छहढाला व जीवनसंस्कार पर परीक्षा हुई। उत्तीर्ण हुये लोगों को भावविज्ञान परिवार के सर्टिफिकेट एवं कमेटी के लोगों ने पुरस्कार देकर उनका सम्मान किया। पश्चात् 8 तारीख को प्रातःकाल कई बार किये गये नम्र निवेदन पर आचार्य गुरुवर आर्जवसागरजी का मंगल विहार अशोका गार्डन की ओर हो गया। बाग उमराव दुल्हा वाले आँसू बहाते हुए गुरुवर के पीछे-पीछे चलते रहे।

अशोका गार्डन में भव्य प्रवेश:-

अशोका गार्डन में बाजों के साथ गुरुवर का भव्य मंगल प्रवेश हुआ। प्रातःकाल प्रतिदिन प्रवचन माला से लोग बहुत आकर्षित हुये और द्रव्यसंग्रह कक्षा एवं जीवनसंस्कार की कक्षा से बच्चे लोग भी धर्म की ओर आकृष्ट हुये।

भव्य समवशरण महामण्डल विधान सम्पन्न :-

झीलों की नगरी भोपाल में स्थित श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर अशोका गार्डन में दिनांक 28 मई से 1 जून 2016 तक संत शिरोमणि आचार्यश्री विद्यासागरजी से दीक्षित अध्यात्म योगी धर्मप्रभावक प.पू. आचार्यश्री आर्जवसागरजी महाराज के ससंघ सान्निध्य में श्री मज्जिनेन्द्र समवशरण महामण्डल विधान एवं विश्वशान्ति महायज्ञ का कार्यक्रम प्रतिष्ठाचार्य ब्र. नितिन भैयाजी इन्दौर एवं सह-प्रतिष्ठाचार्य ब्र. अविनाश



2007 आचार्य आर्जवसागरजी से आशीष लेते हुए मंत्री जयन्त मलैया दमोह।



2007 दमोह पंचकल्याणक महोत्सव में त्रय गजरथ फेरी के समय गुरुवर आर्जवसागरजी महाराज एवं श्रेष्ठी व राजनेता गण।



2007 दमोह पञ्चकल्याणक में गुलाबचन्द पुष्पजी का सम्मान करते हुए पं.भागचन्द भागेन्दु दमोह आदि।



2007 दमोह वर्षायोग में श्रावक संस्कार में शिविरार्थीगण।



2007 दमोह इन्द्रध्वज विधान के समय गुरुवर आर्जवसागरजी के सान्निध्य में डॉ.सुशील जैन मैनपुरी का सम्मान करते हुए पदाधिकारीगण।



2007 दमोह में श्रीपाल दिवा भोपाल का सम्मान करते हुए पदाधिकारी गण।



2008, ग्वालियर किले पर गुरुवर व जन समूह के बीच गोपगिरि स्थित वर्धमान मंदिर का इतिहास सुनाते हुए सुभाषचंद जैन राऊ ग्वालियर।



ग्वालियर किला स्थित वर्धमान मंदिर।



2008, गुरुवर आर्जवसागरजी ग्वालियर गोपगिरि पर वर्धमान मंदिर सम्बन्धी जानकारी प्राप्त करते हुए मीडिया के लोग।



बजरंग दल प्रमुख जयभान पवैया द्रव्य अर्पित करते हुए।



2008 ग्वालियर किले पर पहुँचे गुरुवर आर्जवसागरजी ससंघ एवं सम्पूर्ण दि. जैन समाज।



2008 ग्वालियर किले पर वर्धमान मंदिर को स्वतन्त्र कराने हेतु सिंधिया स्कूल के सामने की ओर जाते हुए गुरुवर आर्जवसागरजी आदि।

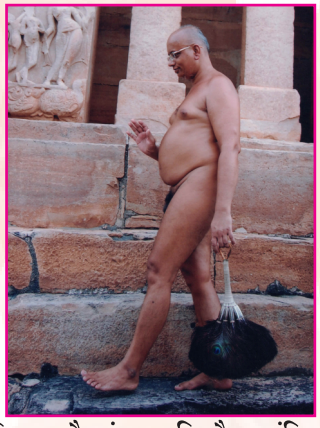

ग्वालियर तैलांगना दि.जैन मंदिर की परिक्रमा करते हुए गुरुवर आर्जवसागरजी।



2008 ग्वालियर स्वर्ण मंदिर में गुरुवर आर्जवसागरजी का दर्शन करते हुए वैज्ञानिक एस.के. जैन मुम्बई।



2008 ग्वालियर किला स्थित वर्धमान मंदिर को सिंधिया स्कूल से स्वतन्त्र कराने हेतु जन समूह सहित पहुँचे गुरुवर श्री 108 आर्जवसागरजी महाराज ससंघ।



2008 ग्वालियर किले पर दर्शनार्थ जाते हुए गुरुवर आर्जवसागरजी महाराज ससंघ।



ग्वालियर में धर्मसभा को सम्बोधित करते हुए गुरुवर आर्जवसागरजी मुनिराज।

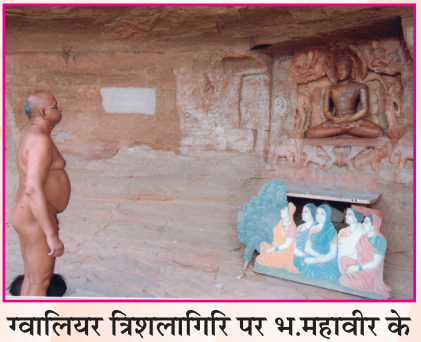

ग्वालियर त्रिशलागिरि पर भ.महावीर के पंचकल्याणक का दर्शन लाभ लेते हुए गुरुवर आर्जवसागरजी।



ग्वालियर किले पर गुरुवर आर्जवसागरजी से सम्मानित होते हुए डॉ.अल्पना मोदी।

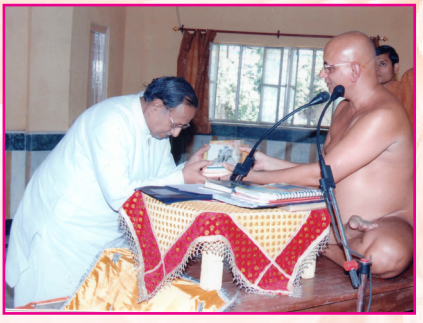

2008 ग्वालियर महावीर भवन में अहिंसा-विज्ञान संगोष्ठी पर गुरुवर आर्जवसागरजी से साहित्य प्राप्त करते हुए डॉ.राधारमण जी कुलसचिव



2008 ग्वालियर एस.डी.एम. आर.के. जैन गुरुवर श्री आर्जवसागरजी के दर्शन करते हुए।



2008 ग्वालियर में गुरुवर आर्जवसागर जी से आशीष लेते हुए के.एम. गंगवाल पुणे।



2008 ग्वालियर आर्जवसागर संगोष्ठी पर सम्मानित होते हुए डॉ. डी.सी. जैन, दिल्ली।



अहिंसा विज्ञान संगोष्ठी 2008 ग्वालियर में संकल्प देते हुए के.एम. गंगवाल पुणे।

भैयाजी भोपाल के निर्देशन में सानन्द सम्पन्न हुआ।

इस विधान हेतु पात्रचयन का कार्यक्रम मई 25 तारीख को रखा गया था जिसमें सौधर्मइन्द्र, श्री शरद अजमेरा श्रीमती अनिता अजमेरा, चक्रवर्ती श्री सतीश जैन श्रीमती रचना जैन, ध्वजारोहणकर्ता श्री लाभमल अजमेरा, श्रीमती कुसुम अजमेरा इत्यादि पात्रों को सौभाग्य प्राप्त हुआ।

ता. 28 मई शनिवार से विधान प्रारम्भ हुआ। जिसमें पहले प्रातः देव आज्ञा, गुरु आज्ञा, प्रतिष्ठाचार्य निमंत्रण पश्चात् घट यात्रा शुरू हुई। घट यात्रा सम्पन्न होने के उपरान्त कलशों के पवित्र जल से पूरे पाण्डाल की शुद्धि एवं मण्डप शुद्धि क्रियायें की गयीं। तत्पश्चात् ध्वजारोहण की क्रियायें प्रारम्भ हुई। पूर्ण विधि के साथ ध्वजारोहण किया गया। पश्चात् पाँच श्रीजी प्रतिमा मन्दिर से पण्डाल तक लाये गये और अभिषेक एवं दस शान्तिधारों के पश्चात् समवशरण में श्रीजी की स्थापना की गई। पश्चात् समवशरण का उद्घाटन हुआ। समवशरण में गणधर के रूप में गुरुवर आचार्यश्री आर्जवसागरजी का मंगल प्रवचन हुआ। पश्चात् सकलीकरण, इन्द्र प्रतिष्ठा, मण्डप प्रतिष्ठा, नित्य पूजन एवं समवशरण मण्डल विधान प्रारम्भ हुआ। शाम को गुरु भक्ति, आरती एवं श्रीजी की महाआरती तथा भैयाजी का प्रवचन एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम हुये। 29 से 31 मई तक प्रातः मंगलाष्टक, अभिषेक, शान्तिधारा, नित्यपूजन एवं विधान पूजा की गई और प्रतिदिन विभिन्न विषयों पर समाज को दिशा बोध देने वाली रोचक अमृत वाणी गुरुवर आ. आर्जवसागरजी महाराज से मुखारबिन्द से खिरी। शाम को महाआरती प्रवचन, सांस्कृतिक कार्यक्रम चला। ता. 1 जून को विधान समापन के दिन विश्वशान्ति महायज्ञ हुआ। पश्चात् श्रीजी शोभा यात्रा एवं रथोत्सव बाजे बेन्ड और दिव्य जय घोष एवं इन्द्र-इन्द्राणियों एवं अपार जन समूह के साथ यह जुलूस बहुत ही भव्यता के साथ सम्पन्न हुआ। पश्चात् आचार्यश्री आर्जवसागरजी महाराज का मंगल प्रवचन हुआ और जिनाभिषेक के पश्चात् श्रीजी मन्दिर में पुनः विधिवत्

विराजमान किये गये। इस प्रकार यह समवशरण महामण्डल विधान गुरुवर आर्जवसागरजी महाराज ससंघ के मंगल सान्निध्य में हर्षोल्लास के साथ सानन्द सम्पन्न हुआ।

श्रुत पञ्चमी पर्व महोत्सव :-

ता. 9 जून 2016 को श्रुतपंचमी पर्व पर सर्वोदय ज्ञान विद्या शिक्षण शिविर का समापन गुरुवर आचार्यश्री आर्जवसागरजी महाराज के ससंघ सान्निध्य में अशोकागार्डन में किया गया। जिसमें प्रातः अभिषेक, शान्तिधारा के उपरान्त नित्यपूजन एवं श्रुतपंचमी पर्व की पूजन भी की गयी। पश्चात् गुरु सान्निध्य में पालकी पर जिनवाणी को विराजमान करके बेन्ड-बाजे के साथ एवं विभिन्न मन्दिरों से आई पाठशालाओं और शिविरों के विद्यार्थियों के साथ तथा विद्वानों एवं समाज के अपार जनसमूह के साथ यह जुलूस सम्पन्न हुआ। पश्चात् पण्डाल में आचार्यश्री विराजमान हुये और मंगलाचरण पूर्वक कार्यक्रम की शुरुआत हुई। पश्चात् महासभा के अध्यक्ष अजितजी पाटनी आदि ने श्रीफल भेंट किये तथा भोपाल के 17 मन्दिरों में हुये शिविर में जो भाग-1, भाग-2, भाग-3, छहढाला, भक्तामर स्तोत्र, तत्त्वार्थ सूत्र, द्रव्यसंग्रह आदि विषयों में जो प्रथम श्रेणी में आये उन शिविरार्थियों को धर्म संरक्षिणी महासभा ने मोमेण्टो (मेडल) देकर पुरस्कारित किया। पश्चात् बाहर से पधारे अतिथियों एवं अशोकागार्डन कमेटी के लोगों ने श्री फल भेंट किये। पश्चात् शिविर में पढ़ाने के लिए सांगनेर जयपुर से आये हुये शास्त्रियों को महासभा द्वारा सम्मानित किया गया। श्रुत पञ्चमी पर्व के उपलक्ष्य में आचार्यश्री के लिए भक्तों द्वारा शास्त्र भेंट किये गये। तदुपरान्त विभिन्न मन्दिरों की कमेटी के लोगों ने अपने मन्दिरों में गुरुवर का पदार्पण हेतु श्रीफल भेंट किये। महासभा वालों ने भोपाल राजधानी में लम्बे प्रवास हेतु नम्र निवेदन पूर्वक श्रीफल भेंट किये। पश्चात् अध्यात्म योगी आचार्यश्री आर्जवसागरजी का मंगल प्रवचन श्रुत पञ्चमी पर्व के कथानक पर धरसेनाचार्य ने पुष्पदन्त, भूतबली महाराज

को कैसे ज्ञान दिया और कैसे कब शास्त्र की रचना हुयी इसके बारे बताते हुए ज्ञान का (जिनवाणी का) महत्त्व बताया। इस प्रकार यह कार्यक्रम मंगलमय सानन्द सम्पन्न हुआ। पश्चात् शाम को अशोकागार्डन से आचार्यश्री आर्जवसागरजी महाराज जी ससंघ विहार शंकराचार्य नगर, भोपाल की ओर हो गया।

वर्षायोग के नम्र निवेदन एवं भोपाल के चौक जिनालय में कर्मदहन विधान सम्पन्न :-

दिनांक 18 जून को शंकराचार्य नगर में बागउमरावदूल्हा जिनालय की कमेटी और समाज ने वर्षायोग हेतु आचार्यश्री 108 आर्जवसागरजी महाराज ससंघ के चरणों में श्रीफल अर्पित किये। दिनांक 20 जून 2016 को आचार्यश्री 108 आर्जवसागरजी महाराज ससंघ का शंकराचार्य नगर में आठ दिनों प्रवास के बाद वहाँ से विहार होकर कमेटी व समाज द्वारा अनेक बार निवेदन के उपरान्त चौक मन्दिर में मंगल प्रवेश हुआ। तीन मंजिला जिनालय की सर्व प्रतिमाओं का दर्शन करने के पश्चात् धर्मशाला में आचार्यश्री का मंगल प्रवचन सम्यक् ध्यान पर हुआ। प्रवचन के पश्चात् विधान हेतु पात्र चयन का कार्यक्रम हुआ। पश्चात् दोपहर में स्वाध्याय एवं शंका समाधान तथा शाम को गुरुभक्ति, भजन, आरती आदि कार्यक्रम ब्र. अविनाश भैया के निर्देशन में सम्पन्न हुआ। 21 तारीख को प्रातः देव आज्ञा, गुरु आज्ञा आदि के साथ ध्वजारोहण, जिनाभिषेक शांतिधारा, नित्य पूजन तथा कर्म दहन विधान प्रारम्भ हुआ। इसी बीच सम्यक् ध्यान पर आचार्यश्री के मंगल प्रवचन हुये। इसी तरह 22 जून को विधान पूर्ण करके तत्पश्चात् 23 जून को विश्व शान्ति महायज्ञ पूर्वक आचार्यश्री के मंगल उद्बोधन के साथ सम्पन्न हुआ। इसी आयोजन के दौरान शाहपुरा जिनालय, भोपाल की कमेटी के साथ समाज के लोगों ने वर्षायोग हेतु श्रीफल अर्पित किये। 24 तारीख को आचार्यश्री के द्वारा भरी सभा में ध्यान करवाया गया। इस प्रकार भोपाल चौक मन्दिर में यह पंच दिवसीय सम्यक्

ध्यान प्रशिक्षण का कार्यक्रम भी एवं त्रिदिवसीय श्रीमज्जिनेन्द्र कर्मदहन महामंडल विधान एवं विश्व शान्ति महायज्ञ सानन्द सम्पन्न हुआ।

श्री भगवज्जिनसहस्रनाम महामण्डल विधान सम्पन्नः-

आचार्यश्री आर्जवसागरजी महाराज का ससंघ चौक मन्दिर में शंकराचार्य नगर के प्रबल भक्ति-भाव से पुनः आगमन हुआ। दिनांक 25 जून से 30 जून 2016 तक श्रीमज्जिनेन्द्र भगवज्जिनसहस्रनाम महामण्डल विधान एवं विश्व शान्ति महायज्ञ एवं आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज का 49 वाँ दीक्षा दिवस सानन्द सम्पन्न हुआ। इस कार्यक्रम हेतु पात्रों का चयन जून 18 तारीख को किया गया। जिसमें सौधर्म इन्द्र श्री गेंदालाल जैन -श्रीमती किरण जैन, भरत चक्रवर्ती श्री जैनपाल-श्रीमती सरला जैन, कुबेर इन्द्र श्री सुमित-श्रीमती अंशु जैन, बाहुबली श्री महेन्द्र कुमार-श्रीमती कांता जैन, महायज्ञनायक श्री संजय-श्रीमती रजनी जैन इत्यादि रूप से पात्र बनकर भव्यों ने इस महामण्डल विधान में प्रभु की अर्चना करने का सौभाग्य प्राप्त किया। दिनांक 25 जून को प्रातः देव आज्ञा, गुरु आज्ञा पूर्वक कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ। घट यात्रा में अष्टकुमारियाँ व महिलाओं ने हाथों में कलश लेकर मंगल प्रभावना की। पश्चात् ध्वजारोहण किया गया। तदुपरान्त मण्डप शुद्धि, श्री समवशरण में श्रीजी की स्थापना, जिनाभिषेक शान्तिधारा, नित्य पूजन के उपरान्त आचार्यश्री के मंगल प्रवचन हुये। पश्चात् सकलीकरण, इन्द्र प्रतिष्ठा और मण्डप प्रतिष्ठा पूर्वक विधान का प्रारम्भ ब्र. अविनाश भैया के निर्देशन में शुरु हुआ। शाम को आचार्य भक्ति, आरती पश्चात् श्रीजी की महाआरती, मंगल प्रचवन व सांस्कृतिक कार्यक्रम सम्पन्न हुये और 26 से 29 जून तक मंगलाष्टक, जिनाभिषेक, शान्तिधारा, नित्यपूजन एवं विधान हुआ और आचार्यश्री के मंगल प्रवचन सम्यग्दर्शन विषय पर सम्पन्न हुये और शाम को आचार्य भक्ति आरती आदि कार्यक्रम हुये। पश्चात् 30 जून को आचार्यश्री 108 विद्यासागरजी महाराज के 49 वें दीक्षा दिवस के उपलक्ष में महापूजन बड़ी

भक्ति भाव के साथ सम्पन्न हुयी। तथा विश्व शान्ति महायज्ञ हवन के पश्चात् आचार्यश्री के मंगल प्रवचन हुये तदुपरान्त मंगलमय श्रीजी की शोभा यात्रा रथोत्सव के साथ सम्पन्न हुई। बैण्ड बाजे, बग्गियों एवं दिव्य-घोष, तथा आचार्यश्री के ससंघ और अपार जन समूह के साथ वह रथोत्सव निकाला गया। जिस रथोत्सव से पूरे नगर की परिक्रमा के साथ अपूर्व धर्म-प्रभावना सम्पन्न हुई। पावन वर्षायोग की भावना के साथ इस प्रकार यह भगवज्जिनसहस्रनाम महामंडल विधान का कार्यक्रम एक इतिहास के रूप में शंकराचार्य नगर में पहली बार बड़े हर्षोल्लास के साथ सानन्द सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम की अन्तिम बेला में पंचशीलनगर भोपाल जिनालय की कमेटी व वहाँ जैन श्रावक-श्राविकाओं ने पावन वर्षायोग हेतु आचार्यश्री से नम्र निवेदन करते हुए श्रीफल अर्पित किये।

वेदी प्रतिष्ठा कार्यक्रमः-

परम पूज्य आचार्य गुरुवर आर्जवसागरजी ससंघ की पंचशीलनगर के विशेष निवेदन से शंकाराचार्य नगर से विहार करके पंचशीलनगर में दिव्य जय घोष व जय-जयकारों के साथ भव्य आगवानी हुयी। करीब 8-10 दिन ठहरकर मंगल प्रवचन आदि से धर्मप्रभावना हुयी। पश्चात् शाहपुरा से होते हुए बावडियाँकलाँ में बाजे-गाजे के साथ भव्य मंगल प्रवेश हुआ। यहाँ पर गुरुवर के मंगल सान्निध्य एवं आशीर्वाद से एवं ब्र. जयकुमार निशांत व पं. मनीष जैन टीकमगढ़ के निर्देशन में 14, 15 एवं 16-07-2016 तारीखों में त्रिदिवसीय वेदी प्रतिष्ठा कार्यक्रम रखा गया। जिसमें पहले दिन विधान हेतु पात्र चयन किया गया और आचार्यश्री के मंगल प्रवचन आदि कार्यक्रम हुआ तथा दूसरे दिन श्रीमज्जिनेन्द्र पंचकल्याणक महामण्डल विधान, प्रवचन आदि हुआ। तत्पश्चात् अन्तिम दिन अभिषेक, पूजन के पश्चात् मंगल दिव्य श्रीजी की शोभा यात्रा बाजे के साथ अपार जन समूह के बीच प्रतिमाओं को मन्दिर जी में वेदी पर विराजमान किया गया। आचार्यश्री के मंगल प्रवचन आदि

कार्यक्रम भी हुये। इस प्रकार यह कार्यक्रम मंगलमय सानन्द सम्पन्न हुआ।

भोपाल मंडीदीप में भव्यमंगलप्रवेश:-

परम पूज्य आचार्य गुरुवर आर्जवसागरजी महाराज का ससंघ विहार 16.07.16 दोपहर को बावडियाकलाँ से मंडीदीप समाज के निवेदन से उस दिशा की ओर विहार किया और शाम को 5:30 बजे मंडीदीप में धर्मध्वजा व बाजे एवं विशाल जन समूह के साथ मंगल प्रवेश हुआ। संघस्थ 105 श्री प्रतिभामति एवं 105 राजितमति आर्यिकाओं ने मेन रोड में मंगल आगवानी की। घर-घर के सामने गुरुवर का पादप्रक्षालन किया गया। जय-जयकार के साथ मन्दिर तक पहुँचे, मन्दिर का दर्शन कर संतनिवास पहुँचे। वहाँ पर मंगल उद्बोधन दिया। मण्डीदीप कमेटी के द्वारा चातुर्मास हेतु श्रीफल भेंट किये गये। पश्चात् 19 तारीख को गुरुवर का पादप्रक्षालन, शास्त्र भेंट, विशेष पूजन आदि से गुरु पूर्णिमा मनाई गई और गुरुवर ने अपने मंगल प्रवचन में गौतम को महावीर जैसे गुरु कैसे मिले ? इसके बारे में बताया। दूसरे दिन वीरशासन जयन्ती के दिन कैसे 66 दिन के बाद वाणी खिरी इसके बारे में कहा।

चातुर्मास प्रतिष्ठापन:-

पश्चात् 24.07.16 तारीख को मेन बाजार के निकट विशाल पण्डाल में चातुर्मास प्रतिष्ठापन मंगलकलश स्थापना का कार्यक्रम मंगलमय सम्पन्न हुआ। जिसमें पहले श्रावकगण गुरु संघ को एवं मंगल कलशों को लेकर बाजे के साथ कार्यक्रम स्थल पर पहुँचे। सर्वप्रथम चन्दन वाला कन्या मण्डल, अशोकागार्डन, भोपाल द्वारा मंगलाचरण किया गया। इस कार्यक्रम का संचालन डॉ. नरेन्द्र जैन, भोपाल वालों ने किया था। पश्चात् सूरत से पधारे अतिथियों द्वारा चित्र अनावरण तथा सूरत, अहमदाबाद, दमोह, सागर और भोपाल से पधारे अतिथियों द्वारा दीप प्रज्ज्वलन किया गया। पश्चात् मण्डीदीप की कन्याओं द्वारा मंगलाचरण हुआ। पश्चात् बाहर से पधारे अतिथियों को कमेटी की ओर से सम्मानित किया गया। मण्डीदीप की पाठशाला के बच्चों ने धार्मिक प्रस्तुति दी। तदुपरान्त कलशस्थापना की बोलियाँ शुरु हुई। जिसमें

प्रथम रत्नत्रय कलश का सौभाग्य श्री दिलीप-रेनू पहाड़िया जैन को, दूसरा अतिथिसत्कार कलश का सौभाग्य श्री प्रेमचंद-शान्ति जैन भोपाल को, तीसरा वात्सल्य कलश का सौभाग्य श्री आजाद-अनिता जैन को, चौथा धर्मप्रभावना कलश का सौभाग्य श्री छगनलाल-चमेली जैन को, पंचम सौभाग्य कलश का भाग्य अर्पित मेघा जैन को प्राप्त हुआ। पश्चात् पादप्रक्षालन का सौभाग्य पटेल नगर वालों को व पूजन का सौभाग्य श्रीमती अंकुरी बाई परिवार मण्डीदीप वालों को और आरती का सौभाग्य श्री अरविंद जैन आदि सूरतवालों को और शास्त्र भेंट का सौभाग्य राजीव-मनोज कुमार जैन पटेल नगर वालों ने प्राप्त किया। पश्चात् मण्डीदीप समाज द्वारा चातुर्मास हेतु निवेदन पूर्वक श्रीफल भेंट किये गये। तदुपरान्त भाव-विज्ञान पत्रिका के नवीन अंक का विमोचन किया गया। पश्चात् गुरुवर की संगीतमय पूजन एवं आरती हुई। तत्पश्चात् गुरुवर का मंगल प्रवचन अहिंसा एवं चातुर्मास के महत्त्व के संदर्भ में सम्पन्न हुआ। पश्चात् पाँचों कलश कार्यक्रम स्थल से संत-निवास तक जय-जयकारों के साथ लाये गये। तदुपरान्त मंत्र उच्चारण के साथ शुभ-मुहूर्त में कलशों की स्थापना की गयी। इस कार्यक्रम में भारत के अनेक प्रदेशों जैसे भोपाल, दमोह, सागर, अहमदाबाद, तमिलनाडु, सूरत, राजस्थान आदि स्थानों से पधारकर लोगों ने इस कार्यक्रम को भव्य रूप प्रदान किया। इस प्रकार यह चातुर्मास कार्यक्रम मंगलमय सानंद सम्पन्न हुआ।

तदुपरान्त 9 अगस्त 2016 को भगवान् पार्श्वनाथ का मोक्षकल्याणक दिवस बड़ी भक्ति पूर्वक मनाया गया। जिसमें संतनिवास में सम्मेदशिखरजी की रचना कराकर उसके बीच सांवलिया पार्श्वनाथ विराजमान किया। पश्चात् अभिषेक, पूजन के साथ निर्वाण लाडु विशेष व्यक्ति को चुनकर निर्वाणकाण्ड पढ़ते हुए भक्तिभाव के साथ लाडु चढ़ाया गया। इसी बीच भ. पार्श्वनाथ के जीवनदर्शन पर गुरुवर का प्रवचन भी सम्पन्न हुआ और मन्दिरों में भी दोनों वेदियों में भी लाडु चढ़ाये गये। पश्चात् आचार्यश्री की मंगलप्रेरणा से 17 अगस्त 2016 से सामूहिक सोलहकारण व्रत महोत्सव प्रारम्भ हुआ। जिसमें

श्री प्रदीप जैन, बीना के निर्देशन में जिनाभिषेक, शांन्तिधारा के उपरान्त व्रत संकल्प का कार्यक्रम श्री विनोद कुमार वकील साहब द्वारा मंगलकलश स्थापना पूर्वक किया गया। पश्चात् आचार्यश्री का आशीर्वाद एवं प्रवचन हुआ। इस सोलहकारण व्रत में बाल, युवा, वृद्ध सब मिला करके करीब 80-85 लोगों ने इस व्रत में भाग लिया। प्रतिदिन संगीतमय सामूहिक पूजन की गयी और गुरुवर का प्रवचन तीर्थोदयकाव्य को समझाते हुए सोलह भावना पर प्रारम्भ हुए और 18 अगस्त को रक्षाबन्धन पर्व एवं श्री श्रेयांसनाथ भगवान का मोक्षकल्याणक दिवस मनाया गया। सभी ने विष्णुकुमार मुनि एवं अकम्पनाचार्यदि 700 मुनियों की पूजन की और सभी ने रक्षासूत्र बांधा और श्री श्रेयांसनाथ भगवान की पूजन के साथ निर्वाण लाडु भी चढ़ाया गया। पश्चात् गुरुवर का प्रवचन रक्षा बन्धन पर्व पर हुआ तथा 3 सितम्बर 2016 को चारित्र चक्रवर्ती आचार्यश्री शान्तिसागरजी महाराज की पुण्यतिथि मनाई गई। जिसमें उनका चित्र अनावरण एवं पूजन, आरती आदि कार्यक्रम हुये और कुछ व्यक्तियों ने श्री आ. शान्तिसागरजी के जीवन परिचय दिया और अन्तिम में गुरुवर आर्जवसागरजी ने भी चा.च. आ.श्री शान्तिसागरजी का कई संस्मरण सुनाये थे।

पश्चात् 6 सितम्बर 2016 से 'पर्यूषण महापर्व' श्रावक साधना का विशेष कार्यक्रम विशाल पण्डाल में मनाया गया। दशलक्षण कलश की स्थापना श्री कमल जैन, खिमलासा वालों के द्वारा की गई। जिसमें प्रातःकाल से जिनाभिषेक, शान्तिधारा एवं संगीतमय पूजन, दशलक्षण विधान एवं पर्व धर्म पर विशेष प्रवचन तथा दोपहर में तत्त्वार्थ सूत्र का वाचन एवं प्रवचन व शाम को धर्म-भावना शतक का पाठ, आरती, विद्वान् द्वारा शास्त्रसभा एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम आदि सम्पन्न हुये। पश्चात् 17 सितम्बर को षोडसकारण महामण्डल विधान एवं व्रतियों का सम्मान समारोह व सामूहिक क्षमावाणी पर्व मनाया गया और 18 सितम्बर को विशाल रूप से गाजे-बाजे के साथ विशाल जन समूह के बीच श्रीजी की भव्य शोभायात्रा (विमानोत्सव)

सम्पन्न हुआ। अन्त में आचार्य गुरुवर का मंगल प्रवचन सम्पन्न हुआ।

परम पूज्य आचार्यश्री आर्जवसागरजी महाराज का ससंघ मंडीदीप चातुर्मास के दौरान दशलक्षण पर्व के पश्चात् पटेलनगर की समाज ने नम्र निवेदन पूर्वक वहाँ पर होने वाले श्रीजी के विमानोत्सव में आचार्यश्री का सान्निध्य एवं कुछ दिन प्रवास के लिए श्रीफल भेंट किये। अतः 22 सितम्बर को आचार्यश्री के ससंघ सान्निध्य में पटेलनगर, श्रीजी की शोभा यात्रा एवं विमानोत्सव सानन्द सम्पन्न हुआ। पश्चात् आचार्यश्री ने मंडीदीप में प्रातः कालीन प्रवचन बेला में क्रमशः वारसाणुवेक्खा और समाधितंत्र ग्रन्थ पढ़ाया। तदुपरान्त 2 अक्टूबर को प्रातः और सायंकाल धार्मिक कवि सम्मेलन आचार्यश्री के सान्निध्य में सम्पन्न हुआ। जिसमें बाल, युवा, वृद्ध सभी लोगों ने स्वलिखित कविताओं की प्रस्तुति दी। करीब 40 लोगों ने इस कवि सम्मेलन में भाग लिया। और संघस्थ सभी को स्वरचित कवितायें सुनने का सौभाग्य मिला। अन्त में आचार्यश्री ने भी कुण्डलपुर बड़े बाबा, आचार्य गुरुवर विद्यासागरजी एवं नयी परम्परा आदि के बारे में कवितायें सुनाईं। कुछ दिनों के बाद जिनागम कण्ठपाठ प्रतियोगिता प्रारम्भ हो गयी।

30 अक्टूबर को प्रातःकाल जिनाभिषेक एवं नित्यपूजन के पश्चात् भ. महावीर का निर्वाण महोत्सव दीपावली पर्व पर भ.महावीर की सामूहिक पूजन एवं प्रमुख 5 निर्वाण लाडुओं को चढ़ाकर मनाया गया। तदुपरान्त आचार्यश्री ने वर्षायोग निष्ठापन की भक्तियाँ पढ़कर क्षमायाचना पूर्वक वर्षायोग का समापन किया। कार्यक्रम के अन्त में आचार्यश्री ने भ.महावीर कर्मों के बंधन से मुक्त हुए वैसे आज हम लोगों को भी वर्षायोग के बंधन से मुक्ति हो गयी। यह चातुर्मास बहुत ही बड़ी प्रभावना के साथ मंगलमय सानन्द सम्पन्न हुआ।

भव्य पिच्छिका परिवर्तन समारोह सम्पन्नः-

नवम्बर 6 तारीख 2016 को प्रातः कालीन बेला में मंडीदीप के रामलीला मैदान पर आचार्यश्री आर्जवसागरजी महाराज ससंघ जन समूह की जय घोष एवं वाद्य ध्वनि के साथ मंचासीन हुये। पश्चात् सुन्दर सजी हुई

अष्टद्रव्यों की थालियों से आचार्यश्री की संगीतमय पूजन हुई। कार्यक्रम की शुरुआत अशोकागार्डन, भोपाल की कन्याओं ने मंगलाचरण से की और नई पिच्छिकायें जुलूस के रूप में पंडाल में लाई गयीं। तदुपरान्त मंडीदीप की चन्दनबाला कन्या मण्डल ने मंगलाचरण प्रस्तुत किया और बाहर से पधारे अतिथियों से आचार्यश्री विद्यासागरजी का चित्र अनावरण एवं दीप प्रज्ज्वलन किया गया। पश्चात् दमोह, सागर, कोल्हापुर, तमिलनाडु, दिल्ली, बीड़ (खण्डवा) और भोपाल आदि तथा विभिन्न उपनगरों से पधारे अतिथियों का सम्मान किया गया।

तदुपरान्त कण्ठपाठ प्रतियोगिता के 10 विषयों में उत्तीर्ण हुये भव्यों के लिए पूर्व वर्ष की भांति इस वर्ष भी श्री संजयकुमार पदमचंदजी मित्तल परिवार रामगंजमंडी राजस्थान वालों के द्वारा स्वर्णमय मोमेन्टो द्वारा पुरस्कारित किया गया। तत्पश्चात् पाठशाला की बच्चियों द्वारा नाट्य प्रस्तुति हुई।

पश्चात् पिच्छिका परिवर्तन कार्यक्रम हुआ। जिसमें आचार्यश्री आर्जवसागरजी के लिए अरविन्द जैन दमोह, संजय जैन सागर, प्रमोद जैन पटेलनगर सपत्नीक, प्रकाशचन्द जैन नेहरु नगर सपत्नीक ने नई पिच्छिका प्रदान की। पुरानी पिच्छिका लेने का सौभाग्य श्रीमान विजयकुमार पहाड़िया मण्डीदीप वालों को मिला। पश्चात् संघस्थ साधुओं को पिच्छिका लेने व देने के क्रम में द्वितीय पिच्छिका देने का सौभाग्य श्री राजेश जैन (किराना) पटेलनगर मण्डीदीप वालों को मिला और पुरानी पिच्छिका श्रीमान रमेशचन्द्र जैन (पप्पु भैया) मण्डीदीप वालों को प्राप्त हुई। तृतीय पिच्छिका देने का सौभाग्य श्री रमेशभाई मेहता सपत्नीक, विपुल जैन सपत्नीक अहमदाबाद और अंकुर जैन सपत्नीक सूरत वालों को मिला एवं पुरानी पिच्छिका शैलेन्द्र जैन सपत्नीक, श्री शरद जैन सपत्नीक मण्डीदीप वालों को प्राप्त हुई। चतुर्थ नई पिच्छिका श्री नीतेश सपत्नीक व राजकुमार जैन मण्डीदीप और अशोकागार्डन की कन्याओं ने प्रदान की और पुरानी पिच्छिका श्रीमान सुनील

जैन सपत्नीक एवं उनकी कन्याओं सह बगीचा कालानी मण्डीदीप को प्राप्त हुई। पंचम पिच्छिका श्री संजय जैन बगीचा कॉलोनी मण्डीदीप ने प्रदान की और पुरानी पिच्छिका श्रीमान राजकुमार जैन, नीतेश जैन सपत्नीक मण्डीदीप वालों को प्राप्त हुई। और अन्तिम पिच्छिका श्री कमलेश जैन सपत्नीक फूलचन्द नगर मण्डीदीप व सुप्रिया जैन कोल्हापुर वालों ने प्रदान की और पुरानी पिच्छिका श्रीमान् राजेश जैन (किराना) पटेलनगर मण्डीदीप वालों को प्राप्त हुई। इस प्रकार पिच्छी परिवर्तन का भव्य कार्यक्रम सम्पन्न होने के पश्चात् आचार्यश्री का मंगल प्रवचन हुआ। जिसमें आचार्यश्री ने पिच्छिका महत्त्व व ब्रह्मचर्य व्रत का महत्त्व बताते हुए विजय, विजया का उदाहरण सुनाते हुए सम्यक्त्व में दृढ़ रहने का उपदेश दिया। इस प्रकार यह पावन वर्षायोग का अन्तिम कार्यक्रम पिच्छिका परिवर्तन समारोह अपार जनसमूह के बीच सानन्द सम्पन्न हुआ।

भोजपुर दर्शनः-

तदुपरान्त दोपहर में करीब 4 बजे आचार्यश्री का विहार अतिशय क्षेत्र भोजपुर की ओर हो गया। दो दिन भोजपुर में ठहरकर भ.शान्तिनाथ के चरण में क्षेत्र का आनन्द लिया और भोजपुर क्षेत्र पर कविता की भी रचना की। पश्चात् आचार्यश्री का विहार आशापुरी संग्रहालय का अवलोकन करते हुए ओबेदुल्लागंज में वाद्य ध्वनि समाज के जय-जयकारों के साथ मंगल प्रवेश हुआ। वहाँ पर सुबह प्रवचन एवं शाम को संस्कार कक्षा के माध्यम से 15 दिन के प्रवास में महती धर्म प्रभावना हुई। पश्चात् वहाँ से 24 तारीख को विहार सुल्तानपुर की ओर हो गया और 26 तारीख शाम को सुल्तानपुर पहुँच कर भव्य भ.श्री पार्श्वनाथ मन्दिर का दर्शन किया और वहाँ भव्यों के नम्र निवेदन पर कुछ काल पर्यन्त शीतकालीन प्रवास हुआ। सुल्तानपुर में 6 दिन ठहरकर 02/12/16 तारीख को बाड़ी की ओर विहार हो गया। बाड़ी में 7 दिन तक प्रवचन एवं पाठशाला के माध्यम से धर्म प्रभावना हुई। तदोपरान्त दि. 09

दिसम्बर को बरेली नगर की ओर विहार हो गया।

बरेली नगर में मंगल प्रवेश:-

परम पूज्य आचार्य गुरुवर आर्जवसागरजी महाराज ससंघ बरेली नगर प्रवेश की पावन वेला में बाजों एवं समाज की जय-जयकारों के साथ घर-घर गुरुवर के पाद प्रक्षालन करते हुए श्री चन्द्रप्रभु दिगम्बर जैन मन्दिर पहुँचे। प्रवचन के दौरान मन्दिर की पंचायत कमेटी एवं समाज के गुरुवर से शीतकालीन प्रवास बरेली नगर हो इस मंगल भावना के साथ श्रीफल भेंट किये। उस भावना के फलस्वरूप गुरुवर का ससंघ वहाँ पर करीब 40-45 दिन तक शीतकालीन प्रवास रहा। जिसमें प्रातः कालीन प्रवचनों की श्रृंखला के उपरान्त सम्यक् ध्यान विषय पर भी भक्तों को उद्‌बोधन दिये। दोपहर में स्वाध्याय एवं शाम को गुरु भक्ति, आरती के साथ स्तोत्र पाठ की कक्षा चली। दिनांक 8 जनवरी को पाठशाला के बच्चों द्वारा धार्मिक सांस्कृतिक कार्यक्रम हुआ। पश्चात् बाहर से पधारे अतिथियों का सम्मान एवं उनके द्वारा गुरुवर को शास्त्र भेंट किये गये। तदुपरान्त गुरुवर के विशेष प्रवचन हुये समाज के द्वारा आगे भी प्रवास करने हेतु बहुत निवेदन होते हुए भी गुरुवर का ससंघ जनवरी 19 तारीख को दोपहर में विहार हो गया।

वहाँ से खरगोन में मन्दिर दर्शन कर आहारचर्या हुई। तदुपरान्त वहाँ से विहार करके बम्होरी गाँव पहुँचे। वहाँ पर समाज का रुकने निवेदन होते हुए भी आचार्य संघ का विहार हो गया। जंगल के रास्ते से देहगाँव की ओर विहार हुआ। बीच मार्ग में बोरपानी गाँव में आहार चर्या हुई। और यहीं पर दमोह सिविलवार्ड के मन्दिर की कमेटी के लोगों ने गुरुवर को दमोह पधारने हेतु श्रीफल भेंट किये। दोपहर में विहार करके देहगाँव पहुँचे, वहाँ पर रात्रि विश्राम करके प्रातःकाल पुनः विहार करके गढ़ी गाँव पहुँचे। मन्दिरों का दर्शन किया, और भक्तों ने गुरुवर की पूजन की। पश्चात् आहारचर्या हुई। दोपहर में गुरुवर का मंगल प्रवचन हुआ। जिसमें गुरुवर ने जैनाचार पर मार्मिक प्रकाश डाला।

ठहरने हेतु भक्तों का बहुत निवेदन होते हुए गुरुवर का ससंघ गैरतगंज की ओर विहार हो गया।

गैरतगंज में बाजे के साथ नगर प्रवेश हुआ। सभी ने गुरुवर का पाद प्रक्षालन एवं आरती करके सातिशय पुण्यार्जन किया और मन्दिरों का दर्शन करके गुरुभक्ति सम्पन्न हुई। गुरुवर ने कुछ आशीर्वचन दिये पश्चात् गुरुवर की आरती हुई। प्रातः कालीन गुरुवर का मंगल प्रवचन हुआ पश्चात् कमेटी के लोगों ने श्रीफलों द्वारा शीतकाल के वास्तव्य हेतु नम्र निवेदन किया। दोपहर में आचार्य का ससंघ बेगमगंज की ओर विहार हो गया। बेगमगंज में भी बाजे आदि के साथ गुरुवर का भव्य मंगल प्रवेश हुआ। दो दिन समाज के लिए प्रवचन, आहारचर्या का लाभ भी प्राप्त हुआ। यहाँ पर भी ठहरने हेतु बहुत आग्रह होते हुए भी गुरुवर का मंगल विहार राहतगढ़ की ओर हो गया। परासरी गाँव से होते हुए राहतगढ़ के संभवनाथ समवसरण मन्दिर जिनालय का दर्शन कर यहीं से आहार चर्या सम्पन्न हुई।

सागर नगर में भव्य मंगल प्रवेशः-

पश्चात् सिहोरा में आहार चर्या एवं प्रवचनों के बाद सागर नगर की ओर विहार हुआ। दूसरे दिन प्रातः कालीन मंगल बेला में सुभाषनगर में मंगल प्रवेश हुआ। जिसमे वहाँ पर पहले से ठहरी हुईं आ.श्री विद्यासागरजी की शिष्या आ. धारणामति, आ.कुशलमति ने आगवानी हेतु पधारी थीं। वहीं पर आहार चर्या हुई। दोपहर में शान्तिनगर जिनमन्दिर में गुरुवर का मंगल प्रवचन हुआ। जिसमें आ. तपोमति माताजी की दो आर्यिकाएँ गुरुवर के दर्शनार्थ पधारी थीं। और सिद्धायतन पधारने हेतु ब्र. राकेश जी ने नम्र निवेदन किया और समाज के लोगों ने भी ठहरने हेतु श्रीफल भेंट किये। प्रवचन के उपरान्त गुरुवर का ससंघ भाग्योदय तीर्थ के मन्दिर के दर्शनार्थ चल दिया। वहाँ पर स्थित जिनमन्दिर का दर्शन किया। पश्चात् आ.रत्न तपोमति माताजी के ससंघ ने आचार्य संघ का दर्शन किया और प्रांगण में बैठकर कुछ धार्मिक चर्चायें भी हुईं। पश्चात् गुरुवर

का संघ सिद्धायतन दर्शनार्थ गये। वहाँ पहुँचकर 15 ईंच ऊँची स्फटिकमणी की सिद्ध प्रतिमा का दर्शन किया और वहीं ठहरकर दूसरे दिन आहार चर्या करके वहाँ से मोराजी कमेटी वालों के निवेदन से बाजे के साथ राम नगर होते हुए मोराजी मन्दिर पहुँचे।

आचार्य पदारोहण दिवस मोराजी मन्दिर प्रांगण में ता. 2 फरवरी को गुरुवर आर्जवसागरजी महाराज का तृतीय आचार्य पदारोहण दिवस मनाया गया। जिसमें मंच संचालन पं. राजेन्द्र जैन, सागर किया। कार्यक्रम की शुरुआत में श्री वर्णी गुरुकुल के बच्चों द्वारा मंगलाचरण किया गया। पश्चात् बाहर से पधारे अतिथियों द्वारा चित्र अनावरण एवं दीप-प्रज्ज्वलन हुआ। दिल्ली, दमोह, तमिलनाडु आदि से पधारे अतिथियों का सम्मान किया गया।

पश्चात् मोराजी कमेटी के लोगों द्वारा गुरुवर के प्रवचनों के संकलन रूप में प्रकाशित ''जैन शासन का हृदय'' कृति का विमोचन किया गया। तदुपरान्त भक्तों ने गुरुवर का पादप्रक्षलन कर चरण रज को अपने माथे पर लगाया और भाव भक्ति पूर्वक गुरुवर की पूजन एवं आरती की गयी। गुरुवर के कर कमलों में शास्त्र भेंट किया गया। पश्चात् दमोह से पधारे नन्हें मन्दिर एवं शाकाहार उपासना परिसंघ के कमेटी के लोगों ने दमोह में आचार्य गुरुवर आर्जवसागरजी के ससंघ सान्निध्य पंचकल्याणक सम्पन्न करने हेतु श्रीफल भेंट किये। तदुपरान्त संघस्थ मुनिश्री नमितसागरजी महाराज ने गुरु के गुण गाते हुए आचार्य पदारोहण के विषय में अपने भाव व्यक्त किये। प.पू. आचार्यश्री आर्जवसागर महाराजजी का मंगल प्रवचन हुआ जिसमें उन्होंने बताया कि जीवन में एक ही गुरु होते हैं अपने दीक्षा गुरु आ.श्री विद्यासागरजी महाराज ही अपने लिए हमेशा गुरु रहेंगे। लेकिन बीच समाधि हेतु वयोवृद्ध आ. सीमंधर सागरजी द्वारा ये आचार्यपद अपनाना पड़ा और कुंभ के उदाहरण द्वारा गुरु और शिष्य की मोक्षमार्ग की यात्रा सुनाई। इस प्रकार यह तृतीय आचार्यपदारोहण दिवस मंगलमय सानन्द सम्पन्न हुआ।

दोपहर में गुरुवर का ससंघ विहार अंकुर कालानी की ओर हो गया। बाजे के साथ गुरुवर का मंगल आगमन हुआ और आ.रत्न विज्ञानमति माताजी की संघस्थ आ.वृषभमति आदि चार आर्यिकायें मंगल आगवानी करने आयीं। वहाँ गुरुवर का मंगल प्रवचन हुआ और दोनों मन्दिरों के दर्शनों के पश्चात् गुरुवर विहार करते हुए नेहा नगर पहुँच गये। वहाँ पर दो दिन का प्रवास रहा जिसमें मंगल प्रवचन, आहार चर्या आदि से श्रावकों को धर्म लाभ मिला। पश्चात् चनाटोरिया, नया खेड़ा होते हुए परसोरिया में आहार चर्या हुई और चनौआ गाँव से होते हुए फरवरी 6 तारीख को गढ़ाकोटा में बाजे आदि के साथ भव्य मंगल प्रवेश हुआ। मुनि श्रीविद्यासागरजी (शिष्य आ.श्री सन्मतिसागरजी दक्षिण) महाराज का ससंघ आगवानी हेतु पधारे थे। 7 तारीख को प्रातःकाल अतिशय क्षेत्र पटेरियाजी का दर्शन किया। पश्चात् बड़े मन्दिरजी में आचार्य गुरुवर आर्जवसागरजी महाराज का मंगल प्रवचन हुआ। मुनि विद्यासागरजी ससंघ ने भी मंगल प्रवचनों का लाभ लिया। एक साथ दोनों संघों की आहार चर्या सम्पन्न हुईं और दोपहर में विहार कुमेरिया से होते हुए बांसा (तारखेड़ा) की ओर हुआ। बांसा में बाजे आदि के साथ मंगल प्रवेश हुआ और जिनदर्शन एवं मंगल प्रवचन के उपरान्त आहार चर्या सम्पन्न हुई।

दमोह नगर में मंगल प्रवेशः-

पश्चात् दोपहर में वहाँ से विहार दमोह नगर की ओर हुआ। फरवरी 9 तारीख को प्रातः कालीन मंगल बेला में आचार्य गुरुवर आर्जवसागरजी महाराज का भव्य मंगल नगर प्रवेश बैण्ड-बाजे एवं अपार जनसमूह के जय-जयकारों के साथ सागर नाका मन्दिर से हुआ। घर-घर गुरुवर के पाद प्रक्षालन एवं आरती की गयी। गुरुवर का ससंघ सागर नाका के मन्दिर के दर्शन करके और कांच मन्दिर, पलन्दी मन्दिर का दर्शन करते हुए नन्हें मन्दिर में भव्य आगमन हुआ। 9 वर्ष के बाद पुनः गुरुवर के दर्शन पाकर के भव्य लोग बहुत ही आनन्दित हुये। पश्चात्- गुरुवर के मंगल प्रवचन हुये। दैनिक मंगल

प्रवचनों की शृंखला से गुरुवर ने श्रीमज्जिनेन्द्र पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महामहोत्सव हेतु लोगों को उत्साहित किया।

श्रीमज्जिनेन्द्र जिनबिम्ब पंचकल्याणक महोत्सव एवं विश्वशान्ति महायज्ञ सानन्द सम्पन्नः-

प.पू. आचार्यश्री 108 आर्जवसागरजी महाराज के ससंघ सान्निध्य में नन्हें मन्दिर की विशाल धर्मशाला में श्रीमज्जिनेन्द्र- पंचकल्याणक महामहोत्सव हेतु पात्रचयन का कार्यक्रम फरवरी 5 तारीख को सम्पन्न हुआ। दमोह में स्थित पलन्दी मन्दिर की वेदी प्रतिष्ठा में भी गुरुवर का सान्निध्य प्रदान करने हेतु वहाँ की कमेटी ने श्रीफल अर्पित कर निवेदन किया। फरवरी 21 तारीख को पलंदी मन्दिर का कार्यक्रम घटयात्रा, एवं ध्वजारोहण से प्रारम्भ हुआ और चौंसठ ऋद्धि विधान एवं यागमण्डल विधान और शान्ति विधान सम्पन्न हुआ। चार दिन के कार्यक्रम में गुरुवर का मंगल प्रवचन प्रातःकाल में प्रतिदिन सम्पन्न हुये। 24 तारीख को प्रतिमायें वेदी में विराजमान हो गईं।

दिनांक 25 फरवरी से श्रीमज्जिनेन्द्र जिनबिम्ब पंचकल्याणक महोत्सव एवं विश्वशान्ति महायज्ञ का कार्यक्रम प.पू. आचार्यश्री आर्जवसागरजी महाराज के ससंघ सान्निध्य में दमोह नगर के बीच स्थित उमामिस्त्री की तलैया में वाणीभूषण ब्र. जिनेश भैया एवं ब्र.नरेश भैया, जबलपुर, ब्र. नितिन भैया के प्रतिष्ठाचार्यत्व में प्रारम्भ हुआ। प्रातःकाल जापारंभ क्रिया हुई फिर घटयात्रा एवं श्रीजी की शोभायात्रा नन्हें मन्दिर से निकलकर पंचकल्याणक स्थल तक पहुँची। ध्वजारोहणकर्त्ता श्री भानुकीर्ति जैन, तमिलनाडु एवं प्रमुख पात्रों द्वारा ध्वजारोहण क्रिया सम्पन्न हुई। पश्चात् भगवान के माता-पिता बनने वाले श्री अरविन्द जैन मुन्शी परिवार वालों ने पण्डाल का उद्घाटन किया। पश्चात् पंडाल शुद्धि श्रीजी विराजमान करके आचार्यश्री का मंगल प्रवचन हुआ। दोपहर में समस्त इन्द्रगण, माता-पिता की शुद्धिकरण क्रिया (उबटन, सम्मान) आदि का कार्यक्रम हुआ।

26 फरवरी को गर्भकल्याणक पूर्व रूप में सकलीकरण, इन्द्र प्रतिष्ठा

आदि के साथ दैनिक कार्यक्रम हुये। पश्चात् आचार्यश्री का मंगल प्रवचन धार्मिक संस्कार विषय पर हुये। दोपहर में यागमण्डल विधान हुआ। और शाकाहार एवं अहिंसा संगोष्ठी अनेक विद्वानों के बीच हुई। आचार्यश्री ने भी शाकाहार का महत्व बताते हुए अहिंसा का महत्त्व बताया। इस पंचकल्याणक में सौधर्म इन्द्र बनने का सौभाग्य श्रीप्रवीण-सरिता जैन को, कुबेर इन्द्र का सौभाग्य श्री सौरभ-शुभ्रा जैन को, महायज्ञ नायक का सौभाग्य श्री अमित-वंदना को, ईशान इन्द्र श्री सुनील-सीमा जैन को, भरत चक्रवर्ती श्री पंकज-श्वेता जैन, राजाश्रेयांस श्री महेश-कुसुम बड़कुल, बाहुबली श्री राजेश-सुषमा जैन, राजा सोम श्री नेमिचन्द-सरिता जैन, सनतकुमार इन्द्र श्री मनीष-बिनी जैन, माहेन्द्र इन्द्र श्री राजेश-सरिता जैन, यज्ञनायक श्री नरेन्द्र-नेहा जैन को सौभाग्य प्राप्त हुआ। रात्रि में प्रतिदिन महाआरती, विद्वानों द्वारा प्रवचन, एवं इन्द्र सभा आदि सांस्कृतिक कार्यक्रम चलता रहा।

27 फरवरी को गर्भकल्याणक उत्तर रूप की क्रियायें चलीं। दोपहर में धार्मिक कवि सम्मेलन हुआ। आचार्यश्री एवं मुनिराज और आर्यिका संघ ने भी अपनी कवितायें प्रस्तुत कीं। 28 फरवरी को जन्मकल्याणक के दिन जन्म की क्रियायें एवं सौधर्मइन्द्र ऐरावत हाथी पर आरूढ़ होकर सुमेरू पर्वत की पाण्डुक शिला पर जन्माभिषेक आदि क्रियायें सम्पन्न हुईं। आचार्यश्री आर्जवसागरजी के सान्निध्य में शाकाहार उपासना परिसंघ द्वारा धार्मिक क्षेत्र में बहुत काम जिन्होंने किये हैं ऐसे श्री सुभाषजी ग्वालियर को 'अहिंसा महावीर चक्र' पुरस्कार द्वारा पुरस्कारित किया गया और श्री देवदास जैन तमिलनाडु को 'धर्म महावीर चक्र' पुरस्कार द्वारा पुरस्कारित किया गया। तथा भगवान महावीर आचरण संस्था समिति, भोपाल द्वारा, जिन्होंने गुरुवर आर्जवसागरजी महाराज के साहित्य सृजन में अनुकरणीय काम किया है ऐसे विद्वान प्रवर पं.लालचन्द्र 'राकेश' भोपाल वालों के लिए 'आचार्यश्री समन्तभद्र' पुरस्कार से पुरस्कारित किया गया तथा डॉ. श्रीमती अल्पना जैन 'मोदी' ग्वालियर वालों

के लिए 'आचार्यश्री पूज्यपाद' पुरस्कार से पुरस्कारित किया गया। पंडित लालचंदजी ने आचार्यश्री आर्जवसागरजी महाराज पर लगभग 2000 पद्यों की काव्य रचना कर 'आध्यात्मिक संत आर्जवसागर काव्य' बनाया था तथा डॉ. अल्पना मोदी ने आचार्यश्री के दस लक्षण धर्म के प्रवचनों के संकलन पर आधारित ''पर्यूषण पीयूष'' कृति तैयार की थी। 1, 2 मार्च को दीक्षाकल्याणक एवं केवलज्ञान कल्याणक की विधियाँ पूज्य आचार्यश्री आर्जवसागरजी महाराज एवं संघस्थ मुनियों के द्वारा की गयीं। इस पंचकल्याणक में तमिलनाडु से 5 फुट ऊँची पद्मासन की आदिनाथ की प्रतिमा एवं अन्य धातु की प्रतिमायें लायी गयी थीं। और दिल्ली, गुड़गाँव एवं जयपुर वालों के द्वारा प्रदत्त की गई 29 रत्नों की प्रतिमाएँ एवं श्री प्रवीणकुमार विजयनगर वालों के द्वारा 5 फुट ऊँची खड्गासन भ.बाहुबली की प्रतिमा तथा नन्हें मन्दिर, फुटेरा, बांसा (तारखेड़ा) एवं सिविल वार्ड के भायजी मन्दिर आदि अन्य जगह की धातु की प्रतिमाएँ इस तरह सब मिलाकर कुल 62 प्रतिमाएँ इस पंचकल्याणक में प्रतिष्ठित हुईं। तमिलनाडु के करीब 50-60 जैन लोग इस महोत्सव में सम्मिलित हुये। और दिल्ली, सागर, भोपाल, बण्डा, पथरिया, फुटेरा और जबेरा आदि से भी आकर भव्य लोग इस पंचकल्याणक का दृश्य देखकर आनन्दित हुये। दमोह के इतिहास में पहली बार नगर के बीच भव्य पंचकल्याणक महोत्सव हुआ। इसके 9 साल पूर्व सिविलवार्ड के भायाजी मन्दिर का पंचकल्याणक भी गुरुवर आर्जवसागरजी महाराज के ही ससंघ सान्निध्य में तहसील गाऊण्ड पर त्रयगजरथ पूर्वक सानन्द सम्पन्न हुआ था। नगर के बीच होने के कारण अपार जन समूह से विशाल पाण्डाल भी छोटा पड़ गया। अन्तिम दिन 3 मार्च को प्रातःकाल भगवान का मोक्षकल्याणक, आचार्यश्री का मंगल प्रवचन एवं विश्व शान्ति महायज्ञ सम्पन्न हुआ। पश्चात् दोपहर में श्रीमज्जिनेन्द्र भगवान की शोभायात्रा नगर रथोत्सव यह विशाल जुलूस के रूप में हाथी, 11-12 बग्गियाँ तरह-तरह के बेन्डबाजे,

रथ में श्रीजी, तथा आचार्यश्री के ससंघ के साथ यह भव्य नगर फेरी का दृश्य बहुत ही मनोरम लग रहा था। घर-घर के सामने गुरुवर के पादप्रक्षालन एवं आरती की गयी। इससे अपूर्व जैनधर्म की प्रभावना हुई। पुनः पाण्डाल में आचार्यश्री के मंगल प्रवचन, एवं श्री जी का अभिषेक हुआ। तदुपरान्त मन्दिर में प्रतिमायें विराजमान हुईं। 2 मार्च को रात्रि के काल में सभी प्रमुख पात्रों को सम्मानित किया गया। तथा पंचकल्याणक आयोजन समिति के द्वारा सभी इन्द्र-इन्द्राणियों के सम्मान पत्र भी प्रदत्त किये गये थे। इस तरह यह पंचकल्याणक महामहोत्सव एक अपूर्व महिमा स्वरूप बहुत हर्षोल्लास के साथ सानन्द सम्पन्न हुआ।

तदुपरान्त आचार्यश्री आर्जवसागरजी का ससंघ मंगल विहार दमोह नगर के उपनगर विजयनगर की ओर हो गया। विजयनगर में आचार्यश्री के प्रवचन, दोपहर को स्वाध्याय, शाम को गुरुभक्ति आरती एवं पाठशाला के कार्यक्रम चले। विजयनगर से आचार्यश्री ससंघ का मंगल विहार दमोह के उपनगर वसुंधरानगर की ओर हुआ। यहाँ भी आचार्यश्री के प्रवचन, दोपहर स्वाध्याय, शाम को गुरुभक्ति आरती, पाठशाला कार्यक्रम हुए। श्री आदिनाथ भगवान दि.जैन काँच मन्दिर, दमोह में आदिनाथ जयंती दि. 22/03/17 को मनाने हेतु मन्दिर समिति द्वारा आचार्यश्री ससंघ सान्निध्य हेतु श्रीफल भेंट कर आचार्यश्री से निवेदन किया गया। आचार्यश्री ससंघ का विहार वसुंधरानगर से दि. जैन काँच मन्दिर, हुआ। श्री राजेश रज्जन के संयोजकत्व एवं निर्देशन में बड़ी धूमधाम से भ. आदिनाथ जयंती पर आचार्यश्री ससंघ के सान्निध्य में मस्तकाभिषेक एवं महामहोत्सव हर्षोल्लास पूर्वक मनाया गया एवं महावीर जयंती महोत्सव के निमित्त संपूर्ण जिले हेतु अहिंसा रथ प्रवर्तन जुलूस प्रारंभ किया गया जिसमें बड़ी संख्या में लोगों ने भाग लिया।

दमोह नगर की दि.जैन पंचायत के अध्यक्ष श्री सुधीर सिंघई आदि द्वारा अष्ट दिवसीय भगवान महावीर के जन्म जयन्ती महोत्सव को आचार्यश्री 108 आर्जवसागरजी महाराज के ससंघ सान्निध्य में मनाने हेतु विजय नगर में

श्रीफल अर्पित कर भावपूर्वक निवेदन किया गया।

एक सप्ताह तक 2616 वाँ भगवान महावीर जन्म जयन्ती महोत्सव एवं प.पू आचार्य आर्जवसागरजी महाराज का 30 वाँ मुनि दीक्षा समारोह गुरु गरिमा महोत्सव सम्पन्न :-

परम पूज्य आचार्यश्री आर्जवसागरजी महाराज काँच मंदिर, दमोह की धर्म प्रभावना के उपरान्त कई दिनों से निवेदित एवं प्रतिक्षारत सिविल वार्ड (भाईजी मन्दिर) लोगों के पुण्य उदय से गुरुवर का पदार्पण वहाँ पर हुआ। बाजे के साथ गुरुवर की मंगल अगवानी हुयी। वहाँ पर प्रतिदिन सम्यक् ध्यान शतक पर गुरुवर के प्रवचन हुये। इसी बीच सप्त दिवसीय महावीर जयन्ती कार्यक्रम की तैयारियाँ चल रही थी। दिनांक 3 अप्रैल से 9 अप्रैल तक का आयोजन श्री महावीर जन्मोत्सव समारोह समिति द्वारा रखा गया था। जिसमें 3 अप्रैल 2017 सोमवार को 8 बजे गुरुवर ससंघ सिविलवार्ड से जेलर के द्वारा किये गये नम्र निवेदन पूर्वक जिला जेल पर गये। वहाँ पर मंचासीन होने के उपरान्त वहाँ पर उपस्थित अतिथिगण एवं कैदी लोगों ने गुरुवर के चरणों में श्रीफल भेंटकर आशीर्वाद प्राप्त किया। पश्चात् श्री राकेश पलंदी ने मुनिचर्या की महिमा के बारे सबको परिचय कराया। पश्चात् प.पू. आचार्यश्री आर्जवसागरजी महाराज के मंगल प्रवचन अहिंसा एवं शाकाहार विषय पर हुये। जिसे सुनकर कैदी लोग बहुत हर्षित और भाव विभोर हुये और गुरुवर के द्वारा बताये गये नियमों का पालन करने हेतु संकल्पित हुये पश्चात् गुरुवर का ससंघ आगमन नन्हें मन्दिर पर हुआ। वहाँ पर स्थित विशाल धर्मशाला में 4 अप्रैल को दोपहर में सामाजिक संस्थाओं का सम्मेलन हुआ। 5 अप्रेल को धार्मिक पाठशाला सम्मेलन रखा गया। जिसमें करीब 15-20 पाठशालाओं के सदस्यों व बालक-बालिकाओं द्वारा अपना-अपना सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये गये। जिसे देखकर जनता फूली नहीं समाई और पाठशाला का महत्त्व को लोगों ने जाना। यह कार्यक्रम दमोह नगर में पहली बार हुआ है।

पश्चात् उन पाठशालाओं में से तीन पाठशालाओं को प्रथम, द्वितीय, तृतीय पुरस्कार दिया गया। 6 अप्रैल को दोपहर में पारस पैलेस पर युवा विद्वान् का सम्मेलन हुआ जिसमें 20-25 विद्वानों ने अपने-अपने आलेख प्रस्तुत किये। यह कार्यक्रम आ. आर्जवसागरजी महाराज के आशीर्वाद से एवं पं.श्री सुरेश मरोरा इन्दौर के प्रयास तथा भागचन्द भागेन्दु दमोह के प्रतिनिधित्व में सम्पन्न हुआ। पश्चात् गुरुवर का भी मंगल प्रवचन हुआ। 7 अप्रैल को दोपहर में पारस पैलेस पर अहिंसा एवं विज्ञान संगोष्ठी की गयी जिसमें 30-40 डाक्टर्स, 40-50 वकील, एवं प्रशासनिक अधिकारी एवं प्रबुद्ध वर्ग पधारे थे। इसी दिन म.प्र. के प्रसिद्ध मंत्री श्री जयंत मलैया भी गुरु के दर्शनार्थ पधारे और उन्होंने पूरी संगोष्ठी में अपनी उपस्थिति दी तथा अपना वक्तव्य भी दिया। अन्त में गुरुवर के मंगल प्रवचन भी अति आकर्षक हुये। 8 अप्रैल को दोपहर में गुरुवर के ससंघ सान्निध्य में जैन अल्पसंख्यक योजना सेमीनार श्री अनिल जैन बड़कुल गुना वालों के वक्तव्य के साथ सम्पन्न हुआ। जिसमें उन्होंने शासन व प्रशासन द्वारा अल्पसंख्यक को दी जाने वाली सुविधाओं को बताया। अंत में आचार्यश्री ने षट्कर्मों की व्यवस्था एवं चार पुरुषार्थों पर प्रवचन दिये। प्रतिदिन आगन्तुक विद्वानों व अतिथियों को शॉल, श्रीफल एवं प्रतीक चिन्हों से सम्मानित भी किया गया। इसी दिन रात को अहिंसा वाहन रैली द्वारा पूरे नगर में भ.महावीर का संदेश दिया गया। और अन्तिम दिन 09 अप्रैल को सुबह 7 बजे से श्री जी का विमानोत्सव प्रारम्भ हुआ जिसमें सभी मन्दिरों की महिलायें, पाठशाला के बच्चे, दिव्यघोषों को लिए हुये युवा मण्डल, पुरुष वर्ग अपनी-अपनी झांकियों के साथ जुलूस में सम्मिलित हुये। यह विमानोत्सव सिटीनल से प्रारम्भ होकर नसियाँ मन्दिर रोड के विशाल पाण्डाल तक पहुँची। रथ में श्रीजी के साथ गुरुवर का ससंघ सान्निध्य ने चार चाँद लगा दिये। इतना बड़ा जुलूस दमोह नगर वासियों ने पहली बार देखा जिसमें कई प्रांतों से लोग शामिल हुए। पण्डाल में गुरुवर मंचासीन हुये। मंगलाचरण पूर्वक कार्यक्रम

प्रारम्भ हुआ। गुरुवर के कर कमलों में 30 शास्त्र भेंट किये गये। इसी बीच श्री जयंत मलैया एवं श्रीमति सुधा मलैया ने गुरुवर को श्रीफल भेंटकर आशीर्वाद प्राप्त किया। पश्चात् आचार्यश्री के मार्मिक मंगल प्रवचन हुये। तदुपरान्त श्री जी का जिनाभिषेक एवं शान्तिधारा सम्पन्न हुई। अपार जनसमूह पाण्डाल में नहीं समाया, लोग पाण्डाल के बाहर खड़े -खड़े पूरे कार्यक्रम को देख रहे थे। इतनी महती प्रभावना के साथ गुरुवर के प्रवचन के पूर्व श्री बालचन्दजी जैन, पथरिया वालों ने गुरुवर से मुनि दीक्षा हेतु नम्र निवेदन किया था। अप्रैल 8 तारीख रात को इनकी गोदभराई का कार्यक्रम हो ही चुका था और 9 अप्रैल को सुबह 5 बजे उन्होंने केशलोंच किया। जुलूस के साथ ही बग्गी में बिठाकर इनकी बिनोली भी निकली और भरी सभा में अपना भाव भी प्रकट कर दिया और सबसे क्षमा याचना की।

दोपहर में 30वें दीक्षा दिवस गुरु गरिमा महोत्सव एवं मुनि दीक्षा का विशाल कार्यक्रम जैन धर्मशाला के सभागार के सामने बने पाण्डाल में मंगलाचरण पूर्वक कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ। बाहर से पधारे अतिथियों द्वारा चित्र अनावरण एवं दीप प्रज्ज्वलन का कार्यक्रम हुआ। पश्चात् सूरत से पधारे श्री हर्षित भाई एवं अरविन्द भाई ने गुरुवर का पादप्रक्षालन एवं शास्त्र भेंट का सौभाग्य प्राप्त किया। तत्पश्चात् आचार्यश्री आर्जवसागरजी की पूजन संगीतमय अलग-अलग मन्दिरों से सजाकर लाये गये द्रव्यों से भक्ति भाव पूर्वक की गयी। तदुपरान्त 30 आरतियों द्वारा मंगल आरती की गयी।

दमोह नगर में मुनि दीक्षा सम्पन्न:-

पश्चात् आचार्यश्री ने मुनि दीक्षा हेतु क्रियायें प्रारम्भ की। मंत्रोच्चारण पूर्वक श्री बालचंद पथरिया के ऊपर मुनि-दीक्षा के संस्कार किये गये। दीक्षार्थी ने सब वस्त्राभरण त्याग दिये उन्हें 28 मूलगुणों व षोडस संस्कारों से संस्कारित किया गया। मुनि बनके कायोत्सर्ग में लीन हो गये। दमोह नगर की जैन धर्मशाला के विशाल पाण्डाल में इस मुनि दीक्षा को देखकर लोग बहुत

आनन्दित हुये। गुरुवर की जय-जयकार लगाने लगे और उनका नाम प.पू. मुनिश्री महत्सागरजी महाराज रखा गया। गुरुवर के कर कमलों से पिच्छि प्राप्त की एवं कमण्डल पथरिया वाले कमलेश चौधरी द्वारा गुरुवर ने प्रदान किया। अन्त में गुरुवर के मंगल प्रवचन सम्पन्न हुये। इस कार्यक्रम में पथरिया, जबेरा, सूरत, दिल्ली, सागर, भोपाल आदि अनेक जगह से लोगों ने आकर पुण्यार्जन किया। विशाल जनसमूह से कार्यक्रम स्थल बौना पड़ गया। इस प्रकार यह मुनिदीक्षा कार्यक्रम दमोह नगर में प्रथम बार सानन्द मंगलमय एक ऐतिहासिक कार्यक्रम के रूप में सम्पन्न हो गया।

अक्षय तृतीया सम्पन्नः-

28 तारीख को अक्षय तृतीय का कार्यक्रम नसियाँ मन्दिर दमोह के निर्माणाधीन विशाल नये मन्दिर में आचार्यश्री आर्जवसागरजी महाराज के ससंघ सान्निध्य में श्री भक्तामर महामण्डल विधान पूर्वक सानन्द सम्पन्न हुआ। इसी बीच आचार्यश्री के मंगल प्रवचन सम्पन्न हुये तथा 1 मई से 14 मई तक ग्रीष्मकालीन सम्यग्ज्ञान शिक्षण शिविर का आयोजन प्रारम्भ हुआ। जिसमें तत्त्वार्थसूत्र, छहढाला, द्रव्यसंग्रह, जीवन संस्कार एवं भक्तामर-स्तोत्र की कक्षायें चलीं। इसी बीच 10 मई को पूर्णिमा के दिन श्री शान्तिनाथ महामण्डल विधान भारी जनसमूह के बीच सम्पन्न हुआ। पश्चात् गुरुवर के मार्मिक प्रवचन सम्पन्न हुये। 15 मई को सम्यग्ज्ञान शिविर का समापन हुआ। जिसमें परीक्षा में उत्तीर्ण हुये लोगों को पुरस्कार वितरण किये गये।

श्रुत पञ्चमी पर्व मनायाः-

दिनांक 30 मई को सिविलवार्ड (भायजी मन्दिर) में आचार्यश्री आर्जवसागरजी महाराज के ससंघ सान्निध्य में श्रुतपंचमी पर्व मनाया गया। जिसमें चन्दनबाला कन्या-मण्डल नसियाँ जी द्वारा मंगलाचरण किया गया। पश्चात् अनेक लोगों ने गुरुवर के कर कमलों में शास्त्र भेंट किये। तदुपरान्त आचार्यश्री का मंगल प्रवचन हुआ जिसमें गुरुवर ने श्रुतपंचमी पर्व का महत्त्व

कथानक में कहा कि कैसे धरसेनाचार्य ने पुष्पदन्त व भूतबली आचार्य को ज्ञान दिया और उन्होंने कैसे षट्खण्डागम की रचना की इत्यादिक। इसी श्रुतपंचमी पर्व पर सकल दिगम्बर जैन समाज सिविल वार्ड दमोह के द्वारा भाव-विभोर होकर आचार्य श्री 108 आर्जवसागरजी महाराज ससंघ के चरणों में श्रीफल अर्पित कर वर्षायोग भायजी मन्दिर सिविल वार्ड दमोह में सम्पन्न करने हेतु नम्र निवेदन किया गया।

5 जून 2017 को मध्याह्न में डेरापहाड़ी, छतरपुर की कमेटी से आये लोगों ने सिविल वार्ड दमोह आकर आचार्यश्री आर्जवसागरजी महाराज से ससंघ छतरपुर पधार कर चातुर्मास हेतु नम्र निवेदन कर श्रीफल अर्पित किये और उसी दिन गुरुवर का ससंघ जून 5 तारीख को सिविल वार्ड दमोह से अभाना की ओर विहार हो गया।

जबलपुर नगर की ओर विहार:-

मारूताल होते हुए दूसरे दिन सुबह अभाना में मंगल प्रवेश हुआ। तीनों मन्दिरों का दर्शन किया। पश्चात् आहारचर्या सम्पन्न हुई। दोपहर में छोटे मन्दिर के प्रवचन हाल में गुरुवर का मंगल प्रवचन सम्पन्न हुआ। उसके पूर्व सभी कमेटी के लोगों ने व समाज द्वारा चातुर्मास के लिए श्रीफल भेंट किये। फिर भी गुरुवर का प्रवचन के उपरान्त नोहटा के लिए विहार हो गया। शाम को अतिशय क्षेत्र आदीश्वर गिरि पहुँचे। वहाँ पर प्राचीन प्रतिमाओं का दर्शन कर वहीं पर ठहरे। प्रातःकाल नोहटा नगर में स्थित मन्दिरों का दर्शन किया और गुरुवर का प्रवचन भी सम्पन्न हुआ। सबने श्रीफल भेंटकर ठहरने हेतु निवेदन किया तथा दोपहर में जबेरा की कमेटी आयी और विनम्र भाव पूर्वक नगर पधारने हेतु श्रीफल समर्पित कर निवेदन किया। पश्चात् 8 तारीख को जबेरा में, जो गुरुवर के पूर्व अवस्था का ननिहाल था, उस गाँव में बैंड बाजों एवं अपार जन समूह व जय-जयकारों की ध्वनि के साथ 28 साल के बाद नगर आगमन हुआ। जिन मन्दिर दर्शन के बाद गुरुवर का मंगल प्रवचन हुआ

जिसमें श्रीफल (नारियल) के उदाहरण में मोक्षमार्ग की महिमा बतलायी। पश्चात् सभी ने चातुर्मास हेतु निवेदन किया। यहाँ पर चार दिन का प्रवास रहा। प्रतिदिन प्रवचन आदि कार्यक्रम हुये। पश्चात् 11 तारीख को सिंग्रामपुर की ओर विहार हुआ। दूसरे दिन सिंग्रामपुर में आहारचर्या सम्पन्न हुयी। तदुपरान्त गुबरा होते हुए कटंगी की ओर विहार हो गया। 13 तारीख को सुबह कटंगी नगर में बाजों के साथ मंगल प्रवेश हुआ। विशाल नये मन्दिर के दर्शन उपरान्त वहीं पर मंगल प्रवचन भी सम्पन्न हुये। सभी ने चातुर्मास हेतु श्रीफल भेंटकर नम्र निवेदन किया।

जबलपुर में मंगल प्रवेश:-

5 दिन के प्रवास के बाद गुरुवर का मंगल विहार मुरई, बोरिया होते हुए महानगर जबलपुर में मंगल प्रवेश हुआ। मदर टेरेसा में एक दिन का प्रवास रहा। पश्चात् ग्रीन सिटी होते हुए लार्डगंज मन्दिर आये। विशाल जिनमन्दिर स्थित प्रतिमाओं का दर्शन किया। गुरुवर ससंघ 23 तारीख को प्रातःकाल हनुमान ताल, जूड़ी तलैया आदि 10 मन्दिरों का दर्शनार्थ पधारे और 24 तारीख को अग्रवाल कॉलोनी वालों के द्वारा किये गये नम्र निवेदन से वहाँ पर मंगल प्रवेश हुआ सकल दि. जैन समाज ने वर्षायोग हेतु श्रीफल भेंट किये। तीन दिनों के प्रवास में प्रतिदिन मंगल प्रवचन लाभ हुआ। दोपहर में गुरुकुल से ब्र.जिनेश भैया आदि एवं ब्राह्मी श्राविका आश्रम से मणिबाईजी आदि ने आकर मढ़ियाजी पधारने हेतु निवेदन किया। पश्चात् गढ़ा(पुरवा) वालों ने आकर अपनी कॉलोनी में पधारकर वर्षायोग सम्पन्न करने हेतु निवेदन किया। पश्चात् 26 तारीख शाम को गढ़ा (पुरवा) में बैंड-बाजे एवं समाज के जय-जयकारों के साथ मंगल प्रवेश हुआ। 27 तारीख को गुरुवर का मंगल प्रवचन धर्म की महिमा पर हुआ। दोपहर में मढ़िया जी की कमेटी के लोगों ने आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज के 50 वाँ दीक्षा दिवस महोत्सव गुरुवर के सामने मनाने हेतु नम्र निवेदन किया।

मढ़ियाजी में संयम स्वर्ण महोत्सव मनायाः-

28 तारीख को प्रातःकाल बैंड-बाजों के साथ गुरुवर ने मढ़ियाजी में मंगल प्रवेश किया। दर्शन के पश्चात् शान्तिधारा गुरुवर के मुखारबिंद से हुयी। पश्चात् आचार्यश्री की संगीतमय पूजन एवं आचार्य छत्तीसी विधान किया गया। इसी बीच दीप प्रज्ज्वलन एवं मंगलाचरण के उपरान्त गुरुवर का मंगल प्रवचन हुआ। पश्चात् गढ़ा(पुरवा) वालों की समाज एवं कमेटी के लोगों ने 2017 का भव्य चातुर्मास हेतु श्रीफल भेंट किया। बीच में कटंगी, लखनादोन और अग्रवाल कॉलोनी के भक्तगणों का भी चातुर्मास निवेदन हेतु आगमन जारी रहा और गुरुवर का गुरु परम्परा से 'देखो' शब्द सभी लोगों में आशा बंधाये हुये था, लेकिन पुरवा जबलपुर वालों का पुण्य कुछ अधिक ही नजर आ रहा था। और सभी ने सिद्धचक्र मंडल विधान हेतु नम्र निवेदन भी प्रस्तुत किया।

सानन्द सम्पन्न हुई वर्षायोग की स्थापनाः-

संस्कारधानी जबलपुर नगर के पुरवा वासियों के पुण्य से उन्हें आचार्यश्री आर्जवसागरजी महाराज का ससंघ चातुर्मास का योग मिला। जुलाई 1 से 9 तारीख तक आचार्यश्री के ससंघ सान्निध्य में अष्टाह्निका पर्व पर श्री सिद्धचक्र महामण्डल का आयोजन किया गया। इसके पुण्यार्जक एवं सौधर्म इन्द्र बनने का सौभाग्य आचार्यश्री के पूर्वावस्था के बुआ के बेटे श्री रवि भैया को प्राप्त हुआ। पुरवा में चातुर्मास का योग पहली बार मिला इसलिए लोग उत्साह से चातुर्मास की तैयारियाँ करने लगे। जीव दया के लिये होता है चातुर्मास; साधुओं की आत्म साधना के साथ-साथ श्रावकों को धर्मोपदेश दिया जाता है शास्त्रज्ञान, ऐसा परम पूज्य आचार्यश्री 108 विद्यासागरजी महाराज से दीक्षित धर्म-प्रभावक आचार्यश्री 108 आर्जवसागरजी महाराज ने यह बात वर्षायोग कलश स्थापना समारोह पर श्री आदिनाथ दि. जैन मंदिर, पुरवा नगर, जबलपुर के किड्स कैम्प बेलफेयर जैन स्कूल के मैदान में बने

पाण्डाल में जनसमूह के बीच कही। आचार्यश्री ने प्रवचन के दौरान बताया कि चार महीने के वर्षाकाल के अंतर्गत जीवों की उत्पत्ति अधिक होने के कारण साधु-संत जीव-दया के भाव से एक स्थान पर रहकर अपनी आत्म-साधना करते हैं और श्रावकों को मोक्ष-मार्ग बतलाते हैं। कलश स्थापना के इस समारोह में आचार्यश्री के दर्शन हेतु दूर-दूर से दिल्ली, सूरत, अहमदाबाद, मद्रास, बैंगलोर, भोपाल, ग्वालियर, जयपुर, इंदौर, सागर एवं दमोह आदि से भी भक्त पधारे, जिन्होंने गुरुचित्र का अनावरण एवं दीप प्रज्ज्वलन करने का सौभाग्य प्राप्त किया। इस वर्षायोग में श्री दि. जैन वर्णी गुरुकुल के अधिष्ठाता ब्र. जिनेश शास्त्री एवं ब्र. नरेश जैन द्वारा संगीत भजनों के साथ कलशों की बोलियाँ एवं मंत्र संस्कार विधि सम्पन्न की गई जिसमें श्री अनिल बड़कुल, श्री रवि जैन, श्री जय कुमार जैन, श्री मुन्ना जैन, श्री गोलू जैन (जय मंगल) आदि कई श्रावकों ने कलश लेकर पुण्य अर्जित किया।

गुरु पूर्णिमा:-

प्रात:काल में गुरु पूर्णिमा पर आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज की पूजन ब्र. अन्नू भैया एवं भोपाल से आये संचालक डॉ. श्री नरेन्द्र जैन के निर्देशन में हुई एवं आचार्यश्री आर्जवसागरजी के गुरु पूर्णिमा पर विशेष प्रवचन सम्पन्न हुए। प्रवचन के पूर्व आचार्यश्री का पाद प्रक्षालन एवं संघस्थ-साधुओं को शास्त्र अर्पण भी श्रावकों द्वारा किये गये।

आचार्यश्री 108 आर्जवसागरजी महाराज के संघ में मुनि श्री 108 नमितसागरजी महाराज, मुनिश्री 108 भाग्यसागरजी महाराज, मुनिश्री 108 महत्सागरजी महाराज और आर्यिकाश्री 105 प्रतिभामति माताजी, आर्यिकाश्री 105 राजितमति माताजी तथा ऐलकश्री 105 भगवत्सागरजी महाराज विराजमान थे।

वीरशासन जयन्ती:-

दूसरे दिन 10 जुलाई 2017 को प्रातः वीर शासन जयंती पर्व उत्साह

सहित मनाया गया। सम्यक्-ध्यान शतक इस विषय पर आचार्यश्री आर्जवसागरजी महाराज के प्रवचन प्रतिदिन प्रातः 8:30 बजे किड्स कैम्प (जैन) स्कूल प्रांगण में प्रारम्भ हुए। चातुर्मास व्यवस्था का कार्यभार संभालने की जिम्मेदारी चातुर्मास कमेटी के अध्यक्ष श्री विजय कुमार जैन, श्री आर.के. जैन, श्री संजय जी जैन, श्री सुशील कुमार जैन आदि पदाधिकारियों ने प्राप्त की तथा सकल दि. जैन समाज, पुरवा के साथ श्रीफल भेंटकर आचार्य संघ से वर्षायोग की सानंद सम्पन्नता हेतु आशीर्वाद प्राप्त किया। जबलपुर नगर की विभिन्न कॉलोनी एवं उपनगरों से पधारे एवं पंचायत कमेटी के लोगों ने भी आचार्य संघ के चरणों में श्रीफल अर्पित कर आशीष प्राप्त किया।

बाहर से आये सभी अतिथियों को शॉल, श्रीफल व गुरुचित्र प्रदान कर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम के अंत में कमेटी द्वारा आभार प्रदर्शन मंगलभावना पूर्वक सम्पन्न हुआ।

जबलपुर पुरवा का भाग्य जागा:-

29 जुलाई को श्री पार्श्वनाथ भगवान का मोक्ष कल्याणक (मोक्ष सप्तमी) दिवस बड़े ही हर्षोल्लास पूर्वक मनाया गया। शिखरजी की रचना बनाकर, तरह-तरह से सजाये गये लाडुओं से भगवान की पूजन एवं निर्वाण का आयोजन सम्पन्न हुआ। आचार्यश्री ने अपने प्रवचन में श्री पार्श्वनाथ भगवान के जीवन परिचय पर प्रकाश डाला। शाम को श्री पार्श्वनाथ भगवान पर प्रश्नमंच भी किया गया।

दिनांक 7 अगस्त को रक्षाबंधन पर्व एवं श्रेयांसनाथ भगवान का मोक्ष कल्याणक लाडु चढ़ाकर मनाया गया। षोडसकारण महापर्व का प्रारम्भ कलश स्थापना पूर्वक किया गया। सोलहकारण व्रत करीब 100 लागों ने सम्पन्न किये। एक महीने तक प्रतिदिन अभिषेक, शान्तिधारा, संगीतमय पूजन, आचार्यश्री का प्रवचन आदि कार्यक्रम हुये। 23 अगस्त को चारित्र चक्रवर्ती आचार्यश्री शान्तिसागरजी महाराज का समाधि दिवस मनाया गया। 26

अगस्त से पर्यूषण पर्व में प्रतिदिन दशलक्षण विधान पूर्वक विशेष पूजन एवं एक-एक धर्म पर आचार्यश्री के प्रवचन, दोपहर में मुनिश्री नमितसागरजी द्वारा जैनागम संस्कार की कक्षा एवं श्राविकाओं द्वारा तत्त्वार्थ सूत्र का वाचन और आचार्यश्री द्वारा अर्थ सहित प्रवचन हुये। शाम को प्रतिक्रमण, ध्यान, स्वाध्याय और सांस्कृतिक कार्यक्रम आदि सम्पन्न हुये। चातुर्मास के दौरान सुबह आलाप पद्धति कक्षा पश्चात् सम्यक् ध्यान पर प्रवचन चले, तीर्थोदय काव्य पर (सोलहकारण भावनाओं पर) आचार्यश्री के प्रवचन हुये तथा दोपहर में आचार्यश्री द्वारा मूलाचार व आर्यिका प्रतिभामतिजी के द्वारा छहढाला आदि कक्षायें चलीं। शाम को स्तोत्र, पाठ, कविताओं में धर्म का पाठ सिखाया गया तथा रविवारीय विशेष प्रवचन भी सम्पन्न हुए। 6 सितम्बर को षोडसकारण महामण्डल विधान किया गया। 8 सितम्बर को विमानोत्सव, क्षमावाणी का कलश एवं सामूहिक क्षमावाणी पर आकर्षक प्रवचन सुनकर श्रद्धालु भावविभोर हो गये। पर्यूषण पर्व में मढ़ियाजी क्षेत्र की कमेटी के पदाधिकारियों द्वारा पर्व के बाद पंचमी तिथि पर होने वाले मेले के उत्सव में पधारने हेतु पुरवा में आचार्यश्री आर्जवसागरजी ससंघ के लिए श्रीफल चढ़ाकर भक्तिपूर्वक निवेदन किया।

प्रथम चातुर्मास ने पुरवा में इतिहास का रूप लिया:-

परम पूज्य आचार्य गुरुवर आर्जवसागरजी महाराज का ससंघ पुरवा (जबलपुर) चातुर्मास के दौरान दशलक्षण पर्व के उपरान्त 9 तारीख सितम्बर को गुरुवर ससंघ भेड़ाघाट दर्शनार्थ पहुँचे। वहाँ पर स्थित जिन प्रतिमाओं का दर्शन किया और प्राकृतिक छटा का भी अवलोकन कर तीन दिन के प्रवास के उपरान्त पुनः पुरवा नगर में मंगल प्रवेश हुआ।

कवि सम्मेलन व धार्मिक पाठशाला सम्मेलन सम्पन्न:-

पश्चात् 1 अक्टूबर को धार्मिक कवि सम्मेलन हुआ जिसमें करीब 30-40 कवियों ने अपनी स्व-रचित कवितायें सुनायीं। जिसमें बच्चों ने भी

बहुत उल्लास के साथ भाग लिया। गुरु महाराज ने भी अपनी कवितायें सुनायीं। तदुपरान्त 2 अक्टूबर को दोपहर में धार्मिक पाठशाला सम्मेलन का कार्यक्रम हुआ। जिसमें 15-16 पाठशालाओं के बच्चों ने आँखों को सजल करने वाली आकर्षक अपनी-अपनी धार्मिक प्रस्तुतियाँ दी। पुरवा जबलपुर वालों को यह कार्यक्रम पहली बार देखने को मिला। बच्चों के शिक्षाप्रद कार्यक्रमों को देखकर बड़े लोगों के मन को मोहित कर लिया। इसमें प्रथम पुरस्कार पुरवा पाठशाला को द्वितीय पुरस्कार शिव-नगर (जबलपुर) पाठशाला को, तृतीय पुरस्कार संगम कालोनी (जबलपुर) पाठशाला को प्राप्त हुआ।

मुनिदीक्षा सम्पन्नः-

पश्चात् दिनांक 8 अक्टूबर को ऐलक श्री भगवतसागरजी को जैनेश्वरी दीक्षा प्राप्त करने का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। जिसमें दोपहर में एक बजे गुरुवर आचार्यश्री आर्जवसागरजी महाराज ससंघ जिनमन्दिर पहुँचे। पश्चात् वहाँ से बाजे के साथ नये पिच्छि, कमण्डल के साथ गुरुवर ने जिनदीक्षा की क्रियायें प्रारम्भ की। गुरुवर के कर कमलों से केशलोंच क्रिया एवं शुद्ध मंत्रोच्चारण के साथ जिनदीक्षा प्रदान की गयी। ज्यों ही वस्त्रों को त्याग कर दिगम्बर बने त्यों ही जय-जयकार गूंज उठी। इस जिनदीक्षा को देखने के लिए भारी जन समूह उमड़ पड़ा। पण्डाल में पग रखने के लिए जगह शेष नहीं थी। जिन दीक्षा के उपरान्त उनका नाम मुनिश्री भास्वतसागरजी रखा गया एवं उनको नई पिच्छिका प्रदान की गई एवं कोल्हापुर वालों की ओर से नया कमण्डल एवं शास्त्र भेंट किया गया। इस प्रकार यह जिन-दीक्षा समारोह विशाल जन समुदाय के बीच बहुत ही हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ।

पश्चात् अक्टूबर 19 तारीख को भगवान महावीर का निर्वाण कल्याणक महोत्सव बहुत ही उत्साह के साथ किड्स केम्प स्कूल के पाण्डाल में संगीतमय पूजन के माध्यम से निर्वाण लाडू चढ़ाकर मनाया गया एवं

वर्षायोग का निष्ठापन रूप भक्तियाँ पढ़ी गई। तदुपरान्त गुरुवर का मंगल प्रवचन हुआ।

दिनांक 22 अक्टूबर को भक्तामर मण्डल द्वारा भक्तामर महामण्डल विधान सम्पन्न किया गया और इसी दिन 28 अक्टूबर से 5 नवम्बर तक होने वाले श्री सिद्धचक्र महामण्डल विधान हेतु पात्र चयन का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

पुरवा में श्री सिद्धचक्र महामण्डल विधान सम्पन्नः-

तदुपरान्त 28 अक्टूबर से श्री सिद्धचक्र महा मण्डल विधान गुरुवर के ससंघ सान्निध्य में एवं सुंदर समवसरण के साथ विशाल मांडना माड़कर किया गया। जिसमें पहले दिन घट यात्रा, देव आज्ञा, गुरु आज्ञा के साथ जिन प्रतिमायें मन्दिर से पण्डाल तक बाजे के साथ ले जायीं गयीं। वहाँ समवसरण में प्रतिमाओं को विराजमान किया। पश्चात् ध्वजारोहण, गुरुवर के प्रवचनादि कार्यक्रम सम्पन्न हुये। प्रतिदिन सिद्ध-प्रभु की महा-आराधना और गुरुवर की प्रवचन माला जैन रामायण के साथ चलती रही।

अन्तिम दिन 5 नवम्बर को प्रातः हवन के पश्चात् विशाल रथोत्सव किया गया। जिसमें गुरुवर के ससंघ सान्निध्य में रथ में प्रभुजी को विराजमान करते हुए गाजे-बाजे के साथ, विशाल जनसमूह के जय-जयकारों के साथ नृत्यगान करते हुये नई पिच्छिकाएँ लेते हुए यह रथोत्सव त्रिपुरी चौक, मढ़ियाजी से होते हुए स्कूल (प्रभावना स्थली) तक पहुँचा और अभिषेक, सम्मान व आशीर्वचन के साथ यह कार्यक्रम सानन्द सम्पन्न हुआ।

पिच्छि परिवर्तनः-

दोपहर में पिच्छिका परिवर्तन का कार्यक्रम भी बहुत ही मंगलमय हुआ। जिसमें पुरवा पाठशाला के बच्चों द्वारा मंगलाचरण हुआ। पश्चात् चित्र अनावरण एवं दीप प्रज्ज्वलन किया गया। तदुपरान्त कण्ठपाठ प्रतियोगिता में उत्तीर्ण हुए लोगों को पुरस्कार वितरण किये गये। पश्चात् बाहर से पधारे

दिल्ली, गुजरात, तमिलनाडु, कर्नाटक, उड़ीसा, भोपाल, इन्दौर, सागर, दमोह, बीड, बरेली आदि स्थानों में पधारे अतिथियों का सम्मान किया गया। पश्चात् पिच्छिका परिवर्तन हुआ। जिसमें आचार्य गुरुवर को पिच्छि देने का सौभाग्य श्रीमति कमलेश सुभाष जैन परिवार एवं श्रीमति रजनी जैन आदि को प्राप्त हुआ और पुरानी पिच्छि लेने का सौभाग्य श्री रवि जैन-प्रीती जैन परिवार को प्राप्त हुआ। संघस्थ मुनिराजों एवं आर्यिकाओं के भी क्रम से पिच्छिका परिवर्तन हुआ। अन्त में गुरुवर ने मंगल प्रवचन में संयम का महत्त्व बताते हुए विजय, विजया का उदाहरण दिया। इस प्रकार यह पुरवा (जबलपुर) को आचार्य संघ का चातुर्मास प्रथम बार मिलने पर ऐतिहासिक रूप कार्यक्रमों का संगम हुआ।

गुरुवर ने किया विहार:-

पश्चात् 6 तारीख दोपहर को गुरुवर का ससंघ विहार संगम कॉलोनी की ओर हुआ। सब लोगों द्वारा शीतकाल का आग्रह होते हुए भी गुरुवर को रोक नहीं पाये। गुरुवर के साथ अश्रुपात करते हुए पीछे-पीछे सारी जनता चलती चली गई। संगम कॉलोनी में मंगल आगवानी हुयी। दो दिन के प्रवास में मंगल प्रवचन के माध्यम से धर्म की प्रभावना हुई।

पनागर में मंगलप्रवेश:-

पश्चात् 8 तारीख दोपहर को पनागर के लिए विहार हो गया। शाम को सुभाष नगर पर विश्राम करते हुए 9 तारीख प्रातः काल पनागर नगर में मंगल प्रवेश हुआ। बाजार मन्दिर में आहार चर्या के उपरान्त अतिशय क्षेत्र के मन्दिर का दर्शन किया।

विशाल शान्तिनाथ प्रभु का दर्शन कर सभी आनन्दित हुये। गुरुवर को अपने संयम (ब्रह्मचर्य) रूप धारण की स्थली को देखकर पुराने संस्मरण याद आ गये। सबको सुनाया कि मैंने यहीं पर ब्रह्मचर्य व्रत लिया और सफेद कपड़े (धोती-दुपट्टा) यहीं पर धारण किये थे। सभी लोग सुनकर हर्षित हुये।

कुछ दिनों के प्रवास पर प्रतिदिन मंगल प्रवचन हुये। शीतकाल के लिए कमेटी के द्वारा श्रीफल भेंट किये गये। पश्चात् 15 तारीख शाम को गुरुवर का विहार हो गया। विहार करके सम्मेदगिरि का दर्शन करते हुए गोसलपुर में मन्दिर दर्शन कर आहार चर्या हुई। पश्चात् दोपहर में गुरुवर के मंगल प्रवचन हुये। सबने कुछ दिन प्रवास के लिए नम्र निवेदन किया। फिर भी गुरुवर का विहार हो गया। विहार करके खितौला में मंगल प्रवेश हुआ। पश्चात् खितौला में मंगलप्रवचन हुये तथा वहाँ भी शीतकाल के लिए निवेदन किया। फिर भी गुरुवर ने 18 तारीख को वहाँ से बहोरीबंद के लिए विहार कर दिया।

बहोरीबंद क्षेत्र दर्शनः-

19 तारीख शाम को बहोरीबंद में बाजों के साथ भव्य मंगल प्रवेश हुआ और भगवान शान्तिनाथ की विशाल प्रतिमा को देखकर मन प्रफुल्लित हो गया। यहाँ तक पुरवा वाले बड़ी संख्या में विहार में साथ चल रहे थे। बस भरकर आये थे और बहोरीबंद के बीच चौका भी लगाकर आहार दान का लाभ लिया तथा बहोरीबंद तक पैदल विहार कराकर सातिशय पुण्य का संचय किया। 21 नवम्बर को क्षेत्र पर पधारे लघु व मध्यम उद्योगमंत्री संजय पाठक म.प्र. शासन ने तथा कटनी नगर के महापौर शशांक श्रीवास्तव आदि ने आचार्य श्री आर्जवसागरजी ससंघ का दर्शन कर आशीष प्राप्त किया। 22 नवम्बर को मध्याह्न 2 बजे क्षेत्र कमेटी के निवेदन से गुरुवर आचार्यश्री के सान्निध्य में आचार्यश्री विद्यासागर महाराज का आचार्य पदारोहण दिवस सोल्लास मनाया गया। इस कार्यक्रम में बहोरीबंद की जैनसमाज के साथ सिहोरा, स्लीमनाबाद, तेवरी, कटनी, जबलपुर, दमोह से पधारे लोगों के साथ बाकल समाज के साथ आए अजय अहिंसा ने कविता सुनाकर सबका मन मोहा एवं संचालन खितौला समाज के साथ आए मनोज जैन ने किया। बहोरीबंद अतिशय क्षेत्र कमेटी द्वारा आचार्यश्री ससंघ के लिए शीतकालीन प्रवास तथा 26 दिसंबर में आने वाले मेले में आचार्यश्री का सान्निध्य प्राप्त

करने हेतु श्रीफल भेंटकर निवेदन किया गया। 24 नवम्बर को आचार्यश्री का ससंघ विहार स्लीमनाबाद की ओर हुआ। स्लीमनाबाद की जैन समाज ने शीतकालीन वाचना हेतु श्रीफल भेंट किया। सभी ने आचार्यश्री के प्रवास हेतु निवेदन किया किन्तु 3 दिसम्बर को ससंघ विहार-तेवरी की ओर हुआ। तेवरी में कुछ दिन प्रवास करने के उपरांत दिनांक 10 दिसम्बर को पिपरौध के लिए विहार हुआ। आहारचर्या के उपरांत निवार (पहाड़ी) की ओर विहार हुआ। यहाँ कुछ दिनों के लिए धर्मप्रभावना हेतु प्रवास हुआ।

बिलहरी में भूगर्भ से प्राप्त प्रतिमाओं का दर्शनः-

परम पूज्य आचार्यश्री आर्जवसागरजी महाराज निवार पहाड़ी में कुछ दिन के प्रवास में बड़ी धर्मप्रभावना हुई। शीतकालीन प्रवास हेतु बहुत निवेदन करने पर भी गुरुदेव ने दिसम्बर 19 तारीख शाम को विहार किया और बिलहरी पहुँचे। बिलहरी में भूगर्भ से प्राप्त करीब 30-35 प्रतिमाओं का दर्शन किया। तीन-चार दिन ठहरकर प्रवचनादि के माध्यम से धर्मप्रभावना हुई। पश्चात् जंगल के रास्ते से चौबीस तारीख शाम को बहोरीबंद पहुँचे।

बहोरीबंद में वार्षिक उत्सवः-

वहाँ पर 26 तारीख को भगवान शान्तिनाथ का महामस्तकाभिषेक का कार्यक्रम सानन्द सम्पन्न हुआ। जिसमें प्रातः कालीन समय श्री शान्तिनाथ महामण्डल विधान किया गया। तथा दोपहर में मंगलाचरण पूर्वक कार्यक्रम शुरू हुआ। आचार्यश्री के पादप्रक्षालन एवं 50 शास्त्र भेंट किये गये। तदुपरान्त अपार जनसमूह से भरे हुए विशाल पण्डाल में आचार्य गुरुवर के मंगल प्रवचन हुये। भ. शान्तिनाथ का महामस्तकाभिषेक ब्र. जिनेश भैय्या वर्णी गुरुकुल जबलपुर के निर्देशन में सम्पन्न हुआ एवं शान्तिधारा गुरुवर के मुखारविन्द से सम्पन्न हुई। 28 ता. को गुरुवर का मंगल विहार हो गया। बचैय्या गाँव से होते हुए मंझोली नगर पहुँचे। चार-पाँच दिन के प्रवास में गुरुवर के मंगल प्रवचन एवं आगमिक चर्या से लोग बहुत प्रभावित हुये। और

शीतकाल के लिए बहुत निवेदन किया फिर भी गुरुवर ने विहार कर दिया। सिंग्रामपुर में मंगल पदार्पण हुआ। दो दिन प्रवास के बाद जबेरा नगर में मंगल आगवानी हुई। जबेरा में भी शीतकाल प्रवास हेतु बहुत निवेदन किया। दो दिन प्रवास के उपरान्त वहाँ से भी विहार कर दिया। चोपड़ा होते हुए बनवार पहुँचे। बीच में सगरा के लोगों ने भी अपने नगर पहुँचने हेतु बहुत निवेदन किया। फिर गुरुवर बनवार में एक-दो दिन रहे। यहीं पर सि.क्षे. कुण्डलपुर की कमेटी के लोगों ने आदिनाथ भगवान के मोक्षकल्याणक दिवस का कार्यक्रम गुरुवर के सान्निध्य में मनाने हेतु कुण्डलपुर पधारने के लिए नम्र निवेदन पूर्वक श्रीफल भेंट किये। पश्चात् गुरुवर का मंगल प्रवेश बांदकपुर में हुआ। एक दिन मंगल प्रवचन आहार चर्या वहाँ पर सम्पन्न की। गाँव के लोगों के अन्दर बहुत भक्ति भावना थी गुरुवर को रुकने हेतु बहुत निवेदन किया। लेकिन गुरुवर ने विहार कर दिया। वहाँ से हिंडोरिया होते हुए वमनपुरा में आहारचर्या हुई।

कुंडलपुर में मंगलप्रवेश:-

पश्चात् 12 जनवरी 2018 की शाम को बाजे के साथ क्षेत्र कमेटी एवं जनसमूह द्वारा कुण्डलपुर क्षेत्र पर मंगल आगवानी हुई। जिसमें वहाँ पूर्व से ही ठहरी हुई आ. तपोमति माताजी का ससंघ एवं आ. गुणमति माताजी के संघ ने भी भव्य आगवानी की। पश्चात् 14 तारीख को मकरसंक्रांति को गुरुवर ने पहाड़ की वन्दना की एवं बड़े बाबा के सामने श्री शान्तिनाथ महामण्डल विधान किया गया और गुरुवर के मुखारबिन्द से बड़े बाबा की शान्तिधारा हुई तथा दोपहर में नीचे बने सन्त निवास पर गुरुवर के मंगल प्रचवन एवं भाव विज्ञान पत्रिका के नये अंक का विमोचन कुण्डलपुर कमेटी ने किया।

कुंडलपुर में भ.आदिनाथ का मोक्षकल्याणक:-

15 तारीख को आदिनाथ भगवान का मोक्ष कल्याणक दिवस के दिन बड़े बाबा के समक्ष अपार जन समूह के बीच 50 लाडू समर्पित किये गये और

श्री भक्तामर महामण्डल विधान भी सम्पन्न हुआ और 16 तारीख को बड़े बाबा के नये मन्दिर में स्थापना दिवस के रूप श्री बड़े बाबा का विधान किया गया। दोपहर में पथरिया की कमेटी एवं समाज के लोग सिद्ध-चक्र महामण्डल विधान में गुरुवर आ. श्री आर्जवसागरजी महाराज को पथरिया पधारने हेतु श्रीफल भेंट किये तथा 18 तारीख प्रातः गुरुवर ने ससंघ बड़े बाबा का दर्शन करके पटेरा के लिए विहार कर दिया। दो दिन वहाँ पर प्रवास रहा। पश्चात् 20 जनवरी को सुबह कुढ़ई के लिए विहार हुआ। वहाँ पर आहारचर्या हुई। दोपहर बनगाँव की ओर विहार हो गया। बनगाँव में भी तीन दिन का प्रवास रहा। तदुपरान्त फुटेराकलाँ वालों के बहुत बार किये गये निवेदन पर फुटेरा की ओर विहार हुआ। सीतानगर में विश्राम करके 24 तारीख को प्रातः कालीन मंगल बेला में मंगल वाद्य ध्वनि के साथ एवं लोगों की जय-जयकार ध्वनि के साथ गुरुवर की जन्मस्थली फुटेराकलाँ में मंगल प्रवेश हुआ।

आचार्य पदारोहण दिवस कार्यक्रम सानन्द सम्पन्नः-

फुटेराकलाँ में सुबह और दोपहर दोनों समय नगर के बीच बने पण्डाल में गुरुवर के मंगल प्रवचन हुए। 24 तारीख दोपहर में पुनः पथरिया के लोगों ने बहुत संख्या में आकर नगर पधारने हेतु निवेदन किया और 25 तारीख को दोपहर में गुरुवर आचार्यश्री आर्जवसागरजी महाराज के चौथा आचार्य पदारोहण दिवस हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। जिसमें कु. ऋषिका जैन, कु. प्राची जैन दमोह के मंगलाचरण से कार्यक्रम की शुरुआत हुई। पश्चात् बाहर से पधारे अतिथियों द्वारा चित्र अनावरण एवं दीप प्रज्ज्वलन किया गया। पश्चात् गुरुवर का पादप्रक्षालन का सौभाग्य श्री विजयकुमार संध्या जैन पुरवा जबलपुर वालों को प्राप्त हुआ और गुरुवर के कर कमलों में प्रमुख शास्त्र भेंट करने का सौभाग्य श्री प्रवीण जैन महावीर रोड लाइन्स दमोह वालों को प्राप्त हुआ और लोगों ने भी गुरुवर के लिए शास्त्र भेंट किये। पश्चात् गुरुवर की

पूजन भक्ति-भाव पूर्वक सम्पन्न हुई। तदुपरान्त संघस्थ मुनिश्री नमितसागरजी महाराज ने आचार्य गुरुवर की महिमा गयी। पश्चात् गुरुवर के मंगल प्रवचन सम्पन्न हुये। 27 तारीख को दोपहर में संगीतमय श्री शान्तिनाथ महामण्डल विधान पाण्डाल में विशेष मण्डल माड़कर बहुत ही भक्ति भाव के साथ नृत्य गान सह सम्पन्न हुआ। जिनेन्द्र भगवान एवं गुरुवर की पूजन एवं आरती की गयी। पश्चात् गुरुवर के मंगल प्रवचन सम्पन्न हुये। 28 तारीख को दोपहर में विशेष मंगल प्रवचन एवं प्रश्नमंच का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। इस प्रकार फुटेराकलाँ में दस वर्ष के बाद पुनः आचार्य गुरुवर के मंगल आगमन पर अपूर्व धर्म प्रभावना हुई। पश्चात् 29 तारीख दोपहर को गुरुवर का ससंघ विहार बह्मोरी भाट होते हुए दिनांक 30 को सुबह खडेरी नगर में दिव्यघोष के साथ मंगल प्रवेश हुआ। दोपहर में गुरुवर के मंगल प्रवचन सम्पन्न हुये। 31 जनवरी दोपहर को वहाँ से केरबना के लिये विहार कर दिया। केरबना में बाजे एवं जय-जयकार ध्वनि के साथ आगवानी हुई। दो दिन के प्रवास के बाद 2 फरवरी को दोपहर पथरिया के लिए विहार कर दिया और शाम को 5 बजे गुरुवर का बचपन जहाँ बीता है ऐसे पथरिया नगर में बेन्ड-बाजे एवं अपार जन समूह के भक्तिभाव के साथ भव्य मंगल प्रवेश हुआ। 4 तारीख को श्री पद्मप्रभु भगवान का मोक्ष कल्याणक एवं 11 तारीख से होने वाले श्री सिद्धचक्र महामण्डल विधान हेतु पात्र चयन का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

पथरिया नगर में सिद्ध चक्र विधान सम्पन्नः-

आचार्यश्री आर्जवसागरजी के ससंघ सान्निध्य में पथरिया नगर की श्री महावीर दिगम्बर जैन धर्मशाला के बाहर बने विशाल पाण्डाल में दिनांक 10 फरवरी 2018 से 19 फरवरी 2018 तक श्रीमज्जिनेन्द्र सिद्धचक्र महामण्डल विधान विशाल समवसरण रचना के बीच सैकड़ों इन्द्र-इन्द्राणियों द्वारा सानन्द सम्पन्न हुआ। जिसमें 10 फरवरी को दोपहर 2 बजे घटयात्रा एवं श्रीजी विराजमान का कार्यक्रम बड़े जैन मन्दिर से विशाल जुलूस के रूप में

निकलकर जैन धर्मशाला तक पहुँची। पश्चात् मण्डप शुद्धि एवं आचार्यश्री आर्जवसागरजी महाराज के मंगल प्रवचन हुए, शाम को गुरु भक्ति, आरती, भजन, शास्त्र प्रवचन एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम आदि हुये। 11 फरवरी से 18 फरवरी तक प्रतिदिन अभिषेक, शान्तिधारा, नित्यपूजन एवं विधान पूजा प्रारम्भ हुई। प्रातः काल से आचार्यश्री के मंगल प्रवचन भी लोगों को प्राप्त हुये। जिसका अरिहंत चेनल वालों ने कवरेज भी किया। दोपहर में संघस्थ साधुओं द्वारा मंगल प्रवचन हुये और शाम को गुरुभक्ति, आरती, आदि कार्यक्रम हुये। अन्तिम दिन 19 फरवरी को विश्वशान्ति महायज्ञ (हवन) के उपरान्त आचार्यश्री के मंगल प्रवचन हुये। तथा दोपहर में श्री जी की शोभा यात्रा रथोत्सव बेंड बाजे अपार जन समूह एवं गुरुवर के ससंघ सान्निध्य के साथ पूरा नगर भ्रमण कर अपूर्व धर्म प्रभावना पूर्वक सम्पन्न हुई। इस कार्यक्रम में सौधर्म इन्द्र बनने का सौभाग्य श्री कमलेश-विद्या चौधरी परिवार ने प्राप्त किया। इस प्रकार पथरिया नगर में गुरुवर के सान्निध्य में यह कार्यक्रम पहली बार हुआ। इस कार्यक्रम ने सब के मन को प्रफुल्लित कर दिया। पश्चात् बड़े मन्दिर की कमेटी ने बड़े मन्दिर में भी कुछ समय ठहरने हेतु नम्र निवेदन किया और शाहपुर नगर की पूरी कमेटी ने आकर अपने नगर पधारने हेतु श्रीफल भेंटकर नम्र निवेदन किया। पश्चात् गुरुवर 24 तारीख को बड़े मन्दिर बाजे के साथ पहुँचे और 24 फरवरी से 5 मार्च तक सम्यक् ध्यान साधना कार्यक्रम चला। जिसमें बहुत लोगों ने सम्यक् ध्यान शतक को गुरुमुख से सुनने का लाभ प्राप्त किया।

शाहपुर में मंगलप्रवेशः-

पश्चात् ठहरने हेतु बहुत निवेदन किया जाने पर भी गुरुवर का विहार 8 तारीख को गोरा गाँव के लिए हो गया। पश्चात् दो दिनों की चर्या प्रवचनों के बाद 9 तारीख शाम को शाहपुर नगर में बाजे के साथ मंगल प्रवेश हुआ और कई दिनों के निवेदन का फल उन्हें मिल ही गया। सबने महावीर जयन्ती एवं

मानस्तम्भ अभिषेक गुरुवर के सान्निध्य मनाने हेतु श्रीफल भेंट कर नम्र निवेदन किया। प्रतिदिन प्रातः कालीन प्रवचन एवं दोपहर में एकीभाव स्तोत्र की कक्षा व सायं को गुरुभक्ति, आरती के साथ जीवन संस्कार के माध्यम से स्तुति पाठ पढ़ाया जाता था।

पूज्य आ.राजितमति की समाधिः-

शाहपुर नगर में 19.3.18 को करीब दो वर्षों से अस्थमा से पीड़ित पूज्य आर्यिका 105 राजितमति माताजी की अस्वस्थता के कारण गुरु सान्निध्य में त्याग पूर्वक चतुर्विध संघ के बीच णमोकार मंत्र को सुनते हुए समाधि सम्पन्न हुई।

महावीर जयंती कार्यक्रम शाहपुर नगर में:-

महावीर जयन्ती का कार्यक्रम तीन दिवस के रूप में मनाया गया। जिसमें 27 तारीख को शाहपुर के आ. विद्यासागर हाई स्कूल व सन्मति वीर निकेतन स्कूल के बच्चों के बीच गुरुवर के मंगल प्रवचन हुये। 27 तारीख को दोपहर में जैन स्कूल के शिक्षक-शिक्षिकागण एवं बच्चों सभी बाजे लेकर गुरुवर की आगवानी हेतु जैन मन्दिर तक आये और जुलूस के साथ वहाँ स्कूल के बीच पाण्डाल में गुरुवर मंचासीन हुये। बहिनों द्वारा मंगलाचरण पूर्वक कार्यक्रम की शुरुआत हुई। और बच्चों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम भी प्रस्तुत किये गये। तदुपरान्त अतिथियों का सम्मान किया गया और गुरुवर का पादप्रक्षालन एवं भक्ति पूर्वक अर्घ समर्पित किये गये तथा शास्त्र भेंट भी किये गये। तत्पश्चात् गुरुवर आ. आर्जवसागरजी के मंगल प्रवचन सम्पन्न हुये, जिसमें गुरुवर ने भ.महावीर का जीवन दर्शन व गुरु और शिष्य का जीवन और अहिंसा शाकाहार पर उद्बोधन दिये और सभी बच्चों को शाकाहार एवं व्यसन मुक्ति पर नियम दिलाते हुए हाथ उठाकर संकल्पित करवाया। स्कूल में बच्चों की शिक्षा के लिए लोगों ने तीन कम्प्यूटर दान में दिये। तदुपरान्त कमेटी के लोग स्कूल के अवलोकनार्थ विनयपूर्वक गुरु-संघ को स्कूल-परिसर में ले

गये और अवलोकन कराया। पश्चात् सभी बच्चों को मिष्ठान वितरण किया गया। दिनांक 28 तारीख को दोपहर में पाठशालाओं का सम्मेलन मन्दिर के प्रांगण में किया गया जिसमें नसियाँ मन्दिर दमोह, पथरिया, नेहानगर मकरोनियाँ सागर, सानोदा, सन्मति वीर निकेतन शाहपुर, आ. विद्यासागर हाई स्कूल शाहपुर और कंदुवा गाँव आदि की पाठशालायें सम्मिलित हुयीं थीं। जिसमें सबने अपनी धार्मिक कार्यक्रमों की प्रस्तुतियाँ दीं।

31वाँ मुनि दीक्षा दिवस मनाया गया:-

आ. गुरुवर आर्जवसागरजी के लिए अर्घ समर्पण किये गये और भक्तों द्वारा कई शास्त्र भेंट भी किये गये। पाठशाला सम्मेलन में प्रथम स्थान नेहानगर, मकरोनिया सागर की पाठशाला को, द्वितीय स्थान नसियाँ मन्दिर दमोह को और तृतीय स्थान आ. विद्यासागर हाई स्कूल बच्चों को प्राप्त हुआ। जिन्हें दो तरह के मोमन्टो एवं सभी विद्यार्थियों को सांत्वना पुरस्कार प्रदान किये गये। तृतीय दिवस 29 मार्च को प्रातः कालीन मंगल बेला में मानस्तम्भ में स्थित चतुर्मुख भगवान का आठ मुख्य कलश एवं 100 छोटे सुन्दर कलशों द्वारा जिनाभिषेक एवं गुरु के मुखारबिन्द से शान्तिधारा सम्पन्न हुई। पश्चात् आचार्य गुरुवर का मंगल प्रवचन सच्चा जन्म कब होता है? इस विषय पर सम्पन्न हुये। दोपहर में आ. आर्जवसागरजी महाराज का 31वाँ मुनि दीक्षा दिवस हर्षोल्लास पूर्वक मनाया गया। जिसमें दमोह के ऋषिका जैन, प्राची जैन द्वारा मंगलाचरण किया गया। और दिल्ली से पधारे लोकेश जैन ने अपनी गुरुश्रद्धा को भजन के रूप में व्यक्त किया। पश्चात् गुरुवर का पाद प्रक्षालन का सौभाग्य सूरत से पधारे श्री वैशाली जैन ने अपने पुत्र के साथ प्राप्त किया। मुख्य शास्त्र भेंट का सौभाग्य श्री लोकेश जैन दिल्ली वालों को और 31 शास्त्र अन्य विशिष्ट भक्तों द्वारा भेंट किये गये। तत्पश्चात् संगीतमय भक्तिपूर्वक सुन्दर सजी अष्ट द्रव्यों के थालियों के साथ गुरुवर की पूजन की गयी। 31 दीपों से आरती उतारी गई। तत्पश्चात् मुनिश्री महत्सागरजी ने अपने ऊपर गुरु

उपकार का फल दर्शाते हुए उद्‌बोधन दिये। पश्चात् गुरुवर के मंगल प्रवचन महावीर के जीवन दर्शन पर सम्पन्न हुआ। तदुपरान्त शाहपुर में गुरुवर द्वारा सम्यक् ध्यान शतक पर प्रवचन चलता रहा। दोपहर में आ. प्रतिभामति माताजी द्वारा तीर्थोदय काव्य के ऊपर कक्षा चली। शाम को भक्तामर स्तोत्र अर्थ सहित पढ़ाया गया। पूरी समाज ने आचार्य गुरुवर से ग्रीष्मकालीन प्रवास हेतु श्रीफल भेंटकर नम्र निवेदन प्रस्तुत किया।

शाहपुर में हुई आर्यिका दीक्षा:-

परम पूज्य आचार्यश्री 108 आर्जवसागरजी महाराज ससंघ के शाहपुर (सागर) में ग्रीष्मकालीन प्रवास के दौरान कई ऐतिहासिक कार्यक्रम हुये। जिसमें सूरत निवासी ब्र.श्री सुरेखा बेन ने आर्यिका दीक्षा हेतु आ. आर्जवसागरजी से कई बार निवेदन किया और शाहपुर में पुनः निवेदन करने पर उनकी दीक्षा का कार्यक्रम 16.04.18 तारीख को रखा गया। 14 तारीख को पूरे शाहपुर नगर की ओर से गोद भराई का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ और 15 तारीख को शाम को बेंड-बाजे के साथ बग्गि में इनकी विनोली निकाली गई। रात को सूरत से पधारे पारिवारिकजनों के द्वारा गोद भराई की गयी। पश्चात् 16 तारीख को प्रातः 5 बजे से उन्होंने केशलोंच प्रारंभ किया। 7:30 बजे बेंड बाजे के साथ बग्गि में दीक्षार्थी को बिठाकर पूरी समाज के साथ जुलूस आचार्यश्री विद्यासागर स्कूल प्रांगण में बने पाण्डाल तक पहुँचा। वहाँ पर शाहपुर पाठशाला के बच्चों के द्वारा एवं बड़ी बहिनों द्वारा मंगलाचरण पूर्वक कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ। दीक्षार्थी ने गुरुवर से दीक्षा हेतु श्रीफल भेंटकर निवेदन किया तथा अपनी वैराग्य परम वैराग्य भरी भावना व्यक्त की। पश्चात् बाहर से पधारे अतिथियों द्वारा चित्र अनावरण एवं दीप प्रज्ज्वलन किया गया। तदुपरान्त बाहर से पधारे सूरत, तमिलनाडू, भोपाल, दमोह, पथरिया, सागर, दिल्ली आदि के लोगों का सम्मान किया गया। पश्चात् आर्यिका दीक्षा विधि प्रारम्भ हुई। आचार्य गुरुवर आर्जवसागरजी महाराज ने उन पर पूर्ण आर्यिका दीक्षा विधि

मंत्रोंपूर्वक अपने ससंघ समक्ष अपने कर कमलों से करके एवं संघस्थ आर्यिका प्रतिभामति माताजी से भी श्रीकार स्वस्तिक व अंक की वगैरह की कुछ विधि सम्पन्न करवायी तथा अंत में उनका नामकरण आर्यिका श्री 105 सुयोगमति माताजी किया गया। नई पिच्छिका कमण्डल व शास्त्र दान देने का सौभाग्य सूरत से पधारे पूर्व पर्याय के परिवार वालों ने प्राप्त किया। अन्त में गुरुवर का मंगल प्रवचन हुआ। ऐसे वैराग्यवर्धक दीक्षा के कार्यक्रम को शाहपुर नगर के लोगों को पहली बार देखने को मिला। अतः समाज के लोगों ने बहुत ही हर्षोल्लास पूर्वक इस कार्यक्रम में भाग लिया। यह दीक्षा का दृश्य देखकर हरा-भरा परिवार होते हुए भी कैसे वैराग्य धारणकर उसका त्याग कर दिया। यह विचार कर लोगों के अन्दर भी वैराग्य का, त्याग का भाव उत्कट हुआ। इस प्रकार यह कार्यक्रम मंगलमय सानन्द सम्पन्न हुआ।

इस ग्रीष्मकालीन वाचना में प्रातःकालीन प्रवचन शृंखला में सम्यक्ध्यान पर प्रवचन व समाधितंत्र, तत्त्वसार आदि ग्रंथ पढ़ाया गया। दोपहर में तत्त्वार्थसूत्र की कक्षा व आचार्यश्री आर्जवसागरजी के रचित तीर्थोदयकाव्य की वाचना तथा शाम को जीवन संस्कार के साथ स्तुति, स्तोत्र पाठ का अर्थ आदि कार्यक्रम आर्यिका प्रतिभामतिजी द्वारा किया गया। रविवारीय प्रवचनों में मुनिश्री 108 महत्सागरजी के भी प्रवचन हुये एवं उन्होंने श्रावकों को स्तुति पाठ आदि का अर्थ समझाया।

सर्वोदय सम्यग्ज्ञान प्रशिक्षण व कार्यक्रमः-

इसी बीच दिनांक 12 मई से 19 मई तक आ. आर्जवसागरजी ससंघ सान्निध्य में आशीर्वाद और प्रेरणा से ''सर्वोदय सम्यग्ज्ञान प्रशिक्षण कार्यक्रम'' का आयोजन किया गया। जिसमें प्रातः अभिषेक पूजन के पश्चात् 7:30 बजे आचार्यश्री द्वारा द्रव्य-संग्रह तथा दोपहर में आर्यिका प्रतिभामति द्वारा तत्त्वार्थसूत्र एवं बाहर से पधारी बहिनों द्वारा छहढाला और शाम को गुरुभक्ति व आचार्यश्री द्वारा प्रश्नोत्तर रत्नमालिका कृति तथा आर्यिका संघ द्वारा जीवन

संस्कार तथा रात्रि में ब्र. बहिनों द्वारा रत्नकरण्डक श्रावकाचार की कक्षायें चलीं। जिसमें शाहपुर के बाल, युवा, वृद्ध आदि सभी ने उत्साह पूर्वक लाभ लिया। 19 मई को परीक्षायें हुईं 20 मई को दोपहर में परीक्षा में उत्तीर्ण हुये लोगों को प्रमाण पत्र व पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। पश्चात् गुरुवर के मंगलप्रवचन हुये। समाज के लोगों ने श्रुतपञ्चमी पर्व व चातुर्मास हेतु श्रीफल भेंटकर नम्र निवेदन किया। 9 जून को श्री भक्तामर का पाठ 24 घंटे का (अखण्ड पाठ) रखा गया। दूसरे दिन संगीतमय भक्तामर विधान भी हुआ और 12 जून को प्रातः श्री शान्तिनाथ भगवान का मोक्षकल्याणक भी लाडू चढ़ाकर श्री शान्तिनाथ महामण्डल विधान भक्ति पूर्वक मनाया गया। 18 जून को श्रुतपञ्चमी पर्व शास्त्र (जिनवाणी) की पूजन व शास्त्र शोभायात्रा (पालकी) निकालकर हर्षोल्लास पूर्वक मनाया गया। जिसमें शास्त्र सज्जा प्रतियोगिता एवं चित्रकला प्रतियोगिता भी की गयी तथा अन्त में गुरुवर के मंगलप्रवचन श्रुत पञ्चमी महत्त्व पर सम्पन्न हुये। इस प्रकार शाहपुर नगर में आ.गुरुवर आर्जवसागरजी के सान्निध्य में कई मंगलमय कार्यक्रम सम्पन्न हुये। सबसे बड़ी एक और उपलब्धि शाहपुर में आचार्यश्री द्वारा प्रश्नोत्तर मालिका एवं तत्त्वसार के पद्यानुवाद रचने रूप रही।

शाहपुर से हुआ विहारः-

परम पूज्य आचार्यश्री आर्जवसागरजी महाराज ससंघ शाहपुर नगर में करीब 3 महीने के प्रवास के दौरान अभूतपूर्व प्रभावना के बाद 23.6.18 दोपहर को गुरुवर का मंगल विहार हुआ। सभी भक्तगण अश्रुपात करते हुए गुरुवर के पीछे-पीछे चलते गये। कमेटी के लोगों ने ठहरने हेतु बहुत आग्रह किया और चातुर्मास की भावना भायी, फिर भी गुरुवर को कोई रोक नहीं पाये। शाम को पड़ारिया जैन मन्दिर का दर्शनकर वहीं पर विश्राम किया।

बंडा, नैनागिरि दलपतपुर में वर्षायोग निवेदनः-

पश्चात् सानोधा, चना टोरिया वालों ने आकर अपने गांव पधारने हेतु श्रीफल चढ़ाकर निवेदन किया। पश्चात् प्रातः काल सानोधा नगर में बाजों के

साथ मंगल प्रवेश हुआ। भव्य जिनमन्दिर के दर्शन पश्चात् आहारचर्या सम्पन्न हुई। तथा दोपहर में कर्रापुर की समाज ने आकर श्रीफल भेंटकर अपने नगर पधारने हेतु निवेदन किया। तदुपरान्त 25.6.18 को प्रातःकाल के मंगल बेला में कर्रापुर में वाद्यध्वनि के साथ मंगल प्रवेश हुआ। जिनमन्दिर दर्शन के उपरान्त गुरुवर के मंगल प्रवचन हुये। तदुपरान्त आहार चर्या सम्पन्न हुई। बड़े मन्दिर में तीन दिन प्रवास के उपरान्त गुरुवर का मंगल विहार बंडा नगर की ओर हुआ। 28.6.18 शाम को बण्डा में श्री शान्तिनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर में मंगलप्रवेश हुआ और 29.6.18 को कमेटी एवं समाज के सभी लोगों ने इस वर्ष का वर्षायोग बण्डा नगर में हो इस भावना से श्रीफल अर्पित किये। पश्चात् प्रतिदिन गुरुवर के मंगलप्रवचन हुये। जिससे सारी समाज बड़ी प्रभावित हुई और दोपहर में पूर्व से ही बड़े मन्दिर में ठहरी हुई आर्यिका 105 ऋजुमति माताजी ससंघ आचार्यश्री आर्जवसागरजी ससंघ दर्शनार्थ पधारी और एक घंटे तक धार्मिक चर्चायें हुई। कुछ दिन के उपरान्त नैनधरा की समाज ने अपने गाँव में स्थित अतिशयकारी प्रतिमा के दर्शन हेतु पधारने निवेदन किया। बण्डा नगर में करीब 12 दिनों के प्रवास के दौरान प्रवचनादि के माध्यम से बहुत धर्म प्रभावना हुई। पश्चात् 10.7.18 दोपहर को आचार्यश्री ने ससंघ नैनधरा की ओर मंगल विहार किया। नैनधरा में बाजे व हर्षोल्लास से गुरुवर का मंगलप्रवेश हुआ। यहाँ पर दो दिन का प्रवास रहा तथा दोनों समय प्रातः व दोपहर में गुरुवर के मंगलप्रवचन हुये। वहाँ की समाज ने ठहरने हेतु निवेदन किया। यहीं पर शाहपुर की पूरी कमेटी के लोगों ने आकर आचार्यश्री के मंगल वर्षायोग शाहपुर में हो इस मंगल भावना से श्रीफल भेंट किये। गुरुवर ने पुण्य बढ़ाने का आशीर्वाद दिया। पश्चात् गुरुवर का मंगल विहार कंदवाँ की ओर हुआ। 12.7.18 को देपहर में कंदवाँ गाँव में मंगल प्रवेश हुआ। वहाँ पर प्रातःकाल गुरुवर के मंगल प्रवचन हुये तथा आहारचर्या हुई। तदुपरान्त 13.7.18 को प्रातःकाल वरा की ओर मंगल विहार हुआ। वहाँ पर अहारचर्या

के उपरान्त सिद्धक्षेत्र नैनागिरि की ओर मंगल विहार हुआ। शाम को नैनागिरि सिद्धक्षेत्र पर हर्षोल्लास के साथ मंगलप्रवेश हुआ। तदुपरान्त 14.7.18 को प्रातःकाल पूरे मन्दिरों की वंदना की। गुरुवर को अपनी पुरानी बातें जो कि गुरुवर आचार्यश्री विद्यासागरजी के साथ की संस्मरण, मूलाचार की वाचनायें, पञ्चकल्याणक महोत्सव आदि सभी यादें ताजी हो गई और गुरुवर के मुखारबिन्द से मूलनायक पार्श्वनाथ भगवान की शान्तिधारा सम्पन्न हुई। गुरुवर की भक्ति करने एवं आहार चर्या हेतु बण्डा एवं दलपतपुर वाले तत्पर रहे और यहीं पर सागर अंकुर कॉलोनी से कमेटी के लोगों ने वर्षायोग की भावना से श्रीफल अर्पित किये और बण्डा वालों ने भी तीन-चार बार श्रीफल भेंटकर वर्षायोग हेतु श्रीफल अर्पित किये। करीब 5 दिन के प्रवास के उपरान्त आचार्य गुरुवर का मंगल विहार दलपतपुर की ओर हुआ। 18.7.18 को दलपतपुर में वाद्य ध्वनि, जयघोष सह मंगलप्रवेश हुआ। यहीं पर शाहगढ़ से पूरी समाज ने आकर श्रीफल भेंटकर वर्षायोग हेतु निवेदन किया। दलपतपुर के बड़े मन्दिर में भ. नेमिनाथ का मोक्षकल्याणक मनाया गया। गुरुवर के मंगलप्रवचन भी हुये। बण्डा नगर के सभी मन्दिरों की कमेटी के लोगों ने वर्षायोग बण्डा नगर में करने हेतु नम्र निवेदन किया।

बण्डा में वर्षायोग हेतु मंगल प्रवेश व कार्यक्रमः-

पश्चात् 20.7.18 को प्रातःकाल की मंगल बेला में बण्डा नगर के पुण्य से बड़ी धूमधाम के साथ वर्षायोग हेतु भव्य मंगल प्रवेश हुआ। जिसमें डीजे-बाजे के एवं अपार जन-समूह के साथ भव्य मंगल प्रवेश का नजारा देखने योग्य था। इसी बीच बड़े मन्दिर के अध्यक्ष अशोक ठेकेदार ने अपने बण्डा में स्थित आचार्य विद्यासागर पब्लिक स्कूल में गुरुवर का पादप्रक्षालन एवं आरती उतारी और स्कूल प्रवेश कराकर पूरे स्कूल का अवलोकन कराया तथा शान्तिनगर मन्दिर में भव्य मंगल प्रवेश हुआ। पश्चात् प्रवचन के समय पुनः पूरी समाज ने वर्षायोग हेतु श्रीफल अर्पित किये। तदुपरान्त 27 जुलाई 2018

को गुरुपूर्णिमा के दिन प्रातःकाल गुरुवर आचार्यश्री आर्जवसागरजी की संगीतमय एवं सजी हुये द्रव्य से भव्य पूजन सम्पन्न हुई। पश्चात् गुरुवर ने प्रवचन में गुरुपूर्णिमा के महत्त्व पर प्रकाश डाला तथा दोपहर में चातुर्मास के मंगलकलशों की स्थापना का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। जिसमें दमोह वाली बहिनों द्वारा मंगलाचरण किया गया। पश्चात् चित्र अनावरण, दीप प्रज्ज्वलन का कार्यक्रम हुआ। तदुपरान्त बाहर से दिल्ली, भोपाल, तमिलनाडु, अजमेर, दमोह, सागर, शाहपुर आदि से पधारे अतिथियों का सम्मान किया गया। पश्चात् चातुर्मास कलश स्थापना हेतु पात्र चयन किया गया। जिसमें प्रथम कलश का सौभाग्य श्री कमलकुमार नीलेशकुमार कंदवाँ (अध्यक्ष) द्वितीय कलश का सौभाग्य श्री अशोककुमार ठेकेदार (बड़े मन्दिर अध्यक्ष) और श्री महेन्द्रकुमार भूसा, श्री प्रवीणकुमार जैन (महावीर रोड लाइन्स, दमोह) आदि ने भी कलश स्थापना का सौभाग्य प्राप्त किया। पश्चात् आचार्य गुरुवर के मंगलप्रवचन हुये। प्रतिदिन के मंगल प्रवचन में सुबह सम्यक्ध्यान के ऊपर प्रवचन हुये। दोपहर में रत्नकरण्डक श्रावकाचार, एवं तत्त्वार्थसूत्र की कक्षा और शाम को गुरु भक्ति, आरती, भजन, स्तोत्र पाठ कार्यक्रम चला। 17 अगस्त की भ. पार्श्वनाथ का मोक्ष कल्याणक महोत्सव भक्तिपूजन लाडू चढ़ाकर हर्षोल्लास पूर्व मनाया गया। निर्वाण लाडू की प्रतियोगिता भी रखी गयी थी जिसमें बहुत लोगों ने भाग लिया। गुरुवर का मंगलप्रवचन पार्श्वनाथ के जीवन चरित्र पर हुआ। पश्चात् 26 अगस्त को गुरुमुख से पर्व कथानक सुनकर रक्षाबन्धन पर्व एवं श्रेयांस-भगवान का मोक्षकल्याणक महोत्सव मनाया गया। जिसमें सभी ने रक्षा सूत्र बांधकर धर्म की रक्षा करने का संकल्प लिया। और इसी दिन से महापर्व षोडसकारण भी प्रारम्भ हुआ। करीब 60-70 लोगों ने व्रत करने का संकल्प लिया तथा संगीतमय पूजन की गयी। जिसमें जैन स्कूल, कॉलेज जाने वाले बच्चों ने भी लाभ लिया। गुरुवर ने षोडसकारण की महिमा भी बतलाई। तथा तीर्थोदयकाव्य पर प्रवचन और 16 भावनाओं पर प्रवचनों



जयपुर में रत्नों की प्रतिमाओं के दर्शन करते हुए गुरुवर आर्जवसागरजी महाराज।



जयपुर सांगाकान मंदिर में वेदी प्रतिष्ठा के समय गुरुवर आर्जवसागरजी ससंघ।



जयपुर पापलियान मंदिर के पंचकल्याणक महोत्सव प्रवचन देते हुए गुरुवर आर्जवसागर जी



2010, जयपुर सी.कुमार जैन तमिलनाडु वालों का सम्मान करते हुए श्रेष्ठीगण।



जयपुर पापलियान मंदिर के पंचकल्याणक हेतु समाज के श्रेष्ठी गण आशीष लेते हुए।



जयपुर नगर के महापौर श्री पंकज जोशी गुरुवरश्री आर्जवसागरजी का आशीष लेते हुए।



सन् 2009 में जयपुर अनिल जैन एस.पी. गुरु आर्जवसागरजी का आशीर्वाद लेते हुए।



सन् 2009 जयपुर में डॉ.शीतलचंद जी गुरुवर आर्जवसागरजी से साहित्य प्राप्त करते हुए।



सन् 2009, जयपुर में विम्बप्रतिष्ठा के दौरान अकन्यास करते हुए गुरुवर आर्जवसागरजी।



सन् 2009, किशनगढ़ में गुरुवर आर्जवसागर के सान्निध्य में मनाया गया आ.विद्यासागरजी का दीक्षा दिवस।



सन् 2009, किशनगढ़ में गुरुवर आर्जवसागरजी के लिए शास्त्र भेंट करते हुए अशोकजी पाटनी (आर.के.मार्बल्स)



2009, जयपुर में प्रवचन हेतु समवसरण में प्रवेश करते हुए गुरुवर आर्जवसागरजी।



2010 कीर्तिनगर जयपुर में गुरुवर आर्जवसागरजी से साहित्य प्राप्त करते हुए श्रेष्ठी राजेन्द्र गोधा, प्रदीप जैन आदि।



गुरुवर आर्जवसागर जी से आशीष लेते श्रेष्ठी कटारिया जी।



2009, जयपुर पञ्चकल्याणक में सम्मनित होते डॉ. संजय जैन सपरिवार।



2010, जयपुर में समवसरण विधान के समय गुरुवर आर्जवसागरजी का आशीष लेते हुए श्रेष्ठी गणेश जी राणा एवं कटारिया जी।



2009, जयपुर में गुरुवर आर्जवसागरजी से गृहस्थ जीवन की माँ माया बाई सम्मान पाते हुए।

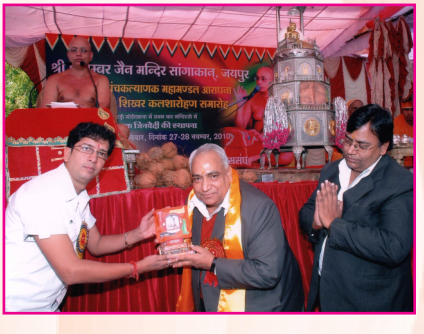

2011, जयपुर श्रीमान खण्डाका जी सपरिवार सम्मनित होते हुए।



2010, जयपुर में गुरुवर आर्जवसागरजी से मार्गदर्शन लेते हुए डॉ.पी.सी. जैन।



अजमेर शिविर में लाभ लेते शिविरार्थी।



2009 अजमेर वर्षायोग में गुरुवर आर्जवसागरजी के लिए शास्त्र दान करते हुए श्रीमान पच्चण्णा जैन बेंलोर।



2009 अजमेर में वर्षायोग स्थापना पर गुरुवर आर्जवसागरजी के पाद-प्रक्षालन करते हुए पं. मूलचंद लुहाड़िया किशनगढ़ व नरेश जैन सूरत।



2009 वर्षायोग में सोनी जी सेठ की नसियां में निर्मल सोनी सेठ गुरुवर आर्जवसागरजी के लिए अर्घ समर्पित करते हुए।



2009 अजमेर में गुरुवर आर्जवसागरजी महाराज के दर्शन करते हुए केन्द्रीय मंत्री सचिन पायलट।

शृंखला प्रारम्भ हुई। 11 सितम्बर को चा.च.आ. शान्तिसागरजी की पुण्य तिथि उनकी स्तुति को गाकर मनायी गयी। आचार्यश्री ने प्रवचन में आ.शान्तिसागरजी के जीवन दर्शन पर प्रकाश डाला तथा शाम को प्रश्नमंच भी रखा गया।

पर्यूषण पर्व कार्यक्रमः-

14 सितम्बर से 23 सितम्बर तक पर्यूषण (दशलक्षण) महापर्व महोत्सव उत्साह पूर्वक मनाया गया। जिसमें प्रातः संगीतमय अभिषेक, पूजन, दशलक्षण मण्डल विधान, आचार्यश्री के मंगल प्रवचन (प्रत्येक धर्म पर) दोपहर में तत्त्वार्थसूत्र का वाचन और विवेचन, शाम को प्रतिक्रमण, गुरुभक्ति, आरती और रात्रि ने विद्वानों के मंगल प्रवचन तथा सांस्कृतिक कार्यक्रम सम्पन्न हुये। अन्तिम दिन चतुर्दशी को बड़े मन्दिर से श्री जी की शोभा यात्रा निकली और शान्तिनगर के विशाल पाण्डाल तक पहुँची। वहाँ पर अभिषेक, शान्तिधारा सम्पन्न हुयीं और अपार जन समूह के बीच आचार्यश्री के मंगलप्रवचन हुये। आचार्यश्री ससंघ बड़े मन्दिर तक जुलूस के साथ दर्शन करने गये। 25 व 26 सितम्बर को षोडसकारण महामण्डल विधान सम्पन्न हुआ। और 26 तारीख को क्षमावाणी पर्व भी मनाया गया और 16 कलशों से भी जलधारा सम्पन्न हुयीं। गुरुवर के क्षमावाणी पर विशेष प्रवचन हुये।

इन्द्रध्वज महामण्डल विधान का भव्य आयोजनः-

30 सितम्बर को 11 अक्टूबर से 21 अक्टूबर तक होने वाले इन्द्रध्वज विधान हेतु पात्र चयन का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। जिसमें सौधर्मइन्द्र श्री सुमत-अनीता जैन भूसावाले, कुबेर श्री जिनेन्द्र-नीलांजना बमाना, महायज्ञनायक श्री विमल-अर्चना बमाना, ध्वजारोहण कर्त्ता श्री अशोककुमार-सुगन्धि ठेकेदार, ईशानइन्द्र श्री कमलेश-प्रीति भड़राना, सानत इन्द्र श्री शैलू-अंकिता, माहेन्द्रइन्द्र राजेश-ऋचा भूसा, श्रावकश्रेष्ठी श्री संजय सुनीता ठेकेदार, यज्ञनायक श्री सुधीर-रोशनी भड़राना और आठ शेष इन्द्र टेकचंद उल्दन, राजकुमार खटौरा, विनयकुमार भड़राना, अनिलकुमार बरा,

रमेशकुमार पिडरुवा, पवनकुमार छतरपुरिया, महेन्द्रकुमार नैनधरा, बीरेन्द्रकुमार शिक्षक बण्डा, प्रदीपकुमार झागरी और दुलीचंद मझगुवां तथा महामण्डलेश्वर शंभुकुमार खारमऊ, डी.एल. जैन बण्डा, प्रमोदकुमार घी वाले बण्डा, जयकुमार जैन छतरपुरिया, चन्द्रकुमार डांगीडहर, संजय भायजी बण्डा और अभय कुमार खारमऊ ये भी पात्र रूप से बनवाये गये, जिसकी बोलियों का कार्यक्रम बा.ब्र. अनिल भैया बण्डा ने गरिमापूर्ण ढंग से सम्पन्न करवाया। बीस अष्टकुमारियाँ एवं करीब दो सौ इन्द्र-इन्द्राणियाँ बनकर विधान करने हेतु संकल्पित हुए। इसी तरह आचार्य संघ के लिए चौका नामक गाँव एवं अतिशय क्षेत्र पजनारी के जल-विहार (क्षमावाणी) कार्यक्रम हेतु कमेटियों के द्वारा श्रीफल रखकर सविनय निवेदन किया गया।

कवि संगोष्ठी व पाठशाला सम्मेलनः-

परम पूज्य आचार्य गुरुवर आर्जवसागरजी महाराज के ससंघ बंडा नगर के चातुर्मास के दौरान 2 अक्टूबर 2018 को प्रातःकाल कवि सम्मेलन का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। जिसमें अनेक बालक-बालिकाओं सहित बड़े लोगों ने भी अपनी स्वरचित कवितायें सुनायीं। पश्चात् गुरुवर ने भी अपनी कवितायें प्रस्तुत कीं। जिन्होंने श्रेष्ठ कवितायें सुनायीं थी उनको पुरस्कारित किया गया। पश्चात् दोपहर में पाठशाला सम्मेलन हुआ। जिसमें बण्डा, दलपतपुर, शाहपुर, नेहानगर (सागर), पथरिया, कंदवा आदि स्थानों की पाठशालाओं ने अपनी-अपनी प्रस्तुतियाँ दीं। जिसमें प्रथम स्थान पथरिया पाठशाला को, द्वितीय स्थान नेहानगर (सागर) को, तृतीय स्थान श्री शान्तिनगर बंडा पाठशाला को प्राप्त हुआ, इनको कमेटी द्वारा पुरस्कारित किया गया तथा सभी पाठशाला को सांतवना पुरस्कार के रूप में स्मृति चिह्न दिये गये और सभी बच्चों को भी सामान्य रूप से गिफ्ट द्वारा पुरस्कारित भी किया गया। अन्त में गुरुवर आचार्यश्री आर्जवसागरजी ने पाठशाला एवं संस्कार के महत्त्व को बतलाते हुए मंगल प्रवचन दिये।

पजनारी में वार्षिक मेला:-

तदुपरान्त अतिशय क्षेत्र पजनारी क्षेत्र की ओर से विहार के लिए किये गये निवेदन से आचार्यश्री ने ससंघ 6 अक्टूबर को प्रातः कालीन मंगल बेला में पजनारी क्षेत्र की ओर विहार किया। वहाँ पर पहुँचकर चतुर्थकालीन भगवान श्री शान्ति, कुन्थु, अरनाथ के दर्शन किये। पश्चात् अभिषेक एवं गुरुवर के मुखारबिन्द से शान्तिधारा सम्पन्न हुई एवं श्रावकों द्वारा पूजन भी की गई। तदुपरान्त संघ की आहारचर्या भी वहीं क्षेत्र पर सम्पन्न हुई। दोपहर में श्री शान्तिनाथ महामण्डल विधान भी सम्पन्न किया गया और बाजों के साथ श्रीजी का विमानोत्सव भी निकाला गया। आचार्य गुरुवर के मुखारबिन्द से अष्ट प्रातिहार्य वाली शान्तिधारा सम्पन्न हुई। इसी बीच बंडा के सर्वोदय महिलामण्डल द्वारा अपनी ओर से पजनारी में एक हाल का निर्माण कराने की घोषणा की गई, पश्चात् प्रांगण में बने पाण्डाल के अपार जन समूह के बीच गुरुवर के मंगल प्रवचन हुये। शाम को गुरुभक्ति, आरती हुई तथा रात्रि विश्राम वहाँ पर हुआ। 7 तारीख को प्रातः काल बंडा नगर की ओर मंगल विहार हुआ। बाजों के साथ पुनः बंडा नगरी में मंगलप्रवेश हुआ। शांति विहार में बने विशाल पाण्डाल में श्री इन्द्रध्वज महामण्डल विधान की तैयारियाँ प्रारम्भ हुई। गोसलपुर से लाये गये 458 जिनालयों को 30 × 30 के माड़ने पर विराजमान किया गया। इसी के बीच में पाँच मेरुओं की प्रतिमायें शोभायमान हो रहीं थीं।

इंद्रध्वज महामण्डल विधान प्रारंभ:-

11 तारीख को जाप, घटयात्रा, देव आज्ञा, गुरु आज्ञा के साथ श्रीमान् अशोक ठेकेदार सपरिवार के द्वारा ध्वजारोहण के माध्यम से विधान प्रारम्भ हुआ। ध्वजारोहण के समय बड़े मन्दिर की महिलामण्डल एवं शान्तिनगर की महिला मण्डल ने ध्वजा लेकर नमन गीत प्रस्तुत किया। आचार्य गुरुवर का मंगल उद्बोधन हुआ। पश्चात् मण्डप-शुद्धि, इन्द्र-प्रतिष्ठा आदि क्रियायें सम्पन्न हुईं। शाम को गुरुभक्ति महाआरती, विद्वानों द्वारा शास्त्र प्रवचन एवं

सांस्कृतिक कार्यक्रम सम्पन्न हुये। 12 तारीख से पाण्डाल की विशाल मण्डल वेदी पर अनेक इन्द्रगणों द्वारा प्रतिदिन अभिषेक, शान्तिधारा, नित्यपूजन, 458 जिनालयों के पूजन प्रारम्भ हुई और प्रतिदिन आचार्य गुरुवर के मंगलप्रवचन हुये। शाम को भी महाआरती आदि का कार्यक्रम चलता रहा। इसी बीच 14 तारीख दोपहर को अहिंसा व शाकाहार सम्मेलन हुआ। जिसमें पाठशाला के बच्चे, बहिनें, बड़े मन्दिर एवं शान्तिनाथ दोनों मन्दिर की महिला मण्डल की महिलाओं ने भी भव्य सांस्कृतिक कार्यक्रम की प्रस्तुति देकर पुण्य लाभ लिया। अहिंसा का भी संदेश दिया। पश्चात् गुरुवर ने भी अहिंसा विषय पर मंगलप्रवचन दिये। अन्त में सब को पुरस्कारित भी किया गया। 20 तारीख को हवन का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। प्रतिदिन अन्य-जिन मन्दिरों व ग्रामों वाले भक्तगण बाजे के साथ द्रव्य लाते थे। यह कार्यक्रम ब्र.पं. प्रतिष्ठाचार्य जयकुमार निशान्त व सह प्रतिष्ठाचार्य पं. मनीष जैन टीकमगढ़ वालों के निर्देशन में सानन्द सम्पन्न हुआ। इस मंगल विधान में सभी मन्दिरों के भक्त गणों ने लाभ लिया। विशाल पाण्डाल भी छोटा पड़ने लगा था। बंडा नगर में प्रथम बार श्री इन्द्रध्वज महामण्डल विधान इतने विशाल रूप से सम्पन्न हुआ। इन्द्र-इन्द्राणी जिनेन्द्र की भक्ति में, गुरुवर की भक्ति में फूले नहीं समाये और 21 तारीख को श्रीजी का रथोत्सव सम्पन्न हुआ। जिसमें ऐरावत हाथियों के साथ बेण्ड-बाजे, जयघोष, अष्ट कुमारियाँ, बग्गियों में इन्द्र-इन्द्राणियाँ रथ में श्रीजी के साथ प्रमुख पात्र गण एवं आचार्यश्री के ससंघ के साथ बंडा नगर की परिक्रमा कर अपूर्व धर्मप्रभावना हुई। इस विशाल जुलूस की नगर ने परिक्रमा ने बण्डा नगर में अविस्मरणीय इतिहास बना दिया। इस प्रकार यह इन्द्रध्वज महामण्डल विधान का कार्यक्रम हर्षोल्लास के साथ अभूतपूर्व धर्मप्रभावना के साथ सानन्द सम्पन्न हुआ।

आई.टी.आई. में गुरुवर के प्रवचनः-

26 अक्टूबर को बण्डा नगर में स्थित जैन स्किल इंडिया और जैन

आई.टी.आई. के संचालक-विनीत जैन के नम्र निवेदन से गुरुवर आचार्यश्री आर्जवसागरजी महाराज ससंघ को वहाँ पर बाजे के साथ ले गये तथा गुरुवर का पाद प्रक्षालन किया। तदुपरान्त स्कूल और आई.टी.आई. का अवलोकन कराया तथा गुरुवर ससंघ बड़े हाल में बनाये गये मंच पर आसीन हुये। कु. मेघा जैन ने मंगलाचरण प्रस्तुत किया तथा और भी आई.टी.आई. की बहिनों ने कविताओं का पाठ किया। अतिथियों से श्रीफल भेंट करवाये गये और आचार्य गुरुवर ने अपने मंगल प्रवचन के माध्यम से शिष्टाचार, संस्कार आदि के बारे में उद्‌बोधन दिया।

पात्र चयन सिद्धचक्र महा मण्डल विधान हेतु:-

तारीख 4 नवम्बर को आचार्य संघ के सान्निध्य में श्री पार्श्वनाथ महामण्डल विधान किया गया जिसमें आगे आने वाले अष्टाह्निका महापर्व में 15 नवम्बर से 24 नवम्बर तक होने वाले श्री सिद्धचक्र महामण्डल विधान के पात्रचयन का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। जिसमें सौधर्मइन्द्र बनने का सौभाग्य श्री प्रमोदकुमारजी घी वाले बण्डा ने प्राप्त किया, श्रीपाल मैना सुंदरी बनने का सौभाग्य श्री जयकुमारजी सरिता जैन नैनधरा वालों को प्राप्त हुआ, यज्ञनायक श्री कोमलचंद कंदवा, कुबेर इन्द्र श्री कैलाशचंद जी गुड़गाँव, ध्वजारोहणकर्ता श्री उत्तमचंद नीमोन, ईशानइन्द्र श्री सनतकुमार खटोरा वाले, सानतकुमार इन्द्र श्री दिनेश कुमार खटोरा वाले और माहेन्द्र इन्द्र श्री महेन्द्रकुमार नैनधरा वालों ने प्राप्त किया। तदुपरान्त आचार्य गुरुवर के मंगल प्रवचन हुये।

7 नवम्बर को दीपावली पर्व पर भ.महावीर का निर्वाण कल्याणक; अभिषेक, शान्तिधारा, संगीतमय पूजन एवं निर्वाणलाडु चढ़ाकर मनाया गया और प्रातः काल आचार्य गुरुवर ने वर्षायोग का निष्ठापन भक्तियों को पढ़कर सम्पूर्ण किया और भ.महावीर के जीवन-दर्शन पर मंगल प्रवचन हुये।

श्री सिद्ध चक्र महामण्डल विधान प्रारम्भ:-

तदुपरान्त संघस्थ आर्यिका संघ के समक्ष कण्ठपाठ प्रतियोगिता प्रारम्भ हुई और 15 नवम्बर को घटयात्रा और ध्वजारोहण के साथ श्री सिद्धचक्र

महामण्डल विधान प्रारम्भ हुआ। प्रतिदिन अभिषेक, शान्तिधारा, नित्यपूजा, विधान पूजन तत्पश्चात् आचार्यश्री के मंगलप्रवचन तथा शाम को गुरुभक्ति, आरती, शास्त्र प्रवचन व सांस्कृतिक कार्यक्रम आदि सम्पन्न हुये। इस विधान में भी अनेक इन्द्र-इन्द्राणियों ने भक्तिपूर्वक सिद्धों की आराधना करके महान पुण्य का संचय किया। 23 तारीख को हवन का कार्यक्रम हुआ और 24 तारीख को आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज का 46 वाँ आचार्य पदारोहण दिवस आचार्य छत्तीसी विधान करके मनाया गया और आचार्य गुरुवर आर्जवसागरजी ने अपने मंगल प्रवचन में आचार्य पद का महत्व बताते हुए गुरु की महिमा गायी।

पिच्छिका परिवर्तनः-

दिनांक 25 नवम्बर को दोपहर में पिच्छिका परिवर्तन का कार्यक्रम मंगलमय सानन्द सम्पन्न हुआ। जिसमें चंदनबाला कन्यामण्डल बण्डा द्वारा मंगलाचरण किया और पाठशाला के बच्चों ने भी नृत्य के द्वारा मंगलाचरण किया। तदुपरान्त सर्वोदय महिलामण्डल के जयघोष के साथ कन्यामण्डल द्वारा नई पिच्छिकाओं को पाण्डाल में लाया गया। तत्पश्चात् दिल्ली, जबलपुर, दमोह, तमिलनाडु, सूरत, भोपाल, सागर, पथरिया, शाहपुर आदि से पधारे अतिथियों का श्रीफल भेंटकर सम्मान किया गया और कण्ठपाठ प्रतियोगिता में उत्तीर्ण हुये लोगों को स्वर्ण-चिह्न द्वारा पुरस्कारित किया गया। पिच्छिका परिवर्तन हुआ जिसमें आचार्यश्री को नई पिच्छिका देने का सौभाग्य श्री कमलकुमार जी कंदवा, पं. हुकमचंदजी जैन पठारी, ब्र. अंशुल जी दमोह को प्राप्त हुआ और पुरानी पिच्छिका लेने का सौभाग्य श्रीमान् राजेश सरिता जैन तत्पुत्री बहिन ऋषिका जैन, दमोह (फुटेरा वालों) को प्राप्त हुआ।

मुनिश्री 108 भाग्यसागरजी को पिच्छिका देने का सौभाग्य श्री संजय जैन भाईजी, अशोक जैन पथरिया वाले, सनत सिसोधिया, मनीष जैन को प्राप्त हुआ और लेने का सौभाग्य श्री नन्हेभाईजी जैन भड़राना वाले परिवार बंडा को

प्राप्त हुआ। मुनिश्री 108 महत्सागरजी को पिच्छिका देने का सौभाग्य श्री देवेन्द्र जी जैन, हुकुमचंद नाहर बण्डा, अर्चना जैन, अरविन्द जैन (लल्ला) टढ़ा वालों को प्राप्त हुआ और लेने का सौभाग्य श्री रवीन्द्रजी श्रीमती सुलेखा जैन तिगौड़ा वाले को प्राप्त हुआ। आ. 105 प्रतिभामति माताजी की पिच्छिका देने का सौभाग्य कु. अंजली जैन एवं उनके माता-पिता और कु. मुक्ता जैन पहाड़ीवालों को प्राप्त हुआ और लेने का सौभाग्य श्री जयकुमारजी, सरिता जैन नैनधरा वाले बण्डा को प्राप्त हुआ। आ. 105 सुयोगमति माताजी की पिच्छिका देने का सौभाग्य श्रीमती गुणवंती मेहता सूरत एवं समस्त मन्दिर कमेटी बण्डा वालों को प्राप्त हुआ और लेने का सौभाग्य श्री अशोककुमार जैन पापेट वाले बण्डा को प्राप्त हुआ और अन्त में आचार्य गुरुवर के मंगलप्रवचन पाण्डाल में स्थित अपार जन समूह के बीच हुये। इस प्रकार यह वर्षायोग का अन्तिम कार्यक्रम पिच्छिका परिवर्तन भी हर्षोल्लास, सानन्दतापूर्वक सम्पन्न हुआ।

गुरुवर का हुआ विहारः-

पिच्छिका परिवर्तन कार्यक्रम सम्पन्न होते ही आचार्य संघ का मंगल विहार हो गया। सब भक्त पीछे-पीछे दौड़ते चले गये महाराज जी! कहाँ जा रहे हैं किसी को मालूम नहीं। अश्रुपात करते हुए सब चलते चले गये। पूर्व दिशा में चौका ग्राम की तरफ बण्डा नगर के बाहर स्थित छात्रावास में गुरुसंघ का रात्रि विश्राम रहा। प्रातः काल चौका ग्राम के श्री सुपार्श्वनाथ भगवान के प्राचीन मन्दिर का दर्शन किया पश्चात् नैनधरा की ओर विहार किया और बाजों एवं जय-जयकार ध्वनि के साथ नैनधरा गाँव में मंगलप्रवेश हुआ। करीब 5-6 दिन के प्रवास में प्रतिदिन प्रातः काल आचार्य गुरुवर की मंगल देशना हुई और आहार चर्या, शाम को गुरुभक्ति, आरती आदि कार्यक्रम सम्पन्न हुये। श्रावकों का बहुत आग्रह होते हुए भी गुरुवर का मंगल विहार कंदवा गाँव की ओर हुआ। वहाँ पर भी प्रवचन मालायें चलीं और केरवना गाँव के कमेटी के लोगों ने आकर वेदी प्रतिष्ठा की वर्षगांठ के उपलक्ष्य में विधान में अपना सान्निध्य प्रदान करने हेतु श्रीफल भेंटकर नम्र निवेदन किया। 3-4 दिन के प्रवास के

उपरान्त गुरुवर का विहार बरा गाँव की ओर हो गया। बरा गांव की समाज ने कुछ दिन प्रवास हेतु श्रीफल भेंट किये। फिर भी गुरुवर का तीन दिनों के प्रवास में मंगलप्रवचन, पाठशाला आदि के माध्यम से धर्मप्रभावना करके विहार हो गया और केरवना गाँव में बाजों के साथ जय-जयकार ध्वनि के साथ मंगलप्रवेश हुआ।

केरवना में वेदी प्रतिष्ठा वर्षगांठ कार्यक्रमः-

पश्चात् 8 एवं 9 तारीख को चारित्र-शुद्धि विधान किया गया। दोपहर में गुरुवर के मंगलप्रवचन हुये और 10 तारीख को प्रातः अभिषेक, शान्तिधारा गुरुवर के मुखारबिन्द से हुई और दोपहर में संगीतमय श्री शान्तिनाथ महामण्डल विधान किया गया तथा शिखर पर ध्वजायें चढ़ायीं गई। विधान के बीच आचार्यश्री के मंगलप्रवचन के पूर्व शास्त्र भेंट करने का सौभाग्य नगर पथरिया से पधारी मुनिश्री निरालससागरजी महाराज के पूर्व पर्याय की माँ एवं परिवार वालों को प्राप्त हुआ। तत्पश्चात् मंगल प्रवचन सम्पन्न हुये। सात-आठ दिन के प्रवास के उपरान्त ठहरने हेतु बहुत निवेदन होने पर भी गुरुवर का मंगल विहार गाँव खड़ेरी की ओर हो गया। खड़ेरी गाँव, बटयागढ़, फुटेरा आदि गाँव में भी 8-10 दिनों के प्रवास में मंगलप्रवचन के माध्यम से धर्म की प्रभावना हुई। पश्चात् गुरुवर का विहार भक्तों के निवेदन से बकस्वाहा की ओर हुआ।

बकस्वाहा में शीतकाल प्रवासः-

25 दिसम्बर को बकस्वाहा में बाजे के साथ मंगलप्रवेश हुआ। श्रावक गणों ने शीतकालीन वाचना हेतु श्रीफल भेंटकर नम्र निवेदन किया और प्रतिदिन प्रातः एवं दोपहर दोनों कालों में आचार्य गुरुवर के मंगलप्रवचन हुये तथा शाम को गुरुभक्ति, आरती के उपरान्त 50-60 बच्चे एवं पाठशाला पढ़ने हेतु आते थे और आर्यिका संघ व बहिनों के द्वारा धर्म के संस्कार की भी शिक्षा दी गयी।

गाँव-गाँव में मंगल विहारः-

परम पूज्य आचार्यश्री आर्जवसागरजी महाराज का ससंघ बकस्वाहा में

15 दिन के प्रवास के उपरान्त शीतकालीन प्रवास हेतु बहुत निवेदन करने पर भी गुरुवर का मंगल विहार 13 जनवरी शाम को बाजना की ओर हो गया। 14 जनवरी को प्रातःकाल बाजना गाँव में बाजों के साथ मंगल प्रवेश हुआ। समाज के लोगों ने शीतकालीन प्रवास हेतु श्रीफल भेंट किये। प्रतिदिन प्रवचन एवं शाम को गुरुभक्ति व पाठशाला के माध्यम से धर्म की प्रभावना हुई। 17 जनवरी को सुबह बाजना के बाजू में स्थित भीमकुंड का अवलोकन किया और शाम को गुरुवर का मंगल विहार हो गया। 18 जनवरी को रजपुरा पहुँचे। वहाँ पर आहारचर्या सम्पन्न हुयी पश्चात् बरी, बरौदा, होते हुए हटा की ओर विहार हुआ। 19 जनवरी को प्रातः हटा नगरी में बाजों के साथ प्रवेश के समय गढ़ाकोटा से प्रतिष्ठित होकर आयी हुयी मूर्तियों के साथ एवं जनसमूह के जय-जयकारों के साथ गुरुवर का मंगलप्रवेश हुआ। दूसरे दिन यागमण्डल विधान के साथ मूर्तियाँ स्थापित की गयी। गुरुवर के मंगलप्रवचन हुये। पश्चात् 20 जनवरी को हिनोता की ओर विहार हो गया। हिनोता में आहार-चर्या करके शाम को गैसाबाद में बाजों के साथ मंगलप्रवेश हुआ। समाज वालों ने ठहरने हेतु नम्र निवेदन किया लेकिन गुरुवर ने आहारचर्या के उपरान्त विहार कर दिया। सिमरिया होते हुए मोहन्द्रा गाँव पहुँचे। मोहन्द्रा की प्राचीन प्रतिमाओं के दर्शन किये। आहारचर्या के उपरान्त सिंहारन गाँव से होते हुए रीठी में बाजों के साथ मंगलप्रवेश हुआ। गुरुवर के मंगल प्रवचनादि से धर्म की प्रभावना हुई। यहीं पर कटनी की पंचायत कमेटी ने आकर अपने नगर में आने हेतु श्रीफल भेंट किये और 26 जनवरी को वहाँ से कटनी की ओर विहार हुआ।

कटनी में मंगलप्रवेश व कार्यक्रमः-

31 जनवरी शाम को कटनी महानगर में जय-जयकारों के साथ बाजों एवं जनसमूह के बड़े मन्दिर में भव्यमंगल प्रवेश हुआ। 1 फरवरी को आचार्यश्री आर्जवसागरजी के ससंघ सान्निध्य में काँच मन्दिर कटनी में

बाहुबली भगवान महामस्तकाभिषेक सम्पन्न हुआ। जिसमें गुरुवर के मुखारबिन्द से शान्तिधारा सम्पन्न हुई एवं गुरुवर के मंगलप्रवचन सम्पन्न हुये तथा 3 फरवरी को भ.आदिनाथ का मोक्षकल्याणक बड़े मन्दिर में मनाया गया। जिसमें आदिनाथ भगवान का मस्तकाभिषेक एवं शान्तिधारा सम्पन्न हुई। तत्पश्चात् गुरुवर के मंगलप्रवचन एवं निर्वाणलाडू का कार्यक्रम सम्पन्न हुये और पंचायत कमेटी ने गुरुवर को कुछ दिन प्रवास हेतु श्रीफल भेंटकर निवेदन किया। प्रतिदिन प्रातः सम्यक्ध्यान पर विशेष प्रवचन एवं दोपहर में जैनागम संस्कार की कक्षा तथा शाम को जीवन संस्कार की कक्षा से अपूर्व धर्मप्रभावना हुई।

5 वाँ आचार्य पदारोहण दिवस हर्षोल्लास पूर्वक मनाया गया:-

11 तारीख को आचार्य गुरुवर के 5 वाँ आचार्य पदारोहण दिवस बड़े मन्दिर के विशाल प्रांगण में हर्षोल्लास पूर्वक मनाया गया। जिसमें मंगलाचरण पूर्वक कार्यक्रम की शुरुआत हुई। पंचायत कमेटी एवं बाहर से पधारे अतिथियों द्वारा चित्र अनावरण एवं दीप प्रज्ज्वलन किया गया। तदुपरान्त भोपाल, दिल्ली, दमोह, जबलपुर आदि से पधारे अतिथियों का सम्मान किया गया और गुरुवर के पादप्रक्षालन का सौभाग्य दिल्ली वालों ने एवं कटनी के श्रावकगणों ने प्राप्त किया। तत्पश्चात् संगीतमय पृथक्-पृथक् मन्दिर वालों ने सजी हुई द्रव्यों से आनन्द विभोर भक्तिपूर्वक आचार्य गुरुवर की पूजन सम्पन्न हुई। इसी बीच नवीन भाव विज्ञान अंक एवं गुरुवर की पूजन की पुस्तक का विमोचन कमेटी के द्वारा किया गया। तदुपरान्त गुरुवर की अमृतमय वाणी अपार जन समूह को प्राप्त हुई जिसमें गुरु और शिष्य का महत्त्व बताते हुए सब को आनन्दित कर दिया। इस प्रकार संयम लेने के बाद प्रथम बार कटनी आगमन पर समाज, इनकी चर्या एवं प्रवचन, ज्ञानादि से आकर्षित हुई। कुछ दिन प्रवास के उपरान्त 18 फरवरी को गुरुवर का मंगल विहार शाहनगर की ओर हो गया। शाहनगर में कुछ दिन का प्रवास रहा। वहाँ पर पवई के कमेटी

एवं समाज के लोगों ने अपने नगर पधारने हेतु श्रीफल भेंटकर निवेदन किया और प्रतिदिन आहारचर्या में भी लाभ लेते रहे और कटनी के लोगों ने भी लाभ लिया। शाहनगर की जैन समाज भी गुरुवर की शान्त मुद्रा लखकर प्रभावित हुई। 28 फरवरी को शाहनगर से पवई की ओर विहार हो गया। चौपरा, टिकरिया आदि होते हुए 3 मार्च को पवई नगर में बाजों के साथ भव्य मंगलप्रवेश हुआ। सभीजन गुरुवर के पादप्रक्षालन व आरती करके जय-जयकार लगाते हुए आन्दित हुए और समाज ने फाल्गुन अष्टाह्निका में गुरुवर का मंगल प्रवास की प्राप्ति हेतु श्रीफल भेंट किये। गुरुवर के मंगल प्रवचन का लाभ भी प्राप्त होता रहा है।

पवई नगर के मांगलिक कार्यक्रमः-

अध्यात्म-योगी, वात्सल्य-मूर्ति परम पूज्य आचार्य गुरुवर आर्जवसागरजी महाराज ससंघ पवई नगर के प्रवास के दौरान 25 मार्च को श्री पार्श्वनाथ महामण्डल विधान का आयोजन किया गया। जिसमें सौधर्मइन्द्र बनने का सौभाग्य श्री महेन्द्रकुमार जैन सपरिवार को प्राप्त हुआ। विधान के बीच में आचार्यश्री आर्जवसागरजी के मंगल प्रवचन हुये जिसमें मन्दिर एवं प्रतिमा सुरक्षा के बारे में बताया और तुरन्त ही गुरु के आशीर्वाद से मन्दिर की सुरक्षा हेतु बाहर लाल पत्थर की शिलायें लगाने हेतु सबने दान घोषित किया और दो नयी वेदियाँ बनाने हेतु और उसमें विराजमान होने वाली जिन प्रतिमाओं के दान दाता भी तैयार हुये। जिस कारण सभी का मन अति प्रफुल्लित हुआ। कुछ दिन के प्रवास के उपरान्त गुरुवर का विहार 1 अप्रैल को कुंवरपुर की ओर हुआ। कुंवरपुर में जिनदर्शन एवं आहारचर्या हुई। दूसरे दिन प्रातः विहार करके मोहेन्द्रा, सागुवारा होते हुए हरदुआ पहुँचे। वहाँ पर ऐ. विनम्रसागरजी महाराज आचार्य गुरुवर की आगवानी हेतु आये बाजे एवं समाज की जय जयकारों के साथ मंगल प्रवेश हुआ। वहाँ दो दिन का प्रवास रहा। जिसमें आचार्यश्री के मंगल प्रवचन हुये। प्रवचन में गुरुवर ने संत निवास

बनाने हेतु लोगों को प्रेरित किया। पश्चात् कोटा, बर्रड़, घाट पिपरिया होते हुये बांदकपुर में बाजे के साथ भव्य मंगल प्रवेश हुआ। दो-तीन दिन प्रवास के दौरान प्रवचन आदि के माध्यम से लोगों ने अच्छा धर्म लाभ लिया। पश्चात् दमोह सिविल वार्ड में प्रवचन एवं विजयनगर में आहारचर्या कर ओजश्वनी कॉलेज में रात्रि विश्राम किया तथा प्रातः बांसा तारखेड़ा पहुँचे, प्रवचन और अहार चर्या कर बांसा से विहार करके बीच गाँव में गढ़ाकोटा के बड़े मन्दिर की कमेटी द्वारा महावीर जयन्ती पर महोत्सव मनाने हेतु निवेदन किये जाने पर गढ़ाकोटा में 15 अप्रैल को बाजे के साथ मंगल प्रवेश हुआ।

गढ़ाकोटा में महावीर जयंती व 32वाँ दीक्षा दिवस मनाया गया:-

गुरुवर के मंगल प्रवचन के दौरान महावीर जयन्ती का एवं गुरुवर के 32वाँ दीक्षा दिवस कार्यक्रम आचार्य गुरुवर के मंगल सान्निध्य में मनाने हेतु श्रीफल भेंट किये गये। चौधरी मन्दिर के लोगों ने भी श्रीफल भेंटकर निवेदन किया 17 अप्रैल को दोपहर में तीन बजे से महावीर जयन्ती का कार्यक्रम पाठशाला के बच्चों के मंगलाचरण द्वारा प्रारम्भ हुआ गुरुवर के पादप्रक्षालन का सौभाग्य श्री प्रवीणकुमार जैन महावीर रोड लाइन्स दमोह वालों को प्राप्त हुआ और संगीतमय भक्तिभाव से गुरुवर की पूजन सम्पन्न की गयी। पश्चात् बाहर से पधारे दमोह, सागर आदि से पधारे अतिथियों को सम्मानित किया गया और शास्त्र भेंट का सौभाग्य श्री राजेश जैन फुटेरा दमोह वालों को और गढ़ाकोटा की महिला मण्डल को प्राप्त हुआ। पश्चात् गुरुवर के मंगल प्रवचन हुये और तुरन्त ही विशाल जुलूस बैंड बाजे के साथ श्री जी शोभायात्रा महोत्सव चौधरी मन्दिर से निकलकर पटेरिया अतिशयक्षेत्र तक पहुँची। इसमें आचार्य गुरुवर का मंगल सान्निध्य सबको प्राप्त हुआ और पटेरियाजी में श्रीजी का अभिषेक सम्पन्न हुआ। इसी बीच गुरुवर के मंगल देशना भी जनता को प्राप्त हुई। पश्चात् बड़े मन्दिर में पुनः गुरुवर का आगमन हुआ और तीन-चार दिन का प्रवास रहा। बड़े मन्दिर कमेटी द्वारा ग्रीष्मकालीन प्रवास हेतु निवेदन

होने पर भी गुरुवर का मंगल विहार 20 अप्रैल प्रातःकाल हरदी गाँव की ओर हो गया। जिनदर्शन व आहारचर्या सम्पन्न हुई और समाज वालों ने कुछ दिन प्रवास हेतु निवेदन किया तो भी गुरुवर का मंगल विहार जूना, पटना बुजुर्ग की ओर हो गया। यहाँ पर भी ठहरने हेतु निवेदन किया। परन्तु गुरुवर ससंघ कड़ता, बरौदा होते हुए ढाना पहुँच गये।

सागर महानगर में भव्य मंगलप्रवेश:-

वहाँ दोनों मन्दिरों का दर्शन, मंगलप्रवचन, आहार चर्या सम्पन्न हुयी। वहाँ से बह्मोरी में रात्रि विश्राम रहा ओर 24 अप्रैल को प्रातः काल गोपालगंज सागर में मंगलप्रवेश हुआ। करीब सात दिन के प्रवास में आध्यात्मिक प्रवचन, आगमिक चर्या, भजन, स्तोत्र पाठ द्वारा धर्म की अपूर्व प्रभावना हुई। भक्तों ने ग्रीष्मकालीन प्रवास हेतु निवेदन किया और यहीं पर वर्धमान कॉलोनी के कमेटी वालों ने अक्षय तृतिया पर्व अपनी कॉलोनी में मनाने हेतु गुरुवर का भी सान्निध्य प्राप्त हो इस भावना से श्रीफल भेंटकर विशेष आग्रह किया उनके इस आग्रह पर गुरुवर का गमन 2 मई को वर्धमान कालोनी में दिव्यघोष एवं जय जयकारों की मंगल ध्वनि के साथ गुरुवर का भव्य मंगल प्रवेश हुआ।

वर्धमान कालोनी में पाठशाला कलश स्थापना:-

7 मई को प्रातः अभिषेक व गुरु के मुखारबिन्द से शान्तिधारा सम्पन्न हुई। पश्चात् भक्तामर विधान सम्पन्न हुआ। इसी बीच गुरुवर की मंगल अमृतमय वाणी सब को प्राप्त हुई इसके पूर्व; नगर-विधायक श्री शैलेन्द्र जी जैन व कमेटी तथा भाव-विज्ञान के परिवार द्वारा भाव-विज्ञान नये अंक का विमोचन हुआ और श्री विद्यासागर पाठशाला के कलश स्थापना हेतु कलश स्थापनकर्ता का चयन किया गया। दोपहर में बच्चों के मंगलाचरण व सांस्कृतिक कार्यक्रम सम्पन्न हुये। पश्चात् गुरुवर के संस्कार से संस्कृति की बचाव पर मंगल उद्बोधन हुआ। तदुपरान्त पाठशाला मंगल कलश की स्थापना सम्पन्न हुई और काकागंज मन्दिर की कमेटी के लोगों ने स्वर्ण से

सुसज्जित नई वेदी पर प्रतिमाएँ विराजमान करने के लिए गुरुवर के मंगल सान्निध्य प्राप्ति हेतु आचार्य गुरुवर के चरणों में श्रीफल भेंटकर निवेदन किया। वर्धमान कॉलोनी में श्री पार्श्वनाथ भगवान की वेदी नाभि के नीचे थी। गुरुवर की प्रेरणा से वेदी को ऊपर उठाने हेतु प्रतिमाओं को भ.पुष्पदन्त की वेदी में विराजमान किया गया।

काकागंज (सागर) में वेदी प्रतिष्ठा:-

16, 17, 18 मई को सागर के प्राचीन मन्दिर काकागंज में वेदी प्रतिष्ठा महोत्सव सम्पन्न हुआ। जिसमें श्रावकगणों ने सौधर्म इन्द्रादि पद धारण करके इन्द्र-इन्द्राणि के रूप में प्रभु की भक्ति की। 16 तारीख को आचार्य गुरुवर का मंगल आगमन व ध्वजारोहण के पश्चात् अभिषेक व गुरु के मुखारबिन्द से शान्तिधारा सम्पन्न हुई। तदुपरान्त आचार्यश्री के मंगलप्रवचन हुये तथा शाम को महाआरती सम्पन्न हुई। ता.17 को अभिषेक शान्तिधारा के उपरान्त गुरुवर के मंगलप्रवचन हुये और यागमण्डल विधान सम्पन्न हुआ। 18 मई को प्रातः 7:00 बजे स्वर्ण से सुसज्जित नई वेदी पर नई प्रतिमाएँ विराजमान हुईं। रजत चौबीसी की प्रतिमाएँ भी विराजमान हुईं और शान्तिधारा एवं आचार्यश्री ने मंगल प्रवचनों के दौरान जैन धर्म की रक्षा एवं जिनप्रतिमाएँ की सुरक्षा के बारे में प्रकाश डाला। उससे एक ओर नई वेदी के निर्माणकर्त्ता तैयार हो गये।

सर्वोदय सम्यग्ज्ञान, सम्यक्ध्यान प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न:-

वर्धमान कालोनी में 21 मई से 30 मई तक सर्वोदय सम्यग्ज्ञान व सम्यक्ध्यान प्रशिक्षण शिविर का आयोजन सम्पन्न हुआ। जिसमें 21 तारीख को प्रातः ध्वजारोहण व बच्चों के मंगलाचरण से शिविर का प्रारम्भ हुआ तथा कलश स्थापना भी की गयी। तदुपरान्त शिविरार्थियों को पुस्तकें व किट प्रदान की गयी तथा आचार्यश्री के मंगलप्रवचन हुये। शिविर में प्रतिदिन बच्चों एवं बड़ों के लिए भाग-1, भाग-2, भक्तामर स्तोत्र, जीवन-संस्कार, छहढाला, रत्नकरण्डक श्रावकाचार, द्रव्यसंग्रह, जैनागम संस्कार, सम्यक्ध्यान शतक

आदि शास्त्र पढ़ाये गये। इसी बीच चकराघाट मन्दिर, सागर वालों की कमेटी ने आकर वेदी शिलान्यास हेतु आचार्यश्री के मंगल सान्निध्य प्राप्त हेतु श्रीफल भेंट किये। 24 तारीख आचार्य गुरुवर के मंगल प्रवचन हुये। पश्चात् चन्द्रप्रभु भगवान् की वेदी हेतु शिलान्यास का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। 27 तारीख को वर्धमान कॉलोनी में होने वाले वेदी प्रतिष्ठा हेतु पात्र चयन का कार्यक्रम व श्री सम्मेद शिखरजी विधान सम्पन्न हुआ। जिसमें पूरे सम्मेदशिखरजी की रचना पूर्वक इन्द्र, इन्द्राणी बन करके बड़े ही हर्षोल्लास के साथ प्रभु की भक्ति की गयी। 30 तारीख को सभी शिविरार्थियों की परीक्षायें सम्पन्न हुयीं। इसी बीच में श्री शान्तिनिकेतन उदासीन आश्रम से सर्व कमेटी के लोगों ने आचार्य गुरुवर के सान्निध्य में श्री 1008 शान्तिनाथ भगवान् के त्रयकल्याणक दिवस को दो दिन के रूप में मनाने हेतु श्रीफल भेंटकर निवेदन किया।

1 जून को बाजे के साथ उदासीन आश्रम में गुरुवर ससंघ का मंगल आगमन हुआ और अभिषेक शान्तिधारा सम्पन्न हुई तदुपरान्त आचार्यश्री के मंगलप्रवचन बाहर बने पण्डाल में सम्पन्न हुये, श्री शान्तिनाथ महामण्डल विधान हुआ। 2 तारीख को श्री 1008 शान्तिनाथ का महामस्तकाभिषेक व महाशान्तिधारा सम्पन्न हुई तथा आचार्यश्री के मंगलप्रवचन शान्तिनाथ भगवान् के जीवन चरित्र पर सम्पन्न हुए।

तदुपरान्त शान्तिनाथ भगवान त्रयकल्याणक के उपलक्ष्य में निर्वाणकाण्ड पूर्वक निर्वाणलाडू चढ़ाया गया और वहीं से आहारचर्या सम्पन्न हुयी। 3 तारीख को आचार्य गुरुवर आर्जवसागरजी ससंघ केन्द्रीय जेल (सागर) (ब्र.रेखा जैन के निवेदन से) पहुँचे। वहाँ पर स्थित कैदियों के लिए आचार्यश्री ने व्यसन मुक्ति पूर्वक शाकाहारी होने का संकल्प देते हुए मंगल उद्बोधन दिया।

वर्धमान कालोनी में वेदी प्रतिष्ठा:-

4, 5, 6 जून 2019 को वर्धमान कॉलोनी में वेदी प्रतिष्ठा महोत्सव व

पंचकल्याणक (याग मण्डल) विधान सम्पन्न हुआ। जिसमें 4 तारीख को ध्वजारोहण व अभिषेक शान्तिधारा, आचार्यश्री के मंगलप्रवचन और इन्द्रप्रतिष्ठा आदि कार्यक्रम हुये तथा 5 तारीख को यागमण्डल विधान सम्पन्न हुये जिसमें श्रावकगण इन्द्र-इन्द्राणी बनकर पंचकल्याणक के समान अपूर्व आनन्द भक्ति भाव पूर्वक प्रभु की अर्चना की। 6 तारीख को करीब सात बजे भ.श्री पार्श्वनाथ पुनः ऊँची की गई उसी वेदी पर विराजमान हो गये। शेष प्रतिमाएँ भी विराजमान की गयी तथा आचार्यश्री के मंगलप्रवचन हुये जिसमें उन्होंने बताया कि जैसे प्रभु को तुमने उच्चासन पर बिठाया वैसे ही अब यहाँ की समाज भी उन्नति की ओर जावेगी, वर्धमान नगर बढ़ता ही जाएगा। समाज के लोगों ने यहीं पर चातुर्मास भी सम्पन्न हो ऐसी भावना व्यक्त की। दोपहर में सभी शिविरार्थियों को व परीक्षा में उत्तीर्ण हुए शिविरार्थियों को (प्रमाणपत्र देकर) पुरस्कारित किया गया परन्तु मोराजी के कमेटी के निवेदन से गुरुवर का गमन 7 तारीख को प्रातः कालीन बेला में मोराजी की ओर हुआ। वहाँ पर श्रुतपञ्चमी पर्व का मंगल कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। षट्खण्डागम रूप चारों अनुयोगों से सहित आगम शास्त्रों की पूजन की गयी। आचार्य गुरुवर के पादप्रक्षालन, पूजन एवं शास्त्र भेंट किये गये। तदुपरान्त आचार्य गुरुवर की मंगल देशना सम्पन्न हुयी जिसमें श्रुतपञ्चमी की कथा सुनकर लोगों को आगम की महिमा का अवलोकन कराया गया। मोराजी में 4, 5 दिन का प्रवास रहा। पंचकल्याणक व वर्षायोग हेतु निवेदन भी किया गया था।

तदुपरान्त आचार्यश्री का ससंघ विहार 13 तारीख को प्रातःकाल आदर्श रेसीडेन्सी की ओर हुआ। बीच में शीतल हथकरघा वालों के निवेदन से वहाँ पर हथकरघा का अवलोकन किया। आदर्श कॉलोनी में जिनदर्शन के उपरान्त आचार्यश्री के शुभाशीष वचन तथा आहार चर्या सम्पन्न हुई। दोपहर में विहार हो गया। 14 तारीख को प्रातःकाल सिहोरा में बाजे के साथ मंगल आगमन हुआ।

राहतगढ़ में मंगलप्रवेश:-

आहार चर्या के उपरान्त दोपहर में बच्चों के संस्कार हेतु पाठशाला संचालन हेतु लोगों को प्रेरित किया। तथा शाम को बेरखेड़ी से होते हुए 15 जून को राहतगढ़ में मंगल वाद्यों के साथ प्रवेश हुआ। आचार्यश्री के मंगलप्रवचन के दौरान समाज के लोगों ने चातुर्मास हेतु श्रीफल भेंटकर निवेदन किये। 6-7 दिन के प्रवास में प्रतिदिन आचार्यश्री के ससंघ द्वारा मंगलप्रवचन, दोपहर में स्वाध्याय, शंका समाधान और शाम को पाठशाला एवं प्रश्नमंच कर कार्यक्रम चला। तदुपरान्त 22 तारीख को दोपहर में राहतगढ़ से गुरुवर का विहार हो गया।

विदिशा में वर्षायोग हेतु निवेदन:-

मोरखेड़ी, बागरौद, ग्यारसपुर, अठारी, हिरनई, कुँआ खेड़ी होते हुए 26 जून को विदिशा (अरिहंत विहार) कॉलोनी में बाजे एवं जय-जयकारों के साथ आचार्य ससंघ की मंगल आगवानी हुई। श्रावक गण अपने-अपने द्वार पर गुरुवर के पादप्रक्षालन एवं आरती करके सातिशय पुण्य कमाया। वहाँ पर पहुँचकर विशाल श्री पार्श्वनाथ प्रभु के दर्शन करके विस्तृत प्रांगण में आचार्यश्री के मंगल अमृतवाणी सबको मिली। प्रवचन के दौरान सकल दिगम्बर जैन समाज के पंचायत अध्यक्ष एवं श्रावकगणों ने अरिहंत विहार में आचार्य गुरुवर के ससंघ चातुर्मास हेतु श्रीफल भेंटकर निवेदन किया। 3-4 दिन के प्रवास में मंगल प्रवचनादि से धर्म की प्रभावना हुई। 29 तारीख को सांची में जिनदर्शन व आहार चर्या सम्पन्न हुई। वहाँ से सलामतपुर, दीवानगंज, दयोदय गौशाला, सूखी सेवनियाँ, आदि होते हुए 3 जुलाई 2019 को भानपुर (भोपाल) में मंगलप्रवेश हुआ। दो दिन के प्रवास में लोगों ने प्रवचन आदि लाभ लिया तथा चातुर्मास हेतु निवेदन भी भावना व्यक्ति की।

भोपाल में भव्य मंगलप्रवेश व वर्षायोग हेतु निवेदन:-

पश्चात् 5 जुलाई को अयोध्या नगर भोपाल वालों की मंगल भावना से

वहाँ आगमन हुआ। 7 जुलाई को आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज के दीक्षा दिवस एवं पाठशाला का कलश स्थापना का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। 8 तारीख को भ.नेमिनाथ के मोक्षकल्याणक दिवस हर्षोल्लास पूर्वक निर्वाणलाडू चढ़ाकर मनाया गया और इसी दिन पूरी कमेटी के लोगों एवं सकल दिगम्बर जैन समाज ने 2019 का भव्य वर्षायोग अयोध्यानगर में हो इस भावना से श्रीफल भेंटकर नम्र निवेदन किया। 9 तारीख को आचार्यश्री ने ससंघ जिनमन्दिर दर्शनार्थ विहार किया। वहाँ से सोनागिरि में प्रवचन, पिपलानि में प्रवचन व आहर चर्या फिर समन्वय नगर (अवधपुरी)में मंदिर दर्शन, विद्यासागर संस्थान, साकेतनगर, पंचशील नगर व नेहरू नगर में मंदिर दर्शन, प्रवचन व आहार चर्या। नेहरू नगर में भी चातुर्मास हेतु अति नम्र निवेदन किया गया परन्तु पहले से किये गये निवेदन पर 12 जुलाई को अशोकागार्डन में बाजे एवं जय-जयकारों के साथ गुरुवर की ससंघ भव्य मंगल आगवानी हुई। सब लोगों ने अपने-अपने गृह के सामने रंगोली डालकर गुरुवर के पादप्रक्षालन एवं आरती की और उनके मन प्रफुल्लित हुये। 13 जुलाई को पूरी अशोका गार्डन की समाज ने 108 नारियलों के साथ इस वर्ष का पावन वर्षायोग अशोका गार्डन को प्राप्त हो इस भावना के साथ श्रीफल अर्पित कर नम्र निवेदन किया और अयोध्यानगर वालों ने भी अशोका गार्डन आकर के हमारे यहाँ चातुर्मास हो ऐसी भावना से श्रीफलों द्वारा निवेदन किया। अब पुण्य की परीक्षा की घड़ियाँ चल रही हैं। देखते हैं किसको वह परम सौभाग्य मिलेगा? आचार्य गुरुवर ने सबको अपना-अपना पुण्य बढ़ाने हेतु आशीर्वाद दिया। यही है अतिथि साधुओं की चर्या! धन्य है।

अशोका गार्डन भोपाल में वर्षायोग हेतु कार्यक्रम :-

मध्यप्रदेश की राजधानी भोपाल नगर के अशोका गार्डन के भव्यों को अध्यात्म योगी आचार्यश्री आर्जवसागरजी महाराज ससंघ चातुर्मास का सौभाग्य प्राप्त हुआ। जिसमें 16.7.19 तारीख को गुरुपूर्णिमा दिवस पर गुरुवर

का पादप्रक्षालन व शास्त्र दान का सौभाग्य विनोदकुमार जैन अजमेर वालों को प्राप्त हुआ और संगीतमयी पूजन व श्रावकों के द्वारा भक्ति भाव पूर्वक सम्पन्न की गयीं। पश्चात् गुरुवर के मंगल प्रवचन हुये। पश्चात् 17 तारीख को गुरुवर आचार्यश्री आर्जवसागरजी के ससंघ ने उपवास पूर्वक वर्षायोग प्रतिष्ठापन की भक्तियों का वाचन कर चारों दिशाओं में सीमा बांधकर चातुर्मास की स्थापना सम्पन्न की। तदुपरान्त 21.719 तारीख रविवार को सुबह सजी हुई द्रव्यों से गुरुपूजन सम्पन्न हुई और गुरुवर के मंगल प्रवचन हुये।

दोपहर में चातुर्मास मंगलकलश स्थापना का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। जिसमें सर्वप्रथम पाठशाला के बच्चों द्वारा मंगलाचरण की प्रस्तुति दी गयी। पश्चात् चित्र अनावरण एवं दीपप्रज्वलन अशोकागार्डन मन्दिर कमेटी एवं बाहर से पधारे अतिथियों द्वारा सम्पन्न हुआ और गुरुवर के पादप्रक्षालन का सौभाग्य ब्र. राजकुमार जी परिवार राहतगढ़ व श्री प्रवीणकुमार परिवार दमोह वालों को प्राप्त हुआ। पश्चात् बाहर दिल्ली, तमिलनाडु, सूरत, दमोह, जबलपुर, सागर आदि से पधारे अतिथियों का सम्मान किया गया व उनके द्वारा श्रीफल भेंट किये गये। पश्चात् चातुर्मास कलश हेतु पात्रचयन किया गया। जिसमें प्रमुख कलश आनंदकुमार टेंकर परिवार अशोकागार्डन वाले व अन्य पन्द्रह कलश का भी पात्रचयन किया गया। इसी बीच वर्तमान विधायक विश्वास सारंग अपने साथियों के साथ आचार्य गुरु दर्शन के लिए आये और अपनी बात व्यक्त करते हुए सन्त साधुओं की महिमा गायी। भोपाल के उपनगरों से भी अयोध्या नगर, चौक, नेहरू नगर, पंचशील नगर, टी.टी. नगर, बावड़िया कलाँ, सोनागिर, पिपलानी, मण्डीदीप आदि स्थानों से अधिक संख्या में लोगों ने पधारकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। पश्चात् अंत में आचार्य गुरुवर की मंगलमय वाणी सबको प्राप्त हुई। तदुपरान्त मन्दिर में कलशों की स्थापना का कार्यक्रम अपार जन समूह के बीच मंगलमय सानन्द सम्पन्न हुआ। मन्दिर प्रांगण में बने पाण्डाल में प्रतिदिन गुरुवर के मंगलप्रवचन सम्यक् ध्यान

शतक पर सम्पन्न हुये और आचार्य संघ द्वारा दोपहर में छहढाला, सहस्रनाम, तत्त्वार्थसूत्र, आदि व शाम को गुरुभक्ति, आरती आदि के पश्चात् प्रश्नमंच और स्तोत्रों के पाठ सह उनके अर्थ आदि कक्षाओं के माध्यम से श्रावकों को धर्मध्यान का सौभाग्य दिया गया।

दिनांक 7.8.19 को मोक्षसप्तमी के दिन मूलनायक श्री भ. पार्श्वनाथ का मोक्षकल्याणक दिवस विशेष पूजन एवं निर्वाण लाडु चढ़ाकर हर्षोल्लास पूर्वक मनाया गया। और गुरुवर के मंगलप्रवचन पार्श्वनाथ भगवान के जीवन दर्शन पर आधारित थे और शाम को गुरुभक्ति, आरती के उपरान्त पार्श्वनाथ भगवान पर प्रश्नमंच किया गया।

षोडसकारण एवं दशलक्षण पर्व :-

दिनांक 15.8.19 को रक्षाबंधन पर्व व षोडसकारण महापर्व महोत्सव प्रारम्भ का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। जिसमें अकम्पनाचार्य आदि 700 मुनियों की पूजन एवं श्रेयांसनाथ भगवान के मोक्षकल्याणक के उपलक्ष्य में पूजन के साथ निर्वाण लाडू संगीतमय भक्ति भाव पूर्वक सम्पन्न किया गया। पश्चात् षोडसकारण पर्व के मंगलकलश स्थापना का पात्रचयन हुआ। जिसमें श्री परितोश अमिता जैन सोना मेडिकल वालों को व दूसरा कलश सचेन्द्र जैन गुड्डू को सौभाग्य प्राप्त हुआ। पश्चात् गुरुवर ने रक्षा-बंधन पर्व पर मंगलप्रवचन दिये। शाम को इसी विषय पर प्रश्न भी पूछे गये। अशोकागार्डन में करीब 70-80 लोगों ने षोडसकारण व्रत ग्रहण किये। षोडसकारण में प्रतिदिन सामूहिक संगीतमय पूजन हुई तथा सोलहकारण भावनाओं पर आचार्यश्री के विशेष मंगलमय प्रवचन हुये। 1 सितम्बर को चा.च. आचार्यश्री शान्तिसागरजी महाराज के समाधि दिवस पर भी आचार्यश्री के विशेष प्रवचन हुये। 3 सितम्बर से पर्यूषण पर्व प्रारम्भ हुआ जिसमें प्रतिदिन दैनिक व पर्व पूजन के साथ-साथ दशलक्षण महामण्डल विधान सम्पन्न हुआ और प्रातः आचार्यश्री के दशधर्मों पर विशेष प्रवचन व दोपहर में तत्त्वार्थसूत्र का वाचन,

व तत्त्वार्थसूत्रसार्थ विशेष विवेचन आचार्यश्री के मुखारबिन्द से सम्पन्न हुये। 14 व 15 सितम्बर को आचार्यश्री आर्जवसागरजी महाराज से रचित लोककल्याण महामण्डल विधान (षोडसकारण वृहद् आराधना) सम्पन्न हुआ। जिसमें बहुत लोगों ने इस विधान में बैठकर सरल सरस शब्दों से भरी प्रभु की भक्ति की और कुछ लोगों ने षोडसकारण व्रत का उद्यापन भी सम्पन्न किया। इस विधान पुस्तक का मुद्रित करने का सौभाग्य षोडसकारण व्रत उद्यापन के उपलक्ष्य में डॉ. अजित कुमार-सुषमा जैन भोपाल परिवार को प्राप्त हुआ। 15 सितम्बर को प्रातःकालीन बेला में क्षमावाणी पर्व भी मनाया गया। 22 सितम्बर को श्री जी की शोभायात्रा बेण्ड बाजे व दिव्यघोष, आचार्यश्री के ससंघ व अपार जनसमूह के साथ नगर के मुख्य मार्गों से होते हुए अपूर्व धर्मप्रभावना हुई। पश्चात् जुलूस पाण्डाल पहुँचा और वहाँ पर जिनाभिषेक व शान्तिधारा आचार्यश्री के मुखारबिन्द से सम्पन्न हुई तथा सामूहिक क्षमावाणी मनाई गई। जिसमें विधायक विश्वास सारंग, पार्षद आदि ने सभा में आकर सबसे क्षमा याचना की। अन्त में आचार्यश्री के क्षमावाणी पर विशिष्ट प्रवचन सम्पन्न हुये।

काव्य संगोष्ठी व पाठशाला सम्मेलन-

दिनांक 2 अक्टूबर को प्रातःकाल धार्मिक कवि संगोष्ठी सम्पन्न हुई जिसमें बाल, युवा, प्रौढ़ कवियों ने स्व लिखित कविताओं का पाठ किया। अन्त में सबको पुरस्कारित भी किया गया और गुरुवर ने भी अपनी कविताओं को प्रस्तुत किया। दोपहर में धार्मिक पाठशाला सम्मेलन का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। अशोकागार्डन की पाठशाला द्वारा मंगलाचरण प्रस्तुत हुआ। पश्चात् अनेक पाठशालाओं के शिक्षक-शिक्षिकाओं द्वारा आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज का चित्र अनावरण व दीप प्रज्वलन किया गया। शंकराचार्य नगर ऐशबाग, अशोकागार्डन, पंचशील नगर, चौक, औबेदुल्लागंज आदि स्थानों की पाठशालाओं ने अपना-अपना शिक्षाप्रद कार्यक्रम प्रस्तुत किया। अन्त में



दांता रामगढ़ में सम्मान के समय डॉ. अजित जैन इंजी. महेन्द्र जैन भोपाल आदि।



दांता रामगढ़ में डॉ. संजय जैन सम्मान करते हुए कल्याणक मल झांझरी कोलकाता।



दांता रामगढ़ में भावविज्ञान पत्रिका का विमोचन करते हुए निर्मल झांझरी डीमापुर आदि।



कलेक्टर भटनागर का गुरुवर से साहित्य प्राप्त करते हुए 2011



दांता रामगढ़ में डॉ. शीतलचंद जयपुर का सम्मान करते हुए कमेटी जन।



2011 दांता रामगढ़ जिनालय में गुरुवर आर्जवसागरजी महाराज का दर्शन करते हुए ब्र. जिनेश जी, पं.मूलचंद लुहाड़िया एवं कल्याणमल झांझरी आदि।



नसीराबाद में महाकवि आ.ज्ञानसागरजी के समाधि दिवस पर अचार्यश्री आर्जवसागरजी का दर्शन करते हुए पं.मूलचंद जी लुहाड़िया।



महाकवि आचार्य ज्ञानसागरजी महाराज के समाधिक दिवस पर सेठ जी नसियाँ के प्रमुख गुरुवर आर्जवसागरजी के पादप्रक्षालन करते हुए।



महाकवि आ.ज्ञानसागरजी के 38वें समाधि दिवस पर मंच संचालन करते हुए डॉ. नरेन्द्र जैन भोपाल।



2012 उदयपुर में चिड़िया घर का निरीक्षण करते हुए गुरुवर आर्जवसागरजी महाराज।



2021, उदयपुर में आचार्य विपुलसागरजी व मुनिश्री रविवागर जी के साथ गुरुवर आर्जवसागर जी महाराज।



2012 उदयपुर गुरुवर आर्जवसागरजी महाराज का दर्शन करते हुए पं. उदयचंद जी एवं डॉ. ज्योतिबाबू शास्त्री।



2011 चांदखेड़ी क्षेत्र पर गुरुवर आर्जवसागरजी महाराज ससंघ की



दांता रामगढ़ पंचकल्याणक में हेलीकॉप्टर द्वारा पुष्पवर्षा।



दांता रामगढ़ पंचकल्यानक में शोभायात्रा के समय गुरुवर आर्जवसागरजी महाराज आदि।



2011 दांता रामगढ़ पंचकल्याणक में विधिनायक बिम्ब की प्राण प्रतिष्ठा विधि करते हुए गुरुवर आर्जववसागर जी महाराज एवं ब्र. जिनेश जी, नरेशजी तथा सौधर्मइन्द्र निर्मल झांझरी।



लाडनूँ में विश्वभारती का अवलोकन करते हुए आर्जवसागरजी ससंघ।



लाडनूँ में गुरुवर आर्जवसागरजी महाराज के उद्गार सुनते हुए श्वेताम्बर साधुगण आदि।



2012, उदयपुर, उदासीन आश्रम में गुरुवर आर्जवसासगरजी के लिए शास्त्र अर्पित करते हुए झमकलाल टापा आदि।

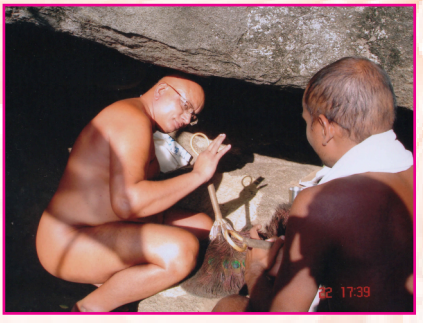

2012 गिरनार की राजुल गुफा का अवलोकन करते हुए गुरुवर आर्जवसागरजी महाराज ससंघ।

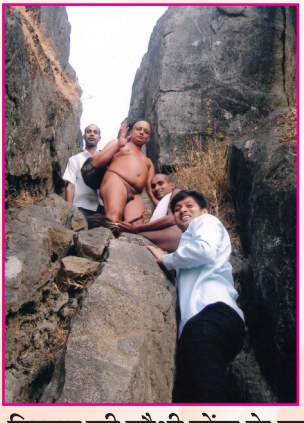

2012 गिरनार की चौथी टोंक के दर्शनार्थ जाते हुए गुरुवर आर्जवसागरजी ससंघ एवं उदयपुर के भक्तगण।

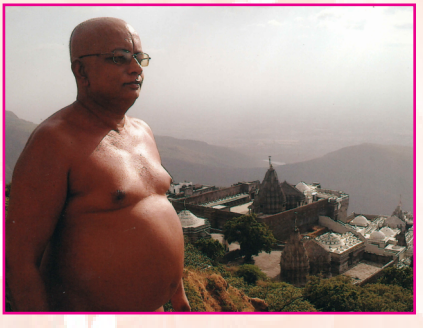

2012 गिरनार की प्रथम टोंक के दर्शनार्थ जाते हुए गुरुवर आर्जवसागरजी।



मुनिश्री आर्जवसागरजी महाराज के 25वें दीक्षा दिवस पर उनके चित्र का अनावरण करते हुए डॉ. अजित जैन भोपाल एवं डी.आर.जैन जयपुर।



2012 जूनागढ़ में मुनिश्री आर्जवसागरजी के 25वें मुनि दीक्षा दिवस पर गुरुचित्र का अनवरण करते हुए भक्तगण।



2012 सूरत में पिच्छिका परिवर्तन समारोह पर मंगलाचरण करते हुए धार्मिक पाठशाला के विद्यार्थीगण।



2012 सूरत आहुरानगर में गुरुवर आर्जवसागरजी के दर्शन करते हुए ओमप्रकाश, नरेश जैन आदि।

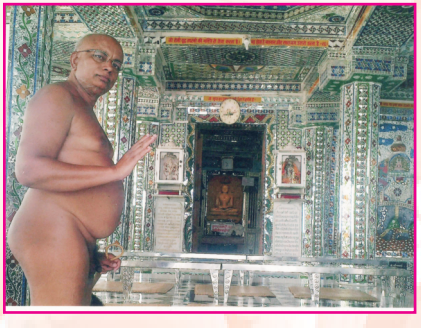

2012 माउंटआबू के कांच में जिनबिम्ब के समक्ष गुरुवर आर्जवसागरजी महाराज।

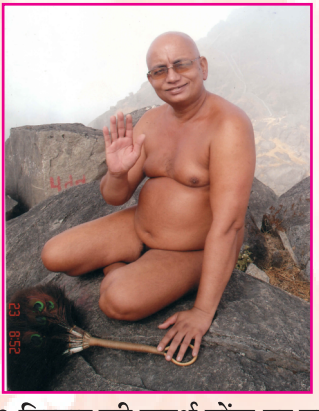

2012 गिरनार की चतुर्थ टोंक पर गुरुवर आर्जवसागरजी।



2012 जूनागढ़ में गुरुवर आर्जवसागरजी महाराज के पाद प्रक्षालन करते हुए विनोद बाकलीवाल अजमेर, नरेश जैन सूरत, कनुभाई सूरत, महेन्द्र जैन भोपाल आदि।



2012, जूनागढ़ में भाव विज्ञान पत्रिका का विमोचन करते हुए भक्तगण।



गुरुवर आर्जवसागरजी के 25 वें दीक्षा दिवस पर गुरुपूजन करते हुए भक्तगण।



गुरुवर आर्जवसागर के दीक्षा दिवस पर मंगल आरती उतारते हुए भक्तगण।



2012 गुरुवर आर्जवसागरजी ससंघ गिरनार की वंदना हेतु जाते हुए।



2013 पावागढ़ के पर्वत पर जिनालय में दर्शन करते हुए गुरुवर आर्जवसागरजी महाराज।



2013 इंदौर में गुरुवर आर्जवसागरजी महाराज से साहित्य प्राप्त करते हुए कुलपति डी.पी. सिंह एवं हुकुमचंद सावला।



वर्धमान कॉलोनी सागर में भावविज्ञान पत्रिका का विमोचन करते हुए विधायक व श्रेष्ठीगण।



आचार्यश्री आर्जवसागर जी महाराज से साहित्य प्राप्त करते हुये दिल्ली प्रदेश के अध्यक्ष नेता प्रतिपक्ष आदरणीय ब्रजेन्द्र जी गुप्ता।



अशोकनगर में आचार्यश्री आर्जवसागरजी महाराज के दर्शनार्थ पधारे प्रिंसिपल डिस्ट्रिक्ट जज पवनकुमार शर्मा।



आचार्य श्री का आशीर्वाद लेते हुए पूर्व मुख्यमंत्री माननीय शिवराज सिंह चौहान।



आचार्य श्री के दर्शनार्थ पिड़ावा से पधारे भारतीय महासभा के महामंत्री प्रकाशचंद्र की बड़जात्या।



आचार्यश्री आर्जवसागर जी महाराज के दर्शनार्थ पधारे नायब तहसीलदार जी पिड़ावा।



मुँगावली के अब्दुल करीम अंसारी ने गुरुचरणों में लिया आजीवन माँस त्याग का नियम।

आचार्यश्री आर्जवसागर जी महाराज द्वारा रचित साहित्य



गुरुवर के मंगल प्रवचन हुये और प्रथम स्थान में शंकराचार्य नगर की श्री विद्यासागर बाल संस्कार केन्द्र ने पाया। द्वितीय स्थान अशोकागार्डन श्री विद्यासागर पाठशाला को और तृतीय स्थान पंचशील नगर की श्री महावीर आगम पाठशाला ने प्राप्त किया। सभी को मोमेन्टो व विशेष पुरस्कार से पुरस्कारित किया गया।

दीक्षा की तैयारियाँ-

9 अक्टूबर को दोपहर में दीक्षार्थियों के द्वारा चौंसठ ऋद्धि विधान सम्पन्न किया गया। इसके पहले से ही दीक्षार्थियों की गोद भराई हेतु लोग चंदन नगर, बावड़िया कलाँ, पंचशील नगर, ओबेदुल्लागंज, आदि-आदि स्थानों पर ले गये और 9 तारीख दीक्षा को देखने आये श्री चक्रेश भैयाजी मुंडेरी वालों ने भी दीक्षा हेतु आचार्यश्री से निवेदन किया और दूसरे दिन प्रातः केशलोंच भी कर लिये। दोपहर में सबको मेहंदी रचाई गई और शाम को गुरुभक्ति के बाद ब्र. संतोष भैया अमरावती ने भी दीक्षा हेतु निवेदन किया। पश्चात् उनको भी मेंहंदी लगायी गई। रात्रि में 8:00 बजे विशाल जुलूस के रूप में राजकीय वेशभूषा में गाजे-बाजे के साथ एक अनुपम दृश्य स्वरूप दीक्षार्थियों की बिनोली अशोकागार्डन के मुख्य स्थलों से होकर पण्डाल पहुँची। पाँचों दीक्षार्थियों को मंचासीन किया गया और वहाँ पर अपार जनता की उपस्थिति में उनकी गोद भराई का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। उन दीक्षार्थियों के परिवार वालों ने पहले गोद भराई की पश्चात् सम्पूर्ण समाज ने भी गोद भराई का सौभाग्य प्राप्त किया। लोगों में अपूर्व उत्साह था, आनंद भी उमड़ रहा था। पहली बार हम लोगों को मात्र नहीं अपितु अनेक प्रान्तों से आयी जनता को यह दीक्षायें देखने मिल रही हैं। सबके मन में अपार खुशियाँ छा गई थीं।

पाँच पापों का त्याग कर बने साधु परमेष्ठी-

प्रातःकाल 4:00 बजे सभी दीक्षार्थियों ने केशलोंच किया। पश्चात्

सभी ने गुरुवर आचार्यश्री आर्जवसागरजी को पडिगाहन पूर्वक आहारदान दिया। तदुपरान्त दोपहर में 2:00 बजे सभी दीक्षार्थी पूरे आचार्य संघ के साथ देव-दर्शन के पश्चात् गाजे-बाजे के साथ दशहरा मैदान पहुँचे। विशाल पाण्डाल के बीच बने विस्तृत मंच पर सभी आसीन हुये। दीक्षार्थियों को यथा स्थान बिठाया गया। अशोकागार्डन पाठशाला की शिक्षिकाओं द्वारा मंगलाचरण प्रस्तुत किया गया। पश्चात् जबलपुर गुरुकुल से ब्र. महेश भैया आदि व ईसरी से ब्र.पंकज और इंदौर भोपाल आदि से पधारे ब्रह्मचारी भैयाओं व बहिनों ने आचार्यश्री के चरणों में श्रीफल भेंटकर मंगल आशीर्वाद प्राप्त किया। मंच संचालन ब्र. रवीन्द्र भैया ने किया। पश्चात् चित्र अनावरण अशोकागार्डन कमेटी द्वारा किया गया तथा अन्य मन्दिरों के अध्यक्षों द्वारा दीपप्रज्वलन किया गया। तदुपरान्त आचार्यश्री के पादप्रक्षालन का सौभाग्य श्री बुधराज कासलीवाल पाण्डिचेरी वालों को प्राप्त हुआ, शास्त्र भेंट किया गया। तदुपरान्त बा.ब्र. पंकज भैयाजी ईसरी ने दीक्षार्थियों का परिचय दिया। पश्चात् प्रत्येक दीक्षार्थी ने आचार्यश्री को श्रीफल भेंट कर अपनी भावना व्यक्त की।

मुनि दीक्षा संस्कार हेतु आचार्यश्री खड़े हुए तो पंडाल जयकारों से गूंज उठा। दीक्षार्थियों पर गंधोदक से शुद्धि करके केशलोंच की क्रियायें सम्पन्न कीं। पश्चात् अन्य क्रियायें वस्त्र विमोचन के साथ होती हैं। दीक्षार्थियों को खड़े होने और वस्त्राभरण त्याग करने की आज्ञा दी। चार दीक्षार्थियों ने तो पूर्ण वस्त्राभूषण त्याग कर फेंक दिये पाँचवें दीक्षार्थी ने लंगोट मात्र धारण किया। पश्चात् उनके सिर पर श्रीकार बनाया और हाथों पर अंकों का लेखन किया फिर उनके परिवार वालों से चावल, फलादि से अंजुली भरवाई गई। दीक्षार्थियों के व्रतों की चर्या अपने उद्बोधन में समझाई पश्चात् गुरुवर ने पंच महाव्रतों का 28 मूलगुणों का उपदेश दिया। पश्चात् दीक्षार्थियों द्वारा हाथों का द्रव्य परिवार वालों को दिया गया। तदुपरान्त गुरुवर ने लवंग के माध्यम से मुनि के षोडश संस्कार की क्रियायें एक-एक दीक्षार्थियों पर सम्पन्न कर चारों को

मुनि बनाया। दीक्षार्थियों ने गुरुवर के चरण स्पर्श कर अपने-आपको धन्य माना। अन्तिम दीक्षार्थी पर 11 प्रतिमाओं का संस्कार कर ऐलक दीक्षा दी गई। तदुपरान्त दीक्षार्थियों के व्रतों की चर्या अपने उद्‌बोधन में समझाई। पश्चात् मुनियों का नामकरण करते हुए पहले दीक्षार्थी का मुनिश्री 108 विलोकसागरजी, द्वितीय मुनिश्री विशोधसागरजी, तृतीय मुनिश्री विबोध सागरजी, चतुर्थ मुनिश्री विदितसागरजी और अंतिम ऐलकश्री 105 वर्धनसागरजी नाम रखा गया। नाम सुनते ही पूरे पांडाल की जनता हर्षित होकर जयकारा लगाने लगी। पश्चात् उनको पिच्छिका व कमण्डल प्रदान किया गया तथा शास्त्र भी प्रदान किये गये। इस अनुपम दृश्य को देखने के लिए दूर-दूर से दिल्ली, कर्नाटक, तमिलनाडु, महाराष्ट्र, सूरत, झारखण्ड, दमोह, सागर, बण्डा, इन्दौर, जबलपुर, आदि-आदि स्थानों से लोगों ने आकर अपना परम सौभाग्य माना और भोपाल में उपनगरों से भी अत्यधिक संख्या में लोगों ने उपस्थित होकर भोपाल के इतिहास में पंच परमेष्ठी रूप में पाँच दीक्षाओं का दृश्य देखने दौड़े-दौड़े आये। इतना बड़ा दशहरा मैदान का स्थान में विशाल पाण्डाल भी छोटा पड़ने लगा। इस प्रकार यह कंकर से शंकर बनाने वाली दीक्षा के कार्यक्रम में भोपाल का एक महा इतिहास का रूप लिया। पश्चात् सभी मुनिराजों ने अशोकागार्डन मन्दिर की ओर प्रस्थान किया। धन्य हैं ऐसे गुरु महाराज जिन्होंने भव्यों को परमेष्ठी भगवान की श्रेणी में ला दिया। ऐसे यह आचार्य भगवन्तों की परम्परा की धारा अविरल रूप से बहती रहे ऐसी मंगलमय भावना के साथ गुरु चरणों में त्रय बार नमोस्तु निवेदित करती हूँ।

परिचय का संक्षिप्त विवरण

1. गुरु संघ में साधुगण आदि का साथ और साधुगण के साथ गुरुवर:-

1. मुनिश्री समयसागर जी
2. मुनिश्री योगसागरजी
3. मुनिश्री नियमसागरजी
4. मुनिश्री क्षमासागरजी
5. मुनिश्री गुप्तिसागरजी
6. मुनिश्री सुधासागरजी
7. मुनिश्री समतासागरजी
8. मुनिश्री स्वभावसागरजी
9. मुनिश्री समाधिसागरजी
10. मुनिश्री सरलसागरजी
11. मुनिश्री वैराग्यसागरजी
12. मुनिश्री प्रमाणसागरजी
13. मुनिश्री आर्जवसागरजी
14. मुनिश्री मार्दवसागारजी
15. मुनिश्री पवित्रसागरजी
16. मुनिश्री उत्तमसागरजी
17. मुनिश्री चिन्मयसागरजी
18. मुनिश्री पावनसागरजी
19. मुनिश्री सुखसागरजी

आर्यिकायें:-

1. आ.श्री गुरुमति माताजी
2. आ.श्री दृढ़मति माताजी
3. आ.श्री मृदुमति माताजी
4. आ.श्री ऋजुमति माताजी
5. आ.श्री तपोमति माताजी
6. आ.श्री सत्यमति माताजी
7. आ.श्री गुणमति माताजी
8. आ.श्री जिनमति माताजी
9. आ.श्री निर्णयमति माताजी
10. आ.श्री उज्ज्वलमति माताजी
11. आ.श्री पावनमति माताजी
12. आ.श्री प्रशान्तमति माताजी
13. आ.श्री पूर्णमति माताजी
14. आ.श्री अनन्तमति माताजी
15. आ.श्री विमलमति माताजी
16. आ.श्री कुशलमति माताजी
17. आ.श्री निर्मलमति माताजी
18. आ.श्री साधुमति माताजी
19. आ.श्री शुक्लमति माताजी
20. आ.श्री शुभ्रमति माताजी
21. आ.श्री साधनामति माताजी
22. आ.श्री विलक्षणमति माताजी
23. आ.श्री धारणामति माताजी
24. आ.श्री प्रभावनामति माताजी
25. आ.श्री भावनामति माताजी
26. आ.श्री चिंतनमति माताजी
27. आ.श्री वैराग्य मति माता जी

ऐलक गण:-

1. ऐ.श्री निशंकसागरजी
2. ऐ.श्री करुणासागरजी
3. ऐ.श्री दयासागरजी
4. ऐ.श्री अभयसागरजी
5. ऐ.श्री वात्सल्यसागरजी
6. ऐ.श्री निश्चयसागरजी
7. ऐ.श्री उदारसागरजी
8. ऐ.श्री निर्भयसागरजी

क्षुल्लक गण:-

1. क्षु.श्री नयसागरजी
2. क्षु.श्री चन्द्रसागरजी
3. क्षु.श्री गंभीरसागरजी
4. क्षु.श्री धैर्यसागरजी

2. गुरु समक्ष समाधियाँ:-

क्र	नाम	सन्	स्थान
1.	मुनिश्री वैराग्यसागरजी महाराज	1985 सितम्बर	अहारजी
2.	मुनिश्री अचलसागरजी महाराज	1993 वर्षायोग	श्रवणबेलगोला
3.	आर्यिकाश्री राजितमति माताजी	2018	शाहपुर (गणेशगंज)
4.	क्षुल्लिकाश्री संयमश्री माताजी	1985 दिसम्बर	अहारजी
5.	क्षुल्लक श्री गुणभद्रसागरजी	1986 अगस्त	पपौराजी
6.	ब्र. दीपचन्दजी	1985	अहारजी
7.	ब्र. ताराचन्दजी	1986	पपौराजी

3.साधुसंघ मिलन :-

कब	साधुओं के नाम	स्थान	सन्
बचपन में	- क्षुल्लकश्री चिदानंद महाराज		1972-73
9-10	-वर्ष उम्र में आचार्यश्री विद्यासागरजी ससंघ	-पथरिया (म.प्र)	1976-77
युवावस्था में-	क्षुल्लक श्री गुणभद्रसागरजी महाराज (दक्षिण वाले)		1984
मुनि अवस्था में-	मुनिश्री सम्मेदसागरजी महाराज	मढ़ियाजी जबलपुर (म.प्र)	1988
	मुनिश्री ब्रह्मानंदसागरजी महाराज	पठारी में मण्डीदीप में (म.प्र.)	1989-2000
	आ.श्री विशालमति माताजी आ.श्री विद्युतमति माताजी आ.श्री विज्ञानमति माताजी	सि.क्षे. कुण्डलपुर (म.प्र.)	1989 (ग्रीष्मकाल)
	मुनिश्री वर्धमानसागरजी (तमिलनाडु वाले) मुनिश्री अमितसागरजी मुनिश्री जीवन्धरसागरजी (तमिलनाडु वाले)	कोनी जी (म.प्र.)	1989
	मुनिश्री नियमसागरजी ऐ.वृषभसागरजी, क्षुल्लिका प्रशस्तमति जी	कुम्भोज ग्राम (कर्ना.)	1992
	मुनिश्री जिनभूषण महाराजजी	सांगली (महा.)	1992 (चातुर्मास)
	मुनिश्री स्वभावसागरजी व मुनिश्री सुखसागरजी	सोलापुर (महा.)	1993
	मुनिश्री योगसागरजी व मुनिश्री पवित्रसागरजी	श्रवणबेलगोला (कर्ना.)	1993

साधुओं के नाम	स्थान	सन्
आचार्य वर्धमानसागरजी आदि आर्यिका श्री जिनमति एवं शुभमति आदि मुनिश्री रयणसागरजी ससंघ मुनिश्री हितसागरजी ससंघ मुनिश्री पुण्यसागरजी आर्यिकाश्री सुप्रकाशमति व सुभूषणमति	श्रवणबेलगोला (कर्ना.)	1993
मुनिश्री नियमसागरजी मुनिश्री उत्तमसागरजी मुनिश्री पायसागरजी मुनिश्री पुण्यसागरजी मुनिश्री अपूर्वसागरजी मुनिश्री अक्षयसागरजी मुनिश्री सुपार्श्वसागरजी आर्यिकाश्री गुरुमति आदि 80 आर्यिकायें	सदलगा (कर्ना.) (पंचकल्याणक में)	2003
ऐ.निशंकसागरजी	छत्रपति नगर, इन्दौर	2004
मुनिश्री वैराग्यसागरजी	सिहोर (म.प्र.)	2004
आर्यिका मृदुमति माताजी (ससंघ)	टीनशेड, भोपाल	2004
मुनिश्री विशुद्धसागर (ससंघ)	एशबाग, भोपाल पंचकल्याणक	2004
आ.अकम्पमति माताजी (ससंघ)	अशोकनगर (म.प्र.)	2005
मुनिश्री सरलसागरजी (ससंघ)	क्षेत्रपाल ललितपुर	2005
मुनिश्री मंगलानन्दसागरजी	ललितपुर (उ.प्र.)	2005
मुनिश्री प्रशान्तसागरजी	ललितपुर (उ.प्र.)	2005
मुनिश्री निर्वेगसागरजी मुनिश्री समाधिसागरजी	–''–	2005
मुनिश्री पावनसागरजी	टीकमगढ़ (म.प्र.)	2005
आ. आदर्शमति माताजी (ससंघ)	टीकमगढ़ (म.प्र.)	2005
मुनिश्री प्रमाणसागरजी	सि.क्षेत्र सम्मेदशिखर	2007
आ.श्री पूर्णमति माताजी (ससंघ)	सि.क्षे. सम्मेदशिखरजी	2007
आ.श्री प्रभावनामति माताजी (ससंघ)	ईसरी	2007
मुनिश्री अनेकान्तसागरजी	गया	2007
मुनिश्री मंगलानन्दसागरजी	छतरपुर	2008
गणिनि आ.सुपार्श्वमति जी (ससंघ)	चूलगिरि (जयपुर)	2009
गणिनि आ. ज्ञानमति माताजी (ससंघ)	हस्तिनापुर	2010
आ.श्री सुप्रकाशमति जी (ससंघ)	चित्तौड़गढ़	2011
आ.श्री विपुलसागरजी मुनिश्री रविसागरजी	उदयपुर (राज.)	2011
आ.गुरुवर विद्यासागरजी ससंघ	अबगांव हरदा (म.प्र.)	2014
आचार्य पद प्रदाता आ.श्री सीमंधरसागरजी आ.प्रसन्नऋषि ससंघ	इन्दौर (एम.एस.जे. फार्म हाउस)	2015

साधुओं के नाम	स्थान	सन्
क्षुल्लिका चन्द्रमति माताजी	मानतुंगगिरि	2015
आ.श्री धारणामति माताजी आ.श्री कुशलमति माताजी	सुभाष नगर, सागर	2017
आ.श्री तपोमति माताजी (ससंघ)	भाग्योदय तीर्थ, सागर	2017
आ.श्री वृषभमति माताजी (ससंघ)	अंकुर कालोनी, सागर	2017
मुनिश्री विद्यासागरजी ससंघ (आ.सन्मतिसागरजी से दीक्षित)	गढ़ाकोटा, सागर	2017
आ.श्री सत्यमति माताजी (ससंघ)	पुरवा, जबलपुर	2017
आ.श्री गुणमति माताजी (ससंघ) आ.श्री तपोमति माताजी ससंघ	कुण्डलपुर, दमोह	2017
आ.श्री ऋतुमति माताजी ससंघ	बंडा, सागर	2018
आ.श्री सकलमति माताजी आदि	पवई, पन्ना	2019
मुनिश्री सुप्रभसागरजी मुनिश्री प्रणतसागरजी (आ.विशुद्धसागरजी से दीक्षित)	गोपालगंज, सागर	2019
मुनिश्री आदित्यसागरजी आदि तीन मुनि	लखनादौन	2021
मुनिश्री विशालसागरजी (आ.विशदसागर से दीक्षित)	चौपड़ाकुण्ड(सम्मेदशिखरजी)	2022

4. वाचनाएँ/स्वाध्याय (गुरुवर के साथ)

	सन्	नगर	ग्रन्थ का नाम
1.	1985 ग्रीष्मकालीन	खुरई	धवला पुस्तक 15, कषाय पाहुड (जयधवला), कातन्त्र रूपमाला, रत्नकरण्डक श्रावकाचार
2.	1985 वर्षायोग	अहारजी	स्वामी कार्तिकेयानुप्रेक्षा
3.	1986 ग्रीष्मकालीन	पपौरा जी	धवला पुस्तक-5, कषाय पाहुड-12
4.	1987 ग्रीष्मकालीन	ललितपुर	धवला पुस्तक 11, 12, व पंचास्तिकाय
5.	1987 वर्षायोग	थोवोनजी	मूलाचार प्रदीप, समयसार
6.	1987, 88 शीतकालीन	ललितपुर	कर्मकाण्ड- भाग1, मूलाचार प्रदीप
7.	1988 ग्रीष्मकालीन	ललितपुर	धवला पुस्तक-6, बृहद् द्रव्यसंग्रह
8.	1988 चातुर्मास	मढ़ियाजी	धवला पुस्तक-1 व समयसार
9.	1988 शीतकालीन	पनागर	कर्मकाण्ड भाग-2
10.	1989 ग्रीष्मकालीन	मढ़ियाजी	प्रवचनसार
11.	1989 वर्षायोग	कुण्डलपुर, दमोह	ज्ञानार्णव, दसभक्ति सार्थ
12.	1990 ग्रीष्मकालीन	कुण्डलपुर, दमोह	न्याय दीपिका, सर्वार्थसिद्धि (पूर्वार्ध)
13.	1990 वर्षायोग	मुक्तागिरि	प्रमेय रत्नमाला, सर्वार्थसिद्धि (उत्तरार्ध)
दक्षिण यात्रा में स्वयं के द्वारा			
14.	1990 शीतकालीन	अमरावती	रत्नकरण्डक श्रावकाचार
15.	1991 ग्रीष्मकालीन	कारंजा	द्रव्य संग्रह
16.	1991 ग्रीष्मकालीन	रिसोड	रत्नकरण्डक, इष्टोपदेश
17.	1991 ग्रीष्मकालीन	जिंतूर	कुन्दकुन्द का कुन्दन
18.	1991 ग्रीष्मकालीन	जालना	इष्टोपदेश, कुन्दकुन्द का कुन्दन
19.	1991 वर्षायोग	कोपरगाँव	स्वामी कार्तिकेयानुप्रेक्षा
20.	1991 शीतकालीन	श्रीरामपुर	इष्टोपदेश, कुन्दकुन्द का कुन्दन

21.	1992 ग्रीष्मकालीन	करमाला	कुन्दकुन्द का कुन्दन, इष्टोपदेश
22.	1992 वर्षायोग	सांगली	सर्वार्थसिद्धि
23.	1993 वर्षायोग	श्रवणवेलगोला	मूलाचार, समयसार कलश
24.	1994 वर्षायोग	दावणगेरे	रत्नकरण्ड श्रावकाचार
25.	1995 गृष्मकाल	पाण्डीचेरी	सम्यक्त्वसारशतक
26.	1995 वर्षायोग	पोन्नूरमलै	इष्टोपदेश, समयसार

5. वर्षायोग सम्बन्धित एवं ग्रीष्मकालीन तथा शीतकालीन शिविर

क्र.	गाँव / नगर	काल	सन्	विषय
1.	दावणगेरे (कर्नाटक)	वर्षायोग	1994	श्रावाकाचार
2.	पोन्नूरमलै (तमिलनाडु)	वर्षायोग	1996	दशलक्षण पर्व
3.	ओदलवाड़ी (तमिलनाडु)	ग्रीष्मकालीन	1996	सम्यग्दर्शन
4.	कन्नलम् (तमिलनाडु)	वर्षायोग	1997	दशलक्षण
5.	कोरकोटै (तमिलनाडु)	शीतकालीन	1997	सम्यग्ज्ञान
6.	चेय्यार (तमिलनाडु)	ग्रीष्मकाल	1998	अनेकान्त
7.	श्री विशाखाचार्य तपोनिलय (तमिलनाडु)	वर्षायोग	1998	सोलह कारण, दशलक्षण
8.	श्री विशाखाचार्य तपोनिलय (तमिलनाडु)	ग्रीष्मकाल	1999	दस भक्ति संग्रह
9.	नल्लवन पालयम् तपोनिलय (तमिलनाडु)	वर्षायोग	1999	तत्त्वार्थ सूत्रटीका
10.	श्री विशाखाचार्य तपोनिलय (तमिलनाडु)	ग्रीष्मकालीन	2000	स्तोत्र संग्रह
11.	श्री विशाखाचार्य तपोनिलय (तमिलनाडु)	वर्षायोग	2000	तमिल ग्रन्थ
12.	पुदुकामूर आरनी (तमिलनाडु)	,,	2001	द्रव्यसंग्रह, इष्टोपदेश
13.	शिमोग्गा (कर्नाटक)	वर्षायोग	2002	मूलाचार, तत्त्वार्थ सूत्र
14.	कोपरगाँव (महा.)	,,	2003	सर्वार्थ सिद्धि
15.	टी. टी. नगर भोपाल	,,	2004	सर्वार्थ सिद्धि जीवकाण्ड
16.	अशोकनगर	,,	2005	कुन्दकुन्द भारती
17.	राँची	,,	2006	समयसार
18.	सतना	ग्रीष्मकाल	2007	इष्टोपदेश
19.	दमोह	वर्षायोग	2007	रत्नकरण्डक
20.	नया बाजार ग्वालियर	,,	2008	पञ्चास्तिकाय
21.	सोनीजी सेठ की नसियाँ अजमेर	,,	2009	तत्त्वार्थवार्तिक
22.	जयपुर	,,	2010	तत्त्वार्थराजवर्तिक
23.	रामगंजमंडी	,,	2011	रत्नकरण्डक श्रावकाचार
24.	उदयपुर	शीतकालीन	2012	प्राकृत व्याकरण
25.	आहुरानगर सूरत	वर्षायोग	2012	सर्वार्थसिद्धि
26.	गोयलनगर इन्दौर	ग्रीष्मकाल	2013	सर्वार्थसिद्धि
27.	खातेगाँव	वर्षायोग	2014	ज्ञानार्णव
28.	अशोकागार्डन भोपाल	ग्रीष्मकाल	2016	कुन्दकुन्द भारती
29.	शाहपुर-गणेशगंज, सागर	,,	2018	तत्त्वसार
30.	बण्डा	वर्षायोग	2018	मूलाचार
31.	वर्धमान कालोनी, सागर	ग्रीष्मकाल	2019	
32.	अशोकागार्डन भोपाल	वर्षायोग	2019	समाधितन्त्र
33.	ललितपुर	वर्षायोग	2020	गोम्मटसार
34.	राहतगढ़, सागर	शीतकाल	2020	जीवकाण्ड
35.	झालोन	ग्रीष्मकाल	2021	आत्मानुशासन

36.	लाखनादौन	वर्षायोग	2021	समयसार, तत्त्वसार
37.	डोंगरगाँव	शीतकाल	2022	प्रवचनसार
38.	अकलतरा	ग्रीष्माकाल	2022	अष्ट पाहुड़
39.	ईसरी	वर्षायोग	2022	पञ्चास्तिकाय, नियमसार
40.	सतना	शीतकाल	2023	प्रमेयरत्नमाला
41.	जबलपुर	ग्रीष्मकाल	2023	आलापपद्धति

6. विद्वत् संगोष्ठियाँ

क्र.	विषय	स्थान	सन्
1.	श्री आ.कुन्दकुन्द और उनका वाङ्मय।	श्री विशाखाचार्य तपोनिलय	2000
2.	तमिल साहित्य पर जैनाचार्यों का प्रभाव	,,	2000
3.	वर्तमान परिपेक्ष में षोडसकारण भावनाओं का व्यवहारिक रूप।	टीनशेड, टी.टी. नगर, भोपाल	2004
4.	सम्यग्दर्शन का महत्व।	सम्मेदशिखरजी	2005
5.	षट्काल व्यवस्था एवं काल परिवर्तन में निमित्त ज्योतिष्क विमान	अपर बाजार, राँची	2006
6.	रइधु कवि का अमूल्य साहित्य।	नया बाजार, ग्वालियर	2008
7.	जैन सिद्धान्त प्रवेशिका का शुद्धिकरण	जयपुर	2010
8.	अहिंसा धर्म और विज्ञान	जाबरी नसियाँ, इन्दौर	2013
9.	भ. महावीर और अहिंसा युवावर्ग में जैन धर्म की उपयोगिता।	पारस पैलेस, दमोह	2017
10.	तीर्थोदय-काव्योपरि सम्यग्ज्ञानवर्धन राष्ट्रीय संगोष्ठी।	अशोकागार्डन, भोपाल	2019

7. वेदी प्रतिष्ठायें

क्र.	स्थान	सन्
1.	पोन्नूरमलै (भ. महावीर की प्राचीन प्रतिमा)	1995
2.	एरम्बूर (मानस्तम्भ प्रतिष्ठा) (तमिलनाडु)	1998
3.	आयलवाड़ी (तमिलनाडु)	2000
4.	मोटूर ग्राम (तमिलनाडु)	2002
5.	डेरा पहाड़ी मानस्तम्भ प्रतिष्ठा छतरपुर (म.प्र.)	2008
6.	मेहगाँव (म.प्र.)	2008
7.	गायत्री नगर, जयपुर (राज.)	2009
8.	सांगाकान्, जयपुर (राज)	2010
9.	बावड़िया कलां, भोपाल (म.प्र.)	2016
10.	नन्हें मन्दिर, दमोह (म.प्र.)	2017
11.	सिविलवार्ड, दमोह (म.प्र.)	2017
12.	काकागंज, सागर (म.प्र.)	2019
13.	वर्धमान कॉलोनी, सागर (म.प्र.)	2019
14.	पथरिया (म.प्र.)	2023

8. पंचकल्याणक महोत्सव

क्र.	स्थान		तारीख	सन्
1.	शाहपुरा-भिटोनी जबलपुर (म.प्र.)	एक साथ	22 से 27 जनवरी तक	1985
2.	गंजबासौदा जि. विदिशा (म.प्र.)		8 फरवरी से 14 फरवरी तक	1985
3.	केसली जि. सागर (म.प्र.)		7 से 11 मार्च तक	1986
4.	नैनागिरि जि. छतरपुर (म.प्र.)		8 से 12 फरवरी तक	1987
5.	गोटेगाँव जि. नरसिंहपुर (म.प्र.)		15 से 20 फरवरी तक	1990
6.	सिरोंज जि. विदिशा (म.प्र.)		8 से 13 दिसम्बर तक	1989
7.	नरसिंहपुर (म.प्र.)		17 से 22 फरवरी तक	1990
8.	सि.क्षे. मुक्तागिरि जि. बैतूल		5 से 7 अक्टूबर तक	1990
9.	पोन्नूरमलै पहाड़ पर (तमिलनाडु)			1995
10.	चेय्यार (तमिलनाडु)		26 से 30 जून तक	1996
11.	एरम्बूर (तमिलनाडु)		17 से 21 फरवरी तक	1997
12.	श्री विशाखाचार्य तपोनिलय (तमिलनाडु)		21 से 26 फरवरी तक	1999
13.	नल्लवन पालयम् (तमिलनाडु)		19 से 23 जनवरी तक	2000
14.	पुदुकामूर (तमिलनाडु)		17 से 22 फरवरी तक	2002
15.	वेलूर (तमिलनाडु)		17 से 22 अप्रैल तक	2002
16.	सदलगा (कर्नाटक)		फरवरी	2003
17.	एशबाग, भोपाल (म.प्र.)		21 नवम्बर से 27 नवम्बर तक	2004
18.	अशोकागार्डन, भोपाल (म.प्र.)		27 अप्रैल से 2 मई तक	2005
19.	यू.पी. प्रकाश भवन सि.क्षे. सम्मेदशिखरजी (झारखण्ड)		1 जून से 8 जून तक	2006
20.	दमोह (म.प्र.)		27 से 1 फरवरी तक	2008
21.	पापलियान मन्दिर, जयपुर (राज.)		14 से 21 मई तक	2009
22.	दाँता-रामगढ़ जि.सीकर (राज.)		20 से 27 फरवरी तक	2011
23.	दमोह (म.प्र.)		25 फरवरी से 3 मार्च तक	2017

9. कलशारोहण महोत्सवः-

1.	विल्लई (तमिलनाडु)	1996
2.	काठूमलयनूर (तमिलनाडु)	2000
3.	कोपरगाँव (महा.)	2003
4.	वसुन्धरा नगर, दमोह (म.प्र.)	2007
5.	टीकमगढ़ (म.प्र.)	2008
6.	उदयपुर (राज.)	2012
7.	संगमनगर इन्दौर (म.प्र.)	2014

10. मूलनायक प्रतिमाएँ प्रतिष्ठित करवाने लाये:-

1.	पनरुट्टी (तमिलनाडु) से भ.श्री चन्द्रप्रभु आदि (पोन्नूरमलै तपोनिलय के पंचकल्याणक में)	1999
2.	अम्बत्तूर मद्रास से भ.श्री अजितनाथ आदि (पोन्नूरमलै तपोनिलय में)	1999
3.	त्रिरुवन्नामलै से भ. श्रेयांसनाथ आदि (सम्मेदशिखरजी के पंचकल्याणक में)	2006
4.	श्री विशाखाचार्य तपोनिलय के द्वितीय मन्दिर से भ. आदिनाथ आदि दमोह (म.प्र.) पंचकल्याणक में	2017

11. मानस्तम्भ की प्रतिमाएँ प्रतिष्ठित करवाने लाये:-

1.	सूरत आहुरानगर से आठ प्रतिमाएँ- एशबाग भोपाल के पंचकल्याणक में	2004

12. बृहद् मण्डल विधान महोत्सव:-

क्र.	स्थान	विधान का नाम	सन्
1.	शाहपुर (गणेशगंज) सागर (म.प्र.)	श्री सिद्धचक्र महामण्डल विधान	1986
2.	सि.क्षे. नैनागिरि (म.प्र.)	श्री सिद्धचक्र महामण्डल विधान	1987
3.	बण्डा, सागर (म.प्र.)	श्री त्रिलोक महामण्डल विधान	1987
4.	करेली, नरसिंहपुर (म.प्र.)	श्री सिद्धचक्र महामण्डल विधान	1989
5.	करंजा (महा.)	श्री सिद्धचक्र महामण्डल विधान	1991
6.	कोपरगाँव (महा.)	श्री सिद्धचक्र महामण्डल विधान	1991
7.	पोन्नूरमलै (तमिलनाडु)	श्री कल्पद्रुम महामण्डल विधान	1995
8.	तिरुमलै (तमिलनाडु)	श्री नन्दीश्वर महामण्डल विधान	1997
9.	श्री विशाखाचार्य तपोनिलय (तमिलनाडु)	श्री सिद्धचक्र महामण्डल विधान	1998
10.	पारोला (महा.)	श्री सिद्धचक्र महामण्डल विधान	2004
11.	पलासिया इन्दौर (म.प्र.)	श्री सिद्धचक्र महामण्डल विधान	2004
12.	सिहोर (म.प्र.)	श्री कल्पद्रुम महामण्डल विधान	2004
13.	पंचशील नगर, भोपाल(म.प्र.)	श्री समवशरण महामण्डल विधान	2004
14.	अशोकनगर (म.प्र.)	श्री इन्द्रध्वज महामण्डल विधान	2005
15.	ईशागढ़ (म.प्र.)	श्री सिद्धचक्र महामण्डल विधान	2005
16.	रांची (झारखण्ड)	श्री समवशरण महामण्डल विधान	2006
17.	रांची (झारखण्ड)	श्री सिद्धचक्र महामण्डल विधान	2006
18.	दमोह (म.प्र.)	श्री इन्द्रध्वज महामण्डल विधान	2007
19.	दमोह (म.प्र.)	श्री सिद्धचक्र महामण्डल विधान	2007
20.	सिविलवार्ड दमोह (म.प्र.)	श्री सिद्धचक्र महामण्डल विधान	2007
21.	छतरपुर डेरा पहाड़ी (म.प्र.)	श्री नन्दीश्वर महामण्डल विधान	2008
22.	ग्वालियर (म.प्र.)	श्री कल्पद्रुम महामण्डल विधान	2008
23.	विनय नगर, ग्वालियर (म.प्र.)	श्री सिद्धचक्र महामण्डल विधान	2008
24.	स्कीम-10, अलवर (राज.)	श्री नन्दीश्वर महामण्डल विधान	2010
25.	एस.एफ.एस. जयपुर (राज.)	श्री समवशरण महामण्डल विधान	2010
		श्री सिद्धचक्र महामण्डल विधान	2010

क्र.	स्थान	विधान का नाम	सन्
26.	मालवीय नगर (जयपुर)	श्री नन्दीश्वर महामण्डल विधान	2011
27.	राणोली (राज.)	श्री समवशरण महामण्डल विधान	2011
28.	रामगंज मंडी (राज.)	श्री समवशरण महामण्डल विधान	2012
29.	आहुरानगर-सूरत (गुजरात)	श्री समवशरण महामण्डल विधान	2013
30.	नेमिनगर-इन्दौर (म.प्र.)	श्री सिद्धचक्र महामण्डल विधान	2013
31.	नन्दा नगर-इन्दौर (म.प्र.)	श्री सिद्धचक्र महामण्डल विधान	2013
32.	उदयनगर-इन्दौर (म.प्र.)	श्री सिद्धचक्र महामण्डल विधान	2014
33.	खातेगाँव (म.प्र.)	श्री समवशरण महामण्डल विधान	2014
34.	खातेगाँव (म.प्र.)	श्री सिद्धचक्र महामण्डल विधान	2015
35.	सि.क्षे. तारंगाजी (गुजरात)	श्री समवशरण महामण्डल विधान	2015
36.	सि.क्षे. तारंगाजी (गुजरात)	श्री सिद्धचक्र महामण्डल विधान	2016
37.	जैन बोर्डिंग, उज्जैन (म.प्र.)	श्री समवशरण महामण्डल विधान	2016
38.	अशोकागार्डन, भोपाल (म.प्र.)	श्री कर्मदहन महामण्डल विधान	2016
39.	चौक मन्दिर, भोपाल (म.प्र.)	श्री जिनसहस्रनाम महामण्डल विधान	2016
40.	शंकराचार्य नगर, भोपाल (म.प्र.)	श्री सिद्धचक्र महामण्डल विधान	2017
41.	पुरवा, जबलपुर (म.प्र.)	श्री समवशरण महामण्डल विधान	2017
42.	पुरवा जबलपुर (म.प्र.)	श्री इन्द्रध्वज महामण्डल विधान	2018
43.	बण्डा, सागर (म.प्र.)	श्री सिद्धचक्र महामण्डल विधान	2018
44.	बण्डा, सागर (म.प्र.)	श्री सिद्धचक्र महामण्डल विधान	2019
45.	अशोकागार्डन, भोपाल (म.प्र.)	श्री लोककल्याण महामण्डल विधान	2019
46.	अशोकागार्डन, भोपाल (म.प्र.)	श्री लोककल्याण महामण्डल विधान	2020
47.	गुना (म.प्र.)	श्री लोककल्याण महामण्डल विधान	2020
48.	श्री पार्श्वनाथ अ.क्षे. क्षेत्रपाल-ललितपुर	श्री लोककल्याण महामण्डल विधान	2020
49.	राहतगढ़ (म.प्र.)	श्री सिद्धचक्र महामण्डल विधान	2021
50.	अंकुर कॉलोनी सागर (म.प्र.)	श्री सिद्धचक्र महामण्डल विधान	2021
51.	नेहानगर सागर	श्री लोककल्याण महामण्डल विधान	2021
52.	लखनादौन (म.प्र.)	श्री सिद्धचक्र महामण्डल विधान	2021
53.	लखनादौन (म.प्र.)	श्री लोककल्याण महामण्डल विधान्	2022
54.	ईसरी (पारसनाथ) (झारखण्ड)	श्री सिद्धचक्र महामण्डल विधान	2022
55.	ईसरी (पारसनाथ) (झारखण्ड)	श्री लोक कल्याण महामण्डल विधान	2022
56.	सतना (मध्यप्रदेश)	श्री सिद्धचक्र महामण्डल विधान	2023
57.	शिवनगर जबलपुर (म.प्र.)	श्री सिद्धचक्र महामण्डल विधान	2023
58.	अशोकनगर (म.प्र.)	श्री लोक कल्याण महामण्डल विधान	2023
59.	अशोकनगर (म.प्र.)	श्री समवसरण महामण्डल विधान	2023
60.	अशोकनगर (म.प्र.)	श्री सिद्धचक्र महामण्डल विधान	2024
61.	थूबोन जी, अशोकनगर	श्री लोक कल्याण महामण्डल विधान	2024
62.	दानिश कुंज, भोपाल	श्री लोक कल्याण महामण्डल विधान	2024
63.	पिड़ावा (राजस्ऊथान)		

13. डाक्टर्स सम्मेलन:-

क्र.	स्थान	सन्
1.	कोपरगाँव (महा.)	2003
2.	दमोह (म.प्र.)	2007
3.	ग्वालियर (म.प्र.)	2008
4.	अजमेर (राज.)	2009
5.	इन्दौर (म.प्र.)	2013
6.	नन्हें मन्दिर दमोह (म.प्र.)	2017
7.	अशोकागार्डन, भोपाल (म.प्र.)	2019

14. कवि सम्मेलन:-

क्र.	स्थान	सन्
1.	जयपुर (राज.)	2010
2.	दांता रामगढ़ (राज.)	2010
3.	रामगंजमंडी (राज.)	2011
4.	सूरत (गुज.)	2012
5.	इन्दौर (म.प्र.)	2013
6.	खातेगाँव (म.प्र.)	2014
7.	मण्डीदीप, रायसेन (म.प्र.)	2015
8.	पुरवा, जबलपुर (म.प्र.)	2016
9.	दमोह (म.प्र.)	2017
10.	अशोकागार्डन, भोपाल (म.प्र.)	2019

विशेष : प्रत्येक चातुर्मास में 2 अक्टूबर के आस-पास अहिंसा एवं वीतराग देव-शास्त्र-गुरु पर अनवरत जारी है।

15. अहिंसा शाकाहार सम्मेलन:-

क्र.		स्थान	सन्
1.	शाकाहार फेडरेशन	कोपरगाँव (महा.)	1991
2.	शाकाहार फेडरेशन	अहमदनगर (महा.)	1992
3.	शाकाहार सम्मेलन	करमाला (महा.)	1992
4.	शाकाहार फेडरेशन	श्रीरामपुर (महा.)	1991
5.	शाकाहार सम्मेलन	श्रवणबेलगोला (कर्ना.)	1993
6.	अहिंसा शाकाहार संगोष्ठी	पोन्नूरमलै (तमिल.)	1996
7.	अहिंसा शाकाहार सम्मेलन एवं रैली	तिरूवन्नामलै (तमिल.)	2000
8.	अहिंसा-शाकाहार संगोष्ठी एवं रैली	कोपरगाँव (महा.)	2003
9.	अहिंसा शाकाहार सम्मेलन	भोपाल	2004
10.	अहिंसा शाकाहार रैली	रांची (झारखण्ड)	2006
11.	शाकाहार सम्मेलन	दमोह (म.प्र.)	2007
12.	शाकाहार सम्मेलन	जयपुर (राज.)	2010
13.	शाकाहार सम्मेलन	रामगंजमंडी (राज.)	2011
14.	शाकाहार सम्मेलन	दमोह (म.प्र.)	2017

16. **आयुर्वेदिक डॉक्टर्स सम्मेलन-**

क्र.	स्थान	सन
1.	पोन्नूरमलै	1996
2.	भोपाल (मध्यप्रदेश)	2004
3.	सम्मेदशिखर जी (झारखण्ड)	2005
4.	राँची (म.प्र.)	2005
5.	जयपुर (राज.)	2010
6.	इन्दौर (म.प्र.)	2013
7.	भोपाल (म.प्र.)	2013
8.	अशोकनगर (म.प्र.)	2024
9.	पिड़ावा (राज.)	2024

17. **धार्मिक पाठशालाओं का शुभारंभ**- मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, कर्नाटक, तमिलनाडु, उत्तरप्रदेश, विहार, झारखण्ड, बंगाल, राजस्थान, हरियाणा, दिल्ली, और गुजरात आदि राज्यों के करीब शताधिक ग्राम व नगरों में पाठशालाएँ गुरुवर आर्जवसागरजी की पावन प्रेरणा से स्थापित की गईं।

18. **पाठशाला सम्मेलनः-**

क्र.	स्थान	सन्
1.	पोन्नूरमलै (तमिलनाडू)	1998
2.	तिजारा (अ.क्षे.) (राज.)	2010
3.	रामगंजमंडी (राज.)	2011
4.	नसीराबाद (राज.)	2012
5.	सूरत (गुज.)	2012
6.	इन्दौर (म.प्र.)	2013
7.	खातेगाँव (म.प्र.)	2014
8.	दमोह (म.प्र.)	2017
9.	पुरवा, जबलपुर (म.प्र.)	2017
10.	शाहपुर, सागर (म.प्र.)	2018
11.	बण्डा, सागर (म.प्र.)	2018
12.	अशोकागार्डन, भोपाल (म.प्र.)	2019
13.	लखनादौन (म.प्र.)	2021
14.	ईसरी पारसनाथ (झारखण्ड)	2022
15.	लार्डगंज, जबलपुर (म.प्र.)	2023
16.	अशोकनगर (म.प्र.)	2023
17.	पिड़ावा (राजस्थान)	2024

19. **श्रावक साधना संस्कार शिविर (कार्यक्रम)**- सन् 1996 पोन्नूरमलै क्षेत्र के वर्षायोग से लेकर अभी तक लगातार बृहत् आयोजन हो रहा है।

20. **षोडसकारण व्रत भाद्रपद मासिक सामूहिक आयोजनः-**
विशाखाचार्य तपोनिलय सन् 1998 से प्रारम्भ हुआ और अनवरत चालू (जारी) है। जिसमें 32 दिनों

तक लगातार सामूहिक संगीतमय पूजन का आयोजन होता है।

21. अल्पसंख्यक सेमीनार:-

दमोह नगर में सन् 2017 में सम्पन्न हुआ था

22. धार्मिक कण्ठपाठ प्रतियोगिता:- दीपावली पर्व के निकट आबाल वृद्धों के लिए स्तुति, स्तोत्र, ग्रंथ आदि अनेक विषय पर बिना देखे सुनाने रूप प्रतियोगिता सन् 1996 से प्रतिवर्ष हो रही है।

23. अन्यमत एवं वेशधारियों का आगमन:-

1.	श्वेताम्बर साधु (उदयराज महाराज आदि पाँच)	1991	अमरावती (म.हा)
2.	मादन हिप्परगा व जिडगा हिन्दु मठ वाले साधु	1992	आलंद नगर (कर्ना.)
3.	चारुकीर्ति मठाधिपति (तीन बार)	1988, 1993, 1995	श्रवणबेलगोला (कर्ना.)
4.	कार्कल भट्टारक	1994	कारकल
5.	चित्तामूर मठाधिपति	1995	पोन्नूरमलै (तमिल.)
6.	मूढ़बिद्री भट्टारक	1999	नल्लवन पालयम् (तमिल.)
7.	धवलकीर्ति भट्टराक	2002	पोलूर के पास (तमिल.)
8.	वीरेन्द्र हेगड़े, सुरेन्द्र हेगड़े	1993/2016	धर्मस्थल (कर्ना.)
10.	हिन्दुमठ साधु	1999	नल्लवन पालयम् (तमिल.)
11.	श्वेताम्बर साधु	2010	लाडँनू (राज.)
12.	महंत राम युवराज मल्लाहगढ़	2024	मुँगावली (म.प्र.)

24. जेल में प्रवचन (कैदियों के बीच)

1.	जिला जेल-दमोह	2017
2.	केन्द्रीय जेल- सागर	2019

25. स्कूल, विद्यालयों छात्रावासों में विद्यार्थियों के बीच प्रवचन-

कारंजा, राँची (डी.ए.वी. स्कूल, जैन स्कूल) दमोह, सांगानेर, कुचामनसिटी, रेवाड़ी (हिन्दी मीडियम व अंग्रेजी मीडियम दो जैन स्कूलों ने) राणोली, जबलपुर (किट्स केम्प....) शाहपुर, डोंगरगढ़ (प्रतिभा स्थली), डोंगरगांव, नावा पारा (राजिम), भगतपुर, बनारस (भदैनी घाट) और ईसरी आदि अनेक स्थलों पर प्रवचन।

25. सिद्धक्षेत्र दर्शन:-

1. सम्मेदशिखरजी (पाँच बार में 19 वंदनाएँ एक परिक्रमा)
2. चम्पापुरी
3. पावापुरी (दो बार)
4. गिरनार (दो बार)
5. मांगीतुंगी
6. गजपंथा
7. अहारजी (दो बार)
8. नैनागिरि (चार बार)
9. द्रोणगिरि (दो बार)
10. सोनागिरि (तीन बार)
11. कुण्डलपुर-दमोह (कई बार)
12. मुक्तागिरि
13. कुन्थलगिरि
14. चूलगिरि (बावनगजा) (तीन बार)
15. सिद्धवरकूट (चार बार)
16. राजगृही (दो बार)

17. गुणावा (दो बार)
18. पावागिरि (चार बार)
19. ग्वालियर किला (वर्द्धमान मन्दिर) (कई बार)
20. मथुरा चौरासी
21. तारंगाजी (दो बार)
22. शत्रुंजय (दो बार)
23. पावागढ़
24. ऊन पावाजी
25. नेमावर (सिद्धोदय)
26. शौर्यपुर (बटेश्वर),

26. अतिशय क्षेत्र दर्शनः-

1. हस्तिनागपुर (हस्तिनापुर)
2. पपौराजी (चार बार)
3. थोबोनजी (चार बार)
4. देवगढ़ (दो बार)
5. वरनावाँ
6. बरासौं
7. मौजुवाबाद
8. धार
9. मढ़ियाजी (कई बार)
10. खंदारगिरि (दो बार)
11. सेरोन जी (कई बार)
12. खजुराहो
13. कोनीजी (दो बार)
14. ईशुरवारा
15. पजनारी
16. बहोरीबंद
17. गढ़ाकोटा, पटेरियाजी (कई बार)
18. डेरा पहाड़ी, छतरपुर
19. मक्सी जी,
20. समसगढ़, भोपाल (कई बार)
21. भोजपुर, भोपाल (तीन बार)
22. काकागंज, सागर
23. भद्दलपुर
24. कुराना (दो बार)
25. बनेड़िया जी
26. पनागर (दो बार)
27. बंधाजी
28. उज्जैन
29. करगुवांजी (चार बार)
30. महावीरजी
31. तिजारा
32. केशवराय पाटन
33. सांगानेर
34. बिजौलिया
37. भेलुपुरम
38. सारनाथ
39. चन्द्रपुरी
40. पद्मपुरा
41. प्रयाग (दो बार)
42. बड़ागाँव
43. कारंजा
44. अन्तरिक्ष पार्श्वनाथ
45. भातकुली
46. जिन्तूर, नेमिगिरि
47. कचनेर
48. पैठण
49. दहीगाँव
50. कुण्डल (महा.)
51. कुम्भोज
52. हलंगड़ी
53. एलोरा
54. धर्मस्थल
55. कार्कल
56. पोन्नूरमलै (कई बार)

57. तिरुपत्तिकुण्डरम्(कांचीपुरम्)(दो बार)
58. त्रिरुनादर कुण्ड्रम्
59. त्रिरुमलै (दो बार)
60. अनंत मंगलम्
61. सियामंगलम्
62. सिन्जीमलै
63. तरकोविल
64. यण्णारम्मलै
65. बनारस (तीन बार)
66. घोघा (दो बार)
67. बजरंगगढ़
68. सेसई (नौगजा)
69. बुंधारा
70. साखना
71. कैथुली
72. चित्तौड़गढ़
73. सालेड़ा
74. सजोद
75. तेरदाल (गुफाएँ)
76. कोन्नूर (गुफाएँ)
77. श्रवणबेलगोला
78. मूडबिद्री
79. वरांग
80. तिरुनरुकुण्डरम्
81. करैन्दै
82. चांदखेड़ी
83. महुआ पार्श्वनाथ
84. कागदिपुरा
85. सेरोनजी
86. अ.क्षे.भ.अभिनन्दन तीर्थ-क्षे.पा. ललितपुर (छह बार)
87. डोंगरगढ़ (छ.ग.)
88. प्रभासगिरि (उ.प्र.)

27. क्षेत्रों पर हुए मेलों में सन्निधि व प्रवचन

1.	कुण्डलपुर (बड़े बाबा) (म.प्र.)	कईबार
2.	श्रवणबेलगोला (कर्नाटक)	1993
3.	चन्द्रगिरि तुमकूर (कर्नाटक)	1995
4.	पोन्नूरमलै (तमिलनाडू)	1996,97,98
5.	सम्मेदशिखरजी (झारखण्ड)	2006
6.	बंधाजी क्षेत्र (म.प्र.)	2008
7.	तिजाराजी (राजस्थान)	2010
8.	हस्तिनागपुर (हस्तिनापुर) (उ.प्र.)	2010
9.	बावनगजा (म.प्र.)	2013
10.	ऊन पावागिरि (म.प्र.)	2014
11.	सिद्धवरकूट (म.प्र.)	2015
12.	मक्सीजी (म.प्र.)	2016
13.	बहोरीबंद (म.प्र.)	2017
14.	पजनारी बण्डा (म.प्र.)	2018
15.	पटेरियाजी गढ़ाकोटा (म.प्र.)	2019
16.	सोनागिरि (म.प्र.)	2020

28. गृहस्थ जीवन (बाल्यायुवावस्था) में जिन विशेष व्यक्तियों को देखा:-

1. श्रीमती इन्दिरागांधी (प्रधानमंत्री)
2. श्री राजीव गांधी
3. श्री अर्जुनसिंह (मुख्यमंत्री)
4. कहान भाई, सोनगढ़ (साक्षात्कार हुआ)

29. विशिष्ठ विद्वान व वैज्ञानिक पधारे गुरुदर्शन के लिए:-

1. श्री कैलाश शास्त्री
2. पं. श्री जगन्मोहनलाल शास्त्री कटनी
3. पं.श्री पन्नालाल साहित्याचार्य सागर वाले (जबलपुर)
4. पं.श्री जवाहरलाल शास्त्री भीण्डर
5. पं.श्री मूलचन्द्र लुहाड़िया किशनगढ़
6. पं. बा.ब्र. रतनलाल शास्त्री इन्दौर
7. पं. फूलचन्द शास्त्री
8. पं. बालचंद शास्त्री
9. पं. दरबारी लाल कोठिया
10. पं. श्री शिवचरणलाल जी मैनपुरी
11. पं. डॉ. रतनचन्द्र जी जैन भोपाल
12. पं. निरंजनलालजी बैनाड़ा आगरा
13. पं. रतनलाल जी बैनाड़ा आगरा
14. पं. जयकुमारजी जैन मुजफ्फरनगर
15. पं. डॉ. श्रेयांसकुमारजी बड़ौत
16. पं.श्री प्राचार्य निहालचन्द जी बीना
17. डॉ. श्री एल.सी. जैन जबलपुर
18. पं.श्री लालचन्द्रजी 'राकेश' गंजबासौदा
19. पं. प्राचार्य-नरेन्द्र प्रकाश जैन फिरोजाबाद
20. पं. गुलाबचन्द्र 'पुष्प' टीकमगढ़
21. पं. ब्र. जयकुमार 'निशान्त' टीकमगढ़
22. पं. डॉ. शीतलचन्द्र जी- जयपुर
23. पं. विजयकुमार जैन- तमिलनाडू
25. पं.श्री सिंहचन्द्र शास्त्री-तमिलनाडू
26. पं. भागचन्द्र भागेन्दु- दमोह
27. पं. नीरज जैन एवं निर्मल जैन-सतना
28. डॉ. देवकुमार जैन- दिल्ली (वैज्ञानिक)
29. श्री एस.के. जैन-मुंबई (वैज्ञानिक)
30. पं. उदयचंद शास्त्री-उदयपुर
31. पं. अमरचंद शास्त्री- शाहपुर-गणेशगंज
32. पं. सनतकुमार एवं विनोदकुमार शास्त्री-रजवांस
33. श्री हुकुमचंद भारिल्ल- जयपुर
34. पं. धनराज जैन-बड़ागाँव
35. डॉ. पी.सी. पहाड़िया (राज.)
36. पं. महेश शास्त्री सतना
37. पं.ब्र. जिनेश शास्त्री सागर
38. पं.ब्र. महेश शास्त्री सागर
39. पं.ब्र. राकेश शास्त्री सागर
40. पं.दयाचन्द जी शास्त्री महावीर जी
42. प्रो. अनुपम जैन इन्दौर
43. ब्र. जिनेश मलैया इन्दौर
44. डॉ.ज्योति बाबू जैन, उदयपुर
45. डॉ.कमलेश जैन, बनारस
46. प्रो.डॉ. अशोक जैन, बनारस
47. डॉ. आकाश शास्त्री, बनारस
48. डॉ. आशीष शास्त्री, दमोह
49. डॉ. अभिषेक शास्त्री, दमोह
50. डॉ. सुशील जैन, मैनपुरी
51. श्री सिद्धार्थ जैन, सतना
52. डॉ. अरविन्द सराफ जैन, सतना
53. ब्र. पुष्पेन्द्र जैन, दिल्ली
54. पं. विकर्ष शास्त्री, दिल्ली
55. पं.ब्र. रवीन्द्र भैया, मुरैना वाले
56. ब्र.संजय भैया, मुरैना वाले
57. प. पुलक शास्त्री, जबलपुर
58. प्र.अमित शास्त्री, जबलपुर
59. पं. अशोक दानी, जबलपुर

30. दर्शनार्थ पधारे मंत्रीगण, प्रशासनिक अधिकारी व मुख्य अतिथिगण:-

क्र.	कौन	कब	कहाँ
1.	मुख्यमंत्री श्री मोतीलाल वोरा	1988	जबलपुर (म.प्र.)
2.	श्री शंकरराव कोले विधायक	1991	कोपरगाँव (महा.)
3.	डॉ.के.एम गंगवाल	1991	कोपरगाँव (महा.)
4.	श्री अभय दगड़ा कोपरगाँव	1992, 2003, 2004	कोपरगाँव (महा.)
5.	श्री दिगम्बरराव कड़मंकर (विधानसभा स्पीकर बेंगलोर)	1992	आलंद (कर्ना.)
6.	श्री रमेशचंद चौविश्या (पूर्व नगर अध्यक्ष)	1992	जालना (महा.)
7.	श्री रमणलाल दोशी (पूर्व नगर अध्यक्ष)	1992	करमाला (महा.)
8.	प्रधानमंत्री श्री देवगोड़ा	1993	श्रवणबेलगोला (कर्ना.)
9.	राष्ट्रपति श्री शंकरदयाल शर्मा	1993	श्रवणबेलगोला (कर्ना.)
10.	मुख्यमंत्री श्री देवम्पन मोहली (बेंगलोर)	1993	श्रवणबेलगोला (कर्ना.)
11.	श्रीपालन् जैन (I.P.S.) (D.G.P.)	1995 में प्रथम बार	तमिलनाडु
12.	श्री ऐरावत महादेवन (I.A.S.)	1998	तमिलनाडु
13.	श्री पिच्चाण्डी (M.L.A.) हाउसिंग बोर्ड मिनिस्टर	1999, 2000	तमिलनाडु
14.	श्री सम्मुग राजेश्वरणन (S.P.)	2000	पोन्नूरमलै तमिलनाडु
15.	श्री विजयकुमार (S.P.)	02-01-2000	तिरूवन्नामलै
16.	श्री डी.एस..... दिनकर (स्वतंत्रता संग्रामी) (प्रदेश सचिव कांग्रेस पार्टी)	2003	शिमोग्गा (कर्ना.)
17.	बाबूलाल पाटोदी इन्दौर (पूर्व सांसद)	2004	गोम्मटगिरि (इंदौर)
18.	मुख्यमंत्री श्री बाबूलाल गौर	2004	टी.टी. नगर भोपाल (म.प्र.)
19.	श्री उमाशंकर गुप्ता (परिवहन मंत्री)	2004	एशबाग भोपाल (म.प्र.)
20.	श्री डी.पी. सिंह (कुलपति सागर विश्व विद्यालय)	2004 में प्रथम बार	टी.टी.नगर भोपाल (म.प्र.)
21.	श्री पारस जैन (राज्यशिक्षा मंत्री)	2005	अशोकनगर (म.प्र.)
22.	श्री अजयमारु (सांसद)	2006	राँची (झारखण्ड)
23.	श्री एम.पी. अजमेरा (पूर्व कलेक्टर)	2006	राँची (झारखण्ड)
24.	श्री प्रवीण तोगड़िया (राष्ट्रीय महासचिव विश्व हिन्दु परिषद्)	2006	गिरीडीह (झारखण्ड)
25.	श्री महापात्रा जी (डी.जी.पी.)	2006	राँची (झारखण्ड)
26.	श्री आर.सी. जैन (हाईकोर्ट जज) (दिल्ली)	2006	सम्मेदशिखरजी (झारखण्ड)
27.	श्री जयंत मलैया (उद्योगमंत्री)	2007 में प्रथमबार	दमोह (म.प्र.)
28.	श्री मुकेश नायक (पूर्व शिक्षा मंत्री)	2007	दमोह (म.प्र.)
29.	श्री कपूरचंद घुवारा (विधायक)	2008	छतरपुर (म.प्र.)

क्र.	कौन	कब	कहाँ
30.	श्री विवेक नारायण शेजलकर (महापौर)	2008	ग्वालियर (म.प्र.)
31.	श्री एन.के. त्रिपाठी (कमिश्नर ट्रांसपोर्ट)	2008	ग्वालियर (म.प्र.)
32.	श्री आर.के. जैन (अपरकलेक्टर)	2008	ग्वालियर (म.प्र.)
33.	श्री आकाश त्रिपाठी (कलेक्टर)	2008	ग्वालियर (म.प्र.)
34.	श्री अभय चौधरी (बी.जे.पी जिला अध्यक्ष)	2008	ग्वालियर (म.प्र.)
35.	श्री डालचंद जी (पूर्व सांसद सागर)	2008	ग्वालियर (म.प्र.)
36.	श्री प्रदीप जैन विधायक (झांसी)	2008	झांसी (म.प्र.)
37.	श्री जयभानसिंह पवैया (सांसद)	2008	ग्वालियर (म.प्र.)
38.	श्री ज्योतिरादित्य सिंधिया (सेन्ट्रल मिनिस्टर)	2008	ग्वालियर (म.प्र.)
39.	श्री अनूप मिश्रा (जल संसाधन मंत्री)	2008	ग्वालियर (म.प्र.)
40.	श्री नरेन्द्र सिंह तोमर मंत्री	2008	ग्वालियर (म.प्र.)
41.	श्री शरद जैन (वेद) कमिश्नर	2007	रीवा (म.प्र.)
42.	श्री प्रदीप जैन (सिविल जज)	2008	टीकमगढ़ (म.प्र.)
43.	श्री डॉ.राधारमणजी (कुलसचिव जी.वि.वि.)	2008	ग्वालियर (म.प्र.)
44.	श्री ए.के. जैन (जिला जज)	2008	टीकमगढ़ (म.प्र.)
45.	श्री राजेन्द्र सिंघई (पूर्व जिला अध्यक्ष)	2007	दमोह (म.प्र.)
46.	श्री रतनचंद जैन (पूर्व जिला अध्यक्ष)	2007	दमोह (म.प्र.)
47.	श्री महेशजी जोशी (सांसद)	2009	जयपुर (राज.)
48.	श्री रवीन्द्र मालव (एड.)	2008	ग्वालियर (म.प्र.)
49.	श्री खिल्लीमल जैन (एड.) (नि.ज.आ.अध्यक्ष)	2008	अलवर (राज.)
50.	श्री मोहनलाल गुप्ता विधायक	2009	जयपुर (राज.)
51.	श्री पंकज जोशी महापौर	2009	जयपुर (राज.)
52.	सचिन पायलट (सेन्ट्रल मिनिस्टर)	2009	अजमेर (राज.)
53.	श्री कमल पहाड़िया (भाजपा कोषाध्यक्ष)	2009	कुचामन सिटी (राज.)
54.	श्री यूनिसखान (पूर्व यातायात मंत्री)	2009	जयपुर (राज.)
55.	श्री हरीश कुमावत (पूर्व विधायक)	2009	जसुनी (राज.)
56.	श्री गोरूराम कुमावत (नगर अध्यक्ष)	2009	कुचामन सिटी (राज.)
57.	श्री पुखराज पहाड़िया (जिला परिषद् अध्यक्ष)	2009	अजमेर (राज.)
58.	श्री हृदयमोहन जी विदिशा (पूर्व सांसद)	2009	अजमेर
59.	श्री अनिल जैन (डी.एस.पी.) (एस.पी.)	2009, 2015	जयपुर (राज.) डूगरपुर
60.	श्री अशोक गहलोत (राजस्थान मुख्यमंत्री)	2009	महावीरजी (राज.)
61.	श्री ज्योति खण्डेलावाल (महापौर)	2010	जयपुर (राज.)
62.	श्री अरुण चतुर्वेदी (भाजपा प्रदेशाध्यक्ष)	2010	जयपुर(राज.)
63.	श्री अनिल बम्ब (पार्षद)	2010	जयपुर (राज.)
64.	श्रीमती आशाअरुण काला (पार्षद)	2010	जयपुर (राज.)

क्र.	कौन	कब	कहाँ
65.	श्री डॉ. डी.सी. जैन	2010	दिल्ली
66.	श्री गोपीलाल जी 'अमर' (भा.ज्ञानपीठ)	2010	दिल्ली
67.	श्री डॉ.एन.सी. जैन (रा.वि.वि.उपकुलपति)	2010	दिल्ली
68.	श्री डॉ. पी.सी. जैन (रा. यूनवर्सिटी)	2010	जयपुर (राज.)
69.	डॉ. जिनेन्द्र जैन (जै.वि.वि)	2010	लाडनूँ
70.	श्री कर्णसिंह यादव (जैन) हवलदार	2010	दिल्ली
71.	श्री राहुल जैन (आई.पी.एस.)	2010	महरोली (दिल्ली)
72.	श्रीमति रीता चौधरी (जि.अध्यक्ष)	2011	दाताँ (राज.)
73.	श्री सीताराम लम्बा (जि.पार्षद)	2011	दाताँ (राज.)
74.	श्री धर्मेन्द्र भटनागर (जि.कलेक्टर)	2011	दाताँ (राज.)
75.	श्री कृष्ण कन्हैया गोयल (उपजिला कलेक्टर)	2011	रामगंजमंडी (राज.)
76.	श्री अनिल जैन (एम.एल.ए. एवं एस.डी.एम.)	2011	चांदखेडी (राज.)
77.	श्री नारायण सिंह चरण (उपखण्डाधिकारी)	2011	चांदखेड़ी (राज.)
78.	श्री हनुमानसिंह गुर्जर (ए.डी.एम.) (कोटा)	2011	रामगंजमण्डी (राज.)
79.	श्रीमति सुमित्रा महाजन (सांसद)	2013	इन्दौर (म.प्र.)
80.	श्री महेन्द्र हर्डिया (राज्य मंत्री)	2013	इन्दौर (म.प्र.)
81.	श्री राजेन्द्र वर्मा (विधायक) (सोनकच्छ)	2013	इन्दौर (म.प्र.)
82.	श्री हुकुमचंद सांवला (अन्तर्राष्ट्रीय उपाध्यक्ष विश्वहिन्दु परिषद्) इन्दौर	2013	इन्दौर (म.प्र.)
83.	श्री कृष्णमुरारी मोघे (महापौर)	2013	इन्दौर (म.प्र.)
84.	श्री आदेश जैन (सिविल जज)	2013	इन्दौर (म.प्र.)
85.	श्री सुरेन्द्र जैन (नगर अध्यक्ष)	2014	हरदा (म.प्र.)
86.	श्री राजकुमार जैन (नगर अध्यक्ष)	2014	मनावर (म.प्र.)
87.	श्री संजय जैन (जज)	2015	खरगोन (म.प्र.)
88.	श्री शोभित जैन (कलेक्टर)	2015	बड़वानी (म.प्र.)
89.	श्री राजेन्द्र वर्मा (विधायक)	2016	सोनकच्छ (म.प्र.)
90.	श्री मयंक चांदीवाल (डी.एफ.ओ.)	2017	जबलपुर (म.प्र.)
91.	श्री प्रताप सींग लोधी (विधायक)	2018	जबेरा (म.प्र.)
92.	श्री लक्षमण सींग (नगर अध्यक्ष)	2018	पथरिया (म.प्र.)
93.	श्री आर.के. दिवाकर (डी.जी.पी.)	2004, 2019	भोपाल (म.प्र.)
94.	श्री डॉ. सुधीर जैन (कमिश्नर)	2019	भोपाल (म.प्र.)
95.	श्री अशोक सेठी, राहुल सेठी (एड.)	2013	इन्दौर (म.प्र.)
96.	श्री संजय पाठक (लघु व मध्यम उद्योग मंत्री) कटनी	2017	बोहरीबंद (म.प्र.)
97.	श्री शशांक श्रीवास्तव (महापौर) कटनी	2017	बोहरीबंद(म.प्र.)
98.	श्री रमेश मेन्दोला (विधायक)	2013	इन्दौर (म.प्र.)

क्र.	कौन	कब	कहाँ
99.	श्री सुदर्शन गुप्ता (विधायक)	2013	इन्दौर (म.प्र.)
100.	श्री अश्विन जोशी (विधायक)	2013	इन्दौर (म.प्र.)
101.	श्री एस.एल. जैन (जज)	2013	इन्दौर (म.प्र.)
102.	श्री एन.के. जैन (चीफजस्टिस सिक्कम)	2013	इन्दौर (म.प्र.)
103.	श्री आशीष शर्मा (विधायक)	2011	खातेगाँव (म.प्र.)
104.	श्री शैलेन्द्र जैन (विधायक)	2019	सागर (म.प्र.)
105.	श्री सुभाष जैन कलेक्टर	2019	भोपाल (म.प्र.)
106.	श्री विश्वास सारंग (विधायक)	2019	भोपाल (म.प्र.)
107.	श्री आलोक संजर (सांसद)	2019	भोपाल (म.प्र.)
108.	श्री दीपक चौधरी (जज) (गुना वाले) भितरवार	2020	सोनागिरि (म.प्र.)
109.	श्री प्रशान्त जैन वाइस चान्सलर (Sage University)	2019	भोपाल (म.प्र.)
110.	श्री वी. अजय जशवन्त आई.ए.एस.	2019	भोपाल (म.प्र.)
111.	श्री प्रदीप जैन (पूर्व केन्द्रीय मंत्री)	2020	झाँसी
112.	श्री मोहम्मद कमर (SDM)	2020	तालबेहट
113.	श्री योगेश कुमार शुक्ल (कलेक्टर)	2020	ललितपुर
114.	श्री सुभाष भगत (भा.ज.पा.संगठन मंत्री)	2021	दमोह
115.	श्री प्रहलाद सिंह पटैल (केन्द्रीय मंत्री)	2021	दमोह
116.	श्री प्रद्युम्न सींग लोधी (विधायक बड़ामलहरा)	2021	दमोह
117.	श्रीमती लीना जैन (विधायक गंजबासौदा)	2021	दमोह
118.	डॉ. सुधा मलैया (पूर्व राष्ट्रीय महासचिव भा.ज.पा.)	2021	दमोह
119.	श्री मुनमुन राय (विधायक सिवनी)	2021	लखनादौन
120.	श्री सिद्धार्थ जैन आईएएस (एसडीएम)	2021	लखनादौन
121.	श्री ओमप्रकाश सकलेचा (लघु व मध्यम उद्योग मंत्री)	2021	लखनादौन
122.	श्री अभिजीत जैन नांदगांवकर (जिला जज)	2021	लखनादौन
123.	श्री सुनील जैन (अजमेरा) (आई.ए.एस.)	2022	भाटापारा
124.	श्री प्रदीप जैन (पूर्व जिलाध्यक्ष)	2022	ईसरी
125.	डॉ. सुधीर जैन (कमिश्नर)	2020	ईसरी
126.	सुरेश जैन आर.एस.एस. दिल्ली (भा.वि.प.)	2023	सतना
127.	डॉ. शेखर जैन बुढार (भा.वि.प.प्रा.अ.)	2023	सतना
128.	सुनील जैन (DIG)	2023	कटनी
129.	श्री जगत् बहादुर सींग (महापौर)	2023	जबलपुर
130.	श्री विनय सक्सैना (विधायक)	2023	जबलपुर
131.	सनत् जैन (पूर्व मंत्री पंचायत सभा)	2023	जबलपुर
132.	एम.एल.ए. जजपाल सींग जज्जी	2023	अशोकनगर

क्र.	कौन	कब	कहाँ
133.	चंदेरी पूर्व विधायक गोपाल सींग डग्गीराजा	2023	अशोकनगर
134.	पूर्व मंत्री जयवर्धन सिंह दिग्विजय सिंह के सुपुत्र	2023	अशोकनगर
135.	पूर्व (भा.ज.प.) जिलाध्यक्ष-जयकुमार सिंघई	2023	अशोकनगर
136.	संयुक्त कलेक्टर सोनम जैन	2023	अशोकनगर
137.	विश्व हिंदु परिषद् जिलाध्यक्ष दिनेश जैन महिदपुर	2023	अशोकनगर
138.	अशोकनगर पार्षद शालिनी खैरा	2023	अशोकनगर
139.	डिस्ट्रिक्ट जज पवन शर्मा बड़ौत	2023	अशोकनगर
140.	नगर पालिका अध्यक्ष- नीरज मनोरिया	2023	अशोकनगर
141.	नेता प्रतिपक्ष-रीतेश जैन	2023	अशोकनगर
142.	भिण्ड (एस.पी.) पराग जैन	2023	अशोकनगर
143.	दिल्ली प्रदेश के अध्यक्ष नेता प्रतिपक्ष ब्रजेन्द्र जी गुप्ता (एम.एल.ए.)	2023	अशोकनगर
144.	डॉ. वी.के. जैन (सेज यूनिवर्सिटी, भोपाल)	2023	अशोकनगर
145.	अनिल जैन डिप्टी कमिश्नर भोपाल	2023	अशोकनगर
146.	रिटायर्ड डिप्टी कमिश्नर अनिल कुमार जैन, भीलवाड़ा	2023	अशोकनगर
147.	मुख्यमंत्री श्री शिवराजसिंह चौहान	2024	विदिशा
148.	भारत वर्षीय दि. जैन महा सभा के राष्ट्रीय महामंत्री प्रकाशचन्द बड़जात्या चेन्नई	2024	पिड़ावा

31. गुरु दर्शनार्थ पधारे विशेष भक्त व आहार विहार आदि में सहयोगी श्रेष्ठी वर्ग:-

1. श्री अशोक साहू दिल्ली
2. श्री निर्मल सेठी दिल्ली
3. श्री रमेश साहू दिल्ली
4. श्री आर.के. जैन (महासमिति अध्यक्ष)
5. श्री निर्मल सोनी अजमेर
6. श्री गणेश राणा जयपुर
7. श्री मदनलाल बैनाड़ा आगरा
8. श्री महावीर कासलीवाल जयपुर
9. श्री कमल काला जयपुर
10. श्री चक्रेश जैन रामगंजमंडी
11. श्री राहुल जैन उदयपुर
12. श्री अशोक पाटनी किशनगढ़
13. श्री जीवेन्द्र जैन गाजियाबाद
14. श्री कैलाश जौहरी गुड़गाँव
15. श्री झमकलाल टाया उदयपुर
16. श्री ओमप्रकाश जैन सूरत
17. श्री नरेश भाई जैन सूरत (दिल्ली वाले)
18. श्री सुरेश भाई गांधी सूरत
19. श्री अरविन्द भाई गांधी सूरत
20. श्री हर्षद् भाई मेहता सूरत
21. श्री विपुल भाई मेहता सूरत
22. श्री राजकुमार काला कोपरगाँव
23. श्री बुधराज कासलीवाल पाण्डिचेरी
24. श्री सोहनलाल कोठारी सेलम
25. श्री सुशील गंगवाल पाण्डिचेरी
26. श्री मनीष मार्बल्स मदुरै
27. श्री डॉ. जिनदास नैनार चैन्नै
28. श्री वृषभदास नैनार कन्नलम
29. श्री गौतमचंद सुराणा, मद्रास
30. श्री एम.सी. अनन्तराजय्या बैंगलोर
31. श्री पच्चण्णा जैन बैंगलोर
32. श्री विमुक्तकुमार जैन बैंगलोर
33. श्री विजयकुमार दिनकर जैन (शिमोग्गा)
34. श्री गुडप्पा कान्ते सांगली
35. श्री देवदास जैन
36. श्री प्रसन्नकुमार जैन इंजीनियर (बेंगलूर)
37. श्री अजित पाटनी भोपाल
38. सेल्वराज, सी.कुमार, राजशेखरन् आदि (तमिलनाडू)
39. श्री संतोष सिंघई, राजेश फुटेरा, दमोह
40. श्री कन्हैयालाल सेठी औरंगाबाद (बिहार)
41. श्री महावीर काला कोलकत्ता
42. श्री संजय सौगानी, गौतम काला राँची
43. श्री विमल सेठी गया
44. डॉ. एस.एम.जैन ग्वालियर
45. श्री महावीर जैन (माचिस वाले) गुड़गाँव
46. श्री लोकेश जैन दिल्ली
47. श्री छीतरमल पाटनी हजारीबाग
48. श्री मनोजकुमार टोंग्या भोपाल
49. श्री प्रमोद हिमांशु भोपाल
50. श्री मनोजकुमार पट्ठा खातेगाँव
51. श्री डॉ. कनुभाई जूनागढ़
49. श्री पारस जैन संगमनगर इन्दौर
52. श्री प्रदीप कासलीवाल इन्दौर
53. श्री सुन्दरलाल जी इन्दौर
54. श्री संजय जैन मैक्स इन्दौर
55. श्री भानुकुमार जैन इन्दौर
56. श्री सलिल बड़जात्या नेमिनगर (इन्दौर)
57. श्री विजय पहाड़िया, विनोद, नितेश, मण्डीदीप
58. श्री अशोक ठेकेदार-बण्डा
59. श्री अजित जैन-कटनी
60. श्री अशोक जैन-हाटपीपल्या
61. श्री कुन्थुलालजी जैन-नसीराबाद
62. श्री सचिन जैन तिलक नगर इन्दौर

63. श्री महावीर सोगानी राँची
64. श्री सुनील, राजेश जैन जौहरी-भोपाल, दिल्ली
65. श्री कमलेश, राजेश चौधरी, पद्म, सुभाष, संजय, अरविन्द जैन-पथरिया
66. दमोह-श्री राजेश, सजल जैन फुटेरा वाले प्रवीण, चन्द्रकुमार
67. सुनील, संजीव, भरत, नरेन्द्र पद्म लहरी,श्री रूपचन्द, महेश जैन, महेन्द्र जैन, डॉ. अजित जैन, डॉ. सुधीर जैन, इंजी.महेन्द्र जैन, राजेन्द्र जैन, पवन जैन, राजकुमार जैन, राजदीप जैन, जयदीप मोनू जैन, प्रेमचंद जैन, पारितोष जैन, दीपक जैन, विपिन जैन, 12.अंकित जैन, 13. नरेन्द्र जैन, 14. राकेश जैन, 15. राजेश जैन और जिनेश जैन आदि-भोपाल
68. श्री नरेन्द्र जैन पोरवाल, खातेगाँव
69. श्री अजय दनगसिया, अजमेर
70. श्रीमती शीलरानी नायक पनागरवाली
71. अंकुर मेहता, सूरत
72. महेद्र जैन, शिवनगर, जबलपुर
73. नरेश सेठी राँची
74. अरुण गंगवाल राँची
75. विमल सोगानी राँची
76. अजमेरा हजारीबाग
77. प्रदीप जैन (पूर्व जिला अध्यक्ष ईसरी)
78. कन्हैया लाल सेठी औरंगाबाद (बिहार)
79. विजय जैन दीपक जैन, विनोद जैन, रीतेश जैन लखनादौन
80. प्रदीप जैन, महावीर सेठी, पंकज जैन, आनंद जैन, सतना
81. चक्रेश बागड़िया, संजय मित्तल रामगंजमंडी

32. विशिष्ट स्थल दर्श :-

इण्डिया गेट, लाल किला (दिल्ली), चितौड़गढ़ किला, माउंट आबू, भद्दलपुर, लाडनूँ, भदैनीघाट (बनारस), भेड़ाघाट (जबलपुर), बाजना (भीमकुण्ड), सूरज कुण्ड, संगम स्थल व अश्रय वट प्रयाग एवं चित्रकूट घाट।

33. विशेष त्याग (आजीवन) :-

नमक, शक्कर, अधिकतर मेवे, मावा, दशलक्षण में पूरी हरी का त्याग, अष्टमी, चतुर्दशी पर्व में पूर्ण हरी का त्याग एवं एक-दो महीने तक घी, गेहूँ, दूध इत्यादि के त्याग की साधना।

34. विशेष तपस्या:-

सन् 1989 में बड़े बाबा कुण्डलपुर के जंगल में रात्रि विश्राम व वर्षात् में पेड़ के नीचे ध्यान, सोनागिरि 1988 महावीर जयन्ती से एक वर्ष मौन, 3-3 घंटे खड्गासन में सामायिक, चार माह तक जबलपुर वर्षायोग सन् 1988 में, 26 घंटे ध्यान मुक्तागिरि 1990 में, दशलक्षण में पेयाहार पोन्नरमलै में, सोलहकारण में एक आहार-एक उपवास तीन बार, 8 अन्तरायों में भी प्रतिदिन 35, 45 किलोमीटर विहार, पोन्नूरमलै से आहार चर्या में एक चौके का नियम चौके के बाहर से लौटने पर अन्यत्र आहारचर्या नहीं करना इत्यादि।



2009 कुचामन सिटी (राज.) में जैन स्कूल में विद्यार्थियों के बीच प्रवचन देते हुए गुरुवर आर्जवसागरजी।



2009 अजमेर में गुरुवर आर्जवसागरजी के दर्शन करते हुए कर्णसिंह यादव दिल्ली।



2009 अजमेर में गुरुवर आर्जवसागरजी महाराज के समक्ष डॉ. अभय दगड़ा कोपरगाँव का सम्मान।



2009 अजमेर पिच्छिका परिवर्तन पर गुरुवरश्री आर्जवसागरजी महाराज के समक्ष श्रीफल अर्पित करते हुए सुशीला पाटनी किशनगढ़।



2009 गुरुवरश्री आर्जवसागरजी से पिच्छिका प्राप्त करते हुए सुनील जैन जौहरी सपत्नीक।



2009 अजमेर में गुरुवर आर्जवसागरजी से पुरानी पिच्छिका प्राप्त करते हुए नरेश जैन सपत्नीक।



2010 रेवाड़ी जैन स्कूल में प्रवचन के दौरान गुरुवर आर्जवसागरजी महाराज।



2010 दिल्ली में लाल मंदिर के सामने गुरुवर आर्जवसागरजी ससंघ व कर्णसिंह यादव (जैन) पुलिस, सुभाष जैन, अजित जैन आदि।



2010 दिल्ली इण्डिया गेट के सामने गुरुवर आर्जवसागरजी ससंघ व डॉ. डी.सी. जैन, डॉ. अजित जैन आदि।



2011 राणोली, सीकर में गुरुवर आर्जवसागरजी के सान्निध्य में नसियाँ जी के शताब्दि महोत्सव में डॉ. संजय जैन का सम्मान करते हुए कमेटी जन।



2012 उदयपुर उदासीन आश्रम में प्रवचन देते हुए गुरुवर आर्जवसागरजी महाराज।



तिजारा 2010, गुरुवर आर्जवसागरजी का पादप्रक्षालन करते हुए डॉ.देवकुमार व कर्णसिंह यादव पुलिस दिल्ली आदि।



2010 तिजारा में अरविन्द पथरिया का सम्मान करते हुए कमेटी जन।



2010 तिजारा में श्री तिजारिया जी गुरुवर आर्जवसागरजी के लिए शास्त्र भेंट करते हुए।



2010 तिजारा में महावीर जयन्ती के शुभ अवसर पर विमानोत्सव में गुरुवर आर्जवसागरजी ससंघ।



तिजारा 2010 में गुरुवर आर्जवसागरजी की प्रेरणा से कलश स्थापना का भव्य कार्यक्रम।



2010 तिजारा में गुरुवर आर्जवसागरजी से वर्षायोग हेतु निवेदन करते हुए अलवर समाज के श्रेष्ठी जन।



2010 अलवर में जैनपाठशाला की स्थापना के समय गुरुवर आर्जवसागरजी की देशना।



अलवर 2010 जैन मिलन को आशीष देते हुए गुरुवर आर्जवसागरजी महाराज।



2012 माउण्ट-आबू के पर्वत पर तालाब के तट पर विराजमान गुरुवर आर्जवसागरजी महाराज।



2012 उदयपुर में झील किनारे कायोत्सर्ग मुद्रा गुरुवर आर्जवसागरजी महाराज।



2011 दांता रामगढ़ पञ्चकल्याणक में गुरुवर आर्जसवागरजी के सान्निध्य में अहिंसा शाकाहार विषय पर विद्वत् संगोष्ठी।



2011 दांता रामगढ़ के पञ्चकल्याणक में विद्वानों का सम्मान।



2011 दाता रामगढ़ पञ्चकल्याणक में प्रवचन देते हुए गुरुवर आर्जवसागरजी महाराज।

39. चातुर्मास स्थलः-

1.	सिद्धक्षेत्र अहारजी (म.प्र.)	1985
2.	अतिशय क्षेत्र पपौराजी (म.प्र.)	1986
3.	अतिशय क्षेत्र थूबोनजी (म.प्र.)	1987
4.	मढ़ियाजी जबलपुर (म.प्र.)	1988
5.	सिद्धक्षेत्र कुण्डलपुर (म.प्र.)	1989
6.	सिद्धक्षेत्र मुक्तागिरि (म.प्र.)	1990
7.	कोपरगाँव (महा.)	1991
8.	नेमिनाथ नगर, सांगली (महा.)	1992
9.	श्रवणबेलगोला (कर्ना.)	1993
10.	दावणगेरे (कर्ना.)	1994
11.	पोन्नूरमलै (तमिल.)	1995
12.	पोन्नूरमलै (तमिल.)	1996
13.	कन्नलम् (तमिल.)	1997
14.	विशाखाचार्य तपोनिलय (तमिल.)	1998
15.	नल्लवन पालयम् (तमिल.)	1999
16.	विशाखाचार्य तपोनिलय (तमिल.)	2000
17.	आरनी (तमिल.)	2001
18.	शिमोग्गा (कर्ना.)	2002
19.	कोपरगाँव (महा.)	2003
20.	टी.टी. नगर, भोपाल (म.प्र.)	2004
21.	अशोकनगर (म.प्र.)	2005
22.	रांची (झारखण्ड)	2006
23.	दमोह (म.प्र.)	2007
24.	ग्वालियर (म.प्र.)	2008
25.	सोनी-नसियाँ-अजमेर (राज.)	2009
26.	कीर्तिनगर, जयपुर (राज.)	2010
27.	रामगंजमण्डी (राज.)	2011
28.	अहुरानगर-सूरत (गुजरात)	2012
29.	गोयलनगर-इन्दौर (म.प्र.)	2013
30.	खातेगाँव (म.प्र.)	2014
31.	सिद्धक्षेत्र तारंगाजी (गुजरात)	2015
32.	मण्डीदीप (म.प्र.)	2016
33.	पुरवा, जबलपुर (म.प्र.)	2017
34.	शान्तिनगर-बण्डा (म.प्र.)	2018
35.	अशोकागार्डन, भोपाल (म.प्र.)	2019
36.	अ.क्षेत्र श्री भ.पार्श्वनाथ क्षेत्रपाल ललितपुर (उ.प्र.)	2020
37.	लखनादौन (म.प्र.)	2021
38.	ईसरी-पारसनाथ (झा.ख.)	2022
39.	अशोकनगर (म.प्र.)	2023
40.	पिड़ावा (राजस्थान)	2024

35. चेतन कृतियाँ व अचेतन कृतियाँ:-

चेतन कृतियाँ

1. मुनिश्री सुभद्रसागरजी (तमिलनाडू में समाधिस्थ)
2. मुनिश्री महानसागरजी
3. मुनिश्री नमितसागरजी
4. मुनिश्री भाग्यसागरजी
5. मुनिश्री महत्सागरजी
6. मुनिश्री भास्वतसागरजी
7. मुनिश्री विलोकसागरजी
8. मुनिश्री विबोधसागरजी
9. मुनिश्री विदितसागरजी
10. मुनिश्री विभोरसागरजी
11. मुनिश्री विशोधसागरजी
12. मुनिश्री सजगसागरजी
13. मुनिश्री सानंदसागरजी
14. आर्यिकाश्री प्रतिभामति माताजी
15. आर्यिकाश्री राजितमति माताजी (समाधिस्थ)
16. आर्यिकाश्री सुयोगमति माताजी
17. आर्यिकाश्री मार्मिकमतीजी
18. ऐ.श्री अतुलसागार
19. ऐ.श्री अर्पणसागरजी
20. क्षु.श्री हर्षितसागरजी

अचेतन कृतियाँ (विशेष कार्य हेतु आशीष)

- ★ अनेक मन्दिर निर्माण
- ★ श्रुतकेवली मासिक पत्रिका (तमिल में)
- ★ भावविज्ञान त्रैमासिक पत्रिका(भोपाल से)
- ★ भ.महावीर आचरण संस्था समिति भोपाल
- ★ श्री विशाखाचार्य तपोनिलय तमिलनाडु
- ★ ध्यान मण्डप तमिलनाडु
- ★ तिरुकुरल मण्डप तमिलनाडु
- ★ ब्राह्मी श्राविका आश्रम तमिलनाडु
- ★ ज्ञानसागर उदासीन आश्रम तमिलनाडु
- ★ विद्यासागर गुरुकुल भवन तमिलनाडु
- ★ महावीर स्कूल तमिलनाडु
- ★ दयोदय गौशाला तमिलनाडु
- ★ अहिंसा रथ प्रवर्तन (सन् 2000 में) तमिलनाडु
- ★ एलाचार्य कुन्दकुन्द औषधालय तमिलनाडु
- ★ आ. विद्यासागर श्रुत भण्डार तमिलनाडु
- ★ आर्जव तीर्थ एवं जीव संरक्षण न्यास-भोपाल
- ★ शताधिक धार्मिक पाठशालाओं का प्रारम्भ (14 प्रदेशों में)
- ★ आयुर्वेदिक (डॉक्टर्स) संघ, भोपाल
- ★ आर्जव वाणी यू ट्यूब चैनल
- ★ www.aarjavvani.com(website)
- ★ aarjav vani app (Play Store)
- ★ aarjav vani (Facebook, Instagram, Telegram) ★ Whatsapp 9174843674

36. साहित्य कृतियाँ व रचनाएँ:-

धर्मभावना शतक, जैनागम संस्कार, तीर्थोदय-महाकाव्य, सदाचार सूक्ति काव्य, अध्यात्म समयोदय, गुरुगुण महिमा काव्य, आत्मोद्धार शतक।

परमार्थ साधना, बचपन का संस्कार, सम्यक् ध्यान शतक, आर्जव वाणी, पर्यूषण-पीयूष, आर्जव-कविताएँ, जिनवर-स्तुति, साम्य भावना, आगम-अनुयोग, आत्मोद्धार शतक, गुरु गुण-महिमा काव्य एवं अध्यात्म समयोदय, प्रभावना।

पद्यानुवाद- गोम्मटेश थुदि, जिनागम-संग्रह (वारसाणुवेक्खा, इष्टोपदेश, समाधितंत्र, द्रव्यसंग्रह) तत्त्वसार, प्रश्नोत्तर रत्नमालिका एवं भक्तामर स्तोत्र।

37. अनेक भाषाओं में दिये प्रवचन- हिन्दी, कन्नड, तमिल, आदि।

38. अनेक भाषाओं में लिखी कविताएँ:- हिन्दी, अंग्रेजी, मराठी, कन्नड़, तमिल, और गुजराती।

40. गृहस्थ जीवन के परिजन परिचय चार्ट:-

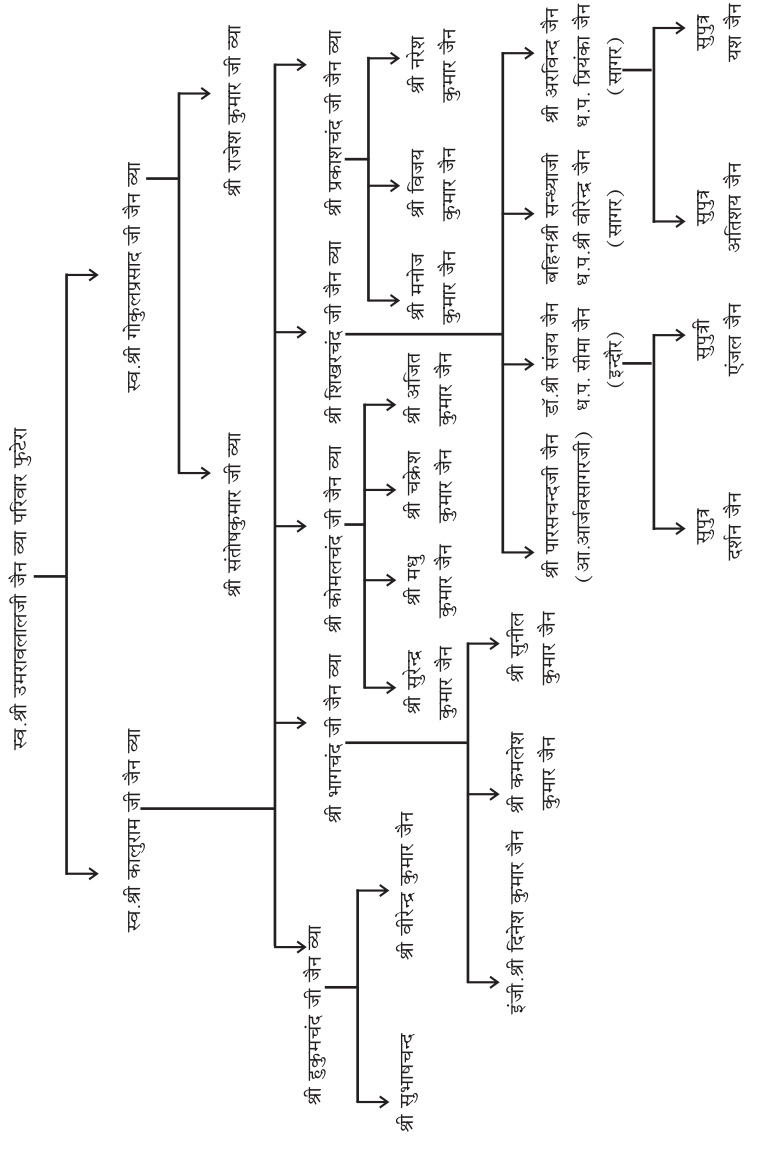



जीवन परिचय

आर्यिका श्री 105 प्रतिभामति माताजी

पूर्व नाम	:	पद्ममालिनी जैन
पिता का नाम	:	श्रीमान सी. कुमार जैन
माता का नाम	:	श्रीमती राजकुमारी जैन
जन्म दिनांक	:	23-06-1984
स्थान	:	वंदवासी (तमिलनाडु)
लौकिक शिक्षा	:	हाई स्कूल, सम्यग्ज्ञान एवं सिद्धांतभूषण पंचवर्षीय कोर्स में उत्तीर्ण (श्री विशाखाचार्य तपोनिलय पोन्नूरमलै तमिलनाडु)
ब्रह्मचर्य व्रत	:	1999 नल्लवन पालयन (तमिलनाडु)
प्रतिमा	:	सातवी प्रतिमा सन् 2003 कोपरगांव
आर्यिका दीक्षा	:	06-12-2015 माघ कृष्णा एकादशी
दीक्षा स्थान	:	श्री दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र तारंगा जी, गुजरात
दीक्षा गुरु	:	आचार्यश्री 108 आर्जवसागरजी महाराज



संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज की

नेमावर के पास हरदा में सन् 2015 में चरण वंदना करते हुए

गुरुदेव श्री आर्जवसागर जी महाराज